॥

जगह नही मिलता है, और अभ्यास करना तो एक कहानी सा होगया (वाहरे काल महिमा) इस हेतु वर्त्तमान कालाश्रित जितने ज्ञान वृद्धि के उपाये हैं देखा तो सर्वोत्कृष्ट मुद्रायन्त्र है इस कला से मेरा मनोरथ जो के ५०० ठिकोसे ४५ आगम का प्रचार करने की इच्छा है शीघ्रही सिद्ध होगी, लिखने लिखाने के परिश्रम से बचेंगे प्रायः लिखी पुस्तकों से छपी हुई पुस्तकें शुद्ध होगी यदि कोई गुणी अधिकारी होगा तो, यह कला हमको कृतार्थ करने को ही प्रचलित हुई है, कोई उपाय ज्ञानवृद्धि के लिए सहज और सुदर पृथ्वी पर इसके सेवाय नही है ग्रंथ छपवाना सुरूकिया । यह कला युरूप देशीय अन्य धर्मियों से प्राप्त हुई है, अग्राह्य है, ग्रंथ छपवाने में आशातना होती है, इत्यादि असूया करना अनुचित है, क्योंकि वस्तु का उत्पत्तिस्थान और उत्पादक चाहे कोई हो सर्वोपकारिता, अल्पकालक्षेप, ज्ञानवृद्धि, पुस्तकसुभतादिक, महा कार्य के लिये अवश्य ग्रहण करनी चाहिये इस के ग्रहण करने में तथा पुस्तक छपवाने में बडा उपकार पुण्यबंधन है दोप कुछ भी नही है, पक्षपात छोड के ग्रहण करें । यदि वस्तुके उत्पत्तिस्थान की ओर देखियेगा जातक तथा पारसी जो यावनी विद्या है आप क्यों पढते हैं ? जो चीज उन लोगोंकी पैदा की है बहुतसी आपके परिभोग में आती है, कस्तूरी गोलोचनादि कहां पैदा होता है और किस काममें आप खरच

॥ विज्ञापनम् ॥



सकल समान धर्मी श्रावक महाशयों से विनय पूर्वक निवेदन करता हूं कि दशविध दृष्टांत दुर्लभ मनुष्य शरीर पाके ज्ञान वृद्धि के हेतु यत्न करना बहुत आवश्यक है, क्योंकि जिससें जुआरी मद्यप चोर और व्यभिचारी इत्यादि दुष्कीर्त्ति और परभव में अंध पंगु कुष्ठी काक कृमि और कीट इत्यादि नरक पीडा देनेवाले अकर्तव्य कर्म, धर्मी दयालु दाता सत्यवक्ता सुशील और सज्जन इत्यादि सुकीर्ति और परभव में धनसंपत्ति सुख सुन्दर शरीर आरोग्य पुत्र कलत्र सुख इत्यादि स्वर्गसुख मोक्षसुख देने वाले कर्त्तव्य कर्म जाने जाते हैं।

ज्ञानी से ज्ञान मिलता है, यद्यपि ज्ञान और ज्ञानी दोनों अनादि अनंत है तथापि एक पुरुष की अपेक्षा से परस्पर कार्य कारण सम्बन्ध सिद्ध है, क्यों कि ज्ञान विना ज्ञानी और ज्ञानी विना ज्ञान होना असंभव है। ज्ञान होने में प्रथम व्याकरण काव्य कोश ज्योतिष न्याय और अन्य अन्य दर्शन इनका समूह अध्ययन

नकल चिठी १

श्रीमज्जिनवरप्रसादलब्धसद्बुद्धिप्रकाशितधर्मरतेषु श्री ५ रायधनपतिसिंहबहादुरेषु सविनयमावेदनम् ।

आगे, मैंने सुनाहै आप की एसी इच्छाहै कि पैतालिसों जैनागम की पुस्तके मूल टीका और भाषाटीका सहित पाच २ सौ कापी छपै और साधु श्रावकों के पठन पाठन के लिये पाच सौ स्थानमे पुस्तकालय स्थापित होवे सो यह अति आनंदकी वातहै, परंतु जिन महाशयो का द्रव्य देके पुस्तक लेने की इच्छा हो उन लोगो के निमित्त भी यदि आप की आज्ञा हो तो बेचने के वास्ते पाचसौ कापी जैन बुक सुसाइटी की ओर से भी छपवा ली जावे यह पुस्तकै मे अजीमगंज से प्रकाश करूंगा अग्रे शुभम्, संवत् । १९३३ । मि० । चै० । शु० । ११

अजीमगंज — द० जैन बुक सुसाइटी

शहर मुरसीदाबाद — कार्यसम्पादक

सुबुद्धिसेठ

नकल चिठी २

श्रीविविधविद्याविचारतत्परेषु जैन बुक सुसाइटीकार्यसम्पादक महाशयेषु प्रतिनिवेदनम् ।

जो कि पत्र आपका द्रव्य देके खरीदनेवाले लोगो के लिये सुसाइटी की ओर से पैतालिसों जैनागम की पाचसौ पुस्तकें छपवा लेने की आज्ञा के विषय मे आया सो मै स्वीकार करता हूं कि आप जैन बुक सुसाइटी की तरफ से आगम की प्रत्येक पाच २ सौ पुस्तके बेचने के वास्ते छपवा लेवे, परंतु पाचसौ से अधिक छपनेकी आज्ञा नही देता, यदि और कोई छपवाना चाहै तो उचित है कि पहले मुज से आज्ञा लेलेवे क्योंकि इन ग्रन्थो पर रजस्टरी हुईहै, अग्रे शुभम् ।

संवत् । १९३३ । मि० । चै० । शु० । १३

अजीमगंज

शहर मुरसीदाबाद

द० रायधनपतिसिंह बहादुर

अध्यापन श्रवण और मनन इत्यादि सामग्री अपेक्षित होती है, ऐसी आख्यायिका प्रसिद्ध है कि प्राचीन समय मे मनुष्यों की धारणशक्ति ऐसी विलक्षण थी कि जिससे शृंखलाबद्ध अनेक ग्रंथ उनको कंठाग्र रहते थे। अन्य मतमें उनके वंशीय लोग अब भी प्रसिद्ध हैं जैसे चौबे दुबे त्रिपाठी यजुर्वेदी सामवेदी और अपने मतमें पाठक, वाचक, वाचनाचार्य औ उपाध्याय कहलाते हैं। प्रसिद्ध है कि उस समय में अठारह प्रकार की लिपि प्रचलित थी परन्तु ग्रंथकंठस्थ रहने के कारण पुस्तक लिखने का परिश्रम व्यर्थ समझते थे। और भी जो प्रथम गणधर तीर्थंकर महाराज के मुख से (उप्पन्ने इवा विगमे इवा धुवे इवा) त्रिपदी सुन के १२ अंग की रचना कर देते थे और स्मरण रखते थे इसमें केवल श्रुतज्ञान बलके सिवाय और कोई कारण नही समझा जासकता। अधुनातन मनुष्यों को जो अहर्निश अभ्यस्त भी ग्रंथ और उनका तात्पर्य नही याद रहता है ज्ञानावरणीय के सेवाय कौन कारण कहेंगे। ज्ञानावरणीयकर्म का उदय भी कुछ एकही समय नही हुआ किन्तु क्रमसें जों जों देश क्षेत्र काल और भाव विपरीत आते गये तों तों ज्ञानकी भी न्यूनता होती चली, होते होते श्री भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण से ९८० वर्ष (ईसवी सन् ४५४। विक्रम संवत ५१०) बीत जाने पर देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणने सोचा कि पुस्तक विनालिखे यह स्मरणशक्ति

लोक इतिव्युत्पत्यालोकालोकरूपस्यसमस्तवस्तुस्तोमस्वभावस्याखंडमार्तण्डमण्डलमिव निखिलभावस्वभावावभासनसमर्थः केवलालोकपूर्वप्रवचनप्रभापटल

प्रवर्त्तनेनप्रद्योतं प्रकाशंकरोतीत्येवंशीलोलोकप्रद्योतकरस्तेन ननुलोकनाथत्वादिविशेषणयोगी हरिहरहिरण्यगर्भादिरपि तत्तीर्थिकमतेनसंभवतीतिको

स्यविशेषइत्याशङ्कायान्तद्विशेषाभिधित्सयाह नभयंदयतेपाणापहरणरसिकोपसर्गकारिष्वपिप्राणिनि दयातीत्यभयदयः अभयावा सर्वप्राणिभयपरिहार

वतीदयाघृणायस्यासावभयदयो हरिहरादिस्तुनैवमितितेनाभयदयेन नकेवलमसावपकारकारिणामनर्थपरिहारमात्रं करोत्यपित्वर्थप्राप्तिं करोती

तिदर्शयन्नाह चक्षुरिवचक्षुः श्रुतज्ञानंशुभाशुभार्थविभागकारित्वा त्तद्दयते इतिचक्षुर्दयस्तेन यथाहिलोकेचक्षुर्दत्वावाञ्छितस्थानमार्गंदर्शयन्महोपकारी

भवत्येवमिहापीति यथाहिलोकेच भवत्येवमिहापीतिदर्शयन्नाह मार्गंसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकपरमपदपथंदयत इतिमार्गदयस्तेन मार्गंदर्शयन्महोपकारीभवत्येवमिहापीति

चक्षुरुद्घाटनमार्गदर्शनचकृत्वा चौरादिविलुप्तान् निरुपद्रवंस्थानप्रापयन् परमोपकारी भवत्येव मिहापीतिदर्शयन्नाह शरणत्राणमज्ञानोपद्रवोपहतानांतद्र

क्षास्थानतत्त्वपरमार्थतोनिर्वाण तद्दयतइतिशरणदयस्तेन यथाहि लोकेचक्षुर्मार्गशरणदानादूर्ध्वस्थानजीवितं ददातीत्येव मिहापीतिदर्शयन्नाह जीवन

माणं लोगनाहाणं लोगहिएणं लोगपईवेणं लोगपज्जोअगरेण अभयदएणं चक्खुदएणं मग्गदएणं सरणदएणं

तिहांदीवासनानमिथ्यात्वअंधकारटाले लोकगणधरलोकनेहनेप्रद्योतनाप्रकाशनाकरणहारतेणेरहित सर्वजीवनेअभयदाननादातारतेणे समकितरूपलो-

चननादातारतेणे भूलाप्राणीनेमोक्षमार्गनादातारतेणे सर्वजीवनेशरणनादातारतेणे सयसरूपजीवितव्यनादातारतेणे बोधिबीजसम्यक्तनादातारतेणे धर्म

जाती रहेगी इसलिये वल्लभी पुरमें साधु समुदायके कंठस्थ जो सूत्रादि ग्रन्थ थे पुस्तकों में लिखे, परन्तु उस समय कागद और स्याही बनानेकी रीति न होने के कारण ताडपत्रके ऊपर लोह लेखनी से खुदवाके पुस्तकालय स्थापन किए, (यह बात कुछ मेरेही लिखने पर नही हर कोई स्वमती परमती जानते हैं और इतिहास प्रसिद्ध है, अबतक भी ताडपत्र के ऊपर लिखे ग्रन्थ देखने में आते हैं) पीछे जब कागद स्याही बनानेकी कला प्रसिद्ध हुई तब ताडपत्र से कागद पर लिखाके पुस्तकालय किए ताडपत्र के ऊपर लिखने से कागद के ऊपर लिखने में कम मेहनत है शीघ्रही लोगोंने अंगीकार कर लिया, कागद पर लिखने में एक ग्रंथ चिरकाल में लिखके तयार होगा जब कि बहुत ग्रथ लिखाना होय तो बहुत से लेखक चाहियें द्रव्य व्यय भी अधिक होगा तिस्में भी यदि कोई तरह का विघ्न आय पडै कार्य पूर्ण नहो, क्योंकि एकलो श्रेयांसि बहुविघ्नानि, दूसरे मनुष्यायु अल्प, जब तक कार्य समाप्त नहो चिंता लगी रहती है और पुण्योपार्जनभी तत्कर्म समाप्ति में है, ग्रथ संग्रह किये विना अध्ययन अध्यापन श्रवण मननादि जिनसे ज्ञान वृद्धि होती है सर्वथा नष्ट हो जांयगे पहलेही द्वादश १२ वर्षके तीन दुर्भिक्ष होने से कितने ही ग्रंथ लुप्त होगये, और पीछे से मुसलमानोने नष्ट किये, जो बचे हैं लिखने लिखाने की अशक्तता से वर्त्तमान काल में पैंतालीस आगम एक

नं नारियानिकामितियदुच्यते अथोत्यादि आस्तिनिदाते ऐकेशांचिन्नेरयिकाणा मेवापल्योपमं स्थिति रितिकालाग्रज्ञतामवेदितामया अन्येराजिनेः साचचतुर्थप्र

गेएजोयणसयसहस्संआयामविक्खंभेणं प० सव्वट्ठसिद्धेमहाविमाणे एगंजोयणसयसहस्संआयामविक्खंभेणं प० अद्दानक्खत्तेएगतारे प० चित्तानक्खत्तेएगतारे प० सातिनक्खत्तेएगतारे प० इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइआणंनेरइआणं एगंपलिओवमंठिई प० इमीसेणंरयणप्पहाएपुढवीए नेरइआणं उक्कोसेणंएगंसागरोवमंठिई प० दोच्चाएणंपुढवीएनेरइयाणं जहन्नेणंएगंसागरोवमंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइआणं एगंपलिओवमंठिई प० असुरकुमाराण देवाणं उक्कोसेणएगंसाहियं सागरोवमंठिई प० ॥

जमलांबपणेंअनेपिडुलपणेंकह्यो। आर्द्रानक्षत्रनोएकतारोकह्योछे । चित्रानक्षत्रनोएकतारोकह्योछे। स्वातिनक्षत्रनोएकतारोकह्यो । एहतेरत्नप्रभापहिलीनरकापृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनीं एकपल्योपमस्थितिआउखोभगवंतेकह्योछे । एणीयेरत्नप्रभापहिलीनरकापृथवीने नारकीयांनी उत्कृष्टोए-कसागरोपमस्थितिआउखोकह्योछेभगवते बीजीयेनरकापृथवीने नारकीयांनोजघन्यपणे एकसागरोपमस्थितिआउखोकह्यो अनंतज्ञानवतेअसुरकुमारभवनपतीप्रथमनिकायना देवतानो केतलाएकनो एकपल्योपमस्थितिआउखोकह्योभगवते असुरकुमारदेवनो उत्कृष्टोझाझेरोएक सागरोपमस्थितिआउखो

पंचकं नवतत्वार्थसप्तकं स्थित्यर्थनवक मुक्त्वासाध्यर्थन्नयमिति । तत्र दण्ड्यतेज्ञारित्रैश्वर्यापहारतोऽसारीक्रियते एभिरात्मेतिदंडादुःप्रयुक्तमनःप्रभृतयः मनएवदंडो मनोदंडो मनसावादुःप्रयुक्तेनात्मनोदंडो दंडेनमनोदंडएवमितरावपि तथा गो[illegible]गुप्तयः मनःप्रभृतीनामशुभप्रवृत्तिनिरोधनानि शुभप्रवृत्तिकरणानि चेति तथा तोमरादिशल्यानीवशल्यानिदुःखदायकत्वात्मायादीनि तत्र मायानिकृतिः [illegible]शल्यं मायाशल्यमित्यऽलंकारे एवमितरेऽपि नवरंनिदानं देवादिऋद्धीनांदर्शनश्रवणाभ्या मितो ब्रह्मचर्यादेरनुष्ठानान्ममैताभूयासु रित्यध्यवसायो मिथ्यादर्शने [illegible]नमिति तथा गौरवाणिअभिमान

तओदंडा प० तं० मणदंडे वयदंडे कायदंडे । तओगुत्तीओ प० तं० मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती । तओसल्ला प० तं० मायासल्लेणं नियाणसल्लेणं मिच्छादंसणसल्लेणं ॥

सर्वदुःखसारीरी तथा मानसी तेहनोअंत करिस्ये एतले बीजोठाणो पूरोथयो ॥ ॥ २ ॥ ॥ हिवे तीजोठाणो कहेछे । तीनदंडकह्या जेणेकरी आत्मादंडीये चारित्ररूपधनगमाडीये ते दंडकहीये ३ मनेकरी आत्मादंडीये असारकारीये ते मनोदंड १ एम वचनदंड २ कायदंड [illegible]मज ३ त्रिणिगुप्ती गोपविवो ते गुप्ति कहिये तेकहेछे मननो गोपवो ते मनोगुप्ती १ इम वचनगुप्ति २ कायगुप्ति ३ त्रिणिशल्यछे तीरनीपरे शल्यसरीखा शल्य भाल दुखदायकपणाथको ते कहेछे मायाकपटतेहीजशल्य तेमायाशल्य १ निदानशल्य ते तपसंजमेकरी इन्द्रादिकपदवीनो वांछवो २ मिथ्यातशल्य

करते है ? केवल वस्तु में जो गुण हैं ग्रहण करना और दोषकों छोडदेना उचित है । इसलिए पुस्तक सुलभता, ज्ञानवृद्धि की अति उत्कृष्ट अत्यंत सहज सुगम रीति को अस्वीकार करके ज्ञानहानि नही करना चाहिये, और मध्यस्थ बुद्धिसे बिचारिये तो पूर्वाचार्योंने वडे परिश्रम से परोपकारार्थ जो ग्रन्थ बनाये हैं किसी के देखने में न आवें ऐसा गुप्त रखना कि कुछ दिन में कीडे खाजांय और ग्रन्थ का नाममात्रही शेष रह जाय उनका परिश्रम व्यर्थ होजावे इसके सेवाय कोई अविनय और आशातना 'कर्मबंधका हेतु, नही है, वही ग्रन्थ छपवाके प्रसिद्ध करना हरएक विद्वानोंको देना तद्‌द्वारा वह लोक ज्ञान पावें इससे अधिक कोई विनय और श्रेष्ठकार्य नही है, यही सर्व कारण सोंच मैं इस शुभ कार्यमें प्रवृत्त हुआ हूं आप लोगभी यथाशक्ति प्रवृत्त होंय कि जिससे पुन जैनमत सुखावस्था कों प्राप्त होय इति शम् ॥

मकसुदाबाद अजीमगज — राय धनपतिसिंह बहादुर

भूमिका ।

समवाय नामक चउथे अङ्ग का अनुयोग स्थाननाम तृतीय अङ्गानुयोग के अनन्तरही क्रमसें प्राप्तहै ,

१ ॥

च्चाएणंपुढवीएनेरइयाणं उक्कोसेणंतिन्निसागरोवमाइंठिई प० । तच्चाएणंपुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणंतिन्नि सागरोवमाइंठिई प० । असुरकुमाराणदेवाणं अत्थेगइयाणंतिन्निपलिउवमाइंठिई प० । असंखिज्जवासा उयसन्नि पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं तिन्निपलिउवमाइंठिई प० । असंखिज्जवासाउयसन्निग ब्भवक्कंतियमणुस्साणं उक्कोसेणं तिन्निपलिउवमाइंठिई प० । सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइयाण देवाणं तिन्निपलिउवमाइंठिई प० सणंकुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाण तिन्निसागरोवमाइंठिई प०

त्रणितारांकह्याकेवलज्ञानीये पुष्यनक्षत्रनात्रणितारांकह्या । जेष्ठानक्षत्रनात्रणितारांकह्या अभिजित् नक्षत्रनातीनतारांकह्या श्रवणनक्षत्रनात्रणितारांक ह्या अश्विनीनक्षत्रनात्रणितारांकह्या भरणीनक्षत्रनात्रणतारांकह्या एणीयेरत्नप्रभापहिलीपृथवीनेविषे केतलाएकनारकीनो त्रणिपल्योपममध्यमआऊषूंकह्यूं बीजोसक्करप्रभापृथवीनेविषे नारकीनोउत्कृष्टो त्रणिसागरोपमनूंआउखोकह्यो त्रीजीवालुकप्रभापृथवीनेविषे नारकीनो जघन्य त्रणिसागरोपमआऊखोक ह्यो असुरकुमारभवनपतीनो पहिलीनिकायनादेवतानोकेतलाएकनो त्रणिपल्योपममध्यमआउखोकह्योछेअसंख्यातवर्षनाआउखाना सन्नीगर्भज पचेंद्रिय तिर्यंच एतलेदेवकुरू उत्तरकुरूनागर्भज तिर्यंचनो उत्कृष्टो तीनपल्योपमनो आऊखोकह्यो । असख्यातवर्षना आउखाना गर्भजमनुष्यदेवकुरुउत्तरकुरुना

और अनुयोग की प्रवृत्ति, फल योग मङ्गल समुदायार्थ द्वारभेद निरुक्तिक्रम और प्रयोजन आदिक द्वारों के निरूपण में होते है सो सब इहांभी स्थानाङ्ग के समान है ॥

समवाय चतुर्थ अङ्गानुयोग, राग और द्वेष आदि विषम भाव शत्रुओं की सेना के समूल उन्मूलन करने सें, तथा त्रिभुवन के समस्त पदार्थों को हस्तामलक समान देखना और जानना तत्पूर्वक विसंवाद रहित वचन होने सें त्रिभुवनरूप भवन के आंगन में सुधासमान निर्मल जिनके यश की राशि फैल रही है ऐसे जिनेन्द्र परम कारुणिक श्री श्रमण भगवन्त महावीर वर्द्धमान स्वामी नें जैसा कहा उन के पांचवें गणधर आर्य सुधर्मास्वामीने श्रमणसंघ और अपनी साधुसंतति के लिये सूत्ररूप से संकलित किया, समवाय इस पदका समुदायार्थ यह है कि—सम्यक् प्रकार अधिकता करके जीव अजीव आदि अनेक पदार्थों का ज्ञान है जिसमें, अथवा समवाय सम्यक् ज्ञान इसग्रंथ मे कहाहै, समवाय शब्दसे आत्मा आदि कितने ही पदार्थ एक दो तीन चार इत्यादि एकोत्तर अर्थात् एक के बाद दो और दो के बाद तीन इस क्रमसे सौ पर्यंत और अनेकोत्तर अर्थात् अनेक की वृद्धि कोटा कोटि पर्यंत सख्या विशेषित इस ग्रथ में कहे हैं, और द्वादशांग गणिपिटक के समाचार तथा आत्मादि पदार्थों को एकेंद्रियादि पर्याप्त अपर्याप्त नारक

कानचत्रार्थस्थित्यर्थंषट्कंशेषंतथैवइत्यपिपाठः त्रयंस्थित्यर्थंषट्कंनचत्रार्थं[illegible]शेषंतथैव अंतर्मुहूर्त्तंयावच्चित्तस्यैकाग्रतायोगनिरोधश्चध्यानं तत्रार्त्तं मनोज्ञामनोज्ञ वस्तुवियोगसंयोगादि निबधनचित्तविक्लवलक्षण रौद्रंहिंसानृतचौर्यधनसरक्ष[illegible]धानलक्षण । धर्ममाज्ञादिपदार्थस्वरूपपर्यालोचनैकाग्रताशुक्ल पूर्वगत श्रुतावलबनध्याने तत्रमनसोऽत्यंतस्थिरतायोगनिरोधश्चेति । आत्मध्यान तथाविरुद्धा[illegible]प्रति स्त्र्यादिविषया'कथा विकथा: तथासज्ञा असातवेद

प० तं० कोहकसाए माणकसाए मायाकसाए लोभकसाए चत्तारिज्झाणा प० तं० [illegible]ज्झाणे रुद्दज्झाणे धम्मज्झाणे सुक्कज्झाणे चत्तारिविगहाउ प० तं० इत्थिकहा भत्तकहा रायकहा देसकहा चत्तारिसन्ना प०

नौसास तेहदेवताने उत्कष्टो त्रिहुवर्षसहस्रे आहारनोअर्थउपजेआभोगआहारलेछे एंकेकसंसारमाहिभव्यजीव जेहत्रिहुंभवनेआंतरे सीझसेकृतार्थथास्ये बूझ स्ये कर्मबधथकी मूंकास्ये समस्तदु:खनोअंतकरस्यै इतित्रीजोठाणोसम्मत्तं हिवेचोथोठाणोकहेछेच्यारकषायछेकषकहीये संसारतेहनोआयलाभहुस्ये जेहथीक षायकहियेक्रोधेकरीससारनोलाभहुस्येतेमाटेक्रोधकषाय १ एममानकषायमानअहंकार २ मायाकषामायाकपट ३ लोभकषायलोभतृष्णा ४ च्यारिध्यानक ह्याध्यानतेअतमुहुर्त्तलगेचित्तनुएकाग्रपणूंतथायोगनिरोधतेकहेछे मनोज्ञवस्तनोसंयोगअमनोज्ञवस्तनोवियोगनोचिंतववोतेआर्तध्यान १ हिंसामृषाचोरीधन रक्षणनो चिंतववोतेरुद्रध्यान २ भगवतनीआज्ञापदार्थनोआलोचवोतेधर्मध्यानपूर्वगतश्रुतनूंआलबनुत्रिणयोगनूंनिरोधवोते शुक्लध्यान जेणेकरीचारित्रादिक

तिर्यंच मनुष्य देव भेदसें और इनके आहार लेश्या श्वासोश्वास उपपात च्यवन अवगाहना उपधि वेदना उपयोग योग इंद्रिय कषायादि, मेरु आदि पर्वतों का विष्कंभादि, कुलकर तीर्थंकर गणधर चक्रधर बलदेव वासुदेव इत्यादि अनेक पदार्थ विशेषतया इस ग्रंथ में कहने सें समवाय औसा नाम हुआ वही समवाय क्षायोपशमिक भावरूप प्रवचन पुरुष के अंगकी तरह अंग है इसलिए समवायांग नाम हुआ, इस ग्रंथ में भाव समवायांग काही अधिकार है, यह समवायांग एक अध्ययन रूप एक श्रुतस्कंध एक उद्देशक और एक समुद्देश है, इस समवायांग के पदार्थोंका तात्पर्य शीघ्र जानने के लिये उपक्रम १ निक्षेप २ अनुगम ३ और नय ४ अनुयोग अर्थात् सूत्रका अर्थसे संबंध अथवा अनुकूल व्यापार अर्थात् सूत्रार्थ प्ररूपण रूप क्रियाविशेष कहे है, यही चारों जैसें नगर मे सुखसें प्रवेश करने मे चार द्वार होते हैं वैसे इस प्रवचनमे प्रवेश करने के चार अनुयोग रूप द्वार (प्रवेशमुख) हैं, इन अनुयोगों से जीवाजीवादि पदार्थ ज्ञात होने सें तत्वज्ञानरूप परम पुरुषार्थ सिद्ध होता है इसलिये इसके पढने पढाने में अवश्य यत्न करना चाहिये, परंतु पढने का अधिकारी वही होगा जोकि मोक्ष मार्ग का अभिलाषी गुरू का आज्ञाकारी और दीक्षा लिये आठ वर्ष जिसको व्यतीत हुआ होगा समवायाङ्ग सूत्र देनेका अवसर भी वहीहै, अन्यथा देनेमें तीर्थंकराज्ञा भङ्गादि दोषापत्ती होतीहै, इति शम्॥

रणीनाविवचानुमंतव्येति सुभेत्यादिस्लोकः तथाअष्टौनक्षत्राणि चन्द्रेणसार्द्धंप्रमर्दं चन्द्रोमध्येनतेषांगच्छतीत्येवंलक्षणंयोगंसंबंधंयोजयन्ति कुर्वन्ति अत्रार्थेऽभिहि तं स्लोकश्चियम् पुणव्वसुरोहिणीचित्ता महाजेठणुराहकत्तियविसाहा चंदस्सयजोगत्ति । यानिच दक्षिणोत्तरयोगीनि तानि प्रमर्दयोगीन्यपिकदाचिद्भवन्ति यतोलोकश्रीटीकाकृतोक्तं । एतानिनक्षत्राण्युभययोगीनि चन्द्रस्योत्तरेणदक्षिणेनच युज्यन्ते कदाचिच्चन्द्रेण भेदमप्युपयान्तीति ॥ तथार्चिरादीन्येकादशविमान

अठनक्खत्ताचंदेणं सद्धिंपमद्दंजोगंजोएंति तं० कत्तिया १ रोहिणी २ पुणव्वसु ३ महा ४ चित्ता ५ । विसाहा ६ अणुराहा ७ जेठा ८ । इमीसेणंरयणप्पहाएपुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाणं अठपलिओवमाइं ठिई प० चउत्थीएपुढवीए अत्थेगइयाणंनेरइयाणंअठसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणंअत्थेगइयाणं अठपलिओवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं अठपलिओवमाइंठिई प० बंभलोएकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं अठसागरोवमाइंठिई प० जेदेवा अर्चिं १ अर्चिमालिं २ वइरोयणं

श्रीवर ६ । वीरभद्र ७ । यशोभद्र ८ । आठनक्षत्रचंद्रमासाथे प्रमर्दकयोगयोगी साथकरे तेकहेछे । कृत्तिका १ । रोहिणी २ । पुनर्वसु ३ । मघा ४ । चित्रा ५ विशाखा ६ । अनुराधा ७ । ज्येष्ठा । एणीयेरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो आठपल्योपम आउखोकह्यो । चउथीनरक पृथिवीने विषेकेतलाएक नारकीनो । आठसागरोपमआउखूंकह्यो असुरकुमारदेवतानोकेतलाएकनो आठपल्योपमआउखोकह्यो सौधर्मईशान देवलोकनेविषे केतलाएकदेवतानो

स्यांदिशि स्थितानि दक्षिणाग्राश्रित चंद्रेण सहयोगमनुभवंतीतिभोदि॰ बहुसमरमणिज्जाओ इति अत्यंतसमो बहुसमो ऽत एवरमणीयो ऽस्यतस्माद्भूमिभा गात्तेपर्वतापेक्षया नापि स्वाचारापेक्षयेति तात्पर्यं आबाहाएत्ति अंतरेऊवितिशेषः उवरिल्लेत्ति उपरितनं ताराऋपं तारकजातीयं चारभ्रमणं चरतिकरोति नवजोयणियत्ति नवयोजनायामा एवप्रविशन्ति लवणसमुद्रे यद्यपि पचयोजनसैत्काभल्या. सभवति तथा नदीमुखेषु जगतीरन्ध्रेभिस्थेनैव तावत्प्रमाणाः ज

|| स्या ॥ अभीजिनक्खत्तेसाइरेगेनवमुहुत्ते चंदेणंसद्धिंजोगंजोएइ अभीजियाइयानवनक्खत्ता चंदस्सउत्तरेणंजोगं जोएइ तं॰ अभीजिसवणोजाववरणी इमीसेणरयणप्पभाएपुढवीए बहुसमरमणिज्जाउ भूमिभागाउ नवजो यणसए उड्ढं आबाहएउवरिल्लेताराऋवे चारचरइ जंबूद्दीवेणदीवे नवजोयणियामच्छापविसिसुवा ३ विजय ||

नवहाय जचपणे देहडुया अभोचनचत्रआभिरी नवमुहूर्तलगे चन्द्रमासायेयोग जोजे सबंधकरे अभीचिथकी मांडीनव नक्षत्र चन्द्रमाने उत्तरदिसेयोगजोजेसं बंधकरे चाले तिकहेछे । अभीचि १ । श्रवण २ । धनिष्ठा ३ । शतभिषा ४ । पूर्वभाद्रपद ५ । उत्तराभाद्रपद ६ । रेवती ७ । अश्विनी ८ । भरणी ९ । एनव नक्षत्रजाणिवा । एणीरत्नप्रभा पहिलो पृथिवीनो घणोसमो घणोरमणीक जे भूमिभाग भूमिनोउपल्योभाग तेहथकी नवशतयोजनऊंचे आंतरेएतले पृथि वीथकी नवशतयोजनऊंचो जइये तिहांउपिल्यो ताराऋप एतलेशनीश्वरनोताराेऊंचोछे भ्रमणकरेछे पृथिवीथकी सातसेनेऊयोजन तारामंडलछे । ७९० योजने तारा १० । योजनेसूर्य ८० । योजनेचन्द्रमा ४ । योजनेअठावीस नक्षत्र ४ योजनबुधनोतारो ३ योजनमंगल ३ योजनशनैश्चर सर्वमिली नवसेयोजन थया । जंबूद्वीपमांहीं नवयो जनलांबामच्छपेसेछे लवणसमुद्रमाहि पाचसेयोजनलामच्छछे एणेजगतीनेछिद्रे नदीमुखें नवयोजननामच्छ जंबूद्वीपमांही

॥ विज्ञापनम् ॥



श्रीमज्जिनवरपदकमलमधुकरायमाण याचककल्पद्रुमायमाण वङ्गदेशभूषण कृतबन्धुतोषणा जीमगञ्जवास्तव्य गुणगणसंस्तव्य ज्ञातसार मानसारी सवाल दीनहीनपाल धृतव्यापारधुर रायबहादुर चितिपति धनपति सिंहस्य धर्मोपदेशेन शुभादेशेन ज्ञानहृद्धये मोहनिवृत्तये ध्यातजिन[illegible]नां सकलयतीनां श्रेयोग्राहकाणां श्रावकाणां चोपकाराय सकलविद्याकरे कल्याणकपुरे वाराणसीनगरे रुचिराचरतन्ते जैनप्रभाकरयन्त्रे कृतसम्यग्व्याख्यं समवायाख्यं जीवाजीवपरिच्छेदबोधकं हृदयमलशोधकं प्रवचनपुरुषस्याङ्गमिव तुरीयमङ्गं तपोधनिना मुनिना सदाऽतन्द्रेण नानकचन्द्रेण सुन्दर मुद्रितमभूत् ॥ *

समवायाख्यंसूत्रं तुरीयमङ्गं मयातिसंशोध्य ॥
मुद्रितमेतज्जनितं पुण्यंभविकान्सदापातु ॥ १ ॥

पाखं भोमानि नवभूमिकानि नगराणीति एकोननगराणीत्येके विशिष्टस्थानानीत्यन्ये तथा व्यंतराणां सभा सुधर्मानव योजनानिऊर्द्धमुच्चत्वेन तथा पच्चा

गइयाणं देवाणं नवपलिओवमाइं ठिई प० बंभलोएकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं नवसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा पम्हं सुपम्हं पम्हावत्तं पम्हप्पभं पम्हकंतं पम्हवन्नं पम्हलेसं पम्हज्झयं पम्हसिंगं पम्हसिद्धं पम्हकूडं पम्हुत्तरवडिंसगं तहा सुज्जं सुसुज्जं सुज्जावत्तं सुज्जकंतं सुज्जप्पभं सुज्जलेसं सुज्जवन्नं सुज्जज्झय सुज्जसिंगं सुज्जसिद्धं सुज्जकूडं सुज्जुत्तरवडिंसगं रुइल्लं रुइल्लावत्तं रुइल्लप्पभं रुइल्ललेसं रुइल्लवन्नं जावरुइल्लुत्तरवडिंसगं विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं नवसागरोवमाइंठिई प० तेणंदेवा नवण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं नवहिंवाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुपज्जइ संतेगइयाभव

आउखोकह्यो। ब्रह्मलोके जेदेवता पद्म १। सुपद्म २। पद्मावर्त ३। पद्मप्रभ ४। पद्मकांत ५। पद्मवर्ण ६। पद्मलेश्य ७। पद्मध्वज ८। पद्मशृग ९। पद्मसिद्ध १०। पद्मकूट ११। पद्मोत्तरावतंसक १२। एम १२ विमाने तथावली। सूर्य १। सूर्यावर्त २। सूर्यप्रभ ३। सूर्यकांत ४। सूर्यवर्ण ५। सूर्यलेश्य ६ सूर्यध्वज ७। सूर्यशृग ८। सूर्यसिद्ध ९ सूर्यकूट १०। सूर्योत्तरावतसक ११। तथावली रुचिर १। रुचिरावर्त २। रुचिरप्रभ ३। रुचिरकांत ४। रुचिरवर्ण ५ रुचिरलेश्य ६। रुचिरध्वज ७ रुचिरशृंग ८ रुचिरसिद्ध ९ रुचिरकूट १० रुचिरावतसक ११ एणेविमाने जेहदेवतापणे ऊपनाछे। तेहदेवतानो नवसागरोपमआउखोकह्यो। तेहदेवता नवअर्द्धमासे पखवाडे स्वासोस्वासले घणोंस्वासोस्वासले ऊंचोस्वासले नीचोस्वासले तेहदेवताने नववर्ष सहस्रे आहारनो अर्थ





तस्यस्थानान्याश्रया भेदावा चित्तसमाधिस्थानानि तत्रधर्मोजीवादिद्रव्याणामनुयोगोत्पादादय: स्वभावास्तेषां चितानुप्रेक्षा धर्मस्यवाश्रुतचारित्रात्मकस्य सर्व प्रभाषितस्य हरिहरादिनिगदितधर्मस्य: प्रधानोयमित्येवंचिताधर्मचितावा शुश्रूषेवक्ष्यमाणसमाधिस्थानातरापेक्षया विकल्पार्थ: सइति य:कल्याण भागी तस्यसाधोरसमुत्पन्नपूर्वा पूर्वस्मिन्नादोऽतीतेकाले ऽनुपजाता तदुत्पादेह्यर्द्धपुद्गलपरावर्त्तंते कल्याणस्यावश्यभावात् समुत्पद्येत जायेतस किं प्रयोजनाय चेयम तयाह सर्वं निरवशेषधर्मं जीवादि द्रव्यस्वभाव मुपयोगोत्पादादिकं श्रुतादिरूपवा जाणित्तए ज्ञपरिज्ञयाज्ञातु ज्ञात्वाच प्रत्याख्यान परिज्ञया परिहरणीय कर्मपरिहर्तुमिदमु भवति धर्मचिताधर्मज्ञानकारणभूता जायतइति इयंच समाधेरुक्तलक्षणस्य स्थानमुक्तलक्षणमेव भवतीति प्रथम तथास्वप्नस्य निद्रावशवि कल्पजानस्यदर्शनसवेदनस्वप्नदर्शनं तद्याकल्याणप्राप्ति रूपकासमुत्पन्नपूर्वं समुत्पद्यते यथाभगवतो महावीरस्या ऽस्थिकग्रामे शूलपाणियक्षोद्दसर्गावसाने किंप्रयो जनचेद मित्याह अहातच सुमिणपासित्तएत्ति यथा येनप्रकारेणतथ्य: सर्वथानिर्व्यभिचार इत्यर्थ: तत्वच स्वप्नफलमुपचारात्तद्द्रष्टुज्ञातु अवश्यंभाविनोमुक्त्यादे: शुभस्वप्नफलस्यदर्शनायसाधो. स्वप्नदर्शनमुपजायत इतिभाव: क्वचित्सुजाणतिपाठ स्तच्च वितथमवश्य भाविसुयान सुगतिदष्टुज्ञातु सुज्ञानवा भाविशुभार्थपरि

सव्वंधम्मंजाणित्तए सुमिणदंसणेवासे असमुप्पन्नपुव्वेसमुपज्जिज्जा अहातच्चंसुमिणंपासित्तए सन्निनाणवासे

मानि १ तथास्वप्नगोदेखणो जेस्वप्नदीठे महाकल्याणनी प्राप्तिहोय तेजारेंछे असमुत्पन्नपूर्वंक एहवी पूर्वेंदीठोनथी तेस्वप्ननो स्यूंप्रयोजन अहातच्च सुमिणपासित्त ए यथातथ्यजूठोनही एहवोस्वप्ननो फलजाणि वानेअर्थे अवश्यमोक्षजाणहार शुभस्वप्नदेखो चित्तसमाधिपामे जिम श्रीमहावीरस्वामीए छेहलीरात्रिये १० स्वप्नमास्या प्रभाते केवलज्ञानऊपनू एहवोजू समाधिठाणू २ । सन्नी ज्ञान तेचित्तसमाधि स्थानक मनसहितनें सन्नीकहिये तेहनूंज्ञान तेजातिस्मरण

॥ श्रीजिनायनमः ॥ श्रीवर्द्धमानमानम्य समवायांगवृत्तिका । विधीयतेन्यशास्त्राणां प्रायःसमुपजीवनात् ॥ १ ॥ दुःसंप्रदायादसदूहनाद्वा भणिष्यतेयद्वितथं मयेह । तद्बोधनैर्मामनुकंपयद्भिः शोध्यंमतार्थंचतिरस्तुमेव ॥ २ ॥ इहस्थानाख्यतृतीयांगानुयोगानतरं क्रमप्राप्तएवसमवायाभिधानचतुर्थाङ्गानुयोगोभयतीति- सोऽधुनासमारभ्यते तत्रचफलादिद्वारचिंतास्थानांगानुयोगवत्क्रमादवसेया नवरं समुदायार्थोयमस्य समिति सम्यक् अवेत्याधिक्येन अयनमयः परिच्छेदो- जीवाजीवादिविविधपदार्थसार्थस्य यस्मिन्नसौसमवायः समवयंतिवा समवतरंति संमिलंति नानाविधाआत्मादयोभावा अभिधेयतयायस्मिन्नसौ समवायइति सचप्रवचनपुरुषस्यांगमिवांगमितिसमवायांगं तत्रकिलश्रीश्रमणमहावीर वर्द्धमानस्वामिनःसंबंधी पंचमोगणधर्मार्यसुधर्मस्वामीस्वशिष्यंजंबूनामानमभिसम वायागार्थमभिधित्सुः भगवतिधर्माचार्येबहुमानमाविर्भावयन् स्वकीयवचनेनच समस्तवस्तुविस्तारस्वभावभासिकेवलालोककलितमहावीरवचननिश्रिततयाविगानेनप्रमाणमिदमिति । शिष्यस्यमतिचारोपयन्निदमादावेवसंबंधसूत्रमाह ॥ सुयंमेइत्यादि श्रुतमाकर्णितंमेमयाहेआयुष्मन्चिरंजीवितजंबूनामन् तेणं यो सोनिर्मूलोन्मूलितरागद्वेषादिविषमभङ्गुरिपुसैन्यतया भुवनभावावभासनसहसवेदनपुरस्सराविसंवादिवचनतयाच त्रिभुवनभवनप्रांगणप्रसर्पत्सुधाधवलयशोराशिस्तेनमहावीरेणभगवतासमग्रैश्वर्यादियुक्तेन एवमितिवक्ष्यमाणेन प्रकारेणाख्यातं अभिहितमात्मादिवस्तुतत्वमितिगम्यते, अथवा आउसंतेणंति भगवतेत्यस्य

॥र्द०॥ श्रीविघ्नराजायनमः ॥ सुयंमेआउसंतेणं भगवयाएवमक्खायं इहखलुसमणेणं भगवयामहावीरेणं

॥ देवदेवंजिननत्वा पार्श्वचन्द्रर्षिसद्गुरून् । समवायांगसूत्रस्य वार्त्तिकविदधाम्यहम् ॥ १ ॥ पांचमोगणधरसुधर्मास्वामीजंबूशिष्यप्रतेकहेछे सांभल्योमेभगवंतनें समीप ॥ हेसंयमसुद्धआउखानाधणीजंबू तेणे भगवंतज्ञानवतरूपवंते एहवोजे आगलकहीस्येंतेकह्यो एहवोजिनप्रवचननेविषेनिश्चे तेभगवंतकेहवाछे श्रमण

द्राप्रथममेव इच्छामिखमासमणो वंदिउंजावणिज्जाएनिसीहियाएत्ति अभिधायावग्रहानुज्ञापनायावनति द्वितीयं । पुनर्यदावगृहानुज्ञापनायैवावनमतीति
यथाजात श्रमणत्वभवनलक्षणं जन्माश्रित्य योनिःक्रमणलक्षणंच तत्ररजोहरणमुखवस्त्रिका चोलपट्टमात्रया श्रमणोजातोरचितकरपुटस्तुयोन्यानिर्गतएवंभू
तएववन्दते तद्व्यतिरिक्ताद्वा यथाजातभण्यते कृतिकर्मवंदनकं । बारसावयंति द्वादशावर्त्ताः सूत्राभिधानगर्भाः कायव्यापारविशेषाः यतिजनप्रसिद्धायस्मिं
स्तद्द्वादशावर्त्तंते । तथाचउसिरन्ति चत्वारिशिरांसियस्मिस्तच्चतुःशिरः प्रथमप्रविष्टस्यचामणाकाले शैष्याचार्यशिरोद्वयंपुनरपिनिःक्रम्यप्रविष्टस्यद्वयमेवेति
भावना । तथातिहिगुत्तति तिसृभिर्गुप्तिभिर्गुप्तः पाठांतरेपि तिसृभिःअत्रागुप्तिभिरेवेति तथादुपवेसन्ति द्वौप्रवेशौयस्मिंस्तद्द्विप्रवेशं तत्रप्रथमोवगृहमनुज्ञाप्य
प्रविशतो द्वितीयः पुनर्निर्गत्यप्रविशतइति एगनिक्खमणंति एकनिःक्रमणमवगृहादावसिक्यानिर्गच्छतः द्वितीयवेलायां ह्ययगृहान्ननिर्गच्छति पादपतितएव

जहाजायं कितिकम्मं बारसावयं चउसिरं तिगुत्तं दुपवेसं एगनिक्खमणं विजयाणंरायहाणी दुवालसजोय

आहार पाणी संभोगीने आणीदेतो मात्रादिक परठवतो संभोगी अन्यथा विसंभोगी ९ । समोसरण तेथके यतीएकठा मिलिए तिहां समोसरण संभोग
साधुनो अवग्रहलेई एकठोरहिवो १० । संनिषद्यागत संभोगीसाथें एके बैसतो बेसी शास्त्रचिंतन करतो पासत्थासाथे करतो विसंभोगी ११ संभोगीसाथें क
थाप्रबंध करतोशुद्ध १२ । पासत्थासाथें करतो विसंभोगी ॥ बारें आवर्तमाहें तेकृतिकर्म वांदणाकह्या भगवंते श्रीवर्द्धमानसामी एं तेकहेछे बेअवनत बेवेला
मस्तकनमाडवो गुरूनी थापनाकीजे तेहथकी अऊठहाथ बेगला रहीपडिकमीए अऊठहाथमाही अवग्रहकहिये उभांथका इच्छामिखमासमणो कहिये बिहु
वांदणे बिहुवेला मस्तकनमाडिये पछेअवग्रहमांहि आविये यथाजातमुद्रा जन्मअवसरी बालकनीपरे वलोटीभरीहाथजोडीरही कृतकर्मवांदणा १२ आ ।

विशेषणमायुष्मताचिरजीवितवताभगवतेति अथवापाठांतरेणमयेत्यस्यविशेषणमिदं आवसतामयागुरुकुलेआमृशतावासंस्पृशतावामयाविनयनिमित्तंकरत लाभ्यांगुरोः क्रमकमलयुगलमिति यद्वा आउसतेणंति आयुष्मताणेनप्रीतिप्रवणमनसेति । यदाख्यातंतदधुनोच्यते एगेआयाइत्यादि कस्यांचिद्वाचनायामपर मपिसंबधसूत्रमुपलभ्यते यथा इहखलु समणेणं भगवयाइत्यादि तामेवचवाचनांवृहत्तरत्वाद्व्याख्यास्यामः इदंचद्वितीयसूत्र सप्रहरूपप्रथमसूत्रस्यैवप्रपंचरूपमवसे यमस्यचैवंगमनिका इहास्मिन्लोके निर्ग्रंथतीर्थेवा खलुवाक्यालंकारे अवधारणेवा यथाचइहैव नशाक्यादिप्रवचनेषु आम्यतितपस्यतीति श्रमणस्तेनेदंचाति मजिनस्यसहसम्मतिसम्पन्नंनामातरमुक्तंयदाह सहसंमइयामणेत्ति । भगवतेतिपूर्ववत् महांश्चासौ वीरश्चेतिमहावीरस्तेनेदंच महासात्विकतया प्राणप्रहाणप्र वणपरीषहोपसर्गनिपातेप्यप्रकम्पत्वेनपीयूषपानप्रभुभिराविर्भावितमाहच अयलेभयभेरवाणंखतिखमेपरीसहावयवग्गाणपडिमाणंपरेदेवेहिंकएमहावीरेत्तिक थभूतेनेत्याह आदौप्राथम्येनश्रुतधर्ममाचारग्रथात्मकंकरोतितदर्थप्राणायकत्वेनप्रणयतीत्येवंशीलआदिकरस्तीर्थकरस्तेन तरतितेनसंसारसागरमितितीर्थंप्रव चनंतद्व्यतिरेकादिहसंघस्तीर्थंतस्यकरणशीलत्वात्तीर्थकरस्तेन तीर्थकरत्वचतस्यनान्योपदेशबुद्धत्वपूर्वकमित्यतआह स्वयमात्मनैवनान्योपदेशतः सम्यग्बुद्धोहे योपादेयवस्तुतत्वंविदितवानितिस्वयसंबुद्धस्तेन स्वयंसंबुद्धत्वचास्यप्राकृतस्येवसभाव्यं पुरुषोत्तमत्वादस्येत्यतआह पुरुषाणांमध्येतेनतेन अतिशयेनरूपादिनोन्नतत्वा

आइगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसुत्तमेणं पुरिससीहेणं पुरिसवरपुंडरीएणं पुरिसवरगंधहत्थिणा लोगत्त

तपस्वीतेणे भगवंतऐश्वर्यादिकगुणेकरीसहिततेणेकर्मरूपवैरीने विदारेतेमहावीरकहीयेतेणे श्रुतधर्मनीआदिनाकरणहारतेणे तीर्थचतुर्विधसंघनाकरणहा रतेणे परनाउपदेसविनापोतेजप्रतिबोधपाम्यातेणेकरी स्वामीसर्वपुरुषमांहिउत्तमतेणे पुरुषमांहिसिंहसरीखातेणेकल्याणजाइतेणे पुरुषमांहिप्रवरप्रधान-

काचतुर्विंशति घटिकाप्रमाणा लोकप्रसिद्धासातिरिका सामान्या सर्वदिवसोत्पत्ति। सर्वजघन्योद्वादश मौहूर्त्तिकएवेत्यर्थः सचदक्षिणायनपर्यंतदिवसत्ति। ॥

महाविमाणस्स उवरिल्लाउचूलिआउ दुवालसजोयणाइं उड्ढंउप्पइत्ता इसिपब्भारनामपुढवी प० इसिपब्भाराएणंपुढवीए दुवालसनामधिज्जा प० तं० इसित्तिवा इसिपब्भारात्तिवा तणूइवा तणूयरित्तिवा सिद्धित्तिवा सिद्धालएत्तिवा मुत्तीवा मुत्तालएत्तिवा बंभेत्तिवा बंभवडिंसएत्तिवा लोकपडिपूरणात्तिवा लोगग्गचूलिआइ ॥

चिणायनना छेहल्योदिवस मकरसंक्राति पोसीपूर्निमनो १२ मुहूर्तनो २४ घडीनो दिवसकह्यो सर्वअर्थ जिहांगई थकेंसीधा एकावतारीपणामाटे तेहसर्वार्थसिद्ध महाविमान कह्यो तेहनी उपरिली चूलिका शिखरायथकी १२ योजनछे ऊंचो उत्पत्तिने जईने ईषत्प्राग्भार नामपृथिवी सिद्धशिलाकह्यो रत्नप्रभादिक वीजी पृथिवीनो अपेक्षाये ईषत् थोडोछे प्राग्भार विस्तार तथा पिण्ड जेहनो तेह ईषत्प्रग्भार सिद्धिशिलाछे तेहना १२ नामधेय कहता नामकह्या ते कहेछे। ईषत् कहीये थोडो ४२ लाखयोजन प्रमाणमाटे १ ईषत्प्राग्भार वीजी पृथिवीनो अपेक्षाए थोडा २ तनूपातलीविचि ८ योजन जाडीछे हडेमाखिनाआंख सरीखी पातली ३ तनुतरीघणीज पातली ४ तिहां पहुतेथके जीवनाकार्य सीझे तेसिद्धिकहिये ५ सिद्धथयाछे तेहनू आलयकहतां घरते सिद्धालय ६ तिहां जीवपहुताथकी कर्मथकी मूंकाणातेमुक्ति ७ मुक्तजेसिद्ध तेहनू आलयघरते मुक्तालय ८ ब्रह्मसकललोक तेहमय ९ ब्रह्मावतंसक ब्रह्मसकललोक तेहनो मुगटरूप १० लोक १४ राजलोक तेजेणेकरी प्रतिपूर्णथया तेलोक प्रतिपूरण ११ लोक १४ राजलोक तेहनेसाथें चूलिकाचोटी रूपशिखररूप तेलोकाग्रचूलिका १२ एणीएरत्नप्रभा पहिलीपृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो वारपल्योपम आउखोकह्यो। पचमी धूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारक

दूर्पेणत्विवादुत्तमः पुरुषोत्तमस्तेन अथपुरुषोत्तमत्वमेवसिंहादुपमानत्रयेणास्यसमर्थयन्नाह सिंहइवसिंहःपुरुषश्चासौसिंहश्चेतिपुरुषसिंहः लोकेनहिसिंहेशौर्य मतिप्रकृष्टमभ्युपगतमत.शौर्यैसउपमानंकृतः शौर्यंतुभगवतोबाल्येप्रत्यनीकदेवेनभाप्यमानस्याप्यभीतत्वात् कुलिशकठिनमुष्टिप्रहारप्रहतिप्रवर्द्धमानामरशरीर कुब्जताकरणाच्चेत्यतस्तेन तथा वरंचतत्पुण्डरीकञ्चवरपुंडरीकंधवलंसहस्रपत्रं पुरुषएववरपुंडरीकं धवलताचास्यभगवतःसर्वाऽशुभमलीमसरहितत्वात् सर्वैश्च शुभैरनुभावैःशुद्धत्वादित्यतस्तेन तथा वरश्चासोगंधहस्तीएवंवरगंधहस्तीपुरुषएववरगंधहस्तीयथागंधहस्तिनोगंधेनैवक्षुद्रगजाभज्यन्तेतथाभगवतस्तद्देशविहरणेन ईतिपरचक्रदुर्भिक्षजनडमरिकादीनिदुरतानिनश्यंतीतिशततयोजनमध्येऽतस्तेनपुरुषवरगंधहस्तिनानभगवान्पुरुषाणामेवोत्तमःकिंतुसकलजीवलोकस्यापीत्यत आहलोकस्यतिर्यग्नरनारकिनाकिलक्षणजीवलोकस्योत्तमश्चतुस्त्रिंशदतिशयाद्यसाधारणगणोपेततयासकलसुरासुरखचरनरनिकरनमस्यतयाचप्रधानोलोको त्तमस्तेनलोकोत्तमत्वमेवास्यपुरस्कुर्वन्नाहलोकस्यसंज्ञिभव्यलोकस्यनाथःप्रभुर्लोकनाथस्तेननाथत्वञ्चास्ययोगक्षेमकृत्त्वान्नाथइतिवचनादप्राप्तसम्यग्दर्शनादेर्योगकार णेनलब्धस्यतस्यैवपालनेनचेतिलोकनाथत्वञ्चतात्विकंतद्धितत्वेसतिसंभवतीत्याह लोकस्यैकेंद्रियादिप्राणिगणस्यहितआत्यंतिकतद्रक्षाप्रकर्षप्ररूपणेनानुकूलवृत्ति र्लोकहितस्तेन यदेतन्नाथत्वंहितत्वंवा तज्ज्ञयात्तानांयथावस्थितसमस्तवस्तुस्तोमप्रदीपणेननान्यथेत्य ाहलोकस्यविशिष्टतिर्यग्जन्मजरामरणरूपस्यांतरतिमिरनि करनिराकरणेनप्रकृष्टपदार्थप्रकाशकारित्वात्प्रदीपइवप्रदीपोलोकप्रदीपस्तेनइदंचविशेषणं दृष्टलोकमाश्रित्योक्तमथदृश्यंलोकमाश्रित्याह लोकस्य लोक्यतेइति

पुंडरीककमलसमानजिमकमलपंकपांणीयेंनलीपैंतिमभगवंतकामभोगेंनलीपैंतेणे पुरुषमांहिवरप्रधानगंधहस्तीसमानअन्यतीर्थीमदछ डेईतिमारीनासेभगवं तनेदेखीनेतेणे लोकसमस्तमांहिउत्तमतेणे लोक ८४ लाखजीवायोनितेहनांनाथधणीतेणे लोकभव्यलोकतेहनेहितनाकरणहारतेणे लोक १४ राजप्रमाण

५ यस्तुतेषामंगोपांगानि भनक्ति सोत्यंतरौद्रत्वादुपरौद्र इति ६ कालेत्ति यः कंद्वादिषु पचति वर्णतः कालश्च स कालः ७ महाकालेइतिचापरे परमाधार्मिक इति प्रक्रमः सच श्लक्ष्णमांसानि खण्डयित्वा खादयति वर्णतश्च महाकालइति असिपत्तेत्ति असिः खड्गस्तदाकारपत्रवदनविकुर्व्य यस्तत्समाश्रितनारकानसिपत्र पातनेन तिलशश्छिनत्ति सोऽसिपत्रः ८ धणुत्ति योधनुर्विमुक्तार्धचन्द्रादिबाणैः कर्णादीनां छेदनभेदनादिकरोतिसधनुरिति १० कुंभेत्ति यः कुंभादिषुतान् पचतिसकुंभ. ११ वालुत्ति यः कदंबपुष्पाकारासुवज्राकारासुवा वैक्रियवालुकाकारासु तप्तासुचणकानिवतान् पचतिसवालुकाइति १२ वेतरणीयत्ति वेत रणीत्तिचपरमाधार्मिकः सचपूयरुधिरत्रपुताम्रादिभिरतितापात्कलकलायमानैर्भृतां विरूपतरणप्रयोजनमस्यांते वेतरणीति यथार्थानदींविकुर्वंस्तत्तारणेन कदर्थयतिनारकानिति १३ खरस्सरेत्ति योवज्रकण्टकाकुल शाल्मलीवृक्ष नारकानारोप्यखरस्वरं कुर्वन्अकुर्वन्वा कर्षतिसखरस्वरइति १४ महाघोसेत्ति योभी

ये ४ खड्गभालानेविषे नारकीनेपाडे तेरुद्रपणाथकी रुद्र ५। नारकीना आंगोपांग भाजेते अत्यतरौद्र ६। नारकीने कडाहीमां वालीने पचावे तेकाल ७। महाकाल अपर अनेरो तेहनारकीना सूक्ष्ममासनां खंडकरीखाय वर्णेकरी पिणमहाकाल ८ शाल्मलीवृक्ष हेठौ नारकीने वेसारी तेहनापत्र असिखड्गाकारे विकुर्वी तेह असिपत्रने पाडे वेकरी तिलतिलमात्र छेदेते असिपत्र परमाधर्मी ९। तेहना धनुषथकी अर्धचन्द्रबाण तेणेकरी नारकीना कर्णनासादिकने छेदे भेदे तेधनुषनाम १०। कुभत्ति कुंभीमांहि तेहनारकीने पचावे तेकुंभ ११। कदंबपुष्पाकारे वैक्रिय तातीवेलूकरी तेमांहि भाटीनाचणानेपरी पचावे तेवा लुका १२। वैतरणीनदी विकुर्वी पूतिरुधिरतरूतांबो महातप्त कलकलायमानेभरी तेमांहि नारकीने वोलेकदर्थे तेहवैतरणीनाम १३। खरस्वरइति वज्रम य काटासहित शाल्मलीवृक्ष विकुर्वी तेह उपरिनारकीने चढावीनेताणे जिमकांटा उपरि लूगडूंनाखीने तांणी तेखरस्वर १४ महाघोसेति वीहता नासता

णत्ति मोचसाधनयोगसंग्रहाय शिष्येणाचार्यायालोचनादत्ता १ निरवलावेत्ति आचार्योपिमोचसाधकयोगसंग्रहायैवदत्तायामालोचनायां निरपलापः स्या न्नान्यस्मैकथयेदित्यर्थः २ आवईसुदढधम्मयत्ति प्रशस्तयोगसंग्रहाय साधुनाऽऽपत्सुद्रव्यादिभेदासुदृढधर्मताकार्या सुतरां तासु दृढधर्मिणाभाव्यमित्यर्थः ३ अणि स्सिओवहाणेयत्ति शुभयोगसंग्रहायैवानिश्रितंच तदन्यनिरपेक्षमुपधानं परसाहाय्यानपेक्षतपोविधेयमित्यर्थः ४ सिक्खत्ति योगसंग्रहायशिक्षासेवितव्या सा चसूत्रार्थग्रहणरूपा प्रत्युपेक्षाद्यासेवनात्मिकाचेतिद्विधा ५ निप्पडिकम्मयत्ति तथैवनिष्प्रतिकर्मताशरीरस्यविधेया ६ अन्नायत्ति तपस्यज्ञानतानकार्या यशःपू जाद्यर्थिलेनाऽप्रकाशयद्भिस्तपःकार्यमित्यर्थः. ७ अलोभेयत्ति अलोभता विधेया ८ तितिक्खत्ति तितिक्षापरीषहादिजयः ९ अज्जवेति आर्जवः ऋजुभावः १० सुइत्तिशुचिः सत्यसंयमइत्यर्थः ११ सम्मदिट्ठित्ति सम्यग्दृष्टिः सम्यग्दर्शनशुद्धिः १२ समाहियत्ति समाधिश्चचेतः स्वास्थ्यं १३ आयारविणए विणएत्ति द्वारद्वयं तत्रा

निप्पडिकम्मया ॥ १ ॥ अणायया अलोभेय । तितिक्खा अज्जवे सुइ ॥ सम्मदिट्ठी समाहीय । आयारे

कहो अनेराआगल न कहिये २ । प्रशस्त योगसंग्रह भणी यतीने आपदा आव्यांथके दृढधर्म करिवो ३ । अनिश्रायें अपेक्षाविना उपधान तपकरिवो ४ । सूत्रार्थ ग्रहण रूप शिक्षानी सेवा ५ । शरीरनो निष्प्रतिकर्मना करवो एतले सुश्रूषानकरवी ६ । यशपूजाने अर्थे अप्रकाशतोथको तपकरे ७ अलोभताकरवी ८ । तितिक्षा परीषहनो जयकरिवो ९ । आर्जव सरल स्वभाव १० सत्यसनियम ११ । सम्यग्दर्शन शुद्धि १२ । चित्तनूं स्वस्थपणूं १३ । आचार सहित थईने मायानकरे १४ । विनय युक्तहोय मायानकरे १५ । अदीनपणूं १६ । सवेग संसारथीभय अथवा मोक्षनी इच्छा १७ प्रणिधि कायादिकनोठामेराखिवो १८ ।

जीवीभायप्राणधारणमनरणधर्मत्वमित्यर्थस्तंदयतइति जीवदयोजीवेषुवा दयायस्यसजीवदयोऽतस्तेन इदंचानंतरोक्तं विशेषणकदंबकंभगवतोधर्ममयत्वात् संपन्नमिति धर्मात्मकतामस्यविशेषणपंचकेनाह धर्मंश्रुतचारित्रात्मकं दुर्गतिप्रपतज्जंतुधारणस्वभावंदयतेददातीतिध दयस्तेन तद्दानंचास्यतद्देशनादेवेत्यतो आह धर्मंश्रुतलक्षणं देशयति कथयतीतिधर्मदेशकस्तेन धर्मदेशकत्वचास्य धर्मस्वामित्वेसति नपुनर्यथानटस्येतिदर्शयन्नाह धर्मस्यक्षायिकज्ञानदर्शनचारित्रात्मकस्यनायकः स्वामी यथावत्पालनाद्धर्मनायकस्तेन तथाधर्मस्यसारथिर्धर्मसारथिः यथारथस्यसारथी रथरथिक, भश्वांश्चरक्षति एवंभगवांश्चारित्रधर्मांगानांसंयमात्मप्रवचनाख्यानां रक्षणोपदेशाद्धर्मसारथिर्भवतीति तेनधर्मसारथिना तथात्रयः समुद्रा चतुर्थोहिमवान् एतेचत्वारः अंताः पृथिव्याःपर्यन्तास्तेषु स्वामितयाभवतीति चातुरंतः सचासौचक्रवर्तीच चातुरंतचक्रवर्त्ती वरश्चासौचातुरंतचक्रवर्त्तीचेति वरचातुरंतचक्रवर्त्ती राजातिशयः धर्मविषये वरचातुरंतचक्रवर्त्ती धर्मवरचातुरंतचक्रवर्त्ती यथाहि पृथिव्यांशेषराजातिशायी वरचातुरंतचक्रवर्त्ती भवति तथाभगवान्धर्मविषये शेषप्रणेतॄणांमध्ये सातिशयस्तेनतथो

जीवदएणं बोहिदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मनायगेणं धम्मसा
रहिणा धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिणा अप्पडिहयवरनाणदंसणधरेणं

नादातारतेणेकह्यो धर्मोपदेसनाकहणहारतेणे धर्मनानायकअधिकारीतेणे धर्मनासारथीभूलाप्राणीनेमार्गेआणेतेणे च्यारिगतिनोअंतकारकधर्मतेणेकरीचक्रवर्त्तिसरीखात्रिभुवननोराज्यपालेतेणे द्वीपनीपरेंसरणानात्राणआधारदेणहार चातुर्गतिकसंसारतेहनिवारिवानेविषेआधारभूत अप्रतिहतअस्खलित

वति तथाचतृतीयेमंडलेयदा सूर्यश्चरति तदाद्वादशमुहूर्त्ताश्चत्वारश्चैकषष्ठिभागा मुहूर्त्तस्य दिनप्रमाणम्भवति तदर्द्धं चैकषष्ठिभागीकृतेन अष्टषष्ठ्यधिक शतम्
यत्तत्त्वेन स्थूलगणितस्यविवक्षितत्वात् परित्यक्तांशाः ३१८२२९ तृतीयमंडलपरिधीगुणितेसति एकषष्ठ्याचषष्ठिगुणितया भागेहृतेयल्लभ्यते तत्तृतीयमंडलेच
क्षु स्पर्शप्रमाणंभवति तच्चेदंत्रिंशत्सहस्राण्येकोत्तराणि ३२००१ अंशानामेकषष्ठ्याभागेलब्धाश्च एकोनपंचाशत्षष्ठिभागा योजनस्य ४९ । ६० त्रयोविंशतिश्चैक
षष्ठिभागा योजनषष्ठिभागस्य २३ । ६१ एततृतीयमंडले चक्षु.स्पर्शस्यप्रमाणं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यामुपलभ्यते इह यदुक्तं त्रयस्त्रिंशत्किंचिन्न्यूना तत्सातिरेकस्ययोज
नस्यापिन्यूनसहस्रता विवक्षितेतिसम्भाव्यते चतुर्दशेमंडलेपुनरिदं यथोक्तमेवप्रमाणंभवति प्रतिमंडलयोजनचतुरशीत्याः साधिकायाः प्रथममंडलमानेप्रक्षेप

हि किंचिविसेसूणेहिं चक्खुफासं हव्वमागच्छइ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई अहेसत्तमाए पुढवीए काल महाकाल रोरुए महारोरुएसु नेरइयाणं उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमाइं ठिई अप्पइट्ठाणे नेरइएनेरइयाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प० ॥

चाल्यो निषध पर्वत भणी तिवारे त्रीजे मांडले तेत्रीस हजार झांझेरो दृष्टिगोचर आवे । त्रीजे मंडले सूर्य चारकरे तिवारे बारे मुहूर्त एक मुहूर्तना एकस
ठिया च्यार भाग प्रमाणें दिवस होय । अने सर्वबाह्य मंडले सूर्य होय तिवारें ऐकतीस हजार आठ से एकतीस योजनना साठिया तीस वेगलें थकें इहां
ना माणसने दृष्टिगोचर आवे । एणीये रत्नप्रभा पृथिवीये केतला एक नारकीनो तेत्रीस पल्योपमनो आउखो कह्यो । हेठे सातमी पृथिवीयें पूर्वादिक दिस
थकीमांडी काल १ । महाकाल २ । रुरुक ३ । महारुरुक ४ । एह चिहु नरकावासाना नारकीनो उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपमनो स्थिति कही । विचले

च्यत इति तेनधर्मवरचातुरंतचक्रवर्तिना एतच्च धर्मदायकत्वादिविशेषणपंचकत्वं प्रकृष्टज्ञानादियोगेसति भवतीत्यत आह अप्रतिहतेकटकुड्यपर्वतादिभिर
स्खलिते अविसंवादकेवा अतएवक्षायिकत्वाद्वा वरेप्रधाने ज्ञानदर्शने केवललक्षणे धारयतीति अप्रतिहतवरज्ञानदर्शनधरस्तेन एवंविध संवेदनसंपदुपेतो
पि छद्मवान् मिथ्योपदेशित्वान्नोपकारीतिनिश्छद्मता प्रतिपादनायाह अथवाकथमस्याप्रतिहतसंवेदनत्वं संपन्नमत्रोच्यते आवरणाभावादेतदेवाह व्याव
त्त निवृत्तमपगतं छद्मशठत्वमावरणंवा यस्यसतथातेन व्यावृत्तछद्मना मायावरणयोश्चाभावो ऽस्यरागादिजयाज्जातमित्यतआह जयतिनिराकरोति रागद्वे
षादिरूपानरातीनितिजिनस्तेन रागादिजयश्चास्यरागादिस्वरूपतज्जयोपायज्ञानपूर्वकएवभवतीत्येतदस्याह जानातिछाद्मस्थिकज्ञानचतुष्टयेनेति ज्ञायक
स्तेन अनंतरमस्यस्वार्थसंपत्युपायउक्तोऽधुनास्वार्थसंपत्तिपूर्वकं परार्थसंपादकत्वविशेषणषट्केनाह तीर्णइवतीर्णः संसारसागरमितिगम्यते तेनतद् त्यति
परानप्युपदेशवर्त्तिन इतितारकस्तेन तथाबुद्धेनजीवादितत्व तथाबोधकेन जीवादितत्वमेवाऽपरेषां तथामुक्तेनबाह्याभ्यंतरग्रंथिबंधनात् मोचकेन ततएवपरे

वियट्टछउमेणं जिणेणं जावएणं तिन्नेणं तारएणं बुद्धेणं बोहिएणं मुत्तेणं मोयगेणं सव्वन्नुणा सव्वदरिसिणा

वरप्रधानज्ञानदर्शनतेहनाधरणहारतेणे छद्मस्थपणाथीकपटपणाथकीनिवर्त्यावीतरागथयातेणे रागद्वेषनेजीपणहारतेणे अनेरानेरागद्वेषजीपावतेणे पोतेसं
सारसमुद्रतरातेणे अनेरानेसंसारसमुद्रतारेतेणे आपणपेंतत्वनाजाणतेणे अनेरानेप्रतिबोधेतेणे आपणपेकर्मथकीमूंकाणातेणे अनेरानेकर्मथकीमूंकावतेणे
सर्वपदार्थना जाणतेणे सर्ववस्तुदेखणहारतेणे एहवामहावीरमोक्षजाइवावांछे छेतेमोक्षकेहवोछे उपद्रवरहितठामथकीचालेनहीतेणे जिहांरोगनहींजेह

रिनभवतीति एकोनत्रिंश. २९ एवंपरचक्रं परराजसैन्यमितित्रिंश: ३० अतिवृष्टिरधिकवर्षइत्येकत्रिंश: ३१ अनावृष्टिर्वर्षणाभावइतिद्वात्रिंश: ३२ दुर्भिक्षंदु' ष्कालइतित्रयस्त्रिंश' ३३ उप्पाइयावाहित्ति उत्पाता अनिष्टसूचका रुधिरवृष्ट्यादयस्तद्धेतुकाये ऽनर्थास्तेऽपि औत्पातिका स्तथाव्याधयोज्वराद्यास्तदुपशमोऽभावइति चतुस्त्रिंशत्तम: ३४ अन्यच्च पच्चाहरओइत्तआरभ्ययेभिहितास्ते प्रभामंडलचकर्मक्षयकृता॥ शेषाभवप्रत्ययेभ्योऽन्येदेवकृताइति एतेचयदन्यथापिदृश्यंते तन्मतांतर मेवमतव्यमिति चक्कवट्टिविजयत्ति चक्रवर्त्ति विजेतव्यानिक्षेत्रखण्डानि उक्कोसेणंएएचौत्तीस तित्थगरासमुप्पज्जातित्ति समुत्पद्यन्ते सम्भवन्तीत्यर्थं' नत्विकसमयेजा

वियणं जोयणपणवीसाएण ईती नभवइ २७ मारी नभवइ २८ सचक्कं न भव इ २९ परचक्कं न भव इ ३० अइवुठी न भवइ ३१ अणावुठी न भवइ ३२ दुभिक्खं न भवइ ३३ पुव्वुप्पन्नाविय णं उप्पाइया

अतिवृष्टि अधिका वृष्टिनहोय ३१ । अनावृष्टि अवर्षणनहोय ३२ । दुर्भिक्षकालनहोय ३३ । पूर्वं उपना पिण उत्पात अनिष्टसूचक रुधिर वृष्ट्यादिक तथा व्याधि ज्वरादिक तत्कालेंही उपशमे ३४ । एह एकवीसमाथकीमांडी चौत्रीसमालगे अनेप्रभामडल एतला अतिशय कर्मक्षयथकीहोय शेषवीजाभवप्रत्यय थको वीजादेवकृतछे मतांतरे अन्यथा पणिछे । एहचौत्रीस अतिशयकह्या ॥ जंबूद्वीपनेविषे चौत्रीस चक्रवर्तीये जीपवायोग्य एतलेसाधनकरवायोग्य क्षेत्रखं ड तेचक्रवर्तिविजय कह्या तेकहेछे । मेरुथकी पूर्वापर महाविदेहेंमिली ३२ विजय एकभरत एकऐरवत एवंसर्वमिली विजयखड ३४ जंबूद्वीपनेविषे ३४ । दीर्घवैताढ्यकह्या बत्रीस महाविदेह विजयना ३२ । भरतऐरवतना २ एव जंबूद्वीपनेविषे उत्कृष्टआरे ३४ । तीर्थंकरउपजे विदेहना बत्रीसविजय भरतऐरवत ना २ एव ३४ एकेसमेंज मआश्रीचारहोय शीताशीतोदाने बिहुंकांठे एकसमयें बेबेहोय अनेवर्तता ३४ कह्या । महाविदेहेंगचौयेतिवारे भरतऐरवते दिवस

षांतयामुक्ता वेपि सर्वज्ञेन सर्वदर्शिना नतुमुक्तावस्थायांदर्शनांतरा इतिमतपुरुषेणेवभाविजडत्वेन तथाशिवंसर्वाबाधारहितत्वात् अचलंस्वाभाविकप्रायोगिक चलनहेत्वभावात् अरुजमविद्यमानरोगंशरीरमनसोरभावात् अनंतमनंतार्थविषयज्ञानस्वरूपत्वात् अक्षयमनाशं सा्द्यपर्यवसितस्थितिकत्वात् अक्षतंवापरि पूर्णत्वात् पूर्णिमाचंद्रमण्डलवत् अव्याबाधमपीडाकारित्वात् अपुनरावर्तक मविद्यमानपुनर्भवावतारं तद्बीजभूतकर्माभावात् सिद्धिगतिरितिनामधेयंयस्यतत् सिद्धिगतिनामधेयंतिष्ठतियस्मिन्कर्मकृत् विकाररहितत्वेन सदा वस्थितो भवति तत्स्थानंचक्षीणकर्मणोजीवस्य स्वरूपंलोकाग्रंवाजीवस्वरूपविशेषणानितुलोका ग्रस्याधेयधर्माणामाधारेप्यारोपादवसेयानि तदेवंभूतंस्थानं संप्राप्तुकामेनयातुमनसा नतुतत्प्राप्तेन तत्प्राप्तस्याकरणत्वेन प्रज्ञापनाभावात् प्राप्तुकामेनेति यदुच्यते तदुपचारादन्यथाहि निरभिलाषाएवभगवंतःकेवलिनो भवंति मोक्षेभवेचसर्वत्र निस्पृहोमुनिसत्तम इतिवचनात् तदेवमगणितगुणगणसंपदुपेतेन भगवताइमेति इदंवक्ष्यमाणतया प्रत्यक्षमासन्नंत्वद्वादशांगानियस्मिंस्तद्द्वादशांगं गणिनआचार्यस्य पिटकमिवपिटकं गणिपिटकं यथाहिवालंजुकानांजक

सिद्धिगइनामधेयं ठाणंसंपाविउकामेणं इमे दुवालसंगे गणिपिडगे पन्नत्ते ॥ तंजहा ॥

नोअंतनथी जेहनोक्षयनथी जिहांकिसीआबाधानथी जिहांथकीजपराठोआविवोनथी सिद्धिगतिएहवो जेहनोनामधेयछे एहवेठामे मोक्षेजाइवानीवांछा करेछेतेणेमहावीरेएहवाद्वादशांगीसूत्रगणीकहियेआचार्यतेहनेपेटीसरिखाछे जिमव्यापारीयांनेपेटीरत्नादिकधननीआधारहोइ तिम आचार्यनेएहद्वादशां

कारत्वम् विच्छिन्नवर्णपदवाक्यत्वेनाकारप्राप्तत्वम् ३२ सत्वपरिग्टहीतत्वं साहसोपेतता ३३ अपरिखेदितत्वंअनायाससंभवः ३४ अव्युच्छेदित्वविवचितार्थसम्यक् सिद्धियावदनवच्छिन्नवचनप्रमेयतेति ३५ तथादत्तः सप्तमवासुदेवः नदनः सप्तमबलदेवः एतयोश्चावश्यकाभिप्रायेण षड्विंशतिर्धनुषामुच्चत्वंभवति सुबोधंतत् यतोऽरनाथमल्लिस्वामिनोरन्तरेतावभिहितौ यतोवाचि अरमल्लिअंतरेदोणिकेसवा पुरिसपुंडरीयदत्तत्ति अरनाथमल्लिनाथयोश्चोच्छ्रयेणत्रिंशत्पंचविंशतिश्च धनुषामुच्चत्वमेतदंतरालवर्त्तिनोश्चवासुदेवयोः षष्टसप्तमयोरेकोननिंशत्षड्विंशतिश्चधनुषांयुज्यतइति प्रहोत्तानुपचविंशत्यदिदत्तनन्दनौ कुंथुनाथतीर्थकालेभवतो नचैतदेवजिनांतरेष्वधीयतइति दुरवबोधमिदमिति सौधर्मकल्पेसौधर्मावतसकादिषु विमानेषुसर्वेषुपंचसभाभवंति सुधर्मसभा १ उपपातसभा २ अभिषेकसभा ३ अलकारसभा ४ व्यवसायसभा ५ तत्रसुधर्मसभामध्यभागेमणिपीठिकोपरि षष्ठियोजनमानोमाणवकोनामचैत्यस्तम्भोस्ति तत्रवर्द्धमानएसुत्ति वज्रमयेषु

कुंथूणं अरहा पणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था दत्तेणं वासुदेवे पणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था नंदणेणं बलदेवे पणतीसंधणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था सोहम्मे कप्पे सभाए सुहम्माए माणवएचेइयखम्भे हेट्ठाउव

साहस सहित बोलवो ३३ । अनायासे बोलवो ३४ । कहिवानो विषय समाप्त नहोय त्यांलगे वचननो विच्छेदन नहोय ३५ । एह भगवतनी वाणीनागुण जाणिवा एह पेंत्रीस वचनातिशय कह्या ॥ कुंथुनाथ सतरमा अरिहंत ३५ धनुष ऊंचपणे हुया । दत्तनामा सातमो वासुदेव अरनाथनेवारे संभूमचक्रवर्ति पछेहुवोते ३५ । धनुष ऊंच पणे हुआ । नंदननामा सातमो बलदेव ३५ । धनुष ऊंचपणेंकह्यो । सौधर्म कल्पें सभा सुधर्मा ने विषे साठियोजनप्रमाण माणवक नाम चैत्यस्तंभनेविषे हेठे अने उपरि अर्द्ध एतले साढाबारह योजन वर्जीने मध्यने विषे पेंत्रीस योजनें वज्रमय गोल वाटला समुद्गकडा तेहने विषे जिन

स्यापिपिटकं सर्वस्वाधारभूतंभवतिएवमाचार्यस्य द्वादशांगं ज्ञानादिगुणरत्नसर्वस्वाधारकल्पं भवति इतिभावः प्रशस्तं तीर्थकरनामकर्मोदय वर्तितयाप्रायः
कृतार्थेनापिपरोपकारायप्रकाशितंतद्यथेत्युदाहरणोपदर्शनेआचारइत्यादि द्वादशपदानि वक्ष्यमाणानि निर्वचनानीतिकंठ्यानि तत्पणति तत्रद्वादशांगेण

आयारे १ सूयगडे २ ठाणे ३ समवाए ४ विवाहपन्नत्ती ५ नायाधम्मकहाउ ६ उवासगदसाउ ७
अंतगडदसाउ ८ अणुत्तरोववाइदसाउ ९ पण्हावागरणं १० विवागसुए ११ दिट्ठिवाए १२

गीसूत्रज्ञानादिकगुणरत्ननोआधारछे कह्योछे तेकहेछे आचारांगसूत्रप्रथम १ जेहमांहिसाधुनोआचारपामीये । बीजुसूत्रकृतांग जेहमांहिस्वसमयपरसमयनी
वक्तव्यतापामीये २ त्रीजूंस्थानांग तेमांहिएकथकीमाडीदसलगेंसंख्यानादसअध्ययनछे ३ । चोथोसमवायांगजिहांएकथकीमाडीकोडाकोडिनीसंख्या ४ पांच
मोविवाहप्रज्ञप्तीजेहमांहिछत्रीससहस्रप्रश्नपामीयेएतलेभगवतीसूत्र ५ छठोज्ञाताधर्मकथांगजिहां १९ न्यायअनेअउंठकोडिधर्मकथाएछठो ६ सातमोउपासक
दशांगउपासकश्रावकतेहनादशअध्ययनछे ७ आठमोअंतकृतदशांगजेणेयतीएसंसारनोअंतकीधोतेहनाआठवर्गजेमांहिछे नवमीअणुत्तरोपपातिकासूत्रजेह
यनीअनुत्तरविमानेंउपनातेहनातीनवर्गजिहांपामीये ९ दशमोप्रश्नव्याकरणजेहमांहिअगुष्टादिकप्रश्ननोअधिकारहतोहिवडांपाचआश्रवपांचसंवरद्वारइम
१० अध्ययनछे १० इग्यारमोविपाकसूत्रजिहांसुखदुःखनोविपाकछेएतले १० सुखविपाकनीया १० दुखविपाकनीयाअध्ययनछे ११ बारमोदृष्टिवादते १४ पूर्वएक

कायां विमानप्रविभक्तीकालिकश्रुतविशेषस्तत्रकिलबहवो वर्गा अध्ययनसमुदायात्मकाभवन्ति तत्रप्रथमेवर्गेप्रत्यध्ययनमुद्देशस्ययेकालाइति यद्यश्वयुजः पौर्णमा स्यांषट्त्रिंशदंगुलिकापौरुषीच्छायाभवति तदाकार्त्तिकस्यकृष्णसप्तम्यामंगुलस्य वृद्धिंङ्गतत्वात्सप्तत्रिंशदंगुलिकाभवतीति ॥ ३७ ॥ अष्टत्रिंशत्स्थानकव्य क्तमेव नवरंधणुपिट्ठत्ति जम्बूद्वीपलक्षणवृत्तक्षेत्रस्य हैमवतऐरण्यवताभ्यां द्वितीयषष्ठवर्षाभ्यामवच्छिन्नस्यारोपितज्या धनुः पृष्ठाकारेपरिधिखण्डे धनुःपृष्ठेउच्यत तत्पर्यंतभूतेसरलप्रदेशपंक्तौतु जीवेइवजीवेइति एतत्सूत्रसवादिगाथाच चत्तालासत्तसया अडतीससहस्सदसकलायधणुत्ति तथाअत्थसत्ति अस्त्रोमेरुर्यतस्तेनां

त्ततीसं सत्ततीसं जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० खुड्डियाएणं विमाणपविभत्तीए पढमेवग्गे सत्ततीसं उद्देसण काला प० कत्तियबहुलसत्तमीए णं सूरिए सत्ततीसंगुलियं पोरिसीछायं निव्वत्तइत्ता ण चारंचरइ ॥ ३७ ॥ पासस्सणं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अट्ठतीसं अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंप

सोजीपूनिमे हस्त प्रमाण त्रणनी छाया मापीये ३६ अंगुलें पौरुषी होय अने अंगुल सत्तरेण सातेदिने एकेक अंगुल छाया वधारिये तिवारे कार्तिक कृष्ण सातमी दिने सूर्य सैत्रीस अंगुल पौरुषी छाया प्रतें निवर्तावीकरीने चारप्रतें करे। इतिसैत्रीसनो समवाय सपूर्ण ॥ ३७ ॥ हिवे अडतीसमो सम वाय लिखेछे। पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषादानीय पुरुषांमाहि महा सोभागी तेहने अठत्रीस आर्यांना सहस्र उत्कृष्टआर्या साध्वीनी सपदा हुइ। जंबूद्वीपल क्षण वृत्तक्षेत्र ने हैमवत ऐरवत वीजे अने छठे चेत्रे करी सहित ने आरोपित प्रत्यंचा धनुष पृष्ठाकारे परिखंड ते धनुपृष्ठ कहीये अने तेहने पर्यंत भूत सरल सूक्ष्मप्र देश पंक्तिते जीवा सरीखो जीवा कहीये तेह धनुपृष्ठ अठतीस सहस्र सातसे चालीस योजन। ३८७४०। १९। १०। कला दश भाग उगुणीसहाइया ए

मिथलंकारे यसम्रुथेमंगं समवायइत्याख्यातं । तस्यायमर्थः आमादिरभिधेयोभवतीतिगम्यतेतथेतिवाचनांतरद्वितीयसंबंधात्मूत्रव्याख्येति । इहचविदु षाम्पदार्थमभिदधता सक्रमेणवासा वभिधातव्यइति व्याख्येयस्तानाचार्यः एकत्वादिसंख्याक्रमसंगतानर्थान् वक्तुकाम आदावेकत्वविशिष्टानात्मनश्चसर्वपदार्थभा जकत्वेनप्रधानत्वादात्मादीन्सर्वस्यवस्तुनः सप्रतिपक्षत्वेनसप्रतिपक्षानेव एगेआयाइत्यादिभिरष्टादशभिःसूत्रैराह ठानांगेएकार्थानिमायस्तथापिकिंचिदुच्यते एकआत्माकथंविदितमितिगम्यते.इदश्चसर्वसूत्रेष्वनुगमनीयं तत्रप्रदेशार्थतया असंख्यातप्रदेशोपिजीवद्रव्यार्थतया एकः अथवा प्रतिक्षण पूर्वस्वभावक्षयाऽपरस्वरूपो त्पादयोगेनानंतभेदोपि कालत्रयानुगामिचेतन्यमात्रापेक्षयाएकएवआत्मा अथवा प्रतिसंतानं चैतन्यभेदेनाऽनंतत्वेप्यात्मना संग्रहनयाश्रितसामान्यरूपापेक्ष येकत्वमात्मन इति तथानआत्मा अनात्माघटादिपदार्थः सोपिप्रदेशार्थतया ऽसंख्येयानंतप्रदेशोपि तथाविधेकपरिणामरूपद्रव्यार्थापेक्षयाएकएवसंतानापेक्ष

तत्थणं जेसेचउत्थेअंगे समवाएत्तिआहिते तस्सणंअयमठे पं० तंजहा एगेआया एगेअणाया

अंगएद्वादशांगोतेद्वादशांगोमांहिजेहतेंह चोथोअंगएतलेपयचनरूपपुरुषनेअंगसरीखोअंग समवायांगसूत्र आख्येछेआसमवायांगकहतांसम्यक्प्रकारेअधि- कपणेजीवाजीवादिपदार्थजेहनेविषे तेसमवायांगकहिये अर्थाधिकारसूत्रेकहेतेमाटेप्रधानसकलपदार्थनोभोक्तारआत्माछेतेमांटेप्रधानपणाथकीआत्माप्रथम अवतस्योचेतनावंतआत्माकहोयेयद्यपिसंसारमांहिजीवअनंताछेपरंपटद्रव्यनोअपेक्षाएजीवद्रव्यएकजकहीयेएमआगलेसगलेपदेजाणिवो १ तेसमवायांगनोएअ र्थकहियेछे १ तेअनुक्रमेकहेछे एकआत्माजीवसामान्यप्रकारेएकपणोएमसर्वत्र एकअनात्माजीवरहितघटादिकपदार्थ एकदंडभूंडोव्यापारवोयोगत्रणिनोतेदंड

दिसिंपित्तिवाच्यंस्यात् तत्रचैवमभिलापाः जंबूद्दीवस्सणं दीवस्सदाहिणिल्लाओदगभासस्सणं आवासपव्वयस्सदाहिणिल्लेचरिमंते एसिणं तेयालीसं जोयणसहस्सा इं अबाहाएअंतरे पन्नत्ते एवमन्यत्सूत्रद्वय नवरं पश्चिमायांसखो आवासपर्वत उत्तरस्यामुदकसीमइति ॥ ४३ ॥ चतुश्चत्वारिंशस्थानकेपिकिंचिल्लिख्यते चतुश्चत्वारिंशत इसिभासियत्ति ऋषिभाषिताध्ययनानि कालिकश्रुतविशेषभूतानि दियालोयचुयाभासियत्ति देवलोकच्युतैः ऋषीभूतैराभाषितानि देवलोकच्युताभासितानिक्कचित्पाठः देवलोयभुयाणं चोयालीसइसिभासियज्झयणा पन्नत्ता पुरिसजुगाइति पुरुषः शिष्यप्रशिष्यादिक्रमव्यवस्थिता युगानीवकालविशेषा

संखोदयसीमे महालियाएणं विमाणपविभत्तीए तइयेवग्गे तेयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४३ ॥
चोयालीसं अज्झयणा इसिभासिया दियालोगचुयाभासिया प० विमलस्सणं अरहओ ण चउआलीसंपुरि

थी माडीने गोस्तूभ नाम नागराजाना आवास पर्वतनो पूर्वनो चरिमांत छेहल्यो प्रदेश ४२ हजार योजन प्रमाणे आवाधाये अंतर कह्यो एतले जगती थकी ४२ हजार योजन गोस्तूभ पर्वतछे तेह पर्वत एक सहस्र योजन पिहुल पणेछे एव ४३ सहस्र योजन थया। एम चिहुंदिशे दक्षिण जगतीथकी माडो दक्षिण समुद्र मांहि दगभास २.पश्चिमे संख ३ उत्तरदिशे दगसीम ४ वडी विमान गविभक्तिये चौजे वर्गे ४३ उद्देशनकाल अध्ययन विशेष कह्या॥ इति तेयालीसमो समवाय सपूर्ण ॥ ४३ ॥ हिवे चौतालीसमो लिखेछे। चौतालीस ऋषिभाषित अध्ययन कालिकश्रुत विशेषभूत तेकिहवा देव लोक थी चव्या जेह पछे ऋषिभूत हुआ तेणे आभासित कह्या। विमलनाथ अरिहंतना चौतालीस पुरिसयुग शिष्य प्रशिष्यादि क्रमें आव्या काल वि षनी परें अनुक्रमे साधर्मपणा थको पुरिसयुग कहिये अनुपृष्ठें सीधा निरंतर पणे ४३ पाट मोक्षे गया यावत् शब्दें करी सर्वदुःख थी प्रक्षीण थया। द

यापि तुल्यरूपापेचयातु अनुपयोगलक्षणैकस्वभावयुक्तत्वात्कथंचिद्भिन्नस्वरूपाणामपि धर्मास्तिकायादीनामनात्मनामेकत्वमवसेयमिति तथा एकोदंडोदुःप्र युक्तमनोवाक्कायलक्षणे हिंसामात्रं एकत्वचास्यसामान्यतयोद्देशादेव सर्वत्रैकत्वमवसेयं तथा एकोऽदंडः प्रशस्तयोगत्रयमहिंसामात्र वा तथाएकाक्रियाकायिक्यादिका आस्तिक्यमात्रंवा तथा एकाअक्रिया योगनिरोधलक्षणा नास्तिकत्वंवा तथा एकोलोक स्त्रिविधोप्यसंख्येयप्रदेशोपिवा द्रव्यार्थतया तथा एकोऽलोकोऽनंतप्रदेशोपिद्रव्यार्थतया अथचैते लोकालोकयोर्बहुत्वव्यवच्छेदेनपरेसूत्रेअभ्युपगम्यतेच कैश्चिदहवोलोकाश्रतस्तल्लक्षणाअलोकाअपितावंतएवेति एवंसर्वत्र गमनिकाकार्या । नवरंधर्मोधर्मास्तिकायः अधर्मोऽधर्मास्तिकायः पुण्यंशुभंकर्म पापमशुभंकर्म बंधोजीवस्यकर्मपुद्गलसंश्लेषः सचैकः सामान्यतः सर्वकर्मबंधव्यवच्छेदावसरेया पुनर्बंधाभावादनेनोद्देशेन मोक्षाश्रवसंवरवेदनानिर्जराणामप्येकत्वमवसेयमिति इहचानात्मग्रहणेन सर्वेषामनुपयोगवतामेकत्वं अभ्युपुन

एगेदंडेएगेअदंडे एगाकिरिया एगाअकिरिया एगेलोए एगेअलोए एगेधम्मे एगे पुन्ने एगेपावे एगेबंधे एगेमोक्खे एगेआसवे एगेसवरे एगावेयणा एगाणिज्जरा

एकअदंडभलामनोप्रभृतियोगत्रणि एकक्रियाकारिवोतेक्रियाकायिकादि एकअक्रियायोगविरोधलक्षण एकलोकयद्यपित्रणिलोकछेपरंद्रव्यार्थपणेएक एकअलोकपचास्तिकायरहित एकधर्मास्तिकायचलनस्वभाव एकअधर्मास्तिकायस्थिरस्वभाव एकपुण्यशुभकर्म्म एकपापअशुभकर्म्म एकबंधजीवनेअने कर्मपुद्गलनेजोडिवो एकमोक्षसर्वकर्म्मबंधथकीमूकावणो एकआश्रवकर्मबंधनोउपाय । एकसंवरकर्म्मबंधनाउपायनोनिरोधक एकवेदनाशुभाशुभकर्मनोउदयकालेभोग

टवर्त्तिशतस्थणांविमानावलिकानां मध्यभागवर्त्तिवृत्तविमानकेन्द्रकमडविमानमिति मिपकारान्ति मिलिपथिवी मन्दरस्मणपव्वयस्सेत्लाटिसूचे लवणसमुद्रान न्तरम्परिध्यपेक्षांतरद्रष्टव्यमिति सव्वेविणमित्यादि चन्द्रस्यत्रिंशन्मुहूर्त्ताभोग्यनक्षत्रक्षेत्र समक्षेत्रमुच्यते तदेवसार्द्धद्वार्द्ध द्वितीयमर्द्धमस्येतिद्वार्द्ध मित्येवव्युत्पादना त्तथाविधक्षेत्रंयेषामस्ति तानिद्वार्द्धक्षेत्रिकाणि नक्षत्राणि अतएवपञ्चचत्वारिंशन्मुहूर्त्ताश्चन्द्रेण सार्द्धयोगःसम्बन्धोयोजितवति तिन्नेवगाहा त्तीण्युत्तराणि उत्त

धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था मंदरस्स णं पव्वयस्स चउदिसिपि पणयालीस २ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० सव्वेविणं दिवड्ढखेत्तिया नक्खत्ता पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिंजोगंजोइंसुवा जोइंतिवा जोइस्संतिवा तिन्नेवउत्तराइं पुणव्वसूरोहिणीविसाहाय एएछनक्खत्ता पणयालमुहुत्तसंजोगा ॥ महालियाएणं विमाणपवि

पणे पिहुलपणे कही। एमज धर्मनाथ अरिहंत पेंतालीस धनुष प्रमाण ऊंचपणे हुआ। मेरू पर्वत ने चिहुदिशें पेंतालीस पेंतालीस हजार योजननो अबाधायें आंतरो कह्यो। लवण समुद्रनी अभ्यंतर परिधी ने विचे आंतरो कह्यो। महाविदेह क्षेत्रनी जीवा लाख योजन लांबपणेछे तेमाथी दसहजार योजननो मेरू काढिये तो नेऊ लाख जबकी तेहनो अर्द्ध मेरूथकी पूर्वनी जगती ४५ हजार योजने थाय। एम चिहुदिशे। चद्रमाने ३० मुहुर्त्त पर्यंत भोग्य जे नक्षत्रक्षेत्र ते समक्षेत्र कहिये तेहोज क्षेत्र सार्द्ध कीजिये एतले ३० मुहूर्त्त मांहि १५ घातिये तो ४५ मुहूर्त्तनो क्षेत्रथाय ते ४५ मुहूर्त्तिया नक्षत्र द्वार्द्ध क्षेत्रिया कहिये एणें कारणें ते नक्षत्र पेंतालीस मुहूर्त्त लगें चद्रमाने साथे योगकरेछे। करता हुआ करस्ये। तेकिहा नक्षत्रछे तेकहेछे। उत्तराफालगुनी १ उत्तराषाढ २ उत्तराभाद्रपद ३ पुनर्वसु ४ रोहिणी ५ विशाखा ६ एह ६ नक्षत्र पेंतालीस मुहूर्त्त लगें चद्रमानें साथे योग करे। वडी विमान प्रविभक्तिये पां

लोकादितयाएकत्वप्ररूपण ततसामान्यविशेषोपि समवगंतव्यमिति एवंचात्मादीनां सकलशास्त्रप्रपंच्यानामर्थानां प्रत्येकमेकत्वमभिधायाधुनात्मानात्मपरिणा
मरूपाणामर्थानांतदेवाह जंबूद्दीवेत्यादिसूत्रसप्तकमाश्रयविशेषाणां तथा इमीसेरयणमित्यादिसूत्राष्टादशकमाश्रयिणांस्थित्यादिधर्माणां प्रतिपादनपरं सुबोध
नवरं जंबुद्दिवेदीवे इहसूत्रेआयामविक्खंभेणतिह्वचित्पाठोदृश्यते क्वचित्तु चक्कवालविक्खंभेणति तत्र प्रथम'सभवत्यत्रापि तथाश्रवणात्सुगमश्च द्वितीयस्त्वेवंव्याख्ये
यचक्रवालविष्कंभेणवृत्तव्यासेन इदंचप्रमाणयोजनमवसेयं यदाह आयंगुलेणवत्थु उस्सेहपमाणश्रोमिणसुदेहं नगपुढविविमाणाइं मिणसुपमाणंगुलेणंतु ॥ १ ॥
तथा पालकंयानविमानं सौधर्मेंद्रसत्कमपि आभियोगिकपालकाभिधान देवकृतं वैक्रियं यानंगमनतदर्थंविमानं यायतेऽनेनेतियानं तदेवविमान यानविमा

जंबुद्दीवेदीवे एगंजोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणंपन्नत्ते अप्पइठाणे नरएएगंजोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं पं० पालए जाणविमाणे

विवो एकनिर्जरा आत्मानाप्रदेशथीकर्मपुद्गलनूंवेगलूंकरिवो एजंबूद्वीपसकलद्वीपमांहिमुख्यद्वीप एकयोजनशतसहस्रएतले। एकलाखयोजनप्रमाणांगुले।
लांबपणेअनेपिहुलपणेकह्योतीर्थंकरे । सातमीनरकपृथिवीये पाचनरकावासाछे तेमाहि [illegible] प्रइठाणनामनरकावासोएकयोजनशतसहस्रएतलेएक
लाखयोजन लांबपणेअनें पिहुलपणेकह्यो । पालकयांनविमानसौधर्मेंद्रसंबंधि [illegible] योगीदेवताएनीपजाविऊगमननेअर्थेते एकलाखयोजनजाणवो लां
बपणेअनेपिहुलपणेकह्योछे पंचानुत्तरविमानमांहिविचलोसर्वार्थसिद्धनामेविमानछेतेमांहिएकाभवतारीजीवउपजेतेमाटे महाविमानकहियेंतेएकलाखयो

ते जयाणमित्यादि इहलचप्रमाणस्य जंबूद्वीपस्याभयतो ऽशीत्युत्तरेयोजनशते ३६० ऽपनीते सर्वाभ्यंतरस्य सूर्यमंडलस्य विष्कंभोभवति तत्परिधिस्त्रीणिलक्षाणि पञ्चदशसहस्राणि एकोननवत्यधिकानि ३१५०८९ एतच्चसूर्योमुहूर्तानांषष्ट्यागच्छतीति षष्ट्याऽस्यभागहारेमुहूर्त्ते गतिर्लभ्यते साचपञ्चयोजनसहस्राणि द्वेचैकपञ्चाशदुत्तरेयोजनशते एकोनत्रिंशच्चषष्ठिभागायोजनस्य ५२५१। २९ यदाचाभ्यतरमण्डले सूर्यश्चरति तदाष्टादशमुहूर्त्तोदिवसप्रमाण तदर्द्धेननवभिर्मुहूर्त्तैः मुहूर्त्तगतिर्गुण्यते ततश्चयथोक्त चक्षुः स्पर्श प्रमाणमागच्छतीति अग्गिभूएत्ति वीरनाथस्य द्वितीयोगणधरस्तस्यचेह सप्तचत्वारिंशद्वर्षाण्यगारवासउक्ता. आवश्यकेतुषट्चत्वारिंशत् सप्तचत्वारिंशत्तमवर्षस्यासंपूर्णत्वादविवक्षा इहत्वसपूर्णस्यापि पूर्णविवक्षेतिसम्भावनयानविरोधइति ॥ ४७ ॥ अष्टचत्वारिंशत्स्थानके

तयाणं इहगयस्स मणूसस्स सत्तचत्तालीसं जोयणसहस्सेहिं दोहियतेवठेहिं जोयणसएहिं एक्कवीसाए यसठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुफासं हव्वमागच्छइ थेरेण अग्गिभूई सत्तचालीसंवासाइं अगारमज्झेवसित्ता मुंडेभवित्ता अगाराउ अणगारियं पव्वइए ॥ ४७ ॥ एगमेगस्सणं रन्नो चाउरतचक्क

सर्वाभ्यतर मांडले आषाढी पूनिमे कर्क संक्रातिये निषध पर्वतने उपरि ६५ मांडलाछे तेमाहिथी पहिले मांडले उपसक्रमीने भ्रमणकरे तिवारे इहां भरतक्षेत्रगत मनुष्य ने सेतालीस हजार बेसे त्रेसठ योजन अने १ योजनना ६० हिंया २१ भाग एतलो वेगलो थकी दृष्टिगोचर आवे। स्थविर वडा वयपर्यायश्रुतेकरी अग्निभूति वीजा गणधर सेतालीसवर्ष गृहस्थाश्रमे वसीने द्रव्यभाव भेदे मुड थईने गृहस्थाश्रमथी साधुपणो पाम्या। इति सेतालीसमो समवाय सपूर्ण ॥ ४७ ॥ हिवे अठतालीसमो समवाय लिखेछे॥ एकेक चिहुदिशिना अंतना धणी चक्रवर्त्ति राजाने अडतालीस हजार पाटण कह्या।

हि प्रथमेसप्तके प्रतिदिनमेकैकभिक्षाग्रहणात् सप्तभिक्षाभवंति द्वीतीयेद्वयो २ र्ग्रहणाच्चतुर्दश एवसप्तमेसप्तानांग्रहणा देकोनपञ्चाशदित्येवसर्वमीलनेयथोक्त मानभवतीति अहासुत्तति यथासूत्रंयथागमसम्यङ्न्यायेनस्पष्टाभवतीति शेषोद्रष्टव्यः सपन्नजोव्वणा भवतित्ति नमातापितृपरिपालनामपेक्षतइत्यर्थः. ठिइत्ति आयुष्क ॥ ४९ ॥ तच्चपुरिसोत्तमत्ति चतुर्थवासुदेवोऽनंतजिज्जिनकालभावी तयाकचणत्ति उत्तरकुरुषुनीलवदादीना पञ्चानामानुपूर्व्याव्यवस्थिता

खुपडिमाए एगूणपन्नाए राइदिएहि छन्नउयभिक्खासएणं अहासुत्तं आराहिया भवइ देवकुरुउत्तरकुरा सुण मणुया एगूणपन्नराइंदिएहिं सपन्नजोव्वणा भवंति तेइंदियाण उक्कोसेणं एगूणपन्नराइंदिया ठिई प० ॥ ४९ ॥ मुणिसुव्वयस्सण अरहओ पंचासअज्जियासाहस्सीओ होत्था अणंतेणं अरहा पन्ना

त्रीजे सप्तके पहिलेदिन ३ बीजेदिन ६ त्रीजेदिन ९ एम सातमेदिन २१। एम चौथे सप्तके पहिलेदिन ४ बीजेदिन ८ त्रीजेदिन १२ एम सातमेदिन २८। एम पाचमेसप्तके पहिलेदिन ५ बीजेदिन १० त्रीजेदिन १५ एम सातमेदिन ३५। एम छठ्ठे सप्तके पहिलेदिन ६ बीजेदिन १२ त्रीजेदिन १८ एम सातमे दिन ४२ एम सातमे सप्तके पहिलेदिन ७ बीजेदिन १४ त्रीजेदिन २१ एम सातमेदिन ४९। एमसर्वमिली १९६ भिक्षार्थई। देवकुरु उत्तरकुरु ने विषें युगलिया मनुष्य ४९ रात्रि दिवसें ४९ अहोरात्रीयें संप्राप्त यौवन होय एतले ४९ दिनलगे माइत पालना करे पछे भाई बहिन धणी धणियाणी थईने प्रवर्तें। तेइ न्द्रिय जीवनो उत्कृष्टो ४९ रात्रि दिवसनो आउखो कह्यो। इति ४९ समवाय सपूर्ण ॥ ४९ ॥ हिवे ५० मो समवाय लिखेछे। मुनिसुव्रत बीस

स्तटे मध्यमावसेयेति एवमेकं सागरोपमं त्रयोदशप्रस्तटे उत्कृष्टा स्थितिरिति असुरिन्द्रवर्जितानां भोमेज्जाणंति भवनवासिनां भूमीपृथि व्यां रत्नप्रभाभिधानायां भवत्वात्तेषामिति तेषां चैकं पल्योपमं मध्यमा स्थितिर्यतउत्कृष्टा देशोने द्वे पल्योपमे साआहच दाहिणदिवड्ढ पलिय दोदेसूणुत्तरिल्लाणं ति असंखेज्जेत्यादि असंख्येयानिवर्षाण्यायुर्येषांते तथा तेचतेसंज्ञिनश्चसमनस्कास्तेचते पंचेद्रियतिर्यग्योनिकाश्चेत्यसंख्येयवर्षायुः सज्ञिपंचेंद्रियतिर्यग्योनिका स्तेषां केषांचिद्येहैमवतैरण्यवतवर्षयो रुत्पन्ना स्तेषा मेकपल्योपमस्थिति रेवंमनुष्यसूत्रमपि नवरं गर्भेगर्भाशयेव्युत्क्रांतिरुत्पत्तिर्येषांतेगर्भव्युत्क्रांतिका नसमूर्च्छन

असुरकुमारिंदवज्जियाणं भोमिज्जाणंदेवाणंअत्थेगइआणं एगंपलिउवमंठिई प० । असंखिज्जवासाउय सन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं अत्थेगइआणं एगंपलिउवमंठिई प० । असंखिज्जवासाउयगब्भवक्कंति यमणुयाणं अत्थेगइयाणंएगंपलिउवमंठिई प० । वाणमंतराणंदेवाणं उक्कोसेणंएगंपलिउवमंठिई प० ।

कह्यो असुरकुमारेंद्रचमरेन्द्रबलेन्द्रवर्जीने भवनपतीदेवतानो एकेकनोकेतलाएकनो एकपल्यो[illegible]आउखोकह्यो । असंख्यातावर्षनाआउखानासंज्ञी गर्भजपंचेद्रियतिर्यंचनोएतलेंहैमवंतऐरण्यवंतयुगलचे मनागर्भजतिर्यंचनोयुगलियाअ[illegible]मनुष्यतिर्यंचनो आउषोउत्कृष्टोजइवे अने जीवाभिगमनेविषे नपुंस कगर्भजमनुष्यनूंआउषूंपूर्वकोडिनूंपणिकह्योछेतेमाटे अत्थेगइयाणपाठमह्योकेतलाएकनूंएकपल्योपमस्थितिआउखोकह्यो। असंख्यातावर्षनाआउखानोगर्भज

बंभचेराणंति आचाराः प्रथम श्रुतस्कन्धाध्ययनानां शस्त्रपरिज्ञादीना तत्र प्रथमेसप्तोद्देशका इति संप्तैवोद्देशनकाला एवं द्वितीयादिषु क्रमेण षट् चत्वार चत्वारः एवं पच अष्टौ चत्वार. षट् सप्तैवमेकपञ्चाशदिति सुप्पहेत्ति चतुर्थोबलदेव अनतजिज्जिननाथकालभावी तस्येहैकपचाशद्वर्षलक्षाण्यायुः पुनरुक्तमावश्यकेतु पचपचाशदुच्यते तदिदमतातरमिति एकावन्नउत्तरपगडीओत्ति दर्शनावरणस्यनव नाम्नोद्विचत्वारिंशदित्येकपचाशदिति ॥ ५१ ॥ अथद्विपचाश

जोयणाइ विक्खंभेणं प० ॥ ५० ॥ नवण्हंबंभचेराणं एकावन्नं उद्देसणकाला प० चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररन्नो सभासुधम्मा एकावन्नखंभसयसंनिविठा प० एवंचेवबलिस्सवि सुप्पन्नेणं बलदेवे एकावन्नं वाससयसहस्साइं परमाउ पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावसव्वदुक्खप्पहीणे दंसणावरणनामाणं दोण्हंक

चाक्के। इति ५० समवाय सपूर्ण ॥ ५० ॥ हिवे ५१ मो समवाय लिखेछे। आचारांगे प्रथमश्रुतस्कधे नव ब्रह्मचर्याध्ययन शस्त्रपरिज्ञादिक ते हना ५१ उद्देशानाकाल कह्या। प्रथमाध्ययमे ७ उद्देशा द्वितीयाध्ययने ६ तृतीये ४ चतुर्थे ४ पचमे ५ षष्ठे ८ सप्तमे ४ अष्टमे ६ नवमे ७ सर्वमिली ५१ उद्देशनकाला कह्या। बीजो बिचार २५ ठाणें जाणिवो सही। चमरेंद्र असुरराजनी सुधर्मासभा एकावन से स्तंभेकरी सनिविष्ट सहित कही। बलेंद्र अ सुरेंद्रनो असुरराजानी सभा सुधर्मा ५१ सेस्तभेकरी सन्निविष्ट कही। अनतनाथने वारे सुप्रभनामा चौथा बलदेव ५१ लाख वर्षनो उत्कृष्ट आउखो पालीने सिद्धबुद्धथयो सर्वदु:खथकी प्रक्षीणथयो मोक्षगयो। आवश्यके ५० लाखवर्षकह्या तेमतातर। बीजोकर्म दर्शनावरणीय तेहनी उत्तरप्रकृति ९ छठोनामकर्म तेहनी

चन्द्रविमानदेवानां न सूर्यादिदेवानां

जाइत्यर्थः वाणमंतराणंदेवाणंति देवानामेव नतुदेवीनां तासामर्द्धपल्योपमस्यप्रतिपादितत्वात्‌जोइसियाणंदेवाणंति चन्द्रविमानदेवानां न सूर्यादिदेवानां
नापिचन्द्रादिदेवीनां पलियंचसयसहस्सं चन्दाणविआउजाणी प्रतिवचनात् सोहम्मेकप्पेदेवाणंति इहदेवशब्देन देवादेव्योगृहीताःसौधर्मेहिपल्योपमादीनत
राख्यितिर्जघन्यतोपिनास्ति इयंचप्रथमप्रस्तटेऽवसेया सोहम्मेकप्पे अत्थेगइयाण देवाणंएगंसागरोवमं ठिई प० देवानामेवग्रहण नतुदेवीनांउत्कृष्टतोपितचतासां
पचाशत्पल्योपमस्थितिकत्वात् तथा एकंसागरोपममितिमध्यमस्थित्यपेक्षया उत्कर्षतस्तत्रसागरोपमद्वयसद्भावात् प्रस्तटेपुचयास्त्वेषां सप्तमेप्रस्तटेमध्यमावसे

जोइसियाणं देवाणंउक्कोसेणं एगंपलिउवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई प० । सोहम्मेकप्पेदेवाणं जहन्नेणं
एगंपलिउवमंठिई प० । सोहम्मेकप्पे देवाणंअत्थेगइयाणं एगंसागरोवमंठिई प० । ईसाणेकप्पेदेवाणं जह

ओ भगवंतेयांणव्यंतरदेवनी उत्कृष्टीएकपल्यो
संज्ञीपंचेन्द्रियमाणसनूंएतलेहिमवंतऐरण्यवतक्षेत्रसंबंधीयुगलियामाणसनोकेतलाएकनोपल्योपमस्थितिआउपूर्वाद्धोभगवंतेयांणव्यंतरदेवनी उत्कृष्टीएकपल्यो
पम जघन्य १० सहस्रवरसनोकह्योजोतिषीचंद्रमाविमानवासीदेवतानोउत्कृष्टोएकपल्योपमएकवर्षलाखेअधिकएवडीस्थितिकहीतीर्थंकरदेवे । सौधर्मेप्रथम
देवलोकेदेवनी जघन्यएकपल्योपमस्थितिआउखोकह्यो सौधर्मदेवलोकेदेवतानोकेतला एकनो एकसागरोपमस्थितिआउखो देवीनोसागरोपमनकहिवोउत्कृ
ष्टोपंचासपल्योपमकह्यो ईशानबीजेदेवलोके देवनीजघन्यभाखेरी एकपल्योपमएवडीस्थितअनंतग्यानीये कह्यो ईशानेदेवलोके देवनोकेतलाएकनो एकसाग

ष्टितचद्रमासो भवति द्वाभ्यांचताभ्यामृतुर्भवति तत एकोनषष्टिअहोरात्राणसौभवति यच्चेहद्विषष्ठि भागद्वयमधिक तन्नविवचितं । सम्भवस्यैकोनषष्ठिः पूर्व लचाणि गृहस्थपर्याय इहोक्ता: आवश्यकेतु चतु:पूर्वांगाऽधिकासीतीति ॥ ५८ ॥ अथषष्ठिस्थानकं तत्र एगमेगेत्यादि चतुरशीत्यधिकशतसंख्या

राइदियाइ राइदियग्गेणं प० सन्नवेणं अरहा एगूणसठि पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्के वसित्ता मुंडे जाव पव्वइए मल्लिस्सणं अरहउ एगूणसठिं ओहिनाणिसया होत्था ॥ ५९ ॥ एगमेगेणं मंडले सूरिए सठिए सठिए मुहुत्तेहि सघाइए लवणस्सणं समुद्दस्स सठिनागसाहस्सीउ अग्गोदयं धारंति विम

मासे ऋतु होय । अने एकेक मासे तीसतीस दिहाडा जोड्ये तो विहु मासना ६० दिन जोड्ये तो ५८ किम कह्या । कृष्ण पचनी पखवाडा थी मांडी पूनिमे मास पूरो थाय एके मासे दिन २९ अने एक दिनना वासठिया बत्तीस भाग होय एह २९ दिन वेगुणा करीये तिवारे ६४ भागनो १ दिन वे भाग थाय ते पाछला ५८ दिन माहि घालिये एतले ५९ दिनगो ऋतु थाय उपरि २ भाग उगस्या ते अल्पशाटे न लेखव्या जाणिवा । सभवनाथ अरिहंत त्रीजा उगुणसठी पूर्व लाख लगे गृहस्थाश्रम माहि बसीने मुंड द्रव्य भावभेदे होय आगाराओ अणगारिय गृहस्थाश्रम थकी अणगारितायती पवंपाम्या । आ वेश्यके चार पूर्वांग लगे गृहस्थाश्रम कह्यो छे । मल्लिनाथ अरिहंतने उगणसठिसे अवधि ज्ञानी थया ॥ इति ५९ समवाय थयो ॥ ५९ ॥ हिवे ६० मोसमवाय लिखेछे । सूर्यना १८० मांडला छे एकेका मांडले सूर्य साठ साठ मुहूर्त्ते बेअहोरात्रियेजगे । लवण समुद्रनी अग्रोदक शिखानो पाणी साठ हजार नागदेवता धरे छे एतले सोले हजार योजन ऊचो पाणीनो वेल तेऊपर २ कोस पाणीवटे वधे ते अग्रोदक सीमा कहिए । विमलनाथ अरिहंत

या। ईसाणेकप्पेदेवाणमित्यत्र देवग्रहणेनदेवादेव्यग्गृह्यंते यतस्तत्रसातिरेकपल्योपमादन्याजघन्यतः स्थितिरेवनास्ति ईसाणेकप्पेदेवाणं अत्थेगइयाणमित्यत्रदे
वानामेवग्रहणंनदेवीनां तत्रतासामुत्कर्षतोपिपंचपंचाशत्पल्योपमस्थितिकत्वादिति तथा येदेवाः सागरं सागराभिधानमेवं सुसागरंसागरकांतं भवंमनुंमानु
षोत्तरं लोकहित मित्यचकारोद्रष्टव्यः ससमुच्चयस्यद्योतनीयत्वाद्विमानं देवनिवासविशेषमासाद्योतिरिति एतानिचविमानानि सप्तमप्रस्तटेवसेयानिस्थित्यनु
सारेणच देवानामुच्छ्वासादयो भवंति तान्दर्शयन्नाह तेणमित्यादि येषांदेवानामेकंसागरोपमस्थिति स्तेदेवा णमित्यलंकारे अर्द्धमासस्यांत इतिशेषःआनंति
प्राणंति एतदेवक्रमेणव्याख्यानयन्नाह उच्छ्वसंतिनिःश्वसंति वाशब्दोविकल्पार्थः तथा तेषामेववर्षसहस्रस्यांते इतिशेषआहारार्थः आहारप्रयोजनमाहारपुद्ग

ल्नेणंसाइरेगंएगंपलिउवमंठिई प०। ईसाणेकप्पेदेवाणं अत्थेगइयाणं एगंसागरोवमंठिई प०। जेदेवासागरं सुसागरं सागरकंतं भवं मणुं माणुसोत्तरं लोगहियं विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणंउक्कोसेणंएगंसाग

रोपमनीस्थितकही। ईशान देवलोके सातमेप्रतरेंजेदेवताना सागर १ सुसागर २ सागरकंत ३ भव ४ मणुष ५ मानुषोत्तर ६ लोगहित ७ एणेविमांणे
देवतपणेउपनाछे। ते देवतानी उत्कृष्टी एकसागरोपमनी स्थितिकही। तेदेवता अर्द्धमासेएतलेएकेणेपखवाडे आणमंतिथोडोस्वासले पाणमंतिघणो
लेआणमतिप्राणमंतिएहअंतवृत्तिस्वासउसस्संतिनीससतिएहवाह्यवृत्तिकेटलाकआचार्यएमकहेछे जेदेवतानेजेतलासागरोपमआउखोतेहनेतेतलेपखवाडेसासो

तद्यथा चंद्रश्चंद्रोऽभिवर्द्धितश्चंद्रोनिवर्द्धितश्चेति तत्रएकोनत्रिंशदहोरात्राणि द्वात्रिंशच्चद्विषष्ठिभागा अहोरात्रस्येत्येवं प्रमाणेन २९ । ३२ । ६२ । कृष्णप्रतिपदामारभ्य पौर्णमासीनिष्ठितेन चन्द्रमासेन द्वादशमासपरिमाण श्चन्द्रसम्वत्सर स्तस्यच प्रमाणमिदम् त्रीणिशतान्यष्टांचतुः पञ्चाशदुत्तराणि द्वादशच द्विषष्ठिभागा दिवसस्य ३५४ । १२ । ६२ तथा एकत्रिंशद्दहा एकत्रिंशत्युत्तरचशत चतुर्विंशत्युत्तरशतभागाना दिवसस्येत्येवं प्रमाणोऽभिवर्द्धितमास इति एतेन ३१ १२१ । १२४ चमासेन द्वादशमासप्रमाणोऽभिवर्द्धित संवत्सरोभवति सचप्रमाणेन त्रीणिशतान्यष्टांत्र्यशीत्यधिकानि चतुश्चत्वारिंशच्चद्विषष्ठिभागा दिवसस्य ३८३ । ४४ ६२ तदेवत्रयाणांचन्द्रसवत्सराणां द्वयोश्चाभिवर्द्धितसवत्सरयो रेकीकरणेजातानि दिनानां त्रिंशदुत्तराणि अष्टादशशतानि अहोरात्राणां १८३० ऋतुमासश्च त्रिंशताहोरात्रैर्भवतीति त्रिंशताभागहारेलब्धा एकाषष्ठिःऋतुमासाइति । मंदरस्सेत्यादि इह मेरुर्नवनवतियोजनसहस्रप्रमाणो द्विधाविभक्तस्तत्रप्रथमोभाग

सठि उऊमासा प० मंदरस्सणं पव्वयस्स पढमेकंडे एगसठिजोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० चंदमंडले

मासीये पूरो थाय एहमास मान १२ गुणीकीजे तिवारे वर्षनोमान ३५४ अहोरात्रि अनें १ अहोरात्रिना १२ भाग ६२ ठिया थाय तेहने त्रिगुणो कीजे तिवारे१०६२ अहोरात्रि अनें १ अहोरात्रिनां ६२ ठिया ३६ भाग थाय एम अभिवर्द्धितमासनोमान ३१ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिनां १२४ भागहाइय १२१ भाग प्रमाणे थाय तेहने१२ गुणो कीजे तिवारे अभिवर्द्धितवर्षनोमान३८३ अहोरात्रि अनें१ अहोरात्रिना ४४ भाग ६२ ठिया तेहने बेगुणाकीजे ७६७ सातसे सडसठ अहोरात्रि अनें १ अहोरात्रिना २६ भाग ६२ ठिया थायतेहने पहिले ३ चद्र वर्षका मानमाहि घातिये तिवारे १८३० अहोरात्रि थाय ऋतु मासनो मान ३० अहोरात्रि तेमाटे १८३० ने ३० भागें हरिये तो १ युगनेविषे ६१ ऋतुमास थाय । मेरुपर्वतनो पहिलोकांड ६१ हजार योजन ऊंचपा

गाथेह जस्सजइसागरोवमा ठिइतस्सततिएहिंपक्खेहिं ऊसासो देवाणवा लानांग्रहणमाभोगतोभवति अनाभोगतस्तुप्रतिसमयमेव विग्रहादन्यत्रभवतीति भवस्वमनुष्यजन्मनो
ससहस्सेहिंआहारोत्ति सतिविद्यन्तेएगइयाएकेकेचनभवसिद्धियत्ति भवा भाविनो [illegible] पाते भवसिद्धिका भव्याः भवग्गहणेणंति भवस्वमनुष्यजन्मनो
ग्रहणमुपादानं भवग्रहणंतेनसेत्स्यति अष्टविधमहर्द्धिप्राप्त्याभोत्स्यते केवलज्ञानेनतत्व मोक्ष्यते [illegible] निर्वास्यंति कर्मकृतविकाररहाच्छीतीभविष्यन्ति किं
मुक्तभवतिसर्वदुःखानामंतङ्करिष्यन्तीति ॥ १ ॥ सामान्यतयाश्रयणादिकतया वस्तून्यभिधायाधुना विशेषमर्थ्य[illegible]णाद्विलेनाह दोदंडेत्यादि सुगममादि

तेसिणं रोवमंठिई प० । तेणंदेवाएगस्सञ्ड्मासस्स ञ्याणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नाससंतिवा तेसिणं देवाणंएगस्सवाससहस्स ञ्याहारठेसमुपज्जइ संतेगइयाभवसिद्धियाजेजीवा तेएगेणंभवग्गहणेणं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिसंति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ १ ॥ दोदंडापन्नत्ता तं०

सासकहे तेतले सहस्रवर्षे आहारनीइच्छाजपजे । जंचोस्वास ते उत्स्वास नीचोमेल्हिवोतेनीसास तेहदेवने एकसहस्रवर्षे आहारनोअर्थजपजे । सतेकह ताँछेएकेकभवसिद्धियाकहतांभाविनीहोणारीछे ढूंकडीसिद्धिजेहनेतेभवसिद्धिकाभव्यजीव ससारमांहितेहलघुकर्मीएकभवनेआतरेसीभरये सतार्थेथास्ये बूभस्ये केवलज्ञानेकरीसकलससारनांपरमार्थजाणिस्ये कार्मकोधोविकारतेहनारहितपणायकीठाढाहोस्ये । सकलशारीरीदुःखनीमानसीदुःखनीअतकरिस्ये- एतलेरकठाणोकह्यियो ॥ १ ॥ हिवेबीजोअधिकारकहेछेवेदंडकाह्यो भगवतेजेणेकरीपरनाप्राणदंडीयेहणीयेतेदंडकाह्यो तेकहेछे अर्थदंड तेआत्मानेअर्थे पर

मास्यइत्येवं द्विषष्ठिस्ताभवंति इत्येवममावास्याअपीति वासुपूज्यस्येह द्विषष्ठिर्गणागणधराश्चोक्ता आवश्यकेतु षट्षष्ठिरुक्तेति मतांतरमिदमपीति। सुक्कपक्ख रसेत्यादि शुक्लपक्षस्य सबन्धीचन्द्रोद्विषष्ठिभागान् प्रतिदिनवर्द्धते एवकृष्णपक्षेचद्रः परिहीयते अयभावार्थ सूर्यप्रज्ञप्त्यामप्युक्तस्तथाहि किण्हंराहुविमाण निच्चं चंदेणहोइअविरहिय चउरंगुलमप्पत हेठ्ठाचदस्सत चरइ॥ १॥ बावठ्ठि बावठ्ठिदिवसे२उसुक्कपक्खस्स जपरिवड्ढइचदो खवेइ तंचेवकालेण॥ २॥ पन्नरसयभागेणय चंदंपन्नरसमेवतंचरइ पणरसयभागेणय पुणोवितचेववक्कमइ॥३॥ एवंवड्ढइचदो परिहाणीएवहोइचदस्स कालोवाजोण्हावाएयणुभावेणचदस्स॥४॥ तथातत्रैवोक्तं सोलसभागाकाउजण उडुवइहायएत्थपन्नरस तत्तियमेत्तेभागे पुणोविपरिवड्ढएजोण्हत्ति॥१॥ तदेव भणितद्वयानुसारेणानुमीयते यथाचंद्रमण्डलस्य एकत्रिंशदुत्तरनवशतभागविकल्पितस्य एकांशोवस्थितएवास्तेशेषाः प्रतिदिवस द्विषष्ठिंकृत्वा वर्द्धन्ते ततःपचदशे चद्रदिनेसर्वेसमुदिताभवन्ति पुनस्तथैवहीयंते पचदशेदिने एकावशेषा भवन्तीति वचनद्वयसामर्थ्यलभ्य व्याख्यानमेतत् जीवाभिगमेतु बावठ्ठि २ गाहा तथा पन्नरसति भागेण गाथा एतेगाथे एवव्याख्याते

स्सणं चंदे बासठिं बासठिं भागे दिवसे दिवसे परिवड्ढइ तचेवबहुलपक्खे दिवसे दिवसे परिहायइ सोह

अमावास्या होय युगमांहि अभिवर्द्धितवर्ष२ तेहना मास २६ होय तेमाटेपूनिम २६ अमावास्या२६ सर्व पांचवर्षना मिली ६२ पूर्णिमा अने ६२ अमावास्या होय। वासुपूज्य अरिहंतने वासठ गच्छ अने ६२ गणधर हुया सुक्लपक्षनो चद्रमा प्रतिदिवसे ६२ वासठ भागें वधे एतले चद्रमडलना ६२ भाग कल्पनाय कीजेपक्षे १५ तिथि भागेहरिये तिवारे झाझेरा च्यार च्यार भाग आवे तो पनरेदिन लगे राहुबिमान झाझेरा च्यार२ भाग चंद्रमाने मूकें चद्रज्योत्स्नावधे पनरेदिने ६२ भाग थाय तिमज कृष्णपक्षे राहुविमाने झाझेराच्यार २ भाग दिवसे चद्रविमान आक्रमे पनरे दिवसेमिली झाझेरा च्यार २ भाग करतां

स्थानकसमाप्तेनंवरमिह दंडराशि बंधनार्थसूत्राणांत्रयंनक्षत्रार्थंचतुष्टयं स्थित्यर्थंत्रयोदशकसुच्चासाद्यर्थंनयमिति तत्रार्थेनस्वपरोपकारलक्षणेन प्रयोजनेनदंडो हिंसाअर्थदंडएतद्विपरीतोऽनर्थदंडइति तथा रत्नप्रभायांद्विपल्योपमास्थितिश्चतुर्थप्रस्तटेमध्यमाद्वितीयायांद्विसागरोपमेस्थितिःषष्ठप्रस्तटेमध्यमाज्ञेया तथाअसु

अठ्ठादंडेचेव अणठ्ठादंडेचेव दुवेरासी प० । तंजहा ॥ जीवरासीचेव अजीवरासीचेव दुविहेबंधणे प० । तंजहा ॥ रागबंधणेचेव दोसबंधणेचेव पुव्वाफग्गुणीनक्खत्तेदुतारे प० । उत्तराफग्गुणीनक्खत्तेदुतारे प० पुव्वाभद्दवयानक्खत्तेदुतारे प० उत्तराभद्दवयानक्खत्तेदुतारे प० इमीसेणंरयणप्पहाएपुढवीए अत्थेगइआणंनेरइयाणं दोपलिओवमांठिईप० । दुच्चाएपुढवीए अत्थेगइआणं नेरइआणं दोसागरोवमाइंठिई प० । असुरकुमाराणं [illegible] अत्थेगइ

नेअर्थेआगलानाप्राणहणीये तेऽर्थदंड निरर्थकपणेपरप्राणनेहणीये तेअनर्थदंडनिश्चे बेराशिसमूहकह्या [illegible] पहिछे । जीवराशिजीवनासमूह अजीवराशि अजीवनासमूह बेप्रकारे बंधनकह्या तेकहेछे रागबंधण रागेकरीकर्मनो[illegible] एमज द्वेषबंधणपडे पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रनाबेताराकह्या भगवंते उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रना बेताराकह्या पूर्वाभाद्रपदनक्षत्रतणा बितारा कह्या । उत्तराभाद्रपदनक्षत्रनाबेताराकह्या एणीइये रत्नप्रभापहिलीनरकपृथवीये केतलाएकनारकीनो चोथेपाथडे बेपल्योपमस्थितआजघन्यमध्यमकह्यो बीजी नरकपृथवीनेविषे केतलाएक नारकीनो छठेपाथडे बेसागरोपममध्यस्थितिभा

वलिका विमानानुपूर्वी तया अथवोत्तरोत्तरावलिकापेक्षया एकैकस्यांदिशि या प्रथमाआद्यावलिका तस्यां पढमावलियत्ति पाठांतरे तु उत्तरोत्तरावलिका
पेक्षया एकैकस्यां दिशि प्रथमावलिका सा द्विषष्ठिविमानप्रमाणा प्रमाणेन प्रज्ञप्तेति एगमेगाएत्ति उडुविमानाभिधानदेवेंद्रकापेक्षया एकैकस्या पूर्वादिका
यां दिशि द्विषष्ठिर्विमानानि प्रज्ञप्तानि द्वितीयादिषु पुनः प्रस्तटेषु एकैकहान्या विमानानि भवन्ति यावद्द्विषष्ठितमे ऽनुत्तरे प्रस्तटे सर्वार्थसिद्धदेवेंद्रकपार्श्वे
तदेकैकमेव भवतीति तथा सव्वेति सर्ववैमानिकानां देवविशेषाणां सम्बन्धिनो द्विषष्ठिर्विमानप्रतराः प्रस्तटाग्रेण प्रस्तटपरिमाणेन प्रज्ञप्ता इति ॥ ६२
अथत्रिषष्ठिस्थानक तत्र सपत्तजोव्वणति मातापितृपरिपालनापेक्षा इत्यर्थः निसहेणमित्यादि किलसूर्यमण्डलानां चतुरशीत्यधिक शतसंख्यानां मध्ये

बासठिविमाणपत्थडा पत्थडग्गेणं प० ॥ ६२ ॥ उसभेणं अरहाकोसलिए तेसठिं पुव्वसयस हस्साइं महारायमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए हरिवासरम्मयवासेसु णं मणुस्सा

मिली ४ आरण अच्युतना ४ सर्व १२ देवलोकना ५२ प्रतर नव ग्रैवेयके ९ पांच अनुत्तरनो १ एव सर्व मिली ऊर्द्ध लोके ६२ प्रतर थया प्रतर २ दीठविचें एकेक
विमानखत्रविमानेंद्रनो जाणिवो। इति ६२ समाप्तं ॥ ६२ ॥ त्रिषष्ठि लिख्यते ॥ ऋषभनाथ श्रीकोशल कोशलदेशना जपना तेह ६३ लाख पूर्वलगे
महाराजपणामांहि वसीने मुंडपणो पामो गृहस्थापणथकी अनगारतापणो यतीपणो पाम्या दीक्षा ग्रहण करी एतले २० लाख पूर्व कुमारपणे ६३ लाख पूर्व
महाराजपणे १ लाख पूर्व चारित्रपालन कियो एव सर्व ८४ लाख पूर्वनो आउखो थयो हरिवर्षतोजोक्षेत्र रम्यकपांचमो क्षेत्र तेह युगल क्षेत्रने विषे माणस
६३ रात्रि दिवसे संप्राप्तयोवन थाय एतले ६३ अहोरात्रिलगे मातापालना करे। देवकुरु उत्तरकुरु ने विषे सदैव पहिलो आरो होय। हरिवर्ष रम्यक

आणंदोपलिओवमाइंठिई प० असुरिंदवज्जिआणं भोमिज्जाणंदेवाणं उक्कोसेणंदेसूणाइं दोपलिओवमाइंठिई
प० असंखिज्जवासाउयतिरिक्खजोणिआणं अत्थेगइआणं दोपलिओवमाइंठिई प० असखिज्जवासाउयस
न्निमणुस्साणं अत्थेगइयाणंदोपलिओवमाइंठिई प० सोहम्मकप्पेअत्थेगइआणंदेवाणं दोपलिओवमाइंठिई
प० ईसाणेकप्पेअत्थेगइयाणंदेवाणं दोपलिओवमाइंठिई प० सोहम्मेकप्पेअत्थेगइआणदेवाणं उक्कोसेणंदो
सागरोवमाइंठिई प० ईसाणेकप्पेदेवाणं उक्कोसेणं साहियाइं दोसागरोवमाइंठिई प० सणंकुमारेकप्पेदेवा
णं जहन्नेणं दोसागरोवमाइं ठिई प० माहिंदेकप्पे देवाणं जहन्नेणं साहियाइंदोसागरोवमाइं ठिई प० ।

जघू कह्यो । असुरकुमारभवनपतीदेवनो । केतलाएकनो बेपल्योपमनूं आउखो कह्यो । असुरेंद्रचमरेंद्र बलेंद्रटालीने बीजीभूमिसंबंधि उत्तरदिशिनानागदेव
तानी उत्कृष्टीकांईकओछीबेपल्योपमनोआउखो कह्यो असंख्यातावर्षना आउखाना गर्भजमानुष्यनां एतले हरिवर्ष रम्यकक्षेत्रसंबंधी युगलियामनुष्यनु के
तलाएकनो बिपल्योपमआउखो कहिउ सौधर्मे पहिलेदेवलोके केतलाएकदेवनो बिपल्योपममध्यमआउखो कह्यो । ईशानबीजेदेवलोके केतलाएक देव
तानूं बिपल्योपमआउखोकह्यो । सौधर्मदेवलोकेदेवतानोउत्कृष्टो बेसागरोपमआउखो कह्यो । ईशानबीजेदेवलोके देवतानो उत्कृष्टोभाभेरो

शेषः अष्टावष्टकानि यतो सौ भवत्यत यतुः षष्ठ्या रात्रिंदिवैः सापालिता भवति तथा प्रथमेष्टके प्रतिदिनमेकैका भिक्षा एवं द्वितीये द्वे द्वे यावदष्टमे अष्टा वष्टाविति सकलनया द्वेशते भिक्षाणामष्टाशीत्यधिके भवतो ऽतउक्त ह्याभ्यां चेत्यादि यावत्करणात् अहाकप्पं अहामग्गं फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया सम्म आणाए आराहियावि भवतीति दृश्यम् सव्वेविणमित्यादि इतो ऽष्टमे नन्दीश्वराख्ये द्वीपे पूर्वादिषु दिक्षु चत्वारोजनकपर्वता भवन्ति तेषां चः प्रत्येक चतसृषुदिक्षु चतस्रः पुष्करिण्यो भवन्ति तासांच मध्यभागेषु प्रत्येक दधिमुखपर्वता भवन्तितेच षोडशपल्यक संस्थानसंस्थिताः समानाः सर्वत्रसमाविष्क म्भेन मूलादिषु दशसहस्रं विष्कम्भत्वा त्तेषां क्वचित्तु विक्खभुस्सेहेणंति पाठ स्तत्रतृतीयैकवचनलोपदर्शना द्विष्कम्भेनेति व्याख्येय तथा उत्सधेनो च्चत्वेन चतु

चउसट्ठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा प० चमरस्सणं रन्नो चउसट्ठिं सामाणियसाहस्सीउ प० सव्वेविणं दधिमुहापल्लया पल्लासंठाणसंठिया सव्वत्थसमा विक्खम्भुस्सेहेणं चउसट्ठिंचउसट्ठिं जोयणसहस्साइं प०

आठेदिने ३२ भिक्षाथाय एम करतायकां आठ अष्टकलगे ३६ भिक्षालीजे एतले सर्वेमिली २८८ भिक्षाये यथामार्ग आराधीहोय पालीहोयने असुरनिकाय ना २ इन्द्र चमरेंद्र बलेंद्र २ दक्षिण दिशे चमरेंद्र तेहना ३४ लाख भुवन उत्तरें बली तेहने ३० लाख भुवन बिहु भवन मिली असुर कुमारेंद्रना ६४ लाख आवास भवन कह्या । चमरेंद्रअसुर नागराजाने ६४ सामानिक आप समान देवता कह्या । जम्बूद्वीपथको आठमू नंदीश्वरद्वीप तेहनेविषे चिहुंदिशे ४ अंज नगिरिछे एकेक अंजन गिरिने चौफेर चार २ पुष्करिणी वावी छे ते वावीने मध्यभागे प्रत्येकें दधिमुख पर्वतछे एतले बिहु । पालागुर्जरदेशे धान्य भाजन तेहने सठाणे आकारे संस्थित छे । सगले समान मूले विष्कभ पणे पिहुलपणे दससहस्र योजन परिमाण जाणवा । उत्सेधे ऊंचपणे चउसट्ठि २ हजार यो

रेंद्रवर्जितभवनवासिनां द्वेदेशोनपल्योपमस्थितिरौदीच्यनागकुमाराना मित्यावसेयायतआह दोदेसुणुत्तरिल्लाणंति तथाअसंख्येयवर्षायुषांपंचेंद्रियतिरिश्चांमनु
ष्याणांचहरिवर्षरम्यकवर्षजन्मनांद्विपल्योपमास्थितिरिति ॥ २ ॥ अथनिस्थानकंतओइत्यादिसर्वंसुगम नवरमिहदडगुत्तिप्रल्पगौरवविराधनार्थंसूत्राणां

जेदेवा सुभं सुभकंत सुभवसं सुभगंधं सुभलेसं सुभफासं सोहम्मवडिंसगं विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणं देवाणंउक्कोसेणंदोसागरोवमाइंठिई प० । तेणदेवा दोण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा उससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणदोहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुपज्जइ अत्थेगइयाभवसिद्धियाजीवा जे दोहिंभवग्गहणेहिंसिज्झिस्संति मुच्चिस्संति बुज्झिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतकरिस्संति ॥

मिद्दसागरोपमआजषीकह्यो सनत्कुमार त्रीजेदेवलोकेदेवतानूं जघन्यबेसागरोपमआउषोकह्यो माहेंद्रचौथेदेवलोकेदेवतानूं जघन्य बिसागरोपमझाझेरी-
आजषानीस्थितिकहीसौधर्मेदेवलोकेतेरमेप्रतरेजेदेवतानानाम शुभ १ शुभकांत २ शुभवर्ण ३ शुभगंध ४ शुभलेश्य ५ शुभस्पर्श ६ सौधर्मावतंसक ७ एहसातवि
मानेदेवतापणेजपनाछे तेहदेवनो उत्कृष्टो बेसागरोपमआजषोकह्यो तेहदेवनेबिअर्धमासएतलेबिहुपखवाडे आणप्राणहुयेंआणथोडोस्वासप्राणतेघणोउ
त्स्वास उत्स्वासतेउचोलेवोस्वास नीसासतेसासनीचो मेलिहवो तेहदेवताने बिहुर्थवर्षसहस्र तेहने आहारनोअर्थजपजे आभोगआहारल्ये संसारमांहिकेत
लाएकभवसिद्धीयाभव्यजीव जेबिहुयेभवग्रहणे बेभवनेआंतरेसीझस्ये ज्ञानीथयास्ये तलनाजांणयास्ये कर्मबंधथकीमूकास्येकर्मकृततापटालवाथकीठाढायास्ये

ध्यभागवर्त्तिशक्रनिवासभूतं एगमेगाएत्ति एकैकस्यांदिशिप्राकाराभ्यर्णवर्त्तीनि भौमानि नगराकाराणिविशिष्टस्थानानीत्येके ॥ ६५ ॥ अथषट्षष्ठिस्था
नक तत्रदाहिणेत्यादि मनुष्यक्षेत्रस्यार्द्ध मर्द्धमनुष्यक्षेत्रं दक्षिणच तच्चेति दक्षिणार्द्धमनुष्यक्षेत्र तत्रभवादक्षिणार्द्ध मनुष्यक्षेत्रा णमित्यलंकारेषट्षष्ठिशद्रा:प्रभासितव
न्त: प्रभासनीय मथवा लिङ्गव्यत्ययाद्दक्षिणानियानि मनुष्यक्षेत्राणामर्द्धानितानि तथातानिप्रकाशितवन्त. पाठांतरे दक्षिणार्द्धमनुष्यक्षेत्रप्रकाशनीयं प्रभासित
वंत स्तेचएव द्वौजम्बूद्वीपेचंद्रौचत्वारोलवणसमुद्रे द्वादशधातकीखंडे द्विचत्वारिंशत्कालोदधिसमुद्रे द्विसप्ततिशपुष्करार्द्धे सर्वेचैतेद्वात्रिंशदधिकं शत एतदर्द्धेचषट्प

सोहम्मवडिंसयस्स णं विमाणस्स एगमेगाए बाहाए पणसठिं पणसठिं भोमा प० ॥ ६५ ॥
दाहिणद्ध माणुस्सखेत्ताणं छावठिं चंदापभासिंसुवा ३ छावठिं सूरिया तविंसुवा ३ उत्तरद्धमाणुस्सखेत्ताणं

६५ वर्ष लगे गृहस्थाश्रम मांहि वसीने मुड द्रव्यभावभेदे थईने अगार गृहस्थाश्रमथकी अणगार पणु साधूपणुं पाम्या एतले ६५ वर्षगृहवास १४ वर्ष छद्मस्थप
णे १६ केवलपर्याय सर्वायुवर्ष ९५ जाणिवा। सौधर्म देवलोके मध्यवर्ति सोधर्मावतंसकविमान शक्रेंद्रनोनिवासभूत तेह महाविमानने एकेकीये बाहाये एके
की दिशिगढने समीपवर्ती ६५ भौमा नगराकारे विशिष्टस्थानक कह्या। इति पेंसठमो समवाय सपूर्ण ॥ ६५ ॥ हिवे ६६ मो लिखे छे। मनु
ष्यक्षेत्र आखोअढी द्वीप २ समुद्र मिलीने ते माहि दक्षिणार्द्ध मनुष्यक्षेत्र मांहि ६६ चद्रमा प्रभासता हुया उद्योत करता हुया प्रभासेछे प्रभासिस्ये। एतले
जम्बूद्वीप माहि २ सूर्य २ चंद्रमा लवणसमुद्र माहि ४ सूर्य ४ चद्रमा धातकीखड मांहि १२ सूर्य १२ चद्रमा कालोदधि माहि ४२ सूर्य ४२ चद्रमा पुष्करार्द्ध
मांही ७२ सूर्य ७२ चंद्रमा सर्वमिली १३२ सूर्य १३२ चद्रमाथया। सुदर्शण मेरुथकी चारपति चिहुदिसे मांडिये मेरुथकी दक्षिणदिशे मानुसोत्तर पर्वत

रमाणं ४४ नगरमाणं ४५ वत्थुमाणं ६४ खंधनिवेसं ४७ वत्थुनिवेसं ४८ नगरनिवेसं ४९ ईसत्थं छरुप्पवायं ५० आससिक्ख ५१ हत्थिसिक्खं ५२ धणुव्वेय ५३ हिरण्णपाग ५४ सुवन्नपागं ५५ मणिपागं ५६ धातुपाग ५७ बाहुजुद्धं ५८ लयाजुद्धं ५९ मुट्ठिजुद्धं ६० जुद्धं ६१ निजुद्धं ६२ जुद्धाइजुद्धं ६३ सुत्तखेड्डं ६४ वट्टखेड्डं ३५ नालियखेड्डं ६६ चम्मखेड्डं ६७ पत्तछेज्जं ६८ कडगछेज्जं ६९ सजीवं ७० निज्जीवं ७१

तरिवो ४१। शुद्ध कटक नी रचना ४२। खधार कटक उतारिवानो प्रमाण जाणिवो ४३। नगरवासिवानोमान ४४ वस्तुनामान गजतोलादिक ४५। खधारकटकनो निवासस्थापन ४६। नगर निवेशनो वासवो ४७। वस्तुनीस्थापनावस्तुनिवेश ४८। ईषदर्थ थोडानूं घणूं घणानूं थोडूं करवूं ४९। तरूखड्गमुष्टिताथा क्षुरप्रवाण तद्गत विचारनो जाणिवो ५०। घोडानी गति शिखाडवी ५१। हाथीनी गति शिखाडवी ५२। धनुर्वेद धनुर्धारी थावूं ५३। हिरण्यरूपानोपाक पचाविवो ५४। सुवर्णनो पचाविवो ५५। मणिरत्नादिकनो पाक ५६। धातुतावादिकनो पाक ५७। युद्ध सामान्य प्रकारे तेहनो जाणिवो ५८। नियुद्ध अतिशय युद्ध जाणिवो ५९। युद्धनेअति श्रम करीने जूझवो ६०। मुष्टियें जूझवो ६१। लतावेलडोयेजूझवो ६२। बाहुथी जूझवोतेबाहु युद्ध ६३। सूत्रनो खेडवोवेझनोमाडी सूत्रनो छेदिवो ६४। वर्त वाटलो खेडूं माडीने जूझिवो ६५। नालिकाकामल डांडो तेहनो खडवो बेझूमांडीने वेधवूं ६६। चर्म खेडू वेडूंमाडीवेधिवो ६७ पत्रपानडानो छेदिवो ६८। कडग सुवर्णादिकनाचूडी कुडलादिकनो छेदिवो ६९। सूयामनुष्यतिर्यंचने मंत्रशक्तिकरी सजीव करिवो ७०। जीवतानीनसचापोने निर्जीव करिवो ७१। शकुन पचीकाकादिकना स्वरभेदनो जाणिवो ७२। एकलायई। समूच्छिंम खेचर

लोभाभ्यामात्मनोऽशुभभावगुरुत्वानि तानिचसंसारचक्रवालपरिभ्रमणहेतुकर्मनिदानानि तत्रऋद्ध्यानरेंद्रादि पूज्याचार्यत्वादिलक्षणयागौरवमृद्धि अभि मानतदप्राप्तिप्रार्थनद्वारेणात्मनोऽशुभभावगौरवमित्यर्थ. एवरसेनगौरवरसगौरव सातयागौरवं सातागौरवंचेति तथाविराधनाः खंडनास्तत्रज्ञान नाज्ञानविराधना ज्ञानप्रत्यनीकतानिह्नवादिरूपाएवमितरेपि नवरं दर्शनसम्यग्दर्शनक्षायिकादिचारित्रसामायिकादीनि । तथाश्रसज्ञातत्रयां ,वांपचेद्रि

तउगारवा प० तं० । इड्ढीगारवेणं रसगारवेणं सायागारवेणं तउविराहणा प० तं० । नाणविराहणा दं सणविराहणा चरित्तविराहणा मिगसिरनक्खत्तेतितारे प० । पुस्सनक्खत्तेतितारे प० । जेठानक्खत्ते तितारे प० । अभीइनक्खत्तेतितारे प० । सवणनक्खत्तेतितारे प० । अस्सिणिनक्खत्तेतितारे प० भरणी नक्खत्तेतितारे प० इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणंतिन्निपलिओवमाइंठिई प० । दो

तेशुद्धदेवगुरुधर्मनोअसद्दहिवोविपरीतनोकरिवो २ त्रिणिगरवक्केजेणेकरीआत्माभारीथाय ससारचक्रवालमांभ्रमवानोकारणकह्योतेकहेछे । ऋद्धिगारव तेनरेंद्रादिकनीऋद्धितथाआचार्यादिकनीऋद्धितेणेकरीअभिमानकरतोआत्माभारीकरे [illegible]दिकस्वादेकरीआत्माभारीकरवो तेरसगारवकहियेर सातानेगारवेकरीसातागारव २ त्रिणि विराधनाषंडनाकही तेकहेछे सूत्रादि[illegible]तेहनीविराधना प्रत्यनीकपणीकरिवोतेज्ञानविराधना दंसणतेसम्यक दर्शनक्षायकादिकसम्यक्ततेहनूंविराधवूंअवर्णवादनूंबोलिवूंतेदर्शनविराधना २ सामायिकादिकचारित्रनूंविराधवूंखंडवूंतेचारित्रविराधना २ मृगसरनक्षत्रना

सप्ततिवर्षाण्यायु रत्रचायंविभागः षट्चत्वारिंशद्वर्षाणि गृहस्थपर्यायः द्वादश छद्मस्थपर्यायः षोडशकेवलिपर्यायइति निसहाओणमित्यादि अस्यभायार्थः

िनिषधवर्षधरस्य विष्कम्भो योजनानां षोडशसहस्राणि अष्टौशतानि द्विचत्वारिंशत्कलाद्वयचेति तस्यच मध्यभागे तिगिञ्छिमहाह्रदः सहस्रद्वयविष्कम्भ

श्चतुःसहस्रायाम स्तदेवपर्वतविष्कम्भार्द्धस्य ह्रदविष्कम्भार्द्धेनन्यूनतया शीतोदामहानद्याः पर्वतस्योपरि चतुःसप्तति शतान्येकविंशत्यधिकानि कलाचैकेत्येव प्र

वाहो भवति वइरामयाएजिब्भियाएत्ति वज्रमय्याजिह्विकया प्रणालरूपमकरमुखजिह्विकया चतुर्योजनदीर्घया पञ्चाशद्योजनविष्कम्भया वइरतलेकुंडेत्ति नि

षधपर्वतस्याधोवर्तिनि वज्रभूमिके अशीत्यधिकचतुर्योजनशतायामविष्कम्भे दशयोजनावगाहे शीतोदादेवीभवनाध्यासितमस्तकेन तद्द्वीपेनालंकृतमध्यभागे

साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे निसहाओणं वासहरपव्वयाओ तिगिच्छिदहाओ सीतोयामहानदीओ चोवत्तरि जोयणसयाइं साहियाइं उत्तराहिमुहीपवहित्ता वइरामयाए जिब्भियाए चउजोयणायामाए मन्ना

डा अग्निभूति श्रीमहावीरना बीजागणधर ७४ वर्ष लगे सर्वायुपालीने सिद्धथया सर्वदुःख रहित थया। तेकेम ४६ वर्ष गृहाश्रम १२ वर्ष छद्मस्थपर्याय १६ केवल पर्याय एम ७४ सर्वायु। निषध वर्षधरपर्वत ४०० योजन ऊचो उपरि १६ हजार ८ से ४२ योजन २ कला उगणीसहाइया पिहुलो तेहनां मध्यभागेते गच्छी महा द्रहछेते २ हजार योजन पिहुलो ४हजार योजन लांबोछे। निषध वर्षधर पर्वतथको तेगच्छीद्रहथको निकली एहवी सीतोदामहानदी ७४ से २१ योजन साधिक एक कला एतले प्रवाहें पर्वत ऊपरि उत्तराभिमुखी वहीने वज्रमइजीभीयें ४०० योजन लांबी५० योजन पिहुलो वहीने जायछे। निषध पर्वतने हेठें वज्रमयी भूमिकाछे जेहनी एहवी ४८० योजन पिहुलो १० योजन ऊडो सीतोदा देवीयें अलंकृत सीतोदाप्रपात वज्रमय कुंडें महया मो

मांतरतः पुष्पदन्तस्येति तथाशीतलस्य पंचसप्ततिपूर्वसहस्राणि गृहवासे कथ मंचविंशतिः कुमारत्वे पंचाशच्चराज्य इति तथाशांतिः पंचसप्ततिवर्षसहस्रा णि गृहवासमध्युष्य प्रव्रजितः कथ पचविंशतिः कुमारत्वे पचविंशतिः मांडलिकत्वे पचविंशति श्चक्रवर्त्तित्व इति ॥ ७५ ॥ अथषट्सप्ततिस्थानके लिख्यते किंचित्। तत्र विद्युत्कुमाराणां भवनावासलक्षाणि दक्षिणस्यां चत्वारिंश दुत्तरस्यातु षट्त्रिंशदिति षट्सप्ततिरिति एवमिति इदमेवभवनमानं शेषा

॥ ७४ ॥ सुविहिस्सणं पुप्फदंतस्स अरहओ पन्नत्तरि जिणसया होत्या सीतलेणं अरहा पन्न त्तरि पुव्वसयसहस्साइं अगारवासमज्झेवसित्ता मुंडे जावपव्वइए संतीणंअरहापन्नत्तरिवाससहस्साइं अगा रवासमज्झे वसित्ता मुंडेभविता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ॥ ७५ ॥ छावत्तरिविज्जुकुमा रावाससयसहस्सा प० एव दीवदिसाउदहीणं विज्जुकुमारिदथणियमग्गीणं छण्हपिजुगलयाण छावत्तरिस

गृहवास माहिवसीनेमुडथया यतीपणूंपाम्या। २५ हजार पूर्व कुमारपणे ५० हजार पूर्व राज्याश्रमे एम ७५ हजार पूर्वथया २५ हजार पूर्व दीक्षा सर्वायु १ लाख पूर्व जाणिवो। शांतिनाथ अरिहत ७५ हजार वर्षलगे गृहाश्रम मांहि वसीने मुडथया गृहस्थथकी यतीपणूं पाम्या। २५ हजार वर्ष कुमारपणे २५ हजार वर्ष मडलीक राज्यपणे २५ हजार वर्ष चक्रवर्ती पणेंवसीने प्रव्रज्या पाम्या। २५ हजार वर्ष दीक्षा सर्वायु १ लाख वर्ष। इति ७५ मो सपूर्ण ॥ ७५ ॥ हिवे ७६ मो लिखेछे। विद्युत्कुमार भवन पतिना दक्षिणदिशें ४० लाख भवन उत्तरदिसे ३६ लाख भवन एव ७६ लाख भवन कह्या एमज द्वीप कुमार १ दिक्कुमार २ उदधि कुमार ३ विद्युत्कुमार ४ स्तनित कुमार ५ अग्नि कुमार ६ एकेकना बेबे इद्र करतां १२ थया। एहना छहतर

यतिर्यग्मनुष्याणांदेवकुरूत्तरकुरुजन्मनां त्रीणिपल्योपमानीति । तथाआभंकरं प्रभंकरं आभाकरंपभाकरं चंद्रंचंद्रावर्त्तं चंद्रप्रभं चंद्रकांतं चंद्रवर्णं चंद्रलेश्यं चंद्रध्वज चंद्रशृंगं चंद्रसिद्धं चंद्रकूटं चंद्रोत्तरावतंसकं विमानमित्यादि ॥ ४ ॥ चतुःस्थानकमपिसुगममेव नवरं कषायध्यानविकथासंज्ञाबंधयोजनार्थं सूत्राणांषट्

जेदेवा आभंकरं पभंकरं आभाकरं पभाकरं चंदंचंदावत्तं चंदप्पभं चंदकंतं चंदवन्नं चंदलेसं चंदज्झयं चंदसिंगं चंदसिद्धं चंदकूडं चंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं तिन्निसागरोवमाइंठिई प० । तेणंदेवातिराहंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं तिहिंवाससहस्सेहिआहारठेसमुपज्जइ संतेगइयाभवसिद्धियाजीवा जे तिहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संतिपरिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ ३ ॥ चत्तारिकसाया

युगलियातेहनो उत्कृष्टो तीनपल्योपम आउखो कह्यो । सौधर्मईशानदेवलोकनेविषे केतलाएकदेवनो त्रणिपल्योपमआउखो कह्यो सनत्कुमारमाहेंद्रत्रीजेचोथेदेवलोके केतलाएक देवनो त्रणिसागरोपममध्यमआउखोकह्योजेदेवताआभंकर १ प्रभंकर २ आभाकर ३ प्रभाकर ४ चंद्र ५ चंद्रावर्त्त ६ चंद्रप्रभ ७ चंद्रकांत ८ चंद्रवर्ण ९ चंद्रलेस १० चंद्रध्वज ११ चंद्रशृंग १२ चंद्रसिद्ध १३ चंद्रकूट १४ चंद्रोत्तरावतंसक १५ विमानेंसनत्कुमारमाहेंद्रदेवलोकेंदेवतापणेउपनाछे तेहदेवतानोउत्कृष्टोत्रणि सागरोपमआउखो कह्यो तेहदेवतावलीनिश्चेंअर्द्धमसवाडे थोडोस्वासले घणोस्वास ज चोस्वासतेउत्स्वासनीचोस्वासमूंकवोते

जंबूद्वीपेयदेतौसूर्यौसर्वाभ्यन्तरमण्डलमुपसंक्रम्य चारंचरत स्तदा नवनवतियोजनसहस्राणि षट्चत्वारिंशदधिकानि योजनशतान्यन्योन्यमन्तरंकृत्वा चरत एतच्च जंबूद्वीपेपिशतुत्तर योजनशतं प्रविश्याभ्यंतरमण्डलभवति एतस्मिंश्च द्विगुणे जंबूद्वीपप्रमाणादपकर्षिते यथोक्तमन्तरम्भवतीति तथा तत्रतयो श्चरतो रुत्कृष्टो ष्टादशमुहूर्त्तो दिवसो भवति जघन्यकाच द्वादशमुहूर्त्तारात्रिर्भवति ततोभ्यन्तरमण्डलान्निष्क्रम्य प्रथमेऽहोरात्रे भ्यन्तरानन्तर मण्डलमुपसक्रम्य यदा चारचरत स्तदा नवनवतियोजनसहस्राणिषट्चपचचत्वारिंशदधिकानि योजनशतानि पंचत्रिंशच्च एकषष्ठिभागायोजनस्यांतरकृत्वा चारंचरत स्तदा चाष्टादशमुहूर्त्तोदिवसो भवति द्वाभ्या मुहूर्त्तस्यैकषष्टिभागाभ्यांन्यूनः द्वादशमुहूर्त्ताचरात्रि भंवति द्वाभ्यां मुहूर्त्तैकषष्टिभागाभ्यामधिकेत्येवं दक्षिणायनस्य द्वितीयादिषु मण्डलेष्वहोरात्रेषु चान्योन्यातरं प्रमाणस्य पचभिः पचभिर्योजनैः पचत्रिंशताचैकषष्ठिभागै योजनस्य वृद्धिर्वाच्या द्वाभ्यांच मुहूर्त्तैकषष्ठिभागाभ्यां दिनहानौ रात्रि वृद्धिश्चेति एवच एकोनचत्वारिंशत्तमे मडले सूर्ययोरन्तर नवनवतिसहस्राण्यष्टशतानि सप्तपचाशच्च योजनानां त्रयोविंशतिश्चैक षष्ठिभागा दिनप्रमाण चाष्टादशानां मुहूर्त्तानां मध्या देकषष्ठिभागाना मष्टसप्तत्यां पातितायां षोडशमुहूर्त्ताश्चतुश्चत्वारिंशच्चैकषष्ठिभागामुहूर्त्तस्य रात्रे

णचत्तालीसइमे मंडले अठहत्तरिं एगसठिभाए दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढेत्ताणं चा

नाएकसठ भाग करी एहवा बेबेभाग प्रतिदिन दिनघटाडिये रात्रिवधारिये एकमासे २ घडी दिवसघटाडीये तो ३९ मे माडले एक योजनना एकसठीया ७८ भाग दिवस घट्यो रात्रीवधी। एमज सर्ववाह्य मडलथकी दक्षिणायनथकी सूर्यनिवर्त्यो पाछोचाल्यो उत्तराभिमुखथयो तिवारे ३९ मे मांडले सूर्य गयो एक मुहूर्तना एकसठिया ७८ भाग कह्या । दिवस वधारिये रात्रिघटाडिये दक्षिणायननोपरिभागघटाडीये वधारिये । इति ७८ सपूर्ण

सुदेवस्य चतुरशीतिवर्षलचाणिसर्वायुरिति चत्वारिलचाणिकुमारत्वे शेषंतुमहाराज्येइति आउवहुइत्यादि किलरत्नप्रभाया अशीत्युत्तरयोजनलचबाहल्याया स्त्रीणिकाडानि भवन्ति तत्र प्रथम रत्नकांड षोडशविधरत्नमय षोडशसहस्रबाहल्य द्वितीय पककांड चतुरशीतिसहस्रमान तृतीय मब्बहुलकांड मशीतिर्योजनसहस्राणीति जंबूद्वीवेणमित्यादि ओगाहित्तत्ति प्रविश्य उत्तरकट्ठोवगयत्ति उत्तरां काष्ठां दिश मुपगत उत्तरकाष्ठोपगतः प्रथमसुदय करोति सर्वाभ्यन्तरमडले उदेतीत्यर्थः ॥ ८० ॥ अथैकाशीतिस्थानके किंचिदुच्यते। नवमनवमिकेति नवनवमानि दिनानि यस्यां सा नवनवमिका भवति नवसु नवकेषु नवनवमदिनानि तस्यांच भिक्षुप्रतिमाया मेकाशीति रात्रिदिनानि भवत्येव नवाना नवकाना मेकाशीतिरूपत्वा त्तथा प्रथमेनवके प्रतिदिनमेकै

णसहस्साइं बाहल्लेणं प० ईसाणस्सदेविंदस्स देवरन्नो असीइसामाणियसाहस्सीओ प० जंबूद्दीवेणं द्दीवे असीउत्तर जोयणसयं ओगाहेत्ता सूरिए उत्तरकट्ठोवगए पढम उदयं करेई ॥ ८० ॥ नवनवमियाण

जाडपणे। सोलेभेदे रत्नमय १ बीजो पक कांड ८४ हजार योजन। त्रीजो अप बहुलकांड ८० हजार योजन जाडपणेकह्यो। ईशानेंद्र बीजो इन्द्र देवतानो राजा तेहना ८० हजार सामानिकदेवता आपणीसारिखा कह्या। जंबूद्विपनी जगतीने माहीले पासे एकसो असी योजनलगे अवगाहीने प्रवेशकरीने सूर्य उत्तरदिशि भणी अभिमुख थयोथको सर्वाभ्यतर मांडलेआषाढो पूनिम दिने निषध पवतने माथे प्रथम उदय करे। इति ८० ठाणूं संपूर्ण ॥ ८० ॥ हिवे ८१ मोठाणू लिखेछे। पहिला नवदिनलगे एकेको भिचा बीजा ९ दिन लगे २ भिचा एमनवनवक लगे प्रतिदिन एकेक भिचावधारीये नवनवमिका भिक्षुप्रतिमा एकासी दिने पूरीथाय। नवनवक लगे प्रतिदिन एकेक भिचावधारतां ८१ दिने मिली चार से पांच अधिक भिचायें दातिकरी यथासूत्र क

नीयमोहनीयकर्मोदयसंपाद्या आहाराभिलाषादिरूपाश्चेतनाविशेषाः तथासकषायत्वाज्जीवस्यकर्मणोयोग्यानांपुद्गलानां बंधनमादानबंधनम्। तत्र प्रकृत
यः कर्मणोंऽशाभेदाः ज्ञानावरणीयादयोऽष्टौतासांबंधः प्रकृतिबंध. तथास्थितिस्तासामेवावस्थान जघन्यादिभेदभिन्नंतस्याबंधोनिर्वर्त्तनंस्थितिबंधः तथाऽनुभा
वोविपाकस्तीव्रादिभेदोरसस्तस्यबंधोनुभावः तथाजीवप्रदेशेषुकर्मप्रदेशानामनंतानतानांप्रतिप्रकृति प्रतिनियतपरिमाणानांबंधः संबंधनंप्रदेशबंधइति तथा

न्नत्ता तं० आहारसन्नाय भयमेहुणपरिग्गहसन्ना चउव्विहेबंधे प० तं० पगइबंधे ठिइबंधे अणुभागबंधे पएसबंधे चउगाउएजोयणे प० । अणुराहानक्खत्तेचउतारे प० । पुव्वासाढनक्खत्तेचउतारे प० । उत्तरासा

नोविराधनाहोयतेविकथाचारकहीछे तेकहेछे स्त्रीभलीवखाणीयेभूंडीवखाणियेतेस्त्रीविकथा भातराध्यानेअन्ननीवखाणवीविखोडवीतेभातविकथा १ राजा
नूभलूंभूंडूंकहिवोतेराजविकथा देसएकनवखाणग्रीएकनिषोडवोतेदेसविकाथा ४ च्यारसन्नाकहीअसातावेदनीयमोहनीकर्मनेउदयेऊपजेतेसंज्ञाकहीयेआहा
रसन्ना १ भयनोविदवोतेभयसंज्ञाकहीये २ मैथुननोअभिलाषातेमैथुनसंज्ञा ३ परिग्रहनोअभिलाषतेपरिग्रहसन्ना ४ चिहुप्रकारेबधजीवनेकर्मनेयोग्य पुद्गल
नोबांधवोतेबधकहीये तिहांकर्मनाअंशभेद ज्ञानावरणीयादिक ८ आठ तेहनोबांधवोतेप्रकृतिबंध २ तेहआठेकर्मनी स्थितिरहिवोजघन्यउत्कृष्टकेइकाल
तीव्रादिकभेदेअनेकप्रकारेरसतेहनोबंधवोतेरसबध जीवनाप्रदेशनेविषे अंतकर्मप्रदेशनोस्थितिबंध प्रकृति दीठनियतपरिमाणनोबांधवोतेप्रदेशबंध ४ उच्छेदा
गुलेच्यारगाउनोएकयोजनकह्योभगवते अनुराधानक्षत्रनाचारताराकह्या पुर्वाषाढानक्षत्रनाच्यारतारा कह्या उत्तराषाढानक्षत्रनाच्यार तारा कह्या एणी

प्रथमांगस्य नवाध्ययनात्मकप्रथमश्रुतस्कन्धरूपस्य सचूलियागस्सइति द्वितीयेहि तस्यश्रुतस्कन्धे पञ्चचूलिका स्तासुच पञ्चमी निशीथाख्ये ह लघ्यते भिनप्र स्थानरूपत्वात्तस्या स्तदन्या यतस्त स्तासुच प्रथमद्वितीयेसप्तसप्ताध्ययनात्मिके तृतीयचतुर्थ्यां चैकैकाध्ययनात्मिके तदेव सह चूलिकाभिर्वर्त्तत इति सचूलि काक स्तस्यपञ्चाशीति रुद्देशनकाला भवन्तीति प्रत्यध्ययन उद्देशनकालाना मेतावत्सं'ख्यत्वा त्तथाहि प्रथमश्रुतस्कन्धे नवस्वध्ययनेषु क्रमेण सप्त षट् चत्वार श्चत्वारः षट् पञ्च अष्ट चत्वार' सप्त चेति द्वितीयश्रुतस्कंधेतु प्रथमचूलिकायां सप्तस्वध्ययनेषु क्रमेण एकादश नय स्त्रयः चतुर्षु द्वौ द्वौ द्वितीयाया सप्तैकस राणि अध्ययनान्येवं तृतीयेकाध्ययनात्मिका एव चतुर्थ्यपीति सर्वमीलने पञ्चाशीतिरिति तथा धातकीखण्डमन्दरौ सहस्रमवगाढौ चतुरशीति सहस्राण्यु च्छ्रि ताविति पञ्चाशीतिर्योजनसहस्राणि सर्वाग्रेण भवतः पुष्करार्द्धमन्दरावप्येव नवरं सूत्रेनाभिहितौ विचित्रत्वात्सूत्रगते रिति तथा रुचको रुचकाभिधानस्त्रयो

आयारस्सणं भगवउ सचूलियागस्स पंचासीइ उद्देसणकाला प० धायइखडस्सणं मंदरस्स पंचासीइजोयण

अध्ययने ७ उद्देशा बीजे ६ त्रीजे ४ चौथे ४ पांचमे ६ छठे ५ सातमे ८ आठमे ४ नोमे ७ सर्वमिली प्रथम श्रुतस्कंधे ५१ उद्देशा। बीजे श्रुतस्कंधे ५ चूलिका तेमाहि पाचमी निशीथ नामे ते इहां नथही बीजी ४ ग्रही तेमांहीली बीजी चूलिका मांहि सात सात अध्ययन तेमाहीपहिली चूलिकाना साते अ ध्ययने अनुक्रमे ११ त्रिणि त्रिणि चिहुअध्ययने वेवे उद्देशा एव उद्देशा २५ पहिली चूलिकायें अने बीजी चूलिकायें सातएकसराअध्ययन त्रीजी चौथी चू लिकायें एक एक अध्ययनना सर्व मिली ८५ उद्देशण कालाथया। ८५ उद्देशानोधडो पूरो २५ मे समवायांगे मेलव्योछे। पूर्वापरधातकी खडे वेमेरुपर्वतछे ते वे मेरुपर्वत ८५ सहस्र योजन सर्वाङ्गे सर्वपरिमाणेकह्या एकसहस्र योजनऊंडा ८४ सहस्र ऊंचा सर्वमिली ८५ सहस्रथया। एम पुष्करार्द्धे पणि कह्या।

ढनरकत्तेचउत्तारे प० इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चत्तारिपलिओवमाइंठिई प०
तच्चाएणंपुढवीए अत्थेगइणंनेरइयाणंचत्तारिसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणंदेवाणं अत्थेगइयाणंच
त्तारिपलिओवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइआणं देवाणं चत्तारिपलिओवमाइंठिई प० सणं
कुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्थेगइआणं देवाणं चत्तारिसागरोवमाइंठिई प० जेदेवा किट्ठिंसुकिट्ठिं किट्ठियाप
त्तकिट्ठिप्पभं किट्ठिजुत्तं किट्ठिलेसं किट्ठिज्झयं किट्ठिसिंगं किट्ठिसिट्ठं किट्ठिकूडं किट्ठुत्तरवडिंसगंविमाणंदे
वत्ताएउववन्ना तेसिंणंदेवाणं उक्कोसेणं चत्तारिसागरोवमाइंठिई प० । तेणंदेवाचउण्हमासाणं आणमं

इरत्नप्रभापहिलीपृथिवीनेविषेकेतलाएक नारकीनो च्यारपल्योपम आउषूंकहिंउ कह्या त्रीजोवालुकप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो च्यारिसा
गरमध्य आउषूंकह्योछे । असुरकुमारभवनपतीदेवनूं केतलाएकनूं च्यारिपल्योपमआउषूं कह्यो सौधर्मईशानदेवलोकनेविषेकेतलाएकनो देवतानोच्यारपल्यो
पममध्यआउषूंकह्यो सनत्कुमारमाहेंद्रत्रीजाचौथादेवलोकने विषेकेतलाएकादेवतानूं च्यारसागरोपममध्यआउषूंकह्यो त्रीजेचोथेदेवलोकेजेदेवता कृष्टि१ सु
कृष्टि २ कृष्टिकापन्न ३ कृष्टिप्रभ ४ कृष्टियुक्त ५ कृष्टिलेश्य ६ कृष्टिध्वज ७ कृष्टिशृंग: ८ कृष्टिसिद्ध ९ कृष्टिकूट कृष्टिकावतंसकएणेविमानने विषेदेवताप

निखिलाना मक्तुमशक्यला दर्थानां जीवादीना मेगुत्तरियत्ति एकउत्तरीयस्मांसा एकोत्तरा सैव एकोत्तरिका इह प्राकृतलात् कस्वत्व म्परिवुड्ढियत्ति परिवृद्धि श्चेति समनुगीयते समवायेनेति योगः तच्च परिवर्द्धन सख्यायाः समवसेय चशब्दस्य चान्यत्र सम्बन्धादेकोत्तरिका अनेकोत्तरिका च तत्रशत यावदेकोत्त रिका परतो ऽनेकोत्तरिकेति तथाद्वादशाङ्गस्य च गणिपिटकस्य पल्लवगति पर्यवपरिमाण अभिधेयादि तद्धर्मसख्यान यथा परित्तातसाइत्यादि पर्यवशब्द स्यच पल्लवत्ति निर्देशः प्राकृतत्वात् पर्यंकः पल्लयक इत्यादिवदिति अथवा पल्लवाइव पल्लवाः अवयवा स्तत्परिमाण समणुगाइज्जति समनुगीयते प्रतिपाद्यते पूर्वोक्तमेवार्थं प्रपञ्चयन्नाह ठाणगेत्यादि ठाणगसयस्सत्ति स्थानकशतस्यैकादीना शताना संख्यास्थानाना न्तद्विशेषितात्मादिपदार्थानामित्यर्थः. तथा द्वाद शविधो विस्तरो यस्याचारादिभेदेन तत्द्वादशविधविस्तर तस्य श्रुतज्ञानस्य जिनप्रवचनस्य किंभूतस्य जगज्जीवहितस्य भगवतः श्रुतातिशययुक्तस्य समा ॥

तिससमयपरसमयासूइज्जति समवाएणं एकाइयाणं एगट्ठाणं एगुत्तरियंपरिवुड्ढीए दुवालसगस्सयगणिपिड ॥ गस्स पल्लवग्गेसमणुगाइज्जइ ठाणगसयस्सयबारसविहवित्थरस्ससुयणाणस्स जगजीवहियस्सभगवओ समासे ॥

निणचार आदि कोटिलगे एकअर्थं जीवादिक पदार्थनो एकेक आगलि २ परें वधारिवो ते समवायाग कहिये। द्वादशाग केहवो छे। गणी आचार्य तेह ने पिटकरत्नकरंडीया सरीखो छे तेहनो पल्लव अवयव तेहनो परिमाण जिहां कहिये स्थानक शत एक आदि सो छे छेहडे जेहने एहवो संख्या स्थानक तेहनो बारे प्रकारे विस्तारवो एहवो श्रुतज्ञानछे। ते श्रुतज्ञान केहवो छे। ते श्रुतज्ञान जगतना जीवने हितरूपछे। वली पूज्यछे। एहवा श्रुतज्ञाननो सक्षेपे समाचार स्थानक २ प्रति अग अग प्रति अनेक प्रकारे कहिवा योग्य लक्षण व्यवहार कहिये छे। ते समवायाग ने विषे नाना विध जीव अजीव

अष्टिसुकृष्टादीनिद्वादशविमानानिपूर्वोक्तविमाननामानुसारयतीनि । पंचस्थानकमपिसुगमं नवरं क्रियामहाव्रतकामगुणाश्रवसंवरनिर्जरास्थानसमित्य
स्तिकायार्थसूत्राणामष्टकं नत्त्वार्थपंचकं स्थित्यर्थषटकं उच्छ्वासाद्यर्थत्रयमेवेति । तथाक्रियादुर्व्यापारविशेषाः तत्रकायेननिवृत्ताकायिकीकायचेष्टेत्यर्थः
अधिक्रियतेआत्मानरकादिषुयेनतदधिकरणं । तेननिवृत्ताआधिकरणिकी खड्गादिनिर्वर्त्तनादिलक्षणेति । प्रद्वेषोमत्सरस्तेननिवृत्ताप्राद्वेषिकी परिताप-

तिवापाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिंदेवाणं चउहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ अत्थेगइ
आभवसिद्धियाजीवा जेचउहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जावसव्वदुक्खाणंअंतंकरिस्संति ॥ ४ ॥
पंचकिरिया प० तं० काइया अहिगरणिया पाउसिआ पारितावणिया पाणाइवायकिरिया पंचमहव्वया

णेउपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टपणे च्यारसागरोपमआउषं कह्यो तेदेवताचिहुंअर्द्धमासवाडेएतलेचोथेपखवाडेऊंडोसासलेइ घणोसासले नीचोमेलवोतेनि
श्वास जचोलेववोतेऊसासतेहदेवताने चिहुवर्ष सहस्से आभोगआहारनोअर्थउपजे केतलाएकछेभव्यजीव चिहुनेभवगृहणेच्यारभवनेअंतरे सीझस्येबूझस्ये मुं
कास्येसंसारथकी सर्वदुक्खनो अंतकरिस्ये इतिचोथोठाणूंसमत्तं ४ हिवेपांचनेअधिकारलिखीयेछे पांचक्रियाकही क्रियाते कायादिकनोव्यापारतेकहेछे
कायायेंनोपजावीतेकायिकीक्रियाकायचेष्टा आत्मानरकादिकनेविषेजेणेकरीस्थापीयेंतेअधिकरणकीषड्गादिकनीपजाविवालक्षण प्रद्वेषमत्सरतेणेनीपिजा

मरणं अवगाहना शरीरप्रमाणमङ्गुलासंख्येयभागादि अवधि रंगुलासंख्येयभागचैवविषयादि वेदना शुभाशुभस्वभावा विधानानिभेदा यथा सप्तविधा नारका इत्यादि उपयोग आभिनिबोधिकादि द्वादशविधः योगः पञ्चदशविध इन्द्रियाणि पञ्च द्रव्यादिभेदात् विंशतिर्वा श्रोत्रादिच्छिद्रायपेचयाष्टौवा कषायाः क्रोधादयः आहारश्चोच्छासश्चेत्यादिद्वन्द्व स्तत' कषायशब्दा प्रथमाबहुवचमलोपोद्रष्टव्यः तथा विविधाच जीवयोनिः सचित्तादिक जीवाना तथा विष्कम्भोत्सेधपरिचयः प्रमाण विधिविशेषाश्च मन्दरादीना महीधराणामिति तत्र विष्कम्भो विस्तारउत्सेधउच्चत्व परिरय' परिधिः विधविशेषा इति योग' तथा वर्षाणाविधयो भेदा यथा मन्दरा जम्बूद्वीपीयधातकीखण्डीयपौष्करार्धिकभेदा त्रिधा तद्विशेषस्तु जंबूद्वीपको लचोच्चः शेषास्तु पचाशीतिसहस्रोच्छ्रिता इत्येवमन्येष्वपि भावनीयं तथा कुलकरतीर्थंकरगणधराणां तथा समस्तभरताधिपाना चक्रिणाचैव तथा चक्रधरहलधराणा च विधिविशेषा इतियोग तथा

णाविहाणउवओगजोगा इंदियकसायविविहायजीवजोणी विक्खंभुस्सेहपरिरयप्पमाणं विहिविसेसायमंदरा
दीणं महीधराणं कुलगरतित्थगरगणहराणं सम्मत्तभरहाहिवाणचक्कीणचेव चक्कहरहलहराणय वासाणयनि

सख्येयभागचैत्र विषयादि वेदना शुभाशुभ स्वभावनो विधान भेद उपयोग मतिज्ञानादिक १२ भेदे योग १५ भेदे इन्द्रिय ५ कषाय क्रोधादिक विविध अनेक प्रकार जीवायोनि जीवोत्पत्तिस्थानक विष्कभ पिहुल पणो । उत्सेध ऊचपणो । परिधिप्रमाण विधि विशेष विखभ उत्सेध परिधि इत्यादिक भेदें मदरादिक पर्वतनो कुलगर विमलवाहनादिक तीर्थंकर ऋषभादिक गणधर गौतमादिकनो सगलाई भरत चक्रवर्तीनो चक्रधर वासुदेव हलधर बलदेव

नंताडनादिदुःखविशेषलक्षणं तेननिवृत्तापारितापकी प्राणातिपाताक्रिया प्रतीतेति । तथाकाम्यन्ते ग्रनिलष्यन्ते इतिकामास्तेचतेगुणाश्चपुद्गलधर्माः शब्दाद
यइतिकामगुणाः कामस्ववादर्पस्योद्दीपकागुणाः शब्दादयइति तथाश्राश्रवंति प्रविशन्तिकर्मोपादनोपाया मिथ्यात्वादीनि सवरस्यकर्मानुपादानस्यद्वाराण्युपा
याःसवरद्वाराणि मिथ्यात्वाद्याश्रवद्वारविपरीतानिसम्यक्त्वादीनि तथा निर्जरादेशतःकर्मक्षपणात्तस्याःस्थानान्याश्रयाः कारणानीतियावन्निर्जरास्थानानि
प्राणातिपातविरमणादीनि एतान्येवसर्वशब्दविशेषितानि महाव्रतानिभवति तानिचपूर्वसूत्रेभिहितानि एतान्येवदेशशब्दविशेषितानि अणुव्रतानिभवति नि

प० तं० सव्वाउपाणाइवायाउवेरमणं सव्वाउमुसावायाउवेरमण सव्वाउअदत्तादाणाउवेरमण सव्वाउमेहु
णाउवेरणं सव्वाउपरिग्गहाउवेरमण पंचकामगुणा प० तं० सद्दा रूवा रसा गंधा फासा पंचआसवदारा
प० तं० मिच्छत्तं अविरई पमाया कसाया जोगा पंचसंवरदारा प० तं० सम्मंतं विरई अप्पमत्तया

वीतेगाद्वेषिकी परप्राणने परितापवो ताडनादिकदुखनीं उपजाववो ते पारितापनकीक्रिया परप्राणनो अतिपातविनाश तेणे नीपजावीक्रिया ते प्राण
तिपातकी पंचमहाव्रतश्रावकनांवत नी अपेचायें घणोमोटो व्रत तेमहाव्रत कह्या तेकहेछे सर्वथकी मन वचनें कायानेकरी तथा करण कारण अनुमती
भेदे करी छकायनां प्राणतेहने अतिपात विनाश तेहथकी विरमवो उसरवो तेसर्व प्राणातिपातविरमणपहिलामहाव्रत १ सर्व क्रोधें लोभें मृषा भूंठोबोल
वाथी विरमवो तेसर्व मृषावादविरमण दूजोव्रत २ जीव स्वामि गुरु अदत्तथकीविरमवो ते सर्वादत्तादानविरमण तीजोव्रत ३ सर्व नवभेदथकी औदारिक

यते अर्था यस्यां सा व्याख्या वियाहेइतिच पुल्लिङ्गनिर्देशः प्राकृतत्वात् वियाहेणतिव्याख्यायाव्याख्यायां वा ससमयाइत्यादीनि नवपदानि सूत्रकृतवर्णकाव्या ख्यातत्वा दिहकण्ठ्यानि वियाहेणति व्याख्यामित्यादि नानाविधैः सुरैः नरेन्द्रैः राजर्षिभिश्च विविहससइयत्ति विविधसंशयवद्भिः पृष्टानि यानितानि तथा तेषां नानाविधसुरेन्द्रराज ऋषिविविधसंशयितपृष्टानां व्याकरणानां षट्त्रिंशत्सहस्राणां दर्शनात् सुतार्थ व्याख्याप्रज्ञप्तिः पूर्वापरेणवाक्यसम्बन्धः पुन कि

से किं तं वियाहे वियाहेणं ससमयाविआहिज्जंति परसमयाविआहिज्जंति ससमयपरसमयाविआहिज्जंति जीवाविआहिज्जंति अजीवाविआहिज्जंति जीवाजीवाविआहिज्जंति लोगेविआहिज्जई अलोगेविआहिज्जई लोगालोगेविआहिज्जई वियाहेण नाणाविहसुरनरिंदरायरिसिविविहसंसइअपुच्छियाणं जिणाण वित्थरेण भासियाणं दव्वगुणखेत्तकालपज्जव पदेसपरिणाम जहत्थिभावअणुगमनिक्खेवणप्प

स्वमत परमत विहूं कहियेछे। जीव कहियेछे अजीव कहिये छे जीवा जीव विहु कहियेछे। लोक कहियेछे अलोक कहियेछे लोकालोक विहूं कहियेछे ए णी व्याख्याये भगवती अनेक प्रकारे सुर देवता नरेंद्र राजऋषि तेणे विविध प्रकारे संशय पूछ्याछे। ३६ सहस्र प्रश्न पूछ्याछे। तेहने विषे जिनवीतरागे म हावीर स्वामीये विस्तरे करी भाषितछे। जेह प्रश्न वली केहवा तेप्रश्न द्रव्य धर्मास्तिकायादिक गुणज्ञानवर्णादि क्षेत्रआकाशादिक काल समयादिक पर्यव स्वर भेद भिन्न धर्मा अथवा काल कृतावस्था नव पुराणादिक पर्याय प्रदेश ते विभागरहित परिणाम ते अवस्थाये जाणिवा जेणे प्रकारेअस्तिभाव छताभा व अनुगम सहितादि व्याख्यानप्रकाररूप निक्षेप नामस्थापना द्रव्य भावे करी थापवो नयते नैगमादिक प्रमाणप्रत्यक्षादिक सुनिपुण अति सूक्ष्म उपक्र

जैराख्यानत्वंपुनरेषांसाधारणमिति । तदिहैषामभिहितं । तथासमितयः संगताः प्रवृत्तयः तत्रेर्यासमिति गमने सम्यक् सर्वपरिहारतः प्रवृत्तिर्भा
षासमितिर्निरवद्यवचनप्रवृत्तिः एषणासमिति र्द्विचत्वारिंशद्दोषवर्जनेनभक्तादिग्रहणेप्रवृत्तिः आदानेग्रहणे भांडमात्रयो रुपकरणपरिच्छदस्य निक्षेपणा
वस्था पादानसमितिः सुप्रत्युपेक्षितादिसांगतेनप्रवृत्तिश्चतुर्थी १ । तथोच्चारस्य पुरीषस्य प्रश्रवणस्य मूत्रस्य खेलस्य निष्ठीवनस्य सिंघाणस्य नासिकाश्लेष्मणो

अकसाया अजोगया पचनिज्जरठाणा पं० तं० पाणाइवायाउवेरमणं मुसावायाउ अदिन्नादाणाउ मेहुणा
उवेरमणं परिग्गहाउवेरमणं । पंचसमिईउ प० तं० ईरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाणभंडम

मैथुन नवभेदेवैक्रियमैथुनएवं १८ भेदेमैथुनथकीविरमवो तेसर्वमैथुनविरमणचोथोमहाव्रत नवविधपरिग्रहथीविरमवो तेसर्वपरिग्रहविरमणपांचमोमहा
व्रत पांचकामगुण कामियेअभिलखीयेते कामकहीये तेहीज गुणपुद्गलस्वभावतेकामगुण अथवा काममदनतेहना दीपावका ते कामगुणकहीयेछे
शब्दतेसांभलवो रूपते देखवो रसते आस्वाद गंधतेनाकनोविषय फरसतेकायनोविषय आश्रवते कर्मआववानो[illegible]तेहनेद्वारसरीखाद्वारतेह
नेआश्रवद्वारकह्या तेकहेछे मिथ्यात्वतेविपरीतसद्दहणा तेहपापआविवानो उपाय १ एमअविरति[illegible] २ प्रमादतेप्रमत्तपणो ३ कषायतेक्रो
धादिक ४ योगतेमनोयोगादिक ५ पंचसंवरद्वारजेणेकरी कर्मनोआगमनरोकवो तेसंवर तेहनाद्वार तेउपायपांचकह्यातेकहेछे सम्यक्त्वतेशुद्धदर्शन १ वि-
रतितेप्रत्याख्यान २ अप्रमादपणुं ३ कषायनेटालिवो ४ अजोगतामनोजोगादिकनेरोधवो निर्जरातेदेशथकीजीवनाप्रदेशथकी कर्मपुद्गलनूंखपाव-
वं जूओकरिवो तेनाथानककहितांउपाय तेनिर्ज्जराठाणकह्यापांचेतेह तेकहेछे जीवमारिवाथकीविरमवोजसरिवो एहकर्मखपाविवानोउपाय १

तेचान्येचेत्वानि पूर्ववत् नवरं दसअज्झयणातिञिवग्गत्ति प्रत्राध्ययनसमूहो वर्गो वर्गेचदशाध्ययनानि वर्गाय युगपदेवोद्दिश्यते इत्यत स्त्रयएवोद्देशनकाला भवंती त्येवमेवच नथा मभिधीयन्ते इह दृश्यन्ते दशेत्यत्राभिप्रायो नज्ञायत इति तथा सख्यातानि पदानियसहस्साइं पयग्गेणंति किल षट्चत्वारिंशल्लाक्षष्टौच सहस्राणि ॥ ९ ॥ सेकिंतमित्यादि प्रश्नःप्रतीत स्तन्निर्वचन व्याकरणं प्रश्नानाश्च व्याकरणानाश्च योगात्प्रश्नव्याकरणानि तेषु अङ्गुष्ठप्रश्नमिणसयं

एए अन्नेय एवमाइत्थ वित्थरेण अणुत्तरोववाइयदसासुणं परित्तावायणा संखेज्जाअणुओगदारा संखेज्जाओ संगहणीओ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ से णं अंगठयाए नवमेअंगे एगेसुयक्खंधे दसअज्झयणातिन्निवग्गा दसउद्देसणकाला दससमुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं प० संखेज्जाणि अक्खराणि जावएवंचरणकरण परूवणया आघविज्जति सेत्त अणुत्तरोववाइय दसाओ ॥ ९ ॥ सेकिंतं पण्हावागरणाणि पण्हावागरणेसु अट्ठुत्तर

स्वं मुनिवर अतिक्रिया। एह पूर्वजे कह्याते अनेरापणि एवमादिक पदार्थ इहां अनुत्तरोपपातिक दशामांहि कहियेछे। एणेंसूत्रें परित्ता वाचना। संख्याता अनुयोग द्वारउपक्रमादिक। यावत् संख्याती संग्रहणी लगें जाणवी। तेह अगार्थपणें नवमें अंगे एक श्रुत स्कंधना दश अध्ययन त्रिण वर्ग वर्गों दश उद्देशन काल। दश समुद्देशनकाल। संख्याता पदना शत सहस्र ४६ लाख ८ हजार पदने परिमाणें कह्यो। संख्याता अक्षर थी जिहां ल गे चरणसाधुव्रतनी प्ररूपणा होय तिहां लगे कहियो। इत्यादि पूर्वोक्त पदार्थ जिहां कहिये ते अनुत्तरोपपातिक दशा नोमो अंग जाणिवो ॥ ९ ॥ अथ सूं ते प्रश्न व्याकरण प्रश्नने आकारण कहियेते प्रश्नव्याकरण प्रश्नव्याकरणने विषे अनुत्तर सर्वोत्तम प्रश्न। अंगुष्ठमाह प्र

जल्लस्यदेहमलस्य परिष्टापनायाः परित्यागेसमितिः स्थंडिलादिदोषपरिहारतः प्रवृत्तिरितिपंचमी । अस्तिकायाः प्रदेशराशयः धर्मास्तिकाया-दयोगतिस्थित्यवगाहोपयोगस्पर्शादिलक्षणाःस्थितिः सूत्रेषुउत्कृष्टादिविभागेनसमनुगंतव्यः । यदुतः । सागरमेगं १ सिय २ सत्त ३ । दसय ४ सत्तरस ५ तहयबावीसा ६ ॥ तेत्तीसजावठिई । सत्तसुविकमेणपुढवीसु ॥ १ ॥ जापढमाएसुजेठा ॥ बीयाएकणिठियाभणिया ॥ तरतमजोगोएसो । दसवाससहस्सरय

त्तनिरकेवणासमिई उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिठावणियासमिई । पंचअत्थिकायाप० तं० धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए रोहणीनरकत्तपंचतारे प० पुणव्वसु

एकमृषावादवेरमणं २ त्रण अदत्तादानविरमण ३ च्यारमैथुनवेरमण ४ परिग्रहरोविरमण ४ सावधानपणेप्रवर्त्तवीतेसमितिपांचप्रकारकही तेकहेछे-चालतीसर्वजीवनेजोईप्रवर्त्तवीतेईर्यासमिति १ निरवद्यवचननीप्रवृत्तिभाषासमिति २ । ४२ दूषणटालीभात्रिपाणीनूंलेवीतेएषणासमतिकही ३ । आदानकहतांभांडमात्रउपकरणने मूंकतां समति पूंजीजोईलेवी जोईमूंकिवी तेचोथीसमतिकही उच्चार विष्टा प्रश्रवण मूत्र खेल थूंक सिंघाण नांकनोमल रिंट जल्लमैलएतलापरठतांसमतितेस्थंडलदोषटालीप्रवर्त्तवी एपांचमीसमतिजाणवी ५ पांचअस्तिकायअस्तिकहतांप्रदेशतेहनाकाय तेराशितेअस्तिकायकहीयेतेकहेछे धर्मकहियेंचलनस्वभावएहवाप्रदेशराशितेधर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकायस्थितिस्वभाव २ आकाशास्तिकाय जीवने पुद्गलनेविषे अवकाशदेवानोस्वभाव जीवास्तिकायउपयोगलक्षण ४ पुद्गलास्तिकायस्पर्शलक्षणजाणिवो ५ रोहिणीनक्षत्रनापांचताराकह्या पुनर्वसुनक्षत्रना पांचताराकह्या ह

नोति गमयति जिज्ञासितधर्म्मविशिष्टानर्थानितिहेतु स्तेचानन्ता वस्तुनो नन्तधर्म्मात्मकत्वात् तत्प्रतिबद्धधर्म्मविशिष्टवस्तुगमकत्वाच्च हेतोः सूत्रस्य वानन्तगमपर्या यात्मकत्वात् यथोक्तहेतुप्रतिपच्चतो ऽनन्ता अहेतव स्तथाअनन्तानि कारणानि मृत्पिण्डतत्वादीनि घटपटादिनिवर्त्तकानि तथा अनन्तान्यकारणानि सर्वकार णानामेव कार्यान्तराकारणत्वा न्नहिमृत्पिण्डः पटनिवर्त्तयतीति तथा अनन्ताजीवाः प्राणिन एवमजीवा द्व्यणुकादयः भवसिद्धिका भव्याः सिद्धा निष्टिता र्था इतरे ससारिण आघविज्जंती त्यादि पूर्ववदिति द्वादशाङ्गस्य स्वरूपमनन्तरमभिहित मथ तदभिधेयस्य राशिद्वयान्तर्भावतः स्वरूपमभिधित्सुराह दुवेरा सीत्यादि इहच प्रज्ञापनायाः प्रथमपद मज्ञापनाख्य सर्वं न्तदत्तर मध्येतव्य किमवसानमित्याह जावसेत्तितमित्यादि केवल मस्य प्रज्ञापना सूत्रस्य चाय म्विशेषः इहदुवेरासीपन्नत्ता इत्यभिलाप स्तत्तु दुविहापन्नवणापन्नत्ता जीवपन्नवणा अजीवपन्नवणायत्ति अनिर्दिष्टस्यच सूत्रतः सर्वस्य प्रज्ञापनापदस्य ले

सिद्धिया अणंताअभवसिद्धिया अणंतासिद्धा अणंताअसिद्धा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति एवदुवालसंगंगणिपिडगं इति दुवेरासी पन्नत्ता तंजहा जीवरासी अजीवरासीय अजीवरासी दुविहा पन्नत्ता तंजहा रूवीअजीवरासी अरूवीअजीवरासीय सेकिंतंअरूवी

जीव अनन्त छे। सिद्ध अनतछे। एहसर्वभाव पूर्वने विषे कहिये। जणावीये देखाडिये विशेषपणे देखाडीये। उपदेश करिये। द्वादशाग स्वरूप कहीने हिवे तेहीजमां वेराशी कहीछे तेकहेछे। जीव राशि अजीवराशि। अजीवराशि बेप्रकारे छे तेकहेछे। रूपी अजीव राशि। अरूपी अजीवराशि। स्युंते अरूपी अजीवराशि अरूपी अजीवराशी दशप्रकारे तेकहे छे। धर्मास्तिकाय स्कंध १ देश २ प्रदेश ३। अधर्मास्तिकाय स्कंध १ देश २ प्रदेश २ आकाशा

णाए ॥ २ ॥ तथा । दो १ साहि २ सत्त ३ साहिय ४ । दस ५ चोदस ६ सत्तरिवअयराइं॥ सोहम्मजावसुक्को । तदुवरिइक्किक्कमारोवा ॥ ३॥ पलियं१दोसार २साहिय३ सत्त ४ साहिय ५ दस ६ चउद्दहस७ सत्तरस८ सहस्सारे तदुवरिइक्किक्कमारोवेत्ति तथावातंसवातमित्यादीनिद्वादशवाताभिलापेनविमानना

नक्खत्तेपंचतारे प० हत्थनक्खत्तेपंचतारे प० विसाहधणिट्ठानक्खत्तेपंचतारे प० इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवी ए अत्थेगइआणंनेरइयाणं पंचपलिओवमाइं ठिई प० तच्चाएणंपुढवीएअत्थेगईआणं नेरइयाणंपंचसागरो वमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणंपंचपलिओवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेग इयाणंदेवाणं पंचपलिओवमाइंठिई प० सणंकुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणंदेवाणं पंचसागरोवमाइंठिई प० जेदेवा वायं सुवायं वायप्पभं पभंतरे वायावत्तं वायकंतं वायप्पहं वायवन्नं वायलेसं वायज्झयं वा

स्तनक्षत्रना पांचताराकह्या विशाखानक्षत्रनांपांचताराकह्याधनिष्टानक्षत्रनापांचताराकह्या इणीयरत्नप्रभापहिलीपृथवीने केतलाएक नारकीनीं पांचपल्यो पममध्यआउषूंकहियें तीजोवालुकापृथवीनेविषे केतलाएकनारकीनो पांचसागरोपममध्यआउखो[illegible] सुरकुमारभवनपतीकेतलाएकनोदेवतानोंपांच पल्योपमआउखोकह्यो भगवंतें सोधर्मईशान पहिले बीजेदेवलोकें केतलाएकदेवतानो पांचपल्योपम आउखोकह्यो तीजेंसनत्कुमारमाहेंद्रचउथेदेवलोकनेवि षेकेतलाएकरदेवलोकना देवताने पांचसागरोपमआउषूंकह्यो भगवंते तीजे[illegible] देवलोके जेदेवता वात १ । सुवात २ । वातप्रभ ३ । वीजेप्रतरे ४ । वाताव र्त्तनामके ४ । वातकांत ४ । वातप्रभ ५ । वातवर्ण ६ । वातलेश ४ । [illegible]तध्वज ८ । वातशृंग ९ । वातसिद्ध १० । वातकूट ११ । वातोत्तरावतंसक १२ ए

खितुमशक्यत्वा दर्थतस्तल्लेश उपदर्श्यते तत्राजीवराशि र्द्विविधो रूप्यरूपिभेदा त्तत्रारूप्यऽजीवराशि र्दशधा धर्म्मास्तिकाय स्तद्देश स्तत्प्रदेशश्चे त्येवधर्म्मास्तिकायाकाशास्तिकायावपि वाच्यावेव नव दशमोऽद्धा समय इति रूप्यजीवराशि श्चतुर्द्धा स्कधा देशा' प्रदेशा' परमाणवश्चेति तेच वर्णगन्धरसस्पर्शसंस्थानभेदत: पञ्चविधा: सयोगतो नेकविधा इति जीवराशि र्द्विविध: ससारसमापन्नो ससारसमापनश्च तत्रा ऽससारसमापन्ना जीवा द्विविधा अनन्तरपरम्परसिद्धभेदात् तत्रा नन्तरसिद्धा: पञ्चदशप्रकारा: परम्परसिद्धा स्त्वनन्तप्रकाराइति ससारसमापन्नास्तु पञ्चधै केन्द्रियादिभेदेन तत्रै केन्द्रिया: पञ्चविधा: पृथिव्यादिभेदेन पुन: प्रत्येक द्विविध: सूक्ष्मबादरभेदेन पुन: पर्याप्तापर्याप्तभेदेन द्विधा एव द्वित्रिचतुरिन्द्रियाश्रपि पञ्चेन्द्रिया श्चतुर्द्धा नारकादिभेदा त्तत्रनारका' सप्तविधा: रत्नप्रभादिपृथ्वीभेदात् पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च स्त्रिधा जलस्थलखचरभेदात् तत्र जलचरा' पञ्चविधा मत्स्यकाच्छपग्राहमकरसुसुमारभेदात् पुन र्मत्स्या अनेकधा श्लक्ष्णमत्स्यादिभेदात् कच्छपा द्विधा अस्थिकाच्छपमासकच्छपभेदात् ग्राहा' पञ्चधा दिलिवेष्टकमद्गुपुलकसीमाकारभेदात् मकरामत्स्यविशेषा द्विधा शुण्डामकरा करिमकराश्च सुसुमारास्त्वेकविधा स्थलचराद्विधा चतुष्पदपरिसर्प्पभेदात् चतुष्पदाश्चतुर्द्धा एकखुरद्विखुरगण्डीपदसनखपदभेदात् क्रमेणचैते अश्वगोहस्तिसिंहादय: परिसर्प्पाद्विधा उर:परिसर्प्पभुजपरिसर्प्पभेदात् उर:परिसर्प्पाश्चतुर्द्धा अह्यऽजगरा आलिकमहोरगभेदात् तत्राहयोद्विधा दर्वीकारामुकुलि

अजीवरासी अरूवीअजीवरासी दसविहा पन्नत्ता धम्मत्थिकाए जावअद्धासमए रूवीअजीवरासीअणे

स्तिकायस्कध ३ देश २ प्रदेश ३ एवं ८ दशमो अद्धा समय काल एवं १०। एमजीवराशि २ प्रकार त्रस १ थावर २। तेहो पणि सूक्ष्म बादर एम पर्याप्ता अपर्याप्ता एणी विधियें बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चउरिंद्रिय। पर्याप्ता अपर्याप्ता पंचेंद्रिय नरकतिर्यंच मनुष्य देवता भवनपति व्यंतर ज्योतिषी वैमानिक पर्याप्ता अपर्याप्ता एम ति

मानिताल्येवंसूराभिलापेनेति ॥ ५ ॥ षट्स्थानकमथतत्त्वसुबोधं नवेऽभिहलेश्या १ जीवनिकाय २ बाह्या ३ ऽभ्यंतरतपः ४ समुद्घाता ५ वग्रहार्थानिस
त्राणि षट नचत्रार्थैद्विस्थित्यर्थानिषट्उच्छ्वासाद्यर्थंनयमेवेति तत्रलेश्यानांस्वरूपमिद। कृष्णादिद्रव्यसाचिव्यात्परिणामोयआत्मनः स्फटिकस्येवतत्रायंलेश्या

यसिंगं वायसिद्धं वायकूडं वाउत्तरवडिंसगं सूरं सुसूरं सूरावत्तं सूरप्पभं सूरकंतं सूरवन्नं सूरलेसं सूरज्झयं
सूरसिंगं सूरसिद्धं सूरकूड सूरुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं पंचसागरोव
माइंठिई प० तेणंदेवापंचण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंति ऊससंतिनीससंतिवा तेसिणंदेवाणं पंच
हिंवाससहस्सेहिं आहारठ्ठेसमुपज्जइ संतेगइयाभवसिद्धियाजीवाजे पंचहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जा
अंतंकरिस्संति ॥ ५ ॥ छलेसाओपण्णत्ता तंजहा कण्हलेसा नीललेसा काउलेसा तेउलेसा

ह १२ विमाने तथावली। सूर १। सुसूर २। सूरावर्त्त ३। सूरप्रभ ४। सूरकांत ५। सूरवर्ण ६ सूरलेश ७। सूरध्वज ८। सूरशृंग ९। सूरसिद्ध १०। सूरकू
ट ११। सूरोत्तरावतंसक १२। एह २४ विमानेदेवतापणेजपनाछे तेहदेवताने उत्कृष्टपणे पांचसागरोपमआउखोकह्यो तेहदेवतापांचपखवाडे पांचअर्द्ध
मासे थोडोसासले घणोसासले नोचोसासमूके तेहदेवताने पांचवर्षसहस्रेंगये आहारनोअर्थंजपजेंछे केतलाएक संसारमांहिभव्यजीव जेहपांचभवने आंतरे
सीझस्यें बूझस्यें मूंकास्यें ससारसागरथकी सर्वदुःखनोअंतकरिस्यें मोचजास्ये इति पांचमूठाणोसम्मत्तं ॥ ५ ॥ छट्ठोठाणोकहेछे। छलेश्याकही

गम नवरं दडओत्ति नेरइया १ असुराई १० १० पुढवाइ ५ बेइंदियादओ ३ मणुया १ वंतर १ जोइसवेमाणियाय १ अहदंडओएवं ॥ अथानंतरमप्रज्ञप्ता ॥

ना नारकादीना मपर्याप्तापर्याप्तभेदानां स्थाननिरूपणायाह इमीसेणमित्यादि अवगाहना सूत्रादर्वाकसर्वं कण्ठ्य नवरं तेणनिरया इत्याद्यत्रच जीवाभिग

वीए केवइयंखेत्तंउगाहेत्ता केवइयाणिरयावासा पन्नत्ता गोयमा इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्त रजोयणसयसहस्सवाहल्लाए उवरि एगंजोयणसहस्सउगाहेत्ता हेठाचेगंजोयणसहस्सवज्जेत्ता मज्झे अठसत्त रिजोयणसयसहस्से एत्थणं रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयाणंतीस णिरयावाससयसहस्सा भवंतीतिमक्खाया

आणपाण ४ भाषा ५ मन ६ एह छ पर्याप्ती पूरीकरी ते पर्याप्ता । छ माहि ५ पर्याप्ति ४ पर्याप्ति करीने मरे ते अपर्याप्ता १ एम २४ दडकना जीव पर्याप्ता अपर्याप्ता भणिवा जिहालगे वैमानिकनो २४ मो दडक आवे तेहदडकनीगाथा नेरइया १ असुराइ १० पुढवाइ ५ बेइंदिया ४ मणुया १ वंतर १ जोइस वेमाणियाय १ अहदडओ एव एह ठाणांगे बीजे ठाणे जिम जीवनां भेद बेबे कह्याछे पणि इहां सर्व कहिवो । हिवे २४ दडक मांहि पहिलो नारकीनोछे तेह नारकीने रहिवाना ठाम भगवत आगलि गौतम स्वामी पूछेछे एणीयें हेभदंत हेपूज्य रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलो खेत्र ओगाहीने एतले अवगाहीने वली केतला नरकावासाकह्या । हे गौतम एणी ये रत्नप्रभा पहिलीपृथिवीने विषे ८० हजार योजन उत्तरे आगलीछे जेहने एहवो १ लाख योजन वाहुल्य पणे जाडपणे पृथिवी पिंडछे तेमाहि उपरि एक सहस्र योजन अवगाहीने मूकीने हेठें एक हजार योजन वर्जीने पछे विचे १ लाख अठुत्तर हजार यो जन पृथिवी पिंड राखोये । इहा रत्नप्रभा पृथिवीयें तेरेपाथडाछे तेमाहि नारकीना ३० लाख नरकावासा कह्याछे । तेनरकावासा माहि वाटला बाहिर

शब्दःप्रयुज्यतइति तथाबाह्यतपः बाह्यशरीरस्यपरिशोषणेनकर्मक्षपणहेतुत्वादिति । आभ्यंतरंचित्तनिरोधप्राधान्येनकर्मक्षपणहेतुत्वादिति तथाछद्मस्थोऽकेव

पम्हलेसा सुक्कलेसा छजीवनिकाया प० तं० पुढवीकाए आउकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए तसकाए छव्विहे बाहिरेतवोकम्मे प० तं० अणसणे उणोयरिया वित्तीसंखेवो रसपरिच्चाए कायकलेसो संलीणया छव्विहेअभिंतरेतवोकम्मे प० तं० पायच्छित्तं विणए वेयावच्चं सज्झाए ज्झाण उस्सग्गो छठाउ

कृष्णादिकपुद्गलनासंसर्गथकीआत्मानोपरिणाम अन्यथापणेपरिणमे ते लेश्याकहीये उक्तंच कृष्णादिद्रव्यसाचिव्या त्परिणामोयआत्मनः स्फटिकस्येवतत्रायं लेश्याशब्दः प्रयुज्यते । महाकाले पुद्गलेनीपनीकृष्णलेश्या १ । नीलासूडानें वर्णेतेनीललेश्या २ । अलसीनाफूलसरीषीकापोतलेश्या ३ । हींगलूपरेंत्यांसरीखा तेजोलेश्याजाणिये हरतालसरीषीपद्मलेश्या ५ । संखसारीषीउजलीशुक्ललेश्या ६ । संसारमांहि छप्रकारे जीवनिकाय जीवसमूहकहेछे तेकहेछे पृथवीकाय पृथवीमाटीकायसमूह १ । एमज अपजलकायपाणी २ । तेयकायअगनि ३ वायुकाय वायरो वनस्पतीकायतृणवृक्षादिक ५ त्रसकायबेंद्रियादिक पचेंद्रियलगे छप्रकारेबाह्यशरीरने शोषिकर्मखपावे तेवाह्यतप तेहनोकरिवो तेहबाह्यतपकर्मकहीये तेकहेछे अणसण उपवासएकथकीमांडी छमासलगे उणोदरीउणे पेटेजठिवी पूरोआरहानलेवो २ । वृत्तिसंक्षेप वृत्तिन करिवो ३ । रसनोंपरित्याग आंबिलनिवी प्रमुखकरिवो कायशरीरे क्षुधतादितापलोचआतापनादि कनोंकरिवोसंलीनताअंगउपांगसंवरी अणशनादिकनोकरिवो छप्रकारेअभ्यंतरतप अंतरंगमलनो सोषणहारतप तेहनो कर्मकरिवो तेतपकर्मकह्यो तेस

मयन्ति ततःशब्दादिविषयोपभोगइत्यर्थः ततोपच्छाविउब्वणयन्ति ततःपश्चाद्विक्रिया नानारूपाइत्यर्थः हन्तागोतम एवमेतदितिभावः एवं सर्वेषा म्पञ्चेन्द्रिया णां वक्तव्य मवरं देवानां पूर्वम्विकुर्वणा पश्चात्परिचारणा शेषाणान्तु पूर्वम्परिचारणा पश्चाद्विकुर्व्वणा एकेन्द्रियादीनामप्येव मत्रे निर्वचनेषु यत्र वैक्रियसम्भवो नास्ति तत्र विकुर्वणा निषेधनीयेति एवमाहारपयभाणियव्वति यथा दाहारस्यप्रश्न उक्त स्तथा तदुत्तरशेषद्वाराणिच भणद्भिः प्रज्ञापनाया श्चतुस्त्रिंशत्तम म्परिचारणापदाख्य म्पदमिहभणितव्यमिति इदञ्चात्राहारविचारप्रधानतया आहारपदमुक्तमिति तत्पुनरेव मर्थतः तत्र आहाराभोगणाइयत्ति एतस्यवि वरण नारकाणां किमाभोगनिवर्त्तित आहारो ऽनाभोगनिवर्त्तितोवा उभययापीति निर्वचन मेव सर्वेषा नवर मेकेन्द्रियाणा मनाभोगनिवर्त्तित एवेति तथापोग्गलानेवजाणतित्ति अस्यार्थः नारका यान् पुद्गलान् आहारयन्ति तानवधिनापि नजानन्ति अविषयत्वात्तदवधे स्तेषा नपश्यन्ति चक्षुषापि लोमा हारत्वात् तेषा मेव मसुरादय स्त्रीन्द्रियांताः कथमेकेंद्रिया अनाभोगाहारत्वा द्वित्रीन्द्रियाश्च मत्यज्ञानित्वा न्नजानन्ति चक्षुरिन्द्रियाभावाच्च न पश्यन्तीति चतुरिन्द्रियास्तु चक्षुः सद्भावेपि मत्यज्ञानित्वात् प्रक्षेपाहारं नजानन्ति चक्षुषानुपश्यन्ति तथा तएवलोमाहारमाश्रित्य नजानन्ति नपश्यतीति व्यपदिश्यते च क्षुषोविषयत्वात्तस्य पञ्चेंद्रियतिर्यञ्चो मनुष्याश्च केचिज्जानन्ति पश्यन्ति चावधिज्ञानादियुक्ताः लोमाहारं प्रक्षेपाहारञ्च जानन्त्यवधिना नपश्यंति चक्षुषा तथा अन्ये न जानति तत्र मजानति प्रक्षेपाहार मत्यज्ञानित्वा त्पश्यति चक्षुषा तथा अन्ये नजानंति नपश्यन्ति लोमाहारं निरतिशयत्वादिति व्यंतरज्योति ष्का नारकवत् वैमानिकास्तु ये सम्यग्दृष्टय स्ते जानति विशिष्टावधित्वात् पश्यतीचक्षुषोपि विशिष्टत्वात् मिथ्यादृष्टयस्तु नजानति नपश्यन्ति प्रत्यक्षपरोक्ष ज्ञानयो स्तेषा मस्पष्टत्वादिति तथाअज्झवसाणेयत्ति दार नारकादीना मप्रशस्ता प्रशस्तान्यसंख्येयान्यध्यवसायानीति तथा समत्तेत्ति दार तत्र नारकाः किं सम्यक्त्वाभिगमिनो मिथ्यात्वाभिगमिनः सम्यक्त्वमिथ्यात्वाभिगमिनश्चेति त्रिविधा अप्येत्र सर्वेपि नवर मेकेंद्रियामिथ्यात्वाभिगमिनएवेति अनन्तर माहारमरू

लोतत्र भवाम्छाग्रस्थिका: समेकोभावेनोत्प्राबल्येनचवातानिनिर्जर पुनिसमुद्घातावेदनादिपरिणतोहिजीवोबहून् वेदनीयादिकर्मप्रदेशान्कालांतरानुभाव योग्यानुदोरणेनाक्षिप्योदयेप्रक्षिप्यानुभूयनिर्ज्जरयति आत्मप्रदेशै. सश्लिष्टान्घातयतीत्यर्थस्तेचेह्ववेदनादिभेदेनषडुक्ता: तत्रवेदानासमुद्घातो ऽसावद्यकर्माश्रय कषायसमुद्घात: । कषायाख्यचारित्रमोहनीयकर्माश्रय: मारणांतिकसमुद्घातोऽंतर्मुहूर्तशेषायुष्ककर्माश्रयो वैकुर्विकतैजसाहारकसमुद्घाता: शरीरनामकर्म श्रयास्तत्रवेदनासमुद्घातसमुद्धतआत्मावेदनीयकर्मपुद्गलशातंकरोति । कषायसमुद्घातसमुद्धत: कषायपुद्गलशातं मारणांतिकसमुद्घातसमुद्धत आयु:कर्मपु द्गलावात: वैकुर्विकसमुद्घातसमुद्धतस्तुजीवप्रदेशान् शरीराद्बहिर्निष्काश्यशरीरविष्कंभबाहल्यमात्रमायामतश्च संख्येयानियोजनानि दडंनिसृजतिनिसृज्य

मत्थियासमुग्घाया प० तं० वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतिअसमुग्घाए विउव्वियसमुग्घाए ते यसमुग्घाए आहारसमुग्घाए छव्विहेअत्थुग्गहे प० तं० सोइंदियअत्थुग्गहे चक्खुइंदियअत्थुग्गहे घाणि

गलेआगलितखाणस्ये अनुक्रमेकहेछे प्रायश्चित तेअतोचारदूसण निवारवा भणी आलोचनादिकनोदेवो विनयतेवडेआव्यांजठिवो वेयावच्च आहारादिक दानेंकरी श्रोठंभवो कालवेलायें सूत्रभणिवो ध्यानतेशुभध्याननों ध्याववो उत्सर्गते कायोत्सर्गकरिवो छद्मस्थनो छसमुद्घातकह्या सातमोकेवलिसमुद्घात तेकेव लीनो एकाभावे प्रबलपणे जीवप्रदेशथी कर्मपुद्गलनों हणिवो निर्ज्जरवो तेसमुद्घातकहिये तेकहेछे प्रथमवेदनासमुद्घात १ वेदनाव्याप्योजीवघ णावेदनीयकम नाप्रदेशकालांतरेअनुभववायोग्यछें तेउदीरणाकरिने आक्षेपीउदयावलिकायें प्रक्षेपीभोगवीने निर्जरेआत्मानाप्रदेशथीसंवडछे वेदनीयकर्मना पुद्गलतेवेगला कषायसमुद्घातजीवकषायना पुद्गलनिर्जरावे मारणांतिकसमुद्घात समुद्धतजीव आऊखाकर्मपुद्गलनिर्जरे ३ विकुर्वणासमुद्घासमुद्धवजीवना प्रदेश शरीरथकी

लपीतकौशेयवाससः प्रवरदीप्ततेजसो वरप्रभावतया वरदीप्तितयाच नरसिंहा विक्रमयोगा त्नरपतयः तन्नायकत्वात् नरेन्द्राः परमैश्वर्ययोगात् नरवृषभा उ त्क्षिप्तकार्यभारनिर्वाहकत्वात् मरुद्वृषभकल्पाः देवराजोपमा अभ्यधिक शेषराजेभ्य. राजतेजोलक्ष्म्या दीप्यमाना. नीलकापीतकवसना इति पुनर्भणन नि गमनार्थं कथं तेनचेत्याह दुवेदुवेइत्यादि एवच नववासुदेव नववलदेवा इति तिविठ्ठूय यावत्करणात् दुविठ्ठूय सयभुपुरिसुत्तमेपुरिससीहे। तहपुरिसपुण्डरीए दत्तेनारायणेकण्हेत्ति॥ १॥ अयलेविजयेभद्दे सुप्पभेयसुदंसणे आनंदेणंदणेपउमे रामेयावियपच्छिमेत्ति॥ २॥ कित्तीपुरिसोणति कीर्त्तिप्रधानपुरुषाणामिति महु रायकणगनत्थू सावत्थोपोयणचरायगिह कायंदीकोसंबी महिलपुरोहत्थिणपुरच तथा गाभिजुएसगामे तहइत्थिपराहओरंगे भज्जाणुरागगोठ्ठी परद्धठ्ठीमा उ याइयति तथा अस्सगोवेतारए मेरएमहुकेटभेनिसुंभेय वलिपहिराएतह रावणेयनवमेजरासंधेत्ति॥ ३॥ एएखलुपडिसत्तू कित्तीपुरिसाणवासुदेवाणं सव्वेवि

रवसहा मरुयवसन्नकप्पा अब्भहियरायतेयलच्छी पदिप्पमाणा नीलगपीयगवसणा दुवेदुवेरामकेसवाभाय रोहोत्था तजहा। तिविठ्ठूय जावकण्हे अयलो जावरामेय अपच्छिमे एएसिणं णवण्हं वलदेववासु

मांहि वृषभ समान छे पाछो भार वाहवा समर्थपणां थी। इन्द्र समान छे। अन्य राजा थकी अधिक राजतेज लक्ष्मीयें प्रदीप्तमान छे। नीला अने पीला छे वस्त्र जेहना दो दो राम अने केशव दोनुं भाइ होय राम तेवलभद्र केशव तेवासुदेव दुमात पिताएक दोनुभाई होय। एणीचोवीसीये ९ वलदेव ९ वासुदेव थया तेकहे छे। त्रिपृष्ठ १। प्रथमथी यावत् शब्दे द्विपृष्ठ २। स्वयम्भू ३। पुरुषोत्तम ४। पुरुषसिंह ५। पुरुष पुडरीक ६। दत्त ७। नारायण ८ कृष्ण ९ इहालगे जाणवा॥ अचल १। यावत् शब्दे विजय २। भद्र ३। सुप्रभ ४। सुदर्शन ५। आनद ६। नद ७। पद्म ८। राम ९। एहवलभद्र जाणि

स्ययास्थूलोवैक्रियशरीरनामकर्मपुद्गलान्प्राग्बद्धान्शातयति एवंतैजसाहारकसमुद्घातावपिव्याख्येयाविति । तया अर्थस्यसामान्यनिर्देशस्वरूपस्यशब्दादे
रवेतिप्रथमव्यंजनावग्रहानंतरं ग्रहणं परिच्छेदनमर्थावग्रहः सचैकसामयिको नैश्चयिको व्यावहारिकस्त्वसख्येयसामयिकः सचषोढा श्रोत्रादिभिरिंद्रियैर्न

दिअत्थुग्गहे जिब्भिंदियअत्थुग्गहे फासिंदियअत्थुग्गहे कत्तियानक्खत्ते छतारे प० असलेसानक्खत्ते छतारे प०
इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइआणंनेरइआणं छपलिओवमाइंठिई प० तच्चाएणंपुढवीए अत्थेगइया
णंनेरइआणं छसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणंअत्थेगइयाणंछपलिओवमाइंठिई प० सोहम्मी

वाहिरकाढीशरीरनेंबाहल्यपणेविष्कंभपणे ऊंचपणें संख्यतायोजनदंडकरी वैक्रियशरीरनामकर्मना स्थूलपुद्गलनेनिर्जरे ४ तेजूलेश्या मूकतिवारे तेजसपुद्गल
निर्जरे ५ पूर्वधरसंदेहटा लिवानेअर्थे आहारकशरीरकरे आहारसमुद्घातकरतो आहारकशरीर पुद्गलनिर्जरावे ६ छ प्रकारें अर्थावग्रह व्यंजनावग्रहानंतर
अर्थनों सामान्यपणेंग्रहिवोते अर्थावग्रह ते एकसमयरहै व्यवहारें असंख्यातसमयेंरहै तेकहैछै श्रोत्रेंद्रियेकाने तेणेकरी सामान्यप्रकारें शब्दरूपअर्थनोग्रहिव
तेश्रोत्रेंद्रियोअर्थावग्रह १ चक्षुकहिये आंखतेणेकरी सामान्यप्रकारेंरूपनोंग्रहिवो ते चक्षुरिंद्रिय अर्थावग्र २ एमनासिकायें गंधनोग्रहण ते घ्राणेंद्रियअर्थाव
ग्रह ३ जीभनेस्वाद ग्रहिवोतेजिह्वेंद्रिय अर्थावग्रह ४ शरीरेंकरी स्पर्शनोग्रहिवो तेस्पर्शेंद्रियार्थावग्रह ५ मनेंकरी अर्थनोंग्रहिवो ते मनोइन्द्रिय अर्थावग्रह ६
कृत्तिकानक्षत्रनाछताराकह्या असलेषा नक्षत्रना छताराकह्या एणें रत्नप्रभापहिली पृथवीने विषेंकेतला एकदेवतानोंछपल्योपम मध्यआउखोकह्यो ।

नंदमित्ते दीहबाहूमहाबाहू । अइबलेमहाबले बलभद्देयसत्तमे ॥ १ ॥ तिविठूयदुविठूय आगमिस्सेणव
रिहणो । जयंतेविजएभद्दे सुप्पभेयसुदंसणे आणंदे नंदणेपउमे संकरिसणअपच्छिमे ॥ १ ॥ एएसिणंनवण्ह
बलदेववासुदेवाण पुव्वभवियाणवनामधेज्जाभविस्संति । नवधम्मायरियाभविस्सति । नवनियाणभूमीउ
नवनियाणकारणाभविस्सति । नवपडिसत्तूभविस्संति तंजहा । तिलएयलोहजंघे वइरजंघेयकेसरी पल्हा
एअपराजिए भीमसेणेमहाभीमे सुग्गीवेयअपच्छिमे ॥ ॥ एएखलुपडिसत्तू कित्तीपुरिसाणवासुदेवाणं ।
सव्वेविचक्कजोही हम्मिहंतासचक्केहिं ॥ १ ॥ जंबूद्दीवेएरवएवासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउव्वीसं ति
त्थकराभविस्सति तंजहा । सुमंगलेअसिद्धत्थे णिव्वाणेयमहाजसे धम्मज्झएयअरहा आगमिस्सेणहोक्खई १

य १ । विजय २ । भद्र ३ । सुप्रभ ४ । सुदर्शन ५ । आनन्द ६ । नंदन ७ । पद्म ८ । संकर्षण ९ । एह ९ बलदेव ९ वासुदेवना पूर्वभवनाम होस्ये । नवध
र्माचार्य धर्मगुरू थास्ये । नवनियाणा भूमिहोस्ये । नवनियाणाना कारण होस्ये । ९ प्रतिशत्रु प्रतिवासुदेव होस्ये । तेकहेछे । तिलक १ । लोहजंघ २
वज्रजंघ ३ । केसरी ४ । प्रल्हाद ५ । अपराजित ६ । भीम ७ । महाभीम ८ । सुग्रीव ९ । एह प्रतिशत्रुकीर्ति पुरुष वासुदेव ना सबलाई प्रतिवासुदेव चक्रि
करी युद्धकरे आपणा चक्रथी मरणपावे । जंबूद्वीपना ऐरवत क्षेत्रे आवती उत्सर्पिणीये २४ तीर्थंकर होस्ये तेकहेछे । सुमंगल १ । अर्थसिद्ध २ । निर्व्वाण ३

साणेसु कप्पेसु अत्थेगइआणंदेवाणंछपलिउवमाइंठिई प० सणंकुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्थेगइआणंदेवाणं छसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सयवाई सयनू सयंभूरमण घोसं सुघोसं महाघोसं किठिघोसं वीर सुवीरं वीरगंत वीरसेणिय वीरवत्तं वीरप्पज्ञं वीरकंत वीरवन्नं वीरज्झयं वीरसिगं वीरसिद्धं वीरकूडं वीरुत्तरव डिसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणंछसागरोवमाइंठिई प० तेणदेवाछण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं छहिवाससहस्सेहिंआहारट्ठेसमुपज्जइ

तीजोवालुकप्रभा पृथवीनेंविषें केतलाएक नारकीनीं छ सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमोरदेवतानो केतलाएकनीं छपल्योपमआउखोकह्यो । सा० मेईशान देवलोकने विषें केतला एकदेवतानीं छपल्योपम आउखोकह्यो। तीजेसनत्कुमार चोथे माहेंद्र देवलोके केतलाएकदेवतानो छसागरोपम आउखो कह्यो। तीजेचोथे देवलोके जेदेवलोके जेदेवता स्वयवादी १। स्वयंभू २। स्वयंभूरमण ३ घोस ४। सुघोस ५। महाघोस ६। क्षिष्टिघोस ७। वीर ८। सुवीर ९। वीरगत १०। वीरसेनिक ११। वीरावर्त्त १२। वीरप्रभ १३। वीरकात १४। वीरवर्ण १५। वीरध्वज १६। वीरश्रृंग १७। वीरसिद्ध १८। वीरकूट १९। वीरोत्तरावतंसक २०। एहवेविमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टो छसागरोपम आउखोकह्यो तेदेवता छठे अर्द्धमासे एतले छठेपखवाडेसासो सासले घणोसासले उ चोलेवोतेऊसास नोचोमेहिलुवोतेनीसास तेदेवताने छहजारवर्षे आहारनो अर्थउपजे छेकेतलाएकभव्यजीव जेछेभवनेआंतरे सीझस्ये

सिरिचंदेपुप्फकेऊ महाचंदेयकेवली । सुयसागरेयअरहा आगमिस्सेणहोरकई ॥ २ ॥ सिद्धत्थेपुण्णघोसेय महाघोसेयकेवली । सच्चसेणेयअरहा आगमिस्सेणहोरकई ॥ ३ ॥ सूरसेणेयअरहा महासेणेयकेवली । सव्वाणंदेयअरहा देवउत्तेयहोरकई ॥ ४ ॥ सुपासेसुव्वएअरिहा अरहेयसुकोसले । अरहाअणंतविजए आगमिस्सेणहोरकइ ॥ ५ ॥ विमलेउत्तरेअरहा अरहायमहाबले । देवाणंदेयअरहा आगमिस्सेणहोरकई ॥ ६ ॥ एएवुत्ताचउव्वीसं एरवयम्मिकेवली । आगमिस्सेणहोरकंति धम्मतित्थस्सदेसगा ॥ ७ ॥ वारसचक्कवट्टिणो भविस्सति वारसचक्कवट्टिपियरोभविस्सति । वारसइत्थीरयणा भविस्सति नवबलदेववासुदेवपियरोभविस्संति णववासुदेवमायरो णवबलदेवमायरोभविस्सति । णवदसारमंडलाभविस्संति । उत्तमपुरिसा मज्झि

महायग ४ । धर्मध्वज ५ । श्रीचन्द्र ६ । पुष्पकेतु ७ । महाचन्द्र ८ । श्रुतसागर ९ । सिद्धार्थ १० । पूर्णघोस ११ । महाघोष १२ । सत्यसेन १३ । सूरसेन १४ सिरसेन बीजोनाम । महासेन १५ । सर्वानन्द १६ । सुपार्श्व १७ । सुव्रत १८ । सुकोमल १९ अनतविजय २० विमल २१ । उत्तर २२ । महाबल २३ । देवानन्द २४ होस्ये । ऐरवतक्षेत्रे २४ तीर्थंकर धर्मना उपदेशक । १२ चक्रवर्त्तीना पिताहोस्ये । ९ वासुदेवनी माता ९ बलदेवनीमाता होस्ये । ९ दशारमंडल होस्ये

इन्द्रियेणचमनसाजन्यमानत्वादिति स्थितिसूत्रेस्वयंस्वादीनिषिग्रतिविसानानीति ॥ ६ ॥ अथसप्तमस्यामकंविव्रियते तच्चकंठं नवरमिहभयसमुद्घातमहावीरोवर्षधरवर्षत्रोषमोद्दार्थानिचसूत्राणिषट् नच्चार्थागिपच स्थित्यर्थानिनव उच्छ्वासाद्यर्थानित्रोख्येवेति तत्रेहलोकभयंयत्स

संतेगइयान्नवसिद्धियाजीवाजेद्धहिंन्नवग्गहणेहिंसिज्झिस्संति जावसव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ ६ ॥ सत्तन्नयठाणा प० तं० इहलोगन्नए परलोगन्नए आदाणन्नए अकम्हान्नए आजीवन्नए मरणन्नए असिलोगन्नए सत्तसमुग्घाया प० तं० वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए तेयससमुग्घाए आहारसमुग्घाए केवलिसमुग्घाए समणेन्नगवंमहावीरे सत्तरयणीउ उड्ढंउच्चत्तेणंहोत्था स

बूझस्यें मूकासे भवमांहिथी सर्वदुखनो अंतकरिस्ये मोक्षजासे इतिछ्छोठाणोसमत्तं ॥ ६ ॥ हिवेसातनो अधिकारकहेछे सातभयनाठामकह्या तेकहेछे स्वजातीयथकीभय उपजेतेइहलोकभय परजातीयथकी भयउपजेतेपरलोकभय द्रव्यआश्रीउपजेते आदानभयबाह्यनिमित्तविना अकस्मात् भयउपजेते आकस्मिकभय आजीविका जीवकानो उपायतेहनो भय तेआजीविकाभय मरणनो[illegible]मरणभय अश्लोकअकीर्तितेहनोभय उपजेतेअश्लोकभय सातसमुद्घातपदनो अर्थछएठाणेकह्योछे तेकहेछे वेदनासमुद्घात कषाय समुद्घात मारणांत समुद्घात वैक्रियसमुद्घात तैजससमुद्घात आहारकसमुद्घात सातमोकेवलीसमुद्घाततेहकोइक केवलीच्यार अघातीयाकर्मखपावणेअर्थे केवलीसमुद्घातकरे पोतानां प्रदेशलोकांतलगें विस्तारी कर्मपुद्गलनिर्जरे श्रमण तपस्वी भगवंतमहा

जातीयात् परलोकभयंयद्विजातीयात्आदानभयं द्रव्यमाश्रित्यजेयते अकस्माद्भयंबाह्यनिमित्तनिरापेक्ष्यंस्वविकल्पाज्जातं शेषाणिप्रतीतानि नवरं मश्लो कोऽकीर्त्तिरिति । समुद्घाताःप्रागव नवरं केवलिसमुद्घातो वेदनीयनामगोत्राश्रयइति । तथा रत्नि वितताङ्गुलिर्हस्तइति ऊर्द्धोच्चत्वेनेतिहोत्थाबभूवेति तथा

त्तवासहरपव्वया प० तं० चुल्लहिमवंते महाहिमंते निसढे नीलवंते रूपी सिहरी मंदरे सत्तवासा प० तं० भरहे हेमवंते हरिवासे महाविदेहे रम्मए एरन्नवए एरवए खीणमोहेणं भगवया मोहणिज्जवज्जाओ सत्तकम्मपयडीओ वेएई महानक्खत्तेसत्ततारे प० कत्तिआइआसत्तनक्खत्ता पुव्वदारिआ प० महाइआसत्तन

वीर सातरत्निवितताङ्गुलहाथ रत्निकहियै एतलेसातहाथऊंचापणेहुया । सातवर्षधरपर्वतकहियै भरतादिकक्षेत्र तेहनाधरणहारकह्या । मर्यादाकारीतेकहे छे । भरतक्षेत्र हिमवंतक्षेत्र मर्यादाकारीतेलघुहिमवंतपर्वत हिमवंतक्षेत्र हरिवर्षक्षेत्र मर्यादाकारी तेमहाहिमवंत पर्वत हरिवर्षक्षेत्र महाविदेह मर्यादा कारी रूपीनिषधपर्वत महाविदेह रम्यकक्षेत्रमर्यादाकारी निषधनीलवंतपर्वत रम्यक ऐरण्यवतक्षेत्र मर्यादाकारीरूपीपर्वत ऐरण्यवतऐरवत क्षेत्र मर्यादा कारी शिखरीपर्वत । पूर्वापर महाविदेह मर्यादाकारी मेरुपर्वत । जवूद्वीपमांहिसातवासाकहियै सातक्षेत्रछे तेकहेछे भरतक्षेत्र मनुष्यनो १ हेमवंतक्षेत्रयु गलियांनूं२ हरिवर्षक्षेत्रयुगलियांनूं ३ महाविदेहक्षेत्रचोथो कर्मभूमियामनुष्यनो ४ रम्यकक्षेत्रयुगलियानूं ५ एरण्यवतक्षेत्रयुगलियांनो ६ एरवतक्षेत्रमनुष्यनो ७ क्षीणसर्वथापिक्षयगयोछे मोहनीकर्म जेहनो एहवाभगवंतपूज्यपती मोहनीयकर्म वरजीनें सातकर्मनी प्रकृति ज्ञानावरणीय १ । दर्शनावरणीय २ । वेदनी

अभिजिदादीनि सप्तनक्षत्राणि पूर्वद्वारिकाणि पूर्वदिशि येषु गच्छतः शुभंभवति । एव मश्विन्यादीनि दक्षिणद्वारिकाणि पुष्यादीन्य परद्वारिकाणि स्वा त्यादी न्युत्तरद्वारिकाणीति सिद्धांतगतमिदंतुमतान्तरमाश्रित्यकृत्तिकादीनिसप्तपूर्वद्वारिकादीनिभणितानि चंद्रप्रज्ञप्तौतुबहुतराणिमतानि दर्शितानीहार्थं

क्खत्तादाहिणदारिआ प० अणुराहाइआसत्तनक्खत्ताअवरदारिया प० धणिठाइआसत्तनक्खत्ता उत्तरदारि या प० पाठांतरेण । अभीयाइयासत्तनक्खत्ता प० इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तपलिओवमाइंठिई प० तच्चाएणंपुढवीएनेरइयाणंउक्कोसेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० चउत्थीएणंपुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणंदेवाणंअत्थेगइयाणं सत्तपलिओवमाइंठिई प०

य ३ । आउखो ४ । नामकर्म ५ । गोत्रकर्म ६ । अंतरायकर्म ७ । एहउदयकालेंवेदे भोगवें भवानचनना साततारा कह्या कृत्तिकाआदिलेईनें सातनक्षत्र पूर्वद्वारिकाकह्या पूर्वदिशिजाणहारने भलूंथाय । मघादिकसातनक्षत्र दक्षिणद्वारिकाकह्या । अनुराधादिक सातनक्षत्र पश्चिमद्वारिकाकह्या । धनिष्ठादिक सातनक्षत्रउत्तरद्वारिकाकह्या । पाठांतरेकरीकहियेछे । अभिजिदादिक सातनक्षत्रपूर्वद्वारिका अश्विनीथी सातनक्षत्र दक्षिणद्वारिका पुष्यादिकसातनक्षत्र पश्चिमद्वारिका स्वातिआदिक सातनक्षत्र उत्तरद्वारिकायहमूलमतजांणिवो एणीयरत्नप्रभापहिली पृथिवीनेविषें केतलाएक नारकीनोसातपल्योपममध्यम आउखोकह्यो । तीजीनरकपृथिवीनेविषें नारकीनोउत्कृष्टोसातसागरोपम आउखोकह्यो । चउथीनरक पृथिवीनेविषें नारकीनो सातसागरोपमजघन्य आउखोकह्यो । असुरकुमार भवनपती केतलाएकदेवतानो सातपल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्मईशानदेवलोकनेविषें केतला एकदेवतानूंसातपल्योपम

सोहम्मीसाणेसुकप्पेसुअत्थेगइयाणं देवाणंसत्तपलिओवमाइंठिई प० सणंकुमारेकप्पे देवणंउक्कोसेणंसाइरेइंगा
सत्तसागरोवमाइंठिई प० मांहिं देकप्पेउक्कोसेणसाइरेगाइंसत्तसागरोवमाइंठिई प० बंभलोएकप्पेअत्थेगइ
याणं देवाणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० जे देवा समं समप्पभं महप्पभं पभासं भासुरं विमलं कंचणकूडं सणं
कुमारवडिंसगं विमाणं देवत्ताउएववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० तेणं देवा सत्तरहं
अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं सत्तहिंवाससहस्सेहिं आ
हारठे समुपज्जइ सतेगइयाभवसिद्धियाजीवा जे सत्तहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति जावसव्वदु

आउखोकह्यो । त्रीजासनत्कुमार देवलोके देवतानोउत्कृष्टो सातसागरोपम आउखोकह्यो । माहेंद्रचउथेदेवलोके देवतानोउत्कृष्टो झाझेरोसातसागरोप
म आउखोकह्यो । ब्रह्मपाचमे देवलोके केतलाएकदेवतानो सातसागरोपसआउखोकह्यो । सनत्कुमारदेवलोके जेदेवता सम १ । समप्रभ २ । महाप्रभ ३ ।
प्रभास ४ । भासुर ५ । विमल ६ । कचनकूट ७ । सनत्कुमारावतंसक विमान ८ । एहआठविमाननेविषे जेदेवताऊपनाछे तेहदेवतानों उत्कृष्टोसात साग
रोपम आउखोकह्यो । तेहदेवता सातमें पखवाडे सासोसासले घणोसासलेवे नीचोसासलेवे । तेहदेवताने सातवे वर्षसहस्रे सातहजारवर्षे आहारनों अ
र्थऊपजेछे केतलाएकभव्यजीव जेहसातभवनेअंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुक्खनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये इति सातमोठाणोसमत्तं ॥ ७

इति स्थितिसूत्रेसमादीनिअष्टौविमाननामानीति ॥ ७ ॥ अथाष्टमस्थानकच्छा आयते। सुगमंचैत न्नवर मिहमदस्थानप्रवचनमातृचैत्यवृक्षजंबू शाल्मलीजगतीकेवलिसमुद्घातगणधरनक्षत्रार्थानिसूत्राणिनव स्थित्यर्थानिषट्उच्छ्वासाद्यर्थानित्रीणीति। तत्रमदस्याभिमानस्य स्थानानिजात्यादीनितान्येव मदप्रधानतयादर्शयन्नाह जाइमएइत्यादि जात्यामदोजातिमदएवमन्यान्यपि अथवामदस्यस्थानानितान्येवाह जाइमएइत्यादिशेषंतथैव तथाप्रवचनस्यद्वादशांगस्य तदाधारस्यवा संघस्य मातरइव प्रवचनमातर ईर्यासमित्यादयोद्वादशांगेभिहिता आश्रित्य साक्षात्प्रसगतोवाप्रवर्त्तते भवतिचयतो यत्प्रवर्त्तते तस्यतदाश्रित्यमातृकल्पतेति संवपचेतु यथा शिशुर्मातरममुंच आत्मलाभंलभते एवंसंघस्तामभुंचत्संघलंलभते नान्यथेतोर्यासमित्यादीनांप्रवचनमातृकत्वमेवेति तथा

क्खाणमंतंकरिस्संति ॥ ७ ॥ अठ्ठमयठाणा प० तं० जातिमए कुलमए बलमए रूवमए तवमए सुयमए लाभमए इस्सरियमए अठपवयणमायाओ प० तं० ईरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाण

हिवे आठनीठाणोकहेछे। आठमदनास्थानकआश्रय तेमदस्थानककह्या। तेकहेछे जातिमदजातितेमातृपक्ष तेणेकरीमद अभिमान तेजातिमद १। इमकुलजेपितृपक्षतेणेकरीमद तेकुलमद २। बलते शरीरनो सामर्थ्यपणो ३। रूपतेसौंदर्यपणो ४। तपतेछठ आठमादिक ५। श्रुतजेशास्त्र घणोभणे तेणेकरीमद ६। लाभतेफलप्राप्ति तेणेकरीमद ७। ऐश्वर्यतेठकुराई ८। यह आठमदकह्या। आठप्रवचनमाता प्रवचनद्वादशांगी अथवाद्वादशांगनू आधारतेसंघ तेहने मातासरिखी माताहितकारणी ते प्रवचनमाता कहीये। तेकहेछे ईर्यासमिति चालतांजीवने जोईचाले तेईर्यासमिति १। भाषानिवद्यबोलेते भाषासमिति २। ४२ दूषणटाली आहार भातपाणीलेवे तेएषणासमिति ३। उपकरणपूंजीलेवो मूंकवोते आदानसमिति ४ मलमूत्र पूंजीनिर्दोष स्थंडिले

व्यंतरदेवानांचैत्यवृक्षास्तन्नगरेषु सुधर्मादिसभानामग्रतो मणिपीठिकानामुपरि सर्वरत्नमया छत्रचामरध्वजादिभिरलंकृताभवन्ति । तेचैवंश्लोकाभ्यामवगन्त व्याः कलबोउपिसायाणं वडोजक्खाणचेइय । चुलसीभूयाणंभवे रक्खस। गतुकंडउय १ असोगोकिन्नराणंच किंपुरिसाणयचंपओ नागरुक्खोभुयंगाण गंधव्वाण यतुबुरुत्ति ॥ २ ॥ तथा जबुत्ति उत्तरकुरुषु जंबूवृक्षः पृथिवीपरिणामः सुदर्शनेतिनाम् एवंकूटशाल्मलीवृक्षविशेषः एवं देवकुरुषु गरुडजातीयस्यवेणुदेवाभि

मंडमत्तनिक्खेवणासमिई उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिठावणियासमिई मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती वाणमतराणंदेवाणंचेइयरुक्खाअठजोयणाइंउड्ढं उच्चत्तेणं प० जंबूणंसुदंसणाअठजोयणाइंउड्ढं उच्चत्तेणं प० कूडसामलीणं गरुलावासे अठजोयणइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० जंबुद्दीवस्सणं जगई अठजोयणाइं उड्ढ उच्चत्तेणं प० अठसामइए केवलिसमुग्घाए प० तं० पढमेसमएदंडंकरेइ वीएसमए कवाडंकरेइ तइएसमए मंथंकरेइ

परिठवे तेपारिठावणियासमिति ५ । मननोगोपिवो ठामेराखवो तेमनोगुप्ति १ दुर्मवचननोगोपिवो २ दुमकायानो गोपिवो ३ । वाणमतरदेवतानाचैत्य वृक्ष तेहने निकटवरत्तोवृक्षतेचैत्यवृक्ष जेहव्यंतरेंद्रना घरआगलवृक्ष छत्रकरीरह्याछे तेहचैत्यवृक्ष आठयोजनऊचा ऊंचपणेकह्या । हिवे उत्तरकुरुक्षेत्र नेमांहि जंबूवृक्ष पृथिवीपरिणाम सुदंसणाएहवेनामे अणाढियादेवनोठाम आठयोजनऊंचोऊंचपणेकह्यो निषधपर्वतहेठे देवकुरुक्षेत्रमांहि शाल्मलीवृक्ष गरुड जातीय वेणुदेवतानो आवासभूत तेह्आठयोजनऊ चोऊंचपणेकह्यो जबूदीपनें चउफेरजगतीछे जिमनगरनेचउफेर गढहोय्रे तिमतेजगती आठयोजनऊं चोकहो । केवली छेहडे अंतर्मुहूर्त्त आउखोथके अघातियाकर्म वेदनी १ । नाम २ । गोत्र ३ । आयु ४ । बराबर करिवानेअर्थें आठसमयनो केवलसमुद्घा

धानस्यदेवस्यावासइति । जगतीजंबूद्वीपनगरस्यप्राकारकल्पापालीति । तथा पार्श्वस्यार्हतस्त्रयोविंशतितमस्तीर्थकरस्य पुरिषादाणीयस्सत्ति पुरुषाणांमध्ये आदानीयआदेशः पुरुषादानीय स्तस्याष्टौगणाः समानवाचनाक्रिया साधुसमुदाया. अष्टौगणधरास्तन्नायकाः सूरयः । इदंचैतत्प्रमाणं स्थानांगे पर्युषणकल्पे च श्रूयते केवलमावश्यके अन्यथा तत्त्वयुक्तम् । दसनवगंगणाणमाणं जिणंदाणंति । कोर्थः पार्श्वस्यदशगणाः गणधराश्च । तदिह द्वयोरल्पायुष्कत्वादिना का

चउत्थेसमए मंथंतराइपूरेई पंचमेसमए मंथंतराइपडिसाहरई छठेसमए मंथंपडिसाहरई सत्तमेसमएकवाडं परिसाहरई अठमेसमए दंडंपडिसाहरई ततोपच्छा सरीरस्थेभवइ पासस्सणंअरिहापुरिसादाणिअस्स अठ गणा अठगणहराहोत्था तं० सुभेयसुभघोसेय वसिठेबंभयारिय ॥ सोमेसिरीधरेचेव वीरभद्देजसेइय ॥ १

तकरे । तेकहेछे केवलीपहिलेसमे आत्मप्रदेशवाहिरकाढी दंडाकारकरे हेठेसातमीलगे ऊपरलोकांतलगे विस्तारेतेकहेछे । बीजेसमेकपाटकरेदक्षिणलोकांत लगेप्रदेशेकरीपूरे तीजेसमयें मथानकरेच्यारपांखडीनारवाइयानीपरे पूर्वपश्चिम लोकांतलगेपूरे । आत्मप्रदेशविस्तारे । चउथेसमए च्यारविदिशिनाभाग आंतराप्रदेशेकरीपूरे । पांचमेसमयेमंथाननाआंतराविदिशें जेप्रदेशपूऱ्याछे तेहआत्माना प्रदेशप्रतें सांहरे पाछाले छठेसमये मथानसंहरे । सातमे समये क पाटसहरे १ । आठमेसमये दंडप्रतेसाहरे ८ । तिवारपछे शरीरस्थथहोये मूलगेशरीरहोये । श्रीपार्श्वनाथ अरिहंतने पुरुषामांहि आदेयहुकमनाधणीजेह नीवचनसहुनेग्राह्यमानतेह पुरुषादानीय तेहने आठगछने आठगणधरहुया सामान्य वाचना क्रियासाधु समुदाय तेगछतेहना नायक ते गणधर यद्यपि पार्श्वनाथना १० । गणधर आवश्यके कह्याछे परं वे अल्पायुषहुआ तेमाटे आठलख्याछे तेकहेछे शुभेय १ । शुभघोष २ । वासिष्ट.३ । ब्रह्मचारी ४ । सोम ५

णामानोति ॥ ८ ॥ अथ नवमस्थानकं सुखावबोधम् । नवरभिः ब्रह्मगुप्ति १ तद्गुप्ति २ ब्रह्मचर्याध्ययन २ पार्श्वाग्रसूत्राणांचतुष्टयम् ज्योतिष्कार्थंच यगस्त्र १ भोम २ सभा २ दर्शनावरणार्थंचतुष्टयं स्थित्याद्यर्थानि तथेज तत्र ब्रह्मचर्यगुप्तयो मैथुनविरति परिरक्षणोपाया: गोस्त्रीपशुपंडकै: संसक्तानि सकी

पम्हंकरं ३ चंदाभं ४ सूराभं ५ सुपइट्ठाभं ६ अग्गिच्चाभं ७ रिट्ठाभं ८ अरुणाभं ९ अरुणुत्तरवडिंसगं वि माणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं अट्ठसागरोवमाइंठिई प० तेणंदेवा अट्ठण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं अट्ठहिंवाससहस्सेहिं आहारट्ठेसमुप्पज्जइ संतेगइयाभवसिद्धियाजीवा जे अट्ठेहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति जावअंतंकरिस्संति ॥ ८ ॥ नवबंभचेरगुत्तीओ प० त० नोइत्थीपसुपंडगसंसत्ताणिसिज्जासणाणि सेवित्ताभवइ नोइत्थीणंकहंकहित्ता भ

आठपल्योपमआउखोकह्यो ब्रह्मलोके पांचमे कल्पे केतलाएक देवतानों आठसागरोपमआउखोकह्यो । पांचमेदेवलोके जेदेवता अर्चि १ । अर्चिमाली २ । वैरोचन ३ । प्रभंकर ४ । चन्द्राभ ५ सूराभ ६ । सुप्रतिष्ठाभ ७ । अग्निराभ ७ रिष्टाभ८ । अरुणाभ १० । अरुणोत्तरावतंसक ११ । एम ११ विमाने देवता पणे उपनाछे । तेहदेवतानो उत्कृष्टो आठसागरोपम आउखोकह्यो तेहदेवता आठपखवाडे श्वासोश्वासलेज'चोसासले नीचोस्वासले नीचोस्वासमूके तेहदेव ताने आठेवर्षसहस्र गये आहारनोअर्थउपजे केतलाएकभव्यजीव जे प्रानभवनेआंतरे सीभास्ये बूझस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरीस्ये । इति आठमोठाणोस मत्तो ॥ ८ ॥ हिवेनवनोअधिकार लिखियेछे । नवब्रह्मचर्य गुप्ति ब्रह्मचर्यरूप वृक्षने वाडिनीपरें राखिवानो उपाय ते ब्रह्मचर्य गुप्ति कहिये

र्णानि शय्यासनानि शयनीय विष्टराणि वसत्यासमानि वासेवसयिता भवतीत्येका १ नोस्त्रीणां कथा कथिताभवतीति द्वितीया २ नोस्त्रीगणान् स्त्रीसमुदा यान् सेवयिता उपासयिता भवतीति तृतीया ३ नोस्त्रीणा मिंद्रियाणि नयननासा वेशादीनि मनोहराणि आक्षेपकत्वात् मनोहराणि रम्यतया आलो कयिता दृष्टानि ध्याता तदेकाग्रचित्ततया दृष्टैवभवतीति चतुर्थी १४ नोप्रणीतरसभोजी गलत्स्नेहरस बिंदुकस्य भोजनस्य भोजको भवतीति पचमी। नो पानभोजनस्यातिमात्रमप्रमाण यथा भवत्येव माहारक' सदाभवतीति षष्ठी। नोपूर्वरत पूर्वक्रीडित मनुस्मर्त्ताभवति रतमैथुनक्रीडितंस्त्रीभिः सहतदन्याक्री डितिसप्तमी। नोशब्दानुपाती नोरूपानुपाती नोगंधानुपाती नोरसानुपाती नोस्पर्शानुपाती नोश्लोकानुपाती कामोद्दीपकान् शब्दादीन् आत्मनोवर्णवादच

वइ नोइत्थीणं गणाइं सेवित्ता भवइ नो इत्थीणं इंदियाणि मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झा[illegible] नो पणीयरसभोई नो पाणभोयणस्स अइमायाए आहारइत्ता नो इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं समर

ते कहैछे। नहो स्त्रीपशुपंडक संसक्त व्याप्तशयनपल्यकादिक आसन ते बाजोटादिकसेविताहुयें। स्त्रीनोकथावार्तानकहे। स्त्रीना समुदायने सेवेनही स्त्रीना इन्द्रिय नयन नासिकादिक मनोहर मनोरमनदेखे एकाग्रचित्तध्यायेंनही। प्रणीतरसभोजी नहोय गलत्स्नेहरसबिंदुजिमेनही पाणीसरस भोज न अधिकमात्राएअधिकजोमे नही बत्रीसकवलउपरांत जीमेनही स्त्रीने पाछल्यासंभोगपूर्वक्रीडा सभारे नही नशब्दानुपाती शब्दसरागी गीतादिकप्रते अनुरागीहोयनसांभले एमजरूडारूपजोवे नही रूडागंधनलेवे न रूडारसनोस्वादकरें न रूडास्पर्शपोताने शरीरेलगाडे आत्मानी श्लाघा नवांछे एतलेस्त्र

नानुसरतीत्यर्थः इत्यष्टमी । नीसातसौख्य प्रतिबद्धश्चापि भवति सातासातवेदनीया दुदयमाप्य प्रौद्यसौख्यंतत्तया अनेनच प्रशमसुखस्य व्यदास इतिनवमी इदंच व्याख्यानवाचनाद्वयानुसारेणकृतं प्रत्येकं वाचनयोरेवंविधस्तत्रभावादिति तथा कुशलानुष्ठान ब्रह्मचर्यं तत्प्रतिपादकान्यध्ययनानि ब्रह्मचर्याणि तानि चा चारांगप्रथमश्रुतस्कंध प्रतिबद्धानीति तथा अभिजित् नक्षत्रं साधिका नवमुहूर्त्ताश्चंद्रेण सार्द्धयोगं संबंधं योजयति करोति सातिरेकत्वंच तेषां चतुर्विंशो त्यामुहूर्त्तस्य द्विषष्ठिभागैः षट् षष्ट्याच द्विषष्टिभागस्य सप्तषष्ठिभागानामिति । तथाअभिजिदादीनि नवनक्षत्राणि चंद्रस्योत्तरेण योगंयोजयंति तत्रोत्तर

इत्ताभवइ नोसद्दाणुवाई नोरूवाणुवाई नोगंधाणुवाई नोरसाणुवाइ नोफास.णुवाई नोसिलोगाणुवाई नो सायासोक्खपडिबद्धेयाविभवइ नवबंभचेरअगुत्तिउ प० तं० इत्थीपसुपंडगसंसत्ताणं सिज्जासणाणसेवणया जावसायासुक्खपडिबद्धेयाविभवइ नवबंभचेरा प० तं० सत्थपरिण्णा लोगविजउ सीउसणिज्जं सम्मत्तं आयंती धुतं विमोहायणं उवहाणसुतं महपरिण्णा पासेणंअरहापुरिसादाणीए नवरयणीउ उड्ढ उच्चत्तेणंहो

गार नकरे साता सुखनेंविषे प्रतिबद्ध नहोयें न डूवीरहै नवब्रह्मचर्यनी अगुप्ति नवेप्रकारे ब्रह्मचर्य नरहै तेकहैछे । स्त्रीपशुपंडके संसक्तव्याप्तजे शय्यापल्यंका दिक आसनबाजोटादिक तेहनेसेवे नही एमपाछल्या नवबोल बखाण्याछे ते उपरांठालीजे एतले ब्रह्मचर्यनी अगुप्तिथाय नउमूंबोले जेसातासुखनेविषे प्रतिबद्ध खूंचीरहे नवब्रह्मचर्य एतले आचारांगसूत्रना प्रथमश्रुतस्कंधना नवअध्ययन कह्या तेकहैछे । शस्त्रपरिज्ञा १ । लोकविजय २ । शीतोष्णीय ३ सम्य क्त ४ । आयंती ५ । मतांतरे लोकसार धूताध्ययन ६ । मोहाध्ययन ७ । उपधानसूत्र ८ । महापरिज्ञा ९ । पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषमांहि प्रधाननवरत्नि

गतीरंभी विलेनएतावानेव प्रवेशइति लोकानुभावोवायमिति विजय दारस्यजंबूद्वीपगश्चिनःपूर्वदिग्व्यवस्थितस्य एगमेगाएत्ति एकैकस्मिन् बाहाएत्ति बाहौ

स्सणदारस्सएगमेगाए बाहाए नवनवभोमा प० वाणमंतराण देवाणं सभाउसुहम्माउनवजोयणाइंउड्ढं उ
च्चत्तेणं प० दंसणावरणिज्जस्सणंकम्मस्सनउत्तरपगडीउ प० तं० निद्दा निद्दानिद्दा पयला पयलापयला
थीणद्धी चक्खुदंसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे उहिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे इमीसेणं रयणप्पभाएपुढ
वीए अत्थेगइयाणंनेरइयाणं नवपलिउवमाइंठिई प० चउत्थीएपुढवीए अत्थेगइयाणंनेरइयाणं नवसागरो
वमाइंठिई प० असुरकुमाराणंदेवाणं अत्थेगइयाणं नवपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु कप्पे

खाडोमाहीआवे जंबूद्वीपना विजयद्वारने एकेक बाहानेपासे नवनवभोमानगरछे तथा उत्तठामकह्योछे वाणमंतरदेवनी सभा सुधर्मा नवयोजन ऊंचीऊंच
पणेकहीजाणवी। दर्शनावरणीयबीजोकर्म तेहकर्मनी नव उत्तरप्रकृतिकही तेकहेछे सुखे जागे तेनिद्रा १ दुखेजागे तेनिद्रानिद्रा २ बेठांआवे ते प्रचला ३
चालता आवे ते प्रचलाप्रचला ४। थीणद्धी अर्द्धवासुदेवनो बलहुवे ५। चक्षुदंसणकहियें आंखतेहनो आवरण पडल तेचक्षुदसणावरण ६। चक्षुविनाशेष
थाकता चारइन्द्रिय तेहना आवरण तेअचक्षुदसणावरण ७। अवधि दसणावरण ८। केवलदसणावरण ९। एणीयेरत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएक नार
कीनो नवपल्योपम आउखोकह्यो। चउथी नरकपृथिवीनेविषे केतलाएक नारकोनो नवसागरोपम आउखोकह्यो असुरकुमार देवनो केतलाएकनो नवपल्यो
पमआउखोकह्यो। सौधर्मईशानदेवलोकनेविषे केतलाएक देवतानो नवपल्योपम आउखोकह्यो। ब्रह्मदेवलोकनेविषे केतलाएक देवतानो नवसागरोपम

दीनिद्वादश सूर्यादपि द्वादशैव रुचिरादीन्येकादश ॥ ९ ॥ दशस्थानकं सुबोधमेव तथापि किंचिल्लिख्यते इहपंचविंशतिरूपाणि तत्रलाघव
द्रव्यतो ल्पोपधिना भावतो गौरवत्यागः संविग्नमनोज्ञ साधुदान वा ब्रह्मचर्येण वसनमवस्थानं ब्रह्मचर्यवास इति तथाचित्तस्य समस्तसमाधानं प्रशांतता

सिझियाजीवा जे नवहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ ९ ॥
दसविहेसमणधम्मे प० तं० खंती १ मुत्ती २ अज्जवे ३ मद्दवे ४ लाघवे ५ सच्चे ६ संजमे ७ तवे ८ चियाए ९ बंभचेरवासे १० । दसचित्तसमाहिठाणा प० तं० धम्मचिंतावासे सेअसमुप्पन्नपुव्वेसमुप्पज्जिज्जा स

उपजे । केतलाएक भव्यजीव नवें भवग्रहणे नवभवने आंतरें सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनोअंतकरिस्ये २५८ इति नवमू ठाणूंसम्मत्तं ॥ ९
हिवेदशनोंअधिकारलिखेछे श्रमणकहिये साधुतेहनो धर्मदशप्रकारे तेश्रमणधर्मकह्यो तेकहेछे । क्षमाक्रोधनिग्रह १ । मुक्तिनिर्लोभपणो २ आर्जवमायानिग्रह ३ । मार्दवमाननिग्रह ४ । लाघव हलुआपणूं द्रव्यथकीहलको जेअल्पउपधि भावहलको गौरवत्रयत्याग ५ । सत्यभाषी ६ । संयम १७ प्रकारे ७ । तप १२ प्रकारे ८ । त्याग साधूनेआहारादिकदेवो ९ । ब्रह्मचर्यनेविषेवसिवो १० । दशप्रकारेंचित्तना मननां समाधि प्रशांतपणो तेहनास्थानक आश्रय तेचित्तसमाधिस्थानक कहिये तेकहेछे धर्मनीचिंता जीवादिकपदार्थनो उपयोग तथा उपजिवो मरवो तेहनो स्वभावतेधर्म तेहनो चिंतविवो अथवाश्रुत चारित्रलक्षणधर्मनो चिंतावासे कहतां जेहपुरुषअंतने एहवोचितनहोयतेधर्मनी चिंताकहीछे । असमुत्पन्नपूर्वा पूर्वंअतीतकाले नही उपनी तेंहधर्मनीचिंता उपन्यापछे सब धर्मजीवादिद्रव्यस्वभाव अथवाश्रुतचारित्र जाणितए ज्ञपरिज्ञायेकरी आगे प्रत्याख्यानपरिज्ञायेकरी छांडवायोग्य कर्महुए तेछाडीये तेधर्मचिंतापहिली स

च्छेदसवेदितुमिति कल्याणसूचका वितथस्वप्रदर्शनाच्चभवति चित्तसमाधिस्थाननिदंद्वितीयं तथासंज्ञानंसंज्ञा साचयद्यपि हेतुवाददृष्टिवाददीर्घकालिकोपदे शभेदेनक्रमेण विकलेन्द्रिय सम्यग्दृष्टिसमनस्क संबंधित्वात्त्रिधाभवति तथाचाह दीर्घकालिकोपदेश संज्ञाग्राह्येति सायस्यास्ति ससंज्ञीसमनस्कस्तस्यज्ञान संज्ञिज्ञानं तच्चेहाधिकृतसूत्रान्यथा सूपपत्तेर्जातिस्मरणमेव से तस्यासमुत्पन्नपूर्वंसमुत्पद्येत कस्मैप्रयोजनायेत्याह पुव्वभवेसुमरिएत्ति पूर्वभावात्स्मर्त्तुंस्मृतपूर्व भवस्यसवेगात्समाधि रुत्पद्यतेइतिसमाधिस्थानमेतत् तृतीयमिति। तथादेवदर्शन वासेतस्यासमुत्पन्नपूर्वंसमुत्पद्यते देवाहितस्यगुणिल्लाद्दर्शनंददति किंफलमि त्याह दिव्यांदेवर्द्धिप्रधानपरिवारादिरूपां दिव्यादेवद्युतिविशिष्टां शरीराभरणादिदीप्तिं दिव्य देवानुभावउत्तरवैक्रियकरणादिप्रभाव द्रष्टुमेतद्दर्शनायेत्यर्थः दे वदर्शनाच्चागमार्थेषुश्रद्धधानाद्यं धर्मेवहुमानश्चभवति ततश्चित्तसमाधिरितिभवति देवदर्शनचित्तसमाधिस्थानमितिचतुर्थं तथाअवधिज्ञानवासेतस्यासमुत्पन्न

समुप्पन्नपुव्वे समुप्पज्जिज्जा पुव्वभवेसुमरित्तए देवदंसणेवासे असमुप्पन्नपुव्वे समुप्पज्जिज्जा दिव्वंदेवड्ढिं दिव्वं देवजुत्तं दिव्वंदेवाणुभावंपासित्तए ओहिनाणेवासे असमुप्पन्नपुव्वे समुप्पज्जिज्जा ओहिणालोगंजाणित्तए ओहिदं

कहिये से कहतां तेहने असमुत्पन्नपूर्व पूर्वेंउपनूनथी सेइ अर्थेंउपजे पूर्वभवसंभारवाने अर्थें पूर्वभवसंभरे विशेष सवेगउपजे एत्रीजूचित्तसमाधि स्थानक ३ तथा देवदर्शन सेकहतां तेहनेअसमुत्पन्न पूर्वं पूर्वेंउपनो नथी तेहजेने उपजे ते सेंअर्थेंउपजे। दिव्यप्रधान देवतानी ऋद्धिपरिवाररूप प्रधानदेवतानी द्युति विशिष्ट शरीराभरणदीप्ति प्रधान देवतानो अनुभाव वैक्रिय करिवानी सामर्थाई देखवानेअर्थें देवदर्शनथी धर्मनेविषे विशेषआदरहोय तेहथीचित्तसमाधिहु इ एहचउथूठाणूं ४। अवधिज्ञान तेहजेने पूर्वेंनथी ऊपनूं तेहजेने ऊपजे अवधिज्ञानेकरी लोकस्वरूप जाणवाने अर्थें विशिष्टज्ञानथी चित्तसमाधिहोय एणां

वैंसमुत्पद्येतकिमर्थमतआह मणोगतेजाणित्तएइत्याह अवधिनामर्यादया नियतद्रव्यक्षेत्रकालरूपेण लोकंज्ञातुं लोकज्ञानायेत्यर्थ' भवतिचविशिष्टज्ञानाच्चित्तस
माविरिति पचमतदिति। एवमवधिदर्शनसूत्रमपीतिषष्ठं। तथा मनःपर्यवज्ञानं वासेतस्यासमुत्पन्नपूर्वं समुत्पद्येतकिमर्थमतआह मणोगतभावेजाणित्तए अ
ढ्ढतीयद्वीपसमुद्रेषु संज्ञिनांपंचेन्द्रियाणां पर्याप्तकानांमनोगतान् भावान्ज्ञातुमेतत्ज्ञानायेत्यर्थः इतिसप्तमं। तथाकेवलज्ञानं वासेतस्यासमुत्पन्नपूर्वं समुत्पद्ये
त केवलंपरिपूर्णंलोक्यतेदृश्यते केवलालोकेनेति लोकालोकस्वरूप वस्तुतत्वंज्ञातुं केवलज्ञानस्यच समाधिभेदत्वाच्चित्तसमाधिस्थानता इहवामनस्कतया केवलि
अचित्त चेतन्यमवसेय मित्यष्टमं। एवंकेवलदर्शनं सूत्रंनवरंद्रष्टु मितिविशेष इतिनवम। तथाकेवलिमरणंवाम्रियतेकुर्यात् इत्यर्थः किमर्थमतआह सर्वदुःखप्र

सणेवासे असमुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा ओहिणालोगंपासित्तए मणपज्जवनाणेवासे असमुप्पन्नपुव्वेसमुपज्जि
ज्जा जावमणोगएभावेजाणित्तए केवलनाणेवासे असमुप्पन्नपुव्वेसमुपज्जिज्जा केवलं लोग जाणित्तए केवलदं
सणावासे असमुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा केवललोयंपासित्तए केवलिमरणंवामरिज्जा सव्वदुक्खप्पहीणाए।

चमूंठाणूं ५ अवधिदर्शन सेतेहनेपूर्वे उपनूं नथी तेहजेहने उपजे तेसेअर्थेउपजे अवधिदर्शनेकरी लोकस्वरूपदेखवाने अर्थ एछट्ठूंठाणूं ६ मनपर्यवज्ञानसेजेहने
पूर्वे उपनूंनथी तेहजेहने उपजे तेसेअर्थेउपजे अढाईद्वीपमांही संज्ञी पंचेंद्रियनो मनोगतभावजाणे एहवूंज्ञानपामी चित्तसमाधिहोय एसातमूंठाणूं ७ केव
लज्ञान सेजेहने पूर्वेउपनूंनथी तेहजेहने उपजवाने अर्थे केवलसकललोकजाणिवानेअर्थे एहचित्तसमाधिनूं आठमूंठाणूं ८ केवलदंसण सेजेहने पूर्वेउपनूंनथी
तेह जेहने उपजवाने अर्थेउपजे परिपूर्णलोक देखवाने अर्थे एहचित्तसमाधि नवमूंठाणूं ९ केवलीनेमरणे एतलेकेवलज्ञान उपार्जीनेमरे तेसे अर्थे सर्वदुःख

हाणायेति इदंतुकेवलिमरणं सर्वोत्तमसमाधिस्थानमेवेति दशममिति। तथाअकर्मभूमिकानां भोगभूमिजन्मनां मनुष्याणां दशविधारुक्खत्ति कल्पवृक्षाः।
उवभोगत्ताएत्ति उपभोग्यत्वाय उवत्थियत्ति उपस्थिताउपनताइत्यर्थः तत्रमत्तांगकाः मद्यकारणभूताः भिंगत्ति भाजनदायिनः तुडियगत्ति तुर्यांगसंपादकाः

मंदरेणपुव्वएमूले दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं प० अरिहाणं अरिठनेमीदसधणुइंउड्ढं उच्चत्तेणंहोत्था क
एहेणंवासुदेवे दसधणुइंउड्ढंउच्चत्तेणं होत्था रामेणंबलदेवेदसधणुइंउड्ढं उच्चत्तेणंहोत्था दसनक्खत्ता नाणबुद्धि
करा प० तं० मिगसिरअद्दापुस्सो। तिन्निअपुव्वाइमूलमस्सेसा। हत्थोचित्तायतहा। दसबुद्धिकरायना
णस्स ७ अकम्मभूमयाणंमणुआणं दसविहारुक्खा उवभोगत्ताए उवत्थियाप० तं० मत्तंगयाय भिंगाय तुडि

चयकरिवानेअर्थे एडकेवलोमरणते सर्वोत्तमचित्तसमाधिस्थानकदशम १० मेरूपर्वत मूलनेविषे दशसहस्रयोजन विष्कंभपणेपिहुल एकह्यो अरिहंतअरि
ष्टनेमी बावीसमीतीर्थंकर दशधनुषऊचपणेहुया कृष्णवासुदेव नवमो तेहनो देहदशधनुषऊचोउंचपणेहुयो रामबलदेव बलभद्र दशधनुषउंचा उंचपणेहुया
दशनक्षत्र ज्ञाननां वृद्धिकरणहार कह्या भगवंते तेकहेछे मृगशिर १। आर्द्रा २। पुष्य ३ त्रणिपूर्वा पूर्वाफाल्गुनी ४। पूर्वाषाढ ५। पूर्वाभाद्रपद ६। मूल ७
आश्लेषा ८। हस्त ९ चित्रा १०। एह दशनक्षत्र ज्ञानने वधारेएह मांहि भणवावेसे तो काहीं विघ्नउपजे अकर्म भूमिजिहां धर्मतथा कर्मसंबंधी क्रिया
नही तेअकर्मभूमि ५७ अंतरद्वीप अनेत्रीस अकर्मभूमि एवं ८६ चेत्र युगलियानां सास्वतांछे। तिहांनां माणसें युगलियाने दशप्रकारेवृक्ष एतले कल्पवृक्ष।
उपभोगने अर्थे उपस्थिता समीप आईरह्या थकाभोग्यआवे बांछापूरै एहवा कह्यातेकहेछे॥ मत्तंगका मद्यनाकारणभूत जाणिवा १ भाजनदातार २

दीवत्ति दीपशिखाः प्रदीपकार्यकारिणः जोइत्ति ज्योतिरग्निस्तत्कार्यकारिणइति चित्तंगत्तिचित्रांगाः पुष्पदायिनः चित्ररसाभोजनदायिनः मण्यंगाआभरण
दायिनः गेहाकाराः भवनत्वेनोपकारिणः अनग्नत्वंसवस्त्रत्व तद्धेतुत्वादनग्नाइति चोषादीन्येकादशविमाननामानीति । अथैकादशस्थानं तदपिगतार्थं नवर

ग्गा दीव जोइ चित्तंगा चित्तरसा मणिअंगा गेहागारा अनिगिणाय १ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए
अत्थेगइयाणं नेरइयाणं जहन्नेणं दसजोयणसहस्साइंठिई प० इमीसेणंरयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइ
याणं नेरइयाणं दसपलियउवमाइंठिई प० चउत्थीएपुढवीए दसनिरयावाससहस्साइं प० चउत्थीएपुढ
वीए अत्थेगइयाण नेरइयाणं उक्कोसेणं दससागरोवमाइंठिई प० पचमीएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइ
याणं जहन्नेणं दससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेणं दसवाससहस्सा

वाजित्रना संपादक ३ दीवा ४ तथा जोतिअग्नि तेहना कार्यकारी ५ फूलदायक ६ भोजनदातार ७ आभरणनादातार ७ घरनेकामआवनार ८ वस्त्रना
दातार १० एणीएरत्नप्रभा पहिली पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनी जघन्यनी दशसहस्रवर्षनो आउखोकह्यो । एहरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनो
दशपल्योपम आउखोकह्यो । चउथीपंकप्रभा पृथिवीनेविषे दसलाख नरकावासा कह्या । चउथी पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनोउत्कृष्टो दससागरोपमो
आउखोकह्यो । पांचमो धूमप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनी जघन्यनी दससागरोपम आउखोकह्यो । असुरकुमार भवनपतिदेवनूं केतलाएकनूं जघ
न्य दशसहस्रवर्षनो आउखोकह्यो । असुरेंद्र चमरेंद्र बलेंद्र वर्जीने बीजाभवनपती देवतानो जघन्य दससहस्रवर्षनो आउखोकह्यो चमरेन्द्र बलेन्द्रनो उत्क

इं ठिई प० असुरिंदवज्जाणं भोमिजाणं अत्थेगयाइणं जहन्नेणं दसवास सहस्साइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं दसपलिउवमाइंठिई प० वायरवणस्सइ काइएणं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइंठिई प० वाणमंतराणं देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेणंदसवाससहस्साइंठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं दसपलिउवमाइठिई प०बंभलोएकप्पे देवाणं उक्कोसेणं दससागरोवमाइठिई प० लांतकप्पेदेवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेणं दससागरोवमाइंठिई प० जेदेवा घोसं सुघोसं महाघोसं नंदिघोसं सुसरं मणोरमं रम्मं रम्मगं रमणिज्जं मंगलावत्तं बंभलोगवडिंसगं विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं दससागरोवमाइंठिई प० तेणंदेवाणंदसण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं

ष्ट जवन्य आउखो एकसागरोपम भाखेरोछे। असुरकुमार देवनोकेतलाएकनो मध्यमआउखो दसपल्योपमकह्यो। बादर प्रत्येक वनस्पतीकायनो उत्कृष्ट दससहस्रवर्ष आउखोकह्यो भगवंते। वानवतर देवतानो केतलाएकनो जघन्य दशसहस्रवर्ष आउखोकह्यो। सौधर्म ईशानदेवलोकनेविषे केतलाएक देवतानो दशपल्योपम आउखोकह्यो। पांचमे ब्रह्मदेवलोकें केतलानो उत्कृष्टो दससागरोपम आउखोकह्यो। छट्ठेलांतक देवलोकनेविषे केतलाएक देवतानो जघन्य दससागरोपम आउखोकह्यो। पांचमे देवलोके जेहदेवता घोष १ सुघोष २ महाघोष ३ नंदिघोष ४ सुस्वर ५ मनोरम ६ रम्य ७ रम्यक ८ रमणीक ९ मंगलावर्त १० ब्रह्मलोकावतसक ११ एणेविमाणे देवतापणेउपना तेहना देवतानो उत्कृष्टो दशसहस्रवर्षनो आउखोकह्यो भगवंते। तेहदेवता दशपखवाडे स्वा

मिहप्रतिमाद्यर्थानि सूत्राणिसप्त स्थित्याद्यर्थानितुतदेति तत्रउपासेवंते श्रमणान्येते उपासकाः श्रावकास्तेषांप्रतिमाः प्रतिज्ञाअभिग्रहरूपाः उपासकप्रतिमाः तत्रदर्शनंसम्यक्त्वं तत्प्रतिपन्नश्रावकोदर्शनश्रावकः इहचप्रतिमानांप्रक्रांतत्वेपि प्रतिमाप्रतिमावतोरभेदोपचारा प्रतिमावतोनिर्देशः क्तः एवमुत्तरपदेष्वपि अयमत्रश्रावकोदर्शनश्रावकः इहचप्रतिमानां प्रक्रातत्वेपि प्रतिमाभावार्थं सम्यग्दर्शनस्य शंकादिशल्यरहितस्याणुव्रतादि गुणविकलस्यायमभ्युपगमः सा प्रतिमाप्रथमेति। तथाकृतमनुष्ठित व्रतादीनांकर्म तच्चाणुव्रतंज्ञानवांच्छाप्रतिपत्तिलक्षणं येनप्रतिपन्नदर्शनेन सकृतव्रतकर्माप्रतिपन्नाणुव्रतादिरिति भाव.

देवाणंदसहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइआ भवसिद्धियाजीवा तेहदसहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ १० ॥ एक्कारसउवासगपडिमाउ प० तं० दंसणसावए कयव्वयकंमे सामाइअकडे पोसहोववासनिरए दियाबंभया

सोस्वास घणीलेइ। उंचोस्वासले नीचोस्वासमूंके तेहदेवतानो दशसहस्रवर्ष गएथके आहारनो अर्थउपजेछे केतलाएक भव्यजीव तेहदशभवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये इति दशमूठाणूं समत्तं ॥ १० ॥ हिवे ग्यारमो अधिकार लिखियेछे इग्यार उपासक कहतां श्रावकसाधुनो सेवाना करणहार तेहनी प्रतिमा तपविशेष तेकहेछे अनुक्रमे आगली दंसणते सम्यक्त ते जे आदरे तेदर्शन श्रावककहिये इहां प्रतिमावंत वोचेंभेद नजाणिवो तेमाटे प्रतिमापाठ उचरीने दर्शनश्रावकनो नामलिधोंएम आगलोएतले सम्यक्तना अतिचार शंकादिकटाले तपनो अधिकार ग्रन्थांतरथी जाणवो एहपहिली दर्शनप्रतिमा १ कृतव्रतकर्म अणुव्रत जेउचराछे तेहना अतीचार विशेषपणेटाले बीजी प्रतिमा २ सावद्ययोगनो टालिवो निरवद्य

इतीयंद्वितीया । तथासामायिकं सावद्ययोगपरिवर्जन निरवद्ययोगोपसेवनस्वभावं कृतंविहितंदेशतोयेनसामायिककृत आहिताग्न्यादिदर्शनात् क्तांतस्योत्त रपदस्व तदेवमप्रतिपन्नपौषधस्य दर्शनव्रतोपेतस्यप्रतिदिन मुभयसंख्यंसामायिककरणं मासत्रयंयावदिति तृतीयाप्रतिमेति । तथापोषंपुष्टिकुशलधर्माणंधत्ते यदाहारत्यागादिक मनुष्ठानंतत्पौषध तेनोपसेवनमवस्थान महोरात्रंयावदिति पौषधोपवासइति अथवा पौषधंपर्वदिन मष्टम्यादि तत्रोपवासउक्तार्थः पौष धोपवासइति इयंव्युत्पत्तिरेव प्रवृत्तिस्तस्यशब्दस्य आहारशरीरसत्कारा ब्रह्मचर्यव्यापारपरिवर्जनेष्विति तत्रपौषधोपवासे निरतआसक्तः पौषधोपवासनिर तः सएवंविधस्य श्रावकस्यचतुर्थीप्रतिमेति प्रक्रमः अयमत्रभावः पूर्वप्रतिमात्रयोपेतः अष्टमीचतुर्दश्यमावस्या पौर्णमासीष्वाहार पौषधादिचतुर्विधं पौषधंप्रतिप द्यमानस्यचतुरोमासान् यावत्चतुर्थी प्रतिमाभवतीति तथापंचमीप्रतिमायामष्टम्यादिषु पर्वस्वेकरात्रिकप्रतिमाकारी भवत्येतदर्थंच सूत्रं अधिकृतसूत्रपुस्त केषुनदृश्यते दशादिषुपुनरुपलभ्यते इतितदर्थउपदर्शितः तथाशेषदिनेषु दिवाब्रह्मचारी रत्तौत्ति रात्रौकिमतआह परिमाणं स्त्रीणातद्भोग्यानांचानामेपंकृतं येनसपरिमाणकृतइति अयमत्रभावोदर्शनव्रत सामायिकाष्टम्यादि पौषधोपेतस्यपर्वस्वेकरात्रिक प्रतिमाकारिणः शेषदिनेषुदिवाब्रह्मचारिणो रात्रौब्रह्मपरि

योगनो सेविवो तेसामायिकक्कत एतले उभयकाले सामायिककरे मासत्रिणिलगे एत्रीजी प्रतिमा ३ कुशलधर्मनो पोखवो तेपौषध आहारादिकनो त्यागरूप अनुष्ठान तेपौषधतेणेकरी उपवसवो रहिवो अहोरात्रिलगेते पौषधोपवासनिरत पाछिलीत्रिणि प्रतिमासहित अष्टम्यादिक पर्वनेविषे मासच्यारलगे चतु र्विध पौषधकरे चउथी पौषधप्रतिमा ४ पांचमीप्रतिमानेविषे अष्टम्यादिकपर्वनेविषे एकरात्रि काउसगकरे शेषदिनेदीहे ब्रह्मचर्यपाले रात्रेंपरिमाणकरे अरात्रिभोजी अस्नानीकाछडी नबांधे पांचमासलगे एतले एपांचमीप्रतिमा ५ छट्ठीप्रतिमाए दिवसे अनेरात्रिएंपिण ब्रह्मचर्यपाले अस्नायीस्नाननकरे विकट

यावत्पंचमीप्रतिमाभवतीति उक्तंच अट्ठमिचउद्दसी सुपडिमठाएगराईया। पञ्चांबं असिणाणवि ॥
माणकृतोऽस्नातस्याऽरात्रिभोजिनः अबद्धकच्छस्यपंचमासान् यावत्पंचमीप्रतिमाभवतीति। तथा दिवापिरात्रावपि ब्रह्मचारी असिणाइत्ति अस्नायीस्नानपरि
यडभोई मउलियडोदिवसबभयारीएय। रत्तिपरिमाणकडो पडिमावज्जेदिसुज्झेयत्ति ५। तथा दिवापिरात्रावपि ब्रह्मचारी दिवापि एवाऽप्रकाशदेशेनभुक्तोऽस्नानादभ्य
वर्जकः क्वचित्पठ्यते अनिसाइत्ति ननीशायामत्तीत्यनिशादी वियडभोईत्ति विकटे प्रकटेकोशेदिवानरात्रावित्यर्थः दिवापि एवाऽप्रकाशदेशेनभुक्तोऽस्नानादभ्य
वहरतीति विकटभोजी मोलिकडेत्ति अबद्धपरिधानकच्छइत्यर्थः षष्ठीप्रतिमेतिप्रक्रत अयमत्रभाव प्रतिज्ञापचकोक्तानुष्ठानयुक्तस्य ब्रह्मचारिणः षण्मासान्या
वत्षष्ठीप्रतिमाभवतीति तथा सचित्तइति सचेतनाहारपरिज्ञातः तत्स्वरूपादिप्रतिज्ञानात्प्रत्याख्यातोयेन ससचित्ताहारपरिज्ञातः श्रावकः सप्तमीप्रतिमेति
प्रक्रत इयमत्रभावना पूर्वोक्तप्रतिमाषट्कानुष्ठानयुक्तस्य प्रासुकाहारस्य सप्तमासान् यावत्सप्तमी प्रतिमाभवतीति तथाआरभः पृथिव्याद्युपमर्दनलक्षणः परि
ज्ञातस्तथैव प्रत्याख्यातोयेनासावारंभपरिज्ञातः श्राद्धोऽष्टमीप्रतिमेति। इहभावना समस्तपूर्वोक्तानुष्ठानयुक्तस्यारंभवर्जन मष्टौमासान् यावदष्टमीप्रतिमेति
तथाप्रेष्याआरंभेषु व्यापारणीयाः परिज्ञातास्तथैव प्रत्याख्यातायेन सप्रेष्यपरिज्ञातः श्रावको नवमीति भावार्थस्त्विह पूर्वोक्तानुष्ठायिनः आरंभपरै रप्यकारयतो

री रत्तिपरिमाणकडे दिवाविरात्रविबंभयारीअसिणाई विअडभोई मोलिकडे सचित्तपरिन्नाए आरं

भोजीदिवसेजिमे मौलिक्षतनथी बांध्योपहिरणानो कछजेणेमासछलगे छट्ठीप्रतिमा ६ सचित्त आहारनी परिज्ञा पच्चक्खाण माससातलगेकरे प्रासुकआहा
रकरे सातमी प्रतिमा ७ आरंभपृथिव्यादिक उपमर्दनलक्षणते जेणेपरिज्ञात पचख्यो ते आरंभपरिज्ञात श्रावक आठमासलगेकरे एआठमी प्रतिमा ८ पेख्या
रभनेविषे परिज्ञात पच्चखाणछे जेहनेते प्रेष्यपरिज्ञा श्रावककहिये एतलेनवमासलगे परपाछि कामनकरावे एनवमीप्रतिमा ९ तेश्रावकने निमित्ते उद्देसी

नवमासान् यावन्नवमी प्रतिमेति । तथाउद्दिष्टं तमेवश्रावक मुद्दिश्यकृतं भक्तमोदनादि उद्दिष्टभक्तं तत्परिज्ञातं येनासावुद्दिष्ठ भक्तपरिज्ञातः प्रतिमेतिप्रकृत इहायभावार्थः पूर्वोदित गुणयुक्तस्याधाकर्मिकभोजन परिहारवतः क्षुरमुंडितशिरसः शिखावतोवा केनापिकिंचिद्गृहव्यतिकरे पृष्टस्यतत् ज्ञानेसतिजानामी त्यज्ञानेचसति नजानामीति ब्रुवाणस्य दशमसान् यावदेवंविधविहारस्य दशमीप्रतिमेति । तथा श्रमणेति निर्ग्रन्थसद्भूयस्तदनुष्टान करणात् सश्रमणभूतः साधुकल्पइत्यर्थः चकारःसमुच्चये अपिसंभावनेभवति श्रावकइतिप्रकृतं हेश्रमण हेआयुष्मन्इति सुधर्मस्वामिना जंबूस्वामिन मामंत्रयतोक्त मित्येकादशीति । इहचे यभावना पूर्वोक्त समग्रगुणो पेतस्य क्षुरमंडस्य कृतलोचस्यवा गृहीतसाधुनेपथ्यस्य इर्यासमित्यादिकं साधुधर्ममनुपालयतो भिक्षार्थंगृहिकुल प्रविशेसति श्रमणोपासकाय प्रतिपन्नाय भिक्षादेयेति भाषमाणस्य कस्त्वमिति कस्मिंश्चित्पृच्छति प्रतिपन्नश्रमणोपासकोहमिति ब्रुवाणस्यैकादशमासन् यावदेकादशी प्रतिमा भवतीति पुस्तकांतरेलेवंवाचना दसणसावएप्रथमा कयवयकद्वितीया । कयसामाइए तृतीया । पोसहोववासनिरए चतुर्थी । राइभत्तपरिन्नाए पंचमीसचित्त

त्तपरिन्नाए पेसपरिन्नाए उद्दिठभत्तपरिन्नाए समणभूएआविभवइ समणाउसो लोगंताउ इक्कारसएहिं एक्का

भातकरी तेजेणेपरिज्ञात पच्चख्यो तेउद्दिष्टभक्त परिज्ञात दसमासलगें दशमीप्रतिमा १० सघलीप्रतिमाए पाछिली २ प्रतिमानीकिरिया साथलेता जइये एतलेइग्यारमी प्रतिमाएश्रमण भूतहुए यतीनोपरी आधाकर्मी आहारटाले चमुंडितशिरहोय शिखामस्तकेराखे पांचघरनी भिक्षालेइ उपासकरे आवी जीमे मासइग्यारलगें इग्यारमीप्रतिमा साधुनोवेशवहे भिक्षाएजाए तिवारेकोइ ये मभ्रश्रमणोपासकने भिक्षाद्योकोइकपूछ्योयोको वाहेहूं श्रावकछूं एतलेइग्यारमीप्रतिमाकही ११ श्रीमहावीर सुधर्मास्वामीने आमन्त्रे छे हे आयुष्मन् चिरंजीवी सांभलि लोकानाछेहडाथको इग्यारयोजनअधिक इग्यारसेयोजनेआवा

परिमाणएपष्ठी दियाबंभयारी राओपरिमाणकडेसप्तमी दियाविसेयोवि बंभयारी । असिणाणपयाविभवति वोसठकेसरोमनहेअष्टमी आरंभपरिन्नाएनवमी परिन्नाएपष्ठी दियाबंभयारी राओपरिमाणकडेसप्तमी दियाविरओवि बंभयारी । असिणाणपयाविभवति वोसठकेसरोमनहेअष्टमी आरंभपरिन्नाएनवमी

उद्दिष्ठभत्तवज्जएदशमी समणभूएयाविभवइति समणाउसोएकादशीति क्वचित्आरंभपरिज्ञातइतिनवमी प्रेष्यारंभपरिज्ञातइतिदशमी उद्दिष्टभक्तवर्जकः श्रमणभूतश्चैकादशीति तथा जंबूद्वीपेमंदरस्यपर्वतस्यएकादश एगविंसत्ति एकविंशतियोजनाधिकानियोजनशतानि अबाहाए अबाधयाव्यवधानेनक्लेतिशेषः ज्योतिषज्योतिश्चक्रचारंपरिभ्रमणं । चरत्याचरति तथालोकांतान् णमित्यलंकारे एकादशशतानि एक्कारेत्ति एकादशयोजनाधिकानि अबाधयाबाधारहित याकृत्वेतिशेषः ज्योतिसतेति । ज्योतिश्चक्रपर्यंतः प्रज्ञप्तइति इदंचवाचनांतरं व्याख्यातं उक्तंच एक्कारएक्कवीसा सयएक्काराहियायएक्कारा । मेरुअलोगावाहे जोइसचक्कचरइठाइत्ति । अधिकृतवाचनायां पुनरिदमनंनतरं व्याख्यातमालापकद्वय व्यत्ययेनदृश्यते विमाणसयंभवतित्तिमक्खायन्ति इहमकारस्यागामिकत्वा

जंबूदीवेदीवे मंदरस्सपव्वयस्स एक्कारसहिंएक्कवीसेहिं जोयणसएहिं अबाहाएजोइसंतेपन्नत्ते एक्कारसहिंजोयणसएहिं अबाहाएजोइसंतेपन्नत्ते जंबूदीवेदीवे मंदरस्सपव्वयस्स एक्कारसहिंएक्कवीसेहिं जोइसेचारंचरइ समणस्सणंभगवओमहावीरस्स एक्कारसगणा एक्कारसगणहराहोत्था तं० इंदभूई अग्गिभूई वायभूई विअत्ते सोहम्मे मंडिए मोरपुत्ते अकंपिए अयलभाए मेअज्जे पभासे मूलेनक्खत्तेएक्कारसतारे प०

भगवंते । जंबूद्वीपनेविषे मेरुपर्वतथकी वेगलोथो धायेंपम्रतेकहतांकह्यो भगवते । एतलेअलोकथी इग्यारयोजने ज्योतिषचक्रछेहडोकह्यो ज्योतिषचक्रछेहडोकह्यो भगवंते । जंबूद्वीपनेविषे मेरुपर्वतथकी वेगलोथो पखेर इग्यारसेयोजने उपरि एकवीसयोजन ज्योतिशक्रचारचरे भ्रमणकरे । श्रमणने भगवंतने महावीरने इग्यारगणधर साधुनासमुदायतेगण तेहनाधर णहारहुया । तेअनुक्रमे कहेछे आगले । इन्द्रभूति १ । अग्निभूति २ । वायुभूति ३ । व्यक्तनामे ४ । सौधर्मा ५ । मंडित । ६ । मौर्यपुत्र ७ । अकंपित ८ । अच

द्यमर्थो विमानशतंभवतीतिकृत्वा व्याख्यातंप्ररूपितं भगवता अन्यैश्चकेवलिभिरिति सुधर्मस्वामिवचनम् तथामन्दरेणंपव्वए धरणितलाओसिहरतलेएक्कारस भागपरिहीणे उच्चत्तेणपन्नत्ते। अस्यायमर्थः मेरुर्भूतलादारभ्य शिखरतलमुपरिभागं यावद्विष्कंभापेचया अंगुलादेरेकादशभागेन परिहीणोहानिमुपगतस्स उच्चत्वेनोपर्युपरिप्रज्ञप्तः इयमत्रभावना मन्दरोभूतले दशयोजनसहस्राणिविष्कम्भतः ततश्चोच्चत्वेनांगुलेगतेंगुलस्यैकादशभागो विष्कम्भतोहीयते एवमेकादशस्वं गुलेष्वंगुलंहीयते एतेनैवन्यायेनैकादशसुयोजनेषु योजनं एवंसहस्रेषुसहस्रं ततोनवनवत्यांयोजनसहस्रेषु नवसहस्राणिहीयंते। ततोभवतिसहस्रविष्कम्भ शिखरेइति अथवा धरणीतलाद्धरणीतलविष्कम्भात्सकाशाच्छिखरतलं शिखरविष्कम्भमाश्रित्य मेरुरेकादशभागेन परिहीणोभवति कस्यैकादशभागेनेत्याह उच्चत्तेणंति उच्चत्वस्यतथाहि मेरोरुच्चत्वं नवनवतिसहस्राणि तदेकादशभागोनवतैर्हीनोमूलं विष्कम्भापेचया शिखरतलेशिखरस्य साहस्रिकत्वाच्चमूलविष्कम्भ

हेठिमगेविज्जयदेवायं एक्कारसमुत्तरंगेविज्जविमाणसतंभवइत्तिमरकायं मंदेरणंपव्वए धरणितलाओसिहरतले

लभ्राता ९। मेतार्य १०। प्रभास ११। मूलनचत्रना इग्यारताराकह्या नवग्रैवेयकमानमाहें सघले हेठ्ल्योत्रिक तेह त्रिकविमानवासी देवतानां इग्यारअ धिकएकसो विमानभवनछे भगवंतेकह्या मेरुपर्वत भूतलथकी शिखरतिहां उपरिलोभाग जिहां पंडगविमानछे तिहांलगि विखंभनी अपेचाएं एकारसभाग परिहीन उपरिउपरिकीजे एतले मेरुपर्वत मूलेंदशयोजनपिहुलो मूलथकी इग्यार अंगुलऊंचा वडीये तिहां विखंभपणें एकअंगुलहीन करीये एमइग्यार गाऊयेगाऊ हीनकरिये। इग्यारयोजने इग्यारसहस्र योजन उगरया। पिहुलपणे एकसहस्र योजन घटाडिये। इमकरता नेऊंसहस्र योजने ऊंचीवडिये तिहां नवसहस्रयोजन घटीयां उपरि एकसहस्र योजन ऊगरयां पिहुलपणे मेरुपर्वत एकसहस्र जाणिवो ऊण्डीभूमिमध्ये नेऊसहस्र भूमिथकी ऊंचोस

स्येति ब्रह्मादीनिद्वादशविमाननामानि। द्वादशस्थानमथतत्त्वसुगम्यं नवरंस्थिति सूत्रेभ्योऽवगिकादशसूत्राण्याह। तत्रभिचूर्णांविशिष्ट संहननश्रुतवतां प्रति ॥

एक्कारसन्नागपरिहीणे उच्चत्तेणं प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं एक्कारसपलिउवमाइंठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कारससागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एक्कारसपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कारसपलिउवमाइंठिई प० लंतकप्पेअत्थेगइयाणं देवाणं एक्कारसागरोवमाइठिई प० जेदेवा बंभं सुबंभं बंभावत्तं बंभप्पभं बंभकंतं बंभवणं बंभलेसं बंभज्झयं बंभसिंगं बंभसिट्ठं बंभकूडं बंभुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणं देवाणं एक्कारस सागरोवमाइंठिई प० तेणदेवाएकारसरह अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा उ

वेंमिली एकलाख योजननो मेरुपर्वत। मूलेदससहस्र पिहुलो। शिखरनेविषे एकसहस्र पिहुलो जाणिवो। एहअर्थ श्रीमहावीरें सुधर्मास्वामी पांचमे गणधर आगले वखाण्यो। एणीए रत्नप्रभा पहिली पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो इग्यार पल्योपम आउखोकह्यो। पंचमी धूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो इग्यार सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार भवनपतीनोकेतलाएक देवतानो इग्यार पल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म इशानदेवलोकनेविषे केतलाएकदेवनो इग्यार पल्योपम आउखोकह्यो। लांतक छट्ठेदेवलोकें केतलाएक देवनो इग्यार सागरोपम आउखोकह्यो। छट्ठेदेवलोकें जेहदेवता ब्रह्म १ सुब्रह्म २ ब्रह्मावर्त ३ ब्रह्मप्रभ ४ ब्रह्मकांत ५ ब्रह्मवर्ण ६ ब्रह्मलेश ७ ब्रह्मध्वज ८ ब्रह्मशृंग ९ ब्रह्मसिद्ध १० ब्रह्मकूट ११ ब्रह्मोत्तरावतंसक १२ एणे विम

माश्रभिग्रहाभिक्षुप्रतिमा तत्रमासिक्याद्य: सप्तमासिक्यन्ता: सप्तमासेनमासेनोत्तरोत्तरं वृद्धाएकादिभिर्भक्तपानदत्तिभिरेति तयासप्तसप्तमरात्रिदिवान्याहो

ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणंदेवाणं एक्कारसएहं वाससहस्साणं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइआभवसिद्धि आजीवा एक्कारसहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ ११ ॥ बारसभिक्खुपडिमाउ पन्नत्ता तजहा मासिआभिक्खूपडिमा दोमासिआभिक्खूपडिमा तिमासिआभिक्खूपडिमा चउमासियाभिक्खूपडिमा पंचमासियाभिक्खूपडिमा छमासियाभिक्खूपडिमा सत्तमासियाभिक्खूपडिमा पढमासत्तराइदिआभिक्खूपडिमा दोच्चासत्तराइदिआभिक्खूपडिमा त

ने देवतापणे उपनाछे। तेहदेवतानो इग्यार सागरोपम आउखोकह्यो। तेहदेवता इग्यारे पखवाडे अर्द्धमासे स्वासोस्वास घणोले ऊचो स्वासले नीचोस्वास मूके तेहदेवतानो इग्यार सहस्रवर्षे आहारनोअर्थ वंछाउपजेछे। संसारमाहिं केतलाएक भव्यजीव जे इग्यारभव ग्रहणकरी एतले इग्यारभवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदु:खनो अंतकरिस्ये। इतिइग्यारमुंठाणुंसमाप्तं ॥ ११ ॥ हिवे बारमो अधिकार लिखियेछे। भिक्षु उत्तमसंहनननो धणी तथा जघन्य नवमा पूर्वनूं त्रीजूंवस्तु तेहनो पारगामीहोय। उत्कृष्टो दसपूर्वि कोईएकगुरुनी आज्ञा मांगी गच्छमांहि थिणहोइ महासत्वनो धणीजे यति तेहनी बारप्रतिमा अभिग्रह रूपकही तेकहेछे। पहिली भिक्षुप्रतिमा एकमासिकी एकमासलगे भात पाणीनी एकदायीले एकमासदीठ भातपाणीनी एकेकदाती वधारे सातमासलगी सातमेंमासे सातसात भातपाणीनोदातीले लवणखड मात्रदाती कहिये १। बीजी प्रतिमा त्रिमासिकी २। त्रीजीप्रति

त्राणियासताः सप्तरात्रिंदिवास्ताश्चतिस्रोभवंतीति सप्तानामुपर्वि अष्टमीप्रथमासप्तरात्रिंदिवा एवंनवमीद्वितीया दशमीतृतीया आसांचतिसृणामप्यनुष्ठा नकृतोविशेषः तथाहिअष्टम्याचतुर्थभक्तंतपः ग्रामादेर्बहिरवस्थान मुत्तानादिकंस्थानमिति नवम्यांतुउत्कटुकाद्यासनेनविशेषः दशम्यांवीरासनादिना तथा अहोरात्रप्रमाणाहोरात्रिकी एकादशीयाथषष्ठभक्तेन भवतीतिविशेषः एकरात्रिकीरात्रिप्रमाणासाचाष्टमभक्तेन रात्रौप्रलंबभुजस्य संहृतपादावनतकायस्या निमेशोदयास्येति तथासमेकोभूयः समानःसमाचाराणा साधुनाभोजनसंभोगः सत्रोपध्योदिलक्षणविषयभेदात् द्वादशधा तत्रउवहीत्यादिरूपकद्वयं तत्रोपधि

सत्तराइंदिआ भिक्खूपडिमा अहोराइआ भिक्खूपडिमा एगराइआ भिक्खूपडिमा दुवालसविहेसंभोगे

मा त्रिणिमासिकी ३। चउथी प्रतिमा च्यारमासिकी ४। पांचमी पांचमासनी प्रतिमा ५। छठ्ठी छमासनी प्रतिमा ६। सातमी सातमासनी प्रतिमा ७ आठमी पहिली प्रतिमा सातदिवसरात्रिनी आठमी प्रतिमाए सातदिनलगे अष्ठमीए चतुर्थभक्त तपकरे ग्रामबाहिररहे उत्तराशनकरे ८। नवमी बीजी पणिसात अहोरात्रनी भिक्खुप्रतिमा नवमी प्रतिमाए उकडासनकरे ९। दशमी त्रीजी पणिसात अहोरात्रनी तिहां वीरासनकरे १०॥ इग्यारमी एकअ होरात्रिनी भिखुप्रतिमाते षष्ठभक्ते उपवासे पूरिये ११। बारमी भिक्षु प्रतिमा एकरात्री प्रमाणे अष्ट मभक्त उपवासे समाप्तिहोइ रात्रिए प्रलंबभुजाकरि का उसग्गकरे कांइककाया नमाडे नेत्रमेखनकरे १२। बारें प्रकारे संभोग एकसमाचारी साधनो एकभोजनादिकनो विचारद्वारकह्यो। उपधिवस्त्र पात्रादि कनो संभोग लेवोदेवो सभोगी साधुसाथें तुष्कमोत्पादन दोषेविशुद्धकहीये अशुद्धलेई त्रिणिवेला प्रायश्चितलेई तोहीते संभोगीकरी चउथी वेलाप्रायश्चित्तलेतो

वैस्त्रपात्रादिस्तंसंभोगिक: संभोगिकेनसार्द्धंतुभ्रमीत्पादनैषणादोषैर्विशुद्ध गृह्णन्शुद्ध: अशुद्धंगृह्णन्प्रेरित: प्रतिपन्नप्रायश्चित्तो यारत्रयंयावत्संभोगार्हस्तुर्थवेला या: प्रायश्चित्तप्रतिपद्यमानोपिविसंभोगार्हइति। विसंभोगिकेनपार्श्वस्थादिनावा संयत्यवासार्द्ध मुपधिशुद्धमशुद्धंवा निःकारणं गृह्णन्प्रेरित: प्रतिपन्नप्रायश्चि त्तोपि वेलात्रयस्योपरिनसंभोग्य एवमुपधे: परिकर्मपरिभोगंवाकुर्वन् संभोग्योविसंभोग्यश्चेति उक्तंच एगंचदोवितिन्निच आउट्टंतस्सहोइच्छित्तं। आलोचयतइत्य र्थ: आउट्टंतेवितओ परेणतिन्निं विसंभोगोत्ति सुयस्ससंभोगिकस्य विसंभोगिकस्य चोपसंपन्नस्यश्रुतस्य वाचनाप्रच्छनादिकं विधिनाकुर्वन् शुद्धस्तस्यैवाऽविधिनोप सम्पन्नस्याऽनुसम्पन्नस्यवा पार्श्वस्थादेर्वात्रयवाचनादि कुर्वंस्तथैववेलात्रयोपरिसंभोग्य: तथा भत्तपाणेत्ति। उपधिद्वारवदवसेया नवरमिहभोजनंदातुच परिक र्मपरिभोगयो. स्थानेवाच्यमिति तथा अंजलीपग्गहेइत्ति इहेतिशब्दउपदर्शनार्थ: चकार: समुच्चयार्थ: ततउपलक्षणत्वा दंजलिप्रग्रहस्यवदनादिकमपीहद्रष्टव्यं तथाहिसंभोगिकानामन्यसंभोगिकानांवा संविग्नानांवन्दनकं प्रणाममंजलिप्रगृहं नम:क्षमाश्रमणेभ्यइतिभणनं आलोचनासूत्रार्थनिमित्तनिषद्याकरणंच कुर्वन् शुद्ध: पार्श्वस्थादेस्तानिकुर्वंस्तथैवसंभोग्यो विसंभोग्यश्चेति। तथा दायणायत्ति दानन्तत्रसंभोगिकायवस्त्रादिभि: शिष्यमाणोपग्रहाद्वासंभोगिकेऽन्यसंभोगि केऽन्यसंभोगिकं यथाशिष्यगणंयच्छन्शुद्ध: नि:कारणविसंभोगिकस्य पार्श्वस्थादेर्वासंयत्यावा तंयच्छंस्तथैव संभोग्योविसंभोग्यश्चेति तथा निकाएयत्ति नि

प० तं० उवहिसुअभत्तपाणे अंजलिग्गहेइ अदायणेअ निकाएअ अब्भुठाणेतिआवरे किअकम्मस्सय

ही तेहसंभोगीनकरीये १। श्रुतकहिये सिद्धांत तेहनी वाचना प्रछादिककरतं। संभोगी तेहीज सिद्धांत अवधिएं भणतो कोधीनें तथा पासथानें भणानो विसंभोगीकहिये २ भात पाणी शुद्धमान लेतो देतो संभोगी अन्यथा विसंभोगी ३ अंजलि प्ररिग्रहमाहोमाहीं नमस्कारनो करवो उपासत्यानेकरतो विसंभो

निकाचनंस्छंदनं निमंत्रणमित्यनर्थांतरं तत्रशय्या[illegible] [illegible]नेनच सम्भोगिकं निमन्त्रणशुद्धः शेषंतथैव तथाअब्भुट्ठाणेतियावरेत्ति अभ्यु त्थानमासनत्यागरूपमित्यपरं सम्भोगासम्भोगस्थानमित्यर्थः तत्राभ्युत्थान पार्श्वस्थाः कुर्वं स्तद्विसम्भोग्यउपलक्षणत्वाच्चाभ्युत्थानस्य किंकरतांचप्राघूर्णकग्लानाद्यव स्थायां किंविश्रामणादि करोमीत्येवप्रश्नलक्षणं । तथा अभ्यासकरणं पार्श्वस्थादिधर्माच्युतेस्य पुनस्तत्रैवसंस्थानलक्षणं तथा अविभक्तिवापृथग्भावलक्षणं कुर्वन्न शुद्धो सम्भोग्यश्चाप्येतान्येवयथागम्य कुर्वन्शुद्धः सम्भोग्यश्चेति तथाकिइकम्मस्सयकरणेत्ति कृतिकर्मवन्दनं तस्य करणंविधानं तद्विधिनाकुर्वन्शुद्धः इतरथा तथैवासम्भोग्यस्तत्रचायविधिर्यः साधु र्वातेनस्तब्धदेहउत्थानादिकर्तुमशक्तः ससूत्रमेवास्खलितादिगुणोपेतमुच्चारयति एवमावर्त्तंशिरस्त्व्यनादियच्छक्नोति तत्क रोत्येवचाशठप्रवृत्तिर्वदन विधिरितिभावः वेयावच्चकरणेइयत्ति वैयावृत्त्य माहारोपधिदानादिना प्रश्रमणादिमात्रकार्प्पणादिना अधिकरणोपशमनेनचोपष्ट भकरण तस्मिंश्चविषयेसम्भोगोभवतीति । तथासमोसरणति जिनस्त्रवनरथानुयानपट्टयात्रादयोबहवः साधवो मिलन्ति तत्समवसरणं इहचक्षेत्रमाश्रित्यसाधूनां साधारणोवग्रहोभवति वसतिमाश्रित्यसाधारणो ऽसाधारणोवेति अनेनचान्येप्यवग्रहाउपलक्षितातेचानेके तथा वर्षावग्रह ऋतुबद्धावग्रहो वृद्धवासावग्र हश्चेति एकैकश्चायंसाधारणावग्रह. प्रत्येकावग्रहश्चेतिद्विधा तत्रयत्क्षेत्रंवर्षोपकल्पाद्यर्थं युगपद्द्वादिभिः साधुभिर्भिन्नगच्छस्यैरनुज्ञाप्यते ससाधारणोयत्तक्षेत्रमे

करणे वेआवेच्चकरणेअ समोसरणं सनिसिज्जाय कहाएअपबंधणे दुबालसावत्तेकित्तिकम्मे प० तं० दुउणयं

गी ४ । सभोगी साधुभणी वस्त्रशिष्यादिकदेतो संभोगी पासत्थानेदेतो विसभोगी ५ निकांचन निमंत्रण माहोमांहो शिष्यउपाध्यायादिके करतोशुद्ध ६ । व डेआबाएथके उठीउभा थाइवो ७ । अपरकहतां अनिरतबोल तथा विविधंकरी कृतिकर्म वांदणानो करवो बडानेवांदणानो देवो ८ । वेयावचननो करवो

कसाधवोनुज्ञाप्याश्रिताः सप्रत्येकोवग्रहइति । एवंचैतेष्ववग्रहेषु आकुञ्च्यादिना अभाव्यंमचित्तंशिष्य मचित्तंवस्त्रादिगृह्णन्तोऽनाभोगेनचगृहीतं तदनर्पयतः
समनोज्ञा अमनोज्ञाश्च प्रायश्चित्तिनोभवंत्यसम्भोग्याः पार्श्वस्थादीनांचावग्रह एवनास्ति तथापियदितत् क्षेत्रकुलकमन्यनैवचसंविग्नानिर्वहंतिततस्तत्क्षेत्रपरिहरं
त्येवायं पार्श्वस्थादीनांवावग्रहश्चेत् विस्तीर्णं संविग्नाश्चान्यत्रन निर्वहंति ततस्तत्रापि प्रविशति सचित्तादिवगृह्णति प्रायश्चित्तिनोपिनभवतीति आहच समण
त्तममणुन्ने अदिन्नंअणा भवगिगहमाणीवासम्भोगवीसुकरणं पृथक्करणमित्यर्थः इयरेयअलभेणल्लिन्ति इतरान्पार्श्वस्थादीनित्यर्थः तथा सन्निसिज्जायत्ति निषद्या
आसनविशेषः साचसम्भोगकारणंभवति तथाहि सनिषद्यागत आचार्यो निषद्यागतेन सम्भोगिकाचार्येण सह श्रुतपरिवर्त्तनां करोतिशुद्धः अथामनोज्ञापा
र्श्वस्थादिसाध्वीगृहस्थैः सह तदाप्रायश्चित्तीभवति तथाकहाएयपवधणेत्ति कथावादादिनिषद्या विनानुयोगंकुर्वतः शृण्वतः प्रायश्चित्तं तथानिषद्यायामुपवि
ष्टः सूत्रार्थौप्रच्छति अतिचारान्वालोचयति तदातथैवेति । तथाकहाएयपबंधणेत्ति कथावादादिकापचधातस्याः प्रबंधनंप्रबंधेनकरणं कथाप्रबंधनतत्रसम्भो
गाऽसम्भोगौभवतः तत्रसमभ्युपगम्यपचावयवेन त्र्यावयवेनवाक्येन यत्तत्समर्थनंसच्छलजाति विरहितो भूतार्थोऽन्वेषणापरोवादः सएवच्छलजाति निर्गतस्यानप
रोजल्पः यत्रैकस्यपचपरिग्रहोस्तिनापरस्य सादूषणमात्रप्रवृत्तावितण्डा तथाप्रकीर्णकथाचतुर्थी साचोत्सर्गकथास्तिकनयकथावा तथानिश्चयकथापंचमी । सा
चापवादकथा पर्यायास्तिकनयकथाचेति तत्राद्यास्तिस्रः कथाश्रमणीवर्जैः सहकरोति श्रमणीभिस्तुसहकुर्वन् प्रायश्चित्तीचतुर्थवेलायांवा लोचन्नपिविसम्भोगा
र्हइति रूपकद्वयस्य सचेपार्थोविस्तारार्थस्तु निशीथपंचमोद्देशकभाष्यादवसेयः ॥ ४ ॥ तथादुवालसावत्ते किइकम्मेत्ति द्वादशावर्त्तंकृतिकर्मवन्दनकं प्रग्रसंद्वाद
शावर्त्ततामेवास्यानुवन्दनशेषांश तद्धर्मानभिधित्सितंरूपकमाह दुओणएत्यादि अवनतिरवनमुत्तमांगप्रधान प्रणमनमित्यर्थः द्वेऽवनतेयस्मिंस्तद्यवनतं तत्रैकय

सूत्रंसमापयतीति तथाविजय राजधानी असंख्याततमेजंबूद्वीपे आद्यजंबूद्वीपविजयाभिधान पूर्वद्वाराधिपस्य विजयाभिधानस्य पल्योपमस्थितिकस्य देवस्यसं बंधिनीति तथारामोनवमोबलदेवः देवत्तिंगयत्ति देवत्वंपंचमदेवलोके देवत्वंगतः तथासर्वजघन्यारात्रि रुत्तरायणपर्यंताहोरात्रस्यरात्रिः साचद्वादशमौहूर्ति

णसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं प० रामेणं बलदेवे दुवालसवाससयाइंसव्वाउयं पालित्तादेवत्तिंगए मंद रस्सणं पव्वयस्सचूलिआमूले दुवालसजोयणाइं विक्खंभेणं प० जंबूदीवस्सणंदीवस्स वेइआमूले दुवालस जोयणाइं विक्खंभेणं प० सव्वजहन्निआराइ दुवालसमुहुत्तिआ प० एवंदिवसोविनायव्वो सव्वठसिद्धस्सणं

वर्तं छव्वेला गुरुनेपगें वांदणाकीजे । अहोकाय एपाठकहीविहुवेलायई १२ आवर्तथया चोसरां ४ वेला, गुरुनेपगें मस्तकनमाडिये । त्रिण्हेगुत्ती मनवचन कायानी गुप्तिकीजे । उपवेसवोंवेला वांदणानेअर्थे अवग्रहमांही आवीने एगनिखमण अवग्रहवाहिरि पहिलेवांदणे एकवेला भीकले बीजीवेला गरुपगें वेठा ज वांदणो समापीएपाठकही एहसमवयांग वृत्तिनोभाव । जंबूद्वीपनी पूर्वनी पोलिनोधणी विजयदेवता तेहनीराजधानी असंख्यातमें जंबूद्वीपेंछे वारयोज नसहस्र एतले १२ लाखयोजन लांवपणेपिहुलपणेंकही रामवलदेव कृष्णवासुदेवनो बडोभाई वारसेवर्ष सर्वआउखूंपालीने देवपणूंपाम्या पांचमेदेवलोके पहुंता मेरुपर्वत उपरि सहस्रयोजन पिहुलोछे । तेहनेसेविचि ४०० योजनऊंची चूलिकाछे । तेहनोमूल १२ योजनवीचो आठउपरि शिखरेच्यारयोजन पिहुलपणो कह्यो । जंबूद्वीपनी चोपखेर गढरूप वेदिका आठयोजन ऊंचीछे । जेहवेदिकानोमूल १२ योजनविचि ८ उपरि ४ योजन पिहुलपणेंकही भगवंते सर्वजघ न्यरात्रि उत्तरायणने छेहडे कर्कसंक्रातिनी आसाढीपूनिमनी घणीनान्हीरात्रि वारहमूहूर्तहुई एतले २४ घडीनी रात्रिकही । एमदिवसपणिजाणिवो ।

वा इमीसेणं रयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं बारसपलिओवमाइंठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्थे गइयाणं नेरइआणं बारसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइआणं बारसपलिओवमाइं ठिईप० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइआणं देवाणं बारसपलिओवमाइं ठिई प० लंतेकप्पेसु अत्थेगइ आणं देवाणं बारससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा महिंदे महिंदज्झयं कंबु कंबुग्गीवं पुंखं सपुंखं महापुंखं पुंडं सपुंडं महापुंडं नरिंदं नरिंदकंतं नरिंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्को सेणं बारससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा बारसएहं अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं बारसहिंवाससहस्सेहिं आहारठे समुप्पज्जइ संतेगइआ भवसिद्धिआ जीवा

नो बारसागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार भवनपती देवतानो बारपल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशानकल्पें देवलोकें केतलाएक देवतानो बार पल्योपम आउखोकह्यो। लांतक छठादेवलोके केतलाएक देवतानो बारसागरोपम आउखोकह्यो। लांतककल्पे जेदेवता महेन्द्र १ महेन्द्रध्वज २। कंबु ३। कंबुग्रीव ४। पुंच ५। सपुंच ६। महापुंच ७। पुंड्र ८। सपुंड्र ९। महापुंड्र १०। नरेन्द्र ११। नरेन्द्रकांत १२। नरेन्द्रोत्तरावतंसक १३। एणे १३ विमाने दे वतापणे उपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृष्टी बारसागरोपम आउखोकह्यो। तेहदेवतानो बारअर्द्धमासे पखवाडे स्वासोस्वास घणोले उंचोले नीचोउस्वासले

महेन्द्रमहेन्द्रध्वज कंबुकंबुग्रीवादीनि त्रयोदशविमानानीति ॥ अथ त्रयोदशस्थानके किंचिल्लिख्यते इहस्थिति सूत्रेभ्योऽवगंतव्यसूत्राणि । तत्रकरणंक्रियाकर्मनिबं धनचेष्टातस्याः स्थानानिभेदाःपर्यायाः क्रियास्थानानि तत्रअर्थाय शरीरस्वजनधर्मादिप्रयोजनाय दण्डस्त्रसथावरहिंसा अर्थदण्डः क्रियास्थानइतिप्रथमः १। तद्विलक्षणोऽनर्थदण्डः २ । तथाहिंसामाश्रित्य हिंसितवान्हिनस्ति हिंसिष्यतिवा अयंवैरिकादिर्मामित्येवं प्रणिधानेनदण्डोविनाशनं हिंसादण्डः ३ । तथा ऽकस्मादनभिसंधिना न्यवधार्यप्रवृत्त्यादण्डो ऽन्यस्यविनाशोऽकस्माद्दण्डः ४ । तथादृष्टेर्विपर्यासितावादृष्टिर्विपर्यासिता दृष्टिविपर्यासितावा मतिभ्रमइत्यर्थस्त

जेबारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्सं ति ॥ १२ ॥ तेरसकरीयाठाणा प० तं० ॥ अट्ठादंडे अणट्ठादंडे हिंसादंडे अकम्हादंडे दि

तेंहनो बारेवर्षसहस्रे आहारनो अर्थजपजें। केतलाएक संसारमाहे भव्यजीव बारभवग्रहणे १२ भवनेंअंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरस्ये मोक्षजास्ये ॥ इति बारमूंठाणूं सम्मत्तं २० ॥ १२ ॥ हिवे तेरक्रियानो अधिकार लखियेछे । तेरक्रियाठाणां कह्याकरिवो तेक्रिया कर्मबन्ध नचेष्टा तेहना स्थानकभेद तेक्रियास्थानकह्या तेकहेछे शरीरस्वजन धर्मादिकनेअर्थे त्रस थावरने दंडेंहणिये तेअर्थदण्ड १ अनर्थक जीवहणिये तेअनर्थदंड २ एह मुझनेहणतोहुतोहणस्ये अथवा हणेछे तेमाटे हुंज एने पहिले हणूं ए हिंसादण्ड ३ अकस्मात् अनेराने बधवा प्रवर्त्योहुतो अने अनेरोहणाणो तेअ कस्मात्दंड ४ । दृष्टिविपर्यास तेमतिभ्रम तेणेप्राणिवध तेदृष्टिविपर्यासदंड अमित्रनेबुद्धि मित्रनोहणिवो ५ आत्मपरोभयार्थ जूठोबोलवो तेजप्रत्ययकारणछे जेहदंडनो तेमृषावाद प्रत्यया ६ । एमअदत्तादानप्रत्यया ७। अध्यात्ममन तेहनेविषेहो तेआध्यात्मिक मनमाहिं दुष्टभावनोचिंतवो ८। मानप्रत्ययअ

यादृक्षः प्राणिवधोद्दृष्टिविपर्यासितावा एकोदृक्षोदृष्टिविपर्यासितादृक्षोवा मित्रादेरमित्रादिबुद्ध्या हननमितिभावः ५। तत्रमृषावादे आत्मपरोभयार्थम लोकवचनंतदेवप्रत्ययः कारणंयस्यदंडस्य समृषावादप्रत्ययः ६। एवमदत्तादानप्रत्ययोपि ७। तथाअध्यात्मनिमनसिभव आध्यात्मिकी वाह्यनिनिमित्तानापेक्ष शोकाभिभवइतिभावः ८। तथामानप्रत्ययो जात्यादिमदहेतुकः ९। तथामित्रदेषप्रत्ययः मातृपित्रादीनामल्पेप्यपराधे महादंडनिर्वर्त्तनमितिभावः १०।

ठिविपरिआसिआदंडे मुसावायवत्तिए अदिन्नादाणवत्तिए अज्झत्थिए मानवत्तिए मित्तदोसवत्तिए मा यावत्तिए लोभवत्तिए इरिआवहिए नामंतेरसमे सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु तेरसविमाणपत्थडा प० सोहम्म

भिमानिकरी आगल्याने दंडदेवो ९। मित्रदेषप्रत्यय मातापितानें थोडीअपराधे घणोदंडदेवो १०। मायाप्रत्यय मायाकपट तेणेनिवर्त्तोयोदंड ते मायाप्रत्यय ११। एमलोभप्रत्यय १२। ऐश्वर्यापथिकीनामे तेरमोक्रियास्थानक कायजोग प्रत्ययसंयोगी केवलीने पहिलीसमें क्रियालागे बीजेसमेवेदे तीजेस मेनिर्जरे १३। सौधर्मपहिलो देवलोक ईशानबीजोदेवलोक एहदोदेवलोक लगडाकारेछे तेमाटे बिहुंदेवलोके तेरविमानप्रस्तटछे उपराउपरि पावडीरूप कह्यो। पहिलो सौधर्मलोक मेरुथकी दक्षिणदिसें अर्द्धचंद्राकारछे। पूर्वपश्चिमेलांबी दक्षिणउत्तरेपिहुलो। तेहने तेरमेप्रस्तरे शक्रेंद्रनो आवासभूतविमान अथवा सौधर्मदेवलोकनो अवतंसकमुकुटरूप तेसौधर्मावतंसक विमान साढीबारलाख योजनलांबपणें पिहुलपणेकह्यो। एममेरुथकी उत्तरदिसें अर्द्धचंद्राका रईशानदेवलोक तेहने तेरमेप्रस्तटे ईशानावतंसक विमान साढीबारलाखयोजननोकह्यो। जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनीना जीवनी साढीबारजातिनेविषे कुलकोटिनी योनिप्रमुखउत्पत्तिस्थानक शतसहस्रकह्या एतलेसाढीबार कुलकोटि जलचरपंचेन्द्रिय तिर्यंचनीछे। योनितेउत्पत्तिस्थानक जिमगोबर कुलते

मायाप्रत्ययो मायानिबंधनः ११ । एवलोभप्रत्ययोपि १२ । ऐर्यापथिकः केवलयोगप्रत्ययःकर्मबंध उपशात मोहादीनां सातवेदनीयबंधः १३ । तथाविमाणप त्थडत्ति विमानप्रस्तटाउत्तराधर्यव्यवस्थिता तथासोहम्मवडिंसएत्ति सौधर्मस्यदेवलोकस्यार्द्धचन्द्राकारस्य पूर्वापरायतस्य दक्षिणोत्तरविस्तीर्णस्य मध्यभागेत्रयोद शप्रस्तटे शक्रावासभूतंविमानं सौधर्मदेवलोकस्याऽवतंसकः शिखरक. सद्भवप्रधानत्वादित्येव यथार्थनामकमिति एकारोवाक्यालंकारे अर्द्धत्रयोदशयेषुतान्य र्द्धत्रयोदशानि तानिचतानि योजनशतसहस्राणिचेतिविगृहः सार्द्धानिद्वादशेत्यर्थः तथाअर्द्धत्रयोदशानिजातौ जलचरपंचेंद्रिय तिर्यग्गतौकुलकोटिना योनि प्रमुखान्युत्पत्तिस्थानप्रभवानि शतसहस्राणि तानितथोच्यतेइति तथापाणाउस्सत्ति यत्रप्राणिनामायुर्विकथन सभेदमभिधीयते तत्प्राणायुर्द्वादश पूर्वंतस्यत्र योदशवस्तूनि अध्ययनवद्विभागविशेषाः तथागर्भेगर्भाशये व्युत्क्रातिरुत्पत्तियेषांते गर्भव्युक्रातिकाः तेचते पंचेंद्रियतिर्यंगयोनिकाश्चेति विग्रहः प्रयोजनं मनोवा

वडिंसगेणं विमाणे अद्धतेरसजोयणं सयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं प० जलयरपंचिंदिअ तिरिक्खजोणि आणं अद्धतेरसजाइ कुलकोडीजोणीपमुह सयसहस्सा प० पाणाउस्सणं पुव्वस्सतेरसवत्थू प० गब्भवक्कंति अपंचेंदिअतिरिक्ख जोणिआणं तेरसविहेपओगे प० तं० सच्चमणपओगे मोसमणपओगे सच्चामोसमणपओगे

छीजयोनिनेविषे अनेकआकारे जीवजिमगोबरमांहि अनेकप्रकार जेजीवउपजेछे तेकुलकहीये । जिहाप्राणीना आउखाना भेदकहिये तेप्राणीनोबारमो पूर्व तेहनेविषे अध्ययनना विभागविशेषकह्या गर्भोत्पन्नपंचेंद्रिय तिर्यंचजोनिना जीवने तेरप्रकारेप्रयोग मनवचनकायानो व्यापार एतले १३ योगकह्या तेक हेछे । सत्यमनोयोग तेसांचेमनेचितवो १ । जूठमनो व्यापारते मृषामनोयोग २ । सत्यासत्यमनोयोग ते मिश्रभावनो चितवो ३ । असत्यामृषामनोयोग ते

कायानां व्यापाराणांप्रयोगः सत्रयोदशविधः पंचदशानांप्रयोगाणांमध्ये आहारकाहारकमिश्रलक्षणकायप्रयोगद्वयस्य तिरश्चामभावात् तौहिसंयमिनाम वस्तः संयमवतश्चसंयतमनुष्याणामेव नतिरश्चामिति तत्रसत्यासत्योभयानुभयस्वभावा श्चत्वारो मनःप्रयोगाः वाक्प्रयोगाश्चेति अष्टौपुनरौदारिकादयः पञ्च कायप्रयोगाः एवंत्रयोदशेति । तथासूरमण्डलस्यादित्यविमानवृत्तस्य योजनं सूरमंडलयोजनं तत् । णमित्यलंकारेत्रयोदशभिरेकषष्ठिभागे र्येषां भागानामेकष ष्ठ्यायोजनंभवति तैर्भागैर्योजनस्य सबधिभिहूनंप्रज्ञप्त मष्टचत्वारिंशद्योजनभागाइत्यर्थः वज्राभिलापेनद्वादश,वइराभिलापेन लोकाभिलापेन चैकादशविमा

असच्चामोसमणपओगे सच्चवइपओगे मोसवइपओगे सच्चामोसवइपओगे असच्चामोसवइपओगे उरालिअसरीरकायपओगे उरालिअमीससरीरकायपओगे वेउव्विअसरीरकायपओगे वेउव्विअमीससरीरकायपओगे कम्मसरीरकायपओगे सूरमंडलं जोयणतेरसेहिं एगसट्ठिभागेहिं जोयणस्सऊणंपन्नत्तं इसीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ

मनोव्यापार सांचोनही जूठोपिणनही ४ वचनयोग सांचोबोलवो तेसत्यवचनयोग १ एमम्रृषावचनयोग तेहनूंकारण २ । सत्यासत्य तेमिश्रभाषाए बोलवो ३ । असत्याम्रृषा तेव्यवहारवचनयोग जाइआवो लेदे एहवीभाषा ४ । कायाना सातयोगछे तेमाहि आहारक १ । आहारकमिश्र २ । एह तिर्यंचनेनहोय तेहोय तेहपूरवधरनेहोई तेमाटे पांचकाययोगलीजे औदारिक शरीरकाययोग १ औदारिकमिश्र शरीरकाययोग २ वैक्रियशरीरकाययोग ३ वैक्रियमिश्रश रीरकाययोग ४ अपर्याप्तावस्थाए। कार्मणशरीर काययोग ५। एममनोयोग ४ वचनयोग ४ काययोग ५ सर्वमिली १३ यथा सूर्यनूंमाडलू योजनने एकसट्ठीए तेरभा गेजणोकह्यो । एतले एकयोजनना ६१ भागकीजे तेहवा १३ भाग सूर्यनूंमडलहै । एतले एकसट्ठीया ४८भागसूर्यनूंमाडलूं पिहुलूंछे । एणीएरत्नप्रभा पहिली

नेरइआणं तेरसपलिओवमाइं ठिई प० पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं तेरससागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइआणं तेरसपलिओवमाइठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइआ णं देवाण तेरसपलिओवमाइ ठिई प० लंतएकप्पेसु अत्थेगइयाण देवाणं तेरससागरोवमाइंठिई प० जेदेवा वज्जं सुवज्जं वज्जावत्तं वज्जप्पभं वज्जकंत वज्जवण्णं वज्जलेसं वज्जरूवं वज्जसिंगं वज्जसिद्धं वज्जकूडं वज्जुत्तरवडिंसगं वइरं सुवइर वइरावत्त वइरप्पभं वइरकंतं वइरवण्णं वइरलेसं वइररूवं वइरसिंगं वइरसिद्धं वइरकूडं वइरुत्तरवडिंसगं लोगं सुलोगं लोगावत्तं लोगप्पभं लोगकंतं लोगवण्णं लोगलेसं लोगरूवं लो

नरकपृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनी तेरपल्योपम आउखोकह्यो। पांचमी पृथिवीए केतलाएक नारकीनो तेरसागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार देवनोकेतलाएकनी तेरपल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्मईशान देवलोके केतलाएक देवतानो तेरपल्योपम आउखोकह्यो। लांतककल्पेकेतलाएकदेवनो तेरसागरोपम आउखोकह्यो। छट्ठेदेवलोके जेहदेवता वज्र १। सुवज्र २। वज्रावर्त ३। वज्रप्रभ ४। वज्रकांत ५। वज्रवर्ण ६। वज्रलेश ७। वज्ररूप ८। वज्रशृंग ९। वज्रसिद्ध १०। वज्रकूट ११। वज्रोत्तरावतंसक १२। एम बारवली॥ वइर १। सुवइर २। वइरावर्त ३। वइरप्रभ ४। वइरकांत ५। वइरवर्ण ६। वइरलेश ७। वइररूप ८। वइरशृंग ९। वइरसिद्ध १०। वइरकूट ११। एमवज्रनी परिवैरसाथे १२ विमानकरी छेहिलो वैरोत्तरावतंसक १३। वली॥ लोक १। सुलोक २। लोकावर्त ३। लोकप्रभ ४। लोककांत ५। लोकवर्ण ६। लोकलेश ७। लोकरूप ८। लोकशृंग ९। लोकसिद्ध १०। लोककूट ११।

नानीति । अथचतुर्दशस्थानकंसुबोधंच नवरमिहाष्टौसूत्राणि पृथक् स्थितिसूत्रादिति तत्रचतुर्दशभूतग्रामाः समूहाः भूतग्रामास्तत्र सूक्ष्मासूक्ष्मनामकर्मोदयव र्त्तित्वात् पृथिव्यादयएकेन्द्रियाः किंभूताअपर्याप्तकासत्कर्मोदयाः परिपूर्णस्वकीयपर्याप्तयइत्येकोग्रामः एवमेतेएवपर्याप्तकास्तथैव परिपूर्णस्वकीयपर्याप्त इति द्वितीयः एवंबादराबादरनामोदयात् पृथिव्यादयएव तेपिपर्याप्तेतरभेदाद्विधा एवंद्वीन्द्रियादयोपि नवरंपचेंद्रियाः संज्ञिनोमनःपर्याप्त्युपेताइतरेत्वसंज्ञिनइति

गासिंगं लोगसिद्धं लोगकूडं लोगुत्तरवडिंसगं विमाणं देवताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं तेरससा गरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवातेरसहिं अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं तेरसहिं वाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिआजीवा जेतेरसहिं भवग्गह णेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ १३ ॥

चउद्दसभूअग्गामा प० तं० ॥ सुहुमाअपजत्तया सुहुमापज्जत्तया बादराअपज्जत्तया बादरापज्जत्तया

लोकोत्तरावतंसक १२ । एम छत्रीसविमाने देवतापणें उपनाछे तेदेवतानोउत्कृष्टा तेरसागरोपम आउखोकह्यो । तेदेवता तेरअर्द्धमासे श्वासोश्वास घणोले ऊचोले नीचोमूंके । तेदेवतानो तेरवर्षसहस्रे आहारनो अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीव तेरंभवग्रहणे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखना अंतकरिस्ये इति तेरमूंठाणूं सम्मतं ॥ १३ ॥ हिवे चौदमो अधिकार लिखेछे । चौदभूतानांग्रामभूतकहतां जीवनो ग्रामसमूह तेभूतग्रामकह्या तेकहेछे । सूक्ष्मए केंद्रिय अपर्याप्त सूक्ष्मनामकर्मोदयथकी सूक्ष्मपणूंपाम्या एहवापृथ्व्यादिक एकेंद्रिय तेकेहवाछे अपर्याप्तछे आहार १ शरीर २ इन्द्रिय ३ स्वासोस्वास ४

तथाउप्पायपुब्बेत्यादिगाथात्रयं तत्रउप्पायमग्गेणियंचत्ति यत्रोत्पादमाश्रित्य द्रव्यपर्यायाणां प्ररूपणाकृतातदुत्पादपूर्वं यत्रतेषामेवाग्रस्परिमाणमाश्रित्यतदग्रेणीय
तइयंचवीरियपुब्बति। यज्जीवादीनांवीर्यं प्रोच्यतेप्ररूप्यतेतद्वीर्यप्रवाद अथिनत्थिप्पवायति यद्यथा लोकेअस्तिनास्तिचतद्यत्रप्रोच्यते तदस्तिनास्तिप्रवादं तत्तो

बेंदियाअपज्जत्तया बेंदियापज्जत्तया तेंदियाअपज्जत्तया तेंदियापज्जत्तया चउरिंदिआअपज्जत्तया च
उरिंदियापज्जत्तया पंचिंदिआअसन्निअपज्जत्तया पंचिंदियाअसन्निपज्जत्तया पंचिंदिआसन्निअपज्जत्तया
पंचिंदियासन्निपज्जत्तया चउद्दसपुब्वा प० तं० उप्पायपुब्वमग्गेणीयंच तइयंचवीरियंपुब्वं अत्थीनत्थिप्प

लक्षणपरिचारें पर्याप्तनथीकीधा तेमाटे अपर्याप्त एहवा सूक्ष्मएकेंद्रियनोभेद १। सूक्ष्मएकेंद्रियपर्याप्ता जेणे आहारादिक चारपर्याप्ति पूरी कीधी तेपर्याप्ता २।
बादरएकेंद्रिय अपर्याप्ता ३। बादरएकेंद्रियपर्याप्ता ४। बेंद्रियअपर्याप्ता ५। बेंद्रियपर्याप्ता ६। तेंद्रियअपर्याप्ता ७। तेंद्रियपर्याप्ता ८। चतुरिंद्रिअपर्याप्ता ९
चतुरिंद्रियपर्याप्ता १०। पचेंद्रियअसन्नी अपर्याप्ता ११। पचेंद्रियअसन्नीपर्याप्ता १२। पचेंद्रियसन्नीअपर्याप्ता १३। पचेंद्रियसंज्ञीपर्याप्ता १४। एकेंद्रियमाहि
४ पर्याप्ताहोय आहार १ शरीर १ इन्द्रिय ३ स्वासोश्वास ४ एचारपर्याप्ति जेणेपूरीकरी तेपर्याप्ता त्रणिकरी मरेते अपर्याप्त। बेंद्रिय १ त्रेंद्रिय
२ चउरीद्रिय असंज्ञीसमूर्छिम पंचिंद्रियमाहि पांचपर्याप्ति ध्यारसूलनी पांचसीभाषाअधिकी संज्ञीगर्भजमांहि मनवध्यो जेमांहि जेतलीकही तेमांहीएक
उच्छीहोय तेअपर्याप्तिकहिये। चौदपूर्वकह्या तेआगलिविस्तरपणे बखाणीस्येकहीस्ये अनुक्रमे। उत्पातपूर्व जेमांही द्रव्यपर्याप्तानो उत्पादछे १। बीजोअग्र
णीय जेमांहि तेहिजपूर्वनो अग्रपरिमाणपाम्यो २। त्रीजोप्रवाद जिहांजीवादिकनो वीर्यप्ररूप्यो ३। अस्तिनास्तिप्रवाद जेहमांहि अस्तिनास्ति भाव

नाणप्पवायंचत्ति यत्रज्ञानंमत्यादिकं स्वरूपभेदादिभिः प्रोच्यते तत्ज्ञानप्रवादमिति । सच्चप्पवायपुव्वति यत्रसत्यः संयमः सत्यवचनंवा सभेदेनयत्र प्रो च्यते तत्सत्यप्रवादपूर्वं तत्तोआयप्पवायपुव्वंवत्ति यत्रात्मजीवोनेकनयैः प्रोच्यते तदात्मप्रवादमिति कम्मप्पवायपुव्वन्ति यत्रज्ञानावरणादिकर्म प्रोच्यते तत्कर्मप्र वादमिति पच्चक्खाणंभवेनवमन्ति यत्रप्रत्याख्यानस्वरूपवर्ण्यते तत्प्रत्याख्यानमिति । विद्याअणुप्पवायन्ति यत्रानेकविधा विद्यातिशया वर्ण्यंते तद्विद्यानुप्रवादं अवंझपाणाउ बारसंपुव्वन्ति यत्रसम्यग्ज्ञानादयोऽवध्याः सफलावर्ण्यन्ते तदवध्यमेकादश यत्रप्राणाजीवाआयु[illegible]नेकधावर्ण्यन्ते तत्प्राणायुरितिद्वादशंपूर्वं तत्तो किरियविसालति यत्रक्रियाः कायिक्यादिकाः विशालाविस्तीर्णाः सभेदत्वादभिधीयं[illegible] तत्क्रियाविशालापुव्वं तह बिंदुसारवत्ति लोकशब्दोत्रलुप्तोद्रष्टव्य. तत

वायं तत्तोनाणप्पवायंच सच्चप्पवायपुव्वं तत्तोआयप्पवायपुव्वंच कम्मप्पवायपुव्वं पच्चक्खाणं अवेनवमं वि ज्जाणुप्पवायं अवंझपाणाउ बारसपुव्वं तत्तोकरियविसालंपुव्वं तहबिंदुसारंच अग्गेणीअस्सणंपुव्वस्स चऊ

प्रकृयो ४ । ज्ञानप्रवाद जेमांहि मत्यादिकज्ञानस्वरूपभेदकह्यो ५ । सत्यप्रवादपूर्व सत्यसंयम तथा सत्यवचन तेह जेहमां चिहुभेदेकह्यो ६ । तिवारपछे आ त्मप्रवादपूर्व जिहां आत्मजीव अनेकनयकरीकह्यो ७ । कर्मप्रवाद जिहां ज्ञानावरणीयादिककह्यो ८ । प्रत्याख्यानपूर्वनवमूं प्रत्याख्यान स्वरूप जिहांव र्णवीयो ९ । विद्यानुप्रवाद जिहां अनेकविद्याना अतिशयवर्णव्याछे १० । अवध्यं इग्यारमूं जिहां सम्यक् ज्ञानादिक अवध्यसफलवर्णव्या ११ । प्राणायु बारमूं पूर्वजिहां प्राणजीव अने आउखो अनेकधावर्णव्यो १२ । तिवार [illegible] क्रियाविशाल जिहांकायिक्यादिक क्रियाविशाल विस्तीर्णसातेकह्या १३ बिंदुसार जेह

स्रलोकस्य बिन्दुरिवाक्षरस्य सारं सर्वोत्तमयत्तल्लोकबिंदुसारमिति प्रथाचोद्दसवत्थूणित्ति । द्वितीयपूर्वस्यवस्तूनि विभागविशेषास्तानिच चतुर्दशसूत्रवस्तूनि त थासाहस्त्रिश्रोत्ति । सहस्राख्येवसाहस्रं तथाकम्मविसोहीत्यादि कर्मविशोधिमार्गणा प्रतीत्य ज्ञानवरणादिकर्मविशुद्धिगवेषणामाश्रित्य चतुर्दशजीवस्थानानि जीवभेदाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा मिथ्याविपरीताद्दष्टिर्यस्यासौ मिथ्यादृष्टिः उदितमिथ्यात्वमोहनीयविशेषः तथासासायणसम्मदिट्ठित्ति । सहैवतत्वश्रद्धानरसास्वाद नेन वर्त्ततेइतिसास्वादनः घण्टालालान्यायेनप्रायः परित्यक्तसम्यक्त स्तदुत्तरकालषडावलिकस्तथाचोक्तं। उवसमसम्मत्ताउव यउमित्थअपाउपाणस्स। सासायण सम्मतं तदंतरालंमिच्छवलियति । सास्वादनश्चासौसम्यग्दृष्टिश्चेतिविग्रहः सम्मामिच्छदिट्ठित्ति सम्यक्तमिथ्याचदृष्टिरस्येति सम्यग्मिथ्यादृष्टिरुदितदर्शनमोहनी

द्दसवत्थू प० समणस्सणं भगवउमहावीरस्स चउद्दसमणसाहस्सिउ उक्कोसियासमणसंपया होत्था कम्मवि सोहिमग्गणं पडुच्चचउद्दसजीवठाणा प० तं० मिच्छदिट्ठी सासायणसम्मद्दिट्ठी सम्मामिच्छदिट्ठी अविरयस

लोकजे बिंदुनोपरि अक्षरनोसार सर्वोत्तम ते बिंदुसार चौदमोपूर्वकह्यो १४ । अग्रणीयनीजूपूर्वजाणिवू तेहना चौदवस्तु भागविशेष भूलावस्तुनोतिकह्या। श्रम णतपस्वोभगवत ज्ञानवंत श्रीमहावीरने चौदश्रमणयतीनासहस्र एतले सहस्रपतीनी उत्कष्टी साधुनी संपदाहतिहुई । ज्ञानावरणीयादिकर्म विशोधि गवेषणा पडुच्च आश्रीने चौद जीवनास्थानक भेदकह्या एतले चौदगुणठाणा तेकहेछे । मिथ्याविपरीतछे दृष्टिजेहनी तेमिथ्यादृष्टि प्रथम १ । थोडोतत्व श्रद्धानरूपरसास्वादेंकरी सहितवर्तें तेस्वादन सम्यग् दृष्टि बीजोगुणठान २ । सम्यग् मिथ्या दृष्टिजेहनीछे ते सम्यग् मिथ्यादृष्टि एतले कांइकसम्यक्त रुचि कांइक मिथ्याते रुचिएतले मिश्रगुणठाणूत्रीजूं ३ । अविरतिसम्यग् दृष्टिविरतिरहित सम्यग् दृष्टिचौथोगुणठाण ४ । विरताविरतिश्रावक ५ प्रमत्तसंयती

यविशेषः तथा अविरतसम्यग्दृष्टिर्देशविरतोदेशविरतः श्रावकइत्यर्थः प्रमत्तसंयतः किंचित्प्रमादवान् सर्वविरतः अप्रमत्तसंयतः सर्वप्रमादरहितः सएव नियट्टि इहचपकश्रेणिमुपशमश्रेणिंवा प्रतिपन्नोजीवः चीणदर्शनसप्तकउपशांतदर्शनसप्तकोवा निवृत्तिबादरउच्यते तत्रनिवृत्तिस्तद्गुणस्थानकं समकालप्रतिप न्नानां जीवानामध्यवसाय भेदतप्रधानोबादरो बादरसंपरायोनिवृत्तिबादरः अणियट्टिशायरेत्ति अनिवृत्तिबादरः सचकषायाष्टकचपणारम्भान्नपुंसकवेदोपश मनारम्भादारभ्य बादरलोभखंडं चपणोपशमनेयावद्भवतीति सुहुमसंपराएत्ति सूक्ष्मः संज्वलनलोभासंख्येयखंडरूपः संपरायः कषायोयस्यससूक्ष्मसंपरायो लो भानुवेदकइत्यर्थोयंद्विविधाइत्याह उपशमकोवाउपशमश्रेणीप्रतिपन्नक्षपकोवाक्षपकश्रेणिप्रतिपन्न इतिदशमंगुणस्थानमिति तथा उपशांतः सर्वथानुदयावस्थो मोहो मोहनीयकर्मयस्यउपशांतमोहः उपशमवीतरागइत्यर्थोऽयंचोपशमश्रेणि समाप्तावंतर्मुहूर्तंभवति ततःप्रच्यवतएवेति तथाचीणो निःसत्ताकीभूतोमोहोय

म्मद्दिठी विरयाविरए पमत्तसंजए अप्पमत्तसंजए निअट्टिअनियट्टिबायर सुहुमसंपराय उवसमएवाखव

कादिक प्रमादवंत ६। अप्रमत्तसंयतसर्वप्रमादरहित ७। आठमीठाणाथी चपकश्रेणि तथा उपशमश्रेणि जडतनुजीव अणंतानुबंधीया ४। क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४। त्रणिमोहनी सम्यक्त १ मिथ्या २ मिश्र ३ एम ७। दर्शनसप्तक्षयकरतो चपकश्रेणी आरूढकही अने निवृत्ति बादर आठमूगुणठाणूंकह्यूं ८ नवमूं अनिवृत्ति बादरतिहां पहिलोकषायाष्टखपायव्यानंतर नपुंसकवेदोदयोपशमाव्यानतर बादर लोभखंडखपावे केउपशमावे ९। सूक्ष्मसपराय दसमूं तिहांसूक्ष्मसंज्वलन लोभासंख्येय खंडरूपसंपराय कषायनो सूक्ष्मलोभनो वेदवोछे जिहां सूक्ष्मसंपराय गुणठाणेठाणो जीव उपशमश्रेणी प्रतिपन्नहोय के चप कश्रेणी प्रतिपन्नहोय १०। इग्यारमूं उपसंतमोह सर्वथापि उपशांत अनुदयछे मोहनीयकर्म तिहां इग्यारमूं गुणठाणे अंतमुहूर्तरही कालकरेतो अनुत्तर

स्यस तथा चयवीतरागइत्यर्थोऽयमप्यतर्मुहूर्त्तएवेति तथासंयोगीकेवलेति मनःप्रभृत्यतिव्यापारवान् केवलज्ञानीति तथाअयोगीकवली निरुद्दमनःप्रभृतियोगः शै लेशीगतोह्रस्वपंचाक्षरोद्गिरणमात्रकालयावदिति चतुर्दशजीवस्थानमिति भरहेत्यादि भारतैरवत्योजीवे इहभरतमैरवतदारोपितगुणको दंडाकारपनस्तयज्जी वेभयतः तत्रभरतस्यहिमवतोऽर्वागनन्तराः प्रदेशाः श्रेणिजीवाः ऐरवतस्यचशिखरिणः परतोनन्तरप्रदेशाश्रेणीति भरतैरावतजीवा चाउरंतचक्कवट्टिस्सत्ति च

एया उवसंतमोहेवा खीणमोहे सजोगीकेवली अरहेवय उणजीवाउ चउद्दसचऊद्दसजोयणसहस्साइ चत्तारि

यएऊत्तरेजोयणसए छव्वएकूणवीसेभागेजोयणस्स आयामेणं प० एगमेगस्सणंरन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चउ

विमाने अवतरे अने पाछोपडेतो छठेआवी पहिले एउपशमश्रेणीनो धणी जोक्षपकश्रेणी करेतो दशमगुणठाणाथी इग्यारमोमूंकी बारमेचडेतेह ११। बार मोक्षीणमोह सर्वथापि क्षीणछे मोहजिहांछिणवीतराग १२। तेरमो सयोगी केवली मनोप्रभृति योगव्यापारवंत केवलज्ञानी १३। चौदमो असंयोगी केव ली मनप्रभृतियोगत्रणि जिहांरुंध्याछे ह्रस्वपंचाक्षरकालमान १४ गुणठानकालमान मिछे १ सासण २ अविरय ३ परभवियाउणसे सगुणठाणमिछसति ऩभगछावलियाहोय सासणे १ तित्तीसयरचाउत्थ ४ पुव्वाणकोडिपणग ५ तेरसस १३। लहुपंचक्खरचरम १४ एमतहुवे सगुणठाणा १८ भरतऐरवत एहबिहु क्षेत्रना जीव तिहां हिमवंतपर्वतथको ओरहे पूर्वपश्चिमसमुद्रलगी लांबीभरजीवा प्रत्यचाकारें अने ऐरवतक्षेत्रनाजीव शिखरीपर्वतथको परहोश्रेणी जाणी वी एहजीहु जोव चौदचौदयोजन सहस्रनो चारसेएकोत्तरयोजन एकयोजनना ओगणीसहाइयाछभागआयाम लांबापणेकह्या एकएकने राजाने पूर्वादिक त्रणिसमुद्र चउथोहिमवत पर्वत एतलालगी भूमिमा अंतभाग ४ छे। जिहातिह भूमिनोधणी एहवो चक्रवर्ती तेहने १४ रत्नहोय पोतानी जातिमांहि जे

त्वारोन्ताविभागा यस्यांसाचतुरंताभूमिः तत्रभवः स्वामितयेतिचातुरंतः सचासौचक्रवर्त्तीचेतिविग्रहः रत्नानिस्वजातीयमध्ये समुत्कर्षयतिवस्तूनीति यदाह रत्नंनिगद्यते तज्जातीयदुत्कृष्टमिति गाहावइत्तिगृहपतिः कोष्ठागारिकः पुरोहियत्ति पुरोहितः शांतिकर्मादिकारी वड्डइत्ति वर्द्धकिरथादिनिर्मापयिता मणिः पृथिवीपरिणामः काकिणीसुवर्णमयी अधिकरणीसंस्थानेति इहसप्तायानिपंचेंद्रियाणि शेषाण्येकेंद्रियाणीति श्रीकांतमित्यादीन्यष्टौविमानानांनामानीति

चउद्दसरयणा प० तं० इत्थीरयणे सेणावइरयणे गहावइरयणे पुरोहियरयणे वड्ढइरयणे आसरयणे हत्थिरयणे असिरयणे चक्करयणे छत्तरयणे चम्मरयणे मणिरयणे कागिणिरयणे जंबूदीवेणंदीवे चउद्दसमहानईओ पुव्वा वरेणलवणसमुद्दं समुप्पंति तं० गंगा सिंधु रोहिआ रोहिअंसा हरिया हरिकंता सीआ सीओदा नरकंता नारिकांता सुवन्नकूला रूप्पकुला रत्ता रत्तवई इमीसेणंरयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं

उत्कृष्टवस्तु तेहनेरत्नकहिये तेकहेछे । स्त्रीरत्न १ । सेनापतिरत्न २ । गृहपतिरत्न तेकोठारी ३ । पुरोहितशांतिक कर्मकारी ४ । वार्द्धकीसूत्रधार ५ । अश्व घोडोरत्न ६ । हस्तिरत्न ७ । एहसातपंचेंद्रियरत्न । असिखड्गरत्न ८ । दंडरत्न ९ । चक्ररत्न १० । छत्ररत्न ११ । चर्मरत्न १२ । मणिरत्न ६ पृथिवीपरिणाम १३ । काकिणीं सुवर्णमयी अहिरणसठाणि ७ एह एकेंद्रियरत्न चौद १४ कह्या । जंबूद्वीपनेविषे चौद महानदीजाणवी । पूर्वपश्चिम समुद्रेसमर्थ्ये पहुचेछे । पूर्वलव णसमुद्रे ७ पश्चिमसमुद्रे ७ पहुचे तेकहेछे । गंगा १ । सिंधु २ । रोहिता ३ । रोहितंसा ४ । हरिता ५ । हरिकाता ६ । सीता ७ । सीतोदा ८ । नरकांता ९ । नारिकांता १० । सुवर्णकूला ११ । रूप्यकूला १२ । रक्ता १३ । रक्तवती १४ । एणीएरत्नप्रभा पहिली पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो चौदपल्योप

चऊद्दसपलिओवमाइं ठिई प० पंचमीएणं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउद्दससागरोवमाइं ठिई प० अ
सुरकुमाराण देवाणं अत्थेगइयाण चऊद्दसपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं
देवाण चउद्दसपलिओ वमाइ ठिई प० लंतएकप्पेसुदेवाणं अत्थेगइयाणं चउद्दससागरोवमाइं ठिई प०
महासुक्केकप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेणं चउद्दससागरोवमाइ ठिई प० जेदेवा सिरिकंत सिरिमहि
अं सिरिसोमनस लतयं काविठं महिंदं महिदकंत महिदुत्तरवडिंसगं बिमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं
देवाणं उक्कोसेण चऊद्दससागरोवमाइ ठिई प० तेणंदेवा चऊद्दसहिं अद्धमासेहि आणमंतिवा पाणमंति
वा ऊस्ससतिवा नीस्ससतिवा तेसिणंदेवाणं चऊद्दसहिं वाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जाइ संतेगइआन

म आउखोकह्यो पचमीधूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो चौदसागरोपम आउखोकह्यो । असुरकुमारदेवतानो केतलाएकनो चौदपल्योपमआउ खोकह्यो । सौधर्म ईशानदेवलोके केतलाएक देवतानो चउदपल्योपम आउखोकह्यो । लांतक देवलोके केतलाएक देवतानो चौदसागरोपम आउखोकह्यो महाशुक्र सातमे देवलोके केतलाएक देवतानो जघन्यो चौदसागरोपम आउखोकह्यो छठेदेवलोके जेहदेवता श्रीकांत १ श्रीमहांतक २ श्रीसोमनस १ लांतक ४ काविष्ठ ५ महेंद्र ६ महेद्रकात ७ महेन्द्रोत्तरावतसक ८ एह आठविमानेदेवतापणे उपनाछे । तेहदेवतानो उत्कृष्टो चौदसागरोपम आउखोकह्यो। तेह देवता चौदेअर्द्धमासे पखवाडे घणोसासले थोडोसासले ऊचोसासले नीचोसासमूके तेहदेवताने चौदवर्षसहस्रे आहारनो अर्थउपजे । केएक भव्यजीव ची

अथपंचदशस्थानके सुगमेपिकिंचिल्लिख्यंते इहस्थितेरर्वाक्सप्तसूत्राणि । तत्रपरमायतेऽधार्मिकाच संक्लिष्टपरिणामत्वात्परमाधार्मिकाः असुरविशेषा येतिसृषु पृथिवीषु नारकान् कदर्थयतीति तत्रांबेत्यादिश्लोकद्वयं एतेचव्यापारभेदेन पंचदशभवति तत्रअंबेत्ति यःपरमाधार्मिकदेवो नारकान् हंतिपातयति बध्नाति नीत्वावारं२ खतलेविमुचति सइत्यभिधीयते १ अंबरिसीचेवत्ति यस्तुनारकान्निहता कल्पनिकाभिः खंडशः कल्पयित्वा भ्राष्ट्रपाकयोग्यान् करोति सोंबरूषीति २ सामेत्ति यस्तुरज्जुहस्तः प्रहारादितानधःशातमपतनादिकरोति वर्णतश्चश्यामइति ३ सबलेत्तियावरेत्ति शबलइतिचापरः परमाधार्मिकइति प्रक्रमः सचांत्रवसाहृदयकालेयकादीन्युत्पाटयति वर्णतश्चशबलः कर्बुरइत्यर्थः ४ रुद्दोवरुद्दोत्ति यःशक्तिकुन्तादिषुनारकानान् प्रोतयतिसरौद्रत्वाद्रौद्रइति

वासिठ्ठिआ जीवाजेचऊद्दसाहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुरकाणमंतंकरिस्संति ॥ १४ ॥ पन्नरसपरमाहमीआ प०तं० ॥ अंबे अंबरिसीचेव सामसबलेत्तिआवरे रुद्दावरुद्दकालेअ महाकालेत्तिआवरे असिपत्तेधणूकुंभे वालुए वेअरणीत्तिय खरस्सरेमहाघोसे

दभवग्रहणे सोभ्रस्ये बूभ्रस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोचजास्ये इति चौदमोठाणो सम्मतो ॥ १४ ॥ हिवे पनरनो अधिकार लिखियेछे पनरभेद परमाधर्मीक असुरदेव विशेष महाअधर्मी संक्लिष्ट परिणामनाधणी त्रिणिनरकलगे नारकीने वेदनानाईणहारकह्या तेकहेछे । जेपरमाधर्मी देव नारकीने हणीपाडे अंबर आकाशे उछाले तेअंबकहिये १ । हण्यानारकीने रापशस्त्रेकरि अनेक खडकल्पीभावे पचिवायोग्यकरे तेअंबरीषकहिये २ । जेहनारकीने हाथपगनें प्रहारेंकरी मारीनेहेठापाडे तेहने श्यामकहिये वर्णथकीकाला तेश्याम ३ । कर्बुरअनेरा नारकीना हइयाकालिजां जपाडेतेशबलक कहि

तवत् पलायमानान् नारकान् पश्चन्दृववाटकेषु महाघोषं कुर्वन्निरुणद्धिसमहाघोषइति १५ इमेएपन्नरसाहियं एवमित्यंबादिक्रमेणते परमाधार्मिकाः पञ्च दशाख्याताः कथिताजिनैरिति ॥ ध्रुवराहूणमित्यादि द्विविधोराहुः पर्वराहुर्ध्रुवराहुश्च तत्रयः पर्वणिपौर्णमास्याममावास्यायांवा चन्द्रादित्ययोरुपरागंकरोति सपर्वराहु र्यस्तुचन्द्रस्यसदैवसन्निहितः संचरति सध्रुवराहुः आहच । किण्हंराहुविमाणं निच्चचंदेणहोइअविरहियं । चउरंगुलमप्पत्तं हिट्ठाचन्दस्सतंचरइत्ति ततो ऽसौध्रुवराहुः वामित्यलंकारे वहुलपक्षस्यप्रतीत्यस्य पाडिवयंत्तिप्रतिपद प्रथमतिथिमादौकृत्वेतिवाक्यशेषः पञ्चदशभागंपचदशभागेनेति वीप्सायांद्विर्वचनादि

एतेपन्नरसाहिआ णेमीणंअरहा पन्नरसधणूइंउड्ढं उच्चत्तेणंहोत्था णिच्चराहूणंबहुलपक्खस्सपाडिवए पन्नरसति भागेणं चंदलेसआवरेत्ताणं चिट्ठति तं० पढमाएपढमंभागं वीआएदुभागं तइयाएतिंभागं चउत्थीएचउभागं पंचमीएपंचभागं छट्ठीएछभागं अट्ठमीएअट्ठभागं नवमीएनवभागं दसमीएदसभागं एक्कारसीए एक्कारसमं

नारकोने पश्चनीपरि इचाडेवालोमेले पोकारकरे तानेरूंधीमेले तेमहापाप परमाधर्मीएते पनरजातिना परमाधर्मीकह्या १५। नेमिनाथ अरिहंतएकवीस मा पनरधनुपऊंचा ऊंचपणेकह्या। राहुना बिहुंभेद पर्वराहु ध्रुवराहु पर्वराहु पर्वविशेषे पौर्णमासीएं अमावास्याएं चंद्रादित्यनेआवरे ध्रुवराहु अंधारापच मीरात्रीएं चंद्रमाने पनरमभागे चंद्रमानी लेश्यादीप्ति आवरीने आच्छादीने तिष्ठेरहे तेंकहेछे । एक पडिवामांडि प्रतिदिनें राहुचंद्रमानी एकएककला आ छादे पहिली पडिवाहोय १ । बीजेदिने वीजोभाग २ । त्रीजेदिने त्रीजोभाग ३ । चउथें चौथोभाग ४ । पचमीए पांचमोभाग ५ । छट्ठेछट्ठोभाग ६ । सातमे सातमोभाग ७ । आठमेदिने आठमोभाग ८ । नवमीए नवभाग ९ । दशमीए दशमभाग १० । एकादशीए इग्यारभाग ११ । वारसे वारभाग १२ । तेरसे

यथापद पदेनगच्छतीत्यादिषु प्रतिदिनंपञ्चदश भागमितिभाव चन्द्रस्यप्रतीतस्यलेश्यामिति लेश्यादीप्तिस्तत्कारणत्वात् मण्डललेश्यातामावृत्याच्छादातिष्ठति
एतदेवदर्शयन्नाह तद्यथेत्यादि पढमाइत्ति प्रथमायातिथ्या प्रथमभाग पंचदशांशलचणं चद्रलेश्यायाआवृत्यतिष्ठतीति प्रक्रमः अनेनक्रमेणयावत् पन्नरसेसुत्ति
पञ्चदशसुदिनेषु पञ्चदशभागमावृत्यतिष्ठति तचेवत्ति तमेवपञ्चदशभाग शुक्लपचस्य प्रतिपदादिषु चद्रलेश्यायाउपदर्शयन् पचदशभागतः स्वयमपसरणतः
प्रकटयन् २ तिष्ठतिध्रुवराहुरिति इहचायभावार्थ. षोडशभागीकृतस्यचद्रस्य षोडशभागोऽवस्थितएवास्ते येचान्येभागास्तद्राहुः प्रतिदिनमेकैकभाग कृष्णपचे
आवृणोतिशुक्लपचेतु विमुचतीति उक्तंचज्योतिष्करण्डके सोलसभागेकाजण उलुवंच्छायएत्थपन्नरस। तज्जुयमित्तेभागे पुणोविपरिवढइजोण्हंति। ननुचन्द्रविमा

वारसमीए वारमन्नाग तेरसीए तेरसन्नागं चउद्दसीए चउद्दसन्नागं पन्नरसेसु पन्नरसन्नागं सुक्कस्स उवद
सेमाणे चिठन्ति तं० पढमाएपढमन्नागं जावपन्नरसेसु पन्नरसन्नागं नखक्त्ता पन्नरस मुहुत्तसजुत्ता प०
तं० सतन्निसय न्नरणि अद्दा असलेसा साइ तहाजेठाय एतेनखक्त्ता पन्नरसमुहुत्तसंजुत्ता चेत्तासोएसुणं

तेरसीभाग १३। चौदसीए चौदभाग १४। पनरमेदिने पनरमो कालाढांके १५। तेहीज चन्द्रनो पनरमोभाग शुक्लपचे राहुमूंकतो चद्रनेप्रकटतो तिष्ठेरहे
शुक्लपचने पहिले दिने पहिलो एकभाग बीजेदिनेबीजोभाग एमयावत् पनरमेदिने पनरमोभागमूंके। छनचत्र पनरमूहूर्तलगे चद्रमा साथे चद्रसंयुक्तथका
रहे तेह तुलासक्रांति जाणिवी तेकहेछे। शतभिषा १। भरणी २। अर्द्रा ३। आश्लेषा ४। स्वाती ५। तथाज्येष्ठा ६। एह छनचत्र पनरमूहूर्त संयुक्तकहीये
१५ मुहूर्तलगे चंद्रमासाथेचाले। चैत्रआसो मसवाडे पनरमुहूर्तनो दिवस ३० घडीनोहुओ। तेणेमसवाडे पनरमुहूर्तनो ३० घडीनीरात्रीहोय। विद्या

नक्षपचैकषष्ठिभागन्यूनयोजनप्रमाणत्वात् राहुविमानस्य ग्रहविमानत्वेनाऽर्द्धयोजनप्रमाणत्वा त्वथंपंचदशेदिनेचंद्रविमानस्य महत्वेनेतरस्यच लघुत्वेनसर्वा वरणंस्यादित्यचोच्यते। यदिदंग्रहविमानोऽर्द्धयोजनमिति प्रमाणंतत्प्रायिकमिति । राहोर्ग्रहस्ययोजनप्रमाणमपिविमानंसभाव्यते लघीयसोपिवाराहुविमानस्यमहतातमिस्ररश्मिजालेन तस्यावरणान्नदोषइति तथा षण्नक्षत्राणि पंचदशमूहूर्त्तानि यावच्चंद्रेण संयोगोयेषांतानि पंचदशमुहूर्त्तसंयोगानि तद्यथा सयभिसयाभरणीओ अद्दाअस्सेसयाइजेट्ठाय। एएछनक्खत्ता पनरसमुहुत्तसंजुत्ता। संयुक्तं संयोगइति तथाचेत्तासोएसुमासेसुत्तिस्थूलन्यायमाश्रित्यचैत्रेऽश्वयुजिचमासे पंचदशमुहुर्त्तो दिवसोभवति रात्रिश्च नियतस्तु मेषसंक्रांतिदिनेचैवदृष्टव्यमिति पओगेत्ति प्रयोजनंप्रयोगः परिस्पंदआत्मनः क्रियापरिणामोव्यापारइत्यर्थः अथवा प्रकर्षेणयुज्यते संबध्यतेऽनेनक्रियापरिणामेनकर्मणासहाऽत्मनेति प्रयोगः तत्रसत्यार्थालोचननिबंधनंमनः सत्यमन स्तस्यप्रयोगोव्यापारः स

मासेसुपन्नररामुहुत्ते दिवसोभवति सइत्तपन्नरसमुहुत्ताराईभवति विज्जाणुप्पवायस्सणं पुव्वस्सपन्नरसवत्थू प० मणूसाणंपन्नरसविहेपओगे प० तं० सच्चमणपओगे मोसमणपओगे सच्चमोसपओगे असच्चामोसमणप

भनुप्रवाद दसमो पूर्वतेहनो १५ वस्तुअध्ययन विशेषकह्यो। सनुष्यने पनरप्रकारें प्रयोगकहतांयोगकह्या। तेकहेछे। सत्यमनोयोग मननोसांचोव्यापार १। एमज मृषामननोव्यापार २। सत्यमृषामनोयोगमिश्र ३। असत्यअमृषा मनोयोग ४। एमज व्यापार वचनयोग सत्यवचनयोग ५। मृषावचनयोग ६। मिश्रवचनयोग ७ असत्यामृषावचनयोग ८ कायानासातयोग औदारिककाययोग पर्याप्तावस्थाहुई ९ औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तावस्थाहुई उत्पत्तिसमय औदारिकपुद्गल अने कार्मणपुद्गलमिश्रीभावे अतर्मुहूर्तलगे रहेतिभाटे औदारिक मिश्रकाययोग १०। एमज वैक्रियकाययोग ११। वैक्रियमिश्रकाय

त्यमन:प्रयोग' एवमेगेऽपि । नवरमौदारिकशरीरकायप्रयोग औदारिकशरीरमेव पुद्गलस्कंधसमुदायत्वेनोपचीयमानत्वात् कायस्तस्यप्रयोग इतिविग्रहः
अयंचपर्याप्तकस्यैव वेदितव्य: तथौदारिकमिश्रकायप्रयोग: अयचापर्याप्तकस्येति इहचोत्पत्तिमाश्रित्यौदारिकस्य प्रारब्धस्य प्रधानत्वादौदारिको वैक्रियेणमि
श्रोयावदैन्द्रियपर्याप्त्यानपर्याप्तिंगच्छति एवमाहारकेण चौदारिकास्यमिश्रतावसेयेति तथा वैक्रियपर्याप्तकस्य तथा वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगादपर्याप्तकस्य

जोगे सच्चवइपओगे मोसवइपओगे सच्चमोसवइपओगे असच्चामोसवइपओगे उरालियसरीरकायपओगे उरालिअ
मीससरीरकायपओगे वेउव्वियसरीरकायपओगे वेउव्विअमीससरीरकायपओगे आहारयसरीरकायप्पओगे आहा

योग १२ । आहारक काययोग १३ । आहारकमिश्र काययोग १४ कार्मणकाययोग १५ । जिवारें केवली ८ समयक केवलसमुद्घातकरे केवलीनेत्रीजे चौथे
पांचमेकार्मणकायहुया । एणीए रत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो पनरपल्योपमआउखोकह्यो । पांचमी धूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकी
नो पनरेंसागरोपमआउखोकह्यो । असुरकुमारदेवताने केतलाएकनो पनरपल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्मईशानदेवलोके केतलाएकदेवनो पनरेपल्योपम
आउखोकह्यो । महाशुक्रसातमे देवलोके केतलाएकदेवनो पनरेसागरोपम आउखोकह्यो । सातमेदेवलोके जेदेवता नंद १ । सुनंद २ । नंदावर्त ३ । नंदप्रभ
४ । नंदकांत ५ । नंदवर्ण ६ । नंदलेश ७ । नंदध्वज ८ । नंदमिध १० । नंदकूट ११ । नंदोत्तरावतंसक १२ । एहवारविमाने देवतापणे उपनाछे । तेहदेवता

देवस्य नारकस्यवा कर्मणि नैवलब्धि वैक्रियपरित्यागे वा औदारिक प्रवेशादायासौदारिको पादानायप्रवृत्ते वैक्रियाप्रधान्यादौ दारिकेणापि मिश्यतेत्येकेत्वा हारकशरीरकाय प्रयोगस्तदभिनिवृत्तौ सत्या तस्यैवप्रधानत्वा त्तथाहारकमिश्रशरीरकायप्रयोग: औदारिकेणसह आहारकपरित्यागे नेतरग्रहणायोद्यतस्य एतदुक्तं भवति यदाहारकशरीरी भूत्वाकृतकार्य: पुनरप्यौदारिकंगृह्णाति तदाहारकस्य प्रधानत्वा दौदारिकप्रवेशं प्रतिव्यापार भावाद्यावत् सर्वथैनंपरित्य जत्याहारक तावदौदारिकेण सहमिश्यतेति आहनतत्तेनसर्वथामुक्तं पूर्वनिर्वर्तित तिष्ठत्येवत्काय गृह्णाति ?त्य तथाप्यौदारिकशरीरोपादानार्थं प्रवृत्तइतिगृ ह्यात्येव तथाकर्मण:शरीरकायप्रयोगे विग्रहेसमुद्घातगतस्यच केवलिनस्तृतीय चतुर्थ पंचसमयेषु भवतीति ॥ १५ ॥ अथ षोडशस्थान मुच्यते सुगमचेदं नवरं

रयमीसयसरीरकायप्पओगे कम्मयसरीरकायपओगे इमीसेणंरयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं पन्नरस पलिओवमाइं ठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्थेगइआण नेरइआणं पन्नरससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पन्नरसपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं पन्नरसपलिओवमाइं ठिई प० महासुक्केकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं पन्नरससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा णंदं सुणदं णंदावत्तं णंदप्पभं णंदकंतं णंदवन्नं णंदलेसं णंदज्झय णंदसिंगं णंदसिट्ठं णंदकूडं णंदुत्तर

ने उत्कृष्टी पनरेसागरोपम आउखोकह्यो । तेदेवतापनरे पखवाडे सासोसासघणोले ऊचोस्वासले नीचोस्वासमूंके तेहदेवतानो पनरवर्षसहस्रे आहा रनो अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीव पनरभवनेआंतरे सीझस्ये बुझस्ये मूंकास्ये सर्वदु:खना अतकरस्ये मोक्षजास्ये इति पनरमूंठाणूंसमाप्तं ॥ १५ ॥

गाथाषोडशकादीनि स्थितिसूत्रेभ्यआरात्सप्तसूत्राणि तत्रसूत्रकृतांगस्य प्रथमेश्रुतस्कंधे षोडशाध्ययनानि तेषांच गाथाभिधानं षोडशमिति गाथा भिधान म ॥
ध्ययनं षोडशयेषांतानि गाथाषोडशकानि तत्रसमेयत्ति नास्तिकादि समय प्रतिपादपरमध्ययन समयएवोच्यते वैतालीयछंदोजातिबद्धं वैतालीयमेवशेषा

वह्निसग विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिण देवाणं उक्कोसेणं पन्नरससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवापन्नर सएहं अद्धमासाणं आणमंतिवापाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाण पन्नरसहिं वाससह स्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ सतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेपन्नरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिब्बाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ १५ ॥ सोलसयगाहा सोलसगा प० तं० । समए वेयालिये उवसग्गपरिन्ना इत्थीपरिन्ना निरयविभत्ती महावीरथुई कुसीलपरिभासिए वीरएधम्मे

हिवेसोलवो अधिकार लिखियेछे । सूगडांगने पहिलेखधेसोल अध्ययन माहि गाथा एहवोनाम सोलमोछे । तेवाहेछे । समएति नास्तिकादिमतनो कथक प्रथम अध्ययन समयकहिये १ । वेतालिकछंदेबाध्यातेवैतालिय २ । उपसर्गपरिज्ञा ३ । स्त्रीपरिज्ञा ४ नरकविभक्ति ५ । वीरस्तव ६ । कुशीलपरिभाषा ७ वीर्याध्ययन ८ । धर्माध्ययन ९ । समाधिअध्ययन १० । मार्गाध्ययन ११ । त्रिणिसय त्रिसठीपाखंडीनोमत जिहांतिसमोसरण १२ । सत्यभावकहीते यथातथा नाम १३ । ग्रथतेअध्यन १४ । ग्रथनोकथक यमकछंदेबाध्योतेयमक १५ । पूर्वोक्तपनर अध्ययननो जिहांभावपामीये तेगाथानाम १६ । सोलकषायकह्याभग वते वायकहियेससार तेहनो आयलाभहोय जेहथी तेकषायकह्या तेकहेछे । अनतानुबधी क्रोध जेह अनतांभवनो अनुबंधकरे जावजीवरहे सम्यक्तआविवा

णां यथाभिधेयनामानि समोसरणेत्ति समवसरणं नयाणां षड्धिकानां प्रयादिशतानां मतपिंडनरूपं अहातहिएत्ति यथावस्तु तथाप्रतिपाद्यते तत्रतद्यथा तथिका यथाभिधायकग्रंथः जमइत्ति यमकीयं यमकनियद्धंसूत्रं गाहत्तिप्राक्तनपंचदशाध्ययनार्थस्य गानाद्गाथीगाथावातत्प्रतिभूतत्वादिति मेरुनामसूत्रेगाथा

समाही मग्गे समोसरणे आहातहिए गंथे जमइए गाहा सोलसकसाया प० तं० अणंताणुबंधीकोहे अणंताणु बंधीमाणे अणंताणुबंधीमाया अणंताणुबंधीलोभे अपच्चक्खाणकसाएकोहे अपच्चक्खाणकसाएमाणे अपच्चक्खा णकसाएमाया अपच्चक्खाणकसाएलोभे पच्चक्खाणावरणेकोहे पच्चक्खाणावरणेमाणे पच्चक्खाणावरणामाया पच्च क्खाणावरणेलोभे संजलणेकोहे संजलणेमाणे सजलणेमाया संजलणेलोभे मंदरस्सणं पव्वयस्स सोलसनामधे या प० तं० मंदरे मेरू मणोरमे सुदंसणे सयंपभेय गिरिराया रयणुच्चए पियदंसणे मज्झेलोगस्सनाभीय अ

नदे १ एम अनंतानुबंधीमान २। अनंतानुबंधीमाया ३। अनंतानुबंधीलोभ ४। एमज अप्रत्याख्यानक्रोध अणुव्रतआवीवा नदे वरसेलगेरहे १। अप्रत्याख्यानमान २। अप्रत्याख्यानमाया ३। अप्रत्याख्यानलोभ ४। प्रत्याख्यान वरणक्रोधसर्वविरती यतीधर्मने आविवानदे चारमासलगेरहे १। एमज प्रत्याख्यानमान २। प्रत्याख्यानमाया ३। प्रत्याख्यानलोभ ४। संज्वलनक्रोध यथाख्यातचारित्र आविवानदेपनरेदिनरहे१ एम संज्वलनमान २ संज्वलनमाया ३ संज्वलनलोभ ४ सर्वमिली १६ कषायथया। मेरुपर्वतनासोलह नामकह्या तेकहेछे। मंदर १। मेरु २। मनोरम ३। सुदंसण ४। स्वयंप्रभ ५। गिरिराज ६। रत्नोच्चय ७। प्रियदर्शन ८। मध्यम लोकनीनाभि १०। अर्थ ११। सूर्यावर्त सूर्यमेरुनेपासेप्रदच्चिणादे १२। सूर्यावरण रात्रें सूर्यने आवरेआछादे १३।

श्लोकस्य मज्झेलोगस्सनाभीयत्ति लोकमध्ये लोकनाभिरित्यर्थः उत्त॰यति भरतादीना मुत्तरदिग् वर्त्तित्वाद्यदाह सव्वेसिंउत्तरोमेरुत्ति दिसाईयत्ति दिशामादि रित्यर्थः वडिंसेइयत्ति अवतंसः शेखरः सद्दवावतंस इतिचेति पुरिसादाणीयत्ति पुरुषाणांमध्ये आदेयस्येत्यर्थः तथाआत्मप्रवादपूर्वस्य सप्तमस्य तथाचमरब ल्योर्दक्षिणोत्तरयो रसुरकुमारराजयोः उवारियालेणत्ति चमरचचावली चचाभिधान राजधान्योर्मध्योद्गताऽवतरत्प्रासादपीठरूपेऽवतारिकलयने षोडशयोज नसहस्राण्यायामविष्कंभाभ्यांवृत्तत्वात्तयोरिति तथालवणसमुद्रे मध्यमेषुदशसु सहस्रेषु नगरप्राकार इवजलमूर्द्ध गतंतस्यचोत्सेधवृद्धिः षोडशसहस्राण्यऽतउ च्यते लवणसमुद्रः षोडशयोजनसहस्राण्युत्सेधपरिवृद्ध्या प्रज्ञप्तइति आवर्त्तादीन्येकादश विमाननामानि ॥ १६ ॥ अथसप्तदशस्थानकं तत्रव्यक्तं

त्येञ्ज सूरिआवत्ते सूरिआवरणेतिञ उत्तरेय दिसाइञ वडिंसेइञ सोलसमे पासस्सणंअरहओ पुरिसादाणी यस्स सोलससमणसाहस्सीउ उक्कोसीआणंसपइाहोत्था आयप्पवायस्सणं पुव्वस्ससोलसवत्थू प० चमरबली णं उवारियालेणेसोलसजोयणसहस्साइ आयामविक्खंभेणं प० लवणेणंसमुद्देसोलसजोयण सहस्साइं उस्से

भरतादिकक्षेत्रथकी उत्तरदिशाछे तेमाटे उत्तरकह्यो १४। दिशानी आदिछेजेहथकी तेदिगादि १५। अवतंस सर्वपर्वतनो मुगटरूपछे एम १६ नामहु या। पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषमांहि प्रधान आदानीय महासोभागी तेहनेसोले श्रमण सहस्र उत्कृष्टीसाधुनी संपदाहुई जाणवी। आत्मप्रवादनूंपूर्व तेहना सोलह वस्तुकह्या। भगवंते अधिकार विशेषकह्या। चमर चचावली चचानाम राजधानीने मध्यभागे उपकारीलयन तेहप्रवासनी पीठीका सोलसहस्र योजनलांबपणे पिहुलपणेकह्यो। लवणसमुद्रथकी जगतीथकी पचाणूं सहस्रयोजनेईदूरतिहां मध्यभागेदशमाले दससहस्र योजननेविषे नगरना गढनीपरि

हपरिवड्ढीए प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलसपलिओवमाइं ठिई प० पंच मीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइया णं सोलसपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सोलसपलिओवमाइंठिई प० जेमहासुक्केकप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं सोलससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा आवत्तं विआवत्तं नंदिआव त्तं महाणंदियावत्तं अंकुसं पलंबं भद्दं सुभद्दं महाभद्दं सव्वओभद्दं भद्दुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं सोलससागरोवमाइं ठिई प० तेणदेवासोलसहिं अद्धमासाणं आणमंतिवा पाण मंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिण देवाणं सोलसवाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइयाभ

पाणी जचोगयोछे। तेहनी ऊंचपणानीवृद्धि सोलसहस्र योजननीकही। एहरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे कैतलाएकनारकीनो सोलेपल्योपम आउखोकह्यो। पांचमी पृथिवीनेविषे केतला एकनारकीनो सोलेसागरोपमआजखोकह्यो। असुरकुमार देवनो केतला एकनोसोलेपल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशानदेवलोके केतलाएकदेवनो सोलेपल्योपम आउखोकह्यो। मह्वाशुक्रदेवलोके केतलाएक देवनोसोलेसागरोपम आजखोकह्यो। जेदेवता आवर्त १। विदावर्त २ नदिकावर्त ३। महानदिकावर्त ४। अंकुश ५। प्रलब ६। भद्र ७। सुभद्र ८। महाभद्र ९। सर्वतोभद्र १०। भद्रोत्तरावतंसक ११। एह इग्यारविमाने देवतापणेउपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृष्टो सोलेसागरोपम आउखोकह्यो। तेदेवता सोलपखवाडेस्वासोस्वाघणोले जचोस्वासले नीचोस्वासमूंके तेदे

नवरमिहस्थितिसूत्रेभ्योऽर्वाग्दृश तथा अजीवकायासंयमी विकट अर्थबहुमूल्यवस्त्रपात्रे पुस्तकादिग्रहणं प्रेचायामसंयमोयः सतथा सचस्थानोपकरणादीनि

घसिद्धियाजीवा जेसोलसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदु
रकाण मंतंकरिस्संति ॥ १६ ॥ सत्तरसविहेअसंजमे प० तं० । पुढविकायअसंजमे आउका
यअसंजमे तेउकायअसंजमे वाउकायअसंजमे वणस्सइकायअसंजमे बेइंदियअसंजमे तेइंदियअसंजमे च
उरिंदियअसंजमे पंचिंदिअसंजमे अजीवकायअसंजमे पेहाअसंजमे उपेहाअसंजमे अवहट्टुअसंजमे अप्प

वतानो सोलसहस्रवर्षेआहारनो अर्थउपजे । केतलाएकभव्यजीव सोलभवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये ॥ इतिसो
लमूंठाणूं सम्पत्तम् ॥ १६ ॥ हिवे सतरमो अधिकारलिखियेछे । सतप्रकारे असंजमकह्यो तेकहेछे । पृथिवीकायनो पांचवोसंघटवो हणवोते
पृथिवीकाय असजम १ । एम अपकाय पाणीतेहनो असंजमते अपकाय असंजम २ । एम तेजकाय असंजम ३ । वायुकाय असंजम ४ । वनस्पतिकाय
असंयम ५ । बेइन्द्रियअसयम ६ । तेइन्द्रियअसयम ७ । चउरिंदियअसंयम ८ । पचेंद्रियअसयम ९ । वस्त्रप्रात्र अणपुजीलेवो मेलवो तेअजीवकाय असयम
१० । अथवा बहुमूल्यवस्त्रपुस्तकनोलेवो ११ । उपकरणनोअविधि पडिलेहवो तेप्रेचासयम १२ । असयमयोगनेंविषे व्यापारवो सयमयोगनेविषे अव्यापारवो
तेउपेचा असंयम १३ । अवधिए परिठवणोमात्रादिकनो अवधिएपडिलेहवो तेअप्रमार्जन असंयम १४ । मननोभूंडोव्यापार तेमनअसयम १५ । एमवचननो

अप्रत्युपेक्षणमविधि प्रत्युपेक्षणंवा उपेक्षाऽसंयमयोगेषुव्यापारणं संयमयोगेश्वव्यापारणंवा तथाऽपहृत्यसयमः अविधिनोच्चारादीनां परिष्ठापनतोयः तथाअप्र मार्जनाऽसंयम' पात्रादेरप्रमार्जनयाचेति मनोवाक्कायाऽसयमाखेतामकुशलानामुदीरणानीति असंयमे विपरीतः सयमः वेलंधरानुवेलंधरावासपर्वतस्व

मज्जणाअसंजमे मणअसंजमे वइअसंजमे कायअसंजमे सत्तरसविहेसंजमे प० तं० पुढवीकायसंजमे आउकायसजमे तेउकायसंजमे वाउकायसंजमे वणस्सइकायसंजमे बेइंदिअसंजमे तेइंदिअसंजमे चउरिंदियसजमे पंचिंदिअसंजमे अजीवकायसंजमे पेहासंजमे उपेहासंजमे अवहट्टुसंजमे अप्पमज्जणासंजमे मणसंजमे वइसंजमे कायसंजमे माणुसत्तरेणपव्वए सत्तरसएक्कवीसजोयणसए उड्ढं उच्चतेणं प० सव्वेविणंवेलंधरअणुवेलंधरणागराईणं आवसपव्वया सत्तरसएक्कवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० लवणेणंसमुद्दे

असयम १६। कायानोअसयम १७॥ सतरप्रकारेसंयमकह्यो तेकहेछे। पृथिवीकायनी राखवो तेपृथिवीकायसंजय १। एम अपकायसंजय २। तेजकायसंजम ३। वायुकायसंजम ४। वनस्पतिकाय सजम ५। वेइन्द्रियसजम ६। तेइन्द्रियसुंजम ७। चउरिंद्रियसंजम ८। पचेंद्रियसंजम ९। वस्त्रपात्रपूंजीनलीजे तेअजीवसजस १०। प्रेक्षासंजम ११। उपेक्षासंजम १२। अपहृत्यासजम १३। अप्रमार्जनसंजम १४। मनसजम १५। वयणसंजम १६। कायसंजम १७॥ जंबूद्वीपआखो धातकीखंडआखो पुष्करार्द्धअर्द्धो एमअढाईद्वीप रूपनगरने चउपखेरगढरूप माणुषोत्तरपर्वतछे तेहसतरसे एकवीसयोजन ऊंचो जचपणेकह्यो सगलेवेलंधर अनुवेलधर देवतानागकुमार भवनपति तेहना आवास जगतीथकी चिंहुपासेछे चालीससहस्र योजनलवणसमुद्र मांहिजई

रूपं चेत्समासागाथाभिरवगंतव्यमेताः । दसजोयणसहस्सा लवणेसिहाचक्कवालउरुंदा । सोलससहस्साउच्चा सहस्समेगंतुउगाढा । देसूणमद्धजोयण लवणसि
होवरिदगंतुकालदुगे । अतिरेगं२ परिवड्ढइ हायएवावि । अब्भंतरियंवेल धारंतिलवणोदहिस्सनागाण । वायालीयसहस्सा ओसत्तरिसहस्साबाहरियं । सट्ठीना
गसहस्सा धरंतिअरुणोदयसमुद्दस्स । वेलंधरआवासा लवणेयचउदिसिचउरो । पुव्वादि अणुक्कमसो गोथुभ १ दगभास २ यख ३ दगसीस ४ । गोथुभ १ सिव
ए २ सखे ३ मणोसिले ४ नागरायाणो । अणुवेलधरवासा लवणेविदिसासुसंठियाचउरो । कक्कोडे १ विज्जुप्पभे २ केलासरुणप्पभेचेव । कक्कोडयकद्दमए केल
सरुणप्पभेत्थ नागरायाणो । बायालीससहस्से गंतुउवहिंमिसव्वेवि । चत्तारिजोयणसए तीसेकोसंउग्गयाभूमी । सत्तरसजोयणसए इगवीसेऊसियासव्वे

सत्तरस जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसम रमणिज्जाओ भूमिभागाओ

तिहांवेलंधरदेवताना आवासपर्वतछेगोथुभ १ । एम दक्षिणादिकेदगभास २ । संख ३ । दगसीस ४ । तेहनाधणीगोथूभ १ शिव २ । भद्र ३ । मणसिल
अनुवेलंधरनापर्वतविदिशिएं ईशानकोणेकर्कोट १ । एमजअग्निकोणेविद्युतप्रभ २ । केलाश ३ । अरुणप्रभ ४ । एहनाधणीनागराजकर्कोट १ कर्दम २ के
लास ३ अरुणप्रभ ४ नाम लवणसमुद्रे मध्यभागे दशसहस्रयोजन चक्रवालओटलाकारे समपाणीछे तेहउपरि सोलसहस्रछगाऊ जचापाछे तिहां दिनप्र
ति एवेटकवेलवधे तेहनेधरेराखे तेवेलंधर वेलमाहिलेपारो जबूद्वीपभणी ४२ सहस्रबाहिरी धातकीखंडभणी ७२ सहस्रदेवता छसहस्रशिखे वाटेकरी पा
णीनांधता उपराठांमारेछे । वेलंधरअनुवेलधरनागराजना आवासपर्वत एकवीसयोजन अधिकसतरसेयोजन ऊंचाऊचपरेकह्या । जगतीथकी पंचाणूं यो
जनसहस्रजइये समुद्रसांहि तिहां दससहस्रजोजन चक्रवालसमुद्रपाणीछे तिहांथकी सोलसहस्रयोजन शिखारूपपाणी ऊचाआकाशेंगयाछे तोसमुद्रपाता

चारणाणंति जवाचारणानां विद्याचारणानांच तिर्यग् रुचकादि द्वीपगमनायेति तिगिछिकूट उत्पातपर्वतो यत्रागत्य मनुष्यक्षेत्रागमनायोत्पतति सचेतो ऽसख्याततमे ऽरुणोदयसमुद्रे दक्षिणतोद्विचत्वारिंशतं योजनसहस्राख्यतिक्रम्यभवति रुचकेंद्रोत्पातपर्वतस्त्वरुणोदयसमुद्रएव उत्तरत्यएवमेवभवतीति आ

सातिरेगाइं सत्तरसजोयण सहस्साइं उढ्ढंउप्पातित्ता ततोपच्छा चारणाणं तिरिअगती यावत्तती चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररस्रो तिगिंछिकूडेउप्पायपव्वए सत्तरसएक्कवीसाइं जोयणसयाइं उढ्ढंउच्चत्तेणं प० बलिस्सणं असुरिंदरुअगिंदे उप्पायपव्वए सत्तरसजोयणसयाइं सातिरेगाइं उढ्ढंउच्चत्तेणं प० सत्तरसविहेमरणे प०

समांहिजडो एकयोजनसहस्रऊंचो सोलहस्सब्बगोणसर्वमिलो १७ सहस्रयोजनसमुद्रकह्यो। एणीएरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे घणोरमणीकसमोभूमिभागछे तेहथकोभाभेरीवीकोसअधिकासत्तरयोजन सहस्रलगेऊंचोउत्पत्ति उडोनेएतलेलवणसमुद्रनी शिखालगेऊंचाउत्पतितिवारेपछें जंघाचारण विद्याचारणनी तिरछीगति पर्वततले तिरछिद्वीपे रुचिकवरद्वीपे एमनंदीश्वरद्वीपें जीवप्रतिमावादिवाजाई चमरेंद्रनो असुरकुमारदेवतानो इन्द्रतेहनो असुरनाजानो तिगिछकूट। उत्पातपर्वत जिहां चमरेंद्रादिकपातालथकी आवीनेमनुष्यक्षेत्रें आविवाभणीउत्पते उडेतेमाटे उत्पातपर्वतकहियें। तेअसंख्यातमे अरुणसमुद्रथकी दक्षिणदिसें ४२ सहस्रयोजनजईये तिहां पांमिएते तिगिछकूट। १७२१ योजन ऊंचोऊचपणेंकह्यो। बलीद्रनो असुरेंद्रनो वलीरुचकेंद्रनो उत्पातपर्वत सतरसे एकवीस ऊचोऊंचपणे तेद्वीपणि अरुणसमुद्र असख्यातमो तेहमांहि उत्तरदिसे ४२ सहस्रयोजन जइयेतिहारुचकेंद्र उत्पातपर्वतपामियेकह्यो। सतरप्रकारेमरणकह्यो तेकहेछे। क्षणक्षणथितिए आउखनोदल उछायते आवीचिमरण १। अवधिमर्यादातेणेकरी मरवोते अवधिमरण जिमनारकीनरका

वीईमरणेति आसमंताद्वीचयइव वीचयआयुर्दलिकविच्युतिलक्षणाअवस्था यस्मिं स्तदावीचि अथवायोवीचिर्विच्छेद स्तदभावादवीची दीर्घलंतुप्राकृतत्वात्तदे वभूतमरणंऽवीचिमरण प्रतिक्षणमायुर्द्रव्यविचेटनलक्षणं तथाऽवधिर्मर्यादा तेनमरण मवधिमरणं यानिहि नारकादिभवनिबंधनतया युःकर्मदलियान्यनुभूय म्रियते यदि पुनस्तान्येवानुभूय मरिष्यति तदातदवधिमरणमुच्यते तद्द्रव्यापेक्षया पुनस्तद्ग्रहणावधिं यावज्जीवस्य मृतत्वादिति तथा आयंतियमरणेत्ति आ त्यंतिकमरण यानिनारकाद्यायुष्कतया कर्मदलिकान्यनुभूय म्रियते मृतश्च नपुनस्तान्यनुभूय मरिष्यतीत्येवं यन्मरणम् तद्द्रव्यापेक्षया अत्यंतभावित्वा दात्यंति कमिति वलायमरणेत्ति संयमयोगेभ्यश्चलतां भग्नव्रतपरिणतीनां व्रतिनांमरणं बलान्मरणं। तथा वशेनेंद्रियविषयपारतंत्र्येण ऋताबाधितावशार्त्ताः स्नि ग्धदीपकलिकावलोकना कुलशभवन् तथा अंतर्मध्येमनसीत्यर्थः शल्यमिव शल्यमपराधपदयस्य सोतःशल्योभिमानादिभिरनालोचितातीचार स्तस्यमरणमंतः शल्यमरण तथायस्मिन् भवेतिर्यग् मनुष्यभवलक्षणेवर्त्तते जतुस्तद्भवयोग्य मेवायुर्बद्ध्वापुनः तत् क्षयेनम्रियमाणस्ययद्भवति तत्तद्भवमरणमेतच्चद्विर्बुद्ध् मनुष्याणामेव तद्देवनारकाणा तेषां तेष्वेवोत्पादाभावादिति तथाबालाइय बालाअविरता स्तेषां मरण बालमरण तथापंडिताः सर्वविरता स्तेषामरण पंडितमरण वालपंडि

आवीइमरणे ओहिमरणे आयंतियमरणे वलायमरणे वसट्टमरणे अंतोसल्लमरणे तब्भवमरणे बालमरणे पंडि

युभवने वधनकार्मदल अनुभवीमरेपर मारा नमरे २ आत्यंतिक मरण तेजेनरकनंपूरूं आउखूं भोगवीओवलीतो फरीने वीजेभवें तेहीजभावे ३ व्रतभांजीम रेते वलातमरण ४। पतंगादिकनी परीइन्द्रियनेवशें मरेतेवशार्तमरण ५। अपराधअणालोई मरेतेअंत.शल्यमरण ६। जेआउखूंभोगवी मरेवलीउपराठो वी जेभवेतेहीजआवे जिममनुष्यतिर्यंच पोतानूं आउखूं भोगवीकरी वलीवीजेभवेतेहीजमूं आउखूंपामे ७। अविरतीनूं मरणतेबालमरण ८। सर्वविरतीयतीन

तादेशविरतास्तेषांमरणं बालपंडितमरणं। तथाछद्मस्थमरणमेव केवलिमरणंतु प्रतीतं। वैहासमरणति विहायसि व्योमनिभवं वैहायसं विहायोभवत्त्वंच त स्य वृचशाखाद्युद्बन्धलेसति भवेत् तथागृद्धैः पक्षिविशेषै रुपलक्षणत्वाच्छकुनिकाशिवादिभिदश्च स्पृष्टं सर्शनंयस्मिन् स्तद्गृध्रस्पृष्टं अथवागृध्राणांभक्ष्यं पृष्टमुपलक्षण त्वाउदरादियत्र तद्गृध्रपृष्ट मिदंचकरिकरभादिशरीरमध्यपातादिनागृध्रादिभिरात्मानं भक्षयतो महासत्वस्य भवतीति भक्तस्ययावज्जीवं प्रत्याख्यान यस्मिन् तत्तथा इदंच त्रिविधाहारस्य चतुर्विधाहारस्यवा नियमरूपं सप्रतिकर्मंच भक्तपरिज्ञेतियदूहं। तथा इंग्यते प्रतिनियते देशएववेष्टते आसामनशनक्रि यामितीगिनी तया मरणमिंगिनीमरणं तच्चिचतुर्विधाहारस्य प्रत्याख्यातुर्निःप्रतिकर्मशरीरस्यें गितदेशाभ्यंतर वर्तिनएवेति तथा पादपस्येवोपगमनमवस्था नं यस्मिन् तत्पादपोपगमनं तदेव मरणमितिविग्रहः इदंच यथापादपः कथंचित् पतितः सममसममिति भाविभावयन्निश्चलमेवास्ते तथायोवर्त्तते तस्य

तमरणे बालपंडितमरणे छउमत्थमरणे केवलिमरणे वेहासमरणे गिद्धपिठमरणे भत्तपच्चक्खाणेमरणे इंगि णीमरणे पाउवगमणमरणे सुहुमसंपराएणंभगवं सुहुमसंपरायभावेवट्टमाणो सत्तरसकम्मपगडीओ णिबंध

मरणतेपण्डितमरण ९। श्रावकनूंमरणते बालपण्डितमरण१०। छद्मस्थपणेमरेते छद्मस्थमरण११। केवलीपणेमरेते केवलमरण१२। गलेफांसोलेईमरेतेविहा सकमरण १३। गृध्रपक्षी तेणे सियालियादिके आंपणोआत्माखवाडीमरेते गृध्रपुष्टमरण १४। भातपाणीपच्चखीमरेते भक्तप्रत्याख्यानमरण १५। चारेआहा रपच्चखी भूमिनियमीसंथारेमूये भवतोवेयावचनकरावेते इंगिनीमरण १६। पादपवृचनीशाखाछेदी भूमिएंपडेचलतोहालेनही तिमसंथारेकह्या पछीसा धुहाले बोलेनहीपासुपालटे नहीतेपादपमरण१७। सूक्ष्मसपराय इशमूंठाणूं सूक्ष्मसलोभनोअसंख्यातमोभाग किट्टिरूपजेहनेहुएते सूक्ष्मसंपरायभावेंवर्ततोथ

तन्नवतीति । तथासूक्ष्मसंपरायउपशमकः च्पकोवासूक्ष्मलोभकषय किट्ठिकाविदकी भगवान् पूज्यत्वात् सूक्ष्मसंपरायभावे वर्त्तमानस्तत्रैव गुणस्थानकेऽवस्थि
त नातीतागत सूक्ष्मसंपराय परिणामइत्यर्थः सप्तदशकर्म प्रकृतीर्निबध्नाति विंशत्युत्तरे बधप्रकृतिशते अन्यानबध्नातीत्यर्थः पूर्वतरे गुणस्थानकेषुबंधप्रतीत्या
न्यासांव्यवच्छिन्नत्वात्तथोक्तानां सप्तदशानां मध्यादेका सातप्रकृतिरुपशांतिमोहादिषु बधमश्रित्यनुयाति शेषा. षोडशैवैवव्यवच्छिद्यते । यदाह नाणं ५
तराय ५ दसगं दसणचत्तारि ४ उच्च १५ जसकित्ती १६ । एयासोलसपयडी सुहुमकसाय मिवोच्छिन्ना । सूक्ष्मसपरायात्परैनबध्नंतीत्यर्थः ॥ ज्ञानादीनि सप्त

ति तं० आभिणिणाणावरणे सुयनाणावरणे उहिनाणावरणे मणपज्जवनाणावरणे केवलिनाणावरणे चक्खु
दसणावरण अचक्खुदंसणावरणं उहीदंसणावरणं केवलदसणावरणं सायावेयणिज्जं जसकित्तिनामं उच्चागो
यं दाणंतरायं लाभंतरायं भोगंतरायं उवभोगतरायं वीरिअअंतरायं इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थे
गइयाणं नेरइआणं सत्तरपलीउवमाइं ठिई प० पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्त

को तथा च्पभावेवर्ततोथको एकसोवीसप्रकृतिबधछे तेमाहिली सतरकर्म प्रकृतिनोबंधपाडे तेकहेछे । आभिनिबोध ज्ञानावरण मतिज्ञानावरण १ । एमश्रु
तज्ञानावरण २ । अवधिज्ञानावरण ३ । मनपर्यवज्ञानावरण ४ । केवलज्ञानावरण ५ । चक्षुदसणावरण ६ । अचक्षुदसणावरण ७ । अवधिदसणावरण ८ ।
केवलदसणावरण ९ । सातावेदनी १० । यशकीर्तिनामकर्म ११ । उच्चैर्गोत्र १२ । दानातराय १३ । लाभातराय १४ । भोगांतराय १५ । उपभोगांतराय १६ ।
वीर्यांतराय १७ ॥ एणीएरत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो सतरपल्योपमआउखोकह्यो । पांचमीधूमप्रभा पृथिवीए केतलाएकनारकीनो उत्कृष्टोस

रससागरोवमाइं ठिई प० छठीए पुढवीए ऋत्थेगइयाणं जहन्नेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० ऋसुरकु
माराणं देवाणं ऋत्थेगइयाणं सत्तरसपलिऋवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु ऋत्थेगइयाणं देवाणं
सत्तरसपलिऋवमाइ ठिई प० महासुक्केकप्पेदेवाणं उक्कोसेणं सत्तरसागरोवमाइं ठिई प० सहस्सारेकप्पे दे
वाणं जहन्नेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सामाणं सुसमाणं महासामाणं पउमं महापउमं कु
मदं महाकुमदं नलिणं महानलिणं पोंडरीऋं महापोंडरीऋ सुक्कं महासुक्कं सीहं सीहकंतं सीहविऋं भा
विऋ विमाण देवत्ताए उववन्ना तेसिण देवाणं उक्कोसेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा सत्तरस
हि ऋद्धमासेहिं ऋाणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं सत्तरसहिं वाससहस्से

तरसागरोपमऋाउखोकह्यो । छठीतमापृथिवीए केतलाएकनारकीनो जघन्यो सतरसागरोपमऋाउखोकह्यो । ऋसुरकुमारदेवतानो केतलाएकनो सतरप
ल्योपमऋाउखूकह्यो । सौधर्मईशानदेवलोके केतलाएकदेवतानो सतरपल्योपमऋाउखोकह्यो महाशुक्रदेवलोके सातमेदेवतानोउत्कृष्टो सतरसागरोपमऋाउ
खोकह्यो । सहस्रार ऋाठमेदेवलोके देवताने जघन्यो सतरसागरोपम ऋाउखोकह्यो । सातमेदेवलोके जेदेवता सामायिक १ । सुसामायिक २ । महासामा
यिक ३ । पदम ४ । महापदम ५ । कुमद ६ । महाकुमद ७ । नलिन ८ । महानलिन ९ । पौंडरीक १० । महापौंडरीक ११ । शुक्र १२ । महाशुक्र १३ ।
सिंह १४ सिंहकात १५ । सिंहविद १६ । भाविक १७॥ एणेविमानेदेवतापणे उपनाछे । तेहदेवतानो उत्कृष्टोसतर सागरोपमऋाउखोकह्यो । जेहदेवतासतरे

दशभिमानानां नामानीति ॥ १७ ॥ अथाष्टादशस्थानकं मिहचाष्टौसूत्राणि स्थितिसूत्रेभ्यो ऽर्वाक्सुगमानिच नवरंबभेत्ति ब्रह्मचर्यं तथौदारिकका
म भोगान् मनुष्यतिर्यग् सबधिविषयान् तथादिव्यकामभोगान् देवसंबधिनइत्यर्थः तथासखुड्डगवियत्ताणति सहक्षुद्रकैर्व्यंतैश्च येक्षुद्रकव्यक्ता तेषां तत्क्षुद्र

हि आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिआजीवा जेसत्तरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतकरिस्संति ॥ १७ ॥ अठारसविहेबंभे प० त०। उरालिएकामभोगे णेवसयं मणेणं सेवइ नोविअन्नंमणेण सेवावेइ मणेणसेवंतंविअन्नं नसमणुजाणाइ उरालिएकामभोगे नेवसय वायाएसेवइ नेविअन्नवायापसेवावेइ वायाएसेवंतवि अन्नंनसमणुजाणाइ उरालिएकामभोगे नेवसयकाएणंसेवइ नोविअन्नंकाएण सेवावेइ काएणं सेवंतवि अन्नंनसमणुजाणाइ दिव्वेकामभोगे नेव

अर्द्धमासे पखवाडे स्वासोस्वासघणोले अचोले नीचोस्वासमेले तेहदेवताने सतरर्षसहस्रे आहारनोअर्थउपजे। केतलाएकभव्यजीव जेसतरभवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनोअतकरिस्ये मोक्षजास्ये ॥ इतिसतरमूंठाणूंसम्मत्तं ॥ १७ ॥ हिवेअठारमूंठाणोलिखियेछे। अठारभेदेब्रह्मव्रतकह्योतिकहेछे। उदारिककामभोग तेमनुष्यनास्त्रीअनेतिर्यंचनीस्त्रीतेसाथेपचेंद्रियानाविषयशब्दरूपतेकामघ्राणरस स्पर्शतेभोगमनेकरीपोतेसवेनही १। मनेकरीअनेरानेपिणसेवाडेनही २। मनेकरी अनेराएंमैथुनसेवतांप्रति अनुभावनामकरे ३। औदारिक कामभोगनपोतेवचनेकरीसेवे ४। ननिश्चयेंअनेरानेप्रतिवचनेकरीवसोडे ५ वचनेकरी अनेराने प्रतिसेवतांथका अनुमोदनानकरे ६। औदारिक कामभोगपोतेकायाएंनकरे ७। अनेराने कायाएंनसेवाडे ८। कायाएंकरीअ

कावयसाश्रुतेनवा व्यक्ता: व्यक्तास्तु येवय:श्रुताभ्यांपरिणता: स्थानानिपरिहारा: सेव्यतेसचाश्रयवस्तूनि व्रतषट्कं म... ...रात्रिभोजनविरतिश्च कायषट्क पृथिवीकायादि अकल्पोऽलपनीस्य पिंडशय्या वस्त्रपात्र रूपपदार्थ: गृहिभाजनं स्थाल्यादि: पल्यकंखट्वादि निषद्या स्त्रियासहासनं। स्नानंशरीरक्षालन

सयंमणेणंसेवइ नोविअन्नंमनेणंसेववाइ मणेणंसेवंतंविअन्नंनसमणुजाणइ दिव्वेकामभोगे नेवसयंवायाएसेवइ नोविअन्नंवायाएसेवावेइ वायाएसेवंतंवि अन्नंनसमणुजाणाइ दिव्वेकामभोगे नेवसयंकाएणंसेवइ नोविअन्नंकाएणंसेवावेइ काएणंसेवंतंविअन्नंनसमणुजाणाइ अरहतोणंअरिठनेमिस्स अठारससमणसाहस्सीउ उक्कोसया समणसंपयाहोत्था समणेणं भगवयामहावीरेणं समणाणंविग्गंथाणं सखुड्डयवियत्ताणं अठारस ठाणा प० तं० वयछक्कं कायछक्कं अकप्पोगिहिभाणयं पलियकनिसेज्जाय सिणाणं सोभवज्जणं आयारस्सणंभ

नेरा प्रतिसेवतांथकां अनुमोदनाकरे ९। देवांगनासंबंधी कामभोगस्वयंपोतेसेवेनही १०। अनेरानेमनेकरी सेवाडेनही ११। मनेंसेवता आगिलाने पिण अनुमोदेनही १२ दिव्येतेकहतां कामभोग देवांगनासंबंधी वचनेसेवेनही १३ अनेरानेवचनेकरी सेवावेनही १४ वचनेसेवतां प्रतिबीजाने अनुमोदेनही १५ देवांगनासबंधो कामभोगकायाएंसेवेनही १६ अनेरापाहिकायाएंसेवावेनही १७ कायएंसेवतांथकां अनुमोदेनही १८ अरिहंत अरिष्टनेमी बावीसमातीर्थंकने अठारश्रमणसहस्रनी उत्कृष्टीसाधूनी संपदाहुई। श्रमणनेतपस्वीने निग्रथने बाह्याभ्यंतर गांठीरहितने क्षुद्रव्यक्तसाधेजेह तेसक्षुद्रव्यक्ताएतले क्षुद्रबोलिकव्यक्त तेवयकरी वडीतयाश्रुतेकरीप्रसिद्ध तेहने अठारस्थानकपरिहारसेवाश्रयविशेष कांइकछांडवो कांइकआदरवो तेकहेछे। व्रतषट्क पंचमहाव्रत छठोरात्रि

शोभावर्जन प्रतीत तत्राचारस्य प्रथमांगस्य सचूलिकाकस्य चूडासमन्वितस्य तस्य पिंडेषणाद्याः पंचचूलाः द्वितीयश्रुतस्कंधात्मिकाः सचनवब्रह्मचर्याभिधाना ध्ययनात्मक प्रथमश्रुतस्कंध रूपम्तस्यैवचेद पदप्रमाणं नचूलानां यदाह । नवबंभचेरमईओ अट्ठारसपयसहस्सीओ । हवइसपचचूला बहुबहुतरओपयग्गेणाति यत्र सचूलिकाकस्येति विशेषणं तत्तस्य चूलिकासत्ता प्रतिपादनार्थं नतु पदप्रमाणाभिधानार्थं यतोवाचि नंदीटीकाकृता अट्ठारसपयसहस्साणि पुणपढमसुय स्खंधस्सनवबंभचेरमइयस्स पमाणं विवित्तथ्याणीय सुत्ताणि गुरुवए सवोतेसि अत्थोजाणियव्वोत्ति पदसहस्राणीह यत्रार्थोपलब्धि स्तत्पद पदाग्रेति पदपरिमाणे नेति तथा भंभिति ब्राह्मीभादिदेवस्य भगवतो दुहिता ब्राह्मीवा संस्कृतादिभेदा वाणी तामाश्रितैनैव यादर्शिताचरलेखनप्रक्रिया साब्राह्मीलिपि रतस्तस्या

गवतो सचूलिआगस्स अट्ठारस पयसहस्साइं पयग्गेणं प० बंभीएणंलिवीए अट्ठारसविहलेखविहाणे प०तं०

भोजनविरति एमकायपट्क पांचप्रावरअनेकछठो उत्तमकाय एम १२ अकल्पो अकल्पनीयपिंडशय्यावस्त्रपात्ररूप पदार्थ १३ गृहस्थनेभाजन १४ । पल्यंकोमां चादिक १५ । निषद्यासिंहासन १६ । स्नानशरीरधोइवो १७ । शोभावर्जन शरीरश्रृंगाररचना १८ । आचारांग प्रथमअंगने पहिले श्रुतस्कंधे नवअध्ययनछे तहना पूज्यनांबीजे श्रुतस्कंधे पांचचूलिकाछे तेपांचचूलिकामांही १६ अध्ययन अवताराछे तो तेपांचचूलिकासहितना अठारपदसहस्रजेतले अर्थनीसमा प्ति तेहपदकहीए । पदाग्रेसर्वसंख्याएकह्या आचारांगे प्रथमश्रुतस्कंधे ब्रह्मचर्याभिधान नवअध्ययन तेहनीसंख्या १८ सहस्रपद परचूलिकाछे । पांचबीजेश्रु तस्कंधे १८ सहस्रपदमांहिनहीं उक्तंच । नवबंभचेरमईओ अट्ठारसपयसहस्सीओ । हवइयपचचूला बहुबहुतरओपयग्गेणाति । अनेंसूत्रमांहि चूलिकाग्रहीछे ते एकसूत्रनासबंधीमाटे परतेहनोप्रमाण १८ पदमांहिनलेवो । ब्राह्मीश्रीआदिनाथ भगवंतनीपुत्री तेहने अठार[illegible] लिखविधान लिखिवानाभेदकह्या ।

ब्राह्मालिपेर्णमित्यलंकारे लेखोल्लेखनं तस्या।वचानमदा लखावधान प्रश्नस तद्यथा एतत्स्वरूपं नष्टमिति ... तिष्ठायल्लोके यथास्ति यथावाना स्ति अथवास्याद्वादाभिप्रायस्तत्तदेवास्तिनास्तिचेत्येवं प्रवदतीत्यस्तिनास्तिप्रवादं तच्चतुर्थपूर्वंतस्य। तथा धूमप्र...पंचमी। अष्टादशोत्तर मष्टादशयोजनसह स्राधिकमित्यर्थः बाहुल्येनपिंडेन पोसासाढेत्यादि रेवंयोजना आषाढमासेसकृदिति सकृदेकदा कर्कसंक्र...वित्यर्थः उत्कर्षेणोत्कर्षतोऽष्टादशमुहूर्त्तोदिवस

बंभी जवणालिया दोसऊरिया वरोहिया खरसाविया पहाराइया उच्चत्तरिया अक्खरपुट्ठिया भोगवयत्ता वेयणतिया णिण्हइया अंकलिवि गणिअलिवि गंधव्वलिवि आदंसलिवि माहेसरलिवि दामिलिवि बोलिंदि लिवि अत्थिनत्थिप्पवायस्सणं पुव्वस्सअठारसवत्थू प० धूमप्पभाएणं पुढवीए अठारसुत्तरंजोयण सयसह स्सं बाहल्लेणं प० पोसासाढेसुणं मासेसु सइ उक्कोसेणं अठारसमुहुत्तादिवसेभवइ ... कोसेणं अठारस

तेकहेछे। ब्राह्मीसंस्कृतादि भेदेंकरी लिपिअक्षरस्थापना देखाडी तेब्राह्मीलिपि १। जवनलिपि २। दोषऊपरिका ३। वरोहियाप्रभृति णिन्हइयापर्यंत नामविशेषजाणिवा ११। अंकलिपि १२ गणितलिपि १३। गांधर्वलिपि १४। आदर्शलिपि १५। माहेश्वरलिपि १६। दामलिपि १७। बोलिंदिलिपि १८। आस्तिनास्तिलोएसासएविअसासएवि एहवो स्याद्वादाभिप्रायआस्तिनास्ति प्रकार्षपणे प्रवदेकहे तेआस्तिनास्तिप्रवादचउथूंपूर्व तेहना १८ वस्तु अधि कारविशेषकह्या। धूमप्रभापांचमीपृथिवी अष्टादशसहस्रअधिक एकलाखयोजन बाहुल्यपणे जाडपणेकही। पोसाआसाढमासइक्ति एकदाउत्कृष्टपणेअ ठारमुहुर्तीयोदिवसहुए एतलेकर्क संक्रातिएं आसाढीपुनीमे अठारमुहूर्तीयोदिवसहुए सतित्ति एकवार मकरसंक्रांति अठारमुहूर्ती रात्रिहुई। एणीए रत्नप्र

मुत्ततारात्तीन्नवइ इमीसेणंरयणप्पन्नाए पुढवीए ऋत्थेगइयाणं नेरइयाणं ऋठारसपलिउवमाइं ठिई प०
छठीए पुढवीए ऋत्थेगइयाणं नेरइयाणं ऋठारससागरोवमाइं ठिई प० ऋसुरकुमाराण देवाणं ऋत्थेगइया
णं ऋठारसपलिउवमाइ ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु ऋत्थेगइयाणं देवाणं ऋठारसपलिउवमाइं ठिई
प० सहस्सारेकप्पेसु देवाणं उक्कोसेणं ऋठारससागरोवमाइं ठिई प० ऋाणएकप्पेसु देवाणं ऋत्थेगइयाण
जहन्नेणं ऋठारससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा कालं सुकालं महाकालं ऋंजणं रिठिसालं समाणं दुमं म
हादुमं विसालं सुसाल पउमं पउमगुम्मं कुमुदं कुमुदगुम्मं नलिणं नलिणगुम्मं पुण्डरी[illegible] पुण्डरीयगुम्मं सह
रसारवडिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणं देवाणं ऋठारससागरोवमाइ ठिई प० तेण देवाणं ऋठा

भा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो अढारपमल्योपम आउखोकह्यो छठीतमा पृथिवीयें केतलाएकनारकीनो अढारसागरोपम आउखोकह्यो। असुरकु
मारदेवतनो केतलाएकनो अढारपल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्मईशानकल्पे केतलाएकदेवतानो अढारपल्योपम आउखोकह्यो। सहस्रारआठमेदेवलोके
केतलाएकनोजवन्यो अढारसागरोपम आउखोकह्यो। आठमेदेवलोके जेदेवता काल १। सुकाल २। महाकाल ३। अंजन ४। रिष्ट ५। साल ६। समान
७। द्रुम ८। महाद्रुम ९। विशाल १०। सुसाल ११। पद्म १२। पद्मगुल्म १३। कुमुद १४। कुमुदगुल्म १५। नलिन १६। नलिनगुल्म १७। पौंडरीक
१८। पौंडरीकगुल्म १९। सहस्रारावतंसक २०॥ एस वीसविमाने देवतापणेंउपनाछे। तेहदेवतानो अठारस[illegible]रोपम आउखोकह्यो। तेहदेवता अठारअ

भवति षन्निंशद्घटिकाइत्यर्थः तथापौषमासे सकृदिति मकरसंक्रांतौ रात्रिरेवंविधेति कालसुकालादीनि प्रतिविमानमनामानि ॥ १८ ॥
अथैकोनविंशतितमस्थानं तत्र स्थितिसूत्रेभ्यः पंचसूत्राणि सुगमानिच नवरं ज्ञातानि दृष्टांता स्तत्प्रतिपादका अध्ययनानि षष्ठांगप्रथमश्रुतस्कंधवर्त्तीनि उक्खि

रसेहिं अट्ठमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंति तेसिणं देवाणं अट्ठारसवास सहस्से हिं आहारट्ठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जेअट्ठारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ १८ ॥ एकूणवीसणायज्झयणा प० तं० । उक्खित्तणाए संघाडे अंडेकुम्मेअ सेलए तुंबेअ रोहिणी मल्ली मागंदी चंदमातिअ दावद्दवे उदगणाए मंडुक्के ते

हमासे पखवाडे स्वासोस्वासले घणीले उंचोस्वासले नीचोस्वासमूके तेहदेवतनो अठारहवर्षसहस्से आहारनो अर्थउपजे। केतलेएकभव्यजीव अठारभवनेआंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनोअंतकरिस्ये मोक्षजास्ये ॥ इति अठारमूंठाणूं समाप्तम् ॥ १८ ॥ हिवेइगुणवीसनो अधिकारलिखियेछे। ज्ञाताछठोअंग तेहने प्रथमश्रुतस्कंधे १९ ज्ञायरूपनीतेमार्ग सूचकअध्यनकह्या। तेकहेछे यथाक्रमे। उत्क्षिप्तज्ञाय जेहाथीएं पगउपाड्यो पगहेठिसशलोराख्यो तेहमेघकुमारहुयो १। धनावहसेठीनो संघाडकज्ञाय २। त्रीजोमोरडीनाईडानो ३। चउथोकाछवानो ४। पांचमो सेलकाचार्यनो ५। छठोउछडानो ६ सातमो रोहिणीलघुवहूनो ७। आठमोमल्लिकुमारीनो ८। माकंदीसुतजिनरक्षतेजिनपालक ९। दशमोचंद्रमानो १०। इग्यारमोदावदवनामवृक्षनो ११। बारमोउदकचौथोजितशत्रु सुबुद्धिमंत्रीनो १२। मंडुकडेडकानो नंदमणीयारनो १३ चौदमोतेतलीपुत्रमुहुतानो १४। पनरमोनंदिफलनो १५। सोलमो अमरकंका

त्त्यादिसार्द्धरूपकद्वयमिदंच षष्ठांगाधिगमावसेयमिति । तथा जंबुद्दीवेणं इत्यादीभावनात्वयः स्वस्थानादुपरियोजन शतंतपतीऽधश्चाष्टादश शतानि । तच्च समभूतलेऽष्टौभवंति दशचापरविदेहजगतीप्रत्यासन्नदेशे जंबूद्वीपापरविदेहेहि निम्नीभवच्चेत्रमंतिमविजयद्वयस्यदेशे अधोलोकदेशेसहस्रमिति द्वीपांतरसूर्या स्तूर्द्धंशतमधोष्टशतानि चेत्रस्यसमत्वादिति तथा शुक्रमूत्रेनक्खत्ताइति विभक्तिपरिणामान्नचत्रैः समंसहचारचरणं चरित्वाविधेयेइति तथाकलाञोत्ति पं

तलीइञ नंदिफले ञवरकंका ञाइस्से सुंसमाइञ ञवरेञ पोंडरीएणाए एकूणवीसमे जंबूद्दीवेणंदीवे सूरिञा उक्कोसेणं एगूणवीसजोयणसयाइं उद्धंमहातवयइ सुक्कोणंमहग्गहेञवरेणं उइञसमणे एकूणवीसंणरकत्ताइंस मंचारंचरित्ता ञवरेणं ञत्थमणं उवागच्छइ जंबूद्दीवस्सणंदीवस्स कलाउ एगूणवीसंछेञणाउं पं० एगूणवीसं

राजधानीनो द्रुपदीनो १६ । सतरमो आकीर्णघोडानो १७ । अठारमो सुसामाधनावह सेठीपुत्रीनो १८ । अपरअनेरो पुडरीक कुडरीकनो न्यायउगणीसमो १९ जबूद्वीपनेविषे सूर्यउत्कृष्टो इगुणवीस योजणसत उपरिहेठि मिलीनेतपे एतले पोतानाविमानथी एकसोयोजन उंचोतपे प्रकासे अनेसमेभूतलेगइ आठसे योजन नीचोतपे वलीपश्चिममहाविदेहे जगतीपासे छेहली विजयछे जिहां तिहां मेरुनी अपेचा एक सहस्रयोजन भुईउंडीछे तिहा प्रकाशे एतले एक सो आठसे दससे सर्वमिली उगणीससय योजनलगे उपरिहेठि प्रकाशे । शुक्रमहाग्रह पश्चिमदिसें ऊगीथको एगणवीस नचत्रसाथे चारचरीने भ्रमणकरीने पश्चिमदिसें अस्तमनप्रति पामे जंबूद्वीपदीपनीकला उगणीसछेदना भागरूपएतले भरथचेत्र ५२६ योजन अने ऊपरि छकलातेह एकयोजनना १९ छेदनाभा

चसएछव्वीसे छव्वकलाविथ्थडंभरहवासमित्यादिषु जंबूद्दीपगणितेषु याःकलाउच्यंते तायोजनस्यैकोनविंशतिभा... एको नविंशतिभागरूपा इतिभावः आगारमज्झेवसित्तत्ति अगारंगेह अस्त्येकोनविंशति चिरकालंराज्यपरिपालनतः आमर्यादायदीचां वसिलाउ...ला तत्रावासंविधायेति अध्येष्यप्रव्रजिताः शेषास्तुपंच कुमारभावएवेत्याह । वीरंअरिठ्ठनेमि पासंमल्लिचवासपुज्जच । एएमोत्तूणजिणे अवसेसाआसिराय...त्ति ॥ १९ ॥ अथविंशति तमस्था

तित्थयरा अगारवासमज्झेवसित्ता मुंडेभवित्ताणं आगाराओअणगारिअंपव्वइआ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणवीसपलिओवमाइं ठिई प० छठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणवीससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणवीसपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एगूणवीसंपलिओवमाइं ठिई प० आणयकप्पे उक्कोसेणं एगू

गरूप एतलेभाग करी एहवी छकला प्रमाकही । श्रीमहावीर १ । नेमिनाथ २ । पार्श्वनाथ ३ । मल्लिनाथ ४ । वासुपूज्य ५ । एपांचतीर्थंकरविना वीजा उगणीसतीर्थंकर ग्टहस्थाश्रमेंवसीने मुंडपणूंपाम्या द्रव्यमुंडलोचादिकभावमुंड तेकषायत्याग ग्टहस्थाश्रमथकी अनगारपणाथकी प्रव्रज्याधरनथी जेहनेते अनगारीतेहपणूंपाम्या । एणी एरत्नप्रभापहिली पृथिवीनेविषे केतला एकनारकीनो उगणीसपल्योपम आउखोकह्यो । छठ्ठीतमा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो उगणीसपल्योपम आउखोकह्यो । असुरकुरमार देवतानो केतलाएकनो उगणीसपल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्मईशानकल्पें केतलाएक देवतानोउगणीस पल्योपम आउखोकह्यो । आनतनवमेकल्पेउत्कृष्टो उगणीससागरोपम आउखोकह्यो । प्राणतदशमे कल्पे केतला एकदेवतानो

णवीससागरोवमाइं ठिई प० पाणएकप्पे ऋत्थेगइयाणं देवाणं जहन्नेणं एगूणवीससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा ऋाणतं पाणतं णतं विणतं पणं सुसिरं इंदं इंदकंत इंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसि णदेवाणं उक्कोसेणं एगूणवीससागरोवमाइ ठिई प० तेणंद्देवा एगूणवीसाए ऋद्धमासाणं ऋाणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससतिवा तेसिण देवाणं एगूणवीसाए वाससहस्सेहिं ऋाहारठेसमुप्पज्जइ सत्तेगइया नवसिद्धिया जीवा जेएगूणवीसाए नवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणं ऋंतकरिस्सति ॥ १९ ॥ वीसंऋसमाहिठाणा प० तं० । देवदवचारिऋा

जघन्यो उगणीससारोपम ऋाउखोकह्यो । जेदेवता ऋानत १ । प्राणत २ । नत ३ । विनत ४ । पणक ५ । सुषिर ६ । इन्द ७ । इन्द्रकांत ८ । इन्द्रोत्तरावतंसक ९ । विमाने देवतापणेउपनाछे । तेहदेवतानोउत्कृष्टो उगणीससागरोपम ऋाउखोकह्यो । तेहदेवतानो उगणीसे ऋर्द्धमासे पखवाडे स्वासोस्वाले घणोले जचोले नीचोमूंके तेहदेवतानो उगणीसवर्षसहस्रेगए ऋाहारनीइच्छाउपजे केतला एकभव्यजीव उगणीसभवने ऋांतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदु:खना ऋतकरीसे मोघजासे ॥ इति उगणीसमूंठाणूं सम्पत्तम् ॥ १९ ॥ हिवे वीसनो ऋधिकारलिखियेछे । वीस ऋसमाधिस्थानकह्या । तेसूचित्तठामिराखिवू मोक्षमार्गेरहिवो तेसमाधि नहीसमाधि तेऋधिको । तेहनास्थानकभेद तेऋसमाधिस्थान तेकहेछे ऋनुक्रमे । द्रवद्रवउतावलो चालतो व्यग्रचित्तपणेघणा जीवनेहणे तेमाटे संयमने ऋबाधाउपजावे ऋनेपडेतो ऋपणने ऋसमाधिउपजावे १ । ऋणपुज्येचालेऋर्थ

ने किंचिल्लिख्यते । तत्रस्थितिसूत्रेभ्यो ऽर्वाक्सप्तसूत्राणि तत्रसमाधानं समाधिश्चेतसः स्वास्थ्यंमोक्षमार्गेवस्थानमि[illegible]समाधिस्तस्याः स्थानान्याश्र यभेदा पर्याया वा असमाधिस्थानानि तत्र दवदवचारित्ति योहिद्रुतंचरतिगच्छति सोऽनुकरणशब्दतोदवदवचारीत्युच्यते वापीत्युत्तरासमाधिस्थानापेक्षया समुच्चयार्था भवतीतिसिद्धम् । सचद्रुत २ संयमात्मनिरपेक्षेवृजन्नात्मानं प्रपतनादिभिरसमाधौ योजयति ग यांश्चसत्वान् घ्नन्ऽसमाधौयोजयति सत्ववधजनि तेनचकर्मणापरलोकेप्यात्मानमसमाधौ योजयत्यतोद्रुतगंतृत्व मसमाधिकारणत्वादसमाधिक स्थान मेवमन्यत्रापियथायोगमवसेय १ तथा अप्रमार्जितचारी २ दुप्रमार्जितचारी ३ स्थाननिषीदनत्वग्वर्त्तनादिष्वात्मादिविराधनालभते तथा अतिरिक्ता अतिप्रजाणाशय्यावसतिरासनानिच पीठकादीनि यस्यसंति सोतिरि क्त शय्यासनिकः सचातिरिक्तशय्या सनिकरः सचातिरिक्तायां शय्यायां घंघशलादिरूपाया मन्येपिकोटिकादय आवसयंति इतितैः सहाधिकरणत्वादसमा धिस्थानमेव मन्यत्रापि यथायोगमवसेय तथाअप्रमार्जितचारी दुप्रमार्जितचारीच सभवादात्मापरेचासमाधौ योजयतीति एवमासनाधिक्येपि वोच्यमिति ४

विन्नवइ ऋपमज्जिऋचारिऋाविन्नवइ दुप्पमज्जियचारिऋाविन्नवइ ऋतिरित्तसज्जासे[illegible]ए रातिणिऋप

पूर्वनीपरी २ । भूंडीपरीपूजीचालेमर्यादाथकी अधिकशय्यापाटीपाटला आसनादिकसेवे३ । अधिकउपाध्ययराखे तिहा योगीसंन्यासी आवीउतरे तेसाथेवाद करवोपडे आत्मानेसमाधिउपजे ४ । रात्निकपरिभाषी आचार्यादिकाएसाम्होबोले तथापराभवे एमकरतो आत्माने असमाधिउपजे ५ । थविरतेगुर्वादिकतेह्ने उववातीमारे तेस्थविरोपघाती ६ । एमभूतएकेंद्रियादि तेहनेहणेतेभूतोपघाती ७ । चणचणक्रोधकरेतेसंज्वलन ८ । अनंतक्रोधांधथुए तेक्रोधन ९ । परपूठिपा रकोअवर्णवादेबोलेतेपुष्टिमांस १० । अभीक्ष्णमवधारयिता वलीवलीशंकितअर्थने नि.शंकितथकोकहे तथापारकागुणखमीसकेनहीनवांअधिकरणकलहतथा

राजनीतिपरीभाषी आचार्यादिषु परिभवकारी सचात्मानमप्यांशासमाधी योजयत्येव ५ तथास्थविरा आचार्यादिगुरवः तानाचारदोषेण शीलदोषेणच ज्ञा नादिभिर्वावहतीत्येवशीलः सएवचेतिस्थविरोपघातिकः ६ तथाभूतान्येकेंद्रियांस्ताननर्थंत उपहतीति भूतोपघातिकः ७ तथासज्वलतीति सज्वलनः प्रतिचणं रोषणः ८ तथाक्रोधनः सकृत्क्रुद्धोऽत्यंतक्रुद्धोभवति ९ तथापृष्टिमांसिकः पराङ्मुखस्य परस्यावर्णवादकारी १० अभिक्खण २ ओहारयित्तति अभीक्ष्णमभीक्ष्ण मवधारयिताशंकितस्याप्यर्थस्य निशंकितस्याप्यर्थस्य निःशंकितस्यैवमेवायमित्यर्थवक्ता अथवा अवहारियितापरगुणाना मवहारकारी यथाअदासादिकमपिप रभणति दासस्त्वचोरस्त्वमित्यादि ११ तथा अधिकरणानां कलहानां नवानां चोत्पादयति १२ पौराणाणंति पुरातनानां कलहाना चमितव्यमुपशमितना चमितत्वेनोपशातानां पुनरुदीरयिताभवति १३ तथासरजस्कपाणिपादो यःसचेतनादिरजोगुडितेनहस्तेन दीयमानां ... ति तथायोऽस्थंडिलादेः स्थंडिलादौ संक्रामनपादौप्रमार्ष्टि अथवायस्तथाविधकारणे सचित्तादिपृथिव्या व्यवधानं विना आनंतरितायां मासनादिकरोति ससरजस्कपाणिपादइति १४ त

रिन्नासी थेरोवघाइए भूतोवघाइए संजलणे कोहणे पिट्ठिमंसए अभिक्खणं ओहारइत्ताभवइ णवाणंअधिक रणाणं अणुप्पणं उप्पाएत्ताभवइ पोराणाणंअधिकरणाणं खामिअविउ सविअाणपुणोदीरेत्ताभवइ ससर

गाडलादिक तेपूर्वेंअनुत्पन्नछे उपनानथी तेहउपजावेछे १२। पुरातनजूनानेकलहाने खमाविवापणे उपशम्या छे तेहनेपुनरपिवली उदारकहुएदारे १३। सरजस्कपाणिपाद सचित्तरजखरडाएंहाथेंभिक्षदेताले अथवासचित्त अचित्त स्थंडिलजेपगनपूजे १४। अकालेसाध्यायकरे पहिले प्रहरेअने पाछिले प्रह रें कालिकसूत्र उत्तराध्ययनादिकने अणेचौदप्रहरलगे उत्कालिक दशवै कालिकनभणे १५। अकालेभणतादेवता ... छलप्रेय। कलहकारे १६। शब्दकोरे

था अकालेस्वाध्यायकारकः प्रतीतः १५ तथाकलहकरः कलहकरोहेतुभूतकर्त्तव्यकारी १६ तथाशब्दकर रात्रौ [illegible] स्वाध्यायादिकारको गृहस्थ भाषाभाषकोवा १७। तथाझंझाकरोत्येव येनगणस्य भेदोभवति तत्तत्कारी येनच गणस्यमनोदुःखसमुत्पद्यतेतोझं १८ तथासूरप्रमाणभोजी सूर्योदयादस्तम यं यावदशनपानाद्यभ्यवहारी १९ एषणाअसमितश्चापि अनेषणांनैव परिहति प्रेरितश्चासौसाधुभिः कलहा[illegible] तथाअनेषणीय मपरिहरन् जीवोकोपराधो वर्त्तते एवचात्मपरयोरसमाधिकरणा दसमाधिस्थानमिदं विंशतितममिति २० तथाघनोदधयः सप्तमपृथिव्यो प्रतिष्ठानभूताः सामानिकाः इन्द्रसमानर्द्ध यः साहस्यः विंशतिसहस्राणि बन्धतोबन्धसमयादारभ्यबन्धस्थितिः स्थितिबन्धइत्यर्थः प्रत्याख्याननामकंपूर्वंनवम सातादीनिचैकविंशतिविमानानीति॥

रूपाणिपाए अकालसज्झायकारए आविभवइ कलहकरे सद्दकरे झंझकरे सूरप्पमाणभोई एसणासमिते आ विभवइ मुणिसुव्वएणअरहा वीसधणूइं उड्ढउच्चत्तेणंहोत्था सव्वेविअणंघणोदही वीसंजो[illegible]सहस्साइं बाह ल्लेणं प० पाणयस्सण देविंदस्सदेवरण्णोवीसं सामाणिअसाहस्सीओ प० णपुंसयेअणिज्ज[illegible]णं कम्मस्सवीसं

रात्रिएमाटे सादेसज्झायकरेगृहस्थनेपरी उपडोबोले १७। झंझकार जेणेकरी गच्छनोभेदहोय एहवोकरे १८। सूरप्रमाणभोजी सूर्यआथमे तिहांलगेन जिमे १९। एषणाऽसमित असूझतो भातपाणीले बीजोयतो इसीषदेतां कलहकरे २०। एहवीसअसमाधिस्थानकह्या २०। मुनिसुव्रत वीसमातीर्थंकर वीसधनुष उचाउचपणेथया। सातमेनरकपृथिवीने प्रतिष्ठानभूत आधारभूत घनोदधि कठिनसलाभूतपाणी तेघनोदधि। वीसयोजनसहस्र जाडपणेकह्यो। प्राणतदेव लोकदशमो तेहनोइन्द्र तेहनादेवतानो इन्द्र तेदेवेंद्र तेहना देवतानो राजा तेहनावीसहस्रसामानिक देवताकह्या। नपुंसकवेदनीयकर्म अर्थात् नपुसककर्म

सागरोवमोकोडाकोडीउ बंधउ बंधठिई प० पञ्चक्खाणपुव्वस्सवीसंवत्थू उस्सप्पिणिमंडले वीसंसागरोवम कोडाकोडीउकालो प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण वीसंपलिउवमाइं ठिई प० बठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण वीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाण वीसपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं वीसंपलिउवमाइं ठिई प० पाणतेकप्पेसु देवाणं उक्कोसेणं वीससारोवमाइ ठिई प० आरणेकप्पेसु देवाणं जहन्नेणं वीससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सायं विसायं सिद्धत्थं उप्पलं भित्तिलं तिगिच्छं दिसा सोवत्थियं पलं रुइलं पुप्फं सुपु

नी वीससागरोपम कोडीबधसमयथकीमाडी बंधनी स्थितिकही। प्रत्याख्यान नवमापूर्वनावीसवत्थु अधिकारविशेषकह्या। उत्सर्पिणी अवसर्पिणीमंडलनेविषे कालचक्रनेविषे वीसकोडीकालकह्यो। एतलेदशकोडाकोडी सागरोपम उत्सर्पिणीकाल दसकोडाकोडी सागरोपम अवसर्पिणीकालकह्यो। एणी एरत्नप्रभापहिली पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो वीसपल्योपम आउखोकह्यो। छट्ठीतमा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो वीससागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार देवतानो केतलाएकनो वीसपल्योपमआउखोकह्यो सौधर्मईशान देवलोके केतलाएक देवतेनो वीसपल्योपम आउखोकह्यो प्राणतदशमेकल्पे देवनोउत्कृष्टो वीससागरोपम आउखोकह्यो। आरणइग्यारमेकल्पे देवनो जघन्योवीससागरोपमआउखोकह्यो दशमेकल्पे जेदेवता। सात १। विसात २ सिद्धार्थ ३। उत्पल ४। भित्तिल ५। तिगिच्छा ६। दिसा ७। सौवस्तिक ८। पल ९। रुचिर १०। पुष्प ११। [illegible] १२। पुष्पावर्त १३। पुष्पप्रभ १४।

॥ २० ॥ अथैकविंशतितमस्थानकं तत्रचत्वारिसूत्राणि स्थितिसुत्रैर्विनासुगमनानिच नवरंशबलंकर्बुरं चारित्रंयः क्रियाविशेषैर्भवति तत्रशबला स्त्रियोगात्साधवोपिते एवंतत्रहस्तकर्म वेदविकारविशेष कुर्वन्उपलक्षणत्वात्कारयन्वा शबलोभवत्येकः १ एवंमैथुनं प्रतिसेवनानि क्रमादिभिस्त्रिभिः प्रकारैः २

प्फं पुप्फावत्तं पुप्फपत्तं पुप्फकंतं पुप्फवस्सं पुप्फलेसं पुप्फज्झयं पुप्फसिंगं पुप्फसिद्धं पुप्फुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं वीससागरोवमाइं प० तेणंदेवा वीसाए अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससतिवा तेसिणं देवाणं वीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुरकाण मंतंकरिस्संति ॥ २० ॥ एक्कवीसंसबला पन्नता तंजहा ।

पुष्पकांत १५ । पुष्पवर्ण १६ । पुष्पलेश १७ । पुष्पध्वज १८ । पुष्पशृङ्ग १९ । पुष्पसिद्ध २० । पुष्पोत्तरावतंसक २१ । एहविमाने देवतापणे उपनाछे तेह देवतानो उत्कृष्टो वीससागरोपम आउखोकह्यो । तेदेवता वीसअर्द्धमासे पखवाडे स्वासोस्वास घणोले उंचोस्वासले नीचोस्वासमूंके तेहदेवतानो वीससहस्रवर्षे आहारनो अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीव जेवीसभवनेआंतरे सीझस्ये बुझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अतकरिस्ये मोक्षजास्ये ॥ इतिवीसमूं ठाणूं सम्पत्तम् ॥

॥ २० ॥ हिवे एकवीसमो अधिकार लिखियेछे ॥ एकवीस सबलाकह्या जेणेकरी शबल चारित्र करवुरकीजे तेशबला एकवीस सबलाकरतोथको साधुपणो शबलकह्यो तेकहेछे । हस्तकर्ममुष्टिजापकरतो शबलकह्यो । १ । मैथुनप्रतें सेवतोथको शबल २ । रात्रिभोजन करतोथको ३ । आधाक

तथारात्रिभोजनं दिवाग्टहीतं दिवाभुक्तमित्यादिभिश्चतु र्भिभंगक रतिक्रमादिभिस्त्रभुंजानः ३ आधाकर्म ४ सागारिकः स्थानदातातत्पिंडं ५ उद्देशिकं क्री
तमाहृत्यदीयमानभुजानः उपलक्षणत्वात् पामिच्चेच्छादानिसृष्टग्रहणमपीहद्रष्टव्यमिति ६ यावत्कारणोपात्तपदान्येवमर्थतोऽवगन्तव्यानि अभीक्ष्णंप्रत्याख्यायाऽ
शनादिभुजान ७ अन्तः षण्णांमासानामेकतोगणाद्गणमन्यंसंक्रामन् ८ अंतर्मासस्यत्रीनुदकलेपान् कुर्वन् उदकलेपश्च नाभिप्रमाणजलावगाहनमिति ९ अंत
र्मासस्यत्रीणिमायास्थानानिस्थानमितिभेदः १० राजपिण्डंभुजानः ११ आकुट्याप्राणातिपातंकुर्वन् उपेत्यपृथिव्यादिकं हिंसन्नित्यर्थः १२ आकुट्यामृषावादंव

हत्थकम्मकरेमाणे सबले मेहुणंपडिसेवमाणे सबले राइभोयणंभुंजमाणे सबले आहाकम्मंभुंजमाणे सबले
सागारियपिंडं भुंजमाणे सबले उद्देसियकीयं आहट्टदिज्जमाणं भुंजमाणे सबले [illegible]णं अभिक्खणं
पडियाइक्खेत्ताणं भुंजमाणे सबले अंतोछण्हं मासाणंगणाओ गणसंकममाणे सबले अंतोमासस्स तओदगले
वेकरेमाणेसबले अंतोमासस्सतओमाईठाणेसेवमाणे सबले रायपिंडंभुंजमाणेसबले आउट्टियाए पाणाइवायं

र्मीभोजन भुजतीथको ४ । जेहनो उपासरोहुयो तेगृहस्थाना घरनोपिंड आहारभुंजतोथको ५ । उद्देसकतेजे साधुने निमित्ते उद्देशी भातपाणिकरे तेउद्दश
कतथा क्रीतवेंचातो आण्यो आहृतसमाहृतआण्यो आहारते तोशबल ६ । अभीक्ष्णं वलीवली अशनादि [illegible]पञ्चक्खीने जीमतो ७ । छेहले छमासमाहि गछ
पालटयको शबल ८ । एकमासमांहि त्रिणिदगलेप करतो नाभिप्रमाण जलावगाहन तेदगलेप ९ । मासमां [illegible] त्रिणिठाण सेवतोथको १० । राजपिंडभुज
तो ११ । आकुटीएप्राणातिपातकरतो पृथिव्यादिकनेहणतो १२ । आकुटि एमृषावाद वदतो १३ । आकुटीए [illegible]दत्तादान प्रतिलेतोको १४ । आकुटीए

दन् १३ अदत्तादानंटहन् १४ आकुट्यवानंतर्हितायांपृथिव्यास्थानं वानषेधिवाचेत् यत्कायोत्सर्गस्वाध्यायभूमि [illegible] १५ एवमाकुट्या सस्निग्धसरज स्कायांपृथिव्या विस्तारवत्या सचित्तवत्यांशिलायां लेष्टौवा कोलावासेदारुणि कोलाघुणा: तेषामावास: १६ अ[illegible]स्मिश्च तथाप्रकारे सप्राणिसबीजादौ स्थाना

करेमाणेसबले आउट्टियाए मुसावायंवदमाणे सबले आउट्टिआएअदिन्ना [illegible]गिरहमाणे सबले आउट्टिआए अणंतरहिआए पुढवीएठाणं वानिसिहियंवावेलिमाणेसबले एवंआउट्टियाचित्तमताए पुढवीए एवंआउट्टि या चित्तमताए सलाएकुलावासंतिवादारुएठाणं वासहियंवा चेतेमाणेसबले जीवपइठिएसपाणेसबीएसहरीए सउत्तंगेपणंगदगमट्टीमक्कडासंत्ताणए तहप्पगारठाणं वासिज्जंवानिसहियंवा चेतेमाणे सबले आउट्टियाए मूलभोअणवा कंदभोयणंवा तयाभोयणवा पवालभोयणवा पुप्फभोयणंवा फलभोय[illegible] हरियभोयणंवा

सचित्त पृथिवीऊपरि बैसतो अथवा सूवतो या स्वाध्याकरतो १५। सचित्तशिला तथा पाषाण पृथिवी सचित्तउपरि घुणसहितकाष्ठ ऊपरिबैसतो सूवतो अथवा स्वाध्याय प्रमुखकरतो १६। जीवप्रतिष्ठित एहवी सप्राण बीजप्रमुखउपरि बैसतोथको एकेंद्रिय बेइन्द्रिय तेंद्रिय चउरिंद्रय इत्यादिका जीवविराधना करतोअथवा उपरिसूतो सज्झायकरतो १७। आकुटीएकरी मूलभोजन अथवा कंदभोजन त्वचाकहिये वृक्षनीछाल तेहनोभोजन प्रवालभोजन पुष्पभोजन वलीफलभोजन हरियभोजन करतोथको १८। एकवर्षमाहि दसदगलेपकरतो सबल १९। वर्षमाहि दसमायाठाण सेवतोथको २०। अभीक्ष्णम् वलीवली शाती

दिक्कुर्वन् १७ आकुट्यामूलकंदादिभुंजान: १८ अंत: संवत्सरस्यदशोदकलेपान् कुर्वन् १९ तथांत:संवत्सरस्यदशमायास्थानानिच २० तथाअभीक्ष्णपौन:पुन्येनश
तोदकलक्षण यद्विकटवततेनव्यापारितोव्याप्तोय: पाणिर्हस्त: सतथा तेअशनं प्रगृह्यभुंजान: शबलाइत्येकविंशतितम: २१ तथाहि निवृत्तिबादरस्यापूर्वकार
णस्याष्टमगुणस्थानकवर्त्तिनइत्यर्थ: णवाक्यालंकारे चीणसप्तक मनंतानुबंधिचतुष्टयदर्शनत्रयलक्षणं यस्यसतथा तस्यमोहनीयस्यकर्मण: एकविंशतिकर्मांशा अ
प्रत्याख्यानादिकषाय द्वादशनोकषायनवकरूपाउत्तरप्रकृतय: सत्कर्मसत्तावस्थंकर्मप्रज्ञप्तमिति तथाश्रीवत्सम् श्रीदाम काड माल्यकक्षिं चापीनतं आरणावतं

भुंजमाणेसबले अंतोसंवच्छरस्स दसदगलेवकरेमाणेसबले अंतोसंवच्छरस्सदसमाईठाणाइं सेवमाणेसबले
अभिक्खणं सीतोदयवेयडवग्घारियपाणिणा असणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा पडिगाहेत्ताभुंजमाणे
सबले णियट्टिबादरस्सणं खवितसत्तयस्स मोहणिज्जस्स कम्मस्स एक्कवीसकम्मंसासंतकम्मा प० त० अपच्च
क्खाणकसाएकोहे अपच्चक्खाणकसाएमाणे अपच्चक्खाणकसाएलोभे पच्चक्खाणावरणकसाएकोहे पच्चक्खाणाव

दकलक्षण जेविकटजल तेणेकरी वग्घारीयतिव्यापास्यो तथा व्याप्योभीनो पाणिहाथ जेहनो तेणेकरि असनपाणि खादिमसादिम पडिगाहेले तथा सचित्त
पाणीभीने हाथेंकरि जीमतोशबल २१ निवृत्तिबादरअपूर्वकरण आठमे तिहांवर्ततानें तथा खपाव्योछेजेणेसातकचार अनंतानुबंधी कषाय अने त्रिणिदंसण
मोहनीएम ७ प्रकृति जेणेखपावीछे तेहने मोहनीयना कर्मना एकवीस कर्मना अंशउत्तरकर्म प्रकृति सतकर्मत्ति सत्तकर्मसत्तावस्था एकह्याते कहेछे।
अप्रत्याख्यान कषायक्रोध १। अप्रत्याख्यानमान २। अप्रत्याख्यानमाया ३। अप्रत्याख्यानलोभ ४। प्रत्याख्यानावरणकषायक्रोध ५। प्रत्याख्यानावर

रणकसाएमाणे पच्चक्खाणावरणकसाएमाया पच्चक्खाणावरणकसाएलोभे संजलणकसाएकोहे संजलणकसाए माणे संजलणकसाएमाया संजलणकसाएलोभे इत्थिवेदे पुंवेदे णपुंसगवेदे हासे अरति रति भय सोक दुगंछा एक्कमेक्काएणंउस्सप्पिणी पंचमछठाओसमाओ एक्कवीस एक्कवीस वाससहस्साइंकालेणं प० तं० दूसमा दूसम दूसमाएगमे गाएणंउस्सप्पिणीए पढमबितिआओसमाओ एकवीस एकवीससहस्साइंकालेणं प० तं० दुसम दुसमाए दूसमायए इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एकवीस पलिओवमाइ

ए कषायमान ६। प्रत्याख्यानावरण कषायमाया ७। प्रत्याख्यानावरण कषायलोभ ८। सज्वलचौथो कषायक्रोध ९। संज्वलकषायमान १०। सज्वलनकषायमाया ११। सज्वलनकषायलोभ १२। स्त्रीवेद १३। पुरुषवेद १४। नपुसकवेद १५। हास्य १६। अरति १७। रति १८ ... १९। शोक २०। दुगंछा २१। एकेकीए अवसर्पिणीएं पडते अरे पाचमोअरो अने छठोअरो समयकाल एवेनो एकवीस एकवीसवर्ष सहस्त्रप्रमाणे कालेकह्यो तेकहेछे। दुखमअरो पांचमो २१ हजारवर्षनो दुखम दुखमआरो बिलवासीनो छठो २१ वर्षसहस्त्रनो एकेको उत्सर्पिणीएं चडेते आरेपहिलो आरो बिलवासीनो अने बीजो आरो मनुष्यनो समयकाल एकवीस एकवीसवर्ष सहस्त्रप्रमाणे कालेकह्यो तेकहेछे। उत्सर्पिणीनो दुखम दुखमापहिलो आरो २१ वर्षसहस्त्रनो दुखमा बीजो आरो २१ वर्षसहस्त्रनो। दुखमाबीजो आरो २१ सहस्त्रवर्ष। एणीए रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो एकवीसपल्योपम आउखोकह्यो। छठीतमापृथिवीए केतलाएक नारकीनो एकवीस सागरोपम आउखोकह्यो। असरकुमार देवतानो केतलाएकनो एकवीस पल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशा

ठिई प० छठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एकवीससागरोवमाइं ठिई प० असुकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगवीस पलिउवमाइ ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाण एक्कवीसंपलि उवमाइ ठिई प० आरणेसुकप्पे देवाणं उक्कोसेणंए क्कवीसंसागरोवमाइ ठिई प० अच्चुतेकप्पे देवाणं जहन्ने णं एक्कवीस सागरो वमाइ ठिई प० जेदेवा सिरिवच्छ सिरिदामं कण्ह मल्लकिट्टं चावोन्नतं आरणावडिं सगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं एक्कवीस सागरोवमाइं ठिई प० तेणदेवा एक्कवीसाए अ द्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणदेवा एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं आ हारट्ठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेएक्कवीसाए भवग्गहणेहि सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मु

नकल्पे कीतलाएक देवतानी एगवीस पल्योपम आउखोकह्यो । आरण इग्यारमेकल्पे देवतानो उत्कृष्टो एकवीस सागरोपम आउखोकह्यो । अच्युते बारमेक ल्पे देवतानो जघन्यो एकवीस सागरोपम आउखोकह्यो । इग्यारमे देवलोके जेदेवता श्रीवत्स १ श्रीदाम २ [illegible]ड ३ माल्यकष्ठ ४ चापोन्नत ५ आरणावतंसक ६ एहछ विमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवतानो एकवीस सागरोपम आउखोकह्यो । तेहदेवतानो एकवीसे अर्द्धमासे पखवाडे स्वासोस्वास घणोले उंचोले नीचोमूंके तेहदेवताने एकवीसवर्षसहस्रे आहारनो अर्थउपजे । कीतलाएक भव्यजीव जेएकवीस भवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरीस्ये

सकं चेतिपट्विमाननामानीति ॥ २१ ॥ द्वाविंशतितमतुस्थानं प्रसिद्धार्थमेव नवरं सूत्राणिषट्स्थितेर [illegible] तत्रमार्गच्यवननिर्ज्जरार्थं परिषह्यंते इति परीषहाः दिगिछंति बुभुक्षासैवपरीषहो दिगिंछापरीषहइति सहनचास्यमर्यादानुल्लघनेन एवमन्यत्रापि १ [illegible]था पिपासातृट् २ शीतोष्णेप्रतीते ४ तथादं शाश्चमशकाश्च दंशमशकाउभयाप्येते चतुरिन्द्रियामहत्वामहत्वकृतश्चैषांविशेषो ऽथवा दंशोदशनभक्षणमित [illegible] तप्रधानामशका दंशमशकाः एतेचयूकामत्कु णमत्कोटकमक्षिकादीना मुपलक्षणमिति ५ तथाचेलानांवस्त्राणांवासगधनवीनाऽवदात सुप्रमाणानां सर्वेषांवाअभावः अचेलत्वमित्यर्थः ६ अरतिर्मानसोवि

च्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ २१ ॥ बावीसपरीसहा प० तं० । दिगंछापरीसहे पिवासापरीसहे सीतपरीसहे उसिणपरीसहे दंसमसगपरीसहे अचेलप[illegible] अरइपरीसहे

मोक्षजास्ये इतिएकवीसमूं ठाणूंसम्मत्तं ॥ २१ ॥ हिवे बावीसमो समवाय लिखियेछे । बावीस परीसह परिसामस्तपणे निर्जराने अर्थेसहिवो खमवो तेपरीसहकह्या । तेकहेछे । दिगछा परीसह दिगछाशब्द देशीभाषण क्षुधा तेहनो सहिवो साधुमर्यादानो अनुल्लंघिवो तेदिगंछापरीसह १ । एम पिपासा तृषापरीसह २ । शीतठाढ तेहनोपरीसह ३ । उष्णतापनोपरीसह ४ । डास मसा तथा जू माकणनो परीसहवो ५ । आंचलवस्त्रनो अभावनोपरी सह ६ । अरतिमानसी विकारपरीसह ७ । स्त्रीनोपरीसह ८ । चर्याग्रामादिकनेविपे अनियत विहारनोपरीसह ९ । सोपद्रवस्वाध्यायपरीसह १० । अम

कार: ७ स्त्रीप्रतीता ८ चर्या ग्रामादिष्वनियतविहारित्वं ९ नैषेधिकीसोपद्रवेतराचस्वाध्यायभूमि: १० शय्यामनोज्ञा ऽमनोज्ञवसति: संस्तारकोवा ११ आक्रो शोदुर्वचन १२ बधोयष्ट्यादिताडनं १३ याच्ञाभिचरण तथाविधे प्रयोजनेमार्गणंवा १४ अलाभरोगौप्रतीतौ १६ तृणस्पर्श: संस्तारकाभावे तृणेषुशयानस्य १७ ज ल्ल:शरीरवस्त्रादिमल: १८ सत्कारपुरस्कारौ चवस्त्रादि पूजनाभ्युत्थानादिसंपादनेन २ सत्कारेणवापुरस्करण सन्मानन सत्कारपुरस्कार: १९ ज्ञानंसामान्येनम त्यादि क्वचिदज्ञानमितिश्रूयते ३० दर्शनसम्यग्दर्शनसहनचास्यक्रियादिवादिना विवर्जनत: श्रमणेपिनिश्चलचित्ततयाधारण २१ प्रज्ञास्वयविमर्शपूर्वको वस्तुप रिच्छेदोमतिज्ञानविशेषइति २२ दृष्टिवादोद्वादशागःसचपंचधा परिकर्म १ सूत्र २ पूर्वगत ३ प्रथमानुयोग ४ चूलिका ५ भेदात्तत्रदृष्टिवादस्य द्वितीयेप्रस्थाने

इत्थीपरीसहे चरियापरीसहे निसीहियापरीसहे सिज्जापरीसहे अक्कोसपरीसहे वहपरी[illegible]यणापरीसहे अलाभपरीसहे रोगपरीसहे तणफासपरीसहे जल्लपरीसहे सक्कारपुरक्कारपरीसहे पन्नापरीसहे अन्नाणपरी सहे दंसणपरीसहे दिट्ठिवायस्सणंबावीससुत्ताइं छिन्नछेयणाइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए बावीससुत्ताइं

नोज्ञ तथामनोज्ञवसती उपाश्रय तथा संथारानो परीसह ११। आक्रोश वा दुर्वचनपरीसह १२। वधयष्ट्यादिकें ताडवो तेहनोपरीसह १३। याचनाभिचानो मांगिवो तेपरीसह १४। आहारादिकनो अप्राप्ति तेपरीसह १५। रोगमदवाड तेहनोपरीसह १६। संथा[illegible]संबधी तृणतेनोपरीसह १७। जल्लशरीर वस्त्रा दिकनोमल तेहनो परीसह १८। सत्कार तेवस्त्रादिकनो पूजाजठी उभोथाइवो तेणेकरी पुरस्कार सन्मान ते[illegible]नोपरीसह १९। प्रज्ञातेमतिज्ञाननोभेद तेह नोपरीसह २०। ज्ञानमतिश्रुत तेनहो तेअज्ञानपरीसह २१। दसणतेसम्यक्त तेहथकी जेचलवो तेदसणपरीसह [illegible]। दृष्टिवाद बारमो अंगतेहना पांचभेद

द्वाविंशतिःसूत्राणि तत्रसर्वद्रव्यद्रव्यपर्याय नयाद्यर्थस्तवनासूत्राणि छिन्नच्छेदनयाश्रयाइंति प्रवृत्तोनयः सूत्रंछिन्नंच्छे [illegible] नेच्छति सछिन्नच्छेदनयो यथा धम्मोमगल मुक्कठमित्यादिश्लोकः सूत्रार्थतः च्छेदनस्थितो नद्वितीयादिश्लोकानपेक्ष्यते इत्येव यानिसूत्राणि छिन्नछेदनयवति [illegible] नि च्छिन्नछेदनयिकानि तानिचस्वसमयाया: जिनमताश्रिताया' सूत्राणांपरिपाटिः पद्धतिस्तस्या' स्वसमयसूत्रपरिपाट्याभवन्ति तयावाभवतीति तया [illegible] छिन्नच्छेयणपियाइ त्ति इत्ययोनय. सूत्रमच्छिन्नच्छे देनच्छतिसोच्छिन्नच्छेदनयोयथा ॥ धम्मोमगलमुक्कठमित्यादिश्लोको ऽर्थतोद्वितीयादिश्लोकमापेक्षमाण इत्येवयान्यच्छेदनयवति तान्यच्छिन्नच्छेदनयिकानिता निचाजीविकसूत्रपरिपाट्या गोशालकमतानुसारिणोऽभिधीयन्ते यस्मात्तेसर्वच्याख्मकप्रतिपक्षसूत्रपद्धत्यां तयावाभवन्ति अक्षररचनाविभागस्थितानप्यर्थतोन्यो

अच्छिन्नछेअणइयाइं आजीवियसुत्तपरिवाडीए बावीसंसुत्ताइं तिणकणइयाइं तेरा[illegible]सुत्तपरिवाडीए

परिकर्म १। सूत्र २। पूर्वगत ३। प्रथमानुयोग ४। चूलिका ५। तिहा बीजेभेद दृष्टिवादना बावीससूत्र सर्वद्रव्यपर्याय सूत्रवाचकी सूत्रकहिये छिन्नछेयनया इतिनयक सूत्रतेछिन्न कहताछेद्याखंड्याछेदवेकरीने तेछिन्नछेदनय कहिये जिमधम्मोमंगलमुक्किठ इत्यादिश्लोक सूत्रार्थथकी छेदवेकरीरह्योबीजाश्लोकनी अपे चा वाछानकरे एहवा जेसूत्र छिन्नछेदनयवत तेछिन्नछेदनयकानि कहिये स्वसमय जिनमत आश्रितभूत परिपाटी सूत्रपद्धतिने विषेछे। बावीससूत्र अ छिन्नछेदनयकछे नयकहतां सूत्रछेदवेकरी छिन्ननयी खडितनयी तेअछिन्न छेदनय कहिये जिमधम्मोमगल इत्यादिश्लोक अर्थथकी बीजाश्लोकनी वाछाकरी तेबावीससूत्र अछिन्नछेदनयक आजीविक गोसालमत प्रतिबद्धसूत्र परिपाटी सूत्रपद्धतिनेविषेछे। बावीससूत्र त्रिकनयवत तेहगोसालकमतानुसारीय

न्यापेचमाणानिभवन्तीति भावना तथातिकनइयाइन्ति नयत्रिकाभिप्रायाश्चिन्त्यन्ते यानिनयद्विकत्रिकनयिकानीत्युच्यन्ते त्रैराशिकसूत्रपाट्या इहत्रैराशिकागो शालकमतानुसारिणोऽभिधीयते यस्मात्तं सर्वं त्र्यात्मकमिच्छन्ति तद्यथा जीवोऽजीवोजीवाजीवश्चेति तथालोकोऽलोको लोकालोकश्चेत्यादि नयचिंतायामपि ते त्रिविधनयमिच्छति तद्यथा द्रव्यास्तिकः पर्यायास्तिक. उभयास्तिकश्चेति एतदेवनयत्रयमाश्रित्य त्रिकनयिकानीत्युक्तमिति तथाचउक्कनइयाइंति नयचतुष्का भिप्रायात्तेचिंत्यंतेयानितानि चतुष्कनयिकानि नयचतुष्कचैव नैगमनयोद्विविधः सामान्यग्राही विशेषग्राहीच तत्रयः सामान्यग्राहीससंग्रहेंऽतर्भूतो विशेषग्रा हीतुव्यवहारे तदेवसंग्रहव्यवहार ऋजुसूत्रा. शब्दादिनयचैक एवेति चत्वारोनयाइति स्वसमयेत्यादि तथैवेतितथा पुद्गलानामखादीनांपरिणामोधर्मः पुद्गलप रिणामः सच पंचवर्णगंधद्वयरसपंचस्पर्शाष्टकभेदाद्विंशतिधा तथागुरुलघुरगुरुलघुरिति भेदद्वयक्षेपाद्द्वाविंशतिः तत्रगुरुलघुद्रव्य [illegible]तिर्यग्गामिवाय्वादि अगुरुल

बावीससुत्ताइं चउक्कणइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए बावीसइविहे पोग्गलपरिणामे प० तं० कालवण्णप रिणामे नीलवण्णपरिणामे लोहियवण्णपरिणामे हालिद्दवण्णपरिणामे सुक्किलवण्णपरिणामे सुब्भिगंधपरि

सूत्रपरिपाटीएछे। जिम नयचिंतानेविषे त्रिणिराशी द्रव्यास्तिक १ पर्यायास्तिक २ उभयास्तिक ३ तथा जीव १ अजीव २ जीवाजीव ३ लोक १ अलोक २ लोकालोक ३ एहवा ३ छे। राशीना बावीससूत्रछे । बावीससूत्र चतुष्कनयवतकह्या नैगमनय १ संग्रह २ व्यवहार ३ सूत्र ४ एम ४ नयसूत्रक २२ सूत्र स्वसमय जैनमतानुसारी सूत्रपरिपाटीनेविषेछे। बावीसभेदें पुद्गलपरिणाम जेपरमाणवादिक तेहने परिणा[illegible]धर्म तेपुद्गलपरिणामकह्या तेकहेछे। कालव र्णकरी परिणतव्यात तेकालवर्णपरिणाम १। एमजनीलवर्ण परिणाम २। लोहितरक्तवर्ण परिणाम ३। हालि[illegible]पीतवर्णपरिणाम ४। शुक्लश्वेतवर्ण परिणा

णामे दुब्भिगंधपरिणामे तित्तरसपरिणामे कडुयरसपरिणामे कसायरसपरिणामे अंबिलरसपरिणामे महुररसपरिणामे कक्खडफासपरिणामे मउयफासपरिणामे गुरुफासपरिणामे लहुफासपरिणामे सीतफासपरिणामे उसिणफासपरिणामे णिद्धफासपरिणामे लुक्खफासपरिणामे अगुरुलहुपरिणामे गुरुलहुपरिणामे इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बावीसपलिओवमाइं ठिई प० छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीस सागरोवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं बावीसपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु

म ५ सुरभिसुगंध परिणाम ६ । दुरभि दुर्गंधपरिणाम ७ । तीखेरसे परिणत तीखोरस परिणाम ८ । कटुकरस परिणाम ९ । कषायरस परिणाम १० । अबिलरस परिणाम ११ । मधुररस परिणाम १२ । कर्कशस्पर्श कारी परिणतपुद्गल ते कर्कशस्पर्शपरिणाम १३ । मृदुस्पर्शपरिणाम १४ । गुरुस्पर्श परिणाम १५ । लघुस्पर्शपरिणाम १६ । शीतस्पर्श परिणाम १७ । उष्णस्पर्श परिणाम १८ । स्निग्धस्पर्श परिणाम १९ । रूक्षस्पर्श परिणाम २० । अगुरुलघुस्पर्श परिण तद्रव्य तेस्थिरसिद्धिक्षेत्र घटाकाररक्षामनुष्यचेत आश्रित जोतिषविमान २१ गुरुलघुस्पर्श परिणतद्रव्य तेतिर्यग्गामि जोतिषविमान जाणिवो तथा वायुघा दिक २२ एणीयेरत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो बावीसपल्योपम आउखो कह्यो छठीतमापृथिवीयेंउत्कृष्टो बावीससागरोपम पाउखोकह्यो हेठेसातम पृथिवीयें केतालाएकनारकीनो जघन्यो बावीससागरोपम आउखोकह्यो असुरकुमारकेतलाएक देवतानो बावीसपल्योपम आउखोकह्यो सौधर्म ईशानदेवलोके

घुर्यः स्थिरसिद्धचैत्यघण्टाकारव्यवस्थितो ज्योतिष्कविमानादीनि । तथामहितादीनिषट्विमामानि ॥ २२ ॥ त्रयोविंशतिस्थानक सुगममेवनवरं

कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं बावीसं पलिओवमाइ ठिई प० अच्चुत्ते कप्पेदेवाणं बावीसंसागरोवमाइं ठिई प० हेठिमहेठिमगेवेज्जगाणं देवाणं जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा महियं विसूहियं विमल पन्नास वणमालं अच्चुतवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइ ठिई प० तेणं देवाणं बावीसाएअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं बावीसं वाससहस्सेहिं आहारट्ठेसमुप्पज्जइ सतेगइया भवसिद्धियाजीवा [illegible] बावीसभवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्सति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाणं अंतंकरिस्सति ॥ २२ ॥

केतलाएकदेवतानी बावीसपल्योपम आउखोकह्यो। अच्युतबारमेलोकेदेवतानोउत्कृष्टोबावीस सागरोपमआउखोकह्यो नवग्रैवेयकमांहिसगलाहेठिलोग्रैवेयक एतलेपहिलेग्रैवेयकना देवतानोजघन्य बावीससागरोपम आउखोकह्यो । बारमेदेवलोके जेदेवता महित १ । विश्रुत २ । विमल ३ । प्रभास ४ । वनमाल ५ अच्युतावतसक ६ । एहछविमाने देवतापणे उपनाछे । तेहदेवतानोउत्कृष्टो बावीससागरोपम स्थितिकही। तेहदेवताबावीस अर्द्धमासेपखवाडे स्वासो स्वास घर्णाले नीचोमूके तेहदेवतानो बावीससहस्रवर्षे आहारनो अर्थउपजे । केतलाएकभव्यजीवजे बावीस भवनेआंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये ॥ इति बावीसमो ठाणूसम्मत्तम् ॥ २२ ॥ हिवेतेवीसमोसमवायलिखियेछे[illegible] तेवीससूत्रकृतांगबीजूंअंग तेहना अध्य

तेवीसंसुयगडज्झयणा प० तं० । समए वेतालिए उवसग्गपरिन्ना त्थीपरिन्ना नरयविभत्ती महावीरथुई कुसीलपरिभासिए विरिए धम्मे समाही मग्गे समोसरिए आहत्तहिए गथे जमईए गाथा पुंडरीए किरियाठाणा आहारपरिन्ना पच्चक्खाणकिरिआ अणगारसुय अद्दइज्ज णालंदइज्जं जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे इमीसेणं उसप्पिणीए तेवीसाएजिणाणं सूरुग्गमणमुहुत्तंसि केवलवरनाणदंसणेसमुप्पन्ने जंबूद्दीवेणंदीवे इमीसेणंउसप्पिणीए तेवीसं तित्थकरा पुव्वभवे एक्कारसंगिणो होत्था तं० अजितसंभवअभिणंदणसुमई जाव पासोवद्धमाणोय उसभेणं अरहा कोसलिए चोद्दसपुव्वी होत्था जंबूद्दीवेणंदीवे इमीसे उसप्पिणीए तेवीसं

यनकह्या तेकहेछे । समय १ । वैतालिक २ । उपसर्गपरिज्ञा ३ । स्त्रीपरिज्ञा ४ । नरकविभक्ति ५ महावीरस्तुति ६ । कुशीलपरिभाषा ७ । वीर्याध्ययन ८ धर्माध्ययन ९ । समाधिनाम १० । मतनाम ११ । समोसरण १२ । याथातथ्यमान १३ । ग्रन्थनाम १४ । जमक १५ । गाथा १६ । एहसोल अध्ययन प्रथम श्रुतस्कंधे बीजेश्रुतस्कंधे सात अध्ययनछे तेकहेछे । पुडरीक १७ । क्रियाठाणो १८ । आहारपरिज्ञा १९ । प्रत्याख्यानक्रिया २० । अणगारश्रुत २१ । आर्द्रकुमार २२ । नालंदीनो २३ । जंबूद्वीपनेविषे भरतक्षेत्रने विषेएणी अवसर्पिणीने । आदिनाथथकीमांडि पार्श्वनाथलगी तेवीस जिनने तीर्थंकरने सूर्यनेउदय मुहूर्ते एतले प्रभाति केवलवर प्रधानज्ञान दर्शन उपनोज्ञानतेविशेषावबोध दर्शनतेसामान्यावबोध गाथाचात्र तेवीसाएनाणा उप्पन्नजिणवराणपुव्वण्हे ; वीरस्सपच्छिमन्हा पमाणपत्ताइचरिमरइ ॥ १ ॥ जंबूद्वीप नामद्वीप इण अवसर्पिणीये आदिनाथविना बीजातेवीसतीर्थंकर पहिलेभवे एकादशांगीहुया इग्यारअ

॥

तित्थंकरा पुव्वे मंडलिरायाणो होत्था तं० अजितसंभव अभिणंदण जावपासोवद्धमाणोय उसभेणं अरहा कोसलिए पुव्वभवे चक्कवट्टी होत्था इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाण तेवीस सागरोवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाएणं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाण तेवीसं पलिओवमाइ ठिई प० सोहम्मीसाणाणं देवाणं अत्थेगइयाणं तेवीस पलिओवमाइ ठिई प० हेट्ठिम मज्झिमगेविज्जाणं देवाणं जहन्नेणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई प० जे देवा हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं तेवीसं सागरोवमाइं

गनापारगामीहुया । तेकहेछे । अजित १। सभव २। अभिनदन ३ । सुमति ४। जावत्शब्दें पार्श्वनाथ छेहडे वर्द्धमानखामीलगें ऋषभनाथआदिअरिहन्त कोशलदेशना जपना पहिलेभवे वज्रनाभचक्रवर्तिपणे चौदपूर्वीहुया । जंबूद्वीपे भरतक्षेत्र एणी अवसर्पिणीयें त्रेवीसतीर्थंकर पहिलेभवे मडलीक राजाहुया ते कहेछे । अजितनाथ सभव अभिनदन यावत् वर्द्धमानखामीलगे ऋषभ अरिहत कोशलदेशना उपना पहिलेभवे वज्रनाभचक्रवर्तिहुया । एणीयें रत्नप्रभा पृथिवीयें केतलाएक नारकीनोतेवीस पल्योपम आउखोकह्यो । हेठेसातमी पृथिवीये केतलाएक नारकीनो तेवीस सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमारदेवतानो केतलाएकनो तेवीस पल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवतानो तेवीस पल्योपम आउखोकह्यो । हेठिममध्यम ग्रैवेयके एतले बीजे ग्रैवेयके देवतानो जघन्यतिवीससागरोपम आउखोकह्यो जेदेवता हेठिम ग्रैवेयके पहिले ग्रवेयके वि[illegible] देवतापणे उपनाछे । तेहदेवतानी उत्कृ

चत्वारिसूत्राणि अर्वाक्स्थितिसूत्रेभ्यः तत्रसूत्रकृतांगस्य प्रथमेश्रुतस्कंधेषोडशाध्ययनानि द्वितीयेसप्ततेषांचान्वर्थस्तदर्थिगमाधिगम्यइति ॥ २३ ॥ च
तुर्विंशतिस्थानके षट्सूत्राणिस्थितेःप्राक् सुगमानिच नवरं देवानामिन्द्रादीनामधिकादेवाः पूज्यत्वाद्देवाधिदेवाइति तथाजीवाउत्ति जम्बूद्वीपलक्षणक्षेत्रस्य

ठिई प० तेणं देवा तेवीसाए अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं दे
वाणं तेवीसाए वाससहस्सेहिं आहारठे समुप्पज्जइ संतेगइया नवसिद्धिया जीवा जे तेवीसाए नवग्गहणे
हिं सिज्झिस्सति बुज्झिस्संति मुच्चिस्सति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २३ ॥
चउव्वीस देवाहिदेवा प० त० । उसन्न अजित सन्नव अन्निनदण सुमइ पउमप्पह सुपास चंदप्पह सुवि
धि सीअल सिज्जंस वासपूज्ज विमल णंत धम्म सति कुंथु अर मल्ली मुणिसुव्वय नमि नेमी पास वद्धमाण

छी तेवीस सागरोपमनी स्थितिकही । तेहदेवता तेवीसे पखवाडे स्वासोस्वासादिक बोलकरें ऊचोले नीचोमूंके तेहदेवताने तेवीसवर्ष सहस्रे आहारनी वां
छाउपजे। केतलाएक भव्यजीव जेतेवीसभवने आतरे सीझस्ये बूझस्ये मंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये ॥ इति तेवीसमो समवाय मय्यत्तम्
॥ २३ ॥ हिवे चोवीसमो समवाय लिखियेछे । चौवीस देवाधिदेव देवइंद्रादिक तेमांहि अधिकादेव पूज्यपणाथकीते देवाधिदेवकह्या तेकहेछेऋषभ १
अजित २ । संभव ३ । अभिनंदन ४ । सुमति ५ । पद्मप्रभ ६ । सुपार्श्व ७ । चद्रप्रभ ८ । सुविधि ९ । शीतल १० । श्रेयास ११ । वासुपूज्य १२ । विमल १३
अनत १४ । धर्म १५ । शांति १६ । कुथनाथ १७ । अरनाथ १८ । मल्लिनाथ १९ । मुनिसुव्रत २० । नमिनाथ २१ । नेमिनाथ २२ । पार्श्वनाथ २३ । वर्द्धमान

वर्षाणांवर्षधराणां ऋद्विसीमाजीवोच्यते आरोपितज्याधनुर्जीवाकल्पत्वात्तयोस्तलघुहिमवच्छिखरिसत्कयोः प्रमाणं २४ ९ ३२ । अष्टत्रिंशद्भागश्चयोजनस्य किं विहिर्विशेषाधिकं' अत्रगाथा चउवीससहस्साइं नवयसएजोयणाणबत्तीसे चुल्लहिमवतजीवा आयामेणकलद्धंचत्ति ॥ १ ॥ कलार्द्धमितिएकोनविंशतिभागस्यार्द्धं तच्चाष्टत्रिंशद्भाग एवभवतीति चतुर्विंशतिर्देवस्थानानिदेवभेदा दशभवनपतीनांअष्टौव्यन्तराणां पञ्चज्योतिष्काना एककल्पोपपन्न वैमानिकानां एवचतुर्विंशतिः सेंद्राणिचमरेंद्राद्याधिष्ठितानिशेषाणिच ग्रैवेयकानुत्तरसुरलक्षणानि अहं २ इत्येवं इन्द्रवयेषुतान्यहमिंद्राणि प्रत्यात्मेंद्रकाणीत्यर्थः अतएव अनिद्राणि अविद्यमाननायकानि अपुरोहितानि अविद्यमानशांतिकर्मकारीणि उपलक्षणत्वात्पुरंदरस्य अविद्यमानसेवकजनानीति तथाउत्तरायणगतः सर्वाभ्यतरमण्डलप्रविष्टः सूर्यःकर्कसंक्रातिदिनइत्यर्थः चतुर्विंशत्यगुलिकांपौरुषी प्रहरेभवाच्छाया पौरुषीया तांछायां हस्तप्रमाणशंकोरितिगम्यते निर्वर्त्यकला यंवाक्यालका

चुल्लहिमवंतसिहरीणं वासहरपब्वयाणं जीवाउ चउव्वीसं चउव्वीसं जोयणसहस्साइं णववत्तीसे जोयणसए एगं अठत्तीसइभागंजोयणस्स किंचिविसेसाहिआउ आयामेणं प० चउवीसंदेवठाणा सइंदिया प० से

२४ । मेरुथकी तीनपर्वत दक्षिणदिसेछे तेमांहि छेहल्यो लघुहिमवत उत्तरदिसे तीनपर्वत तेमांहि छेहल्योशिखरिए बिहुवर्षधरपर्वतनी जीवाचेतनी अने वर्षधर पर्वतनी सरलसीमाते जीवाकही ते २४९३२ योजन नवसे बत्रीस योजनना उगणीसभागकीजे तेहना अठीया ३८ थाय एहवी अर्द्धकला काईक विशेषाधिक लाबपणेकही । चौबीस देवनास्थानक देवतानाभेद भवनपति १० व्यन्तर २७ ज्योतिषी ५ वैमानिक सर्वमिली एकभेदे एह २४ भेदे देवता सेंद्र

रेनिवर्त्तते सर्वाभ्यन्तरमंडलात्द्वितीयमण्डलमागच्छति आहच आसाढमासेदुपयेत्यादि पवहइति यतः स्थानान्नदीं वहति वोढुंप्रवर्त्तते सचपद्मऋदात्तोरणेन

साऋहमिंदा ऋपुरोहिऋा उत्तरायणगतेणंसूरिए चउवीसंगुलिए पोरिसीछायंणिच्चत्तइत्ताणं णिऋहति गंगा सिंधूनणं महाणदीनपवाहे सातिरेगेणं चउवीसं कोसे वित्थारेणं प० रत्ता रत्तवती नणंमहाणदीन पवाहे सातिरेगे चउवीसं कोसे वित्थारेणं प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए ऋत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउवीसं पलिनवमाइं ठिई प० ऋहेसत्तमाए पुढवीए ऋत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई प० ऋसुरकुमाराणं देवाणं ऋत्थेगइयाणं चउवीसं पलिनवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेणं देवाणं ऋत्थेगइया

क इन्द्रसहितकह्या। शेषथाकता नव ग्रैवेयक पांचअनुत्तरना देवता अहमिद्र सेवक स्वामीनोभावनह्यी। उत्तरायणगत सूर्यहुए एतलेनिषधने माथे सर्वाभ्यन्तरमांडले कर्कसक्रांतिदिने सूर्य चौबीस अगुले हस्तप्रमाणे नणनीछाया एपोरुषीछाया प्रहरदिवसनी छाया प्रतिनिवर्तावीने निवर्तेरहे। आसाढेसि दुपयाइति वचनात्। गंगापूर्वसमुद्र गामिनी सिन्धुपश्चिमसमुद्रगामिनी महानदी। प्रवहे तोजेस्थानकथकी पद्मद्रहथकी निकली तेप्रवाहनेविषे सातिरेकझाझेरी चौवीसकोस विस्तारे पिहुलपणेकह्यो झाझेरापणाथकी २५ कोसहुई। रत्तारत्तवती ऐरवतक्षेत्र संबंधिनी महानदी प्रवाहनेविषे पुडरीकद्रहने विषे सातिरेक झाझेरी २४ कोसविस्तार पिहुलपणेकह्यो झाझेरापणाथकी २५ कोस। एणीएरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो चौवीसपल्योपम आउखोकह्यो। हेठीए सातमी पृथिवीएं केतलाएक नारकीनो चौवीस सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार देवनो केतलाएकनो चौवीस पल्योपम आउखो

निर्गमइहसंभाव्यते नपुनर्यद्दत्यत्रप्रवहशब्देन मकरमुखप्रणालनिर्गमः प्रपातकुंडे निर्गमोवाविदसाचितसूत्रंहि जंबूद्वीपप्रज्ञप्त्यामिह चतुर्विंशतिक्रोसप्रमाणा ॥

णं चउवीसं पलिओवमाइं ठिई प० हेठिमउवरिमगेवेज्जाणं देवाणं जहन्नेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा हेठिममज्झिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेण देवा चउवीसाए अद्धमासाण आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं चउवीसाए वाससहस्सेहि आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जे चउवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्सति वुज्झिस्सति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्सति सव्वदुक्खाण मंतकरिस्संति ॥ २४ ॥

पुरिमपच्छिमगाणं तित्थकराणं पचजामस्सपणवीस भावणाओ प० तं० इरिआसमिई मणगुत्ती वयगुत्ती आ

कह्यो । सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवनो चौवीस पल्योपम आउखोकह्यो । हेठिम उपरिम ग्रैवेयक तेबीजूं ग्रैवेयक तिहांना देवतानो जघन्यो चौवीस सागरोपम आउखोकह्यो । जेदेवता हेठिम मध्यम ग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवनो उत्कृष्टो चौवीस सागरोपम आउखोकह्यो । तेहदेवता चोवीस पखवाडे स्वासोस्वासादिक चारिबोलकरे तेहदेवताने चउबीसवर्ष सहस्रे आहारनो अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीव जेचौवीसभवने आंतरे सीभस्ये बूभस्ये मंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरस्ये मोक्षजास्ये ॥ इति चौवीसमो समवाय पूर्णथयो ॥ २४ ॥ हिवे पचीसमो समवाय लिखियेछे । पहिला श्रीआदिनाथनेवारे छेहल्या महावीर तीर्थकरनेवारे यतीना पंचमहाव्रतनी पचवीस भावनाकही महाव्रत राखिवाना उपाय तिहां पहिला महा

॥ पञ्चविंशतिस्थानकमपिसुबोधनवरमिह्स्थितेरर्वाग्नवसूत्राणि तत्रपञ्चजामस्त्ति पञ्चानांयामाना महाव्रतानांसमाहारस्तत्पंचयामंतस्यभावणा

ओत्ति प्राणातिपातादिनिवृत्तिलक्षणमहाव्रतसरक्षणायभाव्यन्ते इतिभावनास्ताश्च प्रतिमहाव्रतं पंचपचेति तत्रेर्यासमित्याद्या:पञ्च प्रथमस्यमहाव्रतस्य तत्रा

लोकभाजनभोजन आलोकनपूर्वंभाजनपात्रेभोजन भक्तादेरभ्यवहरण अनालोक्यभाजनभोजनेहि प्राणिहिंसासम्भवतीति तथानुविचित्यभाषणतादिकाद्वितो

यस्यतत्रक्रोधविवेक: परित्याग: तथाऽवग्रहानुज्ञापनादिकास्तृतीयस्य तत्रावग्रहानुज्ञापना १ तत्रचानुज्ञातेसीमापरिज्ञान ज्ञातायाचसीमायास्वयमेव उग्गह

मिति अवग्रहस्यानुग्रहणता पश्चात्स्वीकरणमवस्थानमित्यर्थ: ३ साधर्मिकाणां गीतार्थसमुदायविहारिणां सविग्नानामवग्रहो मासादिकालमानत: पचक्रो

लोयन्नायणन्नोयणं न्नादाणन्नंडमत्तनिक्खेवणासमिई ५ न्नणुइंतिन्नासणया कोहविवेगे लोन्नविवेगे न्नयवि

वेगे हासविवेगे ५ उग्गहन्नणुणवता उग्गहसीमंजाणणया सयमेवउग्गहन्नणुगेरहणया साहम्मियउग्गहंन्न

व्रतनी पांचभावनाकही तेकहेछे। ईर्यासमितीयें मार्गे जोईचालवी एहप्राणातिपात निवर्तनलक्षण प्रथममहाव्रतने राखवानो उपाय १। एमसगलेकहेछे

मनोगुप्ति २। वचनगुप्ति ३। आलोकभोजने विपुलठामडे जिमवो ४। आदानलेवो भांडकहतां पात्रादिकनो निक्षेप मूकवो तिहां समिति पूंजीकरी पछे

लेवो मूकिवो ५। हिवे बीजा महाव्रतनो भावना पांच विचारी बोलवी १। क्रोधनो त्यागछांडिवो २। लोभनोत्याग ३। भयनोत्याग ४। हासनो छांडिवो

५। हिवे त्रीजा महाव्रतनी भावना पाच। गृहस्थने ओटलादिके रहिवानोअर्थ अवग्रह आज्ञानो जणावणो १। अवग्रहगृहस्थेदीधेथके सीमामर्यादानो ज

णावणो २। सीमाजाणेथके स्वयमेवपोतेज अवग्रहनी अनुग्राहकता अंगीकारकरिवो रहिवो ३। साधर्मिक अनेरा यतीनेअवग्रहमागिएं तथा उपाश्रयने

शादिक्षेत्ररूपः साधर्मिकावग्रहस्ततोनचानुज्ञाप्यतस्यैव परिभोजनवतांस्थान साधर्मिकाणा क्षेत्रेवसतौवा तैरनुज्ञातएववास्तव्यमितिभावः ४ साधारणसामा न्य यन्नक्तादितदनुज्ञाप्याचार्यादिकं तस्यपरिभोजनचेति ५ ॥ तथास्त्र्यादिससक्तशयनादिवर्जनादिकाश्चतुर्थस्य प्रणीताहारोतिस्नेहवानिति । तथाश्रोत्रेन्द्रिय रागोपरत्यादिका पंचमस्य अयमभिप्रायोयोयत्रसजनितस्य तत्परिगृहेवतरति ततश्चशब्दादौरागक्कुर्वता तेपरिगृहीताभवंतीति परिग्रहविरतिर्विराधिता

णुन्नवियपरिभुंजणया साहारणभत्तपाणं अणुन्नवियपडिभुंजणया ५ इत्थीपसुपंडगसंसत्तगसयणासणवज्ज णया इत्थीकहविवज्जणया इत्थीणंइंदियाणमालोयणवज्जणया पुव्वरत्तपुव्वकीलियाणंअणुस्सरणया पणीता हारविवज्जणया ५ सोइंदियरागोवरई चक्खिंदियरागोवरई घाणिंदियरागोवरई जिब्भिंदियरागोवरई

विषे तेहीज साधर्मीकयतीने अनुज्ञाप्य जणावीने परिभोजनतारहिवो ४ । साधारण सहुने समुदायें भातपाणी विहस्योहोय तेह आचार्यादिकने अनु ज्ञाप्य जाणवीने भोजनता जिमिवो ५ । हिवे चौथाव्रतनी भावना ५ स्त्री पशु पंडकनपुंसके ससक्तव्याप्त शय्यासननो वर्जिवो १ । स्त्रीसाथे कथानो वर्जिवो १ । स्त्रीनाइन्द्रियनो मुखकुचादिकनो आलोकन जोइवो तेहनोवर्जवो ३ । पूर्वेगृहस्थपणे संभोगे क्रीडाकीधीहुई तेहनो अनसंभारवो ४ । प्रणीत आहार घृतदुग्धादिके अति सरस आहारनो वर्जिवो ५ । हिवे पाचमा महाव्रतनी पाचभावना ॥ श्रोत्रेन्द्रिय राग मधुरगीतादिक कर्णनो विषय तेह उपरि राग तेहनो उपरति छाडवो १ । चक्षुरिन्द्रियराग २ । घ्राणेंद्रियराग ३ । जिह्वेन्द्रियराग ४ । स्पर्शइन्द्रियराग एम पांचइन्द्रियनो विषयराग तेहनो छांडिवो ५ । जेह

फासिंदियरागोवरई ५ मल्लीणंअरहापणवीसंधणुउड्ढंउच्चत्तेणंहोत्या सव्वेविदीहवेयड्ढपव्वयापणवीसंजोयणाणि उड्ढंउच्चत्तेणं प० पणवीसंगाऊआणिउव्विद्धेणं प० दोच्चाएणं पुढवीए पणवीसं णिरयावाससयसहस्सा प० आयारस्सणंभगवउ सचूलिआयस्स पणवीसं अज्झयणा प० तं० सत्यपरिन्ना लोगविजउ सीउसणीअ सम्मत्तं। आवंति धुय विमोह उवहाणसुयं महपरिन्ना ॥ १ ॥ पिंडेसण सिज्जिरिआ भासज्झयणायवत्थ पए

परिग्रहने भोगवीए तेपरिग्रह मांहिलिखवीयें ५ मल्लिनाथ उगणीसमा तीर्थंकर अरिहंत पंचवीसधनुष ऊंचाऊंचपणेहुया। सघलाइ दीर्घवैताढ्य जंबूद्वीप मांहिल्या ३४ धातकी खडना ६८ पुष्करार्द्धभाग ६८ एवं १७० दीर्घवैताढ्यपर्वत पंचवीस योजन ऊंचोऊचपणेकह्यो। पचवीस पंचवीसगाऊ ऊंडपणे भूमिमांहि कह्या। बीजी नरक पृथिवीयें पचवीस शतसहस्र एतले पचवीसलाख नरकावासाकह्या। आचारांगना प्रथम पूज्यना पांचचूलिकासहितना पचवीस अध्ययनकह्या तेकहेछे। शास्त्रपरिज्ञा १। लोकविजय २। शीतोष्णीय ३। सम्यक्त्व ४। आवंती ५। मतांतरे लोकसार। धूताध्ययन ६। विमोचाध्ययन ७। उपधानश्रुत ८। महापरिज्ञा ९। पिंडेषणाध्ययन १०। सिज्जा ११। ईर्या १२। भाषाध्ययन १३। वस्त्रैषणा १४। पात्रैषणा १५। अवग्रह प्रतिमा १६। सातासातक्रिया एवं २३ भावनाध्ययन २४ विमुक्तिनाम २५ बीजा श्रुतस्कंधना अध्ययन १६ उद्देशा २५ चारचूलिकामांहि अंतर्भव्याछे अनेपांचमानी

भवत्यन्वयावारोधितेतिवाचनांतरे भावश्यकानुसारेणदृश्यंते तथामिथ्यादृष्टिरेव तिर्यग्गत्या संक्लिष्टपरिणामद्वत्युश्चमयमपि हीन्द्रियाद्यपर्याप्तादिकाः कार्मप्रश्च
तोर्वध्नातिनसम्यग्दृष्टिस्तासां मिथ्यात्वप्रत्ययत्वादिति मिथ्यादृष्टिग्रहणं विकलेंद्रियोहिन्द्रिचतुरिंद्रियाणामन्यतमः णमित्यलंकारे पर्याप्तोन्याअपिवध्नातीत्यप
र्याप्तग्रहणमपर्याप्तकाण्वश्चैतां अप्रशस्तपरिवर्त्तमानद्वयेतररूपावध्नातिसोप्येताः संक्लिष्टपरिणामोवध्नातीति संक्लिष्टपरिणामद्वत्युश्च मयमपिहीन्द्रियाद्यपर्याप्त

सा उग्गहपडिमा सत्तिकसत्तया ञावण विमुत्ती ॥ २ ॥ निसीहज्झयणंपणवीसइमं मिच्छादिट्ठिविगलिंदिए

सीथ चूलिकानो प्रविकारनथी परचूलिकाकही सूत्रमांहि तेमाटे इहांनिसीथपद ग्रन्थाख्य विमुत्त अध्ययन पणिनिसीथ चूलिकासहित पचवीसनो जाणिवो
आचारांगे बीजोश्रुतस्कंधछे तेमांहि पहिलेश्रुतस्कंधे नवअध्ययन तेमांहि नवमोअध्ययन महापरिज्ञानामे तेहना उद्देशा १६ तेहदेवर्द्धिगणि क्षमाश्रम
णे विछे दीपत्योपूर्व्वाये आठअध्ययन उगरया तेहना उद्देशा ४४ छे एकावनमे ठाणेनिख्याछे । हिवे बीजे श्रुतस्कंधे अध्ययन १६ उद्देशा २५ तेचूलिकामांहि
अतर्भव्याछेतो पहिला श्रुतस्कंधना नवअध्ययन बीजे श्रुतस्कंधे अध्ययन १६ एवं पचवीस अध्ययनकह्या । अने पहिला श्रुतस्कंधना ८ अध्ययनना उद्देसा
६० बीजा श्रुतस्कंधना उद्देशा २५ सर्वमिली ८५ उद्देशाथया । हिवे बीजे श्रुतस्कंधे १६ अध्ययनछे तेमाहि पहिला सात अध्ययन पहिली चूलिका रूपछे
आगलया ७ अध्ययन एकसरां बीजी चूलिकारूप पनरमूं अध्ययन त्रीजी चूलिकारूप सोलमूं अध्ययन चौथी चूलिकारूप पांचमा निशीथाध्ययननो इहां अ
धिकारनथी । मिथ्यादृष्टि । विकलेंद्रिय बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चउरिन्द्रिय अपर्याप्तथका संक्लिष्टपरिणामे महाभूंडो अध्यवसायें उपार्ज्योकर्म तेहनी पचवीस उत्तर
प्रकृतिबांधे तेकहेछे । तिर्यचगति नामकर्म १ । विकलेंद्रिय जातिनाम २ । औदारिक शरीरनाम ३ । तैजस शरीरना ४ । कार्मण शरीरनाम ५ । हुडक

वाप्रायोग्यवध्नाति तत्रविगलिंदियजायनामेति कदाचित् द्वीद्रियजात्यासह पंचविंशतिः कदाचित्त्रींद्रियजात्या एवमितरेथापीति । गंगेत्यादि पंचविंशतिगं
व्यूतानि पृथुलेनयः प्रपातस्तेनेतिशेषः दुहओत्ति द्वयोर्दिशोः पूर्वतोगंगा अपरतः सिंधुरित्यर्थः पद्मद्रहाद्विनिर्गते पच २ योजनशतानि पर्वतोपरिगत्वादचि

णं अपज्जत्तएणं संकिलिठपरिणामेणामस्सकम्मस्सपणवीसंउत्तरपगडीउणिबंधति तिरियगतिनामं विगलिं
दियजातिनामं उरालियसरीरनामं तेअगसरीरनामं कम्मणसरीरनामं हुंडगसठाणनामं उरालियसरीरंगोवंग
नामं छेवठसघयणनामं वन्ननामं गधनामं रसनाम फासनामं तिरियाणुपुव्विनामं अगुरुलहुनामं उवघाय
नामं तसनाम बादरनाम अपज्जत्तयनामं पत्तेयसरीरनामं अथिरनाम असुभनाम दुभगनाम अणादेज्जना
मं अजसोकित्तिनामं निम्माणनाम २५ गंगासिंधूउणंमहाणदीउपणवीसगाऊयाणि पोहत्तेणं घडमुहपवित्तिए

संस्थाननाम ६ । औदारिक शरीरना अंगोपांग ७ । छेवठसंघयणनाम ८ । वर्णनाम ९ । गंधनाम १० । रसनाम ११ । स्पर्शनाम १२ । तिर्यंचनी आनुपूर्वी
१३ । अगुरु लघुनाम १४ । उपघातनाम १५ । त्रसनाम १६ । बादरनाम १७ । अपर्याप्तकनाम १८ । प्रत्येककायनाम १९ । अस्थिरनाम २० । अशुभनाम
२१ । दौर्भाग्यनाम २२ । अनादेयनाम २३ । अजस अकीर्तिनाम २४ । निर्माणनामकर्म २५ । गंगासिंधूनदीपंचवीस पचवीस गाऊनेप्रवाहे पिहुलपणे पद्म
द्रहथकी निकली पांचसय योजन हिमवंतपर्वत उपरचालीने दक्षिणदिशि प्रवर्ती घडमुहपवत्तिएण घडानामुखनीपरी पचवीसकोस पिहुलीजीभीयें मगर
मुखप्रणालीयें मुक्तावलीहारसठाणे संस्थितप्रपात सययोजनोच्च हिमवंतपर्वतथकी हेठीउतरी गंगानदी गंगाप्रपात कुंडमां पडेछे सिंधुनदी सिंधुप्रपाते पडे

णाभिमुखेप्रवृत्ते घडमुहपवित्तिएणंति घटमुखादिव पचविंशतिक्रोशे पृथुलजिह्वाकात् मकरमुखप्रणालात् प्रवृत्तेन मुक्तावलीनाम मुक्ताशरीराणां योहारस्तत्सं स्थितेन प्रपतज्वलसतानेन योजनशतोच्छ्रितस्य हिमवतोऽधोवर्त्तिनोः स्वकीययोः प्रपातकुण्डयो' प्रपततः एवंरक्तारक्तावत्यौ नवरशिखरिवर्षधरोपरि प्रतिष्ठित

णं मुत्तावलिहारसंठिएणंपवातेणपडंति रत्तारत्तवईउणं महाणदीउपणवीसंगाऊयाणिपोहत्तेणं मकरमुहपवि त्तिएणं मुत्तावलिहारसंठिएणंपवातेणपडंति लोगबिंदुसारस्सणं पुव्वस्स पणवीसंवत्थू प० इमीसेण रयणप्प भाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पणवीस पलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइया णं नेरइयाणंपणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराण देवाणं अत्थेगइयाण पणवीसं पलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेण देवाणं अत्थेगइयाणं पणवीसं पलिउवमाइं ठिई प० मज्झिमहेठिमगेवेज्जाणं दे

छे। रक्तारक्तवती ऐरवतक्षेत्र सबंधिनी महानदी पचवीसगाऊ पिहुलपणे पुंडरीकद्रहथकी निकली शिखरी पर्वतउपरि पाचसय योजन चालीने मगरमु खप्रणालीयें मुक्ताहारसंठाणप्रपातेकरि हेठीउतरीछे रक्ता रक्ताकुंडमाहिपडेछे रक्तवती रक्तवतीकुंडमाहि पडेछे। लोकबिंदुसार चौदमा पूर्वना पचवीसव स्तुअधिकार विशेषकह्या। एणीये रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो पचवीस पल्योपम आऊखोकह्यो। हेठीयें सातमी पृथिवीयें केतलाएकनो २५ सागरोपम आउखोकह्यो। असुर कुमार देवतानो केतलाएकनो २५ पल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवनो २५ पल्योप म आउखोकह्यो। मध्यम हेठिम ग्रैवेयकें एतले जघेग्रैवेयक विमाने देवतानो जघन्य २५ सागरोपम आउखोकह्यो। जेदेवता हेठिम उपरिम ग्रैवेयके नी

पुंडरीकद्रहात्प्रपततइति तथालोकबिन्दुसारं चतुर्दशपूर्वमिति ॥ २५ ॥ षड्विंशतिस्थानकंव्यक्तमेव नवरं उद्देशनकालायत्रश्रुतस्कन्धेऽध्ययनेच याव

वाणं जहन्नेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवाहेठिमउवरिमगेवेज्जगविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना ते
सिणं देवाणं उक्कोसेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणदेवा पणवीसाए ग्रद्धमासेहि ग्राणमंतिवा पाण
मंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं पणवीसं वाससहस्सेहिं ग्राहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया ग्र
वसिद्धियाजीवा जेपणवीसाए ग्रवग्गहणेहि सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदु
क्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २५ ॥ छव्वीसंदसकप्पववहाराणं उद्देसणकाला प० तं० १ दसदसाणं

जेग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टो २५ सागरोपम ग्राउखोकह्यो तेहदेवता पंचवीसे पखवाडे स्वासोस्वास घणोले ऊंचोले नीचोमूंके
तेहदेवताने २५ वर्ष सहस्त्रे ग्राहारनो ग्रर्थउपजे। छेकेतलाएक भव्यजीव जेपंचवीस भवने ग्रांतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये संसारना परितापथकी ठाढाथा
स्ये सर्वदुःखनो ग्रतकरिस्ये इति पंचवीसमो ठाणो सम्मत्तम् ॥ २५ ॥ हिवे छव्वीसमो समवाय लिखेछे। छवीस दशाकल्प व्यवहारना उद्देश
नकाल जेह श्रुतस्कंधे जेतला ग्रध्ययनइया तेतला उद्देसनकाल उद्देशनना ग्रवसरकह्या तेकहेछे। दशदशानां उद्देशनकाल १० छकल्पना ६ दशव्यवहारना

छकप्पस्स दसववहारस्स अभवसिद्धियाणं जीवाणंमोहणिज्जस्स कम्मस्स छव्वीसंकम्मंसासंतकम्मा प० तं० मिच्छत्तमोहणिज्जं सोलसकसाया इत्थीवेदे पुरिसवेदे नपुंसकवेदे हास अरति रति भयं सोगं दुगंछा इमी सेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छव्वीसपलिओवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छव्वीससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं छव्वीसपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेणं देवाणं अत्थेगइयाणं छव्वीसपलिओवमाइं ठिई प० मज्झिम मज्झिम गेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं छव्वीसंसागरोवमाइं ठिई जेदेवा मज्झिम हेठिम गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना

सर्वमिली २६ उद्देशन कालथया । जेहने अनादि अनत अभव्यपणो सिद्धिनिष्पन्नछे ते अभव्यसिद्ध कहिये तेहजीवने मोहनीकर्म चोथो तेहनीमूर्ल २८ प्रक्रतिछे तेमांहि अभव्यजीवने त्रिपुजी करणतो आवरे छव्वीसकर्मना अंशकर्मनी प्रक्रति सत्ताकर्मपणे रहे तेकहेछे । मिथ्यात्व मोहनीय १ अनेसोले काषाय अनतानुबधी क्रोध मान माया लोभ ४ एम अप्रत्याख्यानी ४ प्रत्याख्यानीय ४ सज्वलन ४ सर्वमिली १६ काषाय अनेमिथ्यात्व मोहनो भेलतां १७ । प्रक्रति स्त्रीवेद १८ । पुरुषवेद १९ । नपुंसकवेद २० । हास्य २१ । अरति २२ । रति २३ भय । २४ । शोक २५ । दुगछा २६ । एणीयेरत्नप्रभा पृथिवीयें केतलाएक नारकीनो छव्बीस पल्योपम आउखोकह्यो । हेठोयें सातमीपृथिवीयें केतलाएक नारकीनो २६ सागरोपम आउखोकह्यो । असुरकुमार केतलाएक देवतानो २६ पल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्म ईशानें केतलाएक देवनो २६ पल्योपम आउखोकह्यो । मध्यम २ ग्रैवेयके एतले पांचमे ग्रवेयके देवतानो जघन्य २६

न्यध्ययमान्युद्देशकावा तत्रतावंतएवउद्देशनकाली उद्देशावसराःश्रुतोपचाररूपाइति। तथा अभव्यानांत्रिपुंजीकरणाभावेन सम्यक्तमिश्ररूपंप्रकृतिद्वयं सत्ता यांनभवतीति षड्विंशतिः सत्कर्मांशाभवंतीति ॥ २६ ॥ सप्तविंशतिस्थानकमपिव्यक्तमेव केवलं षट्सूत्राणिस्थितेरर्वाक् तत्रअनगाराणां साधूनां गुणाश्चारित्रविशेषाः अनगारगुणाः तत्रमहाव्रतानि पचेंद्रियनिग्रहाश्चपंच क्रोधादिविवेकाश्चत्वारः सत्यानित्रीणि तत्रभावसत्यंशुद्धांतरात्मना करणसत्यंयत्

तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं छव्वीसंसागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा छव्वीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससतिवा नीससतिवा तेसिण देवाणं छव्वीसंवाससहस्सेहिं आहारट्ठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जेछव्वीसेहिं भवग्गहणेहि सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदु क्खाण मतंकरिस्संति ॥ २६ ॥ सत्तावीसंअणगारगुणा प० तं०। पाणाइवायाउ वेरमणं मुसावायाउ वेरमणं अदिन्नादाणाउ वेरमणं मेहुणाउ वेरमणं परिग्गहाउ वेरमणं सोइंदियनिग्गहे चक्खिं

सागरोपम आउखोकह्यो। जेदेवता मध्यम हेठिम एतले चउथे ग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टो२६ सागरोपम आउखोकह्यो। ते हदेवता छव्वीसे पखवाडे स्वासोस्वास घणोले जचोले नीचोमेले तेहदेवताने २६ वर्ष सहस्रे आहारनो अर्थउपजे। केतलाएक भव्यजीवजे२६ भवने आतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये ससारदुःखनो अतकरस्ये मोक्षजास्ये इति छव्वीसमो समवाय पूरोथयो ॥ २६ ॥ हिवे सत्तावीसमो समवाय लिखेछे सत्तावीस अणगारना साधूना चारित्र विशेषरूपगुणकह्या तेकहेछे। प्राणातिपातनो विरमण १। मृषावादनो विरमण २। अदत्तादाननो विरमण ३।

तिलेखनादिक्रियां यथोक्तंसम्यगुपयुक्तःकुरुते योगसत्यंयोगानांमनःप्रभृतीनामवितथत्व १७ क्षमाऽनभिव्यक्तक्रोधमानस्वरूपस्य द्वेषसंज्ञितस्याप्रीतिमात्रस्याभा
वः अथवाक्रोधमानयोरुदयनिरोधः क्रोधमानविवेकशब्दाभ्यांतदुदयप्राप्तयोर्निरोधः प्रागेवाभिहितइति नपुनरुक्ततापीति १८ विरागता अभिष्वंगमात्रस्य
भावः अथवामायालोभयोरनुदयो मायालोभविवेकशब्दाभ्यांतूदयप्राप्तयोस्तयोर्निरोधः प्रागभिहित इतीहापिनपुनरुक्ततेति १९ मनोवाक्कायानां समाहरण
तापाठांतरतः समत्वाहरणता अकुशलानांनिरोधास्त्रयः २२ ज्ञानादिसंपन्नतास्तिस्रः २५ वेदनातिसहनतापीताद्यतिसहनं २६ मारणांतिकातिसहनता क

दियनिग्गहे घाणिंदियनिग्गहे जिब्भिंदियनिग्गहे फासिंदियनिग्गहे कोहविवेगे माणविवेगे मायाविवेगे लो भविवेगे भावसच्चे करणसच्चे जोगसच्चे खमाविरागया मणसमाहरणया वयसमाहरणया कायसमाहरणया नाणसंपन्नया दंसणसंपन्नया चरित्तसंपन्नया वेयणअहियासणया मारणंतियअहियासणया जंबूद्दीवेदीवेअज्झि

मैथुननो विरमण ४। परिग्रहनो विरमण ५। श्रोत्रेंद्रियनिग्रह ६। चक्षुरिंद्रिय निग्रह ७। घ्राणेंद्रिय निग्रह ८। रसनेंद्रिय निग्रह ९। स्पर्शनेंद्रिय निग्रह १०
क्रोधनो विवेकत्याग ११। मान विवेक १२। माया विवेक १३। लोभ विवेक १४। भावसत्य शुद्धआत्माराखिवो १५। करणसत्यइन्द्रियनिरोधप्रतिलेखनादि
क क्रियानेविषे सावधानपणे प्रवर्तिवो १६। योगसत्य मनःप्रभृतियोगत्रिक कुशलतानुष्ठाने प्रवर्तिवो १७। खमा क्रोधनोमाननो उदयनिरोध १८। विराग
ता कोहसाथेप्रसगनही १९। मननो समाहरणता अकुशल व्यापारथकी रुधिवो २० एम वचन समाहरणता २१। काय समाहरणता २२। ज्ञानकरी स
म्पन्नता सहितपणो २३। एम दर्शण सम्यक्त्वसंपन्नता २४। चारित्र संपन्नता २५। वेदना अधिसहनता सातादिकनो सहिवो २६। मारणांतिक अधिसहन

स्याणमित्रबुद्ध्यामारणांतिकोपसर्गसहनमिति २७ तथा जंबूद्वीपेनधातकीखण्डादौ अभिजिद्वर्जैः सप्तविंशत्यानक्षत्रैर्व्यवहारः प्रवर्त्तते अभिजिन्नक्षत्रस्योत्तराषाढचतुर्थपादानुप्रवेशनादिति । तथामासोनक्षत्रचन्द्राभिवर्द्धित ऋत्वादित्यमासभेदा त्पचविधान्योक्तनक्षत्रमासः चंद्रस्यनक्षत्रमण्डलभोगकाललक्षणः सप्तविंशतिरात्रिंदिवानि अहोरात्राणीति रात्रिंदिवाग्रेणेत्यहोरात्रपरिमाणापेक्षयेदंपरिमाणं नतुसर्वथातस्याधिकतरत्वादाधिक्यंवाहोरात्रसप्तषष्ठिभागानामेकविंशत्येति । विमाणपुढविति विमानानापृथिवीभूमिका । तथावेदकसम्यक्त बंधाः क्षायोपशमिकसम्यक्त्वहेतुभूतशुद्धदलिकपुजरूपा दर्शनमोहनीयप्रकृतिस्तस्य

इवज्जोहिं सत्तावीसाएणक्खत्तेहिं संववहारेवट्टति एगमेगेणंणक्खत्तमासे सत्तावीसाहिंराइंदियाहिं राइंदियग्गेणं प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणपुढवी सत्तावीसं जोयणसयाइं बाहल्लेणं प० वेयगसम्मत्तवंधोवरयस्स

ता मारणांतिकोपसर्गनो सहिवो २७ साधुगुण । जंबूद्वीपनेविषे अभिजिनक्षत्र तेउत्तराषाढाना चौथापायामांहि पइठोछे तेमांटे अभीचिनक्षत्र वर्जीने अश्विनी प्रमुख सत्तावीस नक्षत्रेकरी व्यवहार प्रवर्तेछे । नक्षत्रमास १ । चंद्रमास २ । अभिवर्द्धितमास ३ । ऋतुमास ४ । आदित्यमास ५ । एवं पांचमासछे तेमांहि एकें नक्षत्रमासें सत्तावीस रात्रिदिवस एतले सत्तावीस अहोरात्रि । रात्रिदिवाग्रें सत्तावीस अहोरात्रि प्रमाणें पूरोथाय । सौधर्म ईशान देवलोके विमाननी पृथिवी सत्तावीस योजनसय बाहुल्यपणे जाडपणेंकही सत्तावीससया इपुढवी पिंडोइति वचनात्कह्या । वेदकसम्यक्त बंध तेक्षायोपशमिक सम्यक्तनो कारणभूत शुद्धदलिक रूप दर्शनमोहनीय प्रकृतिछे तेहनो उवरोति बियोजक वेगलानो करणहार तेहने मोहनीय कर्मनो प्रकृति २८ छे तेमांही सत्तावीस उत्तर प्रकृति सत्ताकम्मे सत्तापणेकही १६ कषाय ९ नोकषाय एव २५ थई मिश्रमोहनी एवं १७ प्रकृतिसत्तायें हुए एकसम्यक्त मोहनीटली २८

उवरउत्ति प्राकृतत्वादुद्दलकोवियोजकोजतु. तस्यमोहनीयकर्मणोष्टाविंशतिविधस्यमध्ये सप्तविंशतिरुत्तरप्रकृतयः सत्कर्मांशाः सत्तायामित्यर्थः एकस्योद्वलि तत्वादिति। तथाश्रावणमासस्य शुद्धसप्तम्यासूर्यः सप्तविंशत्यंगुलिका हस्तप्रमाणशंकोरितिगम्यते पौरुषीछायां निर्वर्त्य दिवसक्षेत्रंविकरप्रकाशमाकाशनिव र्द्धयन् प्रकाशहान्याहानिनयन् रजनोक्षेत्रमधकाराक्रांतमाकाशमभिवर्द्धयन् प्रकाशहानिवृद्धिंनयन् चारंचरति व्योममण्डलेभ्रमणंकरोति अयमत्रभावार्थ इहकिलस्थूलन्यायमाश्रित्य आषाढ्यांचतुर्विंशत्यंगुलप्रमाणा पौरुषीछायाभवति दिनसप्तके सातिरेकंछायांगुलवर्द्धते ततश्चश्रावणशुद्धसप्तम्यामंगुलत्रयवर्द्धते सातिरेकैकविंशतितमदिनत्वात्तस्याः तदेवमाषाढ्याः सातिरेकैरंगुलैः सहसप्तविंशतिरंगुलानिभवन्ति निश्चयतस्तुकर्कसंक्रांतेरारभ्य यत्सातिरेकैकविंशति

णं मोहणिज्जस्स कम्मस्स सत्तावीसं उत्तरपगडीओ संतकम्मंसा प० सावणसुद्धसत्तमीएणं सूरिएसत्तावीसं गुलियं पोरिसिच्छायं णिव्वत्तइत्ताणं दिवसखेत्तंनिवट्टमाणे रयणिखेत्तंअभिणिवट्टमाणेचारंचरइ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थे

मोहिनी माहियी। श्रावणसुदि सातमदिने सूर्यहस्तप्रमाणें त्रणनी छायायेंनांपियें तेमांहि २७ अंगुलीये पोरसीनी छायामें निवर्तावी करीने दिवसनूंक्षेत्र सूर्यनोप्रकाश घटाडतोथको रात्रिनोक्षेत्र अंधकारनोकाल आकाशने वधारतोथको चारभ्रमण प्रतिचरे एतले आषाढी पुनिमथको पोसीपुनिमलगे मासे मुहूर्तना ६१ भागकरी दिनप्रतिविभाग दिवसघटाडी रात्रिवधारे। एणीयेरत्नप्रभा पृथिवीविषे केतलाएक नारकीनो सत्तावीस पल्योपम आउखोकह्यो हेठिएं सातमी पृथिवीयें केतलाएक नारकीनो सत्तावीस सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार देवतानो केतलाएकनो सत्तावीस पल्योपम आउखोकह्यो

तमदिन तत्रोक्तरूपापौरुषीछायाभवति ॥ २७ ॥ अष्टाविंशतिस्थानकमपिव्यक्तं नवरश्मिहर्पंच स्थितिःग्राक्सूत्राणि तत्रआचारः प्रथमांगस्तस्य

गइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्तावीसं पलि
ओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सत्तावीसंपलिओवमाइं ठिई प० मज्झिम
उवरिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं सत्तावीससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा मज्झिमगेवेज्जयविमाणेसु देव
त्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा सत्तावीसाए अद्धमासे
हिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससतिवा नीससतिवा तेसिणं देवाणं सत्तावीस वाससहस्सेहिं आहारट्ठे स
मुप्पज्जइ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जेसत्तावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति
परिनिव्वाइस्संतिसव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २७ ॥ अट्ठावीसविहे आयारपकप्पे प० तं० ।

सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवतानो सत्तावीस पल्योपम आउखोकह्यो। मध्यमउपरिम ग्रैवेयके एतले छट्ठे विमाने देवतानो जघन्य सत्तावीस सागरोपम आउखोकह्यो। जेदेवता मध्यम ग्रैवेयके एतले पांचमे ग्रवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेदेवतानी उत्कृष्टी सत्तावीस सागरोपमनी स्थितिकही। तेहदेवताने सत्तावीसे वर्षसहस्रे आहारनो अर्थउपजे। केतलाएक भव्यजीव सत्तावीस भवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये इति सत्तावीसमूं समवाय संपूर्ण ॥ २७ ॥ हिवे अठावीसमो समवाय लिखेछे। अठावीस प्रकारे आचारप्रथमांग तेहना प्रकल्प अध्ययन विशेष

प्रकल्पोध्ययनविशेषोनिशीथमित्यपराभिधानस्यवाचारस्य वासाध्वाचारस्य ज्ञानादिविषयस्य प्रकल्पोध्यवसायमित्याचारपकल्पः तत्रक्वचित्ज्ञानाद्याचारविष
येऽपराधमापन्नस्यकस्यचित् प्रायश्चित्तदत्त पुनरन्यमपराधविशेषमापन्नस्तत स्तत्रैवप्राक्तनेप्रायश्चित्ते मासवहनयोग्यमासिक प्रायश्चित्तमारोपितमित्येव मासि
क्यारोपणाभवति तथापचरात्रिकशुद्धियोग्यमासिकञ्चशुद्धियोग्यचापराधद्वयमापन्न स्ततःपूर्वदत्तप्रायश्चित्ते सपचरात्रिमासिकप्रायश्चित्तारोपणात्सपचरात्रमा
सिक्यारोपणाषट् ६ एवद्विमासिक्यः ६ त्रिमासिक्य. ६ चतुर्मासिक्यः ६ चतुर्विंशतिरारोपणाःतथासार्द्ददिनद्वयस्य पञ्चस्यचोपघातनेनलघूनामासादीनाप्राची
नप्रायश्चित्ते आरोपणाउपघातिकारोपणा यदाह ॥ अद्धेणछिन्नसेस पुव्वद्धेणतुसजुयकाउं॥ देज्जायलहुपहाण गुरुदाणतत्तियचेवत्ति ॥ यथामासार्द्ध १५ पचवि
शतिकार्द्धच सार्द्धद्वादशवर्षसर्वमीलने सार्द्धसप्तविंशतिरितिलघुमासा' तथामासद्वयार्द्ध मासोमासिकस्यार्द्धपञ्च उभयमीलनेसार्द्धमासइति लघुद्विमासिक २५
तथातेषामेवसार्द्धदिनद्वयाद्यनुघातनेनगुरूणामारोपणा आनुघातिकारोपणा २६ तथायावतानपराधानापन्नस्तावतीनातच्छुद्धीनामारोपणाकृत्स्नारोपणा

मासियाआरोवणा सपंचराइमासियाआरोवणा सदसराइमासियाआरोवणा सपक्खरसराइमासियाआरोव

अथवा आचार तेसाधुनाआचार ज्ञानादिकविषय तेहनो प्रकल्पस्थापिवो तेआचारप्रकल्प अठ्ठावीसभेदेकह्या तेकहेछे । किहांएक ज्ञानाचारविषे अपराधपा
म्यो तेहनो कांइक प्रायश्चित्तदीधो वली अनेरो अपराध सेव्यो तेओ तिहा पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे मासवहवायोग तेमासिको प्रायश्चित्त आरोप्यो तेमासिका
रोपणाइई पहिली १ । सपचरायेति पंचरात्रीयें शुद्धियोग्य तथा मासें शुद्धियोग्य एहवा अपराध प्राप्तने पूर्वदत्त प्रायश्चित्तनेविषे पचरात्रिसहित मासप्राय
श्चित्त आरोपणाथकी सपचरात्रि मासिकी आरोपणाकही बीजी २। एमज दसरात्रिसहित मासिक प्रायश्चित्तनो पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे आरोपवो तेदसरात्रि

णा सवीसइराइमासियाआरोवणा सपंचवीसराइमासियाआरोवणा एवंचेवदोमासियाआरोवणा सपंचराइ दोमासियाआरोवणा एवतिमासियाआरोवणा चउमासियाआरोवणा उवघाइयाआरोवणा अणुघाइया

मासिकारोपणा ३। एमज सपनरसरात्रि मासिकारोपणा ४। सवीसरात्रि मासिकारोपणा ५। संपंचवीसरात्रि मासिकारोपणा ६। एमज पूर्वनेपरी कहीने एकअपराधनो प्रायश्चित्तलाग्यो वली बीजो अपराधसेव्यो तेहने पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे बेमासयोग्य प्रायश्चित्त आरोप्यो तेबेमासिकारोपणाकही ७। पचरात्रि प्रायश्चित्तयोग्य अनेवली २ मास प्रायश्चित्तयोग्य एहवा बीयें अपराधे प्राप्तनेपूर्वदत्त प्रायश्चितने पंचरात्रिसहित बेमासिक आरोपणाकरवी तेसपंचरात्रि बेमासिकारोपणाकही ८। एमज सदसरात्रि बेमासिकारोपणा नौमी ९। सपनरसरात्रि बेमासिकारोपणा १०। सवीसरात्रि बेमासिकारोपणा ११। सपंचवीसरात्रि बेमासिकारोपणा १२। पूर्वनीपरीछे त्रिमासिकारोपणा एवं १८। चौमासिकारोपणा एवं २८ मासनीअर्द्ध १५। अनेपूर्वपूर्वपचवीसनीअर्द्ध १२॥ उभयमिली साढासत्तावीस उपरि १ मास एतले लघुद्विमासिक प्रायश्चित्तकह्यो तथा मासनूंअर्द्ध मासवली१ मासार्द्ध १५ बिहूंमिली देढमास एह लघुद्विमासिक प्रायश्चित्तकह्यो तेहनेविषे साढावेदिनसहित १५ दिनएतले साढासतरे १७॥ दिनआरोपी तेहउपघातकारोपणा पंचवीसमी २५। यदाह। अद्धेणछिण्णसेसं पुव्वद्धेणतु संजओकाओ। देज्जायलहुपहाणं गुरुदाणंतत्तियंचेव॥ बेमासमांहियकी अढीदिनकाटी एतले १ मासदिन साढासत्ताईस एहने उपघातकारोपणाकही तेमांहि अढीदिनघाति एतले पूराबेमासथया एहअनुघातिकारोपणा २६ तथा जेहने जेतलो अपराधलाग्योहोय तेहने तेतलीपूरी आलोयणां आरोपी तेहकृत्स्नारोपणा २७ जेहने घणोजघणो अपराधलाग्योछे परंछमासी उपरात आलोयणनथी तोबीजा सग

२६ तथावह्ननपराधानापन्नस्य षण्मासांतंतेषु इतिषण्मासाधिकतपःकर्मतेष्वेवांतर्भाव्यंशेषांतर्भाव्यशेषमारोप्यते यत्र साअक्तत्स्नारोपणेत्यष्टाविंशतिरेतच्च सम्यग्निशीथविंशतितमोद्देशकावगम्यमत्रैवनिगमनमाह एतावास्तावदाचारप्रकल्प इहस्थानके आरोपणामाश्रित्यविवक्षितोऽन्यथा तद्व्यतिरेकेणापितस्यैत द्वातिकरूपस्यभावात् अथचैतावानेवायतावदाचारप्रकल्पः शेषस्यात्रैवांतर्भावात्तथापलालवत्तावदाचरितव्यमित्यपितथैव देवगतिसूत्रेस्थिरास्थिरयोः शुभा

एतावताव आयारकप्पे एतावताय आयुरियव्वे नव आरोवणा कसिणाआरोवणा अकसिणाआरोवणा एतावताआयारकप्पे एतावताय आयुरियव्वे ॥ भव सिद्धियाण जीवाणं अत्थेगइयाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स अट्ठावीसं कम्मंसासंतकम्मा प० तं० सम्मत्तवेअ णिज्जं मिच्छत्तवेयणिज्जं सम्ममिच्छत्तवेयणिज्जं सोलसकसाया णवणोकसाया आभिणिबोहिअणाणे अट्ठा

लायेंकर्म छमासीमांहि अंतर्भव्याछे एमजाणी छमासीप्रते आरोपीये तेअक्तत्स्नारोपणा १८ एतावता एतले आचार प्रकल्पनास्थानक आश्रीने एतलेश्रो आ चार आचरिवोकह्यो । जेहने सिद्धिमुक्ति होणारीछे तेभवसिद्धिका तेहजीवने केतलाएकने चौथामोहनीयकर्मनी अठ्ठावीस कर्मनाअंशकर्मनीप्रकृतिसत्ताये कही तेकहेछे । सम्यक्त वेदनीय सम्यक्तमोहनीय १ । मिथ्यात्व वेदनी मिथ्यात्वमोहनी २ । सम्यक्त मिथ्यात्व वेदनी एतले मिश्रमोहनी ३ । सोलकषाय अणता नुबंधी यादिक कषकही संसार तेहनोआय लाभहोय जेहथकी तेकषाय कषायसरीखूं फलदे तेहास्यादिकनव नोकषायकह्या सर्वमिली २८ प्रकृति मोह नी कर्मनी एहसघली २७ में ठाणेलिखीछे । आभिनिबोधिक ज्ञान ते मतिज्ञान अठ्ठावीसप्रकारेकह्यो तेकहेछे । श्रोत्रेंद्रियनो अर्थावग्रह अर्थनो सामान्य

शुभयोरादेयानादेययोश्चपरस्परंविरोधित्वेनैकदाबन्धभावादव्यभचरद्वशातोल्युक्तं तत्रचैकग दगृहणंभाषामात्रएवावसेयमिति नारकस्त्रेविंशतिस्ताएव प्रकृतयो

वीसइविहे प० तं० सोइंदियअत्थावग्गहे चक्खिंदियअत्थावग्गहे घाणिंदियअत्थावग्गहे जिब्भिंदियअत्थावग्गहे फासिंदियअत्थावग्गहे णोइंदियअत्थावग्गहे सोइंदियवंजणोग्गहे घाणिंदिअवंजणोग्गहे जिब्भिंदियवंजणोग्गहे फासिंदिअ वंजणोग्गहे सोतिंदियईहा चिक्खिंदियईहा घाणिंदियईहा जिब्भिंदियईहा फासिंदियईहा नोइंदियईहासोतिंदियावाए चक्खिंदियावाए घाणिंदियावाए जिब्भिंदियावाए फासिंदियावाए नोइंदियावाए सोतिंदिअ

प्रकारें गृहिवो तेअर्थावग्रह १ समयरहे १ चक्षुरिंद्रियकरी कांइक अर्थनो गृहिवो तेचक्षुरिंद्रियार्थावग्रह २। एम घ्राणेंद्रियार्थावग्रह ३। जिह्वेंद्रियार्थावग्रह ४। स्पर्शेन्द्रियार्थावग्रह ५। नोइंद्रियमन तेहनो अर्थावग्रह तेह नोइंद्रियार्थावग्रह ६। शब्दना पुद्गलआवी कानना इंद्रियमांहि भराइ तिवारपछी शब्दज्ञान उपजे तेश्रोत्रेंद्रिय व्यंजनावग्रह ७। गधपुद्गल नासिकामांहि आवी भराइ तिवारपछी गधज्ञान उपजे तेघ्राणेंद्रिय व्यंजनावग्रह ८। एम जिह्वेंद्रियव्यंजनावग्रह ९। स्पर्शेन्द्रियव्यंजनावग्रह १०। आंखीने अने मननोव्यंजनावग्रह नहोय तेमाटे ४ व्यंजनावग्रह जाणिवा। श्रोत्रेंद्रियेंकरी शब्दनेविषे ईहा देवी आलोचवो जेह पुरुषनो शब्दकेस्त्रीनो एहश्रोत्रेंद्रियईहा ११। आखेंकरी आलोचवो स्थाणुर्वापुरुषोवा एहचक्षुरिंद्रियईहा १२। एमघ्राणेंद्रियईहा १३ जिह्वेंद्रियईहा १४। स्पर्शनेंद्रियईहा १५। नोइंद्रियईहा १६। तेमनकरी आलोचवो। ईहा १ मुहूर्त्तलगेरहै। श्रोत्रेंद्रियावाय श्रोत्रेंद्रियेंकरी निश्चयकरिये ते श्रोत्रेंद्रियावाय १७। एम चक्षुरिंद्रियावाय तेखीलाने जपरिकागवइठो एखीलोज एहवो निश्चयार्थ तेचक्षुरिंद्रियावाय १८। इमघ्राणेंद्रियावाय १९। जिह्वें

धारणा चक्खिंदियधारणा घाणिंदियधारणा जिब्भिंदियधारणा फासिंदियधारणा नोइंदियधारणा ईसाणेणं कप्पे अट्ठावीसविमाणवाससहस्सा प० जीवेणदेवगइम्मिबंधमाणे नामस्सकम्मस्स अट्ठावीसंउत्तरपगडी उ णिबंधति तं० देवगतिनामं पंचिंदियजातिनामं वेउव्वियसरीरनाम तेयगसरीरनामं कम्मगसरीरनामं समचउरससठाणणामं वेउव्वियसरीरंगोवंगनामं वन्ननामं गंधनामं रसनाम फासनामं देवाणुपुव्विनामं अगुरुलहुनामं उवघायनामं पराघायनामं जसोनामं पसत्थविहायोगइनामं तसनाम बायरनामं पज्जत्तनामं

द्रियावाय २० । स्पर्शनेंद्रियावाय २१ । नोइन्द्रियावाय तेमनेंकरी निश्चयार्थकरिवो २२ । अवाय अर्द्धमुहूर्त्तरहै । पूर्वकाननेकरी शब्दसाभल्योहोय तेसांभलिये तेश्रोत्रेंद्रियधारणा २३ । नेत्रेंकरी संभारियै तेचक्षुरिंद्रिय धारणा २४ । एमज घ्राणेंद्रिय धारणा २५ । जिह्वेंद्रियधारणा २६ । स्पर्शनेंद्रियधारणा २७ नोइन्द्रियधारणा जेमनेकरीसंभारवो २८ । एहधारणा कालसख्याता असख्यातालगेंरहै । एहमतिज्ञानना २८ भेदकह्या। ईशान वीजे देवलोके अट्ठावीसलाखविमान भगवंतेकह्या । जीवदेवतानो भवबाधतोथको नामकर्मछठो तेहनी १०३ उत्तर प्रकृतिछे तेमांहियी २८ उत्तरप्रकृतिबाधै तेकहेछे । देवगतिनामकर्म १ । पचेंद्रिय जातिनाम २ । वैक्रियशरीर नाम ३ । तैजसशरीर नाम ४ कार्मणशरीर नाम ५ । समचउरंससंस्थान ६ । वैक्रिय शरीरांगोपांग ७ । वर्णनाम ८ गधनाम ९ । रसनाम १० । फरसनाम ११ । देवानुपूर्वीनाम १२ । अगुरुलघुनाम १३ । उपघातनाम १४ । पराघातनाम १५ । यशनाम १६ प्रशस्त विहायोगतिनाम १७ । त्रसनाम १८ । वादरनाम १९ । पर्याप्तनाम २० । प्रत्येकशरीरनाम २१ । स्थिर तथा अस्थिर एहबिहुमाहे अन्यतर अनेरो

पत्तेयसरीरनामं थिराथिराणंदोरहं अ्मयरंएगनामंणिबंधइ सुभासुभाणंदोरहं अ्मयरंएगनामंनिबंधइ सुभ गनामं सुस्सरनामं आइज्जअणाइज्जनामेणं दोरहंअ्मयरं एगंनामंणिबंधइ जसोकित्तिनामं निम्माणनामं एवंचेवनेरइयाविनाणत्तं अप्पसत्थविहायोगइनामं हुंडगसंठाणनामं अथिरनामं दुब्भगनामं असुभनामं दुस्स रनामं अणादिज्जनामं अजसोकित्तीणामं इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अठावी स पलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अठावीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अठावीसंपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं

एकनामबांधे २२ शुभतथा अशुभ एहबिहुमांहि एकबांधे २३ । शुभगनाम २४ । सुस्वरनाम २५ । आदेयनाम अनादेयनाम एहविहुबांहे एकनामबांधे २६ यशकीर्त्तिनाम २७ । निर्माणनाम २८ । एमज जीवनरक गतिनो बंधकरतो एहीज २८ नाम कर्मनी प्रकृतिनो बंधकरे । एतलो विशेषे जाणिवो इहां अप्र शस्त विहायोगतिनाम १ । हुंडकसस्थान २ । अस्थिरनाम३। दुर्भगनाम ४। अशुभनाम ५। दुस्वरनाम ६ । अनादेयनाम ७। अजस अकीर्त्तिनाम ८ । नरक गती ९ । नरकानुपूर्वी १० । एह १० प्रकृति बीजी प्रकृति १८ देवगतिमांहिली लीजे एतले २८ प्रकृति नरकगतियें नामकर्मनी होय । एणीयें रत्नप्रभा प हिली नरक पृथिवीनेविषें केतलाएक नारकीनो अठावीस पल्योपम आउखोकह्यो । नीचे सातमी पृथिवीनेविषें केतलाएक नारकीनो अठावीस सागरोपम आउखोकह्यो । असुरकुमार देवतानो केतलाएकनों अठावीस पल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्म ईशान देवलोकने विषें केतलाएक देवतानो अठावीस

ऽष्टानांतुस्थाने अष्टावल्यावध्नातिएतदेवाह एवंचेवेत्यादि नानात्वविशेषः ॥ २८ ॥ एकोनत्रिंशत्तमस्थानकमपिव्यक्तमेव नवरं नवेहसूत्राणि स्थितेःप्राक् तत्रपापोपदानानिश्रुतानि तेषांप्रसंगस्तथासेवनारूप. पापश्रुतप्रसगः। सचपापश्रुतानामेकोनत्रिंशद्विधत्वात् तद्विधउक्तः पापश्रुतविषयतया

अत्थेगइयाणं अठावीसंपलिओवमाइं ठिई प० उवरिम हेठिम गेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं अठावीसंसा गरोवमाइं ठिई प० जेदेवा मज्झिम उवरिम गेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाण उक्कोसेण अठावीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा अठावीसाए अद्धमासेहि आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिण देवाणं अठावीसाए वाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसि द्धियाजीवा जेअठावीस भवग्गहणेहि सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतकरिस्संति ॥ २८ ॥ एगूणतीसइविहेपावसुयपसंगेणं प० तं। भोमे उप्पाए सुमिणे अं

पल्योपमनी स्थितिकही। उपरिम हेठिम एतले सातमे ग्रैवेयक विमाने देवतानी जघन्य २८ सागरोपमनी स्थितिकही। मध्यम उपरिम एतले सातमे छठेग्रैवेयक विमाने जेदेवतापणे उपनाछे तेदेवतानी उत्कृष्टी अठावीस सागरोपमनी स्थितिकही। तेदेवता अठावीस पखवाडे सासोस्वास उंचोले घणोले नीचोमेले तेदेवतानें अठावीस वर्षसहस्रगयें आहारनी वछाउपजे। छेकेतलाएक भव्यजीव जेअठाईस भवनें आंतरे सीझस्यें बूझस्यें मूंकास्यें सर्वदुःखनो अंतकरस्यें मोच जास्यें अठावीसमो समवाय पूर्णथयो ॥ २८ ॥ हिवे गुणतीसमो समवाय लिखियेछे। उगुणतीस प्रकारें पापश्रुत पापनाकारण जेहश्रु

पापश्रुतान्येवोच्यतेऽतएवाह भोमेइत्यादि तत्रभौमं भूमिविकारफलाभिधानप्रधान निमित्तशास्त्रं तथाउत्पातं सहजरुधिरवृष्ट्यादिलक्षणोत्पातफलनिरूपकं निमित्तशास्त्रं एवस्वप्नं स्वप्नफलाविर्भावकं अन्तरिक्षमाकाशप्रभवगृहयुद्धभेदादिभावफलनिवेदक अंगशरीरावयवप्रमाणस्फुरितादिविकारफलोद्भावकं स्वरंजीवाजीवाश्रितस्वरस्वरूपफलाभिधायकं व्यञ्जनंमषादिव्यंजनफलोपदेशकं लक्षणं लाञ्छनाद्यनेकविधलक्षणव्युत्पादक मित्यष्टावेतान्येवसूत्रवृत्तिवार्त्तिकभेदाच्चतुर्विंशतिः तत्रागवर्जितानामन्येषां सूत्रं सहस्रप्रमाणं वृत्तिर्लक्षप्रमाणावार्त्तिकवृत्तेर्व्याख्यानरूपकोटिप्रमाण मंगस्यतुसूत्रंलक्षणवृत्तिःटीकावार्त्तिकमपिपरिमितमिति तथाविकथानुयोगोऽनर्थकामोपायप्रतिपादमपराणि कामन्दकवात्स्यायनादीनि भारतादीनिवाशास्त्राणि २५ तथाविज्जानुयोगोरोहिणीप्रभृतिविद्या

तरिक्खे अंगे सरे वंजणे लक्खणे भोमेतिविहे प० तं० सुत्ते वित्ती वत्तिए एवंएक्केक्कातिविहं विकहाणुजोगे

तशास्त्र तेपापश्रुत तेहनोप्रसंग सेवारूप तेपापश्रुतप्रसंग कह्या । तेकहेछे । भौमशास्त्र जेभूमिकंपादिका फलनो सूचकशास्त्र १ । उत्पातशास्त्र जेआकाशथी रुधिर वृष्ट्यादि लक्षण उत्पात तेहनां फलनो सूचक २ । शुभाशुभ स्वप्न फलनो सूचक शास्त्र ३ । अंतरिक्ष आकाशथी जपनो गृहादिकनो युद्ध तेहनो फल सूचक ४ । अगफुरकण विचारसूचक शास्त्र ५ । जीवना स्वरस्वरूप फलसूचक स्वरशास्त्र ६ । व्यजनमसतिलक फलसूचक ७ । लक्षण सामुद्रिका शास्त्र ८ । प्रथम भौमशास्त्र कह्यो तेत्रिहुभेदे कहेछे । सूत्र १ । वृत्ति २ । वार्त्तिक ३ । भेदेंकरी एमजपूर्वें आष्टांग निमित्तकह्यो तेत्रिणभेदे । एवं सर्वमिली २४ भेदथया विकथानुयोग अर्थकामना उपायशास्त्र व्यासायन कोकशास्त्रादिक २५ । विद्यानुयोग रोहिणी प्रज्ञप्त्यादि विद्यासाधन शास्त्र २६ । मंत्रानुयोग चेडादि

साधनाभिधायकानिशास्त्राणि २६ मंत्रानुयोगश्चेटकादिमन्त्रसाधनाभिधायकानिशास्त्राणिपापशास्त्राणि २७ योगानुयोगो वशीकरणादिकानि हरमेखलादि योगाभिधायकानिशास्त्राणि २८ अन्यतीर्थिकेभ्यः कापिलादिभ्य' सकाशाद्य.प्रवृत्तः स्वकीयाचारवस्तुतत्वानामनुयोगो विचारस्तत्करणार्थं शास्त्रसन्दर्भइत्यर्थ. सोऽन्यइति २९ तथाषाढादयएकांतरिताषण्मासा एकोनत्रिंशद्रात्रिदिवसपरिमाणिनभवन्ति स्थूलन्यायेनलक्षणपचे प्रत्येकरात्रिदिवसस्यैकस्यक्षयादाहच। आसाढब हुलपक्खे भद्दवएकत्तिएयपोसेय फग्गुणवइसाहेसुय बोधव्वाओमरत्ताओत्ति १ इयमत्रभावना चन्द्रमासोहि एकोनत्रिंशद्दिनानि दिनस्यचद्विषष्टिभागाना द्वात्रिंशत् ऋतुमासश्च त्रिंशदेवदिनानिभवन्तीति चन्द्रमासापेक्षया ऋतुमासाऽहोरात्रिषष्टिभागाना त्रिंशतासाधिकोभवति ततश्चप्रत्यहोरात्रं चद्रदिनमेकैकेनद्विषष्टि

विज्जाणुजोगे मंताणुजोगे जोगाणुजोगे अन्नतित्थियपवत्ताणुजोगे आसाढेणंमासे एगूणतीसराइंदिआइरा इंदियग्गेण प० भद्दवएणंमासे कत्तिएणंमासे पोसेणंमासे फग्गुणेणमासे वइसाहेणंमासे मासोचंददिणाणं

कमन्त्रसाधनोपायशास्त्र २७। योगानुयोग योग वशीकरणोपायादिशास्त्र हरमेखलादि २८। अन्यतीर्थिकप्रवृत्तानुयोग अन्य तीर्थी कपिलादिक थी प्रवर्त्यो पोतानो आचार तेहनो अनुयोग मिथ्यात्वीना शास्त्रसमूह अर्थ २९ । आसाढमास गुणत्रीस रात्रिदिवसनो २९ रात्रीदिवस परिमाणे पूरोथाय एकतिथि अधारा पखवाडानी घटे एम एकांतरित छेपखवाडा गुणतीस रात्रिदिवसना थाय। यदाह ॥ आसाढबहुलपक्खे । भद्दवएकत्तिएअपोसेअ ॥ फग्गुणवेसाहेसुअवोधव्वाओमरत्ताओ ॥ १ ॥ भाद्रवो मास २९ रात्रिदिवसनों। कार्तिक मास २९ रात्रि दिवसनो । पोसमास २९ रात्रि दिवसनो। फागुणमास २९ रात्रिदिवसनों। वैशाखमास २९ रात्रिदिवसनो। चद्रदिवस पडिवातिथि एगूणत्रीसमुहूर्त्त झांझेरानो २९ मुहूर्त्तनों कह्यो। जीवभला

ठिभागेनहीयते इत्यवसीयते एवंद्विषष्ठ्याचंद्रदिवसानामेकषष्ट्यहोरात्राणांभवतीति विशेषस्त्विहचद्रप्रज्ञप्तेरवसेयइति तथाचन्द्रदिणेणंति चंद्रदिनं प्रतिपदादि कातिथिः तच्चैकोनत्रिंशन्मुहूर्त्ताः सातिरेकमुहूर्त्तपरिमाणेनेति कथंयत. किलचंद्रमासएकोनत्रिंश'द्दिनानि-ात्रिंशच्चदिनद्विषष्ठिभागाभवन्ति ततश्चंद्रदिनं चद्र मासस्यत्रिंशतागुणनेनमुहूर्त्तराशीकृतस्यत्रिंशताभागहारे एकोनत्रिंशन्मुहूर्त्ता द्वात्रिंशच्चमुहूर्त्तस्यद्विषष्ठिभागालभ्यतइतिजीवः प्रशस्ताध्यवसानादिविशेषे णवैमानिकेषुत्पत्तुकामोनामकर्मण एकोनत्रिंशदुत्तरप्रकृतीर्वध्नाति ताश्चेमाः देवगतिः १ पचेंद्रियजाति' २ वैक्रियद्वय ४ तैजसकार्मणशरीरे ६ समचतु रस्रसंस्थानं ७ वर्णादिचतुष्कं ११ देवानुपूर्वी १२ अगुरुलघुः १३ उपघात १४ पराघात १५ उच्छ्वास १६ प्रशस्तविहायोगतिः १७ त्रस १८ बादरं १९ पर्याप्त २० प्रत्येक २१ स्थिरास्थिरयोरन्यतरत् २२ शुभाशुभयोरन्यतरत् २३ सुभग २४ सुस्वर २५ आदेयानादेययोरन्यतरत् २६ यशः कीर्त्तिः २७ निर्माणं २८ तीर्थ

एगूणतीसंमुहुत्ते सातिरेगेमुहुत्तगेणं प० जीवेणपसत्थज्झवसाणजुत्ते भविएसम्मदिठी तित्थकरनामसहियाउ णामस्सणियमा एगूणतीसउत्तरपगडीउनिबंधित्ता वेमाणिएसु देवेसु देवत्ताए उववज्जइ इमीसेणं रयणप्प

अध्यवसाय युक्तथको भव्यक सम्यग्दृष्टि तीर्थंकर नामकर्म सहित नामकर्मनी निश्चें २९ उत्तर प्रकृति बांधीने वेमानिक देवतानेंविषें देवतापणे उपजे। ते कहेछे। देवगति १। पचेंद्रिय जाति २। वैक्रिय शरीर ३। वैक्रियांगोपांग ४। तेजस ५। कार्मण ६। समचउरससंस्थान ७। वर्ण ८। गंध ९। रस १०। स्पर्श ११। देवानुपूर्वी १२। अगुरुलघु १३। पराघात १४। उपघात १५। यशनाम १६। प्रशस्तविहायोगति १७। त्रस १८। बादर १९। पर्याप्त २०। प्रत्येक २१। स्थिर अस्थिर मांहियेक २२। शुभ अशुभ मांहियेक २३। शुभग २४। सुस्वर २५। आदेय अनादेय मांहियेक २६। यशः कीर्त्ति २७। निर्माण

भाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसंपलिओवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं
नेरइयाणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराण देवाण अत्थेगइयाणं एगूणतीसंपलिओवमाइं
ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई प० उवरिम मज्झिम
गेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं एगूणतीस सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा उवरिम हेठिम गेवेज्जयविमाणेसु
देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं एगूणतीस सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा एगूणतीसाए अ
द्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिण देवाणं एगूणतीसं वाससहस्सेहिं
आहारट्ठे समुप्पज्जइ सतेगइया भवसिद्धिया जीवा जेएगूणतीसभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मु

२८। तीर्थंकरनामकर्म २९। एणीये रत्नप्रभा पहिली नरक पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो २९ पल्योपमनो आउखो कह्यो। हेठें सातमी पृथिवीयें केतलाएक नारकीनों २९ सागरोपमनो आउखो कह्यो। असुरकुमार केतलाएक देवतानी गुणत्रीस पल्योपमनी स्थितिकही। सौधर्म ईशानकल्पें केत लाएक देवतानों २९ पल्योपम आउखोकह्यो। उपरिम मध्यम ग्रैवेयके एतले आठमें ग्रैवेयके देवतानी जघन्यत २९ सागरोपमनी स्थितिकही। जेहदेव ता उपरिम हेठिम ग्रैवेयकें एतले सातमे विमाने देवतापणे ऊपनाछे तेदेवतानी उत्कृष्टी २९ सागरोपमनी स्थिति कही। तेहदेवताने २९ पखवाडे सासो सास च्यार प्रकारेहोय। तेहदेवताने २९ सहस्रें वर्षेगए आहारनी इच्छा उपजे। छे केतलाएक भव्यजीव जे २९ भवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये स

कारवेति ॥ २८ ॥ त्रिंशत्तमस्थानकंसुगमं नवरं स्थितेरर्वागष्टौसूत्राणि तत्रमोहनीयंसामान्येनाष्टप्रकारं कर्मविशेषतश्चतुर्थीप्रकृतिः तस्यस्थानानिनि
मित्तानि मोहनीयस्थानानि तथाश्रावितसेत्यादिश्लोकः यश्चायंत्रसान्प्राणान्स्त्र्यादीन् वारिमध्येविगाह्य प्रविश्योदकेन शस्त्रभूतेनमारयति कथमाक्रम्यपादा
दिनासइतिगम्यते मार्यमाणस्यमहामोहोत्पादकत्वात्संक्लिष्टचित्तत्वाच्चभवशतदुःखवेदनीयमात्मनोमहामोहंप्रकरोति १ तदेवभूतंत्रसमारणेनैकं मोहनीय
स्थानमेवसर्वत्रेति १ सीसाश्लोकः शीर्षवेष्टेनार्द्रचर्मादिमयेनयः कश्चिद्वेष्टयतिस्त्र्यादित्रसानितिगम्यते अभीक्ष्णभृशन्तीव्रोऽशुभः समारःसइति इत्यस्यगम्यमानत्वा
त्समार्यमाणस्य महामोहोत्पादकत्वेनआत्मनो महामोहंप्रकुरुतइति यावत्करणात् केषुचित्सूत्रपुस्तकेषु शेषमोहनीयस्थानाभिधानपराः श्लोकाः सूचिताः केषु

ज्झिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २९ ॥ तीसमोहणियठाणा प० तं० । जेयावितसेपाणे । वारिमज्झेविगाहिया ॥ उदएणक्कम्ममारेई । महामोहंपकुव्वइ ॥ १ ॥ सीसावेढेइजेकेई ।

सारना परितापथी ठांढायासे सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये । इति गुणत्रीसनो ठाणो समत्तम् ॥ २८ ॥ हिवे त्रीसमो ठाणो लिखियेछे
त्रीस मोहनीकर्मना ठाणाकह्या । तिहां सामान्येंकर्म आठप्रकारना विशेषथी चतुर्थकर्मप्रकृति तेमोहनीयकर्म तेहना स्थानक त्रीसकह्या। तेकहेछे । जेकोइ
स्त्रीआदिक त्रस प्राणीने पाणीमांहे बोलीने उदक शस्त्रें करीने आक्रमें तेमहामोहनीय कर्मबांधे । भवनाशतसहस्रलगें वेदनीयकर्म उपार्जै १ । शीर्षा
वेष्ठनेकरी चर्ममय बाधेंकरी जेकोइ प्राणीनो मस्तक अत्यर्थें वींटे तीव्र अशुभ समाचारनो धणी आगला मारतानें महामोह उपजाविवा पणाथकी आत्मानें

अंतर्नदंगलमध्येरवंकुर्वंतं
चि ट्टएंत एवेतिते याख्यायन्ते २ पाणिना हस्तेनसंपिधाय स्थगयित्वा गिंतत् श्रोत्रोरंधंमुखमित्यर्थः तथाप्राद्यत्यावरूध्य प्राणिनंततः
घुरुघुरायमाणमित्यर्थः मारयतिसइतिगम्यते महामोहंप्रकरोतीतितृतीयं २ जाततेजसवैश्वानरं समारभ्यप्रज्वाल्यबहुप्रभूतं अवरुध्यमहामण्डपवाटादिपुप्रचि
प्रजनलोकं अतर्मध्येधूमेनां वह्निलिंगेन अथवा अतर्धूमोयस्यासावंतर्धूमस्तेनजाततेजसा विभक्तिपरिणामात् मारयति योसौमहामोहंप्रकरोतीति चतुर्थं ४
शीर्षेशिरसियः प्रहृतिखड्गमुद्गरादिना प्रहरतिप्राणिनमितिगम्यते किंभूतेस्वभावतः शिरसिउत्तमांगे सर्वावयवानां प्रधानावयवे तद्विघातेऽवश्यंमरणा चेतसा

पाणिणासंपहित्ताणं । सयंाचरियपा आवद्धेइआन्निरुकणं ॥ तिव्वासुभसमायारे । महामोहंपकुव्वइ ॥ २ ॥ जायतेयंसमारब्भ । बहुंओरुंभियाजणा ॥ अंतोधूमेण मारेइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३ ॥ सीसम्मिजेपहणइ । उत्तमंगम्मिचेयसा ॥ विभज्जमत्थयंफाले । महामोहंपकुव्वइ ॥ ४ ॥ पुणोपुणोपणिधिए । हरित्ताउवहसेजणं ॥ फलेणअदुवदंडेणं । महामोहंपकुव्वइ ॥ ५ ॥ गूढा

मारे तेमहामोहनीय कर्मउपार्जे २ । जाततेजा महामोह उपार्जे २ । हाथेंकरी आगलानो मुखरूंधी आच्छादीभीचोनें गलामांहि घुर्घुराट शब्दकरताथकानेंमारे तेमहामोहनीय कर्मउपार्जे ३ । जेप्राणी दुष्टपरिणामे करी प्राणी अग्नि बलीत प्रज्वालीने वाडादिकनें अवरूंधीने रोकीने अती मंडपादिकमां धूमेंकरी मारे तेमहा मोहनीय कर्मकरे ४ । जिना उत्तमांगनें माथानेविषे खड्गादिकेंकरी मारे विहचीनेमस्तकनें काटीने मारे तेपुरुष महामोहनीयकर्म उपार्जे ५ । पुनः पुनः वारंवार कपटें करीनें मवाटपाडा वाणियांनो वेशकरीने मार्गे परने साथेचालीनेमारे मारीनें आनंदपणाथकी उपहसे विजोरादिका फलेकारी अथवा दंडेकारी हन्यमान मूर्खज

संक्लिष्टेनमनसा यथाकथंचिदित्यर्थः तथाविभज्यमस्तकं प्रकृष्टप्रहारदानेन स्फोटयतिविदारयति ग्रीवादिकं कायादपोतिगम्यते सइत्यस्यगम्यमानत्वात् मह मोहप्रकरोतीतिपंचम ५ पोनःपुन्येनप्रणिधिनामायातः यथा २ वणिजकादिवेषं विधाय गलावर्त्तकाःपथिगच्छतासहगत्वा विजनेमारयति तथाहत्वा विना श्यइतिगम्यते उपहसेत् आनन्दातिरेकात् जनमूर्खलोकं हन्यमान केनहत्वा फलेन योगविभावितेनमातुलिंगादिना अथवा तथादण्डेन प्रसिद्धेन सइतिगम्यते महामोहप्रकरोतीतिषष्ठ ६ गूढाचारीप्रच्छन्नाचारवान् निगूहयतेगोपयेत् स्वकीयप्रच्छन्नंदुष्टमाचारं तथामायापरकीयां माययास्वकीययाच्छादयेत् यथा शकुनिमारकाश्छदैरात्मानमावृत्यशकुनीन् गृह्णन्तः स्वकीयमायया शकुनिमायांछादयन्ति । तथाअसत्यवादीनिह्नवी अपलापकः स्वकीयायामूलगुणोत्तर गुणप्रतिसेवायाः सूत्रार्थयोर्वामहामोहप्रकरोतीति सप्तमं ७ ध्वंसयतिमाययानाशयति इतिय: पुरुषोभूतेनासद्भूतेनक अकर्मकमविद्यमानदुश्चेष्टित आत्मकर्मणा लक्षना ऋषिघातादिना दुष्टव्यापारेण अदुवा अथवायदात्मनः कृतंतदाश्रित्य परस्यसमक्षेसचत्वमकार्षीरिव तन्महापापमिति वदति वदिक्रियायोगः गस्य

यारीनिगूढिज्जा । मायंमायाएछायए ॥ असच्चवाईणिण्हाई । महामोहंपकुव्वइ ॥ ७ ॥ धंसेइजोअभूएणं । अ

ननें हसें ते महामोहनीयकर्म उपार्जन करे ६ । गुप्तछे आचार कपट जेहनो तेगूढाचारी पोतानुं प्रच्छन्न दुष्टाचारप्रतें गोपवे परनी मायाप्रते पोतानी माया करीढांके असत्यवादी भूंठबोलिवो मूलगुण उत्तरगुण खंडीने गोपवे ते महामोहनीयकर्म उपार्जे ७ । नथी चेष्टितहेकर्म जेहनों एहवा पुरुषप्रते पोताना कीधा ऋषिघातादिक अणहुते कर्मकरीमारें अथवा पोतानुं कीधुं कर्म तेहने आश्रयणकरी परसमक्षेकहे जे एह खोटोकर्म एहनेहीज कीधो तेमहा मोहनी

मानत्वात् सद्भूत्यस्यापि गम्यमानत्वात् महामोहंप्रकरोतीत्यष्टम ८ जानानः यथा अनृतमेतत्परिषदः सभायांबहुजनमध्येइत्यर्थः सत्यामृषा किंचित्सत्यानि बहू स यानिवस्तूनि मायानिवाभाषते अक्षीणझंझः अनुपरतकलह' यःसइतिगम्यते माहामोहम्प्रकरोतीति नवमः९ अनायकोऽविद्यमाननायको राजातस्यनयवान् नीतिमानमात्यः सतस्यैवराज्ञोदारान् कलत्र दारवा अर्थागमस्योपाय ध्वंसयित्वा भोगभोगान् विदारयतीति संबध किंकृत्वा विपुल प्रचुरमित्यर्थः विक्षोभ्य सामतादिपरिकरभेदेन सक्षोभनादनायक तस्यक्षोभजनयित्वेत्यर्थः कृत्वाविधाय णमित्यलंकारे । प्रतिवाह्या मनधिकारिणीं दारेभ्योऽर्थागमद्वारेभ्यो वादार न् राज्यवास्वयमधिष्ठायेत्यर्थः । तथाउपगतमपि समीपमागच्छतमपि सर्वस्वापहारेकृते प्रावृतेना तुल्योपसैः करुणैर्वचनैरनुकूलयितुमुपस्थितमित्यर्थः झ पयित्वाऽनिष्टवचनावकाशकृत्वा प्रतिलोमाभिस्तस्य प्रतिकूलाभिर्वाग्भि वंचनै रेताद्दशस्तादृशस्त्वमित्यादिभिरित्यर्थ' भोगभोगान् विशिष्टान् शब्दादीन्

कम्मंअत्तकम्मगा ॥ अदुवातुममकासित्ति । महामोहंपकुव्वइ ॥ ८ ॥ जाणमाणोपरिसन्ज । सच्चमोसाइंभासइ अक्खीणझंझेपुरिसे । महामोहपकुव्वइ ॥ ९ ॥ अणायगस्सनयवं । दारंतस्सेवधंसिया ॥ विउलंविक्खोभइत्ताणं

यकर्म उपार्जे ८ । जाणतोथको पर्षदामांहि बेसीने सत्यामृषा काइक साची काईएक झूंठी वाणीबोलेकलहथको ओसस्योनथी निवर्त्यो नथी तेपुरुष महामो हनीयकर्म उपार्जे ९ । नथी विद्यमान जेहनो नायकराजा तेहवा राज्यना नयवंत अमात्यमंत्री तेहराजाना दारा कलत्रप्रति अथवा अर्थआयवाना उपाय प्रति ध्वंसे विनसाडे स्युं करी ध्वंसे प्रचुर सामतादिकप्रति विक्षोभीने भेदपाडीने वली करीने स्यूं करीने कलत्रथको अथवा अर्थागमद्वारथको लेवाने योग्य नथी एहवो राज्य लक्ष्मीयें पोतेज अधिष्ठान करीने तथा समीपें आवताने एतले सर्वधन लीयेंथके दीनस्वरेकरी चाटुवचनबोलतो एहवाने झांपीने सामो

विदारयतियोसौमहामोह प्रकरोतीतिदशम१० अकुमारभूतो ऽकुमारब्रह्मचारीसन् यः कश्चित् कुमारभूतोहं कुमारब्रह्मचारी अहमिति वदति अथचस्त्रीषु गृद्धोवसकस्त्रीणा मेवायत्तइत्यर्थः अथवावसतिआस्ते समहामोहप्रकरोतील्येकादश ११ अब्रह्मचारी मैथुनादनिवृत्तोयः कश्चित्तत्कालएवासेव्याब्रह्मचर्य ब्रह्मचारी साप्रतमित्यतिधूर्त्ततया परप्रपंचनायवदति तथाच एवमशोभावह सतामनादेय भणन् गर्दभइवगवामध्ये विस्वरंनवृषभवन्मनोज्ञ नदतिमुञ्चति नदंनादशब्दमित्यर्थः तथायएवंभणन्नात्मनोऽहितो नहितकारी वालोमूढो मायामृषावादशाठ्यानृत प्रभूतभाषते यश्चैवंनिदितभाषते कया स्त्रीविषयगृद्धा

किच्चाणपडिवाहिरं ॥ १० ॥ उवगंतपिऊपिचा । पडिलोमाहिवग्गुहिं ॥ भोगभोगेवियारेइ । महामोहंप कुव्वइ ॥ ११ ॥ अकुमारभूएजेकेइ । कुमारभूएत्तिहंवए ॥ इत्थीहिगिद्धेवसए । महामोहंपकुव्वइ ॥ १२ ॥ अबंभयारीजेकेइ बंभयारीत्तिहंवए ॥ गद्दहेव्वगवंमज्झे । विस्सरंनयईनदं ॥ १३ ॥ अप्पणोअहिएवाले । माया

ओसियालो करीने प्रतिकूलवचने करी रे तूं एहवो नीचछे एहवा वचनेंकरी भोग विशिष्ट शब्दादिकनें भोगविवाने अर्थे विदारे छे तेमहामोहनीय कर्म करे १० । नथी कुमार भूत एतले परण्या छे जेकोई लोकमाहि हु कुमारभूतछु एतले बालब्रह्मचारी छुं छूं एहवूं कहे वली स्त्रीसाथें गृद्ध लोलुप वली स्त्री ने आधीन अथवा स्त्रीसाथेंवसे ते महामोहनीयकर्मकरे ११ । अब्रह्मचारीथको जेकोई लोकमाहि हु ब्रह्मचारी एतले मैथुन विरत छूं एहवो कहे ते शोभा रहित साधुजनने अग्राह्य गर्दभनीपरे गायना टोलामा वृषभनीपरें मनोज्ञ नथी एहवो शब्दकरे बोले एहवो जे बोले ते आपणा आत्मानो अहितकारी अ ने बाल अज्ञानी स्त्रीसाथे लपट थईने माया सहित मृषा घणू बोले ते महामोहनीय कर्मकरे १२ । जेराजादिकप्रति आश्रितहोइ जीविकाने लाभेकरी

हेतुभूतया सद्दस्थभूतीमहामोहप्रकरोतीति द्वादशं १२ यंराजानराजामात्यादिकं वा निश्रितश्राश्रितउद्दहते जीविकालाभेनाश्मानधारयति कथयश्रसातस्य राजादे. सत्कीयमितिप्रसिद्धाश्रभिगमनेन वासेवया आश्रितराजादे स्तस्यनिर्वाहकारणस्य राजादेर्लुभ्यतिवित्तेद्रव्येयः समहामोहप्रकरोतीति त्रयोदश १३ ईश्वरेणप्रभुणा श्रदुवा अथवा ग्रामेणजनसमूहेन अनीश्वरईश्वरीकृत' तस्यपूर्वावस्थायाश्रनीश्वरस्य संप्रग्टहीतस्य पुरस्कृतस्य प्रश्वादिनाश्रीर्लक्ष्मीरतुलाश्रसाधार णाश्रागताप्राप्ता अतुलवायथाभवतीत्येव श्रोः समागता श्रागता श्रीकश्चप्रश्वाद्युपकारकविषये ईर्ष्यादोषेणाविष्टोयुक्त कलुषेण द्वेषलोभादिलक्षणपापेनाविल माकुलवाचेतोयस्य सतथा यो तरायव्यवच्छेदं जीवितश्रीभोगाना चेतयतेकरोति प्रश्वादे रसौमहामोहप्रकरोतीति चतुर्दश १४ पर्पीनागीयथाश्रगडउड

मोसंबद्धजसे ॥ इत्थीविसयगेहीए । महामोहंपकुव्वइ ॥ १४ ॥ जंनिस्सिएउव्वहइ । जससाहिगमेणवा ॥ तस्सलुप्पइवित्तम्मि । महामोहंपकुव्वइ ॥ १५ ॥ ईसरेणश्रदुवागामेणं । श्रणिस्सरेईसरीकए ॥ तस्ससपग्गहीग स्स । सिरीश्रतुलमागया ॥ १६ ॥ ईसादोसेणश्राविठे । कलुसाविलचेयसे ॥ जेश्रंतराश्रंचेएइ । महामोहपकु

श्रात्मानेधारे अने राजसबंधनी प्रसिद्धियकी तथा सेवायकी तेश्राश्रित राजाना धननेविषे लोभकरे तेमहा मोहनीय कर्मकरे १३। ईश्वरें ठाकुरें अथवा ग्रामे जनसमूहें अनीश्वरहुती तेईश्वरकीधो असमर्थहुतो तेसमर्थकीधो ते जेपूर्वें अनीश्वरहुतो सपदा रहितहुतो तेहने ठाकुरादि प्रसादेकरी श्रीलक्ष्मी अतुल असा धारण आवी पामीछे जेहनेते उपकारी मूलगो ठाकुर तेहनेविषे ईर्ष्यादोषें मच्छरदोषेकरी आविष्ट सहित द्वेष लोभादिकलक्षण पापेंकरी आकुल व्याप्यो छे चित्त जेहनो एहवो जेकोइ उपकारी प्रभुने अंतरायप्रति चेतेकरे तेहनी आजीविकानो विछेदकरे ते महामोहनीय कर्मकरे १४। सर्पिणी जिम पोता

अण्डकाकूट स्वकीयमण्डकसमूहमित्यर्थः अण्डस्यवापुटंसवउदलद्वयरूपंहिनस्ति एवंभर्त्तारंपोषयितार योविक्निनस्ति सेनापतिंराजानं प्रशास्तारममात्यं धर्मपाठकवासमहामोहंप्रकरोतीति तन्मरणेवहुजनदुस्थताभवतीति पंचदश १५ योनायकंवाप्रभुराष्ट्रस्यराष्ट्रमहत्तरादिकमितिभावः नेतार प्रवर्त्तयितारं प्रयोजनेषु निगमस्यवाणिजकसमूहस्य कश्रेष्ठिनश्रीदेवताङ्कितपट्टवद्धाकितभूत वहुरवभूरियशष्ट प्रभुतरयशसमित्यर्थः हत्वा महामोहम्प्रकुरुतेइतिषोडश १६ वहुजनस्यपचषादौनालोकाना नेतारंनायकं द्वीपइवद्वीप ससारसागरगतानामाश्वासस्थान अथवादीपइवदीपो ऽज्ञानाधकाराहतवुद्दिदृष्टिप्रसराणा शरीरिणाहेयोपादेयवस्तुस्तोमप्रकाशकत्वात् त अतएवत्राणमापद्रचणंप्राणिना एतादृश याद्गणधरादयोभवंति नरं प्रावचनिकादिपुरुष हत्वामहामोहम्प्रकरोतीति सप्तदश

वइ ॥ १७ ॥ सप्पीजहाअंडउडं । भत्तारंजोविहिंसइ ॥ सेणावइपसत्थारं । महामोहंपकुव्वइ ॥ १८ ॥ जेनायगंचरठस्स । नेयारंनिगमस्सवा ॥ सेठिंवज्जरवंहंता । महामोहंपकुव्वइ ॥ १९ ॥ वज्जज [illegible]स्सनेयारं । दीवंताणचपाणिणं ॥ एयारिसंनरंहंता । महामोहंपकुव्वइ ॥ २० ॥ उवठियंपडिविरयं । जेनिरकुं [illegible]गजीवणं ॥

ना ईण्डानापुट समूह हणेमारे। तिम पोताना भर्तार पोषकने हणेमारे सेनापतिने राजायें प्रशस्त प्रधानने धर्मशास्त्रपठिकने हणेमारे तेमहामोहनीय कर्म करे १५। जेकोइ राष्ट्रना देशना नायकने तथा निगम वणिक्समूह तेहना नेताने प्रवर्त्तकने तथा श्रेठि नगरमुख्य लक्ष्मीअंकित पट्टवद्ध तथा वणायशनो धणी एहवाने हणेमारे ते महामोहनीय कर्मकरे १६। बहुजननो घणालोकनो नेता नायकहोइ एहवाने तथा द्वीपसरीखा संसारसागरमा आश्रयभूत आपदाथकी रचक एहवा प्राणीने हणे ते महामोहनीय कर्मकरे १७। प्रव्रज्यानेविषे उपस्थित सावधान थयोछे तथा सर्वसावद्य थकी निवर्त्यो जे कोइ

१७ उपस्थितप्रव्रज्यायांप्रविव्रजिषुमित्यर्थः प्रतिविरत सावद्ययोगेभ्योनिवृत्तं प्रव्रजितमेवेत्यर्थ. सयतंसाधुसुतपस्विनं तपांसिकृतवंतंशोभनंवातपः श्रितमा श्रित क्वचित् जेभिक्खुजगजीवणतिपाठः तत्रजगन्ति जगमानि अहिंसकत्वेनजीवयतीति जगज्जीवनस्त विविधैः प्रकारैरुपक्रम्य बलादित्यर्थः धर्माच्युतचा रित्रलचणाद्भ्रंशयतियः समहामोहम्प्रकरोतीति अष्टादशं १८ यथैवप्राक्तान मोहनीयस्थान तथैवेदमपि अनतज्ञानिना ज्ञानस्यानतविषयत्वेन अच्चयत्वेनवाजि नानामर्हता वरदर्शिनां चायिकदर्शनत्वात् तेषा येज्ञानाद्यनेकातिशयसपदुपेतत्वेनभुवनत्रयेप्रसिद्धाः अवणवअवर्णवादीवक्ताव्यत्वेनयस्यास्तिसो ऽवर्णवान् यथाना स्तिकवान् सर्वज्ञोज्ञेयस्यानतत्वात् उक्तंच अज्जविधावइनाणं गज्जवियअणतओअलोगोवि अज्जविनकोइविउहं पावतिसव्वसुयंजीवो अक्ख्यावतितोसभोहोइ अ लोउनवेयमठतित्ति अद्रूपणचैतदुत्पत्तिसमयएव केवलज्ञान युगपल्लोकालोकौ प्रकाशयदुपजायते यथापवरकातर्वर्त्तिदीपकशिखापवरकमध्यमित्यभ्युपगमा दिति बालोऽज्ञोमहामोहं प्रकरोतीति एकोनविंशतितम १९ नैयायिकस्यन्यायमनतिक्रातस्य मार्गस्य सम्यग्दर्शनादेः मोचपथस्यदुष्टोद्विष्टोवा ऽपकरोति

तहेवाणतणाणीण । जिणाणंवरदंसिण ॥ तेसिंअवस्सवंबा ले । महामोहपकुव्वइ ॥ २१ ॥ नेआइअस्समग्गस्स । दुठेअवयरईबहु ॥ तंतप्पियतोभासेइ । महामोहंप कम्मधम्माउब्भंसेइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ २२ ॥

तिमज भिचु जगजीवन अहिंसादि धर्म जगतना जीवनभूत एहवा यतीने विविधप्रकारे करी बलात्कारे धर्मथकी भ्रसे पाडे तेमहामोहनीय कर्मकरे १८। पूर्वनीपरी अनतज्ञानी अनत ज्ञानना धणी राग द्वेषना जयकरणहार वरप्रधान दर्शन चायक सम्यक्तना धणी एहवाने अवर्णवाद बोले बाल अज्ञानी ते महामोहनीय कर्मकरे १९। जे न्यायानुसार मार्गनो दुष्टप्राणी अपकारकरे द्रोहकरे घणो तथा ते मार्गने निंदाकरी भासे बोले मिथ्यात्वे घाले ते महा

अपकारंकरोतीति बहुभत्ययंपाठांतरेणापहरति बहुजन विपरिणमयतीतिभाव: तंमार्गंतिष्पगतोति निंदन्भावयति निंदयाद्वेषेणवावासयति आत्मानंपरं चय:समहामोहंप्रकरोतीति विंशतितम २० आचार्योपाध्यायैर्यैः श्रुतस्वाध्यायविनयच चारित्रगाचित: शिचित: तेनैवखिंसतिनिन्दति अल्पश्रुताएतेइत्यादि ज्ञानत: अन्यतीर्थिकससर्गकारिणइत्यादिदर्शनत: मन्दधर्माण: पार्श्वस्थादिस्थानवर्त्तिन: इत्यादि चारित्रत: य:सएवभूतोबालो महामोहंप्रकरोतीत्येकविंश तितम २१ आचार्यादीन्श्रुतदानात् ग्लानावस्थाप्रतिचरणादिनिस्तर्पितवत: उपकृतवत: सम्यक्नतान्प्रतितर्पति विनयाहारोपध्यादिभि र्नाल्पुपकरोतीति तथा अप्रतिपूजको न पूजाकारी तथास्तब्धोमानवान् समहामोहम्प्रकरोतीति द्वाविंशतितम२२ अबहुश्रुतश्च. कश्चिच्छ्रुतेन प्रविकत्थते आत्मानंश्लाघते श्रुत वानहमनुयोगधरोहमित्येवं अथवा कस्मिंश्चित्त्वमनुयोगाचार्यो वाचकोवेति पृच्छति प्रतिभणति आमन:स्वाध्यायवाद वदति विशुद्धपाठकोहमित्यादिकंय: स

कुव्वइ ॥ २३ ॥ आयरियउवज्झाएहिं । सुयंविणयंचगाहिए ॥ तेचेवखिंसईबाले । महामोहपकुव्वई ॥ २४ ॥
आयरियउवज्झायाणं । सम्मंनोपडितप्पइ ॥ अप्पडिपूयएथद्धे । महामोहपकुव्वइ ॥ २५ ॥ अबहुस्सुएयजे

मोहनीय कर्मकरे २० । जेणें आचार्यें उपाध्याये श्रुतशास्त्र तथा विनय चारित्र ग्रहिवाड्यो सिखाड्यो तेहीज आचार्यने खीसे निंदे ते अज्ञानी ते महामो हनीय कर्मकरे २१ । जेकोइ आचार्य उपाध्यायने श्रुतदानादिकना महा उपकारीने सम्यक् प्रकारे तर्प्येनही उपराठो उपकार नकरे तथा ते आचार्यनी पूजा नकरणहार तथा स्तब्ध अभिमानी ते महामोहनीय कर्मकरे२२। अबहुश्रुत अपंडितथको जेकोइ श्रुतेंकरी शास्त्रेंकरी आत्माने प्रविकाये श्लाघायेहु श्रु तवतछु एम कहे वली स्वाध्यायवादवदे विशुद्धशास्त्रनोहु पाठकछु एमकहे ते महामोहनीय कर्मकरे २३ । अतपस्वी थको जेकोइ तपेकरी पोताना आत्मानें

महामोह श्रुतालाभहेतु प्रकरोतीति त्रयोविंशतितम २३ सुगम पूर्वार्द्ध पूर्ववत् नवरम् सर्वलोकात् सर्वजनात् सकाशात्पर' प्रकृष्टस्तेन: चौरो भावचौरत्वात् पकुव्वइ अतपस्विनोइतु प्रकरोतीति चतुर्विंशतितम २४ साधारणार्थ मुपकारार्थं य कश्चित् आचार्यादि ग्लानरोगवति उपस्थिते प्रत्यासन्नीभूतेप्रभु समर्थ उ पदेशेनौषधादिदानेनच स्वतोन्यतश्चोपकार नकरोति छतलुपेचते इत्यर्थ. वीनाभिप्रायोत्वाह्न ममाप्येषनकरोति किंचनापिक्षत्यम् समर्थोपिसन्विद्वेषेणा सम र्थोवाऽय बालत्वादिना किकतेनान्यपुनरुपकर्तुमशक्तत्वादितिलोभेनेति शठ: कैतवयुक्त शक्तिलोपनात् निकृतिर्मायातद्विषये प्रज्ञानयर' तथा ग्लान प्रतिचर णीयो माभवत्विति ग्लानवेषमहकरोमीति विकल्पवानित्यर्थ अतएवकलुषाकुलचेता' आत्मनश्चाबोधिको भवातराप्राप्तव्य जिनधर्म्मलाभाप्रतिजागरेणाञ्ची

केई । सुएणंपविकत्थई ॥ सज्झायवायंवयइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ २६ ॥ अतवस्सीएउजेकेई । तवेणपवि कत्थइ ॥ सव्वलोयपरेत्तेणे । महामोहंपकुव्वइ ॥ २७॥ साहारणठाजेकेई । गिलाणम्मिउवठिए ॥ पन्नूणकुणई किच्चं । मज्झंएसेनकुव्वइ ॥ २८ ॥ सढेनियइपन्नाणे । कलुसाउलचेयसा ॥ अप्पणोयअबोहीए। महामोहप

विकथे श्लाघाकरे हुतपस्वी छु एमकहे ते सर्वलोकथकी परमस्तेन चोरछे ते महामोहनीय कर्मकरे २४। साधारणने अर्थे उपकारने अर्थे जेकोइ आचार्या दिकने ग्लानपणे तथा रोगीपणे उपस्थित ढुकडो आव्यो निकट आव्यो तेहने उपदेश औषधादि दानेंकरी उपकार करवामां समर्थछे पणि मुझने एह न करतोइतो एमाटेहु काइक नकरू एह शठधूर्त निकृति मायातेहनेविषे चतुरथइ ग्लानीनूं हु औषधोपचार करूछु एहवी कल्पनायेंकरी कलुषितछे चित्त जेहनो आपणा आत्मानो अबोधक भवांतरें धर्मनो अर्थीनथी ते महामोहनीय कर्मकरे २५। जेकोइ कथा प्रबध शास्त्र तद्रूप जे अधिकरण एतले प्राणिना

विबोधना ज्ञशब्दात्परेवांवाऽबोधिक: अविद्यमानो बोधोऽस्मादितिव्युत्पादनात् येहि तदीयं ग्लानाप्रतिचरणमुपलभ्य जिनधर्मपराङ् मुखाभवंति तेषामबो विकस्तथेति सएवंभूतो महामोहम्प्रकरोतीति पञ्चविंशतितम २५ य: कथावाक्यप्रबंध:शास्त्रमित्यर्थ स्तद्रूपाण्यधिकरणानि कथाधिकरणानिकौटिल्यशास्त्रा दीनि प्राण्युपमर्दनप्रवर्त्तकत्वेन तेषामात्मदुर्गतावधिकारित्वकरणात् कथया वा चेत्राणि क्षयत गानमसूयतेत्यादि तया अधिकरणानि तथाविधप्रवृत्तिरू पाणि अथवा कथा राजकथादिका अधिकरणानिच यन्त्रादीनिकलहा वा कथाधिकरणानितानि सम्प्रयुक्ते पुन:पुनरेव सर्वतीर्थानां भेदायसंसारसागरतरण कारणत्वात् तीर्थानिज्ञानादीनि तेषासर्वथानाशायप्रवर्त्तमान: समहामोहंप्रकरोतीति षड्विंशतितम २६ । कश्च नवरं अधार्मिकायोगानिमित्तवशीकरणा दिप्रयोग: किमर्थश्लाघाहेतो: सखिहेतोर्मित्रनिमित्तमित्यर्थ: इतिसप्तविंशतितमं २७ । यश्चमानुष्यकान्भोगान् अथवापारलौकिकान् तेत्ति विभक्तिपरिणाम:

कुव्वइ ॥ २९ ॥ जेकहाहिगरणाइं । सपउंजेपुणोपुणो ॥ सव्वतित्थाणभेयाणं । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३० ॥
जेअहम्मिएजोए । संपउंजेपुणोपुणो ॥ साहाहेउसहीहेउ । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३१ ॥ जेअमाणुस्सएजोए ।

उपमर्दहेतु आत्माने दुर्गतीमांहि अधिकार कारी एमाटे अधिकरण कौटिल्यशास्त्र तेहने वली वली प्रयुजे विस्तारे ते सर्वतीर्थ ज्ञानादिकना सर्वथा नाशे प्रवर्त्तमान महामोहनीय कर्मकरे २६ । जेकोइ अधार्मिक प्रयोग निमित्त वशीकरणादिक प्रयोगप्रतें श्लाघाने अर्थे वली मित्रने अर्थे सप्रयुजे वली वली व्या पारे ते महामोहनीय कर्मकरे २७। जेकोइ मनुष्य संबंधी अथवा परलोक संबंधी भोग विषयादिकनेविषे अतृप्तहुओथको भोगप्रते आस्वादे अभिलासे आश्र यणाकरे ते महामोहनीय कर्मकरे २८ । जेकोइ बाल अधर्मी ऋद्धि विमानादिकनी सपत् द्युति शरीराभरणनीदीप्ति यशकीर्त्ति वर्ण शुक्लादि शरीर सबंधी

॥ ... समहामोहं प्रकरोतीति अष्टाविंशतितमं । २८ । ऋद्धिर्विमानादिसम्पत् द्युतिः शरीराभर
णादीप्तिः यशःकीर्त्ति वर्णः शुक्लादिः शरीरसबन्धी देवानां वैमानिकानाबलशरीर वीर्यंजीवप्रभवंअस्त्यत्यध्याहारः तेषामिहअपेगम्यमानत्वात् तेषामपिदेवाना
तेषुवा अल्पमप्यतत्त्विमगच्छत् आस्वादते अभिलपति आश्रयतिवा
मनेकातिशायिगुणवतामवर्णवान् अश्लाघाकारी अथवा अवर्णवान् केनोल्लापेन देवानामृद्धिर्देवानाद्युतिरित्यादिका काव्याख्येय नकिंचिद्देवानामस्त्यादि
कामस्तीत्यवर्णवादवाक्यभावार्थः यएवभूतः समहामोहं प्रकरोतीति एकोनत्रिंशत्तम २९ । अपश्यन्योभूतेपश्यामिदेवानित्यादिस्वरूपेणाज्ञानी जिनस्येवपूजाम
र्थयतेयः सजिनपूजार्थी गोशालकवत् समहामोहं प्रकरोतीति त्रिंशत्तम ३० । रौद्रादयोमुहूर्त्तास्त्रादित्योदयादारभ्य क्रमेण भवन्ति ए...षाचमध्येमध्यमाः पट्

इड्ढीजुईजसोवन्नो । देवाणंबलवी
अदुवापारलोइए ॥ तेतिप्पयंतोआसयइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३२ ॥ अपस्समाणोपस्सामि । देवेजक्खेयगुज्झगे ॥ अन्नाणी
रिय ॥ तेसिंअवन्नवंबाले । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३३ ॥ थेरेणंमंडियपुत्ते तीसवासाइंसामन्नपरियायंपाउणित्ता सिद्धे बुद्धे
जिणपूयट्ठी । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३४ ॥

देवतानो बल शरीर प्रभव वीर्य जीवप्रभव एहवा देवतानो अवर्णवाद बोले ते महामोहनीय कर्मकरे २९ । देवताने तथा यक्षने व्यंतर विशेषने गुह्यकने अ
नादरतो थको हुआदरकु एमकहे तेस्वरूपथी अज्ञानी केवल जिननी अरिहतनी पूजानो अर्थीके गोशालानीपरे ते महामोहनीय कर्मकरे ३० । एह ३०
मोहनीय स्थानकह्या । स्थविर मंडितपुत्र छठो गणधर तीस वर्षलगे सामान्य पर्याय दीक्षा पालीने सिद्धथयो । ज्ञातार्थथयो तत्वनो जाणकारथयो यावत्

जावसव्वदुक्खप्पहीणे एगमेगेणंअहोरत्ते तीसंमुहुत्ते मुहुत्तगेणंप० एएसिणंतीसाएमुहुत्ताणं तीसंनामधेज्जा प० तं० रोद्दे सत्ते मित्ते वाऊ सुपीए अभिचंदे माहिंदे पलंवे वंभे सच्चे आणंदे विजए विस्ससेणे पायावच्चे उवसमे ईसाणे नठ्ठे भाविअप्पा वेसमणे वरुणे सतरिसभे गंधव्वे अग्गिवेसायणे आतवे आवत्ते नठवे भूमहे रिसभे सव्वठसिद्धे रक्खसे ३० । अरेणंअरहा तीसधणु उढ्ढंउच्चत्तेण होत्था सहस्सारस्सणं देविंदस्स देवरण्णो तीस सामाणियसाहस्सीओ प० पासेणंअरहा तीसंवासाइं आगारवासमज्झे वसित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए समणेभगवं महावीरे तीसंवासाइं आगारवासमज्झे वसित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए

यावत्‌सर्वदुःखथकी मूकाणो सर्वदुःखथकी प्रक्षीणथयो । एकएक अहोरात्र त्रीस मुहूर्तनो होय । ते त्रीसमुहूर्तना त्रीसनामधेयनामक[illegible]ा । तेकहेछे । रौद्र १ शक्त २ । मित्र ३ । वायु ४ । सुपीत ५ । अभिचद्र ६ । माहेंद्र ७ । प्रलब ८ । ब्रह्म ९ । सत्य १० । आनद ११ । विजय १२ । विश्वसेन [illegible]३ । प्राजापत्य १४ । उपशम १५ । ईशान १६ । नष्ट १७ । भावितात्मा १८ । वैश्रमण १९ । वरुण २० । शतऋषभ २१ । गाधर्व २२ । अग्निवैश्यायन २३ । आतप २४ । आवर्त्त २५ । नष्टवान् २६ । भूमहान् २७ । ऋषभ २८ सर्वार्थसिद्ध २९ । राक्षस ३० । अरनाथ अठारमा तीर्थंकर त्रीस धनुष उंचपणेथया । सहस्रारनामा आठमा देवेंद्रना त्रीस हजार सामानिक देवताकह्या । पार्श्वनाथ अरिहत त्रीस वर्षलगे गृहस्थावास मांहि वसीने गृहस्थथकी अनगारपणो यतीपणो पाम्या श्रमण भगवत श्री महावीर तीसवर्षलगे गृहस्थावासे वसीने घरवास छांडीने यतीपणो पाम्या । रत्नप्रभा पृथिवीना त्रीस लाख नरकावास कह्या । एणीयें र

रयणप्पभाएणं पुढवीए तीसं निरयावाससयसहस्सा प० इमीसेणं रयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइ याण तीसपलिओवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तीसपलिओवमाइ ठिई प० उवरिमउवरिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं तीसंसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा उवरिममज्झिमगेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाण उक्कोसेणं तीसंसागरोवमाइं ठिई प० तेण देवा तीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससं तिवा निस्ससतिवा तेसिणं देवाणं तीसाएवाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजी वा जे तीसाए भवग्गहणेहि सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंत करि

त्नप्रभा पृथिवीने विषे केतलाएक नारकीनो त्रीस पल्योपमनो आउखोकह्यो। हेठे सातमी पृथिवीयें केतलाएक नारकीनो त्रीस सागरोपमनी स्थितिकही केतलाएक असुरकुमार देवतानी त्रीस पल्योपमनी स्थितिकही। उपरिम उपरिम ग्रैवेयकें एतले नवमे ग्रैवेयक विमानें देवतानी जघन्य त्रीस सागरोपम नी स्थिति कही। जे देवता उपरिम मध्यम ग्रैवेयके आठमे ग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे ते देवतानी उत्कृष्टी त्रीस सागरोपमनी स्थिति कही। ते देव ता त्रीस पखवाडें स्वासोस्वास घणोले ऊचोले नीचो मूके ते देवताने त्रीसवर्ष सहस्त्रगये आहारनो अर्थ उपजे। छे केतलाएक भव्यजीव जे त्रीसभवने आत

कदाचिद्दिनेऽन्तर्भवंति कदाचिद्रात्राविति ॥ ३० ॥ एकत्रिंशत्तमंस्थानकं सुगमं नवरं सिद्धानामादौ सिद्धत्वप्रथमएवसमयेगुणास्तेचाभिनिबोधिका

स्संति ॥ ३० ॥ एक्कतीसंसिद्धाइगुणा प० तंजहा खीणे आभिणिबोहियणाणावरणे खीणे सुयणाणावरणे खीणे ओहिणाणावरणे खीणे मणपज्जवनाणावरणे खीणे केवलनाणावरणे खीणे चक्खुदंसणावरणे खीणे अचक्खुदंसणावरणे खीणे ओहिदंसणावरणे खीणे केवलदंसणावरणे खीणे निद्दा निद्दानिद्दा खीणे पयला पयलापयला खीणे थीणद्धी खीणे सायावेअणिज्जे खीणे असायावेयणिज्जे खीणे दंसणमो

रे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंत करिस्ये मोक्षजास्ये ॥ इति त्रीसमो समवाय सपूर्ण ॥ ३० ॥ हिवे एकत्रीसमो समवाय लिखे छे। एकत्रीस सिद्धना आदिगुण प्रथमसमयमांडी उपना जे गुण ते सिद्धादिगुण कह्या ॥ ते कहेछे। क्षीण थयोछे आभिनिबोधिक ज्ञाननो आवरण एतले सर्वथापि मतिज्ञानावरण क्षय गयो छे जेहनो १। क्षीणथयो छे श्रुतज्ञानावरण २। वली अवधिज्ञानावरण क्षय ३। मनःपर्यवज्ञानावरण क्षय ४। केवलज्ञानावरणक्षय ५। चक्षुदर्शनावरणक्षय ६। अचक्षुदर्शनावरणक्षय एतले आंखटाली बीजा च्यारइंद्रिय अचक्षु तेहना आवरणनो क्षय ७। अवधिदर्शनावरणक्षय ८। केवलदर्शनावरण क्षय ९। सुखेंजागे ते निद्रा तेहनोक्षय १०। दुःखेजागे ते निद्रानिद्रा तेहनो क्षय ११। वैठांऊभां आवे ते प्रचला तेहनोक्षय १२। चालतां आवे ते प्रचलाप्रचला तेहनोक्षय १३। थीणद्धी अर्द्धवासुदेवनो बल तेहनोक्षय १४। सातावेदनीयकर्मक्षय १५। असातावेदनीयकर्मक्षय १६

वरणादिचयस्वरूपाइति मन्दरोमेरुः सचधरणीतलेदशसहस्रविष्कम्भइति कृत्वा यथोक्तपरिधिप्रमाणोभवतीति जयाणंसूरिएइत्यादि किलसूर्यस्य चतुरशी त्यधिकमण्डलशतभवति मण्डलचज्योतिष्कमार्गोभिधीयते तत्रजंबूद्वीपस्यांतराशीत्यधिकेयोजनशते पचषष्ठि सूर्यमण्डलानिभवंति तथालवणसमुद्रेत्रीणित्रिं

हणिज्जे खीणे चरित्तमोहणिज्जे खीणे नेरइयाउए खीणे तिरियाउए खीणे मणुस्साउए खीणे देवाउए खीणे उच्चागोए खीणे निच्चागोए खीणे सुभनामे खीणे असुभनामे खीणे दाणंतराए खीणे लाभांतराए खीणे भोगांतराए खीणे उवभोगांतराए खीणे वीरियंतराए ३१ मंदरेणपव्वए धरणितले एक्कतीसंजोय णसहस्साइं छच्चेवतेवीसे जोयणसए किंचिदेसूणापरिक्खेवेणं प० जयाणं सूरिए सव्वबाहिरियंमंडलं उव

दर्शनमोहनीय एतले सम्यक्त मोहनीय चय १७। चारित्रमोहनीय चय १८। नरकायुचय १९। तिर्यचायुचय २०। मनुष्यायु चय २१। देवायु चय २२। उच्चैर्गोत्रचय २३। नीचैर्गोत्र चय २४ शुभनाम चय २५। अशुभनाम चय २६। दानातराय चय २७ लाभांतरायचय २८। भोगांतराय चय २९ वीर्यांतराय चय ३०। उपभोगांतरायचय ३१। मेरुपर्वत भूमितले एकतीसहजार छसे त्रेवीस योजन कांइक न्यून परिधीयें कह्यो। मेरुपर्वत भूमिने ऊपरें दसहजार योजन पिहुल पणेछे तेहनी परिधी त्रिगुणित एतले एकतीस हजार छसे त्रेतीस योजन काही। सूर्यना पेंसठ मांडला निषधपर्वत उपरछे तेमांहिं सगला पहिलो एतले सर्वाभ्यंतर मडल जगतीथकी एकसो अस्सी योजन छे। अने लवणसमुद्र मांहि तीन से तीस योजन अवगाहीने एकसो ओगणीस मांडला छे। सर्वमिली जम्बूद्वीप मांहि एकसो चौरासी मडल छे तेमांहि सर्वबाह्यमडले उपसंक्रमी आवीने सूर्य मकर संक्रातिदिने भ्रमण करे। तेणें दिनें भरतचे

शदधिकानियोजनशतान्यवगाह्येकोनविंशत्यधिकं सूर्यमण्डलशतंभवति तत्रचसर्वबाह्यं समुद्रांतर्गतमंडलानांपर्यंतिमं तस्यचायामविष्कम्भौ लक्षंषट्शतानि चयोजनानांषष्ठ्यधिकानि परिधिसुदृत्तक्षेत्रगणितन्यायेनत्रीणि लक्षाणि अष्टादशसहस्राणि त्रीणिशतानिपंचदशोत्तराणि ३१८३१५ एतावत्क्षेत्रमादित्योऽ होरात्रद्वयेनगच्छति तत्रचषष्ठिमुहूर्त्ताभवन्ति षष्ठ्याभागापहारे यल्लब्धतमहूर्त्तगम्यक्षेत्रप्रमाण भवति तच्च पंचसहस्राणित्रीणिचपंचोत्तराणिशतानि ५३०५। १५। ६० मुहूर्त्तैं एतच्चदिवसार्द्धेनगुण्यते यदाचसर्वबाह्येमंडलेसूर्यश्चरति तदादिनप्रमाण द्वादशमुहूर्त्ता: तदर्द्धंचषट् अत: षड्भिर्मुहूर्त्तैंर्गुणितमुहूर्त्तगतिप्रमाण चक्षुः स्पर्शगतिप्रमाणंभवति एकत्रिंशत्सहस्राणि अष्टौचशतान्येकत्रिंशदधिकानि त्रिंशच्चयोजनविषष्टिभागा: ३१८३१। ३० अभिवर्द्धितमासोऽभिवर्द्धितसंवत्सर ॥

संकमित्ता चारंचरइ तयाणं इहगयस्स मणुस्सस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अठहिअएक्कतीसेहिं जोयणसएहिं तीसाएसठिभागे जोयणस्स सूरिएचक्खुफासं हव्वमागच्छइ अभिवड्ढिएणं मासे एक्कतीसं ॥

जगत मनुष्यने एकतीसहजार आठसे एकतीस योजन ऊपर एकयोजनना साठिया पंचत्रीसभाग अधिक वेगलोथको सूर्य चक्षुस्पर्शे आ॒ ावे । एतलेपो ॥
सी पूनिमे मकर संक्रांतिदिने एकतीसहजार आठसे एकतीस योजन ऊपर योजनना साठीया तीसभाग वेगलो होय सूर्य लवणसमुद्र मांहि तिवारे इहां नां मनुष्यने दृष्टिगोचर आवे । अभिवर्द्धितमास त्रीजे वर्षे आवे तेरहमासनो वर्ष होय । ते अधिक मास एकत्रीस रात्रिदिवस पमाणेसातिरेक कांइएक भा भेरीजाणिवो । एतले अहोरात्रिना १२४ भागना १२१ अधिक एकत्रीस रात्रिदिवस परिमाणें पूरोथाय । जेणे काले सूर्य राशिभोगवे तेआदित्यमास सूर्यमा

स्य चतुश्चत्वारिंशद्धोत्तद्विषष्टिभागाधिकत्र्यशीत्यधिकशतत्रयरूपस्य ३८३ । ४४ द्वादशोभागोऽभिवर्द्धितसंवत्सरस्यासौ यत्राधिकमासकोभवति तत्रत्रयोदशचद्र मासा मकत्वाचन्द्रमासस्य एकोनत्रिंशतादिनानां द्वात्रिंशताचदिनद्विषष्टिभागानाभवतीति साइरेगाइंति अहोरात्रस्यच चतुर्विंशत्युत्तरशतभागानामेकविंशत्य

सातिरेगाइं राइंदियाइं राइंदियग्गेणं प० आइच्चेणं मासे एक्कतीसं राइदियाइं किंचि विसेसूणाइं राइं दियग्गेणं प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण एक्कतीसं पलिओवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाण एक्कतीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अ त्थेगइयाणं एक्कतीसंपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कतीसंपलिओव माइं ठिई प० बिजय वेजयंत जयंत अपराजिययाणं देवाणं जहस्रेण एक्कतीसंपलिओवमाइं ठिई प० जे

स कहिये एकत्रीसरात्रिदिवस कांईक विशेषाधिक जणा ओछा अहोरात्रिअर्द्धे जणा एकत्रीस रात्रिदिवस परिमाणें पूरी कह्यो । एणीये रत्नप्रभा पहिली नरक पृथिवी ये केतलाएक नारकोनो एकत्रीस पल्योपमनोस्थितिकही । हेठिम सातमीनरक पृथिवीयें केतलाएक नारकोनो एकत्रीससागरोपम आउखो कह्यो । केतलाएक असुरकुमार देवतानो एकत्रीस पल्योपमनोस्थिति कही । सौधर्मईशाने कल्पे केतलाएक देवतानो एकत्रीस पल्योपम आऊखोकह्यो ॥ पूर्वेदिशाथकीमाडीकरीने विजय १ वैजयत २ जयत ३ अपराजित ४ एचार अनुत्तरविमाननादेवतानी जघन्यएकत्रीससागरोपमनी स्थितिकही । जेदेवता उपरिसउपरिम ग्रैवेयके एतले नवमे ग्रैवेयकविमाने देवतापणेउपनाछेतेहदेवतानीउत्कृष्टी एकत्रीससागरोपमनी स्थितिकही । तेदेवता एकत्रीसें पखवाडे

त्तरयतेनाधिकानीति आदित्यमासोयेनकालेनादित्योराशिंभुंक्ते किंचिविसेसूणाइंति अहोरात्रार्द्धे नन्यूनानीति ॥ ३१ ॥ द्वात्रिंशत्तमस्थानकमपिव्यक्तं । नवर । युज्यते इतियोगा मनोवाक्कायव्यापारास्तेचेहप्रशस्ताएवविवचितास्तेषां शिष्याचार्यगतानामालोचनानिरपलापादिनाप्रकारेणसंग्रहणानि संग्रहाः प्रशस्तयोगसंगृहाः प्रशस्तयोगसंगृहनिमित्तत्वादालोचनादय एवतथोच्यन्ते । तेचद्वात्रिंशद्भवन्ति तदुपदर्शकंश्लोकपंचकं आलोयणेत्याद्यस्यगमनिका तत्रआलोय

देवा उवरिमउवरिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेण एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणदेवा एक्कतीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा तेसिणं देवाण एक्कतीसं वाससहस्सेहिं आहारठ्ठे समुपज्जइ सतेगइया भवसिद्धियाजीवा जे एक्कतीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ३१ ॥

बत्तीस जोगसंगहा प० तंजहा आलोयण निरवलावे आवई सुदढधम्मया । अणिस्सिउवहाणेय सिक्खा

स्वासोस्वास घणोले कचोले नोचोमूके ते देवताने एकत्रीस वर्षसहस्रगयें आहारनी इच्छाउपजे । छे केतलाएक भव्यजीव जेएकत्रीस भवने आंतरें सीझस्ये बूझस्ये मुंकास्ये कृतकर्मना पडल टालवायकी ठाढायास्ये सर्वदुःखनो अंतकरस्ये मोचजास्ये ॥ इतिएकत्रीसमूं समवाय संपूर्ण ॥ ३१ ॥ हिवे बत्रीसमो समवाय लिखेछे । बत्रीस योग सगृह मन वचन कायानायोग तेहनो सगृह शिष्यें आलोयणालेवी गुरूयें कहीआगली नकहिवी इत्यादि प्रकारें सगृह करिवो प्रशस्त योगना कारण ते योगसंगृह ते कहेछे । मोचसाधक योगसंगृहभणी शिष्ये आचार्यभणी आलोयणकही १ । आचार्यभणी आलोयण

चारोपगतःस्या न्नमायांकुर्यादित्यर्थः १४ विनयोपगतोभवेन्नमायाकुर्यादित्यर्थ. १५ धिइमईयत्ति धृतिप्रधानामतिःधृतिमतिरदैन्यं १६ संवेगोत्ति संवेगः संसा राद्भयमोक्षाभिलाषोवा १७ पणिहित्ति प्रणिधिर्मायाशल्यंनकार्यमित्यर्थः १८ सुविहि सदनुष्ठान १८ संवरश्च आश्रवनिरोधः २० अत्तदोसोवसंहारेत्ति स्वकीयदोष स्यनिरोधः २१ सव्वकामविरत्तयति समस्तविषयवैमुख्यं २२ पच्चक्खाणेत्ति प्रत्याख्यानमूलगुणविषय २३ उत्तरगुणविषयच २४ विउसग्गेत्ति व्युत्सर्गोद्रव्यभावभे दभिन्नः २५ अप्पमाएत्ति प्रमादवर्जनं २६ लवालवेत्ति कालोपलक्षण तेन क्षणे २ सामाचार्य्यनुष्ठानकार्यं २८ झाणसवरजोगेत्ति ध्यानमेवसंवरयोगो ध्यान सवरयोगः २८ उदएमारणतिएत्ति मारणांतिकेपिवेदनोदयेनक्षोभःकार्यः २९ संगाणयपरिणत्ति संगानांज्ञपरिज्ञाप्रत्याख्यानपरिज्ञाभेदभिन्नापरिज्ञाकार्या

विणउवए ॥ २ ॥ धिईमई य संवेगे । पणिहीसुविहिसंवरे ॥ अत्तदोसोवसंहारे । सव्वकामविरत्तया ॥ ३ ॥

पच्चक्खाणे विउस्सग्गे । अप्पमादेलवालवे ॥ ज्झाणे संवरजोगेय । उदएमारणंतिए ॥ ४ ॥ संगाणंयपरिन्ना

शुभ अनुष्ठान करिवो १८ । संवर आश्रवनिरोध २० पोताना दोषनो निरोध रोकिवो २१ । सर्वविषयथी विमुखपणो २२ । पचक्खाणनो करिवो २३ । व्युत्सर्ग द्रव्यथको उपधीनो त्याग भावथको त्रिणगौरवनो त्याग २४ । प्रमाद टालिवो २५ । क्रियानोकालें समाचरिनो २६ । धर्मध्यानादि करिवो २७ । संवरनो योग २८ । मारणांतिक वेदना उपजे मनने क्षोभ न करिवो २९ । संगनो परिज्ञा स्वजनादिक संगनो पचक्खवो ३० । प्रायश्चित्तनो करिवो ३१ । आराधना करी मरे ३२ । एह बत्रीस योग संग्रह जाणिवा ॥ बत्रीस देवेंद्र कह्या ते कहे छे । चमरेंद्र १ । बलेंद्र २ धरणेंद्र ३ । भूतानंद्र ४ । वेणुदेव ५ ।

३० पच्छित्तकरणेइत्ति प्रायश्चित्तकरणंचकार्यं ३१ आराहणायमरणंते मरणरूपोन्तो मरणांतः सूत्रेत्यतोद्वात्रिंशद्योगसंग्रहाइति ३२ इन्द्रसूत्रेयावत्करणाद्वेण
देववेणुदालो हरिकंते हरिस्सहे अग्गिसीहे अग्गिमाणवे पुण्णे वसिट्ठे जलकंते जलप्पहे अमियगई अमियवाहणे वेलंबे पहंजणे घोसे महाघोसे इतिदृष्टव्यम्भुनयो
वत्करणात् माहिंदेबंभेलंतएसुक्के सहस्सारेत्ति द्रष्टव्यमिदं षोडशानाव्यन्तरेन्द्राणां षोडश[illegible]नामेव वा अणपण्णकादीन्द्राणामल्पेन्द्रकत्वेनाविवक्षितत्वादसंख्यातानां
वत्करणात् माहिंदेबंभेलंतएसुक्के ... द्वात्रिंशद्भिनाव्यमभिनयविषय
मपिचन्द्रसूर्याणां जातिग्रहणेनद्वयोरेवविवक्षितत्वाद्द्वात्रिंशदुक्ताइति। कुंथुनाथस्यद्वात्रिंशदधिकानि द्वात्रिंशच्चकेवलिशतान्यभूवन् द्वात्रिंशद्विधनाट्यमभिनयविषय

बत्तीसं जोगसंगहा ॥ ५ ॥ बत्तीसं देविंदा प० तं० चमरे

या । पच्छित्तकरणेविय ॥ आराहणायमरणंते । बत्तीसं जोगसंगहा ॥ ५ ॥ बत्तीसं देविंदा प० तं० चमरे
बली धरणे भूआणंदे जाव महाघोसे चंदे सूरे सक्के ईसाणे सणंकुमारे जाव पाणए अच्चुए कुंथुस्सणंअरहओ
बत्तीस जिणसया होत्था सोहम्मेकप्पे बत्तीसं विमाणवाससहस्साणं प० रेवइणक्खत्ते बत्तीसइतारे प०

वेणुदाली ६ । हरिकांत ७ । हरिशिख ८ । अग्निशिख ९ । अग्निमाणव १० । पूर्ण ११ । वशिष्ठ १२ । जलकान्त १३ । जलप्रभ १४ । अमितगति १५ ।
अमित वाहन १६ । वेलंब १७ । प्रभंजन १८ । घोष १९ । महाघोष २० । चंद्रमा २१ । सूर्य २२ । शक्रेंद्र २३ । ईशानेंद्र २४ । सनत्कुमारेंद्र २५ । माहेंद्र
२६ । ब्रह्मेंद्र २७ । लांतकेंद्र २८ । शुक्रेंद्र । २९ । सहस्रारेंद्र ३० । प्राणतेंद्र ३१ । अच्युतेंद्र । ३२ । भवनपती ना इन्द्र २० सौधर्मेंद्रादिक इन्द्र १० ज्योतिषी
ना २ एम ३२ यद्यपि ३२ व्यंतरेंद्र छे पणि ते अल्पऋद्धिया तेभणी ... छे पणि ... जातिग्रवो तस्या कुंथुनाथ १७
मां अरिहंत ने ३२ से जिन केवली थया । सोधर्म पहिले कल्पे बत्रीस विमान रूप आवासते विमान वास शत सहस्र कह्या । एतले ३२ लाख विमान

बत्तीसतिविहेणहे प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बत्तीसपलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाण नेरइयाणं बत्तीससागरोवमाइ ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसंपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाण बत्तीसंपलिउवमाइं ठिई प० जेदेवा विजय वेजयत जयत अपराजियविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिण देवाण अत्थेगइयाण बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणदेवा बत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससतिवा तेसिणं देवाणं बत्तीसं वाससहस्सेहि आहारट्ठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जेबत्तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करि

कह्या। रेवती नक्षत्रना बत्रीस ताराकह्या। बत्रीसभेद नाटकना कह्या तेरायपसेणीथकी जाणवा। एणीयें रत्नप्रभा पृथिवीयें केतलाएक नारकीनी बत्रीस पल्योपमनीस्थितिकही। छेठेंसातमीपृथिवीयेंकेतलाएकनारकीनी बत्रीस सागरोपमनीस्थितिकही। केतलाएक असुरकुमारनी बत्रीस पल्योपमनीस्थिति कही। सौधर्म ईशाने कल्पे केतलाएक देवतानी बत्रीसपल्योपमनीस्थितिकही। जे देवता विजय १। वैजयंत २। जयंत ३।अपराजित ४। एहचिहुअनुत्तरविमाने देवतापणेउपना छे तेहदेवतानीबत्रीससागरोपमनीस्थितिकही। तेदेवता बत्रीसमे पखवाडे थोडीस्वासले घणीस्वासले ऊंचो स्वास ले नीचो ना ह्मक तेहदेवताने बत्रीसवर्षसहस्रे आहारनोवांछाउपजे। छे केतलाएक भव्यजीव जे बत्रीसभवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्येमोक्षजास्ये॥

॥ ३२ ॥ अथत्रयस्त्रिंशत्तमस्थानक तत्र आय'

वस्तुभेदा यथाराजप्रश्नकृताभिधान द्वितीयोपांग इतिसभाव्यते द्वात्रिंशत्पापप्रतिबद्धमितिकेचित् ॥

आसन्नमासत्ति यथारजोंचलादिस्तस्यलगति

सम्यग्दर्शनाद्यवाप्तिलक्षणस्तस्यशातना खण्डनानिरुक्तादाशातनास्तत्र शैक्षोऽल्पपर्यायोरात्निकस्य बहुपर्यायस्य

समश्रेण्यागच्छतीत्यर्थः चिठ्ठत्तिस्था

तथागन्ताभवतीत्येवमाशातनाशैक्षस्ये त्येवसर्वत्र पुरओत्ति अग्रतोगताभवति सपक्खंति समानपक्ष समपार्श्वंयथाभवति

तिस्रोऽन्ननिषीदनेनचतिस्रः तथाविचारभूमौ

ताआसिताभवति यावत्करणा दशाश्रुतस्कन्धानुसारेणान्याद्रष्टव्यास्ताश्चैवमर्थत. आसन्नपुरः पार्श्वत'स्थानेन

॥ ३२ ॥ तेत्तीसआसायणाओ प० तं०। सेहेराइणिअस्स पुरओ गंता भवइ आसाय

णा सेहस्स १ सेहेराइणियस्स सपक्खं गंता भवइ आसायणा सेहस्स २ सेहेराइणियस्स आसन्नं गंता भवइ

आसायणा सेहस्स ३ एवं एएणं अभिलावेणं सेहेराइणियस्स पुरओ चिठ्ठित्ता भवइ आसायणा सेहस्स ४ सेहेरा

इणियस्स सपक्खं चिठ्ठित्ता भवइ आसायणा सेहस्स ५ सेहेराइणियस्स आसन्नं चिठ्ठित्ता भवइ आसायणा सेह

स्संति ॥ ३२ ॥ इवेतेत्रीसमवाय लिखियेछे। तेत्रीस आशातना। ज्ञानदर्शनचारित्रप्राप्तिनी सातना खडवी तेआ

इति बत्रीसमोसमवाय थयो ॥ ३२ ॥ शिष्यअल्पकालीनदीक्षानोधणी रात्निकघणी दीक्षानोधणी तेहने आसन्नो ढूंकडोगताहोय चालेएह पहिलीतेआशातनाशिष्यने १। रा

शातना कही तेकहेछे। शिष्यअल्पकालीनदीक्षानोधणी रात्निकने सपक्खकहतांबराबरीचालवोते आशातनाशिष्यने २। इम एणे अभिलापे शिष्यबडाने

त्निकबडानेआगलथकीगताहोयचालेतेआशातनाशिष्यनें २। रात्निकने सपक्खकहतांबरावरीचालवोते आशातनाशिष्यने ३। इम एणे अभिलापे शिष्यवडाने

आगल ऊभोरहे तेआशातना शिष्यने ४। शिष्यगुरुनेआगल ऊभोरहेतेआशातनाशिष्यने ५। शिष्यगुरुने बराबरऊभोरहे तेआशातना शिष्यने ६। शिष्यगुरु

गतयोः पूर्वतरमाचमतः ग्रच्स्याशातना १० एवं पूर्वगमनागमनमालोचयत ११ तयारात्रौकाजागर्त्तीतिपृच्छे रात्रिकेनतद्वचनमप्रतिशृण्वतः १२ रात्निकस्य।

स्स ६ सेहेराइणियस्स पुरउंनिसीइत्ताभवइ आसायणासेहस्स ७ सेहेराइणियस्स सपक्खंनिसीइत्ताभवइ आसायणासेहस्स ८ सेहेराइणियस्स आसन्ननिसीइत्ताभवइ आसायणासेहस्स ९ एवंएएणअभिलावेणं सेहेराइणिएणंसद्धिंवहिया विहारभूमिंनिक्खंतेसमाणे तत्थपुव्वामेवसेहतराए आयामइपच्छाराइणिए आसायणासेहस्स १० सेहेराइणिएणंसद्धिं वहियाविहारभूमिं वा निक्खंतेसमाणे तत्थपुव्वामेवसेहतराएआलोएइ पच्छाराइणिए आसायणासेहस्स ११ सेहेराइणियस्सराओवावियालेवावाहरमाणस्स अज्जोकेसुत्ते केजागरेत त्थसेहेजागरमाणेराइणियस्स अप्पडिसुणेत्ताभवइ आसायणासेहस्स १२ सेहेराइणियस्स पुव्वं लवत्तए तंपु

ने आगलथको बेसे तेआशातनाशिष्यने ७। शिष्यगुरुने बरावरे बेसे तेआशातनाशिष्यने ८। शिष्यआसन्नकहतां ढुकडोथकोबेसे तेआशातनाशिष्यने ९। एवएणे भाभिलापे ९। आशातना। शिष्यगुरुवेहुफेरेंगयाथकां तिहांशिष्यपहिलेआचमनलेई जलशुचि करे तेआशातनाशिष्यने १०। शिष्यगुरुसाथें वहिर्भूमिथंडिलें चैत्यजिनमूर्ति अथवा भूमिकायें जाताथका पहिलेशिष्य इरियावही पडिकमे पछेगुरुपडिकमे तेआशातना शिष्यने ११। शिष्यगुरुनेपहिलेंहीज आवणहा रसाथे गुरु बोलाविना बोले तेआशातना शिष्यने १२। शिष्य प्रतें गुरुयें पूछ्यो कवण रात्रियेंसूतोछे अथवा कवण जागेछे एहवं पूछेथके शिष्य जागतो थ

पूर्वमालपनीय कथनश्रवमस्यपूर्वतरमालपत: १२ अशनादिलब्धमपरस्य पूर्वमालोचयत: १४ एवमन्यस्योपदर्शयत: १५ एवनिमन्त्रयत: १६ रात्निकमनापृच्छ्या ऽन्यस्मैभक्तादिददत. १७ स्वयप्रधानतर भुजानस्य १८ क्वचित्प्रयोजनेव्याहरती रात्निकस्यचवाप्रतिशृखत: १९ रात्निकमातितत्समचताद्दताशब्देन बहुधा

वामेवसीहतराए आलवइ पच्छाराइणिए आसायणासेहस्स १३ सेहे० असणंवापाणंवाखाइमंवासाइमवा पडिगाहित्ता तपुव्वामेवसीहतराएगिहस्सआलोएइ पच्छाराइणियस्स आसायणासेहस्स १४ सेहेअसणंवा४ पडिगाहित्तापुव्वामेवसीहतराएगिहस्सपडिदंसेइपच्छाराइणिए आसायणासेहस्स १५ सेहेअसणंवा४पडिगा हित्ता पुव्वामेवसीहतराएअन्नस्स उवणिमंतेइ [illegible] १६ सेहेराइणिएणसद्धिंअस णवा४पडिगाहित्तातंराइणिय अणापुच्छित्ता जस्सजस्सइच्छइ तस्सतस्सखद्धं२दयग्रइ आसायणासेहस्स१७

को उत्तर न दे तेआशातना शिष्यने १३। शिष्यअशनपान खादिम स्वादिमविहरीने ते पहिले बीजाआगलआलोईनेपछे गुरूनेआगलआलोवे तेआशातना शिष्यने १४। शिष्यअशनपान खादिमस्वादिम विहरीनेपेहिले वीजासाधूने देखाडे पछे गुरूने देखाडे तेआशातना शिष्यने १५। शिष्य अशनपान खादिम स्वादिम विहरीने पहिले वीजासाधुने निमन्त्रणादे पछे गुरूने निमन्त्रे तेआशातना शिष्यने १६। शिष्यगुरू साथे अशन पान खादिम स्वादिम विहरीने गुरू ने अण पूछे थके जेजे साधुवांछे तेह तेहने आपे तेआशातनाशिष्यने १७। शिष्य गु॰ने साथे असनपान खादिम स्वादिम विहरीने मनोज्ञमनोज्ञ स्निग्धस्नि

भाषमाणस्य २० व्याहृतेनमस्तकेनवन्दे इतिवक्तव्येकिंभणसीतिब्रुवाणस्य २१ प्रेरयतिरात्निकि कस्त्वंप्रेरणायामितिवदत: २२ आचार्यग्लानंकिंनप्रतिचरसीत्या द्युक्ते त्वंकिंनतप्रतिचरसीत्यादिभणत: २३ धर्मंप्रथयतिगुरावन्यमनष्कतां भजतोऽनुमोदयतइत्यर्थ: २४ कथयतिगुरौनस्मरसीतिवदत. २५ धर्मकथामाच्छिदत:

सेहेराइणिएणंसद्धिंअसणंवा ४ आहारेमाणे तत्थसेहे रूक्खं रूक्खं झायं झायं रसियं रसियं उसढं उसढं मणुन्नं मणुन्नं मणामं मणामं निद्धं निद्धं लुक्खं लुक्खं आहारेत्ता भवइ आसायणासेहस्स १८ सेहेराइणियस्स वाह रमाणस्सअप्पडिसुणित्ताभवइ आसायणासेहस्स १९ सेहेरायणियं खद्धं खद्धं वत्ताभवइ आसायणासेहस्स २० सेहेराइणियं किंवइत्ताभवइ आसायणासेहस्स २१ सेहेराइणियंतुमइइवत्ताभवइ आसायणासेहस्स २२ सेहेरायणिय तज्जाएणं तज्जायपडिभणित्ताभवइ आसायणा० २३ सेहेराइणियस्स कहंकहेमाणस्स नोसु

घ रूच रूच आप भोजनकरे ते आशातना शिष्यने १८। शिष्य गुरुये बोलाव्यो थको वलती उत्तर न आपे ते आशातना शिष्यने १९। शिष्य गुरुयें बोलाव्यो थको ठामे बेठोथको उत्तर दे ते आशातना शिष्यने २०। शिष्य गुरुयें बोलाव्योथको मत्थेण वदामि एहने स्थाने श्यूंकहोछो एहवूं बोले ते आशातना शिष्यने २१। वडायें प्रेरणाकरता काइक कार्यनी आज्ञा देतांथकां तूं कोण प्रेरणा करणहार एहवो बोले तेआशातना शिष्यने २२। शिष्यप्रते वडाये ग्लान आचा र्यनी पर्युपासना केमनथी करतो एम कहतांथकां तू केमनथी करतो एहवूं बोले ते आशातना शिष्यने २३। गुरुयें धर्मोपदेश करतांथकां अन्यचित्त होय तेणे जेशिष्य अनुमोदे ते आशातना शिष्यने २४। शिष्य गुरुयें काइएक वार्ता कहतांथकां तम्हे भूली गयाछो एमनथी एमछे एहवो बोले ते आशातना

२६ भिक्षावेलावर्त्ततेइत्यादिवचनतः पर्षदभिदानस्य २७ गुरुपर्षदभेदोनुत्थितायास्तथैवव्यवस्थितायां धर्मकथयतः २८ गुरोः सस्तारकपादेनघट्टयतः २९ गुरोः सस्तारकेनिषीदतः ३० उच्चासनेनिषीदतः ३१ समासनेप्येव ३२ नयस्मिन्नश्चत्तमासुनोऽहाव रानिकाव्यातपतास्तमगतएवासनादिस्थितएव प्रतिस्मृणोति

भिणेजवइ आसायणासेहस्स २४ सेहेरायणियस्स कहंकहेमाणस्स नोसरसि एववत्ताजवइ आसायणा० २५ सेहेराइणियस्स कहंकहेमाणस्स कहंआच्छिदित्ताजवइ आसायणासेहस्स २६ सेहेराइणियस्स कहंकहेमाणस्स परिसम्भित्ताजवइआसायणासेहस्स २७ सेहेराइणियस्स कहंकहेमाणस्स तीसेयपरिसाए अणुठिआए अभिन्नाए अवोच्छिन्नाएं अवोगडाए दोच्चंपितच्चंपि तामेवकहंकहेत्ताजवइ आसायणासेहस्स २८ सेहे राइणियस्स सेज्जासंथारगपाएणं संघट्टित्ता हत्थेणअणुन्नवेत्तागच्छइआसा० २९ सेहेराइणियस्स सेज्जासंथारए चिठित्ता वा निसीइत्ता तुयट्टित्तावा आसा० ३० सेहेराइणियस्स उच्चासणंसिवा ३१ समासणंसिवा चिठित्तावा निसीइत्तावा तुयट्टित्तावा जवइआसायणासेहस्स ३२ सेहेराइणियस्स वाहरमाणस्स तत्थगए

शिष्यने २५। जेशिष्य गुरुयें धर्मकथा कहता थका धर्मकथानो छेदन करे तेआशातना शिष्यने २६। शिष्य गुरु सभाये बेठा थका भिक्षानी वेलाथई इत्यादि कहीने पर्षदानो भेदकरे ते आशातना शिष्यने २७। शिष्य गुरु सभायें बेठा थका पर्षदाप्रति धर्मोपदेश करे ते आशातना शिष्यने २८। शिष्य गुरूना आसनप्रतें पावथकी सघट्टकरे ते आशातना शिष्यने २९। शिष्य गुरुने आसने बेसे ते आशातना शिष्यने ३०। शिष्य गुरु थकी उचे आसने बेसे ३१।

आगत्यहिप्रत्युत्तरंदेयमिति अत्रस्याशातनेति ३३ तेत्तीसंभोमत्ति भौमानिनगराकाराणि विशिष्टस्थानानीत्यन्ये तथाजयाणंसूरिएइत्यादि इहसूर्यस्यमण्डलयो रतरे द्वेद्वे योजनेऽष्टचत्वारिंशच्चैकषष्ठिभागाः एतद्विगुणपंचयोजनानि पंचत्रिंशच्चैकषष्ठिभागा एतावताहीनविष्कंभ सर्वबाह्यमण्डलाद्वितीयं मण्डलंभवति ततश्चवृत्तक्षेत्रपरिधितः न्यायेनपरिधितः सप्तदशभिर्योजनैरष्टत्रिंशताचैकषष्ठिभागैर्न्यून द्वितीयमंडलसर्वबाह्यमंडलाद्भवति एवंतृतीयमंडले एतद्विगुणेनहीनंभवति तथाहि तद्विष्कंभतएकादशभिर्योजनैर्नवभिश्चैकषष्ठिभागैः पर्यन्तिमाद्धीनंभवति परिधितस्तुपंचत्रिंशतायोजनैः पंचदशभिश्चैकषष्ठिभागैर्न्यूनंभवति तच्च त्रीणिलक्षाणि अष्टादशसहस्राणि द्विशतएकोनाशीत्युत्तराःषट्चत्वारिंशच्चैकषष्ठिभागाइति तथान्तिममंडलान्मंडले२ द्वाभ्यांमुहूर्त्तस्यैकषष्ठिभागाभ्यांदिनवृद्धिर्भ

चेवपडिसुणित्ताभवइ आसायणासेहस्स ३३ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररन्नो चमरचंचाएरायहाणीए एक्कमेक्कबाराएतेत्तीस २ भोमा प० महाविदेहेण वासे तेत्तीस जोयणसहस्साइं साइरेगाइं विक्खंभेणं प० जयाणंसूरिए बाहिराणंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ताण चारंचरइ तयाण इहगयस्स पुरिसस्स तेत्तीसाए जोयणसहस्से

गुरुने समान आसने बेसे ते आशातना शिष्यने ३२ । गुरुयें काइंक वार्ता पूछ्यां थका आसने बेठोई उत्तर दे ते आशातना शिष्यने ३३ । एन्न तेत्रीस आशातना कही ३३ ॥ असुरेंद्र असुर कुमारनो राजा एहवा चमरेंद्रनी चमरचंचा राजधानीने विषे एकेके वारें तेत्रीस तेत्रीस नगरने आकारें भला स्थानक कह्या । जंबूद्वीप संबंधी महाविदेहक्षेत्र तेत्रीस हजार योजन झाझेरा पिहुलपणें कह्यो । जिवारें सूर्य सर्वबाह्य मंडल थको त्रीजे मंडले आवीने भ्रमणकरे तिवारें भरतक्षेत्रगत मनुष्यने तेत्रीस हजार योजनथकी दृष्टिगोचर आवे । ते पोसी पूनिमे मकर संक्राति पछे माह बदी १ एकम दिने सूर्य उत्तरायणे

णादिति ॥ ३२ ॥ अथचतुस्त्रिंशत्तमस्थानके किमपिलिख्यते बुद्धाइसेसति बुद्धानांतीर्थंकतामप्यऽतिशेषा अतिशया बुद्धातिशेषाः अवस्थितमट्ठवि

असुराणं अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिउवमाइं ठिई प० विजय वेजयंत जयंत अपराजिएसु विमाणेसु उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सव्वठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ना तेसिण देवाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणदेवा तेत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं तेत्तीसाए वाससहस्सेहिं आहारठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेतेत्तीसभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति सव्वदुक्खाणमंत करिस्संति ॥ ३३ ॥ चोत्तीसंबुद्धाइ

अप्पइठाण नरके नारकीनी जघन्य स्थिति नथी उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपमनी स्थिति कही। केतलाएक असुर कुमार देवतानी तेत्रीस पल्योपमनी स्थिति कही। सौधर्म ईशान देवलोकें केतलाएक देवतानी तेत्रीस पल्योपमनी स्थिति कही। विजय १ वैजयंत २ जयंत अपराजित ४ विमाने देवतानी तेत्रीस सागरोपमनी स्थितिकही। जेदेवता विचले सर्वार्थसिद्ध महाविमाने देवतापणे उपनाछे ते देवतानी जघन्य स्थितिनथी उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपमनी स्थिति कही। ते देवता तेत्रीस पखवाडे गयेथकें स्वासोस्वासले घणोले उंचोले नीचो मूंके तेह देवतानें तेत्रीस सहस्र वर्षगये आहारनी वांछा उपजे। छे केतला एक भव्यजीव जे तेत्रीस भवने आतरे सीझस्ये बूझस्ये मंकास्ये सर्वदुःखनो अतकरस्ये मोक्ष जास्ये। इति तेत्रीसमो समवाय संपूर्णम् ॥ ३३ ॥

निरामया नीरोगानिरुपलेपानिर्मला गात्रयष्टिस्त्व ॥
स्वभावंकेशाश्चशिरोजाः स्मश्रूणिचकूर्चरोमाणिचशेषशरीरलोमानि नखाश्चप्रतीताइतिद्वन्द्वैकत्वमितिकः १ निरामया नीरोगानिरुपलेपानिर्मला गात्रयष्टिस्त्व उत्पलच नीलोत्पलमुत्पलकुष्टंवा गंधद्रव्य
नुलतेतिद्वितीयः २ गोक्षीरपाण्डुरमांसशोणितमितितृतीयः ३ तथापद्मचकमलगंधद्रव्यविशेषोवा यत्पद्मकमितिरूढ प्रच्छन्नत्वमेवस्फुटतरमाह अदृश्यमसच
विशेषस्तयोर्योगंधः सयत्रास्ति तत्तथोच्छ्वासनिःश्वासमितिचतुर्थः ४ प्रच्छन्नमाहारनिर्हार अभ्यवहरणमूत्रपुरीषोत्सर्गौ तथा प्रागाशगतव्योमवर्ति आकाशकंवा प्रकाशमि
क्षुषानपुनरवज्ञादिलोचनेन इतिपचम ५ एतच्चद्वितीयादिकमतिशयचतुष्कजन्मप्रत्यय आकाशकेचक्रंषष्ठ

सेसा प० तं० अवठिए केसमंसुरोमनहे १ निरामया निरुवलेवा गायलठी २ गोक्खीरपण्डुरे मंससोणिए ३ पउमुप्पलगंधिए उस्सासनिस्सासे ४ पच्छन्ने आहारनीहारे अदिस्से मंसचक्खुणा ५ आगासगयं चक्कं ६

हिवे चौत्रीसमो समवाय लिखे छे ॥ चौत्रीस बुद्ध कहतां तीर्थंकरदेव तेहना अतिशय ते बुद्धातिशय बीजा देवनी अपेक्षाये अधिक पणो कह्या तेकहेछे। वधेनहीमस्तकनाकेश श्मश्रूडाढीमूछ शरीरनारोम। नीरोगवलीनिर्मलशरीर २। गायनादूधसरीखोधवल मांस रुधिर ३। पद्मकमलतेहनागंधसरीखो स्वा सोस्वास नो गंध ४। अदृश्यदीसेनही मास चक्षुयेंकरी येतले चर्मचक्षुयेकरी एहवोप्रछन्नगुप्तआहार जीमणनोविधि वलीनीहार मूत्रपुरीषनोत्याग ५। एणी येछन्मस्थदृष्टीयें येपांचअतिशयथया। तेमाहिपहिलो मूकीबीजाथकीपचमालगे चारअतिशय जन्मथकी माडी ने होय ५। जेहनोआकाशगत धर्मचक्रआ ले ६। आकाशगत छत्र ७। आकाशगतवर प्रधान श्वेतचामर ८। आकाशनीपरें अत्यत निर्मल एहवास्फटिकरत्नमयीपादपीठसहितसिंहासन ८। आका

त्यर्थः चक्रंधर्मचक्रमितिषष्ठः ६ आकाशकेछत्रमितिसप्तमः एवमाकाशगंछत्रंछत्रत्रयमित्यर्थः ७ आकाशकेप्रकाशे श्वेतवरचामरे प्रकीर्णकेद्रत्यष्टमः ८ आगा सफालियामयत्ति आकाशमिवयदत्यंत मच्छस्फटिक तन्मय सिंहासनसहपादपीठमितिनवम ९ आगासगओत्ति आकासगतोऽत्यर्थतुङ्गमित्यर्थः कुडिभित्तिल घुपताकाः सभाव्यन्ते तत्सहस्रैः परिमंडितश्चासावभिरामश्चातिरमणीय इति विग्रहः इद्ध्भओत्ति शेषध्वजापेक्षयातिमहत्वादिंद्रश्चासौध्वजश्च इन्द्रध्वजइति पुरओत्ति जिनस्याग्रतोगच्छतीतिदशमः १० चिट्ठतिवानिसीयतिवेत्ति तिष्ठतिगतिनिवृत्त्यानिषीदत्युपविशंतितत्क्षणादेवत्ति तत्क्षणमेवाकालहीनमित्यर्थः पत्रैः सच्छिन्नइतिवक्तव्येप्राकृतत्वात् संच्छन्नपत्रइत्युक्त सचासौपुष्पपल्लवसमाकुलश्चेतिविग्रहः पल्लवा अंकुराः सच्छत्रः सध्वजः सघंटः सपताकोऽशोकवरपादप

आगासगयं छत्तं ७ आगासगयाउ सेयवरचामराउ ८ आगासफालियामयं सपायपीढं सीहासणं ९ आगा सगउ कुडभीसहस्सपरिमंडियाभिरामो इदज्झउ पुरउ गच्छइ १० जत्थ जत्थ वियणंअरहंताभगवताचिट्ठं तिवा निसीयतिवा तत्थ तत्थ वियणं तक्खणादेव सछन्नपत्तपुप्फपल्लवसमाउलो सछत्तो सज्झउ सघंठो सपडा

शगत एतले अत्यतऊचो लघुपताकाना सहस्रकरी परिमंडित मनोहर एहवोइन्द्रध्वज अन्यध्वजनीअपेक्षायें मोटो तेमहेंद्रध्वजजिननेआगलथकी चाले १० । जिहा जिहा अरहंत भगवंत ऊभारहे अथवा बैसे तिहातिहा तत्काल पत्रे करीछायो अने फूलपल्लवेकरी सर्वतः व्याप्त ध्वजासहित घंटापताका सहित वर प्रधान अशोकवृक्ष ऊपर छायाकरे ११ । वेगली थोडीपूठे मस्तकने प्रदेशे तेजमंडल भामंडल होय तेभामंडल अंधकारने दसोदिशे नसाडे १२ । जिहा

त्येकादश: ११ ईसिंत्ति ईषदल्प पिठ्ठओत्ति पृष्टत: पश्चाद्भागे मउडठाणमिति मस्तकप्रदेशेतेजोमण्डल प्रभापटलमितिद्वादश' १२ बहुसमरमणीयोभूमिभाग
इतित्रयोदश: १३ अहोसिरत्ति अधोमुखा: कंटका भवतीति चतुर्दश: १४ ऋतवोविपरीता: कथमित्याह सुखस्पर्शाभवतीति पंचदश: ५१ योजनयावत् क्षेत्र
शुद्धि: संवर्त्तकवातेनेति षोडश: १६ जुत्तफुसिएणत्ति उचितबिन्दुपातेनेति निहयरयरेणुयंति वातोत्खातमाकाशवर्त्तिरजो भूवर्त्तीतुरेणुरिति गंधोदकवर्षाभिधा
न:सप्तदश: १७ जलस्थलज यद्भास्वरंप्रभूत च कुसुमतेनवृंतस्थापिताऊर्ध्वमुखेनदशार्धवर्णेन पंचवर्णेनजानुनोरुत्सेधस्य उच्चत्वस्ययत्प्रमाण यस्यसजानूत्सेधप्रमाणमा

गोमुसोगवरपायवे भवतिसंजायइ ११ ईसिपिठ्ठउ मउडठाणंमि तेयमंडलं अभिसंजायइ अंधकारे वियणं दससदिसाउ पभासेइ ११ बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे १३ अहोसिरा कंटया जायंति १४ उऊविवरीया सुहफासा भवंति १५ सीयलेणं सुहफासेणं सुरभिणामारुएणं जोयणपरिमंडलं सव्वउ समंता संपमज्जिज्ज

तीर्थंकर बिहारकरे तिहा घणोसम रमणीक भूमिभाग होय १३। जेणें मार्गें तीर्थंकर विहारकरे कांटा अधेमस्तकेहोय १४। ऋतु विपरीत एतले उन्हा
लायें शीयालानोभाव शीयालायेउन्हालानोभाव तेमाटें सुखरूपस्पर्शहोय १५। शीतल सुखस्पर्श सुगंधि ठाढो मंद गंधयुक्त एहवा संवर्तवायरेंकरी एकयोज
नमंडललगें सगली दिसाविदिसा प्रमार्जें १६। जेणे मार्गें तीर्थंकर विहारकरे तेहमार्गेंमेवआकाशवर्तीरज भूमिवर्तीरेणु गंधजलनापरिमित सूक्ष्मसूक्ष्म बिंदु
ये करीनसाडें १७। स्थल कुसुम तेचपाजाईप्रमुख जलकुसुम तेकमलादिक भास्वर तेजवंत प्रभूतघणा नीचाछेवींट जेहना एतलेऊर्ध्वमुखे पांचवर्ण फूलेंकरीढीं

न. पुष्पोपचार: पुष्पप्रकारइत्यष्टादश' १८ तथाकालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघतगंधुद्धयाभिरामे भवइत्ति कालागरुप्रगंधद्रव्यविशेप: प्रवरकुंदुरुक्कश्चचीडा भिधान गधद्रव्यतुरुक्कच शिल्लकाभिधानं गंधद्रव्यमिति द्वंद्वस्ततएतल्लचणो योधूपस्तस्यमघमघायमानो बहुलसौरभ्यो योगधउद्धुतउद्भूतस्तेनाभिराममभिरमणी ययत्तत्तथा स्थाननिषीदनस्थान मितिप्रक्रमइत्येकोनविंशतितम: १९ तथाउभयोपासिचणं अरहंताण भगवताण दुवेजक्खाकडयतुडियथंभियभुयाचामरुक्खेव णं करतित्ति कटकानिप्रकोष्टाभरणविशेषास्तुटितानि बाह्वाभरणविशेषास्तैरतिबहुत्वेनस्तंभिताविवस्तंभितौभुजौययोस्तौ तथायचौदेवाविति विंशतितम: २० बृहद्वाचनायामनतरोक्तमतिशयद्वयनाधीयते अतस्तस्यापूर्वैष्टादशैव अमनोज्ञानांशब्दादीनामपकर्षोऽभावइत्येकोनविंशतितम: १९ मनोज्ञानांप्रादुर्भावइति विंशतितम. २० पव्वाहरओत्ति प्रव्याहरतोव्याकुर्वतोभगवत: हिययगमणीउत्ति हृदयंगम: जोयणनीहारीत्ति योजनातिक्रामी स्वरइत्येकविंश: २१ अद्धमाग

इ १६ जुत्तफुसिएणं मेहेणय निहयरयरेणू पकिज्जइ १७ जलथलयभासुरपभूतेणं विंटठाविसुदसद्धवन्नेणं कुसुमेणं जाणुस्सेहप्पमाणमित्ते पुप्फोवयारे किज्जइ १८ अमणुन्नाणं सद्दफरिसरसरूवगंधाणं अवकरिसो भवइ मणुन्नाणं सद्दफरिसरसरूवगंधाणं पाउब्भावो भवइ १९ उभओ पासिंचणं अरहंताणं भगवंताणं दुवे

चणना उंचप्रमाणमात्र फूलनीपूजा फूलपगरकरे १८। खोटा शब्दस्पर्शरसरूप गधनो अभाव होय १९। मनोहर शब्दस्पर्शरसरूपगधनो प्रादुर्भाव होय सिद्धांत मूलमतीये वलीवाचनांतरे कृष्णागुरुप्रमुख धूपउखेवे जिहूंपासे वेयचजभा चामरउखेवे २०। वखाण करतां भगवतनो हृदयंगम अनेसोहामणोयोज

क्षीयन्ति प्राकृतादीनांषण्णांभाषाविशेषाणां मध्येयामागधीनामभाषा रसोलसोमागध्यामित्यादिलक्षणवतीसा असमाश्रितस्वकीयसमग्रलक्षणाऽर्द्धमागधीत्युच्यते
तगाधर्ममाख्याति तस्याएवातिकोमलत्वादिति द्वाविंश. २२ भासिज्जमाणीति भगवताभिधीयमाना आरियमणारियाणंति आर्यानार्य देशोत्पन्नाना द्विपदा
मनुष्याश्चतुष्पदागवादयः मृगाआटव्याः पशवोग्राम्याः पक्षिणः प्रतीताः सरीसृपा उर्ई.परिसर्प्पाभुजपरिसर्प्पाश्चेति तेषांकिमात्मनआत्मातया आत्मीययेत्यर्थः
भाषा तया भाषाभावेनपरिणमतीतिसंबन्धः किंभूतासौभाषेत्याह हितमभ्युदयः शिवंमोक्ष सुखश्रवणकालोद्भवमानन्ददातीतिहितशिवसुखदेतित्रयोविंशः
२३ पूर्वभवांतरेऽनादिकालेवा जातिप्रत्ययबद्ध निकाचित वैरमभिन्नभावोयेषातेतथा तेपिच आसतांमध्येदेवावैमानिका असुरानागाश्चभवनपतिविशेषाः

जक्खा क्खगतुज्झियथज्जियज्जुया चाओरुक्केवणं करति २० पच्चाहरज्जे वियणं हियगमणीज्जे जोयणनीहारी
सरो २१ जगवंचणं ग्रुद्धमागहीए ज्ञासाए धम्ममाइक्खइ २२ सावियणं ग्रुद्धमागहीज्ञासा ज्ञासिज्जमाणी
तेसिसव्वेसि ग्रारियमणारियाण दुप्पयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाण ग्रुप्पप्पणोहियसिवसुहदायज्ञास

नलगे विस्तरतो शब्दहोय २१। भगवंत छ भाषामाहि अर्द्धमागधीभाषायेंकरी धर्मपतें कहे २२। तेहीजपणि अर्द्धमागधीभाषा सगलाआर्यअनार्यदेशनाउप
नानेद्विपदसनुष्यने चतुष्पदगवादिकने मृगअटवीजीव पशुगामसबधी ढोर खेचर उरपरभुजपरसर्प एहनाआत्माने हित अभ्युदयविशेष मोक्षसुखआनदतेहने
देएहवी भाषापणि परिणमे २२। भवातरे अनादिकाले अथवा जातिहेतुकावद्धनिकाचित वैर बाध्या जेणे एहवादेव आवैमानिका १। असुरनागकुमार एहभवनप
तोदेव सुवर्ण शोभनवर्णपितते ज्योतिषी यक्ष राक्षस किंनर किंपुरुष एह चारव्यं.,र विशेष गरुडलाछनपणाथकी सौपर्णकुमार भवनपति विशेष गंधर्वमहोर

सुवर्णा.शोभनवर्णा एतेचज्योतिष्कायक्षराक्षसकिन्नरा:किंपुरुषा:व्यंतरभेदा:गरुडागरुडलांछनत्वात् सुपर्णकुमाराभवनपतिविशेषा:गन्धर्वामहोरगाश्चव्यंतरवि शेषाएव एतेषाद्वंद्व: पसंतचित्तमाणसा प्रशातानिसमङ्गतानिचित्ताणि रागद्वेषाद्यनेकविधविकारयुक्ततया विविधानिमानसान्यंत:करणानियेषांते प्रशातचि त्तमानसा धर्मनिशामयति इतिचतुर्विंश: २४ वृद्धवादतयाइदमन्यदतिशयद्वयमधीयते यदुत अन्यतीर्थिकप्रावचनिका अपिचणं वंदंतोभगवतमितिगम्यते इतिपचविंश: २५ आगता. सतोऽर्हत: पादमूले नि:प्रतिवचनाभवति इतिषड्विंश: २६ जओजओवियणति यत्रयत्रापिचदेशे तओ २ त्ति तत्रतत्रापिच पंच विंशती योजनेषु ईतिर्धान्याद्युपद्रवकारी प्रचुरमूषकादि प्राणिगणइतिसप्तविंश: २७ मारिर्जनमरकइत्यष्टाविंश: २८ स्वचक्रं स्वकीयराजसैन्य तदुपद्रवका

ताए परिणमइ २३ पुव्वबद्धवेरावियणंदेवासुरनागसुवन्नजक्खरक्खसकिन्नरकिंपुरिसगरुलगंधव्वमहोरगाअरहओ पायमूले पसंतचित्तमाणसा धम्मं निसामंति २४ अन्नउत्थियपावयणिया वियणमागया वंदंति २५ आगया समाणा अरहओ पायमूले निप्पडिवयणाहवंति २६ जओ जओ वियणं अरहंतो भगवंतो विहरंति तओ तओ

गन्धर्वविशेष एहसगला वैरभावछांडीने अरिहंतने पायमूले प्रसन्नचित्त प्रशातथयोछे वित्तरागद्वेषादि अनेकविधविकार जेहना एहवाधर्मप्रते सांभले २४। अन्यतीर्थीअन्ययूथिकाकपिलादिक अन्य प्रवचन मिथ्यात्वशास्त्रनाधणीतेहीपणिआवीयकाभगवतप्रते वांदे २५। तेहअन्यशास्त्रनावादीप्रतिवादीआव्यायका अरिहंतना पायमूले निष्प्रतिवचना उत्तरदेवाभणी असमर्थथया २६। जेणेप्रदेशे अरिहंत भगवतविहरे विचरे तिहां योजन पचवीसलगे ईति धान्यादिउप द्रवकारी प्रचुर मूषकादिक न होय २७। मारी लोगमरकीनहोय २८। स्वचक्र स्वदेशी कटक उपद्रवनकरे २९। परचक्र परदेशी कटकनो भयनहोय ३०।

यन्ते चतुर्णामेवैकदाजन्मसंभवात्तथाहि मेरोपूर्वापरशिलातलयोर्द्वेद्वेसिंहासनेभवतोऽतो द्वावेवद्वावेवाभिषिच्येतेऽतोद्वयोर्द्वयोरेवजन्मेति दक्षिणोत्तरयोः चैत्रयो स्तदानीदिवससद्भावा न्नभरतैरावतयोजिनोत्पत्तिरर्द्धरात्रएवजिनोत्पत्तेरिति पढमेत्यादि प्रथमायां पृथिव्यांत्रिंशन्नरकावासानांलक्षाणि पचम्यांत्रीणिषष्ठ्यापचो नलक्षं सप्तम्यां पचनरका एवं सर्व मीलने चतुस्त्रिंशल्लक्षाणिभवंतीति ॥ ३४ ॥ पंचत्रिंशत्स्थानकं सुगमम् नवरं सत्य वचनातिशया आगमे

वाही खिप्पामेवउवसमंति ३४ जंबूद्दीवेणंद्दीवे चउत्तीसं चक्कवट्टिविजया प० तं० बत्तीसं महाविदेहे दो न्नरहेरवए जंबूद्दीवेणंद्दीवे चोत्तीसंदीहवेयड्ढा प० जंबूद्दीवेणंद्दीवे उक्कोसपएचोत्तीसं तित्थकरा समुप्पज्जंति चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररन्नो चोत्तीसं भवणावाससयसहस्सा प० पढमपंचमछठीसत्तमासु चउसु पुढवीसु चोत्तीसं निरयावाससयसहस्सा प० ॥ ३४ ॥ पणतीसं सच्चवयणाइसेसा प०

होय अनेइहांरात्रिहोय तिवारें तिहां दिवसहोय । तीर्थंकरनो जन्म अर्द्धरात्रीयें होय तेमाटे चौत्रीसनो जन्मसमकालेनकह्यो । मेरुनी पूर्वपश्चिम शिलात लने उपर दोयदोय सिंहासनछे एहथी बेबेनो होज अभिषेक थाय एमाटे एकसमये बेबे तीर्थंकरनो जन्म कहिवो । असुरकुमारनाराजा एहवा चमरेन्द्र असुरेन्द्रना चउत्रीसभवनवासशतसहस्र एतलेचउत्रीसलाख भवनकह्या । पहिली नरक पृथिवीयें ३० लाख नरकावासा पांचमीये ३ लाख छट्ठीयें पांचऊणा एकलाख सातमीये पांच ४ एमचार नरकपृथिवीनांमिल्यो चौत्रीसलाखनरकावासकह्या इतिचौत्रीसमोसमवाय संपूर्ण ॥ ३४ ॥ हिवे पैत्रीसमो समवायलिखेछे पैंत्रीस सत्यवचनना अतिशयकह्या । संस्कारवचन संस्कृतलक्षणवतपणो १ । उदात्तत्व ऊंचेस्वरेंबोलवो २ । उपचारोपेतत्व अग्रामीण वचनबोल

न दृष्टा एतेतुग्रथांतरेदृष्टाः संभावितवचनंहिगुणवद्वक्तव्यं तद्यथा संस्कारवत् १ उदात्तं २ उपचारोपेतं ३ गंभीरशब्दं ४ अनुनादि ५ दक्षिणं ६ उपनीतरागं ७
महार्थं ८ अव्याहतपौर्वापर्यं ९ शिष्टं १० असंदिग्ध ११ अपहृतान्योत्तरम् १२ हृदयग्राहि १३ देशकालाव्यतीतम् १४ तत्वानुरूपम् १५ अप्रकीर्णप्रसृतम् १६
अन्योन्यप्रगृहीतम् १७ अभिजातम् १८ अतिस्निग्धमधुरम् १९ अपरमर्मविद्ध २० अर्थधर्माभ्यासानपेतम् २१ उदार २२ परनिंदात्मोत्कर्षविप्रयुक्तम् २३ उप
गतश्लाघं २४ अनपनीतम् २५ उत्पादिताच्छिन्नकौतूहलम् २६ अद्भुत २७ अनतिविलम्बितम् २८ विभ्रमविक्षेपकिलिकिंचितादिविमुक्तम् २९ अनेकजातिसंश्रया
द्विचित्रम् ३० आहितविशेषम् ३१ साकारम् ३२ सत्वपरिगृहम् ३३ अपरिखेदितम् ३४ अव्युच्छेदम् ३५ चेति । वचनम् महानुभावैर्वक्तव्यमिति तत्रसंस्कार
वत्वसंस्कृतादिलक्षणयुक्तत्वम् १ उदात्तत्वमुच्चैर्वृत्तिता २ उपचारोपेतत्वमग्राम्यता ३ गंभीरशब्दमेघस्येव ४ अनुनादित्व प्रतिरवोपेतता ५ दक्षिणत्वसरलत्व
म् ६ उपनीतरागत्व मालकोशादिग्रामरागयुक्तता ७ एतेसप्तशब्दापेक्षाअतिशयाः अन्येत्वर्थाश्रयास्तत्रमहार्थत्वम् बृहदभिधेयता ८ अव्याहतपौर्वापर्यत्वम्
पूर्वापरवाक्याविरोधः ९ शिष्टत्वअभिमतसिद्धांतोक्तार्थता वक्तुःशिष्टतासूचकत्व वा १० असंदिग्धत्व असंशयकारिता ११ अपहृतान्योत्तरत्वम् परदूषणा
विषयता १२ हृदयग्राहित्वम् श्रोतृमनोहरता १३ देशकालाव्यतीतत्वम् प्रस्तावोचितता १४ तत्वानुरूपत्वम् विवक्षितवस्तुस्वरूपानुसारिता १५ अप्रकीर्णप्र

वो ३। गंभीर जडेस्वरेबोलवो ४। बोलतां प्रतिशब्दहोय ५। सरसवचनबोलवो ६। मालकौसादि राग सहित स्वरें बोलवो ७। थोडेवचने अर्थघणोएहवूं बोल
वो ८। पूर्वापर विरोध रहित ९। सिद्धांतनो प्रतिपादक १०। संदेह रहित ११। अनेरावादीना वचने पराभवे नहीं १२। सांभलहारनो मनहरे १३। दे

स्तत्वम् सुसबंधस्यसतः प्रसरणं अथवाऽसंवद्धाधिकारित्वातिविस्तरयोरभावः १६ अन्योन्यप्रगृहीतत्वम् परस्परेण पदानां वाक्यानांवासापेक्षता १७ अभि
जातत्वचक्षुः प्रतिपाद्यस्यैवभूमिकानुसारिता १८ अतिस्निग्धमधुरत्वम् घृतगुडादिवत् सुखकारित्वम् १९ अपरमर्मवेधित्वम् परमर्मानुद्घट्टनस्वरूपत्वम् २० अ
र्थधर्माभ्यासानपेतत्वम् अर्थधर्मप्रतिबद्धत्वम् २१ उदारत्वअभिधेयार्थस्यातुच्छत्वगुम्फगुणविशेषंवा २२ परनिंदात्मोत्कर्षविप्रयुक्तत्वमिति प्रतीतमेव २३ उपगतश्ला
घत्वम् उक्तगुणयोगात् प्राप्तश्लाघता २४ अनपनीतत्वम् कारककालवचनलिंगादिव्यत्ययरूपवचनदोषापेतता २५ उत्पादिताच्छिन्नकौतूहलत्वम् स्वविषयेश्रोतॄ
णां जनितमविच्छिन्न कौतुकं येनतत्तथातद्भावस्तत्त्वम् २६ अद्भुतत्वमनतिविलंबितत्वचप्रतीतम् २७ २८ विभ्रमविक्षेपकिलिकिंचितादिविमुक्तत्वम् विभ्रमोवक्तृ
मनसोभ्रांतता विक्षेपस्तस्यैवाभिधेयार्थं प्रत्यनासक्तता किलिकिंचितरोषभयाभिलाषादिभावानां युगपदासकृत्करणमादिशब्दान्मनोदोषांतरपरिग्रहस्तैर्विमुक्तं
यत्तत्तथातद्भावस्तत्त्वम् २९ अनेकजातिसंश्रयाद्विचित्रत्वम् इहजातयोवर्णनीयवस्तुरूपवर्णनानि ३० आहितविशेषत्वम् वचनांतरापेक्षयाढौकितविशेषता ३१ सा

प्रकालें उचितवचनबोलवो १४ अतिविस्तरकरी अणमिलतोनहोय १५। कहिवाने वस्तुने अनुसारेहोय १६। पहिलापदने पाछिलूंपदं सापेक्षपणेबोलवो १७
प्रत्यक्ष समझवायोग्य बात कहिवी १८। घृतगुडनीपरे मधुर अनुभवे १९। अनेराना मर्मनेव्यथा नकरे एहवो २०। अर्थ धर्म सहित बोलवो २१। उत्कृष्ट
अर्थनूं कथक २२। परनिंदा आत्मस्तुति रहित २३। प्रसंसा करवा योग्य २४। कारक काल वचन लिंगेकरी शुद्ध २५ सांभलहारना चित्तने चमत्कारकरे २६
बोलता उतावलोनहोय २७। रही रही ने अक्षर उच्चारण करवूं एहदोषरहित २८। भ्रांतिरहित कहिवायोग्य वस्तुयें संबद्ध क्रोधभयादि रहित बोल
वो २९। जे पदार्थ वर्णवे तेहनो विशेष रूप कहिवो ३०। वचन कहतां वचनांतरनीअपेक्षायें बोलवो ३१। वेगला वेगला पदकरी अन्वय रूपेबोलवो ३२।

तथा गोलवहत्ता वर्त्तुलायेसमुद्गकाभाजनविशेषास्तेषु। जिणसकहाउत्ति जिनसक्थीनि तीर्थंकराणांमनुजलोकनिर्वृतानांसक्तान्यस्थीनिमज्ञप्तानीति बीयचउत्थी त्यादि द्वितीयपृथिव्यांपचविंशतिर्नरकलचाणिचतुर्थ्यान्तुदशेति पचत्रिंशत्तानीति ॥ ३५ ॥ षट्त्रिंशस्थानकंस्पष्टमेव नवरं चैत्राश्वयुजोर्मासयोः

रिंच अट्ठतेरसअट्ठतेरसजोयणाणि वज्जेत्ता मज्झे पणतीसजोयणेसु वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु जिणसकहाओ प० बितियचउत्थीसु दोसु पुढवीसु पणतीसं निरयावाससयसहस्सा प० ॥ ३५ ॥ छत्तीसउत्तरज्झयणा प० तं०। विणयसुय १ परीसहा २ चाउरंगिज्जं ३ असंखयं ४ अकामसकाममरणिज्जं ५ पुरिसविज्जा ६ उरब्भिज्जं ७ काविलियं ८ नमिपव्वज्जा ९ दुमपत्तयं १० बहुसुयपुज्जा ११ हरिएसिज्जं १२ चित्तसंभूय १३ उसुयारिज्जं १४ सभिक्खुगं १५ समाहिठाणाइं १६ पावसमणिज्जं १७ संजइज्जं १८

वीतरागनी दाढा कही बीजीपृथिवी अने चौथी नरक पृथिवी भिहुनामिली ३५। नरकावासा शतसहस्र कह्या एतले बीजीयें २५। लाख नरकावासा चौथी ये १० लाख नरकावास कह्या॥ एह पैंत्रीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३५ ॥ हिवे छत्रीसमो समवाय लिखेछे। छत्रीस उत्तराध्ययनना अध्ययन कह्या तेकहेछे। पहिलो अध्ययन विनयश्रुत १। परीसहाध्ययन २। चउरंगीयो ३। असंखय ४। अकाम सकाम मरणाय ५। अविद्यावंतपुरुषनो ६ उरभिकबोकडानो ७। कपिलकेवलीनो ८। नमिप्रव्रज्यानमिराजानो ९ द्रुमपत्रकनो १० बहुश्रुतपूजानो ११। हरिकेशीबलनो १२। चित्रसभूतिनो १३ इषुकारियराजानो १४। भिक्षु अध्ययन १५। समाधिस्थानक १६। पापश्रमणनो १७। सयतीराजानो १८। मृगापुत्रनो १९। वलीअनाथीनो २०।समुद्र

सकृदेकदापूर्णिमायामिति व्यवहारोनिश्चयतस्तु मेषसंक्रांतिदिने तुलासंक्रांतिदिनेचेत्यर्थः षट्त्रिंशदंगुलिकां पदत्रयमाना माहच चेत्तासोएसुमासेसुतिपया ॥

मियाचारिया १९ अणाहपव्वज्जा २० समुद्दपालिज्जं २१ रहनेमिज्जं २२ गोयमकेसिज्जं २३ समितीउ २४ जन्नतिज्जं २५ सामायारी २६ खलुंकेज्जं २७ मोरकमग्गगई २८ अप्पमाउ २९ तवोमग्गो ३० चरणविही ३१ पमायठाणाइं ३२ कम्मपयडी ३३ लेसज्झयण ३४ अणगारमग्गे ३५ जीवाजीवविभत्तीय ३६ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररन्नो सभासुहम्मा छत्तीसजोयणाइं उड्ढउच्चत्तेणं होत्था समणस्सणं भगवउ महावीरस्स छत्तीसं अज्जाणंसाहस्सीउ होत्था चेत्तासोएपुसमासीसु सइछत्तीसंगुलियं सूरिए पोरिसी

पालनो २१ । रथनेमीनो २२ गोतम गणधर केशीअणगारनो २३ । सुमति गुप्तिनो २४ । जयघोष विजयघोषनो २५ । समाचारीनो २६ । खलुकीय गर्गाचार्यनो २७ । मोक्ष मार्गनो २८ । अप्रमादनो २९ । तप मार्गनो ३० । चरण विधिनो ३१ । प्रमादस्थानकनो । ३२ । कर्मप्रकृतिनो ३३ । लेश्याध्ययन ३४ । अणगारमार्गनो ३५ । जीवा जीव विभक्तिनो ३६ ॥ असुरना राजा असुरेन्द्र चमरेन्द्रनीसभा सुधर्मा छत्रीस योजन उंची कही । श्रमण तपस्वी भगवतज्ञातनंदन महावीरने छत्रीस आर्यानां सहस्र थया । एतले छत्रीस सहस्र साधवी हुई । चैत्रअने आसोज मासे सतिति सकृत् पुनिमदिने छत्रीसे अंगुले सूर्य पौरुषी छाया निवर्तावे एतले चित्तासोएमासेसुतिपया होइपोरसीतिवचनात् ३६ हाथ प्रमाणे त्रणनी छाया मापीये ३६ अंगुल छाया त्रिणनी होय

होइपोरसीति ॥ ३६ ॥ सप्तत्रिंशस्थानकम् पव्यत्ताम् नवरम् कुंथुनाथस्येहसप्तत्रिंशद्गणधराउक्ता आवश्यकेतुपञ्चत्रिंशत् इतिमतांतरम् तथाहैमव
तादिजोवयोरुक्तप्रमाणसंवादगाथा सत्ततोससहस्सा छच्चसयाजोयणाणचउसयरा हेमवयवासजीवा किचूणासोलसकलायत्ति कलाएकोनविंशतिभागोयो
जनस्येति तथाविजयादीनिपूर्वादीनिजम्बूद्वीपद्वाराणि तन्नायकास्तन्नामतोदेवास्तेषांराजधान्यस्तन्नामिकाएव पूर्वादिदिक्षुइतोऽसंख्येयतमे जम्बूद्वीपइति क्षुद्रि

कायाविमानप्रविभक्तेरिति ॥ ३६ ॥ कुंथुस्सणंअरहओ सत्ततीसंगणा सत्ततीसंगणहरा होत्था हेमवयएरन्न
वयाउणं जीवाउ सत्ततीसं जोयणसहस्साइं छच्चचउसत्तरे जोयणसए सोलसय एगूणवीसइभाए जोयणस्स
किंचिविसेसूणाउ आयामेणं प० सव्वासुणं विजय वेजयंत जयंत अपराजियासु रायहाणीसु पागारा स

तेवारे पोरुषी होय। इति छत्रीसमो समवाय सपूर्ण ॥ ३६ ॥ हिवे सैत्रीसमो समवाय लिखे छे ॥ कुंथुनाथ अरिहंत ने सैंत्रीस गच्छ। अने सैं
त्रीस गणधर कह्या। आवश्यके पैंत्रीस सांभलियेछे तेमतांतरछे। हिमवंत क्षेत्र १। ऐरवत २। एहवेहु युगलक्षेत्रनो जीवा सैंत्रीस सैंत्रीस योजन सहस्र छ से चि
हुत्तरियोजन ३७६७४। १९ कला ऊपरि १६ भाग उगुणीसभाग हाइआ एक योजनना काइक विशेषऊणी लांबपणे कही। सगलाई जम्बूद्वीप ना पूर्वादि
दिशे चार पोलीना धणी विजयादिकदेव तेहनी पूर्वें विजय दक्षिणे वैजयंत पश्चिमे जयंत उत्तरे अपराजित राजधानी ने विषे प्राकार गढ सैंत्रीस योजन
ऊंच पणे कह्यो। क्षुद्रिकायें लहुडीयें विमान प्रविभक्तो कालिकश्रुत विषे पहिले वर्गे सैंत्रीस उद्देशकाल अध्ययनदोठ उद्देशाना काल कहतां अवसरकह्या। आ

तरितोरविरस्तंगतइतिव्यपदिश्यते तस्यपर्वतस्य गिरिप्रधानस्य द्वितीयकांडविभागोऽष्टत्रिंशर्योजनसहस्राण्युन्नतत्वेनभवतीति मतान्तरेणतुत्रिषष्ठिसहस्राणिय दाह मेरुस्सतिन्निकडा पुढवीवलवइरसक्करापढमं रयएयजायरूवे अंकीफलिहेयबीयंतु एक्कागारंतइयंतंपुणजम्बूणयमयंहोइ १ जोयणसहस्सपढमंबाहल्लेणंचबी यंतु २ तेवट्ठिसहस्सातइयं छत्तीसंजोयणसहस्सा मेरुस्सुवरिचूलाओ चिट्ठोजोयणदुवीसंत्ति ॥ ३८ ॥ एकोनचत्वारिंशस्थानकंव्यक्तमेव नवरं अहोहि यत्ति नियतक्षेत्रविषयाऽवधिज्ञानिनस्तेषांशतानीति कुलपव्वयत्ति क्षेत्रमर्यादाकारित्वेनकुलकल्पाः पर्वताः कुलानिहिलोकानां मर्यादनिबन्धनानि भवन्तीती

या होत्था हेमवएयरन्नवईया णं जीवा णं धणूपिठे अठतीस जोयणसहस्साइं सत्तयचत्ताले जोयणसए दस एगूणवीसइभागे जोयणस्स किंचिविसेसूणा परिक्खेवेणं प० अत्थस्स णं पव्वयरन्नो बितिएकंडे अठतीसं जोयणसहस्साइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था खुड्डियाएण विमाणपविभत्तीए बितिएवग्गे अठतीसंउद्देसणकाला प० ॥ ३८ ॥ नमिस्स णं अरहउ एगूणचत्तालीसं आहोहियसया होत्था समयखेत्ते एगूणचत्ताली

क योजनना कांइएक विशेष ऊणा परिक्षेपे परिधिये कह्यो । जेणीये अंतरित आच्छाद्यो सूर्य अस्तपामे ते अस्ताचल एतले मेरूपर्वत सकलपर्वतनो राजा तेहनो बीजो कांड अठत्रीस सहस्र योजन ऊंचपणे कह्यो । मतांतरे ६३ सहस्र योजन पणि कह्योछे । चुद्रिकाये लहुडियें विमान प्रविभक्तियें बीजे वर्गे अ ठत्रीस उद्देशनकाल अध्ययनना उद्देशनना अवशर कह्या ॥ इतिअठत्रीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३८ ॥ हिवे उगणचालीसमो समवाय लिखियेछे नमिनाथ एकवीसमा अरिहंतने अवधि ते नियत क्षेत्र तेहने जाणे ते अवधिज्ञानी तेहना सत ३९ । हुया एतले ३९। से अवधिज्ञानी हुया । समय

हतैरुपमाक्षता तत्रवर्षधरास्त्रिंश ज्जंबूद्वीपधातकीखण्डपुष्करार्द्धपूर्वापरार्द्धेषुच प्रत्येकं हिमवदादीनांषण्णांभावात् मन्दराः पंचेषुकाराधातकीखण्डपुष्करार्द्धयोः पूर्वेतरविभागकारिणश्चत्वार एवमेवएकोनचत्वारिंशदिति दोच्चेत्यादि द्वितीयायांपंचविंशति श्चतुर्थ्यां दश पचम्यात्रीणि षष्ठ्यांपंचोनलक्षं सप्तम्यांपंचेति यथोक्त संख्यानारकाणामिति । नाणावरणिज्जेत्यादि ज्ञानावरणीयस्यपञ्च मोहनीयस्याष्टाविंशतिः गोत्रस्यद्वे आयुषश्चतस्रइत्येवमेकोनचत्वारिंशदिति ॥ ३९ ॥

सं कुलपव्वया प० तं० तीसं वासहरा पंच मंदरा चत्तारि उसुकारा दोच्च चउत्थ पंचम छठ सत्तमासु णं पंचसु पुढवीसु एगूणचत्तालीसं निरयावाससयसहस्सा प० नाणावरणिज्जस्स मोहणिज्जस्स गोत्तस्स आउयस्स एयासिणं चउण्हं कम्मपगडीणं एगूणचत्तालीसं उत्तरपगडीओ प० ॥ ३९ ॥ अरहओ

चेत्र अढाई द्वीप तेमांही ३९ । कुल पर्वत क्षेत्रना मर्यादा कारी तेमाटे कुल पर्वत कह्या लोकमांहि पणि कुलते लोका मर्यादाना कारणछे तेकहैछे । जंबूद्वीप माही ६ हिमवंतादिक वर्षधर धातकीखंडमाहि पूर्वपश्चिम मिली १२ वर्षधर पुष्करार्द्ध मांहि पिण १२ एवं ३० वर्षधर थया इषुकार चार पर्वत बेधातकी खड मांहि बेपुष्करार्द्ध मांहि एव ४ । मेरु ५ । जम्बूद्वीप मांहि एक मेरू धातकीखडमांहि २ मेरू पुष्करार्द्धमांहि २ मेरू एवं ५ मेरू सर्वमिलीकुल पर्वत ३९ थया । बीजो नरक पृथिवी यें २५ लाख नरकावासा चउथी यें १० लाख पांचमी यें ३ लाख छठीयें पाचे ऊंणा १ लाखसातमीयें ५ नरकावासा सर्वमिली ३९ । लाख नरकावासा कह्या । ज्ञानावरणीय कर्मनो उत्तर प्रकृति ५ मोहनीयनो २८ । गोत्रनी २ आउखानी ४ एहचारकर्मनी प्रकृति उगुणचालीस उत्तर प्रकृति कही ॥ इति ३९ मोसमवाय संपूर्ण ॥ ३९ ॥ हिवे चालीसमो समवाय लिखे छे । अरिष्टनेमी

चत्वारिंशस्थानकव्यक्तं नवरं वइसाहपुण्णिमासिणीएत्ति यत्क्वचित् पुस्तकेषुदृश्यतेसोपपाठः फग्गुणपुन्निमासिणीएत्ति अभाधेयेयश्रुमुच्यते पोसेमासेचउप्पया इतिवचनात् पोषोपूर्णिमास्यामष्टचत्वारिंशदंगुलिकासाभवति ततोमाघेचत्वारि फाल्गुनेचचत्वारिअंगुलानिपतितानीत्येवं फाल्गुनपौर्णमास्यांचत्वारिंशदंगुलि कापौरुषीच्छायाभवति कार्त्तिक्यामप्येवमेव यतः चेत्तासोएसुमासेसुतिपयाहोइपोरिसी त्युक्तं ततः पदत्रयस्यषड्त्रिंशदंगुलप्रमाणस्य कार्त्तिकमासातिक्रमे

णं अरिट्ठनेमिस्स चत्तालीसं अज्जियासाहस्सीओ होत्था मंदरचूलियाणं चत्तालीसं जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० संती अरहा चत्तालीसं धणूइंउड्ढं उच्चत्तेणं होत्था भूयाणंदस्स णं नागरन्नो चत्तालीसं भवणावाससयसह स्सा प० खुड्डियाएणं विमाणपविभत्तीए तइएवग्गे चत्तालीसं उद्देसणकाला प० फग्गुणपुण्णिमासिणीएणं सू

अरिहंतने चालीस आर्यानासहस्र एतले चालीस हजार साध्वीनो संपदाथई। मेरुपर्वत ऊंचो एक लाखयोजनछे ऊपरथी पिहुलो एक सहस्रयोजन ते विचे चूलिका चोटीनीपरि जोगइ मेरुनी चूलिका चालीस योजन ऊचो कह्यो। शांतिनाथ सोलमा अरिहंत चालीस धनुष ऊंचा थया उत्तरेंद्र नागराजा भूतानेद्रना चालीस भवनावासना शतसहस्र कह्या। एतले चालीस लाख भवन कह्या। क्षुद्रिका ये लहुडीये विमान प्रविभक्तिये एतले त्रीजे वर्गें ४० उद्देश नकाला अध्ययनमा उद्देशाना अवसर कह्या। एतने जेतला उद्देशनकाला तेतला अध्ययन कह्या। फागुणनी पूनिमे सूर्यहस्त प्रमाणें त्रणनी छाया मावीये तेहनी ४० अगुल प्रमाणें पोरसी छाया प्रतें निवर्तावीने चार भ्रमण करे। कार्तिकी पूनिमे पणि एमज ४० अंगुलप्रमाणे पोरसी हुये पछे साते २ दिवसे

चतुरंगुलवृद्धौ चत्वारिंशदंगुलिकासाभवतीति ॥ ४० ॥ एकचत्वारिंशस्थानकंसुगम नवरं चउसुइत्यादि क्रमेणसूत्रोक्तासुचतसृषु प्रथमचतुर्थ पष्टसप्तमोषुपृथिवोषु त्रिंशतोदशानांचनरकलक्षाणां पंचोनस्यचैकस्यपचानाचनरकाणां भावाद्यथोक्तसंख्यास्तेभवतीति ॥ ४१ ॥ द्विचत्वारिंशस्था

रिए चत्तालीसगुलियं पोरिसीछायं निव्वत्तइत्ता णं चारंचरइ एवं कत्तियाएविपुण्णिमाए महासुक्के कप्पे चत्तालीसं विमाणावाससहस्सा प० ॥ ४० ॥ नमिस्स णं अरहओ एकचत्तालीसं अज्जियासाहस्सीओ होत्था चउसुपुढवीसु एक्कचत्तालीसं निरयावाससयसहस्सा प० त० रयणप्पभाए पंकप्पभाए तमाए तमतमाए महालियाणं विमाणपविभत्तीए पढमेवग्गे एकचत्तालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४१ ॥

एकेक अगुल वधारिये मासे ४ अगुल वधे तिवारे कार्तिक पूनिमे ४० अगुल वधे तिवारे कार्त्तिक पूनिमे ४० अंगुल थायपोरुषी। महाशुक्र सातमे देव लोके ४० सहस्र विमान कह्या। इति ४० मो समवाय सपूर्ण ॥ ४० ॥ हिवे इगतालीसमो समवाय लिखेछे। नमिनाथ अरिहंतने ४१। आर्यांना सहस्र थया एतलेसाध्वीना सहस्र हुया। च्यार नरक पृथिवीयें ४१ लाख नरकावासा कह्या। ते कहेछे। रत्नप्रभायें ३० लाख पंकप्रभायें १० लाख तमाये पाच ऊंणा १ लाख तमतमाये ५ एव सर्वमिली ४१ लाख नरकावासा कह्या। वडीये विमानप्रविभक्तियें पहिले वर्गे ४१ लाख उद्देशनकाल अध्ययन अध्ययदो ठ उदेशंना अवसर कह्याछे। इति ४१ मो समवाय ॥ ४१ ॥ हिवे बेयालीसमो समवाय लिखेछे। श्रमण भगवत ज्ञानवंत श्रीमहावीर देव बेयालीस वर्ष झाझेरे छद्मस्थ पर्यायें १२ वर्ष ६ मास १५ दिन केवल पर्याय काईक न्यून ३० वर्ष सर्वमिली ४२ वर्ष सामान्य पर्याय पाली सिद्ध थया। याव

नवाव्यत्तमेव नवरं बायालीसंत्ति छद्मस्थपर्यायेद्वादशवर्षाणि षण्मासार्द्धमासाश्चेति केवलिपर्यायस्तुदेशोनानि त्रिंशद्वर्षाणीति पर्यूषणाकल्पेद्विचत्वारिंशद्देववर्षाणि महावीरपर्यायोभिहित इहतु साधिक उक्त स्तत्र पर्यूषणाकल्पे यदल्पमधिक तन्नविवचितमिति सम्भाव्यतइति जावत्तिकरणात् बुद्धेमुत्तेअंतगडे परिनिब्बुडेसव्वदुक्खप्पहीणेत्ति दृश्यं जम्बूद्वीपस्येत्यादि पुरत्थिमिल्लाओचरिमंताओत्ति जगतीबाह्य परिधेरपसृत्य गोस्तूभस्यावासपर्वतस्य वेलधरनागराजसंबंधिनः पाश्चात्यसीमांतश्चरमविभागोवा यावतांतरेणभवति एसणत्ति एतदतरंद्विचारिंशत्योजनसहस्राणिप्रज्ञप्त मंतरशब्देन विशेषोप्यभिधीयते इत्यतआह अ

समणेभगवंमहावीरे बायालीसं वासाइं साहियाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता सिद्धे जावसव्वदुक्खप्पहीणे जंबूद्दीवस्स णं द्दीवस्स पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोथूभस्सणं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लेचरमते एसणं बायालीसं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं चउद्दिसिंपि दगभासे संखो दयसीमेय॰कालोएणंस

त् शब्दे करी बुद्ध थया मुक्त थया सर्वदुःख थकी मुक्तथया अजरामर थया। जंबूद्वीपनां छेहल्या प्रदेश थकी जगतीना बाह्यप्रदेशथकी मांडी गोस्तूभनाम वेलधर नागराजानो आवास पर्वत तेहनो पश्चिमनो चरमांत छेहल्यो प्रदेश एतले जगती थकी मांडी गोस्तूभ पर्वतनो पश्चिमात एतलाविच ४२ सहस्र योजन आवाधा विचे आंतरो कह्यो। एम चिहुदिसे दक्षिण जम्बूद्वीपनी जगती थको मांडी ४२ योजन सहस्रे दक्षिण समुद्रमांहीज दगभास पर्वत वेलंधर नागराजानो एम पश्चिम जगती थकी मांडी पश्चिम समुद्र माहि ४२ योजन सहस्र शंख पर्वत एम उत्तरे दगसीम। पर्वत कालोदधि समुद्रे ४२ चन्द्रमा ४२ सूर्य उद्योत करेछे। सम्मूर्च्छिम भुजपर सर्पनो जंदर गोह नोलियादिकानी उत्कृष्टो ४२ वर्ष सहस्र प्रमाणे आउखूं कह्यं। नाम कर्म छठोते ४२ भेदें कह्यो

बाह्याएत्ति व्यवधानापि नयायदंतरंतदित्यर्थः कालोयणोत्ति धातकीखण्डपरिवेष्टके कालोदाभिधानेसमुद्रे गइनामेत्यादि गतिनामयदुदयान्नारकादित्वेन जीवोव्यपदिश्यते जातिनामयदुदयादेकेंद्रियादिर्भवति शरीरनामयदुदयादौदारिकशरीरकरोति यदुदयादंगानांशिरः प्रभृतीनांउपांगानांचांगुल्यादीनांविभागोभवति तच्छरीरोपांगनाम बध्यमानानाच संबधकारणं शरीरोपांगनाम तथाऔदारिकादिशरीरपुद्गलानां पूर्वबद्धानां बध्यमानानांच संबधकारणशरीरबन्धनाम तथाऔदारिकादि शरीरपुद्गलामागृहीतानां यदुदयाच्छरीररचनाभवति तच्छरीरसंघातनाम तथासायतस्तथाविधशक्तिनिमित्तभूतोरचनाविशेषोभवति तत्संहनननाम संस्थानसमचतुरस्रादिलक्षणभवति तत्संस्थाननाम तथायदुदयाद्वर्णादिविशेषवतिशरीराणिभवन्ति तद्वर्णादिनाम तथायदुदया

मुद्दे बायालीसं चंदाजोइंसुवा जोइतिवा जोइस्सतिवा बायालीसंसूरियापन्नासिंसुवा ३ समुच्छिमनुयपरिसप्पाण उक्कोसेणं बायालीसंवाससहस्साइं ठिई प० नामकम्मे बायालीसविहे प० तं० गइनामे जाइनामे सरीरनामे सरीरवंगनामे सरीरोबंधणनामे सरीरसंघायणनामे संघयणनामे सठाणनामे वन्ननामे गंधनामे

तेकहेछे । नरकादिक नीगतिपामवी जेहने उदे तेगतिनाम १ एकेंद्रियादिक जातिपामिये ते जातिनाम २ औदारिकादि पांचशरीर जेहने उदे पामिये ते शरीर नाम ३ एमजे कर्मने उदे सर्वत्र कहिये औदारिकादिक त्रिणशरीरना अंगोपांग अंगते अंगुलीनखादि ते अंग उपांग ४ औदारिकादिक पांच शरीरनो बंधनो करवो ते शरीर बंधननाम ५ औदारिकादि पांचशरीरनांपुद्गल ग्रही ने रचनानो करिवो ते शरीरसंघातनाम ६ शक्ति निमित्तभूत रचनाना विशेषते संहनननाम ७ संस्थान समचतुरस्रादिक लक्षण ८ वर्ण कृष्णादिक पांच ९ गंध सुगंधादिक सुरभि गंध दुरभिगंध १० रस मधुरादिक पांच

दगुरुलघु स्वयंशरीरंजीवानांभवति तदगुरुलघुनाम तथायतोंगावयवः प्रतिजिह्विकादिरात्मोपघातकोजायते तदुपघातनाम तथायतोंगावयव एवविषात्म कोदंष्ट्रात्वगाहि परेषामुपघातकोभवति तत्पराघातनाम तथायदुदयांतरालेगतोजीवोयाति तदानुपूर्वीनाम तथायदुदयादुच्छ्वासनिष्पत्तिर्भवति तदुच्छ्वास

रसनामे फासनामे अगुरुलहुयनामे उवघायनामे पराघायनामे आणुपुव्वीनामे उस्सासनामे आयव नामे उज्जोयनामे विहगगइनामे तसनामे थावरनामे सुहुमनामे वायरनामे पज्जत्तनामे अपज्जत्तनामे साहारणसरीरनामे पत्तेयसरीरनामे थिरनामे अथिरनामे सुभनामे असुभनामे सुभगनामे दुब्भगनामे

जाणिवा ११ स्पर्श गुर्वादिक आठ १२ जेह कर्मने उदे जीवनो शरीर अगुरुलघु हुये ते अगुरु लघुनाम १३ जेह कर्मने उदे पडिजीभी प्रमुखेकरि आत्माने उपघाते ते उपघात १४ जेह कर्मने उदे परने उपघात उपजे तेपराघात १५ अंतराल गतियें जीव जाय ते आनुपूर्वीनाम १६ उस्सासू नीसासलीजे तेउसास नाम १७। जेह कर्मने उदे शरीर तापवंत होय ते आतप नाम १८। जेह कर्मने उदें शरीर उद्योतवत होय ते उद्योत नाम कर्म। १९। जेह कर्मने उदयें भली भूंडी गति गमन सहित होय ते विहगगतिनाम २०। जेह कर्मना उदय थकी जीव चाले ते त्रस नाम २१। जेह कर्मना उदय थी जीव स्थिर रहै ते स्थावर नाम कर्म २२। जेह कर्मना उदय थी दृष्टि गोचर न होय ते सूक्ष्म नाम कर्म २३। जेह कर्मना उदय थी जीव दृष्टि गोचर होय तेबादर नाम कर्म २४। पूरी पर्याप्ति करे ते पर्याप्ति नाम २५। पूरी पर्याप्ति नकरे तेअपर्याप्ति नाम २६। जेह कर्मने उदये अनता जीवनो एक शरीर पामिये ते साधारण नाम २७। जेह कर्मनें उदयें एक जीव एक शरीर पावे ते प्रत्येक नाम २८ स्थिर रहे जेहथी ते स्थिर नाम २९। अगोपांग ताखांथकां तूटे ते

नाम तथायदुदयाज्जीवस्तापवच्छरीरोभवति तदातपनाम यथादित्यबिंबपृथिवीकायिकानां तथायतोतुलोद्योतवच्छरीरोभवति तदुद्योतनाम तथायत. शुभे
तगमनयुक्तोभवति तद्विहायोगतिनाम त्रसनामादीन्यष्टौप्रतीतार्थानि तथायतः स्थिराणांदन्ताद्यवयवानांनिष्पत्तिर्भवति तत्स्थिरनाम यतश्चभ्रूजिह्वादीनाम
स्थिराणांनिष्पत्तिर्भवति तदस्थिरनाम एवंशिरः प्रभृतीनांशुभानां तच्छुभनाम पापादीनामशुभनामइति शेषाणिप्रतीतानि नवरं यदुदयाज्जातोजीवदेहेषुस्थ्या
दिलिंगाकारनियमोभवति तत्सूत्रधारसमान निर्माणनामेति पंचमछ्ठीओसमाउत्ति दुःखमाएकांतदुःखमाचेत्यर्थः. पढमबीयाउत्ति एकांतदुःखमादुःखमाचे

सुस्सरनामे दुस्सरनामे आएज्जनामे अणाएज्जनामे जसोकित्तिनामे अजसोकित्तिनामे निम्माणनामे
तित्थकरनामे लवणे णं समुद्दे बायालीसं नागसाहस्सीओ अब्भिंतरियं वेलं धारंति महालियाएणं विमाण
पविभत्तीए बितिएवग्गे बायालीसं उद्देसणकालाप० एगमेगाएउसप्पिणीए पंचमछ्ठीउसमाउ बायालीसं

अस्थिर नाम ३० शुभनाम ३१। अशुभनाम ३२। जेह कर्मने उदये सहुने वल्लभ होय ते सुभगनाम ३३। जेह कर्मथी सहुने अनिष्ट होय ते दुर्भग नाम ३४
जेह कर्मनेउदये काउभलोहोय तेसुस्वर नाम ३५। भूंडोकाउहोय ते दुस्वर नाम ३६ जेहकर्म थी बचन सहुने मान्यथाय तेआदेयनाम ३७। बचनकोईनमाने
ते अनादेय नाम ३८। यशकीर्त्ति वाधे ते जसोकित्तिनाम ३९ यश कीर्त्ति नहोय ते अजस कीर्त्ति नाम ४०। ठामो ठाम अगोपांगनो रचिबो तेनिर्मा
ण नाम ४१। जेह कर्मना उदयथी सहुने पूज्यथाय ते तीर्थंकर नामकर्म ४२। लवण समुद्रने विषे बैतालीस हजार नागदेवता जंबूद्वीप तरफनो पाणी
नी वेला प्रते धरेछे। वडी विमान प्रविभक्तीयें बीजेवर्गे ४२ उद्देशनकाल कह्या अध्ययन कह्या। एकेक अवसर्पिणी कालें पडतेकालें पांचमो छठो दुःखमा

ति ॥ ४२ ॥ त्रिचत्वारिंशस्थानकेपिकिंचिल्लिख्यते कम्मविवागज्झयणत्तिकर्मण: पुण्यपापात्मकस्य विपाकस्यफलं तत्प्रतिपादकान्यध्ययनानिकर्मविपाकाध्ययनानिएतानिच एकादशांगद्वितीयांगयो: सम्भाव्यतइति जंबूदीवस्सणमित्यादि जबूद्वीपपौरस्त्यातान्तोस्तुभपर्वतो द्विचत्वारिंशद्योजनाना सहस्राणितद्विष्कम्भस्य सहस्रतदधिकाया द्वाविंशतेरल्पत्वेना विवक्षणा देव त्रिचत्वारिंशत्सहस्राणिभवन्तीति एवंचउदिसिंपिति उक्तादिगतर्भावेन चतस्रदिशउक्ता अन्यथा एवति

वाससहस्साइं कालेणं प० एगमेगाए उसप्पिणीए पढमबीयाउ समाउ बायालीसं वाससहस्साइं कालेणं प० ॥ ४२ ॥ तेयालीस कम्मविवागज्झयणा प० । पढमचउत्थपंचमासु पुढवीसु तेयालीसं निरयावाससयसहस्सा प० जंबूद्दीवस्सण द्दीवस्स पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोथूभस्सणं आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसिणं तेयालीसं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं चउद्दिसिंपि दगभासे

दुखम दुखमा बेहु मिलीने ४२ हजार वर्ष प्रमाणे थाय एतले पांचमो आरो २१ हजार वर्षनो छठो २१ हजार वर्षनो बेहुं मिली ४२ सहस्र प्रमाणे कह्यो एकेक उत्सर्पिणी कालें चढतेकाले पहिलो आरो अने दूजो आरो बेहु मिली ४२ सहस्र वर्ष प्रमाणे कह्यो ॥ इति बेतालीसमो समवाय सपूर्ण ॥ ४२ ॥ हिवे तेतालीसमो समवाय लिखेछे ॥ तेयालीस कर्म पुण्य पाप रूप तेहना विपाक फलरूप तेहनां प्रतिपादक अध्ययन ते कर्म विपाक अध्ययन तेह सुयगडांगना २३ अध्ययन अने दुख सुख विपाकना २० अध्ययन एव ४३ अध्ययन कह्या। पहिली यें ३० लाख चौथीयें १० लाख पांचमीयें ३ लाख एवं पहिली चौथी पांचमी नरक पृथिवी ना मिली तेयालीसलाख नरकावासा कह्या। जबूद्वीप नामा द्वीपनी जगतीना छेहल्या प्रदेश

इव क्रमसाधर्म्यात्पुरुषयुगानि अणुपिठत्ति आनुपूर्व्या अणुबधंति पाठांतरे तृतीयादर्शनादनुवंध्येन सातत्येनसिद्धानि जावंतिकरणेन बुद्धाइं मुत्ताइं सव्वदुक्ख प्पहीणाइ इतिदृश्य महालियाएणं विमाणपविभत्तीए चतुर्थवर्गे चतुश्चत्वारिंशदुद्देशनकाला.प्रज्ञप्ता: ॥ ४४ ॥ पंचचत्वारिंशस्थानकेकिंचिदलिख्यते समयखेत्तेत्ति कालोपलक्षितक्षेत्रं मनुष्यक्षेत्रमित्यर्थः सीमंतएणंति प्रथमपृथिव्यांप्रथमप्रस्तटे मध्यभागवर्तीवृत्तोनरकेंद्रः सीमंतइति उडुविमाणेत्ति सौधर्मेशानयोः प्रथमप्रस्त

सजुगाइं अणुपिठसिद्धाइं जावप्पहीणाइं धरणस्स णं नागिंदस्स नागरन्नो चोयालीसं भवणावाससयसहस्सा प० महालियाएणं विमाणपविभत्तीए चउत्थेवग्गे चोयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४४ ॥ समयखेत्ते णं पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं प० सीमंतएणं नरएपणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभे णं प० एवउडुविमाणेवि ईसिपब्भाराणं पुढवी एवंचेव धम्मेणंअरहा पणयालीसं

णादिशे धरणेंद्र नागेंद्र नागराजाना चौतालीस लाख भवनावास कह्या। वडी विमान प्रविभक्तियें चउथे वर्गे चौतालीस उद्देशन काल अध्ययन विशेष कह्या॥ इति चौतालीसमो समवाय सपूर्ण ॥ ४४ ॥ हिवे पेंतालीसमो लिखेछे। पेंतालीसलाख योजन प्रमाणे पहिलो पृथिवीये पहिले पाथडे मध्यभागवर्ती नरकेंद्र वाटलो सीमंतो नरकावासो पेंतालीस लाख योजन प्रमाणे लांबपणे पिहुलपणे कह्यो। एमज सौधर्म ईशाननां प्रथम प्रस्तट विमान मांहि मध्यभागवर्ती विमानेंद्रवालो उडुनामा विमान पेंतालीस लाख योजन लांबपणे पिहुलपणे कह्यो ईषत्प्राग्भारा पृथिवी पेंतालीसलाख योजन लांब

राफाल्गुन्यु त्तराषाढो त्तराभद्रपदाश्च ॥ ४५ ॥ अथ षट्चत्वारिंशस्थानके किंचिल्लिख्यते। दिट्ठिवायस्सत्ति द्वादशांगस्य माउयापयत्ति सकल वाङ्मयस्य अकारादिमातृका: पदानीव दृष्टिवादार्थप्रसवनिबंधनत्वेनमातृकापदानि उत्पादविगमध्रौव्यलक्षणानि तानिच श्रेणिमनुष्यश्रेण्यादिनाविषयभेदेनकथमपि भिद्यमानानि षट्चत्वारिंशन्नवतीतिसभाव्यते। तथाबंभीएणं लिवीएत्ति लेख्यविधौ षट्चत्वारिंशन्मातृकाक्षराणि तानिचकाकारादीनिहकारां तानि सचकाराणि ऋऋॡॡळइत्येवं तदक्षरपञ्चकवर्जितानिसम्भाव्यन्ते तथापभजणस्सत्ति औदीच्यामस्येति ॥ ४६ ॥ अथसप्तचत्वारिंशत्स्थानके किमप्युच्य

त्तीए पंचमेवग्गे पणयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४५ ॥ दिट्ठिवायस्स णं छायालीसं माउयापया प० बंभीए णं लिवीए छायालीसं माउयक्खरा प० पभंजणस्स णं वाउकुमारिंदस्स छायाली संभवणावाससयसहस्सा प० ॥ ४६ ॥ जयाणंसूरिए सव्वब्भिंतरमंडलं उवसंकमित्ता णं चारंचरइ

चमे वर्गे पेंतालीस उद्देशनकाल अध्ययन विशेष कह्या। इति पेंतालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४५ ॥ हिवे छेतालीसमो लिखेछे॥ दृष्टिवाद पूर्वना छेतालीस मातृकापद कह्या सकल शास्त्रने अकारादि छेतालीस अक्षर मातृकापद दृष्टिवादार्थप्रते प्रसववाना कारणथकी मातासरीखा कह्याछे। ब्राह्मी लिपीने विषे छेतालीस मातृका अक्षर कह्या। अकारादिक हकारांत क्षकारे सहित ५२। मांहिथी ऋ ॠ ऌ ॡ ळ एह ५ अक्षर वर्जित कीजे ४६ जगरे प्रभंजन अठारमो भवनपती वातकुमारेंद्र तेहना ४६ लाख भवनावास कह्या। इति छेतालीसनो समवाय संपूर्ण ॥ ४६ ॥ जिवारे सूर्य

किमपिलिख्यते। पट्टणति विविधदेशपण्यान्यागत्ययत्रपतति तत्पत्तनंनगरविशेष: पत्तनंरत्नभूमिरित्याहुरेके धम्मस्सत्ति पंचदशमतीर्थंकरस्येहाष्टचत्वारिंशद्ग णागणधराश्चोक्ता आवश्यकेतुत्रिचत्वारिंशत्पठ्यते तदिद मतांतरमिति सूरमडलेत्ति सूर्यविमान येषाभागानामेकषष्ठ्यायोजनभवति तेषामष्टचत्वारिंशत् त्रयो दशभिस्तैर्न्यूनयोजनमित्यर्थ: ॥ ४८ ॥ अथैकोनपचाशस्थानकेलिख्यते। सत्तसत्तमियाण सप्तसप्तमानिदिनानियस्यांसासप्त २ दिनानिभवति सप्तसु सप्तकेषुअत: सासप्तकेषु अत: सासप्तदिनसप्तकमयत्वा देकोनपचाशतावादिनैर्भवतीति पडिमत्ति अभिग्रह: छन्नउणभिक्खासएणति प्रथमेदिनसप्तकेप्रतिदि नमेकोत्तरयाभिचावृद्या अष्टविंशतिर्भिचाभवति एवच्चसप्तस्वपियवतिभिचाशतभवति अथवा प्रतिसप्तक मेकोत्तरयावृद्ध्यायथोक्ता भिचामानभवति तथा

वहिस्स अडयालीसं पट्टणसहस्सा प० धम्मस्सणंअरहउ अडयालीसंगणा अडयालीसं गणहरा होत्था सूर मंडलेणं अडयालीसं एकसट्ठिभागे जोयणस्स विक्खंभेणं प० ॥ ४८ ॥ सत्तसत्तमियाणं भि

धर्मनाथ अरिहत ने अठतालीस गच्छ अने अठतालीस गणधर हुया। आवश्यके ४३ पणि लख्याछे तेमतांतरछे। सूर्यनो मडल एक योजन ना एकसठि या ४८ भागप्रमाणे विष्कभपणे अने पिहुलपणे कह्यो। एक योजनना एकसठ भाग करिये ते माथी १३ भाग ओछो सूर्य मडलछे ॥ इति अठतालीसमो समवाय सपूर्ण ॥ ४८ ॥ हिवे एकूनपचासमो लिखेछे ॥ सातदिन सात गुणाछे जेहने विषे एहवी भिक्षुप्रतिमा साधुना अभिग्रह विशेष ते सप्तसप्तमिका भिक्षूनीप्रतिमा उगुणपचास रात्रि दिवसे अहोरात्रीयें पूरीथाय। एकसो छन्नू १९६ भिक्षाये करी यथासूत्रोक्त विधिये सिद्धांतोक्तमार्गें आरा धी होय एतले पहिलेदिन १ बीजेदिन २ त्रीजेदिन ३ एम सातमेदिन ७। एम बीजे सप्तकें पहिले दिन २ बीजेदिन ४ त्रीजेदिन ६ एमसातमेदिन १४। एम

नांमहाह्रदानांपूर्वापरपार्श्वयोः प्रत्येकदशकांचनपर्वताभवंति तेषसर्वेंशतं एवंदेवकुरुपुनिषधादीनां महाह्रदानां पार्श्वतः शतंभवंति सर्वेएतेजंबूद्वीपेद्वि शतमानाभवंति तेयोजनशतोच्छ्रिताः शतमूलविष्कंभा स्वनामकदेवनिवासभूतभवनालंकृतशिखरतलाः ॥ ५० ॥ अथैकपचाशस्थानकं। तत्र

सं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था पुरिसुत्तमेणं वासुदेवे पन्नासं धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था सव्वेविणं दीहवेयड्ढा मूलेपन्नासं २ जोयणाणि विक्खंभेणं प० लंतएकप्पे पन्नासं विमाणावाससहस्सा प० सव्वाउणं तिमिस्स गुहा खंडगप्पवाउ गुहाउ पन्नासं २ जोयणाइं आयामेणं प० सव्वेविणं कंचणगपव्वया सिहरतले पन्नासं२

मा अरिहतने पचास आर्यानी साध्वीनी संपदाना सहस्र थया। अनंतनाथ तेरमा अरिहंत पंचास धनुष ऊंचा ऊंचपणे थया। अनंतनाथने वारें पुरुषोत्त म नामा चौथो वासुदेव पचास धनुष ऊंचो ऊचपणे हुयो। सगलाई दीर्घ वैताढ्य ३४ जंबूद्वीपना ६८ धातकीखंडना ६८ पुष्कराद्धना एवं १७० दीर्घ वैताढ्य मूलने विषे पचास पचास योजन विष्कंभपणे पिहुलपणें कह्या। लांतक छठे देवलोके पंचास सहस्र बिमानावास कह्या। सगला जंबूद्वीप ने विषे ३४ दीर्घ वैताढ्य पर्वत छे एकेक वैताढ्यें बेबे गुफा छे तेमाहि तिमिश्रागुफा पैसारानी खंडप्रपात गुफा नीसारानी एबिहुं गुफा पचास पचास योजन आयामपणें कही। उत्तर कुरुने विषे नीलवंतादिक पांच द्रहअनुक्रमे रह्याछे ते एकेक द्रहने पूर्व पश्चिमने पासे प्रत्येके प्रत्येके दश दश कांचन पर्वतछे तेसर्वेमिली एम ज देव कुरुने विषे १०० सर्वेमिली २०० कांचनगिरि हुआ। ते सगला कांचनगिरि शिखर तलने विषें पचास योजन पिहुलपणे कह्या एकसो योजन ऊं

स्थानक॥ तत्रमोहणिज्जस्सकम्मस्सत्ति। इहमोहनीयकर्मणोऽवयवेषु चतुर्षुक्रोधादिकषायेषु मोहनीयमुपचर्यावयवेसमुदायोपचारन्यायेन मोहनीयस्येत्युक्तं तत्रा पिकषायसमुदायापेक्षया द्विपचाशन्नामधेयानि नपुनरेकैकस्यकषायमात्रस्यैवेति तत्रक्रोधइत्यादीनि दशनामानि क्रोधकषायस्य चंडिकेत्ति चांडिक्यं तथा मानादीन्येकादश मानकषायस्य अनुक्कोसेत्ति आत्मोत्कर्षः उक्कोसेति उत्कर्षः उन्नत्त उन्नामेति उन्नामः तथा मायादीनि सप्तदश मायाकषायस्य णूमेत्ति

म्माण एकावन्नं उत्तरकम्मपगडीउ प० ॥ ५१ ॥ मोहणिज्जस्सणं कम्मस्स वावन्नंनामधेज्जा प० तं० कोहे कोवे रोसे दोसे अखमा संजलने कलहे चंडिक्के भंडणे विवाए। माणे मदे दप्पे थंभे अणुक्कोसे गब्बे परपरिवाए उक्कोसे अवक्कोसे उन्नए उन्नामे। माया उवही नियडी वलए गहणे णूमे कंक्के कुरुए दंभे कूडे जिम्मे किब्बिसे अणायरणया गूहणया वंचणया पलिकुंचणया सातिजोगे। लोभे इच्छा मुच्छा

उत्तरप्रकृति ४२ विहुकर्मनी ५१ उत्तरप्रकृतिकही। इति ५१ समवायथयो ॥ ५१ ॥ हिवे ५२ समवाय लिखेछे। मोहनीय चौथोकर्म तेहना ५२ नामधेयकह्या। मोहनीयकर्ममांहि ४ कषाय अवतस्याछे तेमाटे क्रोधकषायना १० नामकह्या तेकहेछे। क्रोध १ कोप २ रोष ३ द्वेष ४ अक्षमा ५ सज्वलन ६ कलह ७ चांडिक्य ८ भंडण ९ विवाद १०। मानाश्रित ११ नाम मान १ मद २ दर्प ३ थंभ ४ आत्मोत्कर्ष ५ गर्व ६ परपरिवाद ७ उत्कर्ष ८ अपकर्ष ९ उन्नत्त १० उन्नाम ११॥ मायाश्रितनाम १७ माया १ उपधि २ निकृति ३ वलय ४ गहन ५ नूमनीचो ६ कल्क ७ कुरुक ८ दंभ ९ कूड १० जिह्म ११ किल्वि षिक १२ आत्मरणता १३ गूहनता १४ वंचनता १५ परिकुचनता १६ सातियोग १७। लोभाश्रितनाम १४। लोभ १ इच्छा २ मूर्छा ३ कांक्षा ४ गृद्धि ५

व्यवम कक्केत्ति कल्कं कुरुएत्ति कुलक भिमेत्ति जह्य तथालोभादीनि चतुर्दश लोभकषायस्य भिज्भाअभिज्भत्ति अभिध्यानमभिध्येत्यस्य पिधानमित्याद्य विष वैकल्पिके अकारलोपे भिध्याविति शब्दभेदानाम् इयमिति गोथूभित्यादि गोस्तूभस्य प्राचांलवणसमुद्र मध्यवर्त्तिनो वेलधरनागराज निवास भूतपर्वतस्य पौरस्त्याच्चरमातादपसृत्य वडवामुखस्य महापाताल कलशस्य पाश्चात्यश्चरमातोयेन भवतोति गम्यते एतस्मिन्ति एद्तन्तरमध्ये बाधया व्यवधानलक्षणमित्यर्थः द्विपंचाशद्योजनसहस्राणि भवन्ती त्यक्षरघटना भावार्थस्त्वय इह लवणसमुद्रं पंचनवतियोजनसहस्राण्यवगाह्य पूर्वादिषु दिक्षु चत्वारः क्रमेण वडवामुखकेतु

कंखा गेही तिरहा भिज्भा अभिज्भा कामासा भोगासा जीवियासा मरणासा नंदी रागे। गोथूभस्सणं आ वासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरमताओ वलयामुहस्स महापायालस्स पच्चत्थिमिल्लेचरमंते एराणं बावन्नं

तृष्णा ६ भिध्या ७ अभिध्या ८ कामाशा ९ भोगाशा १० जीविताशा ११ मरणाशा १२ नदी १३ रागी १४। सर्वमिली ५२ थया। पूर्व लवण समुद्रमांहि गोस्तूभ नाम वेलधर नागराजानो आवासपर्वत तेहना पूर्वना चरिमात थकी छेहलाप्रदेश थकी मांडी वडवामुख महा पातालकलशनो पश्चिमनो चरिमांत छेहलो प्रदेश एह बावन सहस्र योजन आबाधा विचाले आंतरो कह्यो। जबूद्वीपनी जगती थकी मांडी चिहुदिसे ९५ सहस्र योजन लगे समुद्र अवगाहीये तिहा पूर्वादिक चिहुदिसि क्रमे वडवामुख १ केतु २ यूप ३ ईसर ४ एह चार पातालकलश पामीयें तथा जबूद्वीप पर्यत थकी ४२ सहस्र योजने समुद्र माहि जईं तिहा चिहुदिसे ४ वेलधरनां पर्वत गोस्तूभादिकछेते सहस्रना पिहुलाछे सर्वमिली ४३ हजार योजन प्रमाण थया तो ९५ सहस्र माहिथी ४३ सहस्र योजन काढीये तो पूठे गोस्तूभ पर्वतनो वडवा मुख महापाताल कलशनो ५२ सहस्र योजन आतरोउगरे एमज चिहुदिसि एम दक्षिणे

क जूयकेश्वराभिधाना महापातालकलशा भवंति तथा जंबूद्वीपपर्यंता द्विचत्वारिंशद्योजनसहस्राण्यवगाह्य सहस्रविष्कम्भा श्चत्वारएव वेलंधरनागराजपर्वता गोस्तुभादयो भवंति ततश्च पंचनवत्या स्त्रिचत्वारिंशत्यपकर्षितायां द्विपंचाशत्सहस्राण्यंतर भवति सौधर्मे त्रिंशद्विमानानालक्षाणि सनत्कुमारेद्वादश माहेंद्रे चाष्टाविंशतिः सर्वाणि द्विपंचाशत् ॥ ५२ ॥ त्रिपंचाशस्थानके लिख्यते महाहिमवंतेत्यादि सूत्रे संवादगाथा । तेवन्नसहस्साइं नवयसएजोयणाणिदूगतीसे

जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं दगभासस्सणं केउगस्स संखस्स जूयगस्स दगसीमस्स ईसरस्स नाणावरणिज्जस्स नामस्स अंतरायस्स एतेसिण तिराहं कम्मपगडीणं बावन्नं उत्तरपयडीउ प० सोहम्म स णंकुमार माहिंदेसु तिसुकप्पेसु बावन्नं विमाणवाससयसहस्सा प० ॥ ५२ ॥ देवकुरुउत्तरकुरु

दगभास पर्वतनां पूर्वांत थकी माडी। केतुक पाताल कलश विचाले ५२ सहस्र योजन आंतरो कह्यो । पश्चिमें शख पर्वतना पूर्वांत थकी मांडी यूपनाम पाताल कलशनो पश्चिमांत बिचे ५२ सहस्र योजन । उत्तर समुद्रमांहि दगसीम पर्वतना पूर्वांत थी मांडी ईसरनाम पाताल कलशनो पश्चिमात विचाले ५२ सहस्र योजन आतरो । ज्ञानावरणीय कर्मनी प्रकृति ५ नाम कर्मनी ४२ प्रकृति अंतरायनी प्रकृति ५ एहत्रिहुकर्मनी ५२ उत्तर प्रकृति कही । सौधर्म कल्पे ३२ लाख विमान । सत्कुमारें १२ लाख विमान माहेंद्रे ८ लाख विमान । एम त्रिण देवलोकना मिली ५२ लाख विमानावास शतसहस्र कह्या एतले ५२ लाख विमानावास कह्या । इति ५२ मो समवाय पूर्णथयो ॥ ५२ ॥ हिवे ५३ समवाय लिखेछे । देवकुरु उत्तरकुरु सबंधिनी

जीवामहाहिमवओ अडकालाछक्कलाओत्ति ॥ १ ॥ संवच्छरपरियागत्ति संवच्छरमेकं यावत् पर्यायः प्रव्रज्यालक्षणो येषां ते सवत्सरपर्याया' महइमहालएसु महाविमाणेसुत्ति महातिच तानि विस्तीर्णानिच अतिमहालया आत्यंतमुत्सवाश्रयभूतानि महातिमहालया स्तेषु महांतिचतानिप्रशस्तानि विमानानिचेति विग्रहः एतेचाप्रतीता अनुत्तरोपपातिकांगेतु ये धीयते तत्र चयस्त्रिंशत् बहुवर्षपर्याया सेति ॥ ५२ ॥ चतु.पचाशस्थानकं लिख्यते । पाउणित्तत्ति प्राप्य

यातेणं जीवाउ तेवन्नं २ जोयणसहस्साइं साइरेगाइ आयामेण प० महाहिमवंतरुप्पीणं वासहरपव्वयाणं जीवाउ तेवन्नजोयणसहस्साइं नवयएगतीसे जोयणसए छच्चएगूणवीसइभाए जोयणस्स आयामेणं प० समणस्सणं भगवउमहावीरस्स तेवन्न अणगारासवच्छरपरियाया पंचसुअणुत्तरेसु महइमहालएसु महा विमाणेसु देवत्ताए उववन्ना समुच्छिमउरपरिसप्पाणं उक्कोसेण तेवन्नंवाससहस्सा ठिई प० ॥ ५३ ॥

जीवा प्रत्यचारूप त्रेपनत्रेपन योजन सहस्र भाभेरी लांब पणे कही । महाहिमवत बीजो वर्षधर एह बिहु वर्षधरनी जीवा प्रत्यचा त्रेपन २ सहस्र योजन प्रमाणे उपरि नवसे एकत्रीस योजन एक योजन नाउगुण सहार छकला । ५३९३१ योजन १९ । ६ कला आयामे लांब पणे कह्या । श्रमण भगवंतमहावीर ना ५३ अणगारयती सवच्छर पर्याया एकवर्षनो पर्याय दीक्षा जेहने एहवा ५३ हुया । पछे संथारोकरी अनुत्तर विजयादिक अतिमोटो घणो बिस्तीर्ण महाविमान तेहने विषे देवता पणे उपना । समूर्छिम उरपर सर्पनो उत्कृष्टो त्रेपन वर्ष सहस्रनो आउखो कह्यो ॥ इति ५३ मो समवाय पूर्ण थयो ॥ ५३

एगणिसिज्जाए ति एकेनासनपरिग्रहेण वागरणाइं ति व्याक्रियते अभिधीयते इति व्याकरणानि प्रश्ने सति निर्वचनतापद्यमानाः पदार्थाः वागरित्त्ति व्याकृतवान्याख्यानि वा प्रतीतानि अनंतनाथस्येह चतुःपंचाशद्गणा गणधरा श्रोताः आवश्यके तु पंचाशदुक्ता स्तदिदं मतांतरमिति ॥ ५४ ॥ पंचपंचाशत्

भरहेरवएसुणं वासेसु एगमेगाए उसप्पिणीए ओसप्पिणीए चउवन्नं २ उत्तमपुरिसा उप्पज्जिंसुवा ३ तं० चउवीसं तित्थकरा बारसचक्कवट्टी नवबलदेवा नववासुदेवा अरहोणं अरिट्ठनेमी चउवन्नराइंदियाइं छउमत्थपरियायं पाउणित्ता जिणेजाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी समणे भगवं महावीरे एगदिवसेणं एगनिसिज्जाए चउप्पन्नाइं वागरणाइं वागरित्था अणंतस्सणं अरहओ चउपन्नं गणहरा होत्था ॥ ५४ ॥ मल्लिस्सणं अरह

हिवे ५४ मो समवाय लिखेछे। भरत ऐरवत क्षेत्रने विषे एकेकीयें अवसर्पिणीयें एकेकीयें उत्सर्पिणीये चौपन २ उत्तम पुरुष उपना उपजे छे। उपजस्ये ते कहेछे। २४ तीर्थंकर। १२ चक्रवर्ती। ९ बलदेव। ९ वासुदेव। सर्वमिली ५४ थया। अरिहंत अरिष्टनेमी ५४ रात्रि दिवस लगे छद्मस्थ पर्याय पाली ने जिन हुया केवली। सर्व जाणे ते सर्वज्ञ सर्वसकल संसारना भाव पदार्थ देखे ते सर्वदर्शी हुया। श्रमण भगवंत श्रीमहावीर एके दिवसे एक निषद्याये एके आसणे बेठे ५४। व्याकरण प्रश्न प्रति व्याकृतवंत कहता हुया। अनंतनाथ अरिहंतने ५४ गणधर हुया। इति चौपनमो समवाय थयो ॥ ५४ ॥ हिवे ५५ मो समवाय लिखेछे। मल्लिनाथ अरिहंत पचावन वर्षसहस्रलगे उत्कृष्टो आउखो पालीने सिद्धथया बुद्धथया यावत् शब्दे सर्वदुःख थकी

स्थानकोविदं लिख्यते। मंदरस्से त्यादि इह मेरोः पश्चिमांतात् पूर्वस्य जम्बूद्वीपद्वारस्य पश्चिमांतः पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणि योजनानां भवतीत्युक्तं तत्र किल मेरो विष्कम्भमध्यभागात् पंचाशत्सहस्राणि द्वीपांतो भवति लक्षप्रमाणत्वा द्वीपस्य मेरुविष्कम्भस्य च दशसाहस्रिकत्वा द्वीपार्द्धे पंचसहस्रक्षेपेण पञ्चपञ्चाशदेव भवन्तीति इह च यद्यपि विजयद्वारस्य पश्चिमांत इत्युक्तं तथापि जगत्याः पूर्वान्त इति किल सम्भाव्यते मेरुमध्यात् पञ्चाशतो योजनसहस्राणां जगत्यां ह्यन्ते पूर्यमाणत्वात् जम्बूद्वीपजगतीविष्कम्भेन च सह जम्बूद्वीपलक्षणपूरणीय लवणसमुद्र जगतीविष्कम्भेनच लक्षद्वय मन्यथा द्वीपसमुद्रमाना ज्जगतीमाने पृथग्भणने मनुष्यक्षेत्रपरिधिरतिरिक्तास्यात् साहि पचचत्वारिंशल्लक्षप्रमाणक्षेत्रापेक्षया भिधीयते तत शेव मतिरिक्ता स्यादिति अथचेह किंचिदूनापि पचपञ्चाशत्

तेपणपन्नंवाससहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धेबुद्धे जावप्पहीणे मंदरस्सणं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरमंताओ विजयदारस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं पणपन्न जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवंचउदिसिंपि विजयवेजयंतजयंतअपराजियंति समणेभगवंमहावीरे अंतिमराइयंसि पणपन्न अज्झयणाइं कल्लाणफलविवा

प्रचीण रहित थया । मेरू पर्वतना पश्चिमना चरिमांत थकी छेहल्या प्रदेश थकी जंबूद्वीपनो पूर्वनोद्वार विजयनाम तेहनो पश्चिमनो चरिमांत छेहलो प्रदेशएह ५५ योजन सहस्र आबाधा बिचाले आंतरो कह्यो । मेरुथकी विजय दरवाजा ४५ सहस्र योजने होय ते माहि दश सहस्रनो मेरुवालिये एतले सर्वमिली ५५ सहस्र योजन थया । इहा यद्यपि विजय द्वारनो पश्चिमात गह्यो छे पण जगतीनो पूर्वांत लीजे तो पूरा ५५ सहस्र योजन थया । एमज चिहुं दिशि मेर पर्वतमांहि घालता मेरुथकी दक्षिणदिसे वैजयंत द्वारनो पश्चिमे जयंतनो उत्तरे अपराजितनो आंतरो जाणिवो । श्रमण भगवत महावीर छेहलीरा

पूर्णतया विवर्वितेति अंतिमरायसित्ति सर्वायुः कालपर्यवसानरात्री रात्रेरंतिमे भागे पापायां मध्यमायां नगर्यां हस्तिपालस्य राज्ञःकरणसभायां कार्त्ति कमासामावास्यायां स्वातिनक्षत्रेण चन्द्रमसा युक्तेन नागकरणे प्रत्यूषसि पर्यकासनेनिषस्: पंचपचाशदध्ययनानि कल्लाणफलविवागाइंति कल्याणस्य पुण्य स्य कर्मणः फल कार्यं विपाच्यते व्यक्तो।क्रियन्ते यै स्तानि कल्याणफलविपाकानि एवं पापफलविपाकानि व्याकृत्य प्रतिपाद्य सिद्धोबुद्धः यावत्करणात् मुत्ते अंतकडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणेत्ति दृश्यं पढमेत्यादि प्रथमायां त्रिंशन्नरकलक्षाणि द्वितीयाया पंचविंशति रिति पंचपचाशत् दंसणेत्यादि दर्शनावरणी

गाइं पणपन्नं अज्झयणाइं पावफलविवागाइं वागरित्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे पढमबिइयासु दोसु पुढवीसु पणपन्न निरयावाससयसहस्सा प० दंसणावरणिज्जनामाउयाणं तिण्हं कम्मपगडीणं पणपन्न उत्तरपग डीओ प० ॥ ५५ ॥ जंबूद्दीवेणंद्दीवे छप्पन्नं नक्खत्ताचंदेण सद्धिं जोगं जोइंसुवा ३ विमलस्सणं

त्रियें कार्त्तिकवदी अमावसनी रात्रिये पालठीवाली बैठेथके ५५ अध्ययन पावानगरीमे हस्तिपाल राजानी दानसभाये कल्याण शुभकर्मनोफल कार्य विपा चीये प्रगटकरीये जेणे अध्ययने तेकल्याण फल विपाक कहीये सुबाहु कुमार प्रमुख ५५ अध्ययन जाणिवा। पाप फल विपाक मृगापुत्रादिकना कह्या सिद्धा तनेविषें सिद्ध थया बुद्धथया वलीयावत्शब्दे सर्वदुःख थकी प्रक्षीणथया । पहिलीये ३० लाख नरकावासाकह्या बीजीयें २५ लाख बिहु नरक पृथिवीना मिली ५५ लाख नरकावासा कह्या। दर्शनावरणीय प्रकृति ९ नाम कर्मनी ४२ आउखानी ४ एमत्रीहु कर्मनी ५५ उत्तर प्रकृति कही। इति ५५ मो समवा यथयो ॥ ५५ ॥ हिवे ५६ मोसमवाय लिखेछे। जम्बूद्वीप द्वीपने विषें ५६ नक्षत्र चंद्रमा साथे योग सबध योजना करता हुया सबध करेछे संबंध

यस्य नव प्रकृतयो नाम्नो द्विचत्वारिंशत् आयुषश्चतस्र इत्येवं पंचपंचाशदिति ॥ ५५ ॥ अथषट्पंचाशत्स्थानके लिख्यते। जंबूद्दीवेत्यादि तत्र चन्द्रद्वयस्य प्रत्येकमष्टाविंशते र्भावात् षट्पंचाशन्नचत्राणि भवन्ति विमलस्येह षट्पंचाशद्गणा गणधरा श्चोक्ताः आवश्यके तु पञ्चपञ्चाशदुच्यते तदिद मतांतर मिति ॥ ५६ ॥ अथ सप्तपचाशत्स्थानके किमपि लिख्यते। गणिपिडगाणंति गणिन आचार्यस्य पिटकानीव पिटकानि सर्वस्वभाजनानीति गणिपिटकानि तेषा आचारस्य श्रुतस्कन्धद्वयरूपस्य प्रथमागस्य चूलिका सर्वान्तिममध्ययन विमुक्त्यभिधान माचारचूलिका तद्वर्जानां तत्राचारे प्रथमश्रुतस्कधे नवाध्ययनानि द्वितीयेषोडश निशीथाध्ययनस्य प्रस्थानांतरत्वे नेहानाश्रयणात् षोडशाना मध्ये एकस्या चारचूलिकेति परिहृतत्वात् शेषाणां पचदश सूत्रकृते

अरहन्त वप्पन्नं गणा गणहरा होत्था ॥ ५६ ॥ तिराहं गणिपिडगाणं आयारचूलियाव ज्जाण सत्तावन्नं अज्झयणा प० तं० आयारे सूयगडे ठाणे गोथूभस्सण आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाउ

कारस्ये एतले जम्बूद्वीपमाहि २ चद्रमाछे एकेक चद्रमाने परिवारे २८ नचत्र होइ बिहु चद्रमाना मिलो ५६ नचत्र होय। विमलनाथ अरिहतना ५६ गणधर सूत्रे कह्या आवश्यके ५० गणधर कह्याछे मतांतर छे। इति ५६ समवाय सपूर्ण ॥ ५६ ॥ हिवे ५७ समवाय लिखेछे। त्रिण गणी कहिये आचार्य तेह ने पेटीरत्नभाजन सरीखाते गणिपिटक एहवासूत्रना आचाराग प्रथम श्रुत स्कधे ९ अध्ययन बीजे १६ अध्ययनछे । तेमाहीथी छेहला अध्ययन विमुक्ति नाम आचार चूलिकाते एकटाली बीजा १५ अध्ययन लीजे तो २४ अध्ययन आचारांग सूयगडाग पहिले श्रुतस्कधे १६ अध्ययन बीजे ७ सर्बमिली २३ ठाणागे १० अध्ययन सर्बमिली ५७ अध्ययन कह्या। तेसूत्रनानाम कहेछे अनुक्रमे आचारांग १ सूयगडाग २ ठाणाग ३। जगतीथकी ४२ सहस्र योजने समुद्र

द्वितीयांगे प्रथमश्रुतस्कन्धेषोडशद्वितीयेसप्त स्थानांगे दशे त्वत सप्तपंचाशदिति गोथूभेत्यादौ भावार्थोय द्विचत्वारिंशत् सहस्राणि वेदिका गोस्तुभपर्वतयो रंतरं सहस्र गोस्तुभस्य विष्कम्भ: द्विपचाशद्गोस्तुभवडवामुखयो रंतर दशसहस्राणि वडवामुखविष्कम्भस्य तदर्द्धं पचेति ततो द्विपचाशतः पचानां च मीलने सप्त पचाशदिति जीवाणधणुपिठत्ति मण्डलं खण्डाकारं क्षेत्र इह सूत्रे सम्वादगाथार्द्ध सत्तावन्नसहस्सा धणुपिट्ठिणउयदुसयदसकलत्ति ॥ ५७ ॥

चरमंताउ वलयामुहस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभाए एसणं सत्तावन्नं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं दगभासस्स केउस्सय संखस्स य जूयस्सय दयसीमस्स ईसरस्सय मल्लिस्सणं अरहउ सत्तावन्नं मणपज्जवनाणिसया होत्या महाहिमवंतरूप्पीणंवासहरपव्वयाणं धणुपिठं सत्तावन्नं २ जोयणसहस्साइं

माहि पूर्वदिशे गोस्तुभनामा वेलधर नागराजानो आवासपर्वत तेहना पूर्वना चरिमांतथकी छेहल्या प्रदेशथकी वडवामुख महापाताल कलशनो बहुमध्य देशभाग एहने ५७ योजन सहस्र आवाधाये विचाले आतरो कह्यो एतले गोस्तूभ पर्वतथकी मुड पूर्वे ५२ सहस्र योजने वडवामुख पाताल कलशछे अनें ते वडवामुख १० सहस्र पिहुलो तेहनो मध्यभाग ५ सहस्रनो ५२ सहस्र भेला करतां ५७ सहस्र योजन थया । एम दक्षिणे दगभास पर्वतना पूर्वना छेहला प्रदेशथकी मांडी केतुक पाताल कलशनो मध्यभाग ५७ सहस्र योजने। एमज पश्चिमे शखनामा वेलंधरथकी मांडी यूपकनामा पाताल कलशनो मध्यभाग ५७ सहस्र योजने । उत्तरे दगसीम वेलधर थकी ईश्वरनाम पाताल कलशनो मध्यभाग ५७ सहस्र योजने । मल्लिनाथ अरिहतने ५७ मन पर्यवज्ञानी ५७०० थया । जंबूद्वीप लक्षण मडलक्षेत्र तेमांहो हिमवत बीजो वर्षधर रूपी पाचमो एहबेहु वर्षधर पर्वतनी धनुपृष्टि ५७ योजन सहस्र बलो वेसय अने त्राणो

अष्टपंचाशत्स्थानकेपि लिख्यते । पढमेत्यादि तत्र प्रथमायां त्रिंशन्नरकलक्षाणि द्वितीयायां पंचविंशतिः पंचम्यां त्रीणीति सर्वाण्यष्टपंचाशदिति नाणीत्यादि तत्र ज्ञानावरणस्य पंच वेदनीयस्य द्वे आयुषश्चतस्रो नाम्नो द्विचत्वारिंशत् अंतरायस्य पंचेति सर्वा अष्टपंचाशदुत्तर प्रकृतयः गोथूभस्सेत्यादि अस्य च भावार्थः पूर्वोक्तानुसारेण वसेयः एवचउद्दिसिपि नेयव्वति अनेन सूत्रेलयमतिदिष्ट तत्रैव दओभासस्सणआवासपव्वयस्स उत्तरिल्लाओ चरमताओ केउगस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभागे एसणं अट्ठावन्न जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नते एव सखस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमताओजूयगस्स महा

दोन्नियतेणउए जोयणसए दसयएगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं प० ॥ ५७ ॥ पढमदोच्चपंचमासु तिसुपुढवीसु अट्ठावन्नंनिरयावाससयसहस्सा प० नाणावरणिज्जस्स वेयणिय आउय नाम अंतराइयस्स एएसिणपंचण्हकम्मपगडीणं अट्ठावन्नं उत्तरपगडीओ प० गोथूभस्सणं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ल

योजन दसभाग उगुणीस हाइया एक योजनना ५७२८३ योजनना एगुणोस हाइया भाग १० कलापरिक्षेपे परिधि कही ॥ इति ५७ नोसमवाय संपूर्ण ॥

५७ ॥ हिवे अठावन मो समवाय लिखेछे । पहिलीयें ३० लाख नरकावासा बीजीयें २५ लाख पांचमीयें ३ लाख एमत्रिणना मिली अठावन नरकावासा सतसहस्र एतले ५८ लाख नरकावासा कह्या । नाणावरणीय ५ प्रकृति वेदनीयनी २ आऊखानी ४ नामकर्मनी ४२ अंतरायनी ५ एह ५ कर्मनी उत्तर प्रकृति अठावन कही । समुद्र माहि पूर्वदिशें गोस्तूभ नामा वेलंधर नागराजानो आवासपर्वत छे तेहना पश्चिम चरमांतथी छेहला प्रदेशथकी मांडी बडवामुख महापाताल कलशनो बहुमध्यदेशभाग एह ५८ सहस्र योजन आबाधायें विचाले आंतरो कह्यो । जंबूद्वीपनी पूर्व जगतीथकी मांडी ४२ सह

पातालस्स एवंदगसीमस्स आवासपव्वयस्सदाहिणिल्लाओ चरमंताओ ईसरस्स महापायालस्सत्ति ॥ ५८ ॥ अथैकोनषष्ठिस्थानकं लिख्यते। चंदस्सणमित्यादि संवत्सरो ह्यनेकविधः स्थानांगादिषूक्त स्तत्र य श्चन्द्रगति मंगीकृत्य संवत्सरो विवक्ष्यते स चंद्र एव तत्र च द्वादशमासाः षट्चऋतवो भवन्ति तत्रचैकैकऋतु रेकोनषष्ठिरात्रिंदिवाग्रेण भवति कथ एकोनत्रिंशद्रात्रिंशच द्विषष्ठिभागा अहोरात्रस्ये त्येव प्रमाणः कृष्णप्रतिपदामारभ्य पौर्णमासीपरिनि

ल्लाउ चरमंताउ वलयामुहस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभाए एसणं अट्ठावन्नं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवचउदिसंपि नेयव्वं ॥ ५८ ॥ चंदस्सणं संवच्छरस्स एगमेगे उऊ एगूणसट्ठि

स्र योजन गोस्तूभ पर्वतछे ते एकसहस्रनो पिहुलो छे ते एकसहस्र योजन हाथिलीजे अने गोस्तूभ थी ५२ सहस्र योजन वडवामुख कलशछे। तो गोस्तूभस वधो एक सहस्र ५२ सहस्र मांहि घातिये तो ५३ सहस्रथाय अने वडवामुख १० सहस्र पिहुलोछे तेहनो मध्य भाग पांच सहस्रनो ते ५३ सहस्र मांही घातिये एतले ५८ सहस्र योजन एतलो आंतरो जाणिवो। एम विहुदिशि ना वेलधर पर्वत अने चिहु पाताल कलशनो आंतरो जाणिवो दगभास पर्वत दक्षिण समुद्र माही तेहनां उत्तर चरिमातथी माडो केतुक पाताल कलशनो मध्यभाग ५८ सहस्र योजन आंतरो कह्यो। पश्चिमे शंखपर्वतनां पूर्वचरिमांत अने यूप कलशनो मध्यभाग५८ सहस्र योजननो आंतरो कह्यो। उत्तरे दगसीम पर्वतनो दक्षिण चरिमांत ईसर पातल कलश ५८ सहस्रनो। इति ५८ समवाय पूर्णथयो ॥ ५८ ॥ हिवे ५९ मोसमवाय लिखेछे। चंद्रमानी गतिने अंगीकार करीने जे सवत्सर विचारिये ते चंद्रसंवत्सर कहीये। चद्र सवत्सर १२ मासनो ऋतु ६ होय। एकेक ऋतु तेमां उगुणसाठि रात्रि दिवस छे तिहां एहवो रात्रि दिवाग्रे ५९ अहोरात्रि प्रमाणे कह्यो तो विहु

नां सूर्यमडलानामेकैकं मंडलं तथाविधचारभूमिः सूर्यः षष्ट्याषष्ट्यामुहूर्त्तैर्द्वाभ्यां द्वाभ्यामहोरात्राभ्यामित्यर्थः संघातयति निष्पादयति अयमत्रभावार्थः एक स्मिनक्षियत्रस्थाने उदितः सूर्यः तत्रस्थाने पुनर्द्वाभ्यामहोरात्राभ्यामुदेतीति अगोदयति षोडशसहस्रोक्षितायां वेलायायदुपरिगव्यूतद्वयमानं वृद्धिहानिस्वभा वतदग्रोदक बलिस्सत्ति औदीच्यस्य असुरकुमार निकायराजस्य भवन वंभस्सति ब्रह्मलोकाभिधान पंचमदेवलोकेंद्रस्य सङ्क्तिः सौधर्मेद्वात्रिंशदीशानेचाष्टा वंशतिविमान लक्षाणीतिकृत्वा षष्टिस्तानिभवन्तीति ॥ ६० ॥ अथैकषष्ठिस्थानकं तत्रपंचेत्यादि पंचभिः सम्बत्सरैर्निवृत्तमिति पंचसांवत्सरिकं तस्यणमि त्यलङ्कारे युगस्य कालमानविशेषस्य ऋतुमासेन चंद्रादिमासेन मीयमानस्य एकषष्ठिः ऋतुमासाः प्रज्ञप्ताः इहचाय भावार्थः युगंहि पचसंवत्सरानिष्पादयन्ति

लेणं अरहा सठिंधणूइं उढं उच्चत्तेणं होत्था वलिस्सणं वइरोयणिंदस्स सठिं सामाणियसाहस्सीउ प० वंभस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सठिं सामाणियसाहस्सीउ प० सोहम्मीसाणेसु दोसुकप्पेसु सठिं विमाणा वाससयसहस्सा प० ॥ ६० ॥ पंचसंवच्छरियस्सणं जुगस्स रिउमासेणं मिज्जमाणस्स इग

साठ धनुष ऊचा ऊचपणे हुया। वलेंद्र वैरोचनेंद्र उत्तर असुर कुमारना राजाने साठ हजार सामानिक देवता आप समान देवता कह्या। ब्रह्मनामा ५ मां देवेंद्र देवराजा ने साठहजार सामानिक देवता कह्या। सौधर्म देवलोके ३२ लाख विमान ईशानें २८ लाख विमान बेहुं देवलोकनां मिली साठलाख विमानावास कह्या ॥ इति ६० समवाय संपूर्ण ॥ ६० ॥ हिवे ६१ मो लिखेछे। चंद्र १ चद्र २ अभिवर्द्धित ३ चद्र ४ अभिवर्द्धित ५ एम पांच वर्षनो १ युगथाय ते ऋतुमासे करी मीयमानछे चद्रमासनोमान २९ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना ३२ भाग ६२ ठिया ते कृष्णपक्षनी पडिवा थी पौर्ण

एकषष्ठिःसहस्राण्युक्ताः द्वितीयस्तु अष्टत्रिंशत्स्थानके ऽष्टत्रिंशदितिप्रोक्ताः चैत्रसमासेतु कान्देनसहलक्षप्रमाणस्त्रिधा विभक्ता स्तत्र प्रथमकांडं सहस्रं द्वितीयत्रिष ष्ठि स्तृतीयंषट्त्रिंशदिति । चन्दमण्डले चन्द्रविमानएसियलक्ती एगसट्ठित्ति योजनस्यैकषष्ठिभागेन षटपचाशद्भागप्रमाणैर्विभाजितविभागैर्व्यवस्थापिते समांशसमविभागं प्रज्ञप्तम् विषमांश योजनस्यैकषष्ठि भागानां षट्पचाशद्भागप्रमाणत्वा त्तस्यचभागभागस्या विद्यमानत्वादिति । एवसूर्यस्यापिमण्डल वाच्यम् अष्टचत्वारिंशदेकषष्ठिभागमात्रम् हितन्नचापरमशातरं तस्याप्यस्तीति समांशतेति ॥ ६१ ॥ अथद्विषष्ठिस्थानक पचेत्यादि तत्रयुगेत्रयश्चंद्रसवत्स राभवति तेषुषट्त्रिंशत् पौर्णमास्योभवन्ति द्वौचाभिवर्द्धित सवत्सरौभवत स्तत्रचाभिव र्द्धितसंवत्सर स्त्रयोदशभिश्चंद्रमासैर्भवतीति तयोः षड्विंशतिः पौर्ण

एगसट्ठिं विभागविभाइए समसे प० एवंसूरस्सवि ॥ ६१ ॥ पंचसंवच्छरिए णं जुगे बावट्ठिं पुन्निमाउ बावट्ठिं अमावसाउ प० वासुपुज्जस्स णं अरहउ बासट्ठिं गणा बासट्ठि गणहरा होत्था सुक्कपक्ख

कह्यो । मेरु पर्वत ९९ हजार योजन ऊंचोछे तेहना वेभाग कीजे तेहमा पहिलो भाग ६१ हजार योजन नो बीजो ३८ हजार योजननोकह्योचैत्रसमासमेतां कदसहित मेरु येकलाख योजन प्रमाणछे तेहना तीनभागकीधाछे पहिलो १ हजार योजननो बीजो ६२ हजार योजननो त्रीजो ३६ हजार योजननो चद्रमानो मडल चद्र विमान १ योजनना ६१ हाइया ५६ छप्पनभाग प्रमाणें व्यवस्थापितछे तेमाटे समांस समभाग कह्योछे। चंद्रमाना मंडलमाहिथी ५ विषमांस नीकल्या तोरह्या ५६ समांस एणीपरे सूर्य मडल मांथी १३ त्रिसमांस नीकल्या रह्या ४८ समांस ॥ ६१ मोसमवाय सपूर्ण ॥ ६१ ॥ हिवे ६२ मो लिखेछे। पांच संवत्सरनो युगहोय तेमांहि ६२ पूनिम अनें ६२ अमावास्या कही १ युगमाहि ३ चद्रवर्ष होय तेमांहि मास ३६ वारेत्रिक ३६ पूर्णिमाअने ३६

वावठिं २ इत्यत्र द्विशष्ठि २ भागानां दिवसे २ च प्रत्यह मित्यर्थः शुक्लपक्षस्य सम्बन्धिनि यत् परिवर्द्धते चन्द्र श्चतुरंशाधिकान् द्विषष्टिभागान् क्षपयन्ति तदे व कालेनै तदेवाह पन्नरसइत्यादिना चद्रविमानं द्विषष्ठिभागान् क्रियते ततः पञ्चदशभिर्भागो ऽपक्रियते तत श्चत्वारो भागाः समधिका द्विषष्ठिभागानां पंचदशभागेन लभ्यन्ते अत उच्यते पचदशभागेन चोत्तालक्षणेन चद्रमधिकृत्य पचदशैवदिवसां स्तद्राहुविमान श्चरति एवमुपक्रामतीत्यपि भावनीयमिति अत्रा स्माभि र्यथादृष्टे लिखिते उपनीते बहुश्रुते र्निर्णयः कार्यइति सोहम्मीत्यादि तत्र सौधर्मैशानयो स्त्रयोदशविमानप्रस्तटा भवन्ति सनत्कुमारमाहेंद्रयो र्द्वादश ब्रह्मलोके षट् लांतके पंच शुक्रे चत्वार एवं सहस्रारे आनत प्राणतयो श्चत्वार एव मारणाच्युतयोः ग्रैवेयके ष्वधस्तनमध्यमोपरिमेषु त्रयः २ अनुत्तरे ष्वे कइति द्विषष्ठि स्ते भवन्ति एतेषां च मध्यभागे प्रत्येक मुडुविमानादिकाः सर्वार्थसिद्धविमानाता वृत्तविमानरूपा द्विषष्ठिरेव 'विमानेंद्रका भवन्ति तत्पार्श्वतश्च पूर्वादिषुदिक्षु त्र्यस्रचतुरस्रवृत्तविमानक्रमेण विमानानामावलिका भवन्ति तदेव सौधर्मैशानयोः कल्पयोः प्रथमे प्रस्तटे सर्वाधस्तने इत्यर्थः पढ मावलियाएत्ति प्रथमाउत्तरोत्तरावलिकापेक्षया आद्या श्चतस्र आवलिकायस्मिन् स प्रथमावलिकाक स्तत्र अथवा प्रथमान्मूलभूताद्विमानेंद्रकादारभ्य या चा

म्मीसाणेसु कप्पेसु पढमेपत्थडे पढमावलियाए एगमेगाए दिसाए बासठिं विमाणा प० सव्वे वेमाणियाणं

६२ भाग होय वासठिया च्यार च्यार भाग दिन २ तेजघटे सौधर्म ईशाने देवलोके १३ प्रतरछे तेमाहि पहिले प्रतरेपहिली आवलिकाये श्रेणीये ४ श्रेणीमां डिये तिहां पहिली श्रेणियें पूर्वादिक येकेकें दिशे आवलिकाये ६२ वासठ विमान घणां मोटा कह्या । १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान सर्वमिली वताना ६२ विमान प्रस्तर प्रस्तराग्र परिमाणे कह्या सौधर्म ईशाननां १३ सनत्कुमार मांहिंद्रें १२ ब्रह्में ६ लांतके ५ शुक्रे ४ सहस्रारें ४ आनत प्राणते

जम्बूद्वीपस्य पर्यन्तिमे अशीत्युत्तरे योजनशते पञ्चषष्ठिर्भवन्ति तत्र च निषधवर्षधर पर्वतस्योपरि नीलवद्वर्षधरपर्वतस्योपरि च त्रिषष्ठिः सूर्योदयस्थानानि सूर्यमण्डलानी त्यर्थः तदन्ये तु द्वे जगत्याउपरि शेषाणि तु लवणे त्रिंशुत्रिंशदधिकेषु योजनशतेषु भवन्तीति भावार्थः ॥ ६३ ॥ अथ चतुःषष्ठि स्थानक अठेयादि अष्टावष्टमानि दिनानि यस्यासाष्टाष्टमिका यस्याहि अष्टौदिनाष्टकानि भवन्ति तस्यामष्टावष्टमानि भवन्त्येवेति भिक्षुप्रतिमा ऽभिग्रहवि

तेवठीए राइंदिएहिं संपत्तजोव्वणा भवंति निसढेणं पव्वएतेवठिं सूरोदया प० एवनीलवंतेवि ॥ ६३ ॥

अठठमियाणं भिक्खुपडिमा चउसठीए राइंदिएहिं दोहियअठासीएहिं भिक्कासएहि अहासुत्त जावभवइ

वेत्रे बीजोआरोहोय। हिमवत ऐरण्यवंतक्षेत्रे तोजोहोय। महाविदेहे चोथोआरोहोय। देवकुरु उत्तरकुरु ना युगलियां ने ४९ दिननी अपत्यपालनाछे। आरादीठ १५ दिननी वृद्धि अपत्यपालनामें छे। एम करतां ४९ मांहि १५ दिन वधारिये तिवारे हरिवर्ष रम्यक क्षेत्रे ६४ दिन थाय। इहां सूत्रमांहि ६३ दिन आंख्यां तेभिममिले जनमदिन नगिणिये एह उत्तर जाणिवो। सूर्यना मंडल १८४ सगलाईछे तेमाहि निषधपर्बतने माथे १८० योजनमांहो तेवठो तेवठो सूर्योदयस्थान रूपमांडला बेबे मांडला जगती उपरि शेषथाकता ३३० योजन लवण समुद्रमांहि ११९ सर्वमिलो १८४ एवनीलवत पर्वत नेपणि एम जाणिवो ऐरवत क्षेत्र सबधी सूर्यनांजगवानां मांडला ६५ नीलवंतपर्वत जगती मिलीने बीजा ११९ पश्चिम समुद्रमांहि जाणिवा॥ इति ६३ मोसमवाय पूर्णथयो ॥ ६३ ॥ हिवे ६४ समवाय लिखेछे। आठ दिहाडा आठगुणांछे जेहनेविषे तेभिक्षु प्रतिमा अभिग्रह विशेष आठंआठे चौसठदिनहोय जिहां तेअठमिया भिक्षु प्रतिमा चौसठि रात्रिदिवसे समापिये। पहिलेदिने एक भिक्षा बीजेदिने २ त्रीजे दिने ३ एम आठदिन एकेक भिक्षा वधारियेतो

ष्पष्ठिरिति सोहम्मेत्यादि सौधर्मेशानेशानयोर्ब्रह्मलोके च क्रमेण द्वात्रिंशदष्टाविंशतिः चतुर्लक्षाणि विमानानां चतुःषष्टिरिति चउसट्ठि लट्ठीणत्ति चतुःषष्टिलष्ठ नागरागायष्टिवन्तीचतुःषष्टिलष्ठिका मुत्तामणिमयेत्ति मुक्तामुक्ताफलानि मणयश्चन्द्रकान्तादिरत्नविशेषाः मुक्ताप्रधाना मणयो रत्नानि मुक्तामणयस्तद्विकारो मुक्तामणिमयः ॥ ६४ ॥ अथ पञ्चषष्टिस्थानकं तत्र मोरियपुत्तेणत्ति मौर्यपुत्रो भगवतो महावीरस्य सप्तमो गणधरः तस्य पञ्चषष्टिवर्षाणि गृहस्थ पर्याय आवश्यकेप्येवमेवोक्तो नवरमेतस्यैव यो दृश्यतेऽभ्यधिकता सञ्जातपुत्रानिशानः षष्ठो गणधरः तद्दीक्षादिन एवमत्र चित्तं स्थात् आवश्यके त्रिषष्टिवर्षाणि गृह स्थपर्याय उक्तो न च बोधविषयमागच्छति यतोऽत्र तस्य पञ्चषष्टिर्युज्यते नानुत्तरान्यनिपवागर्दिति सोहम्मेत्यादि सौधर्मावतंसकं विमानं सौधर्मदेवलोकस्य

सोहम्मीसाणेसु बंभलोएय तिसुकप्पेसु चउसट्ठिं विमाणावाससयसहस्सा प० सव्वस्सवियणं रन्नोचाउरंत चक्कवट्टिस्स चउसट्ठिलट्ठीए महग्घेमुत्तामणिहारे प० ॥ ६४ ॥ जंबूद्दीवे पणसट्ठि सूरमंड ला प० थेरेणंमोरियपुत्ते पणसट्ठिवासाइं आगारमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता आगाराओअणगारियं पव्वइए

जन प्रमाण कह्या । सौधर्मे ३२ लाख विमान ईशाने २८ लाख विमान ब्रह्मलोके ४ लाख विमान एहतीन देवलोके चोसठिलाख एतला विमानावास कह्या सगलाने राजाने चातुरंत चक्रवर्तिने चिहुंदिशिना अतना धणीने चउसठिलष्टि कहता सरी छे तिहां ते चतुष्पष्टि कहिये एतले ६४ सरी महग्घो महार्घ्य बहुमूल्य मोती मुक्ताफल मणि चन्द्रकांतादिकरत्न विशेष तेहमय हारकह्यो ।॥ इति ६४ सोसमवाय सपूर्ण ॥ ६४ ॥ हिवे पेंसठमो समवाय लिखेछे । जंबूद्वीपने विषे १८० सूर्यमंडलछे निषधमाहे ६२ जगती उपरि २ सर्वमिली ६५ कह्या । स्थविर वयश्रुत पर्याये वडा मौर्यपुत्र सातमा गणधर

ण्उर्द्दक्षिणपङ्क्तौ स्थिता षट्पञ्चाश्चोत्तरपङ्क्तौ यदाचोत्तरपङ्क्ति.पूर्वस्यागच्छति तदादक्षिणापश्चिमायामित्येवं सूर्यसूत्रमप्यवसेयमिति छावठ्ठिगणत्ति आवश्यकेतु षटसप्ततिरभिहितेतोदमतांतरमिति छावठ्ठिसागरोवमाइठिइति यथातिरिकं तदिहनविवचित यतएवमिदमन्यत्रोच्यते दोवारेविजयाइसु गयस्सतिन्निचुए

छावठिंचंदापन्नासिंसुवा ३ छावठिसूरियातविंसुवा ३ सेज्जंसस्सणं अरहओ छावठिंगणा छावठिंगणहरा

लगे रात्रिये ६६ चद्रमा प्रकाश करे एतले मनुष्यक्षेत्र माहि १३२ चद्रमाछे। तेहनो अर्द्ध ६६ होय ते ६६ चद्रमा जबूद्वीप सबधो हरिवर्ष १ हिमवंत २ भरत क्षेत्र ३ एव दक्षिण धातकी खडे ३ क्षेत्र एमज दक्षिण पुष्करार्द्धे एहीज त्रिहूंक्षेत्रे रात्रिकरे मेरुथको उत्तर दिशें जबूद्वीप सबधी रम्यक १ ऐरण्यवत २ ऐरवत ३ धातकी खडना एहीज ३ पुष्करार्द्धना एहीज ३ क्षेत्रे ६६ चद्रमा प्रकाश करे तिवारे जबूद्वीप सबधी पूर्वविदेह १ धातकीखड पूर्वविदेह २ पुष्करार्द्ध पूर्वविदेह ३ तिहा ६६ सूर्यतपे पश्चिम जबूद्वीप विदेह १ धातकीखंड पश्चिम विदेह २ पुष्करार्द्ध पश्चिम विदेहें ६६ सूर्य तपे दिवस करे। अने जिवारे मेरुथको दक्षिण पुष्करार्द्धलगे ६६ सूर्य दिवसकरे तिवारे मेरुथकोउत्तर पुष्करार्द्धलगे ६६ सूर्य दिवसकरे। जिवारे मेरुथको पूर्वपुष्करार्द्ध लगे ६६ चद्रमा रात्रिकरे तिवारे पश्चिम पुष्करार्द्ध लगे ६६ चद्रमा रात्रिकरे एम १३२ सूर्य १३२ चद्रमा कह्या। श्रेयास ग्यारमा अरिहंतने ६६ गणधरहुआ। आवश्यके ७६ गणधर कह्याछे तेमतांतरछे। आभिनिबोधिकज्ञान एतले मतिज्ञाननी ६६ सागरोपम झाझेरालगे स्थितिकही। यदाह दोवारे विजयाइसु गयसातिन्निचुएअहवताइ अइरेगनरभवीअ नाणाजीवाणसिद्धंति। विजयविमाने मतिज्ञानी टोवेलाजाय तिहांतितीम सागर २ वेला... पदूणा

अर्हवताइं अट्ठरेगंनरभवीयंनाणजीवाणसव्वइंति ॥ १ ॥ ६६ ॥ अथसप्तषष्ठिस्थानकं किंचिद्विव्रियते तत्रपंचसंवत्सरेत्यादि नक्षत्रमासीये
नकालेन चंद्रोनक्षत्रमण्डलभुंक्ते सचसप्तविंशतिरहोरात्राणि एकविंशति श्चाहोरात्रस्यसप्तषष्ठिभागाः २७ । २१ । ६७ । युगप्रमाणंचाष्टादशशतानि त्रिंशदधि
कानीति प्राक्‌दर्शितम् १८३० तदेवंनक्षत्रमासस्योक्त प्रमाणराशिनादिनसप्तषष्ठिभागतया व्यवस्थापितेनत्रिंशदुत्तराष्टादशशतप्रमाणेनयुगदिनप्रमाणराशिः
सप्तषष्ठिभागतयाव्यवस्थापित एकंलक्षद्वाविंशतिः सहस्राणिषट्‌शतानिदशचेत्येवरूपोविभज्यमानःसप्तषष्ठिनक्षत्रमासप्रमाणोभवतीति बाहाओत्ति लघुहिम

होत्था आभिणिबोहियनाणस्स णं उक्कोसेण छावट्ठिं सागरोवमाइं ठिई प० ॥ ६६ ॥ पंचसं
वच्छरियस्सणंजुगस्स नक्खत्तमासेणं मिज्जमाणस्स सत्तसट्ठिं नक्खत्तमासा प० हेमवयएरन्नवयाउणं बाहाउ

६६ सागर आउखो । तथा अच्युतदेवलोगे त्रीण वेलाजाय तिहां उत्कृष्टो २२ सागरआउखो वाईतो ६६ सागरहोय । विचेंमनुष्यनोभव करेते आभेरा माहि
गणिये इति ६६ समवाय संपूर्ण ॥ ६६ ॥ हिवे ६७ समवाय लिखेछे । पचसवत्सरे युग १ पूरोथाय । तेयुग नक्षत्रमासे मावीये ६७ नक्षत्रमासहोय जेणे
काले चंद्रमा नक्षत्र मडलनेभोगवे तेनक्षत्रमासकहिये तेनक्षत्रमास २७ अहोरात्रि अने एकअहोरात्रिना सडसठिया २१ भा प्रमाणेहोय। पूर्वे ६१ मेंठाणें एक
१८३० दिनकह्याछेते ६७ गुणांकरिये तिवारे एकलाख बाईस हजारछसे दसभागहोय तेसडसठभागें एकअहोरात्रि वाधियें २७ अहोरात्रियें सडसठिया एक
वोसभागे एकनक्षत्रमासहोय एहवे ६७ नक्षत्रमासे एकनक्षत्र युगपूराय । लघु हिमवतपर्वतनी जीवाथकी पूर्वपश्चिमे प्रवर्द्धमान जेहिमवतक्षेत्रनी प्रदेशपं

सज्जीवाया: पूर्वापरभागतो येप्रवर्द्धमानक्षेत्रप्रदेशपंक्ती हैमवतवर्षजीवायावत्ते हैमवतबाहुउच्येते एवमैरण्यवतबाहुअपिभावनीयौ द्वह्प्रमाणसंवाद: आहासत्त ट्ठिसट्टपण्णपन्नेतिनियकलाप्रोत्ति कलाएकोनविंशतिभाग: एतच्चबाहुप्रमाणं हैमवतधनु:पृष्ठात् चत्तालासत्तसया अडतीससहस्स दसकलायधणुत्ति ॥ एवं लक्षणात् ३८०४० । १० । १९ हिमवद्धनु:पृष्ठे धणुपिट्ठकलचउक्क पणवीससहस्सादुसयतोसहियत्ति एवलक्षणे २५२३० । ४ । १९ । अपनीतेयच्छेषतद्वी क्षतसङ्गवतीति आयामेनदैर्घ्येणेति मदरस्सेत्यादि मेरो: पूर्वांताज्जंबूद्वीपोपरस्यांदिशि जगतीबाह्यांतपर्यवसान: पचपचाशयोजनसहस्राणितावदस्ति तत: परद्वादशयोजनसहस्राण्यतिक्रम्य लवणसमुद्रमध्ये गौतमद्वीपाभिधानोद्वीपोस्ति तमभिव्याप्यसूत्रार्थ: सम्भवति पंचपंचाशतोद्वादशानांच सप्तषष्टित्वभावात्

सत्तट्ठिं सत्तट्ठिं जोयणसयाइं पणपन्नाइं तिन्निय‍ऊणवीसइभागा जोयणस्स आयामेणं प० मंदरस्सणं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोयमदीवस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसणं सत्तसट्ठिं जोयणसहस्साइं अबाहाए

क्षिके हिमवतक्षेत्रनी जीवालगें तेहिमवंतक्षेत्रनी बाहुसरीखीवाहुछे। एम शिखरीनी जीवायकी पूर्वपश्चिमे प्रवर्द्धमान जेऐरण्यवंतक्षेत्रनी प्रदेशपंक्तिछे ऐरण्यवंतक्षेत्रनी जीवालगे ते ऐरण्यवंतक्षेत्रनो बाहुकहिये। जेहिमवंत ऐरण्यवंतक्षेत्रनोबाहू ६७सै ५५ योजन एकायोजनना उगणीसहाय्याविणिकला ६७५५। ३ १९ योजनना ३ भाग लांबपणे कह्यो। मे . पर्वतना पूर्वचरिमांतथकोमाडो लवणसमुद्रमांहो पश्चिमदेशे १२ सहस्र योजन जइये तिहां सुस्थितनामे लवणसमुद्राधिपति तेहनो निवासभूत गौतम द्वीपछे तेद्वीपनो पूर्व चरिमांत एह सतसठ योजन हजार लगे आवाधायें विचाले आंतरो कह्यो। मेरूपर्वत १० हजार योजन विष्कभलीजे अने तिहांथी ४५ हजार पश्चिम जगती तिहांथी १२ हजार गौतम द्वीप सबमिली ६७ हजार योजन आंतरो थयो

यद्यपिसूत्रपुस्तकेषु गौतमशब्दोनदृश्यते तथाप्यसौद्रष्टव्य. जीवाभिगमादिषु लवणसमुद्रे गौतमचंद्रार्कद्वीपात्‌विनाद्वीपांतरस्याश्रूयमाणत्वादिति सर्वेषामपिणमि त्वादि सर्वेषामपि णमित्यलंकारे नक्षत्राणांसीमाविष्कंभः पूर्वापरतश्चंद्रस्य नक्षत्रभुक्तिक्षेत्रविस्तारः नक्षत्रेणाहोरात्रभोग्यक्षेत्रस्य सप्तषष्ट्याभागैर्भाजितोविभक्तः समांसः समच्छेदः प्रज्ञप्त. भागांतरेणतुभज्यमानस्य नक्षत्रसीमाविष्कंभस्य विषमच्छेदनाभवति भागांतरेण नवक्तुमशक्यतेइत्यर्थ. तथाहि नक्षत्रेणाहोरात्रगम्य स्य क्षेत्रस्यसप्तषष्टिभागीकृतस्यक्षेत्रस्यैकविंशतिर्भागा अभिजिन्नक्षत्रस्यक्षेत्रतः सीमाविष्कंभोभवति ॥ एतावतिक्षेत्रेचंद्रेणसह तस्ययोगोव्यपदिश्यतइत्यर्थः तथातस्यामेवैकविंशतौ त्रिंशन्मुहूर्त्तत्वादहोरात्रस्य त्रिंशतागुणितायां ६३० सप्तषष्ट्याहृतभागायायल्लब्धम् तत्कालसीमाभवति चन्द्रेणसहतस्य योगकालइ त्यर्थः साचनवमुहूर्त्ताः सप्तविंशतिश्चसप्तषष्टिभागाः ९ । २७ । ६७ आहच अभिइस्सचंदजोगो सत्तट्ठीखंडिए अहोरत्ते भागाओएक्कवीस होंतिहिगानवमुहुत्ता यत्ति क्षेत्रतः कालतस्तथा शतभिषगभरण्यार्द्राश्लेषास्वातिज्येष्टाना त्रयस्त्रिंशत्सप्तषष्टिभागास्तदर्द्धाग्रार्द्धंच क्षेत्रसीमाविष्कंभोभवति तस्यामेवसार्द्धत्रयस्त्रिंशति: त्रिंश तागुणितायां १००५ सप्तषष्ट्याहृतभागाया यल्लब्धम् तदेषाकालसीमा तच्चपंचदशमुहूर्त्ता' आहच सयभिसयाभरणीओ अद्दाअस्सेससाइजेट्ठाय एएछन्नक्खत्ता पन्नरसमुहुत्तसंजोगत्ति ॥ १ ॥ तथोत्तरात्रयः पुनर्वसुरोहिणीविशाखानां सप्तषष्ठिभागानाशत तदर्द्धार्द्धं च क्षेत्रविष्कंभः सीमाभवति तथातस्मिन्नेवत्रिंशद्गुणि

अंतरे प० सव्वेसिं पिण नक्खत्ताणं सीमाविक्खंभेणं सत्तट्ठिभागभइए समंसे प० ॥ ६७ ॥

सगला नक्षत्रनी सीमा विष्कंभपणे पिहुलपणें सतसठ भागें विभजिये विहचेथके समांश क्षेत्रनो भागआवे एम कह्यो नक्षत्रे अहोरात्रीयें जेक्षेत्रनी सी मा क्षेत्रथकी विष्कंभपणो होय। एतले क्षेत्रे चंद्रमा साथें तेश्रभोचनो योग संबंध कहीयें वीजा नक्षत्रनी वार्ता सर्वटीकाथकी जाणिवी ॥ इति ६७ समवा

ते २०१५ तथैवह्रतभागेयल्लब्धम् तदेषाकालसीमाभवति सप्तपञ्चचत्वारिंशन्मुहूर्त्तादिति आहच तिन्निवउत्तराइं पुणव्वसूरोहिणीविसाहाय एएछन्नक्खत्ता पी णयालमुहुत्तसंजोगत्ति ॥ १ ॥ शेषाणांपञ्चदशानां नक्षत्राणांसमयक्षेत्रभागानां चैव सीमाविष्कम्भोभवति तस्याश्चतथैवगुणितायां २०१० ह्रतभागायांचयल्लब्धम तकालसीमातत्त्रिंशन्मुहूर्त्ता आहच अवसेसानक्खत्ता पन्नरसविहुंति तीसइमुहुत्ता चंदम्मितेहिजोगोसव्वाणंसव्वखालि ॥ २ ॥ एवमेकस्यजम्बूद्वीपचन्द्रस्य शशिनोसंख्यमेकेनत्रैलोक्यचक्राणामण्टादशशतानि त्रिंशदधिकानि सप्तषष्टिभागाना मेतदेवद्विगुणं षट्पञ्चाशतो नक्षत्राणांभवति तत्त्वसहस्रद्वयंपड्शतानिष ष्ठ्यधिकानि २६६० ॥ ६७ ॥ अथाष्टमषष्टिस्थानके किंचिल्लिख्यते धायइसडेत्यादि द्रष्टव्यदुत्तम् एवंचक्रवर्त्ती वलदेवावासुदेवश्च तत्रयद्यपिचक्रवर्त्ति नांवासुदेवानानैकदाअष्टषष्टिः संभवति यतोजघन्यतोप्येकैकस्मिन् महाविदेहेचतुर्णांतीर्थकरादीनामावश्यंभावः स्थानांगादिष्वभिहितः नचैकत्रैवचक्रवर्त्ती वासुदेवश्चैकदा भवतोऽतः अष्टषष्टिरेवोत्कर्षतश्चक्रवर्त्तिना वासुदेवानां चाष्टषष्ठ्यांविजयेषु भवति तथापीहसूत्रे एकसमयेनेत्यविशेषणात् भवति कालभेदभा

धायइसडेणं दीवे अडसठिं चक्कवट्टिविजया अडसठिंरायहाणीउ प० उक्कोसपए अडसठिंअरहंता स

य पूरोथयो ॥ ६७ ॥ हिवे ६८ मो लिखेछे। पूर्व पश्चिम धातकी खंडे ६८ चक्रवर्त्तीनोविजय चक्रवर्तिये जीपिवा योग्य चेतना खंड कह्या। एतले पूर्वधातकीखंडे ३२ विजय विदेहमाहि अने भरत ऐरवत मिली २ एव ३४ विजय पश्चिम धातकी खंडे पणि ३४ सर्व मिली ६८ विजयहोय । वि जयदीठ राजधानी एकेक होय तेमाटे पूर्वापरधातकी खंडे ६८ राजधानीछे जिहांराजा राज्यकरे तेराजधानी कहिये। उत्कृष्ट पदे पूर्वापरधातकी खंडे ६८ अरिहंत उपजताहुया उपजेछे उपजसे। एतले एकेकविजयदीठ एकेक अरिहंत उपजे। एम चक्रवर्त्ति वलदेव वासुदेव जाणिवा। यद्यपि वर्त्तमान

विनांचक्रवर्त्यादीनां विजयभेदेनाष्टषष्टिरविरुद्धा अभिलप्यंतेच जंबूद्वीपप्रज्ञप्त्यांभारतकच्छाद्यभिलापेन चक्रवर्त्तिनइति ॥ ६८ ॥ अथैकोनसप्ततिस्थान-
मकेकिञ्चिल्लिख्यते समएत्यादिमंदरवर्ज्जामेरुवर्जाः वर्षाणिचभरतादिक्षेत्राणि वर्षधरपर्वताश्चहिमवदादयस्तत्सीमाकारिणो वर्षधरपर्वताः समुदिताएकोन
सप्ततिः प्रज्ञप्ताः कथंपचसुमेरुपु प्रतिबद्धानि सप्तसप्तभरतहैमवतादीनि पंचत्रिंशत्क्षेत्राणि तथाप्रतिमेरुषट्षट् हिमवदादयोवर्षधराश्त्रिंशत्तथाचत्वार एविषुका

सुप्पज्जिंसुवा ३ एवंचक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा पुक्खरवरदीवड्ढेण अडसट्ठि विजया एवचेवजाववासुदेवा
विमलस्सण अरहउ अडसट्ठिं समणसाहस्सीउ उक्कोसिया समणसंपया होत्था ॥ ६८ ॥
समयखित्तेण मंदरवज्जा एगूणसत्तरि वासावासधरपव्वया प० तं० पणतीसंवासा तीसंवासहरा चत्तारिउ

कालै वर्त्तता ६८ चक्रवर्त्तिनहोय ६८ वासुदेव नहोय अनें एकेक विदेहें जघन्य पदे च्यारच्यार तीर्थंकरादि उत्पन्न होय। एकोक्षेत्रे चक्रवर्त्ति वासुदेव न
होय। बत्रीस विजयनेविषें उत्कृष्टपदे २८ चक्रवर्त्तिहोय ४ वासुदेवहोय अनें २८ वासुदेवहोय तिवारे ४ चक्रवर्त्ति होय तोई६८ किमभिले सूत्रमाहि एकेसमें
एहवो पाठनथी तेमाटे कालभेदें पाठछे ६८ होय विजयने भेदें तेमाटे विरुद्ध नथी। धातकीखंडनीपरे पुष्करार्द्ध द्वीपे ६८ विजय कहिवी ६८ राजधानी
कहवी । उत्कृष्ट पदें ६८ अरिहंत कहिवा एम चक्रवर्त्ति बलदेव वासुदेव कहिवा । विमलनाथ अरिहत ने अडसठ हजार श्रमणयती हुय
उत्कृष्ट श्रमण सपदा थई ॥ ६८ ॥ हिवे ६९ मो लिखे छे। काले करी ओलखाव्यो जे क्षेत्र ते समयक्षेत्र कहिये ते क्षेत्र अढाई द्वीपने विषे
मेरु वर्जी ने ६९ क्षेत्र अने वर्षधर कुलगिरि हिमवंतादिक क्षेत्रनी सीमानां करणहार कह्या । ते कहेछे अढाई द्वीपे ५ मेरू छे एक मेरूने पासे सातसात

राद्गति सर्वसंख्यैकोनसप्ततिरिति। मदरस्येत्यादि लवणसमुद्रपश्चिमायांदिशि द्वादशयोजनसहस्राण्यवगाह्य द्वादशसहस्रमानः सुस्थिताभिधानस्य लवणसमुद्राधिपतेर्भवनेनालंकृतोगौतमद्वीपोनामद्वीपोऽस्तितस्यचपश्चिमांतोमेरोः पश्चिमांतादेकोनसप्ततिसहस्राणि भवति पचचत्वारिंशतोजंबूद्वीपसंबंधिनांद्वादशानामन्तरसत्रजिनांद्वादशानामिवद्वीपविष्कंभसंबधिनांचमीलनादिति।मोहनीयवर्ज्जानांकर्म्मणामेकोनसप्ततिरुत्तरप्रकृतयोभवतीति कथं ज्ञानावरणस्यपच दर्शनावरणस्यनव वेदनीयस्यद्वे आयुषश्चतस्रो नाम्नोद्विचत्वारिंशद्गोत्रस्यद्वेअंतरायस्यपचेति ॥ ६९ ॥ अथसप्ततिस्थानकेकिमपिलिख्यते समणेत्यादि वर्षा

सुयारा मंदरस्सपव्वयस्सपच्चत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोयमद्दीवस्स पच्चत्थिमिल्लेचरमंते एसणं एगूणसत्तरिं जोयणसहस्साइ अबाहाएअंतरे प० मोहणिज्जवज्जाण सत्तराहं कम्मपगडीणं एगूणसत्तरि उत्तरपगडीउ

भरत हिमवतादिक चेत्रछे ते पाचसता पेंत्रीस थाय एकेक मेरुने पासें हिमवत महाहिमवंतादिक ६ । ६ । वर्षधर छे छपच त्रीस वर्षधर थया धातकी खड मांहि २ इषुकार पर्वतछे पुस्करार्द्ध मांहि २ एवं ४ इषुकार पर्वतथया सर्व मिली उगुणहत्तरि वर्षधर थया ६९ मेरुना पश्चिम चरमांत थी गौतम द्वीपनो पश्चिम चरमात एहने ६९ हजार योजन नो विचाले आंतरो कह्यो । एतले ४५ हजार योजने पश्चिमनो जगती छे तेह थकी १२ हजार योजन गौतम द्वीप सुस्थितनामा लवण समुद्राधिपति देवतानो निवास भूत छे ते १२ हजार योजननो पिहुलो छे ते सर्व एकी करिये तिवारे ६९ हजार योजन थाय । मोहनीय कर्म वर्जी नें सात कर्मनो ६९ उत्तर प्रकृतिकही। ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ९ वेदनीय २ आयु ४ नाम ४२ गोत्र २ अंतराय ५ सर्वमिली उगुणहत्तरि प्रकृति थई इति ६९ समवाय सपूर्ण ॥ ६९ ॥ हिवे ७० मो लिखे छे। श्रमण भगवान महावीर देव च्यार मास प्रमाण वर्षाकाल

णांचतुर्मासप्रमाणस्य वर्षाकालस्य सविंशतिदिवसाधिकेमासे व्यतिक्रांतेपंचाशतिदिनेष्वतीते ष्वित्यर्थः सप्तत्यांचरात्रिदिनेषुशेषेषु भाद्रपदशुक्लपंचम्यामित्यर्थः
वर्षास्वावासोवर्षावास.वर्षावस्थानपज्जोसवेइत्ति परिवसति सर्वथाकरोति पञ्चाशतिप्राक्तनेषुदिवसेषु तथाविधवसत्यभावादिकारणे स्थानांतरमप्याश्रयति
अतिभाद्रपदशुक्लपञ्चम्यां तु वृक्षमूलादा वपि निवसतीति हृदयमिति पुरिसादाणीयत्ति पुरुषाणामादानीयउपादेयः पुरुषादानीयः अबाहूणिया कम्मठि
ई कम्मणिसेगेपणत्तेत्ति इह किलात्माअविशिष्टमेवकर्मपुद्गलोपादान कृत्वा उत्तरकाल ज्ञानावरणीयादिकर्म्मणा स्वस्वमबाधाकालमुक्त्वा ज्ञानावरणीयादिप्र

प० ॥ ६९ ॥ समणेभगवंमहावीरे वासाणसवीसइराइमासे वइक्कंते सत्तरिएहिं राइंदिएहिं सेसेहिं वासावासपज्जोसवेइ पासेण अरहापुरिसादाणीए सत्तरिवासाइं बहुपडिपुन्नाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता सिद्धेबुद्धे जावप्पहीणे वासुपुज्जेणं अरहा सत्तरिंधणूइं उड्ढंउच्चत्तेण होत्था मोहणिज्जस्सं णं

नो ते माहि २० रात्रिये अधिक मास वीतेथकें एतले आषाढी पूनिम थकी पंचासमे दिहाडे भादों सुदि ५ दिने सवच्छरी करी पछे शेष थाकतो ७० रा
त्रियें वर्षाकाल रह्यो पज्जोसवेई सर्वथापि करे। पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषा माहि श्रेष्ट प्रतिपूर्ण ७० वर्ष लगे सामान्य पर्याय पाली सिद्धथया सर्वदुःखथकी
प्रचीणथया एतले ३० वर्ष गृहवासे ७० वर्ष चारित्र सर्व मिली १०० वर्षनो आयु जाणिवो। वासुपूज्य बारहमां अरिहंत ७० धनुष ऊचपणे हुया। मोह
नीय कर्मनो स्थिति ७० सागरोपम कोडाकोडि लगे अवाधायें ७ हजार वर्ष उणी ज्ञानावरणी यादि कर्मदल भोगविवाने अर्थे रचना पूर्वे जे बाध्योछे
ते उदयकाले आंणिवी एतले उत्कृष्टी ७० कोडाकोड सागरोपमनो जेणे समये मोहनीय कर्मनो बधपाम्यो ते बंधकालथी मांडी ७ हजार वर्ष लगें तेकर्म

कृतिविभागतया अनाभोगिकेन वीर्येणोदयसहितं तद्दलिकं निषिञ्चति उदययोग्यं रचयतीत्यर्थः अतो द्विविधास्थितिः कर्म्मत्वोपादानमात्ररूपा अनुभवरूपाच यतः स्थितिरवस्थाम तेनभावेनाप्राप्यवन तत्र कर्म्मत्वोपादानरूपां तामधिकृत्य सप्ततिसागरोपमकोटीकोट्यः अनुभवरूपां त्वधिकृत्य सप्तवर्षसहस्रोनेति तत्र अबाहत्ति किमुक्तं भवति बन्धावलिकाया आरभ्य यावत्सप्तवर्षसहस्राणित तावत्कर्म्म न बाधते नोदयं यातीत्यर्थः ततोनन्तरसमये कर्म्मदलिक पूर्वनिषिक्तं उदये प्रवेशयति निषेकोनाम ज्ञानावरणादिकर्म्मदलिकस्या ऽनुभवनार्थं रचना तत्र प्रथमसमये बहुकं निषिंचति द्वितीयसमये विशेषहीन तृतीयसमये विशेषहीन मेवंयावदुत्कृष्टस्थितिकर्म्मदलिक तावद्विशेषहीन निषिचति तथाचोक्तं मुत्तूणसंगबाहु पढमाएठिइएवहुतरदव्व सेसेविसेसहीणजावुक्कोसतिसव्वेसिंति बाधृलोडने बाधत इति बाधा कर्म्मणउदयइत्यर्थः नबाधाअबाधा अन्तर कार्म्मोदयस्येत्यर्थः तथा ऊनिका आबाधोनिका कर्म्मस्थितिः कर्म्मनिषेकोभवतीत्येवमेकेप्राहु रन्येपुनराहु रवाधाकालेन वर्षसहस्रसप्तकलक्षणेनोना कर्म्मस्थितिः सप्तसहस्राधिकसप्तेति सागरोपमकोटाकोटीलक्षणः कर्म्मनिषेको भवतिसच क्रियानुच्यते सत्तरिसागरोपमकोडाकोडीओत्ति ॥ ७० ॥ अथैकसप्ततिस्थानको लिख्यते किञ्चित्। चउत्थस्सेत्यादि इहभावार्थोयं युगेहि पञ्चसंव

कम्मस्स सत्तरिंसागरोवमकोडाकोडीओ अबाहूणिया कम्मठिई कम्मनिसेगे प० माहिंदस्सणं देविंदस्स देवरन्नो सत्तरिंसामाणियसाहस्सीओ प० ॥ ७० ॥ चउत्थस्सणं चंदसंवच्छरस्स हेमंताणं एक्का

उदयेनात्रे ते माटे ७० कोडाकोड सागर मांहि थी ७ हजार वर्ष ऊणा कीजे एतली स्थिति मोहनीय कर्मनी कोइक कहेछे सात हजार वर्ष अधिक ७० कोडाकोडि सागर लक्षण कर्म निसेक होय। माहेंद्र चौथा देवलोकना राजाने ७० हजार सामानिक देवता कह्या इति ७० समवाय सपूर्ण ॥ ७०

त्सरा भवन्ति तत्राद्यौ चन्द्रसम्बत्सरौ तृतीयोभिवर्द्धितसम्बत्सर श्चतुर्थश्चन्द्रसम्बत्सरस्तृतीयोभिवर्द्धितसंवत्सरएव तत्रच एकोनत्रिंशतादिनानां द्वात्रिंशताचद्विषष्टिभागैर्दिनस्य चन्द्रमासो भवति अयञ्च द्वादशगुणः श्चन्द्रसवत्सरोभवति त्रयोदशगुणश्चायमेवा भिवर्द्धितोभवति ततश्चन्द्रचन्द्राभिर्वार्द्धितलक्षणे सम्बत्सरत्रयेदिनानांसहस्रं द्विनवतिः षट्द्विषष्टिभागाभवन्ति १०९२। ६। ६२ तथाआदित्यसवत्सरे दिनानांशतत्रयं षट्षष्ठिश्चभवति तत्त्रितयेच सहस्रमष्टनवत्यधिकभवति इहचकिलचन्द्रयुगमादित्ययुग चाषाढ्या मेकपूर्यते ऽपरञ्चश्रावणकृष्णप्रतिपदिआरभ्यते एवचादित्ययुगसवत्सरत्रयापेक्षयाचन्द्रयुगसंवत्सरत्रय पचभिर्दिनैःषट्पचाशताचदिनद्विषष्टिभागैरूनंभवतीतिकृत्वा आदित्ययुगसवत्सरत्रय श्रावणकृष्णपक्षस्य चन्द्रदिनषट्केसाधिकेपूर्यते चन्द्रयुगसवत्सरत्रयत्वाषाढ्यां तत

सत्तरीए राइंदिएहिं वीक्कंतेहिं सव्वाहिराउ मंडलाउ सूरिएञ्चाउर्हिं करेइ वीरियप्पवायस्सणं पुव्वस्स

हिवे ७१ मो लिखेछे। १ युग मांहि ५ संवच्छर होय ते चद्र १ चद्र २ अभिवर्द्धित ३ चंद्र ४ अभिवर्द्धित ५ एह ५ मांहि तीन चद्र सवच्छर एकेको चद्रमास २९ अहोरात्रि १ अहोरात्रिना ३२ भाग ६२ सठिया ते १२ गुणा कीधां चद्र सवत्थाय तेहना ३५४ दिन झाझेरा थाय २९। ३२। ६२ अहोरात्रि१३ गुणाकरियें तो अविभर्द्धित वर्षथाय तोदोय चद्र सवत् १ अभिवर्द्धित सवत्ना येकसहस्र बाणूंदिन बासठिया ६ भागहोय अनें आदित्य संबत्सरना त्रिणसे छासठिथाय एहवा त्रिण वर्षना एक हजार अठाणूंदिन थाय एतले चद्रयुग अने सूर्ययुग येकि आषाढी पूनिमदिने पूराथाय वीजोयुग श्रावण बदी पडिवाये प्रारभियें एम आदित्ययुग संबत्सरनी अपेक्षायें चद्रसवत्सरत्रिण पाच दिहाडे साठिया छप्पन्न भागें जंणां करियें। आदित्ययुग संवच्छर ३ श्रावण बदी पचना चंद्र दिन थकी छहें दिनें अधिक पूराय चंद्रयुग सबच्छर ३ आषाढी पूनिमें पूरे तिवारपछी सावण बदी सातमदिन थकी दक्षिणायने

श्रश्रावणकृष्णपचसप्तमदिनादारभ्य दचिणायने नादित्य श्चरन् चंद्रयुगचतुर्थसंवत्सरस्य चतुर्थमासांतभूताया मष्टादशोत्तरशततमदिनभूतायां कार्त्तिक्यां द्वाद शोत्तरशततमे स्वकीयमण्डले चरति ततश्चान्यान्येकसप्ततिमण्डलानि तावत्स्वेव दिनेषु मार्गशीर्षादीना चतुर्णांहेमन्तमासानां सम्बन्धिषु चरति ततोद्विसप्त तितमे दिने माघमासे बहुलपचत्रयोदशीलचणे सूर्यआवृत्ति करोति दचिणायनान्निवृत्योत्तरायणेन चरतीत्यर्थः॥ उक्तञ्च ज्योतिष्करण्डके पञ्चसुयुगसम्वत्स रेषूत्तरायणतिथयः क्रमेणैव यदुतबहुलस्ससत्तमीए १ सूरोसुद्धस्सतोचउत्थीए २ बहुलस्सयपाडिवए ३ बहुलस्सयतेरसीदिवसे ४ सुद्धस्सयदसमीए ५ पवत्तएपं चमीउआवट्टी एयाआउट्टीओसव्वाओमाघमासमित्ति दचिणायनदिनानिचैव पढमाबहुलपडिवए १ वीयाबहुलस्सतेरसीदिवसे २ सुद्धस्सयदसमीए ३ बहुल स्सयसत्तमीए ४ सुद्धस्सचउत्थीए पवत्तएपचमीउआउट्टी एयाआउट्टीओ सव्वाओसावणेमासेत्ति वीरियपुव्वस्सत्ति तृतीयपूर्वस्य पाहुडत्ति प्राभृतमधिकारवि शेषः। अजिएत्यादि तस्यहि अष्टादशपूर्वलक्षाणि कुमारत्व त्रिपञ्चाशच्चैकपूर्वांगाधिकाराज्यमित्येकसप्तति रिहच पूर्वांगमधिकमल्पत्वा न्न विवचित मिति

एकसत्तरिंपाञ्ज्ञ प० अजितेणं अरहा एकसत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता जा

सूर्य चालतोथको चउथा चद्र युगना चउथा मासमांहि अतर्भूतछे एकसो अठारमा दिन कार्त्तिकीये येकसो बारमां पोतानां मण्डलमांहि सूर्यचार करे तिवारपछे सोआला संबधी मागशिरादिक मासमाहि एकात्तर माडला सूर्य चरे पछे बहुत्तरिमें दिन माघमासे वदी १३ दिने समुद्रमाहिला सर्वबाह्यमां डला थको सूर्य आवृत्तिकरे प्रदचिणावर्त्तकरे उत्तरायणे सूर्य फिरे॥ वीर्य प्रवाद त्रीजा पूर्व नां एकत्तरि प्राभृतका अधिकार विशेष कह्या। अजितनाथ

५ सगरोद्वितीयश्चक्रवर्त्ती अजितस्वामिकालीनः ॥ ७१ ॥ अथद्विसप्ततिस्थानके किमपि लिख्यते सुवर्णकुमाराणांद्विसप्ततिर्लक्षाणि भवनानिक थम् दक्षिणनिकाये अष्टत्रिंशदुत्तरनिकायेतु चतुस्त्रिंशदिति नागसाहस्त्रीशोत्ति नागकुमारदेवसहस्राणि वेलां षोडशसहस्रप्रमाणामुत्सेधतो विष्कम्भतश्च दशसहस्रमानालवणजलधिशिखांवाह्यां धातकीखण्डद्वीपाभिमुखीं महावीरो द्विसप्ततिवर्षाण्यायुःपालयित्वासिद्धः कथंत्रिंशद्गृहस्थभावे द्वादशसार्द्धानिपक्षश्च

व पव्वइए एव सगरेवि रायाचाउरंतचक्कवट्टी एकसत्तरिं पुव्वजावपव्वइए ॥ ७१ ॥ बावत्तरिं सुवन्नकुमारावाससयसहस्सा प० लवणस्स समुद्दस्स बावत्तरिं नागसाहस्सीउ बाहिरियं वेल धारंति समणेन्न

अरिहंत अठार पूर्व लाख लगे कुमारपणे अनें एक पूर्वांगाधिक ५३ लाख पूर्व लगे राज्यपालीने एव ७१ लाख पर्व लगे गृहवासमावसीने मुडथया । गृहस्थाश्रमथकी यतीपणूं पाम्या एम १ पूर्वलाख चारित्रपालीसर्वायु ७२ लाखपूर्व जाणिवा । एमज अजितनथ स्वामी कालीन सगरपणे बीजोमहाराजा चातुरत चक्रवर्त्ती एकहत्तर लाखपूर्वलगे गृहवासमांहिवसीने राज्यछांडीने मुडपणो गृहस्थथकी यतीपणो पाम्या ॥ इति ७१ सो संपूर्ण ॥ ७१ ॥

हिवे ७२ मो लिखे छे । भवनपतीनों तोजोनिकाय सुवर्ण कुमार देवता तेहना दक्षिणेंद्र नें ३८ लाख भवनावास उत्तरेंद्र ने ३४ लाख भवनावास बेहुमिली ७२ लाख भवनावास कह्या । ७२ हजार देवता लवण समुद्रनो बाहिरली धातकी खड तरफनो पांणीनीवेला प्रते धरेछे । एतले १६ हजार योजन ऊपरि २ कोशनो वेलावधे तिवारे चाटूपे करी पाणी उपराठो मारेछे । श्रमण भगवंत महावीरस्वामी ७२ वर्षलगेसर्वायुपालन कियो । एतले ३० वर्षगृहवासे १२ वर्ष मास ६ दिन १५ छद्मस्थभावें देशोन ३० वर्ष केवल पर्याय एवं ७२ वर्ष लगें सर्वायु पालीने सिद्ध थया सर्व दुःखथकी प्रक्षीण थया । स्थविर

छद्मस्थभावे देशोनानित्रिंशत्केवलित्वे इतिद्विसप्ततिः अयलभायत्ति अचलोमहावीरस्य नवमो गणधर' तस्यायु द्विसप्ततिवर्षाणि कथं षट्चत्वारिंशद्गृहस्थत्वे द्वादशछद्मस्थताया चतुर्दशकेवलित्वेइति पुष्करार्द्धेद्विसप्तति चद्रास्तत्रैकस्या पङ्क्तौ षट्त्रिंशदन्यस्यांच तावत एवेति बावत्तरिकलाओत्ति कलाविज्ञानानीत्यर्थ. ताश्च कलनीयभेदा द्विसप्ततिर्भवन्ति तत्रलेखन लेखो ऽचरविन्यासः तद्विषया कला विज्ञानं लेख एवोच्यते एव सर्वत्र सच लेखो द्विधा लिपिविषयभेदात् तत्र लिपि रष्टादशस्थानकोक्ता अथवा लाटादिदेशभेदतस्तथा पत्रादि विविधवित्तोपाधिभेदतोवा ऽनेकविधेति तथाहि पत्र वल्ककाष्टदन्तलोहताम्ररजतादयो अचराणामाधार स्तथा लेखनोत्कीर्णनस्यूतच्यूतछिन्नभिन्नदग्धसक्रातितो ऽचराणि भवन्तीति विषयापेचयाप्यनेकधा स्वामिभृत्यपितृपुत्रगुरुशिष्यभार्यापति

गवंमहावीरे बावत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे वुद्धे जावप्पहीणे थेरेणं ञ्यलन्नाया बावत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे ञ्यभ्भितरपुक्करद्धेणं बावत्तरि चंदापन्नासिंसु ३ बावत्तरिसूरिया तविंसुवा ३ एगमेगस्सणं रन्नो चाउरतचक्कवहिस्स बावत्तरिपुरवरसाहस्सीउ प० बावत्तरिकलाउ प० त०

महावीरना नवमा गणधर अचलभ्राता ७२वर्ष लगें सर्वायुपालोने यतीपणूं पामी सिद्ध थया सर्वदुःखथकी प्रक्षीण थया। गृहस्थपणे ४६ वर्ष छद्मस्थभावें १२ वर्ष केवलि पर्यायें १४वर्ष एव ७२ वर्षपालीने सिद्ध थया। पुष्करवरद्वीप १६ लाखनोछे तेमांहि ८ लाख मानुषोत्तर पर्वतमाहिते अब्भितर पुष्करार्द्ध कहिये तिहां ७२ चद्रमा ७२सूर्य प्रभासता हुया प्रभासेछे प्रभासस्यें पहिली पंक्तिये ३६ दूजी ३६ एव ७२ थया। तपता हुया तपेछे तपस्यें एकेक चातुरत चक्रवर्ती नें ७२ पुरवर मोटा श्री नगरना सहस्र कह्या। पुरुषनी ७२ कला कही ते कहेछे। लिखवो अचरनो स्थापिवो तेहीजकलाते लेख क

ग्रनुमित्रादीनां लेखविषयाणामप्यनेकत्वा तथाविधप्रयोजनभेदाश्च अक्षरदोषा श्चैते अतिकार्श्यमतिस्थौल्य वैषम्यम्पंक्तिवक्रता अतुल्यानांचसादृश्य मभागोऽव
यवेषुचेति ॥ १ ॥ तथा गणित सख्यानम् सङ्कलिताद्यनेकभेद म्पाटीप्रसिद्ध २ रूप लेप्यशिलासुवर्णमणिवस्त्रचित्रादिषु रूपनिर्माण ३ नाट्यकला भरतमार्ग
म्छलिकलास्यविधान मित्यादिभेदादष्टव्या नाट्यग्रहणात् नृत्तकलापि गृहीता साच अभिनयिका अङ्गहारिका व्यायामिका चेति त्रिभेदा स्वरूप चात्रभरत
शास्त्रादवसेय ४ तथा गीतकला साच निबन्धनमार्ग म्छलिकमार्ग भिन्नमार्गभेदात्त्रिधा तत्र सप्तस्वरास्त्रयोग्रामा मूर्छनाएकविंशतिःतानाएकोनपञ्चाशत्समा
सलरमण्डल इयच्च विशाखिलशास्त्रादवसेयेति ॥ ५ ॥ वाद्यति वाद्यकला साच तत वितत शुषिर घन वाद्याना चतु' पचत्र्येक प्रकारतया त्रयोदशधा
४ ॥ इत्यादिकः कलाविभागो लौकिकशास्त्रेभ्यो ऽवसेयः इहच द्विसप्तति रिति कलासङ्ख्योक्ता वहुतराणिच सूत्रे तन्नामान्युपलभ्यन्ते तत्रच कासांचित् का

लेहं १ गणिय २ रूव ३ नट्टं ४ गायं ५ वाइयं ६ सगरयं ७ पुक्खरगयं ८ समतालं ९ जूयं १० जणवायं ११
पोरकच्चं १२ अट्ठावयं १३ दगमट्टियं १४ अन्नविही १५ पाणविही १६ वत्थविही १७ सयणविही १८

। काउ सबधी स्वर
ला १८ भेदें कहीछे ।१। गणित अंकनीकला २ । चित्राम करिवो ३ नाटकनीकला ४ गानकरिवानीकला ५ वाजित्र वजाववानीकला ६
ने ओलखिवानीकला ७ । वाजित्रनीगतिनोजाणवो ८ । ताल देवानीकला ९ । जूआरमवानीकला १० । लोगथी नालाप सलापनी कला ११ नगररचा
दिकनी कला १२ । सारपासारमवानी कला १३। पाणीअनेमाटी एकठीकीधाअमुकयोग होय तेकला १४। अन्ननीपजाविवा राधिवानीकला १५। पाणी
नीपजावानी विधि १६ । वस्त्र नोपजाविवारंगवानी पहिरवानीविधि १७। सोवानीविधि १८ । आर्या सस्कृतनोबध तेहनो जाणिवो १९ । प्रहेलिका

अज्जं १९ पहेलियं २० मागहियं २१ गाहं २२ सिलोगं २३ गंधजुत्तिं २४ मधुसित्थं २५ आभरण विही २६ तरुणी पडिकम्मं २७ इत्थीलरकणं २८ पुरिसलरकणं २९ हयलरकणं ३० गयलरकणं ३१ गोणलरकणं ३२ कुक्कडलरकणं ३३ मिंढयलरकणं ३४ चक्कलरकणं ३५ छत्तलरकणं ३६ दंडलरकणं ३७ असिलरकणं ३८ मणिलरकणं ३९ कागणिलरकण ४० चम्मलरकणं चंदलरकणं सूरचरियं राहुचरियं गह चरियं सोभागकरं दोभागकरं विज्जागयं मंतगयं रहस्सगयं ४१ सभासचारं ४२ बूहं ४३ खंधावा

नीकला २० । मगधदेशसंबंधीगाथानीकला २१ । प्राकृतबंध गाथानो जाणपणूं २२ । श्लोक रचवानी कला २३ । गंध नया अबीरादिकनीयुक्ति २४ । मधु रादिक ६ रसनां प्रयोगनी कला २५ । आभरण घडवानी जडवानी पहरवानी कला २६ । तरुणी स्त्रीजातिने प्रति क्रम क्रियाकलापनोसिखाविवो २७ । स्त्रीनालक्षण जाणिवानी कला २८ । पुरुषनां बत्तीस लक्षणजाणिवानो कला २९ । घोडाना लक्षण जाणिवानी कला ३० । हाथीनां लक्षण जाणिवानीक ला ३१ । वृषभ लक्षण कला ३२ कूकुडाना लक्षण कला ३३ । मीढाना लक्षण । ३४ । चक्रना लक्षण ३५ । छत्रना लक्षण ३६ । दंडवंशलष्ठीनालक्षण ७३ । खड्गना लक्षण ३८ । मणिचंद्रकांतादिकनालक्षण ३९ । काकिणीरत्न विशेषना लक्षण ४० । चर्मनोगुण अवगुण जाणिवो चंद्रनाग्रहणादिकनो जाणिवो सू र्यनो चरित्र एहवी ज्योती एमथास्ये एम जाणिवो राहुनो चरित्रजाणिवो ग्रहनो चरित्र जाणिवो सौभाग्यनोकारण जाणिवो दौर्भाग्यनोकारण जाणिवो विद्या प्रज्ञप्ति रोहिणी तन्नत विचार मत्र आराधि हरिणिगमेषीआवे । रहस्यगति प्रछन्न वस्तुनो जाणिवो सद्भाव वस्तु मावना प्रयोग चार कटक मानो उ

सुचि दं:ऽतर्भावोऽवगन्तव्य इति ॥ ७२ ॥ अथत्रिसप्ततिस्थानके किमपिलिख्यते। हरिवासेत्ति अत्र सम्वादगाथा ॥ एगुत्तरानवसया तेवत्तरि मेवजोयणसहस्सा जीवासत्तरसकलायअद्धकलाचेवहरिवासेत्ति तथा विजयो द्वितीयोबलदेवस्तस्येह त्रिसप्ततिवर्षलचणायु रुक्त मावश्यकेतु पंचसप्तति रितीदमपिमतांतरमेव ॥ ७३ ॥ अथचतुःसप्ततिस्थानके किंचित्लिख्यते। तत्राग्निभूतिरिति महावीरस्यद्वितीयोगणधरःगणनायकस्तस्येह चतुः

सउणरुयं ७२ ॥ समुच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं बावत्तरिंवाससहस्साइं ठिई प० ॥ ७२ ॥ हरिवासरम्मयवासयाउ ण जीवाउ तेवत्तरि २ जोयणसहस्साइं नवयएगुत्तरे जोयणसए सत्तरसयएगूणवीसइभागे जोयणस्स अद्धभागंच आयामेणं प० बिजएणंबलदेवे तेवत्तरि वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे ॥ ७३ ॥ थेरेणंअग्गिभूइ गणहरेचोवत्तरिं वा

पचीनो पचेंद्रियतिर्यंचनी उत्कृष्टी ७२ हजार बर्षनी स्थिति कही ॥ इति ७२ मो संपूर्ण ॥ ७२ ॥ हिवे ७३ मो लिखेछे। हरिवर्ष अने रम्यक एयुगल चेत्रसबधी जीवा पिणचरूप तेहुत्तरी २ हजार योजन जाणवी। नवसे एक योजन ७३९०१ योजन। एक योजनना उगणीसहाइया सत्तर भाग एकयोजननो वली उपरि अर्द्धभाग आयामपणे लांबपणेकह्यो। विजय बोजो बलदेव ७३ लाख वर्षलगें पूरो आउखूंपालीने सिद्धथया सर्वदुःखथकी प्रचीण थया। आवश्यके ७५ लाख वर्ष लगे सर्वायुपालीने सिद्धथया ते मतांतर छे ॥ इति ७३ मो सपूर्ण ॥ ७३ ॥ हिवे ७४ मो लिखेछे। स्थविर न

शीतोदापप्रातकुंडे महयत्ति महाप्रमाणेन यत्पुनः दुहश्शीत्तिक्वचित्दृश्यते तदपपाठइतिमन्यते घडमुहपवत्तिएणंति घटमुखेनेव कलशवदनेनेव प्रवर्त्तित स्तेन मुक्तावलीनां मुक्ताफलशरीराणां सम्बन्धी हारस्तस्य यत्सस्थान तेनसस्थितो यस्तेन प्रपातः पर्वता अपतज्जलसमूह स्तेन महाध्वनिना प्रपतति एवंशीतापि नवर नीलवद्वर्षधराद्दक्षिणाभिमुखी प्रपततीति चउत्थवज्जेत्यादि तत्र प्रथमायात्रिंशत् द्वितीयायांपचविंशतिः तृतीयायांपञ्चदश पचम्यांत्रीणिलक्षाणि षष्ठ्यां पञ्चोनलक्षं सप्तम्यापंचेत्येतानि मीलितानि चतुःसप्तति र्भवन्ति ॥ ७४ ॥ अथ पंचसप्ततिस्थानके किमपिलिख्यते । सुविधे र्नवमतीर्थकरस्य ना

सजोयणविक्खंभाए वइरतले कुंडे महयाघडमुहपवत्तिएणं मुत्तावलिहारसंठाणसंठिएणं पवाएणं महयासद्देणं पवडइएवंसीतावि दक्खिणमुहीभाणियव्वा चउत्थवज्जासु छसु पुढवीसु चोवत्तरि नरयावाससयसहस्सा पं०

टो प्रमाणे घडाना मुखथकी जेमनीकले तेम प्रवाह मगर मुखथी प्रवर्त्यो निकल्यो एहवो मुक्तावली हारने सठाणें सस्थित एहवे प्रपातें पर्वतथकी पाणी नो समूह मोटे सब्दें पडेछे । एम नीलवत पर्वत उपरि केसरीद्रहथकी निकली दक्षिणाभिमुखी प्रवर्तीहुती शीता महानदी नीलवत पर्वत हेठें शीताप्रपात कुंडनेविषे पडेछे । सर्व शीतोदा नदीनी परे जाणिवो । चौथी नरक पृथिवी टालीने शेष छ नरक पृथ्वीने विषे ७४ लाख नरकावासाकह्या पहिलीयें ३० लाख बीजीयें २५ लाख त्रीजीयें १५ लाख पांचमीये ३ लाख छठीये पांच उंणा १ लाख सातमीयें ५ सर्वमिली ७४ लाख नरकावासा कह्या इति ७४ मो संपूर्ण ॥ ७४ ॥ हिवे ७५ मो लिखेछे । नवमा सुविधिनाथ पुष्पदत अरिहंतने ७५०० केवलीहुया । सीतलनाथ अरिहंत ७५००० हजार पूर्व लगी

णां द्वीपकुमारादि भवनपतिनिकायाना मिहार्थं गाथा दोवेत्यादि युगलानामिति दक्षिणोत्तरनिकायभेदेन युगलं निकायेभवतीति ॥ ७६ ॥
अथसप्तसप्ततिस्थानके विव्रियते किंचित्तत्र भरतंचक्रवर्त्ती [illegible] पूर्वं [illegible] जातं [illegible] तीतेभ्यगवतिचप्रव्रजिते राजासंवृत्तः
ततश्चत्र्यशीत्याः षट्सु निष्कर्षितेषु सप्तसप्ततिस्तस्यकुमारवासोभवतीति अगवशोगराजसन्तानस्य संबधिनः सप्तसप्ततिराजानः प्रव्रजिताः गद्दतोयेत्यादि
ब्रह्मलोकस्याधोवर्त्तिनीष्वष्टासु कृष्णराजिष्वष्टी सारस्वतादयो लोकातिकाभिधाना देवनिकाया भवन्ति तत्र गर्द्दतोयानातुषितानांच देवाना मुभयपरिवार

यसहस्साइं १ ॥ ७६ ॥ भरहेरायाचाउरतचक्कवट्टी सत्तहत्तरि पुव्वसयसहस्साइं कुमारवासम ज्झेवसित्ता महारायाभिसेयसपत्ते अंगवंसाओणं सत्तहत्तरि रायाणोमुंडे जावपव्वइया गद्दतोयतुसियाणं

२ लाख भवन कह्या दक्षिण उत्तर नामिलीने। इति ७६ मो संपूर्ण ॥ ७६ ॥ हिवे ७७ मो लिखेछे। श्री आदिनाथने ६ लाख पूर्व गयें थके भरत चक्रवर्ती जन्म पाम्या। ८३ लाख पूर्वमाह्लीथी ६ लाख पूर्व काढेथके ७७ लाख पूर्व उगस्या तोभरत चातुरंत चक्रवर्ती ७७ लाख पूर्व कुमार वासमांहि वसीने महाराज्याभिषेक चक्रवर्त्तपदवीनोअभिषेक पाम्या। एतले ७७ लाख पूर्व कुमारपणे ६ लाख पूर्व चक्रवर्ती पणे १ लाख पूर्व दीक्षापणे सर्वायु चारासी लाख पूर्व जाणिवो। अगराजाना संतान सबधी अगवशना ७७ राजा मुंड थईने गृहस्थथकी अणगार पणुं पाम्या। पांचमो ब्रह्मलोक तेहने विषे अधोवर्ती ८ कृष्णराजी विमान ने विषे सारस्वतादिक ८ लोकांतिक देवताछे तेमांहि गर्द्दतोय १ तुसित २ एविहु देवतानो ७७ हजार देवतानो परिवार कह्यो। एके के मुहूर्तं ७७ लवकाल विशेष लवाग्र परिमाणे कह्या। इति ७७ मो सपूर्ण ॥ ७७ ॥ हिवे ७८ मो लिखेछे। शक्रेंद्र देवेंद्र देवरा

सख्यामीलनेन सप्तसप्ततिर्देवसहस्राणि परिवारः प्रज्ञप्तानीति तथैकैकोमुहूर्त्तः सप्तसप्ततिर्लवान् लवाग्रेणलवपरिमाणेन प्रज्ञप्तः कथमुच्यते हृष्टस्यानवगल्प
स्य निरुपक्लिष्टस्यजन्तुणो एगेऊसासनीसासे एसपाणुत्तिवुच्चई १ सतपाणूणिसेथोवे सत्तथोवाणिसेलवे लवाणसत्तहत्तरिए एसमुहुत्ते वियाहियत्ति ॥
७७ ॥ अथाष्टसप्ततिस्थानको लिख्यते। सक्करसेत्यादि वेसमणेमहारायत्ति सोमयमवरुण वेश्रमणाभिधानानां लोकपालाना चतुर्थउत्तर दिक्पाल
स्त्विवैश्रमणदेवनिकायिकाना सुपर्णकुमारदेवदेवीना द्वीपकुमारदेवदेवीनां व्यतरव्यतरीणा चाधिपत्यकरोति तदाधिपत्याच्च तन्निवासानामप्याधिपत्यमसौ
करोतीत्युच्यते अष्टसप्तत्याः सुपर्णकुमारद्वीपकुमारावासशतसहस्राणामिति तत्रसुपर्णकुमाराणादक्षिणस्यामष्टत्रिंशद्भवनलक्षाणि द्वीपकुमाराणाच चत्वारिंश
दित्येवमष्टसप्ततिरिति द्वीपकुमाराधिपत्यमेतस्य भगवत्यां नदृश्यत इहतूक्त मितिमतांतरमिद आहेवच्चति आधिपत्यमधिपतिकर्म्म पोरेवच्चति पुरोवर्त्तित्व ॥ ७७ ॥

देवाणं सत्तहत्तरि देवसहस्स परिवारा प० एगमेगेणं मुहुत्ते सत्तहत्तरि लवेलवग्गेणं प० ॥ ७७ ॥
सक्कस्सण देविंदस्स देवरन्नो वेसमणे महाराया अट्ठहत्तरीए सुवन्नकुमारदीवकुमारावास सयसहस्साणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महारायत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहरइ थेरेण अकं

७८ लाख भवजानो वैश्रमण चौथोलोकपाल उत्तर दिशानो धणी। दक्षिणदिशि सुवर्णकुमारना ३८ लाख भवना द्वीपकुमारना ४० लाख भवन एवेंद्रना ७८ लाख भव
नछे तेहनो आधिपत्य पणो अग्रगामीपणो भर्त्तपणो स्वामिपणो महाराजापणो आज्ञाप्रधान सेनानायकपणो सेवकपाहिंकरावतो थको आत्मानीपरे पाल
तोथको रहेछे। स्थविर श्री महावीर नो ८ मो अकंपित गणधर अठहोत्तर वर्षलगे सर्वायुपालीने सिद्धथया सर्वदुःख रहित थया गृहस्थपणें ४८ वर्ष छद्म

मग्गामित्व मित्यर्थः भट्टित्ति भर्तृत्वं पोषकत्व सामित्तंति स्वामित्वं स्वामिभावत्व महारायत्तंति महाराजत्व लोकपालत्वमित्यर्थः आणाईसरसेणावच्चति आज्ञाप्रधानसेनानायकत्व कारेमाणेत्ति अनुनायकैः सेवकानां कारयन् पालेमाणेत्ति आत्मनापि पालयन् विहरइत्ति आस्ते अकंपितः स्थविरोमहावीरस्या ष्टमोगणधर स्तस्य चाष्टसप्ततिवर्षाणि सर्वायुः कथ गृहस्थपर्याये अष्टचत्वारिंशत् छद्मस्थपर्याये नव केवलि पर्यायेचैकविंशतिरिति उत्तरायणनियट्टेणंति उत्तरायणादुत्तरदिग्गमना न्निवृत्तः उत्तरायणनिवृत्तः प्रारब्धदक्षिणायनइत्यर्थः सूरिएत्ति आदित्यः पढमाओमंडलाओत्ति दक्षिणदिशंगच्छतो रवे र्यत्प्रथम न्तस्मा न्नु सर्वाभ्यन्तरसूर्यमार्गात् एकूणचत्तालीसइमेत्ति एकोनचत्वारिंशत्तमे मण्डले दक्षिणायनप्रथममण्डलापेक्षया सर्वाभ्यतरमण्डलापेक्षयातु चत्वारिंशे अठत्तरिति अष्टसप्तति एगसट्ठि भाएत्ति मुहूर्त्तस्यैकषष्ठिभागान् दिवसखेत्तस्सत्ति दिवसलक्षणस्य क्षेत्रस्य दिवसस्यैवेत्यर्थः निवुट्टेत्तत्ति निर्वर्द्धह्रापयित्वेत्य र्थः तथारयणिखेत्तस्सत्ति रजन्याएव अभिनिवुट्टेत्तत्ति अभिनिवर्द्धच वर्द्धयित्वेत्यर्थः चारचरइत्ति भ्राम्यतीत्यर्थः भावार्थोस्यैवं चन्द्रप्रज्ञप्तिवाक्यैरुपदर्श्यते

पिए अठहत्तरिंवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे उत्तरायणनियट्टेणं सूरिएपढमाउ मंडलाउ एगू ॥

स्थपणे ९ वर्ष केवलीपणे २१ वर्ष सर्वमिली ७८ थया । उत्तरदिश गमन थकी निवर्त्यो प्रारभ्यो छे दक्षिणायन पणो जेणे एहवो सूर्य पहिला मांडला थकी एकोन चालीसमें मांडले एक मुहूर्तना अठहोत्तरि एकसठिया भाग दिवस लक्षण क्षेत्रने एतले दिवसने निवर्द्धीने घटाडीने रजनी लक्षण क्षेत्रनें रात्रिने अभिवर्द्धीवधारीने चार चरेछे एतले आषाढी पूनिमे सर्वाभ्यतर मंडले १८ मुहूर्त दिवसहोय तिवारे पछे दक्षिणायने सूर्यथयो तिवारे एक मुहूर्त

स्वष्टसप्तत्यां चिप्तायां त्रयोदशमुहूर्त्ता सप्तदशैकषष्ठिभागाश्चेति एवंदक्षिणायननियट्टेत्ति यथोत्तरायणनिवृत्तएकोनचत्वारिंशत्तमे मण्डले अष्टसप्तति मेकषष्ठिभागान् हापयति वर्द्धयतिच एवदक्षिणायननिवृत्तावपि सूर्यस्तान्हापयति वर्द्धयतिच केवलं दक्षिणायने दिनभागान् हापयति रात्रिभागां स्ववर्द्धयति इहतु दिनभागान् वर्द्धयति रात्रिभागाश्च हापयति ॥ ७८ ॥ अथैकोनाशीतितमे स्थानके किंचिल्लिख्यते । तत्र वलयामुहस्सत्ति वड वामुखाभिधानस्य पूर्वदिग्व्यवस्थितस्य पायालस्सत्ति महापातालकलशस्याधस्तनचरमांता द्रत्नप्रभापृथ्वीचरमान्त एकोनाशीत्यासहस्रेषु भवति कथंरत्नप्रभा हि अशीतिसहस्राधिकं योजनानां लक्षम्बाहल्यतो भवति तस्याश्चैकं समुद्रावगाह सहस्रं परिहृत्या धोलक्षप्रमाणावगाहो बलयामुखपातालकलशो भवति तत स्तच्चरमांतात् पृथिवी चरमांतो यथोक्तांतरमेव भवति एवमन्येपित्रयो वाच्या इति छठीएत्यादि अस्यभावार्थः षष्ठपृथिवीहि वाहल्यतो योजनाना लक्ष

रंचरई एवं दक्खिणायण नियट्टेवि ॥ ७८ ॥ वलयामुहस्सणं पायालस्स हिठ्ठिल्लाउ चरमंताउ

॥ ७८ ॥ हिवे ७९ मो लिखेछे। पूर्व समुद्र मांहि पाताल कलश बडवामुखनो हेठिलो चरिमांत भाग तेहथकी एणीये रत्नप्रभा पहिली पृथ्वी नो हेठिलो चरिमात एह ७९ हजार योजन आवाधायें बिचाले आंतरो कह्यो। रत्नप्रभा पृथिवी एक लाख ८० हजार योजन जाडपणेछे तेमांहीथी एक सहस्र योजन समुद्र ऊंडोते काढीने १ लाख योजन पाताल कलशो छे तेकाढो तेहनो हेठलो विभाग लीजे तो पूठें ७९ हजार योजन उगरया जाणिवा। एमज दक्षिण समुद्रें केतु पाताल कलश २ पश्चिमे यूप ३ उत्तरे ईसर कलश ४ एह सगलानो हेठलोभाग अने रत्नप्रभानो हेठिलोचरमांत एह बिचाले ७९

षोडशसहस्राणि भवन्ति घनोदधय स्तु यद्यपि सप्तापि प्रत्येकं विंशतिसहस्राणि स्युस्तथाप्येतस्य ग्रंथस्य मतेन षष्ठ्या मंसावेकविंशतिः संभाव्यते तदेवं ष ष्ठपृथिवीबाहल्यार्द्धमष्टपञ्चाशत्घनोदधिप्रमाण चैकविंशति रित्येव मेकोनाशीति भवति ग्रंथांतरमतेन तु सर्वघनोदधीनां विंशतियोजनसहस्रबाहल्यत्वा त्पंचमीमाश्रित्येद सूत्रमवसेयं यत स्तद्बाहल्यमष्टादशोत्तरं लक्षमुक्तं यतश्चाह पढमाशीइसहस्सा १ बत्तीसा २ अट्ठवीस ३ वीसाय ३ अट्ठार ५ सोल ६ अ ट्ठय ७ सहस्सलक्खोवरिंकुज्जत्ति ॥ १ ॥ अथवा षष्ठ्याः सहस्राधिकोपि मध्यभागो विवक्षित एव मर्थसूचकत्वा द्बहुशब्दस्येति तथाजम्बूद्वीपस्य जगत्या स्वत्वा रिद्वाराणि विजयवैजयंतजयतापराजिताभिधानानि चतुश्चतुर्योजनविष्कम्भानि गव्यूतपृथुलद्वारशाखानि क्रमेण पूर्वादिषु दिक्षु भवन्ति तेषांच द्वारस्यचद्वा

इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए हेठिल्ले चरमंते एसणं एगूणासिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं केउ स्सवि जूयस्सवि ईसरस्सवि छठीए पुढवीए बहुमज्झदेसभायाउ छठस्स घणोदहिस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं एगूणासीतिजोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० जबूद्दीवस्सणं द्दीवस्स बारस्सय बारस्सय एसणं एगूणा

हजार योजन आंतरो जांणिवो। छठी नरक पृथिवीना बहुमध्य देशभागथकी एतले छठीनो जाडपणो १ लाख १६ हजार योजनछे तेहनो मध्यभाग ५८ हजार योजन छठी पृथिवीनो घनोदधि यद्यपि २० हजारनो छे तोही पणि इहां २१ हजार योजन घनोदधि एह ७९ हजार योजन आवाधाये विषा ले आंतरो कह्यो। एतले छठीनो मध्यभाग ५८ हजार योजन अने २१ घनोदधि सर्वमिली जे एह ग्रथने मते एतले तेहनो हेठिलो चरमांत ७९ हजार योजन थयो। एह २१ हजार योजन घनोदधि पिंड परिमाण कह्यो। तेएहने मते छठोयेज कहिवो अन्यथा सात नरकने हेठे घनोदधि पिंड २० हजार

रस्य चान्योन्य मित्यर्थः एसणति एतदेकोनाशीतियोजनसहस्राणि सातिरेकाणी त्येवंलक्षण मबाधया व्यवधानेन व्यवधानरूप मित्यर्थान्तर मप्रसं कथं ज म्बूद्वीपपरिधेः ३१६२२७ योजनानि क्रोशाः ३ धनूंषि १२८ अगुलानि १३ सार्द्धानीत्येवं लक्षणस्यापकर्षितद्वारशाखाविष्कम्भस्य चतुर्विभक्तस्यै वंफलत्वादिति ॥

७८ ॥ अथाशीतितमस्थानके किञ्चिल्लिख्यते । श्रेयांसएकादशोजिन स्त्रिपृष्टः श्रेयांसजिनकालभावीप्रथमवासुदेवः अचलःप्रथमबलदेवोपि तथा त्रिपृष्टवा

सीइं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ७९ ॥ सेज्जंसेणं अरहा असीइं धणूइं उड्ढंउच्चत्तेण होत्था तिविट्ठेणं वासुदेवे असीइधणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था अयलेणं बलदेवे असीइंधणूइं उड्ढं उच्चत्तेण होत्था तिविट्ठेण वासुदेवे असीइवाससयसहस्साइं महाराया होत्था आउबहुले कंडे असीइजोयं

योजन कहिवो । जम्बूद्वीप नो जगतीना ४ द्वारछे पूर्वादिके विजय १ वैजयंत २ जयत ३ अपराजित ४ एकेक दरवाजो चार २ योजन पिहुलोछे । चार दरवाजानो परस्पर अतर कांइक अधिक ७९ हजार योजननोछे । जम्बूद्वीपनीपरिधी ३१६२२७ योजन त्रिणगाऊ १२८ धनुष १३ अगुल एतला माहीथी ४ दरवाजानो पिहुलपणो काढीयें पूठे उगरा योजन चिहु भागदीजेतो दरवाजानो आंतरो पामिये । इति ७९ मो संपूर्ण ॥ ७९ ॥ हिवे ८० मो लिखेछे । श्रेयांस इग्यारमा अरिहंत ८० धनुष ऊंचा ऊंचपणे हुया । श्रेयांस जिननेवारे त्रिपृष्ट वासुदेव पहिलो ८० धनुष ऊंचो ऊंच पणे थयो । पहिलो अचल बलदेव ८० धनुष ऊंचो ऊंच पणे थयो । त्रिपृष्ट वासुदेव ८० हजार वर्ष लगी महाराज हुया ४ लाख वर्ष महाकुमारपणे बीजाराज्याव स्थायें सर्वायु ८४ लाखवर्ष जाणिवो । रत्नप्रभा पहिली पृथ्वी १ लाख ८० हजार योजन जाडपणेछे तेहनां ३ कांडछे । प्रथम रत्नकांड १६ हजार योजन

कामिचा एवमेकोत्तरया हृद्या नवमेनवके नवनवेति सर्वासां पिण्डने चत्वारिपञ्चोत्तराणि भिचाशतानि भवन्तीत्यतउक्तं चउहियेत्यादि इहच भिचाशब्देन दत्तिरभिप्रेता अहासुत्तंति यथासूत्र सूत्राख्यतिक्रमेण जावत्तिकरणा यथाकल्प यथामार्गयथातत्व सम्यक्कायेन स्पृष्टा पालिता शोभिता तीरिता कीर्तिता आज्ञया राधिते तिद्रष्टव्यं विवाहपन्नत्तीएत्ति व्याख्याप्रज्ञप्त्या मेकाशीति मेहायुग्मशतानि प्रज्ञप्तानि इहच शतशब्देना ध्ययना न्युच्यन्ते तानि कृतयुग्मा दिलचणराशिविशेषविचाररूपाणि अवातराध्ययनस्वभावानि तदवगमावगम्यानीति ॥ ८१ ॥ अथद्वाशीतिस्थानके किमपिलिख्यते । तत्र ज म्बूद्वीपे द्वाशीतिद्वाशीत्यधिकमण्डलशतम् सूर्यस्य मार्गशत तद्भवतीति वाक्यशेषः किंभूत यत् सूर्योद्विःकृत्वो द्वौवारौ संक्रम्य प्रविश्य चारंचरति तद्यथानि

त्रिकुपक्किमा एक्कासीइराइंदिएहिं चउहियपचुत्तरेहिं त्रिक्खासएहिं अहासुत्तं जाव आराहियाकुंथुस्सणं अरहउ एक्कासीतिं मणपज्जवनाणिसया होत्था विवाहपन्नत्तीए एकासीतिमहाजुम्मसया प०॥ ८१ ॥ जंबू द्दीवेद्दीवे वासीयं मंडलसय जंसूरिए दुक्कुत्तो सकमित्ताणं चारंचरई तं० निक्खममाणेय पविसमाणेय

हेछे सूत्रोक्त विधिमार्गे आराधी होय । कुंथुनाथ सतरमा अरिहतने ८१ शत मनपर्यवज्ञानी थया । व्यवहार पन्नतीने विषे ८१ शत महायुग्म कह्या । इहां शत शब्दें अध्ययन कह्याछे युग्मशब्दे गणितराशि विशेष एतले ८१ ठाणूं सपूर्ण ॥ ८१ ॥ हिवे ८२ ठाणो लिखेछे । जंबूद्वीप ने विषे १८२ मा डला सूर्यनाछे यद्यपि जबूद्वीप मांही ६५ मांडलाछे पर बाह्य माडले पणि जबूद्वीप संबधी सूर्यनो चार छे तेमाटे जंबूद्वीप वाहिरला ११९ मांडला पणि जबूद्वीपना कह्या । जे १८२ मांडला सूर्य बे वेला सक्रमी प्रवेश करी चारचरे भ्रमे एतले १४८ मांडलाछे तेमांहि निषध उपरलो सर्वाभ्यंतर माडलो अने

ष्क्रामंश्च जंबूद्वीपात् प्रविशश्च जंबूद्वीपएवेति अयमत्र भावार्थ. किल चतुरशीत्यधिकं सूर्यमंडलशत भवति तत्र सर्वाभ्यन्तरे सर्वबाह्ये सकृदेवसक्रामति शेषाणि तु द्वौवाराविति इहच द्वाशीतिविवक्षये वेद द्वाशीतिस्थानकेऽधीत मितिभावनीय यद्यपि जबूद्वीपे पञ्चषष्ठिरेव मंडलाना भवति तथापि जबूद्वीपादिकसूर्य चारविषयत्वा च्छेषाण्यपि जबूद्वीपेन विशेषितानीति समणे इत्यादि आषाढस्यशुक्लपचषष्ठ्याआरभ्यद्वाशीत्यांरात्रिदिवेष्वतिक्रातेषु त्र्यशीतितमेवर्त्तमाने अश्वयुजः कृष्णत्रयोदश्या मित्यर्थः गर्भात् गर्भाशया द्देवानदाब्राह्मणी कुक्षित इत्यर्थः गर्भ त्रिशलाभिधानक्षत्रियाकुक्षि संहृतो नीतो देवेंद्रवचनकारिणा ह रिणेगमेष्यभिधानदेवेनेति इदं च सूत्रे द्वाशीतिरात्रिदिवान्यधिकृत्य द्वाशीतिस्थानकेऽधीयते त्र्यशीतितम रात्रिदिवमाश्रित्य तु त्र्यशीतितमस्थानके इति महा

समणेभगवंमहावीरे बासीएराइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं गब्भाउ गब्भ साहरिए महाहिमवंतस्सणं वासहरपव्वयस्स उवरिल्लाउ चरमताउ सोगंधियस्स कण्डस्स हेठिल्ले चरमंते एसण बासीइजोयणसयाइं अबाहाए अंतरेप०

समुद्रमांहिलो छेहिलो सर्वाभ्यतर माडलो सूर्य एकवेला चरिसे एक कर्क सक्रांतियें शेष थाकता १८२ माडला बेवेलाफिरस्ये सर्वाभ्यंतर मांडलाथकी जबूद्वीपे निकलतो एकबेला जंबूद्वीप मांही पेसतो एम बेवेला १८२ मांडला सूर्यचरे भमे गगने फिरे। श्रमण भगवत श्रीमहावीर आषाढ शुक्ल षष्ठी थकी माडी ८२ रात्रिदिवसव्यतिक्रमे थके ८३ मीरात्री वर्ततेथके आशोजवदी १३ नीरात्रीयें देवानदानीं कूखथकी गर्भ त्रिशला देवीनी कूखविषे हरिणेगमे षी देवतायें साहस्यो पहुचाव्यो ॥ महाहिमवत बीजो वर्षधर पर्वत २०० योजन ऊचो छे ते महाहिमवंतनो ऊपरलो चरमांत छेहल्यो प्रदेश तेह थकी मांडी रत्नप्रभाना सौगधिक कांडनो हेठिलो चरमात एह ८२ शत योजन आबाधायें बिचाले आतरोकह्यो। काड दूजो अपबहुल ३ तेमांही पहिलो कांड

हिमवतो द्वितीयवर्षधरपर्वतस्य योजनशतद्वयोच्छ्रितस्य उवरिल्लाओत्ति उपरिमा च्चरमांतात् सौगन्धिककाण्डस्या धस्तनचरमान्तौ द्व्यशीतिर्योजनशतानि कथ रत्नप्रभापृथिव्यां हि त्रीणि कांडानि खरकाड पंककाडमव्वहुलकाडं चेति तत्र प्रथम काण्ड' षोडशविध तद्यथा रत्नकांड १ वज्रकाडं २ एववैडूर्यं ३ लोहिताच ४ मसारगल्ल ५ हंसगर्भ ६ पुलक ७ सौगन्धिक ८ ज्योतीरस ९ अंजन १० अंजनपुलक ११ रजत १२ जातरूप १३ अंक १४ स्फटिक १५ रिष्टकांडवेति १६ एतानि च प्रत्येक सहस्रप्रमाणानि ततश्च सौगधिककाण्डस्या ष्टमत्वा द्व्यशीति शतानि द्वे च शते महाहिमवदुच्छ्रय इत्येवं त्र्यशीतिशतानीति एव रुक्मिणो पि पञ्चमवर्षधरस्य वाच्य महाहिमवत्समानोच्छ्रयत्वात्तस्येति ॥ ८२ ॥ अथ त्र्यशीतितमस्थानके किमपि लिख्यते । इह शीतलजिनस्य त्र्यशीतिर्गणा स्त्र्यशीतिर्गणधरा उक्ता आवश्यकेत्वेकाशीतिरितिमतातरमिदमिति तथा स्थविरोमंडितपुत्रो महावीरस्य षष्ठोगणधरः तस्य चत्वाशीतिवर्षा

एवं रुप्पिस्सवि ॥ ८२ ॥ समणेभगवंमहावीरे बासीइ राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं तेयासीए राइंदिए वट्टमाणे गब्भाओ गब्भं साहरिए सीयलस्सणं अरहओ तेसीइगणा तेसीइगणहरा होत्था थेरेणं मंडि

१६ भदे रत्नकाड १ वज्रकांड २ एम वैडूर्य कांड ३ लोहिताच ४ मसारगल्ल ५ हंसगर्भ ६ पुलक ७ सौगधिक ८ ज्योतिरस ९ अंजन १० अंजनपुलक ११ रजत १२ जातरूप १३ अंक १४ स्फटिक १५ मसारगल्ल १६ एह १६ कांड प्रत्येकें १ सहस्र योजन प्रमाणछे तोसौगधिक काड आठमो तो आठ काड मिलीने ८० शत योजनथया अने वेसे योजन महाहिमवत ऊचोछे सर्वएकठा करता ८२ शत योजनथया । इति ८२ मो ठाणोथयो ॥ ८२ ॥ हिवे ८३ मो लिखेछे । श्रमण भगवत महावीर ८२ रात्रीदिवस गयेथके ८३ मो अहोरात्रि वर्त्तता थका देवानदाना गर्भ थकी त्रिशलाने गर्भ साहस्या हरिणि

णि सर्वायुः कथं त्रिपञ्चाशद्गृहस्थपर्याये चतुर्दश छद्मस्थपर्याये षोडश केवलित्वइत्येवं त्र्यशीतिरिति तथा कोशलिएत्ति कोशलदेशभवः कौशलिकः तेसीइति विंशतिः पूर्वलक्षाणि कुमारत्वे त्रिषष्ठिराज्ये इत्येव त्र्यशीतिः तथा भरतश्चक्रवर्त्ती सप्तसप्ततिः पूर्वलक्षाणि कुमारत्वे षट्चक्रवर्त्तित्वे इत्येवंत्र्यशीतिमगारवासम ध्युष्य जिनोजातः राज्यावस्थस्यैव रागादिजयात्केवली संपूर्णासहायविशुद्धज्ञानादित्रययोगात्सर्वज्ञो विशेषबोधा त्सर्वभावदर्शी सामान्यबोधात्ततः पूर्वलक्षं

यपुत्ते तेसीइंवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे उसभेणं अरहा कोसलिए तेसीइपुव्वसयसहस्सा इ अगारमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता णं जावपव्वइए भरहेणं राया चाउरंतचक्कवट्टी तेसीइपुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी ॥ ८३ ॥ चउरासीइनिरया वास

गमेसीये पहुंचाड्या। शीतलनाथ दशमा अरिहंत ने ८३ गणधर आवश्यके ८१ कह्या ये मतांतरछे। स्थविर मंडित पुत्र छठो महावीरनो गणधर ८३ वर्षलगे सर्वायुपालीने सिद्धथयो सर्वदुःख रहित थयो ५३ वर्ष गृहस्थपणें १४ वर्ष छद्मस्थपणें १६ केवलीपर्याये सर्वमिली ८३ वर्ष थया। ऋषभ आदिनाथ अरिहंत कोसल देशना उपना ८३ हजार पूर्वलगे गृहस्थावास मांहो वसीने द्रव्यभावभेदें मुंडथयीने अगार गृहस्थथकी अणगारी यतीपणुं पाम्या। २० लाख पूर्व कुमारपणें ३६ लाख पूर्व राज्याश्रमे एव ८३ लाख पूर्व वर्ष। भरत राजा श्रीआदिनाथनो पुत्र प्रथम चिहुंदिशिना अतनोधणी चक्रवर्ती एहवा ७७ लाख पूर्व कुमारपणें ६ लाख पूर्व चक्रवर्ती पणे एव ८३ लाख पूर्व लगे गृहस्थमांहीवसीने गृहस्थपणे जिनथया। राग द्वेषनो जयकरे तेजिन केवली असहज्ञानजेहनेछेते केवली विशेष जाणें ते सर्वसामान्य बोधथकी सर्वभावदर्शी थया। इति ८३ मो समवाय थयो ॥ ८३ ॥ हिवे ८४ मो समवायलिखेछे।

प्रव्रज्याग्रहणपूर्वकं केवलित्वेन विहृत्य सिद्धइति ॥ ८३ ॥ चतुरशीतिस्थानके किमपि लिख्यते। चतुरशीति नैरकलचाण्यमुना विभागेन तीसा यपणवीसा २ पणरस ३ दसेव ४ तिन्निय ५ हवंति पंचूणसयसहस्स पंचेव ७ अनुत्तरानिरयत्ति ॥ १ ॥ श्रेयांसएकादशस्तीर्थंकरः एकविंशतिर्वर्षलचाणि कुमारत्वे तावंत्येव प्रव्रज्यायां द्विचत्वारिंशद्राज्ये इत्येव चतुरशीतिमायुः पालयित्वा सिद्धः तथा तिविट्ठुत्ति प्रथमवासुदेवः श्रेयांसजिनकालभावीति अप्रतिष्टा

सयसहस्सा प० उसभेणं अरहा कोसलिए चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे एवं भरहो बाहुबली बंभी सुंदरी सिज्जंसेणं अरहा चउरासीइं वाससयसहस्साइं सव्वाउयंपालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे तिविट्ठेणं वासुदेवे चउरासीइं वाससयसहस्साइं परमाउयं पालइत्ता अप्पइट्ठाणे नरए नेरइ

सातें नरक मिली ८४ लाखनरकावासा कह्या। पहिलीयें ३० बीजीये २५ त्रीजीये १५ चौथीये १० पांचमीये ३ छठ्ठीये ५ जंणा १ लाख सातमीये५ एवं ८४ लाख थया। आदिनाथ अरिहंत कोसल देशना ऊपना ८४ लाख पूर्व लगे सगलो आऊखोपालीनें सर्वदु:ख प्रक्षीण थया। २० लाख पूर्व कुमारपणे ६३ लाख पूर्व राज्यपणे १ लाख पूर्व तीर्थंकर पणें एव ८४ लाख पूर्व थया। एमज भरतचक्रवर्ती आदिनाथनोपुत्र सुमगला जातक बाहुबली नंदाजातक आदीश्वर नो पुत्र ब्राह्मी सुमगलाजातक आदिनाथनी पुत्री सुंदरी सुनंदा जातक आदिनाथनी पुत्री एहचार ८४ लाख पूर्व आयुपाली सिद्ध थया। श्रेयांस ११ मा अरिहंत २१ लाख वर्ष कुमारपणें ४२ लाख वर्ष राज्यपणें २१ लाख वर्ष दीक्षा एवं ८४ लाख वर्ष लगे सगलो आयूपाली सिद्धथया। सर्वदुःखथी प्रक्षीणथया

नी नरकः सप्तमपृथिव्यां पञ्चानां मध्यम इति तथा समाणियत्ति समानर्द्धयः तथा बाहिरयत्ति जम्बूद्वीपकमेरुव्यतिरिक्ता श्चत्वारो मन्दरा चतुरशीतिः सह
स्त्राणि प्रज्ञप्ताः अंजणगपव्वयत्ति जम्बूद्वीपाद् दृष्टमे नन्दीश्वराभिधाने द्वीपे चक्रवालविष्कम्भमध्यभागे पूर्वादिषु दिक्षु चत्वारोंजनरत्नमया अञ्जनपर्वताः हरि
वासेत्यादि चत्तारियभागजोयणस्सत्ति एकोनविंशतिभागा इहार्द्धगाथार्द्ध धणुपिट्ठकलचउक्कं चुलसीइसहस्ससोलसहियत्ति तथा पकबहुलंकाण्ड द्वितीयं

यत्ताए उववन्ने सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो चउरासीइसामाणियसाहस्सीओ प० सव्वेविणं वाहिरया मंद
रा चोरासीइं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेण प० सव्वेविण धणुपिठा चोरासी चोरासी जोयणसहस्साइं सो
लसजोयणाइं चत्तारियभागा जोयणस्स परिक्खेवेण प० पंकबहुलस्सणं कंडस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ

त्रिपृष्ट पहिलो वासुदेव श्रेयांस जिन काल भावी ८४ लाख वर्ष परमायुपाली ने सातमीये ५ नरकावासा छे तेमांही विचलो अपइठाण नरकावासेनारकी
पणे उपनो। पहिला देवलोकनो राजा शक्रेंद्र देवेंद्र देवराजाना ८४ सहस्रसामानिक देवता कह्या। जबूद्वीप सबंधी सुदर्शन मेरुटाली बीजासगलाधातकी
खडना २ पुष्करार्द्धना २ मेरु चौरासी चौरासीहजारयोजन ऊंचा ऊंच पणे कह्या। १ सहस्र योजन ऊंडा छे सर्वमिली ८५ हजार योजननाथाय जबूद्वी
पथकी आठमे नंदीश्वर द्वीपे चक्रवाल मध्यभागें पूर्वादिक चिहुंदिशि ४ अजनका पर्वत छे चारोअजनका पर्वत चौरासी २ सहस्र योजन ऊंचा ऊंचपणे
कह्या। १ सहस्र योजन ऊंडा सर्वमिली ८५ हजारना। हरिवर्षनीजो रम्यकपांचमी तेहनो धनुवर्ती प्रत्यंचा चौरासी चौरासी सहस्र योजन उपरि
सोले योजन उपरि चारभाग एकयोजनना परिक्षेपे परिधीयें कही। रत्नप्रभायें त्रिणकांडछे तेमांही पकबहुल बीजोकांडतेहनो उपरलो चरमांत छेहलो

तस्यच बाहल्यं चतुरशीतिः सहस्राणीति यथोक्त सूत्रार्थ इति तथा व्याख्याप्रज्ञप्त्यां भगवत्यां चतुरशीतिः पदसहस्राणि पदाग्रेण पदपरिमाणेन इहच यत्रार्थोपलब्धि स्तत्पदं मतान्तरेणतु अष्टादशपदसहस्रपरिमाणत्वादाचारस्य एतद्द्विगुणद्विगुणत्वाच्च शेषाङ्गानां व्याख्याप्रज्ञप्तिर्द्वेलचे अष्टाशीतिः सहस्राणि पदानाम्भवन्तीति तथा चतुरशीति र्नागकुमारा वासलचाणि चतुश्चत्वारिंशतो दचिणाया चत्वारिंशच्चोत्तरायां श्रावादिति चतुरशीतिर्योनियोजीवोत्पत्ति स्थानानि तएव प्रमुखानिद्वाराणियोनिप्रमुखानि तेषां शतसहस्राणि लचाणि योनिप्रमुखशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि कथं पुढविदगअगणिमारुय एक्केक्केसत्त जोणिलक्खाओ वणपत्तेयअणते दसचउदसजोणिलक्खाओ विगलिदिएसुदोदो चउरोचउरोयनारयसुरेसु तिरिएसुहोतिचउरो चोद्दसलक्खाउमणुएसुत्ति २

हेठिल्ले चरमंते एसणं चोरासीइजोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० विवाहपन्नत्तीए णं भगवत्तीए चउरासीइं पयसहस्सा पदग्गेणं प० चोरासीइनागकुमारावाससयसहस्सा प० चोरासीइपइन्नगसह

प्रदेश तेहथकी हेठिलो चरमांत एह ८४ सहस्र योजनकह्यो । पांचमोअंग विवाहपन्नती भगवती सूत्रने विषे ८४ पदनां सहस्र छे पदाग्रे पदने परिमाणें जिहां अर्थनी समाप्ति होय तेपद कहीये मतांतरें आचारांगना १८ सहस्र पदछे पछे आगल्ये २ अंगे वेगुणा २ कीजे तिवारे पांचमे अंगे २ लाख ८८ हजार पद थाय । नाग कुमारना दचिण दिशनाभवन ४४ लाख उत्तरदिशि ४० लाख सर्वमिलो नागकुमारावासा ८४ लाख कह्या । ८४सहस्र पइन्ना यतीना कीधा ग्रथविशेष कह्या । ८४ लाख जीवायोनि जीवना उत्पत्तिस्थानक तेहीजछे प्रमुखद्वार जिहां ७ लाख पृथिवी काय इत्यादिक यद्यपि जीवोत्पत्तिस्थानक असख्यातछे पणि समान वर्ण गंध रस स्पर्श होय ते एक योनिकाही । पूर्वछे आदि प्रथम अने शीर्षप्रहेलिका प्रांक पर्यवसान छेह

इहचजीवोत्पत्तिस्थानानामसख्येयत्वेपि समानवर्ण गन्धरसस्पर्शानां तेषामेकत्वविवक्षणा न्नयथोक्त योनिसंख्याव्यभिचारोमन्तव्य इति पुव्वाइयाणमित्यादि पूर्वमादिर्येषांतानि पूर्वादिकानि तेषां शीर्षप्रहेलिकापर्यवसाने येषान्तानि शीर्षप्रहेलिकापर्यवसानानि तेषांस्वस्थानात् पूर्वपूर्वस्थानादुत्तरोत्तरस्य संख्या स्थानस्योत्पत्तिस्थानात् सख्याविशेषलक्षणात् गुणनीयादित्यर्थः स्थानान्तराणि अनन्तरस्थानान्यव्यवहितसख्याविशेषा गुणकारनिष्पन्ना येषु तानि स्वस्थान स्थानान्तराणि क्रमव्यवहितसंख्यानविशेषा इत्यर्थः अथवा स्वस्थानानिच पूर्वस्थानानि स्थानांतराणिच अनतरस्थानानि स्वस्थानस्थानांतराणि अथवास्वस्थाना त् पूर्वाङ्गलक्षणात् स्थानातराणि विलक्षणस्थानानि स्वस्थानस्थानांतराणि तेषा चतुरशीत्यालक्षै रितिशेषः गुणकारोभ्यासराशिः प्रज्ञप्तः तथाहि किल चतुरशीत्यालक्षैः पूर्वाङ्गभवतीति स्वस्थानांतरादेवचतुरशीत्यालक्षै गुंणितं पूर्वमुच्यते तच्च स्थानान्तरमिति एव पूर्वस्वस्थानातरादेव चतुरशीत्यालक्षै गुंणित मनन्तरस्थान त्रुटिताङ्गाभिधान भवतीति इहसग्रहगाथे पुव्वतुडियाडडावहु जहुयतहउप्पलेयपउमेय नलिणत्थिनिउरअउय नउएपउएयनायव्वो ॥ १ ॥ चू लियसीसपहेलिय चोद्दसनामाउअंगसजुत्ता अठ्ठावीसठाणा चउणउयहोइठाणसयति ॥२॥ अभिलापाश्चेषां पूर्वाङ्ग मपूर्वं त्रुटितांगंत्रुटित मित्यादि रिति चउ रासीतिमित्यादि इहविभागोयं बत्तीसअठ्ठवीसा वारसअठचउरोसयसहस्सा आरेणवभलोगो विमाणसख्याभवेएसा १ पचासचत्तछच्चेव सहस्सालंतसुक्कसहस्सारे

स्साइं प० चोरासीइं जोणिप्पमुहसयसहस्सा प० पुव्वाइयाणं सीसपहेलियापज्जवसाणाणं सठाणठाणंत

डे क्के स्वस्थानक थकी स्थानांतरे २ चौरासी आंकें गुणाकार करतां छेहडे शीर्षप्रहेलिका आवे पहिलू स्वस्थानक पोतानूंस्थानक पूर्वांगतेह ८४ लाख वर्ष होय । ते ८४ लाख गुणोकरीये स्थानांतरे तिवारे त्रुटितांग होय । इहां संग्रह गाथा । पुव्वतुडियाडडावहु जहुयतहउप्पलेयपउमेय । नलिणत्थिनिउरअनु

सयचउरोआणय पाणएसुतिणारणच्चुयओ॥ एक्कारसुत्तरंहे ठिमेसुसत्तुत्तरंचमज्झिमए सयमेगंउवरिमए पंचेवअणुत्तरविमाणत्ति॥ भवंतीति मक्खायंति एतानि विमानान्येवम्भवन्ति इतिहेतो राख्यातानि भगवता सर्वज्ञत्वात् सत्यवादित्वा च्चेति ॥ ८४ ॥ अथ पञ्चाशीति स्थानके किञ्चिल्लिख्यते। तत्राचारस्य

राणं चोरासीए गुणकारे प० उसभस्सणं अरहउ कोसलियस्स चउरासीइगणा चउरासीइगणहरा होत्था उसभस्सणं अरहउ कोसलियस्स उसभसेण पामोक्खाउ चउरासीइ समणसाहस्सीउ होत्था सव्वेविचउरा सीइ विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउइं च सहस्सा तेवीसं च विमाणा भवंतीतिमक्खायं ॥ ८४ ॥

रानउएपउएयनायव्वो। चूलियसीसपहेलिय चोद्दसनामाउअग सजुत्ता। अठ्ठावीसठाणा चउणउयहोइठाणसय॥ एम चौदेठामे८४ लाख ८४ लाख गुणाकारे करतां करतां छेहडे शीर्ष प्रहेलिका आवे तिहा१८४ आक आवे। आदिनाथ अरिहंतने ८४ गणधर ८४ गछ हुआ। कोसलदेसना उपना आदिनाथ अरिह तने ऋषभसेन प्रमुख ८४ श्रमणयतीनी सपदा हुई। सौधर्म देवलोके ३२ लाख विमान ईशान देवलोके २८ लाख त्रीजे १२ चौथे८ पाचमे ४ लाख छठ्ठे ५० सहस्र सातमे ४० हजारआठमे ६० सहस्र नोमेंदसमे मिली ४०० इग्यारमेबारमें मिली ३०० ग्रैवेयक पहिलेत्रिके १११ मध्यत्रिके १०७ उपरिलेत्रिके १०० वि मान। पाचे अनुत्तरविमाने ५। १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तरविमान मिली ८४ लाख ९७ हजार उपरि २३ विमान भगवंते कह्या। इति ८४ समवाय थयो ॥ ८४ ॥ हिवे ८५ मोलिखेछे। आचारांग सूत्रना चूलिका सहितना ८५ उद्देसण काल कह्या प्रथम श्रुतस्कंधे ९ अध्ययन छे पहिले

दशद्वीपान्तर्गतः प्राकाराकृतीरुचकद्वीपविभागकारितयास्थितो ऽतएव माण्डलिकपर्वतो मण्डलेन व्यवस्थितत्वा त्सच सहस्रमवगाढ श्चतुरशीतिरुच्छ्रित इति पञ्चाशीतिः सहस्राणि सर्वाग्रेणेति तथा नन्दनवनस्य मेरोः पञ्चयोजनशतोच्छ्रितायां प्रथममेखलाया व्यवस्थितस्या धस्याच्चरमांतात् सौगंधिककाण्डस्य रत्नप्रभापृथिव्याः खरकाण्डाभिधान प्रथमकाण्डस्या ऽवान्तरकाण्डभूतस्याष्टमस्य सौगन्धिकाभिधानरत्नमयस्य सौगन्धिककाण्डस्याधस्त्यचरमांतः पञ्चाशीतियोजनशतान्यंतरमाश्रित्य भवति कथ मष्टशतानि मेरो' सम्बन्धीनि प्रत्येक सहस्रप्रमाणत्वादपान्तरकाण्डाना मष्टमकाण्डमशीतिशतानीति ॥ ८५

सहस्साइं सव्वग्गेणं प० रुयएणं मंडलियपव्वए पंचासीइजोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं प० नंदणवणस्सणं हेट्ठिल्लाउ चरमंताउ सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एसणं पंचासीइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प०

रुचकनामापर्वत तेरमाद्वीप मांहो गढने आकारे मडलाकारेछे तेमाटे मडलीकपर्वत १ हजार योजन ऊंडो ८४ हजार योजन ऊंचो सर्वमिली ८५ हजार योजन सर्वांगी सर्वपरिमाणे कह्यो । भूमिथकी ५०० योजन लगे मेरुपर्वत ज चोचढीये तिहा प्रथममेखलानेविषे नदन वन छे तेहनां हेठिला चरमांतथी रत्नप्रभानो आठमो सौगधिक काड तेहनो हेठिलो चरमात एह ८५ से योजन अवाधाये विचाले आंतरो कह्यो। रत्नप्रभाये २ काड छे पहिलो १६ हजारनो कांड एकेक हजार योजन प्रमाणे तो आठमो सौगंधिक कांडछे तो ८ कांड मिली ८० से योजन थया । नंदन वनना ५०० सर्वमिली ८५ से योजन थया इति ८५ समवाय थयो ॥ ८५ ॥ हिवे ८६ मो समवाय लिखिछे । नवमा सुविधिनाथ बीजूंनाम पुष्पदंत अरिहतने ८६ गणधर हुआ आवश्यके

ष्टाशीति रिति मतांतरमिदं तथा द्वितीयापृ

अथ षडशीतिंस्थानकं किमपि लिख्यते । तत्र सुविधे र्नवमजिनस्येह षडशीतिर्गणागणधराश्चोक्ता आवश्यके लष्टाशीति रिति मतांतरमिदं तथा द्वितीयापृ

थिवीशर्करप्रभा साच बाहल्यतो द्वात्रिंशत्सहस्राधिकलक्षमाना तदर्द्धं षट्षष्ठिः सहस्राणि घनोदधिश्च तदधोवर्त्ती द्वितीयपृथिवीसम्बन्धित्वात् द्वितीयो विंश

तिसहस्राणि बाहल्यत इति षडशीति र्यथोक्तमन्तर भवतीति ॥ ८६ ॥ अथ सप्ताशीति स्थानके किञ्चिल्लिख्यते मन्दरेत्या दिमेरोः पौरस्त्यातात्

जम्बूद्वीपातः पञ्चचत्वारिंशत्सहस्राणि द्विचत्वारिंशत्सहस्राणि लवणजलधिमवगाह्य गोस्तुभो वेलन्धरनागराजावासपर्वतः प्राच्यादिशि भवत्येव सूत्रोक्तमतर

सुविहिस्सणं पुप्फदंतस्स अरहओ छलसीइगणा छलसीइगणहरा होत्था सुपासस्स

॥ ८५ ॥ सुविहिस्सणं पुप्फदंतस्स अरहओ छलसीइगणा छलसीइगणहरा होत्था सुपासस्स

ण अरहओ छलसीइ वाइसया होत्था दोच्चाएणं पुढवीए बहुमज्झदेसभागाओ दोच्चस्स घणोदहिस्स हेठि

ल्ले चरमंते एसणं छलसीइ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ८६ ॥ मंदरस्सणं पव्वय

स्स पुरत्थिमिल्लाओ चरमंताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं सत्तासीइं जोयणस

८८ गणधर तेमतातरछे सातमा सुपार्श्व अरिहतने ८६ से वादीनीसपदा हुई । बीजी शर्करप्रभा पृथिवी १ लाख ३२ हजार योजन जाडपणेछे तेह बीजो

पृथिवीना बहु मध्यभागथकी माडी एतले १ लाख ३२ हजारनो अर्द्ध ६६ हजार योजन ते साथे लीजे बीजीनोघनोदधि २० हजार नो तेहनो हेठिलो च

रमात ८६ हजार योजन अबाधाये विचाले आंतरो कह्यो ॥ इति ८६ समवाय थयो ॥ ८६ ॥ हिवे ८७ मो लिखेछे । मेरुपर्वतना पूर्व चरमात

थकी वेलधर नागराजा वास गोस्तूभ नामापर्वत तेहनो पश्चिम चरमांत ८७ सहस्र योजन अबाधायें विचाले आतरो कह्यो। मेरुपर्वतथकी पूर्वनी जगती

भवतीति एवमन्येषां त्रयाणां मतरमवसेयमिति तथा षष्ठां कर्मप्रकृतीना मादिमोपरिमवर्जानां ज्ञानावरणांतरायरहितानां दर्शनावरणवेदनीयमोहनो यायुष्कनाम गोत्रसञ्ज्ञितानामित्यर्थः सप्ताशीतिरुत्तरप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः कथं दर्शनावरणादीनाषण्णां क्रमेणनव द्वे अष्टाविंशतिः चतस्रो द्विचत्वारिंश द्वेचे त्यत

हस्साइं अबाहाए अंतरे प० मंदरस्सणं पव्वयस्स दक्खिणिल्लाउ चरमंताउ दगभासस्स आवासपव्वयस्स उत्तरिल्ले चरमंते एसणं सत्तासीइ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एव मंदरस्स पच्चत्थिमिल्लाउ चरमं ताउ संखस्स वा पुरत्थिमिल्ले चरमंते एवं चेव मंदरस्स उत्तरिल्लाउ चरमताउ दगसीमस्स आवासपव्वय स्स दाहिणिल्ले चरमंते एसणं सत्तासीइ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० छण्हं कम्मपगडीणं आइम

४५ हजार योजन तिहांथकी ४२ हजार योजने गोस्तूभ पर्वत सर्वमिली ८७ हजार योजन थया। दक्षिण चरमांतथकी दक्षिण समुद्रमांहि दगभास पर्व त तेहनो उत्तर चरमांत ८७ हजार योजन गोस्तूभ पर्वतनो परें अवाधाये विचाले आंतरो कह्यो। एमज मेरुपर्वतना पश्चिमचरमांत थकोमांहे पश्चिमे श ङ्खनामा आवासनो पूर्वचरमांत ८७ सहस्र योजन अवाधाये विचाले आंतरो कह्यो। एमज मेरुपर्वतना उत्तर चरमांतथकी उत्तर समुद्रमांहि दगसीम आवासपर्वतनो दक्षिण चरमांत ८७ सहस्र योजन अवाधायें विचाले आंतरो कह्यो। आठेकर्मनी प्रकृति मांहे थी आदिकर्म ज्ञानावरणीनी पांच प्रकृति उपरिम कर्मअंतराय तेहनी ५ प्रकृति एव १० प्रकृतिटाली शेष छ कर्मनी ८७ उत्तर प्रकृतिकही दर्शनावरणी ९ वेदनीय २ मोहनीय २८ आउखो ४ ना

स्तासां मीलने सूत्रोक्त संख्यास्यादिति महाहिमवंतेत्यादि महाहिमवति द्वितीयवर्षधरपर्वते अष्टौ सिद्धायतनकूटमहाहिमवत्कूटादीनि कूटानि भवन्ति तानि पञ्चशतोच्छ्रितानि तत्र महाहिमवत्कूटस्य पञ्चशतानि द्वेशते महाहिमवद्वर्षधरोच्छ्रयस्य अशीतिश्चशतानि प्रत्येकं सहस्रमानानामष्टानां सौगन्धिककाण्डावसानानां रत्नप्रभा खरकाण्डावान्तरकाण्डाना मित्येव मीलिते सप्ताशीति रन्तरम्भवतीति एव रुप्पिकूडस्सविंत्ति रुक्मिणिपचमवर्षधरे यद्द्वितीय रुक्मिकूटाभिधानं कूट तस्याप्यन्तर महाहिमवत्कूटस्येववाच्य समानप्रमाणत्वा द्वयोरपीति ॥ ८७ ॥ अष्टाशीतिस्थानके किंचिद्विव्रियते ॥

उवरिल्लवज्जाणं सत्तासीइ उत्तरपगडीउ प० महाहिमवंतकूडस्सणं उवरिमंताउ सोगंधयस्स कंडस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं सत्तासीइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० एवं रुप्पिकूडस्सवि ॥ ८७ ॥

मकर्म ४२ गोत्र २ सर्वमिली ८७ उत्तर प्रकृति थई। महाहिमवंत बीजो वर्षधर तेह ऊचो बेसत योजन तेह उपरि महाहिमवंत कूटछेते ५०० योजन ऊचो पर्वतना कूटना मिली ७०० योजन थया। तेमहाहिमवत कूटनो उपरिलो चरमांत तेहथकी रत्नप्रभाये ३ कांड छे ते मांहि पहिलो खर कांड १६ हजारनो तेमांही रत्नप्रभादिके प्रत्येके २ हजार २ ना १६ कांडछे तेमाहि सौगधिककांड आठमो तेहनो हेठिलो चरमात एतले आठी काडना ८० से योजन थया अने महाहिमवतकूटमिली ७०० सर्वमिली ८७०० योजन थया अवाधाये बिचाले आतरो कह्यो। महाहिमवंत कूटनी परें पांचमोरूपीवर्षधर पर्वतनो रूपी नामकूट अने सौगधिक कांडनो आंतरो जाणिवो इति ८७ मो समवाय थयो ॥ ८७ ॥ हिवे ८८ मो लिखे छे। चद्रमा सूर्य असख्या

एकैकस्यासंख्यातानामपि प्रत्येकमित्यर्थः चन्द्रमाश्चसूर्यश्चचन्द्रमसूर्यं तस्य चन्द्रसूर्ययुगलस्यइत्यर्थः अष्टाशीतिर्म्महाग्रहाः एतेच यद्यपि चन्द्रस्यैवपरिवारो ऽन्यत्र श्रूयते तथापि सूर्यस्यापींद्रत्वा देतएवपरिवारतया ऽवसेया इति दिठ्ठिवाएत्यादि दृष्टिवादस्य द्वादशाङ्गस्य परिकर्म्मसूत्रपूर्वगतप्रथमानुयोगचूलिकाभेदेन पच प्रकारस्य सुत्ताइति द्वितीयप्रकारभूतानि अष्टाशीतिर्भवन्ति जहानंदीएत्ति अतिदेशतः सूत्राणि दर्शितानि तानि चाग्रे व्याख्यास्यामः मंदरस्सेत्यादि मेरोः पूर्वान्तात् जम्बूद्वीपस्य पंचचत्वारिंशद्योजनसहस्रमानत्वात् जम्बूद्वीपान्ताच्च द्विचत्वारिंशद्योजनसहस्रेषु गोस्तुभस्य व्यवस्थितत्वा त्तस्यच सहस्रविष्कम्भत्वा दा योक्तः सूत्रार्थो भवतीति अनेनैव क्रमेण दक्षिणादिदिग्व्यवस्थितान् दकावभाससंखदकसीमाख्यान् वेलन्धरनागराजनिवासपर्वतानाश्रित्य वाच्यमतएवाह

एगमेगस्सणं चंदिमसूरियस्स अठासीइ अठासीइ महग्गहा परिवारो प० दिठ्ठिवायस्सणं अठासीइसुत्ताइं प० तं० उज्जुसुय परिणयापरिणयं एवं अठासीइसुत्ताणि भाणियव्वाणिजहानंदीए मंदरस्सणं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसणंअठासीइं जोयणसहस्साइं

ताळे तेसहुने प्रत्येके अठ्यासी २ महाग्रह भौमादिक अठ्यासीनो परिवार कह्यो। यद्यपि ८८ ग्रह २८ नक्षत्र परिवार चद्रमानोछे तोहीपणि सूर्य इंद्रछे तेहनो पिण एतलो ग्रहनो परिवार जाणिवो। दृष्टिवाद पूर्व बारमोअग तेहना ५ भेद परिकर्म १ सूत्र २ पूर्वगत ३ प्रथमानुयोग ४ चूलिकाभेदे ५ एह ५ प्रकारे पूर्व कह्या तेहना सूत्ताइति वीजो सूत्र पूर्व तेहना ८८ सूत्रछे तेकहेछे। ऋजुसूत्र १ परिणता परिणतएम ८८ सूत्रभणिवा। जिमनंदीसूत्रे कह्योछे तेम जाणिवो। मेरु पर्वतथकी पूर्वनो जगती ४५ हजार योजनछे तिहांथकी पूर्वसमुद्रमाहि ४२ सहस्र योजन गोस्तूभपर्वतछे ते १ हजारविस्तुलोछे सर्वमिली ८८ हजार मेरुपर्बत

एव चउसुविदिसासुनेयव्वमिति बाहिराओण मित्यादि बाह्याया. सर्वाभ्यन्तरमण्डलरूपाया उत्तरस्याःकाष्ठायाः क्वचितु बाहिराओत्ति न दृश्यते सूर्यः प्रथ मषण्मास दक्षिणायनलक्षण दक्षिणायनादित्वात् सम्वत्सरस्य अयमाणेत्ति आयात्आगच्छन् चतुश्चत्वारिंशत्तममण्डलगतो ष्टाशीतिमेकषष्ठिभागान् दिवस खेत्तस्सत्ति दिवसस्यैव णिवुड्ढेतत्ति निवर्द्धह्रापयित्वा रयणिखेत्तस्सति रजन्यास्तु अभिवर्द्ध्य सूरिएचारचरइत्ति भ्राम्यतीति इहच भावनैव प्रतिमण्डल न्दिन स्यमुहूर्त्तैकषष्ठिभागद्वयहाने र्दक्षिणायनापेक्षया चतुश्चत्वारिंशत्तमे अष्टाशीतिभागा हीयन्ते रात्रेस्तु त एव वर्द्धंत इति द्विःसूर्यगृहण चेह दिनरात्र्याश्रितवा क्यद्वयभेदकल्पनया न पुनरुक्त मवसेयमिति इदच सूत्रमष्टसप्ततिस्थानकसूत्रवद्भावनीयमिति दक्खिणाओइत्यादि सूत्र पूर्वसूत्रवदवगन्तव्य नवरमिह दिनवृद्धी

सूरिए पढमं छम्मासं अय बाहिराउ उत्तराउणं कठाउ एवं चउसुविदिसासुनेयव्वं अबाहाए अंतरे प० माणे चोयालीसइमे मण्डलगते अठासीति एगसठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स

ना चरमांतथको नागराज वेलधरनो गोस्तूभ आवासपर्वतनो चरमांत ८८ हजारयोजनथयी अवाधायें विचाले आंतरोकह्यो । एम चिहुंदिसि जा णिवो दक्षिणे दगभास पश्चिमे शंख उत्तरे दगसीम एसर्वना आंतरा जाणिवा । निषधपर्वत सबधी सर्वाभ्यंतर मांडलायको सूर्य पहिलो छमास दक्षिणायन लक्षण तेहप्रतें अयमान दक्षिणायने आवतो चुम्मालीसमे मांडले गयोथको एकसठिया ८८ भाग १ मुहूर्तना दिवसनो क्षेत्र दिवसने वटाडी रजनीनोक्षेत्र रात्री तेहने वधारीने सूर्य चारचरेभ्रमे । सर्वाभ्यंतर मांडले ३६ सो दिहाडो २४ रात्रीकरी निषधपर्वतथको सर्वाभ्यंतर म डलथको दक्षिणायने सूर्य चालतोथको दिनप्रते एकमुहुर्तना एकसठिया वे भाग दिवस घटाडीये रात्रिवधारिये एकेमासे एकमुहूर्तबाधीये वली २१ मा

रात्रिहानिश्च भावनीयेति ॥ ८८ ॥ अथैकोननवतिस्थानके किंचिद्विचार्यते। तइयाएसमाएत्ति सुखमदुःखमाभिधानाया एकोननवत्यामर्द्धमासेषु त्रिषु वर्षेषु अर्द्धनवसु च मासेषु सत्स्विति गम्यते जावत्तिकरणात् अंतगडे सिद्धे बुद्धे मुत्ते त्तिदृश्य हरिषेणचक्रवर्त्तीदिग्गम स्तस्यच दशवर्षसहस्राणि सर्वायु स्त

अभिनिवुट्टेत्ता सूरिए चारंचरइ दक्खिणकट्ठाओणं सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे चोयालीसतिमे मंडलग ते अठासीइ इगसठिभागे मुहुत्तस्स रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिबुड्ढित्ताणं सूरिए चारं चरइ ॥ ८८ ॥ उसभेणं अरहाकोसलिए इमीसे उसप्पिणीए ततियाए सुसमदुसमाए समा

मांडलायकी एकसठिया दिनप्रतें बे बे भाग दिवस घटाडे रात्रिवधारता ४४ मे माडले ८८ भाग वधेरात्रि। दिवस घटे। समुद्र माहिलो १८४ मों सर्ववाह्य मडले मकर संक्रांतिये सूर्य जगो दक्षिण दिशि थको सूर्य बीजे छम्मासे उत्तर दिशिभणी आवतो थको ४४ में माडले गयो थको १ मुहूर्त्तना एकसठिया ८८ भाग रात्रि घटाडो दिवस वधारी सूर्य चार करे सर्ववाह्य मांडले दिवसमान २४ रात्रिमान ३६ करीउत्तरायणें चालतो १ मुहूर्त्तना एकसठिया बे बे भाग रात्रि घटतां ३० मे माडले १ मुहूर्त्त रात्रि घटे दिवस वढे इमकरता ४४ मे माडले ८८ भाग रात्रि घटे दिन वढे इति ८८ थयो ॥

८८ ॥ हिवे ८९ लिखेछे। श्रीआदिनाथ अरिहत कोशलदेसना उपना एणी अवसर्पिणी ने त्रीजा समाने सुखम दुखम नामने पाछिले भागे ८९ अर्द्धमासे एतले ८९ पखवाडे त्रीजा आरा माहि शेष थाकते आखे त्रीजे आरे व्यतिक्रमे गये थके सिद्धथया सर्वदुःख प्रक्षीण थया। आदिनाथने मोक्ष पहुता पछी त्रीणवर्ष साढा आठ मास एतले ८९ पखवाडा त्रीजो आरो रह्यो पछे चौथो आरो लाग्यो एह भाव। श्रमण भगवत महावीर एणी

ञ्च शतीनानि च नवसहस्राणि राज्यं शेषाश्चैकादश शतानि कुमारत्वमाण्डलिकत्वाऽनगारत्वेषु अवसेयानि इह शान्तिजिनस्यैकोननवतिरार्यिकासहस्राण्यु क्तान्यावश्यकेत्वेकाषष्ठिः सहस्राणि शतानिचषडभिधीयत इति मतांतरमेतदिति ॥ ८९ ॥ अथ नवतिस्थानके किंचिदिदं व्याख्यायते। तत्रा

ए पच्छिमेभागे एगूणणउए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए जावसव्वदुक्खप्पहीणे समणे ३ इमीसे उस प्पिणीए चउत्थीए दुसमसुसमाए समाए पच्छिमेभागे एगूणनउइए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए जावसव्व दुक्खप्पहीणे हरिसेणेण राया चाउरंतचक्कवट्टी एगूणनउइवाससयाइं महाराया होत्था संतिस्सणं अरहओ एगूणनउइ अज्जासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंपया होत्था ॥ ८९ ॥ सीयलेणं अरहा

अवसर्पिणी ने चौथे समाने दुखम सुखम समाने पाछले भागे ८९ पखवाडे शेष थाकतां चौथा आरालक्षण काल व्यतिक्रमें गये थके सिद्ध थया सर्व दुःख प्रक्षीण थया। एतले श्रीमहावीर मोक्ष गये पछी ३ वर्ष साढा आठ मास एतले ८९ पखवाडे गये थके चौथो आरो उतरी पांचमो आरो लाग्यो एह भाव जाणिवो। नमिनाथने वारे हरिषेण राजा दशमो चक्रवर्त्ती ८९ वर्षलगे एकसोवर्ष जणो नव हजार वर्षलगी महाराज चक्रवर्त्ती हुआ। शेष थाकतां ११०० वर्ष माहि कुमार पणे मडलीक पणे यतीपणे जाणिवा साधुपणूं पामी सर्वायु दश सहस्र वर्ष पाली मुक्त गया। शांतिनाथ अरिहंतने ८९ हजार साध्वी एके जणी हुई एतले ८९ सहस्र ८९८ उत्कृष्टी आर्यासाध्वीनी संपदा हुई इति ८९ मो समवाय थयो ॥ ८९ ॥ हिवे ९० लिखेछे। शीतलनाथ

जितनाथस्य शांतिनाथस्य चेह नवतिर्गणागणधराश्चोक्ता आवश्यकेतु पचनवतिरजितस्य षट्त्रिंषत्तु शान्तेरुक्ता स्तदिदमपि मतान्तरमिति तथा स्वयम्भूस्तृतीय वासुदेव स्तस्य नवतिवर्षाणि विजय. पृथिवीसाधनव्यापार: सव्वेसिणमित्यादि सर्वेषा विंशतेरपि वर्तुलवैताढ्याना शब्दापातिप्रभृतीनां योजनसहस्रोच्छ्रित त्वात् सौगन्धिककाण्डचरमान्तस्य चाष्टसु सहस्रेषु व्यवस्थितत्वा न्नवसु सहस्रेषु नवते. शताना माबात् सूत्रोक्तमन्तरमनवद्यमिति ॥ ९० ॥

नउइं धणूइं उद्धं उच्चत्तेणं होत्था अजियस्सणं अरहओ नउइगणा नउइगणहरा होत्था एवंसंतिस्सविसयंभु स्सणं वासुदेवस्स णउइवासाइं विजए होत्था सव्वेसिणं वट्टवेयड्ढपव्वयाणं उवरिल्लाओ सिहरतलाओ सोगंधिय कंडस्स हेट्ठिल्लेचरमंते एसणं नउइजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ९० ॥ एकाणउइं

दशमा अरिहंत ९० धनुष ऊंचा ऊंच पणे हुया । अजितनाथ बीजा अरिहंतने नेउ गछ नेऊ गणधर हुया । आवश्यके ९५ गणधर कह्या एमतांतर । शां तिनाथ १६ अरिहंतने ९० गणधर हुया । आवश्यके ३६ कह्या ते मतांतर छे। विमलनाथकालीन स्वयम्भू त्रीजो वासुदेव तेहने ९० वर्ष लगे विजय पृथिवी साधन व्यापार हुयो देश साधनाने ९० वर्ष लाग्या एभाव । सगलाई वृत्त वैताढ्य २० जम्बूमांहि हिमवत १ हरिवर्ष २ रम्यक ३ ऐरण्यवत ४ ए च्यिहुं क्षेत्रे शब्दापाती प्रमुख ४ वृत्त वैताढ्य छे धातकीखंड माहि एणेजक्षेत्रे आठछे पुष्करार्द्धे आठ सर्वमिली २० वृत्त वैताढ्यछे सगला १ सहस्र योजन ऊंचा छे स्त्तग लाई वृत्त वैताढ्य पर्वतना उपरिला शिखरतला थकी रत्नप्रभाये ८ सहस्र योजने सौगंधिक कांड छे तेहनो हेठिलो चरिमांत ९० से योजन अबाधाये विचाले आंतरो कह्यो । एतले वृत्त वैताढ्य १००० योजन ऊंचा सौगंधिक कांडलगे ८० से योजन सर्वमिली ९० से योजन थया ॥ इति ९० समवाय

अथैकनवतिस्थानकं किञ्चिद्वितन्यते। तत्र परेषामात्मव्यतिरिक्तानां वैयावृत्यकर्म्माणि भक्तपानादिभि रुपष्टम्भक्रिया स्तद्विषया' प्रतिमा अभिग्रहविशेषाः
परवैयावृत्तकर्म्मप्रतिमा एतानिच प्रतिमात्वेनाभिहितानि क्वचिदपिनोपलब्धानि केवलं विनयवैयावृत्यभेदा एते सन्ति तथाहि दर्शनगुणाधिकेषु सत्कारा
दिदशधा विनयः आहच सक्कार १ भुट्ठाणे २ सम्माणा ३ सणअभिग्गहो ४ तहय आसणअणुप्पयाणं ५ किइकम्म ६ अंजलि गहोय ७ ॥ १ ॥ इतस्सणुगच्छण
या ८ ठियस्सतहपज्जुवासणाभणिया ९ गच्छताणुव्वयणं १० एसोसुस्सूणाविणओत्ति तत्र सत्कारोवदनस्तवनादि अभ्युत्थानमासनत्यागः सन्मानोवस्त्रादिपूज
न आसनाभिग्रहः तिष्ठतएवासनानयनपूर्वकसुपविशताचेतिभणनमिति आसनानुप्रदानमासनस्य स्थानात् स्थानान्तरसञ्चारणं कृतिकर्म्मादीनि प्रकटानि
तथा तीर्थंकरादीना म्पंचदशाना म्पदाना मनाशातनादि पदचतुष्टयगुणितत्वे षष्टिविधोऽनाशातनादिविनयो भवति तथाहि तित्थयर १ धम्म २ आयरि

परवेयावच्चकम्मपडिमाओ प० कालोयेणं समुद्दे एकाणउइजोयणसयसहस्साइं साहियाइं परिक्खेवेणं प०

थयो ॥ ९० ॥ हिवे ९१ मो समवाय लिखेछे। ९१ भेदे वेयावच्च कर्म प्रतिमा परनो वेयावच्च कर्म भक्तपानादिके उपष्टंभक्रिया तेहनेविषे प्र
तिमा अभिग्रह विशेष ते पर वेयावच कर्म प्रतिमा कही। दर्शन गुणाधिक ने विषे सत्कारादिक १० भेदें विनय आहच सक्कार १ भुट्ठाणे २ सम्माणा ३
समणभिग्गहो तहय ४ आसण अणुप्पयाण ५ किइकम्म ६ अजलिगहोय ७ तस्सअणुगच्छणया ८ ठियस्सतहपज्जुवासणा ९ भणिया गछताणुवयण एह दशे
प्रकारे विनय कह्यो तथा तित्थयर १ धम्म २ आयरिय ३ वायगे ४ थेर ५ कुल ६ गणे ७ सघे ८ सभोगीय ९ किरिया १० । मतिज्ञानादिक ५ ज्ञान एव
१५ बोलने विषे बोल लगाडी एह १५ नी आसातना टालवी १ भक्ति २ बहुमान ३ गुणवर्णवोयें ४ तोपनरचौकें साठिथया पछे ७ लोकोपचार विनय अ

य ३ वायगे ४ थेर ५ कुल ६ गणे ७ संघे ८ संभोइय ९ किरियाए १० मइनाणाईणयतहेव ॥ १ ॥ अत्रभावना तीर्थंकराणामनाशातना तीर्थंकराऽनाशातना
तीर्थंकरप्रज्ञप्तस्य धर्मस्य अनाशातना एव सर्वत्र कायव्वापुणभत्ती बहुमाणोतहयवणवाओय अरहंतमाइयाण केवलणाणावसाणाणंति ॥ २ ॥ तथोपचारि
कविनय. सप्तधा यदाह अभासासण १ छंदाणु वत्तणं २ कयपडिकिईतहय ३ कारियनिमित्तकरण ४ दुक्खत्तगवेसणातहय ॥ १ ॥ तहदेसकालजाणण स
व्वत्थेसुतहयअणुमईभणिया ७ उवचारिओउविणओ एसोभणिओसमासेणंति ॥ २ ॥ अभ्यासासन उपचरणीयस्यान्तिके ऽवस्थान छन्दानुवर्त्तनमभिप्रा
यानुवृत्तिः कृतप्रतिकृतिनाम प्रसन्ना आचार्याः सूत्रादिदास्यन्ति ननाम निर्ज्जरेति मन्यमानस्याहारादिदान पदकारितनिमित्तकरण सम्यक्शास्त्रपदम
ध्यापितस्य विशेषेण विनयेवर्त्तन तदर्थानुष्ठान च शेषाणि प्रसिद्धानि तथा वैयावृत्त्य दशधा यदाह आयरियउवज्झाए थेरतवस्सीगिलाणसेहाणं। साहम्मिय
कुलगणसंघ संगयंतमिहकायव्वंति ॥ १ ॥ तत्र प्रव्राजना १ दिगु २ देश ३ समुद्देश ४ वाचना ५ चार्यभेदादाचार्यस्य पंचविधत्वा त्तदेव चतुर्दशधेत्येकनवति
विनयभेदा एते एव अभिगृह्नविषयीभूताः प्रतिमाउच्यन्त इति तथा कालोयणेत्ति कालोदः समुद्रः सचैकनवतिर्लक्षाणि साधिकानि परिक्षेपेण आधिक्य

आसायण १ छंदाणुवत्तण २ कयपडिकिईतहय ३ कारियनिमित्तकरण ४ दु:खत्तगवेषणा ५ तहय तह देशकाल जाणणा ६ सव्वत्थेसुतहयअणुमईभणियाः
७ एह सात लोकोपचार विनय तथा दर्शननो वेयावच्च करी आयरिय १ उवज्झाय २ थेर ३ तवस्सी ४ गिलाण ५ सेहाण ६ साहम्मिय ७ कुल ८ गण ९
संघ १० संगयतमिहकायव्वं ११ आचार्य ५ भेदें प्रव्राजना १ दिगु २ देश ३ समुद्देस ४ वाचनाचार्य ५ एह पांच आचार्य टाली विनय १ पछे उपाध्याया
दिक नवने पाच १४ अने सात लोकोपचार विनय भेद ६० तीर्थंकरादिकनो आशातना दस विनय सत्कारादिक सर्व मिली ९१ बोलथया। कालोदधि वी

त्व सप्तत्यासहस्रै. षड्भिःशतैः पञ्चोत्तरैः सप्तदशभिर्धनुःशतैः पंचदशोत्तरै सप्ताशीत्या चाङ्गुलैः साधिकैरिति आहोहियत्ति नियतक्षेत्रविषयावधयः आयु
गोत्रवर्ज्जाना षण्णामिति ज्ञानावरण दर्शनावरण वेदनीय मोहनीयनामान्तरायाना क्रमेण पच नव द्व ष्टाविंशति द्विचत्वारिंशत् पंच भेदानामिति ॥
९१ ॥ अथ द्विनवतिस्थानके किमप्यभिधीयते। द्विनवतिः प्रतिमा अभिग्रहविशेषाः ताश्च दशाश्रुतस्कन्धनिर्युक्त्यनुसारेण दर्श्यन्ते तत्र किल पच प्र
तिमाउक्ता स्तद्यथा समाधिप्रतिमा १ उपधानप्रतिमा २ विवेकप्रतिमा ३ प्रतिसलीनता प्रतिमा ४ एकविहारप्रतिमाचेति ५ समाधिप्रतिमा द्विविधा श्रु

कुंथुस्सणं अरहओ एकाणउइ आहोहियसया होत्था आउयगोयवज्जाणं छण्हं कम्मपगडीणं एकाणउइ उत्त
रपगडीओ प० ॥ ९१ ॥ बाणउइपडिमाओ प० थेरेणं इंदभूती बाणउइवासाइं सव्वाउय पाल

जोसमुद्र ९१ लाख योजन साधिक झाझेरो ते कहेछे ७० सहस्र ६ से ५ योजन पनरसे धनुष ८७ आगुल एतलो परिक्षेप परिधि कही। कुंथुनाथ अरिहंत
ने ९१०० अवधि ज्ञानी नियतक्षेत्र सवधी अवधि ज्ञानी हुआ। चउथो आउखा कर्म सातमो गोत्र कर्म २ एह कर्म टाली शेष थाकता छ कर्मनी उत्तर
प्रकृति ९१ ज्ञानावरनीयनी ५ दर्शणावरणीनी ९ वेदनी २ मोहनी २८ नाम कर्म ४२ अतराय ५ सर्व मिली ९१ उत्तर प्रकृति कही। इति ९१ समवाय
थयो ॥ ९१ ॥ हिवे ९२ लिखेछे। ९२ भेदे प्रतिमा अभिग्रह विशेष पहिलो ५ प्रतिमा समाधि प्रतिमा १ उपधान प्रतिमा विवेक प्रतिमा ३
प्रतिसलीनप्रतिमा ४ एक विहार प्रतिमा ५ पहिली समाधिप्रतिमाना २ भेद श्रुतसमाधि प्रतिमा चारित्र समाधि प्रतिमा चारित्र समाधि प्रतिमाना ६२
भेद आचारांगे प्रथमश्रुतस्कंधे ५ बीजे ३७ ठाणांगे १६ व्यवहारे ४ सर्वमिली ६२ भेदथया। उपधान प्रतिमा २२ यतिनो १२ श्रावकनो ११ एव २३ विवेकप्रो

॥
स्मेत्यादि भावार्थः मेरुमध्यभागात् जम्बूद्वीपस्य पञ्चाशत्सहस्राणि ततो द्विचत्वारिंशत् सहस्राण्यतिक्रम्य गोस्तुभपर्वतः इति सूत्रोक्तमन्तर भवतीति एवं शेषा
णामपि ॥ ९२ ॥ अथ त्रिनवतिस्थानके किमपि वितन्यते । तेणउइमंडलेत्यादि तत्र अतिवर्त्तमानोवा सर्ववाह्यात् सर्वाभ्यन्तरम्प्रति गच्छन् नि
वर्तमानोवा सर्वाभ्यन्तरात् सर्वबाह्यप्रति गच्छन् व्यत्ययोवा व्याख्येयः समग्रहोरात्र विषमं करोतीत्यर्थः अहश्च रात्रिश्च अहोरात्र तयोः समता तदा भवति
यदापञ्चदशमुहूर्त्ता उभयोरपि भवन्ति तत्र सर्वाभ्यतरमण्डले अष्टादश मुहूर्त्तमह र्भवति रात्रिश्च द्वादशमुहूर्त्ता सर्ववाह्येतु व्यत्ययः तथा त्र्यशीत्यधिकमण्ड
लशते द्वौद्वावेकषष्टिभागौ वर्द्धेते हीयेतेच यदाच दिनवृद्धि स्तदा रात्रिहानिः रात्रिवृद्धौच दिनहानिरिति तत्र द्विनवतितमे मण्डले प्रतिमण्डल मुहूर्त्तैकष
एसणं बाणउइं जोयणसहस्साइं अबाहाएअंतरे प० एवचउण्हंविआवासपव्वयाणं ॥ ९२ ॥
चदप्पहस्सणं अरहओ तेणउइगणा तेणउइगणहरा होत्था सतिरसणं अरहओ तेणउइ चउद्दसपुव्विसया
वास गोस्तूभपर्वत पूर्वसमुद्र मांहि ४२ हजार योजनहुयो तो मेरुनामध्यभागथकी गोस्तूभ आवास पर्वतनो पश्चिमचरमात ९२ हजार योजन आवाधाये
बिचाले आतरो कह्यो । मेरु पर्वतना दक्षिण पासना चरमांत दगभास पर्वतनो उत्तरपासनो छेहलो भाग ९२ हजार योजन आवाधायें विचाले आंतरो
कह्यो । मेरुपर्वतना पश्चिम चरमांतनो शंखआवास पर्वतनो पूर्वाभिमुख चरमांत ९२ सहस्र योजन अवाधाये लिचाले आंतरोकह्यो। मेरुपर्वतना उत्तराभि
मुख चरमांतनो दगसीम आवास पर्वतना दक्षिण दिशनो चरमांत ९२ सहस्रयोजन अवाधायें बिचाले आंतरो कह्यो। इति ९२ समवायथयो ॥ ९२ ॥
हिवे ९३ मोलिखेछे । चद्रप्रभ आठमा अरिहतना ९३ गछ ९३ गणधरहुया । शांतिनाथ सोलमा अरिहतने ९३ से चौदहपूर्वधर हुया । सूर्यनो एकसोचौ

ष्टिभागद्वयवृद्ध्या त्रयोमुहूर्त्ता एकेनैकषष्टिभागेनाधिका' वर्द्धन्ते वा हीयन्ते वा तेषुच द्वादशमुहूर्त्तेषु मध्येक्षिप्तेषु अष्टादशभ्यो पसारितेषु वा पञ्चदशमुहूर्त्ता उभयत्रैकेनैकषष्टिभागेनाधिका हीनावा भवन्त्यतो द्विनवतितममण्डलस्यार्द्धे समाहोरात्रता तस्यैवचांते विषमाहोरात्रता भवति द्विनवतितमलण्डलं चादित आरभ्य त्रिनवतितममण्डले यथोक्तसूत्रार्थ इति ॥ ९३ ॥ अथ चतुर्नवतिस्थानके किञ्चिद्विविच्यते । निसहेत्यादि इहपादोना सम्वादगाथा

होत्था तेणउइमंडलगतेणं सूरिए ऋनिवट्टमाणे विनिवट्टमाणे वा समअहोरत्तं विसमंकरेइ ॥ ९३ ॥

राशिमो मांडलो समुद्रमांहि तेसर्ववाह्य मडलतेहथकी सूर्यअभिवर्त्तमान सर्वाभ्यतर मडलभणी उत्तरायणे जातो तथा निषधमाथें सर्वाभ्यंतर मंडल तेहथ की दक्षिणायन सर्ववाह्य मांडलाप्रति जायछे तेवारे ९३ मे मडले सूर्य गयो थको दिवसने रात्रिने विषमकरे एतले अषाढो पूनिमे सर्वाभ्यन्तर मडले नि षधमाथे सूर्यउगे तेवारे दिवस ३६ रात्रि चौबीसी पछे श्रावणवदी १ दिने बीजेमांडले सूर्यआवे तेवारे एकमुहूर्तना ६१ भाग करीये तेहवा प्रतिमांडले प्र ति दिन बे बे भाग दिवस घटाडी रात्री वधारी दक्षिणायने चालता ३१ मेमांडले एक मुहूर्त दिवसघटे रात्रिबढे । वली तेमज एकसठिया बेबेभाग दिवस घटाडी एमकरतां ९२ मांडलेजाय तिवारे आसोजीपुनिमे ३० दिवस ३० रात्रि समदिवस समरात्रिकरैपछे ९३ मेमांडले सूर्य जाय तेवारे दिवसघटे रात्रि बढे तेमाटे दिनरात्रि विषमकरे अने सूर्य सर्ववाह्यमांडले दिवस २४ रात्रि ३६ पोसोपूनिमेकरी उत्तरायणभणी चाल्यो तोही एक मुहूर्तना एकसठिया २ भाग प्रतिदिवस दिनवधारे रात्रिघटाडे ९२ मेमाडले चैत्रीपूनिमे सम दिवसरात्रि ३० दिवस ३० रात्रीकरी ९३ मांडले दिवसरात्रि विषमकरे दिवस बढे रात्रिघटे एभावार्थ जाणिवो । इति ९३ मो समवाय थयो ॥ ९३ ॥ हिवे ९४ लिखेछे । त्रीजोवर्षधर निषध पर्वत चौथो नीलवत एवेहनी जी

जीवानिसहस्सेसन्ति ॥ ९४ ॥ अथ पंचनवतिस्थानकं किंचिल्लिख्यते। लवणसमुद्रस्योभयपार्श्वतोपि

चउणउइसहस्साइं छप्पण्णं हियंसयं कलादोय चउणउइ सहस्साइं सहस्रमुद्वेधउच्चत्व

पंचनवति. २ प्रदेशाउद्वेधोत्सेधपरिहानिभ्याविषये प्रज्ञप्ताः अयमत्रभावार्थः लवणसमुद्रमध्ये दशसाहस्रिकक्षेत्रस्य समधरणीतलापेक्षया पंचनवति २ प्रदेशाति

मित्यर्थः तदनन्तर पंचनवतिप्रदेशानतिक्रम्योद्वेधस्य प्रदेशाहीयन्ते ततोपिपंचनवतिं प्रदेशान् गत्वा उद्वेधस्य प्रदेशाः परिहीयन्ते एवं पंचनवति २ प्रदेशाति

क्रमे प्रदेशमात्रस्योद्वेधस्य हान्या पंचनवत्यायोजनसहस्रेष्वतिक्रान्तेषु समुद्रतटप्रदेशेषु उद्वेधतः सहस्रस्यापिपरिहानिर्भवतीत्यर्थः. समभूतलत्वंभवतीति तथा

समुद्रमध्यभागापेक्षया तत्तटस्य साहस्रिकउत्सेधोभवति उत्सेधश्चोच्चत्व तत्र समधरणीतलरूपा तत्तटा त्पंचनवतिप्रदेशानतिक्रम्य एकप्रदेशिका उत्सेधस्य

निसह नीलवंतियाउणं जीवाउ चउणउइ जोयणसहस्साइं एक्कं छप्पन्नं जोयणसय दोन्निय एगूणवीसइ

भागे जोयणस्स आयामेणं प० अजियस्सणं अरहउ चउणउइ उहिनाणिसया होत्था ॥ ९४ ॥

सुपासस्सणं अरहउ पचाणउइगणा पचाणउइगणहरा होत्था जंबूद्दीवस्स णं दीवस्स चरमंताउ चउद्दि

वा ९४ हजार योजन एकसोछप्पन योजन उपरि बे उगणीसकाङ्गया भाग एकयोजनना ९४१५६ योजन १९ कला आयामपणे लांबपणीकही। अजितनाथ

अरिहतने ९४ से अवधिज्ञानी हुआ। इति ९४ मो समवाय थयो ॥ ९४ ॥ हिवे ९५ मो लिखेछे। सुपार्श्व सातमा अरिहतने ९५ गछ ९५

गणधर हुआ। जंबूद्वीपना चरमांतथकी पूर्वादिक चिहुदिशि लवण समुद्रमांहि ९५ हजार योजन लगे गाहीने प्रवेश करीने चार महापाताल कलश

कह्या। तेकहेछे। पूर्वे समुद्रमांहि वडवामुख। दक्षिणे केतुक। पश्चिमे यूपक। उत्तरे ईसर। धातकीखंडथकी समुद्रमांहि उरहामध्यभाग भणी ९५ सहस्र

परिहानिर्भवति ततोपि पंचनवतिंप्रदेशान् गत्वा प्रादेशिक्ये चोत्सेधहानि र्भवति एवं पचनवतिपंचनवतिप्रदेशातिक्रमेणैवप्रादेशिक्या उत्सेधहान्या पंचनव त्यांयोजनसहस्रेष्वतिक्रांतेषु समुद्रमध्यभागे सहस्रमपि उत्सेधस्य परिहीयते एवंसाहस्रिकोत्सेधपरिहानौ साहस्रिकोद्वेधता भवति लवणस्येति अथचोद्वेधा थं योत्सेधपरिहानिस्तस्यापचनवतिः प्रदेशाः प्रज्ञप्ता स्तेष्वतिलङ्घितेषु उत्सेधतः प्रदेशेहान्यामुद्वेधः प्रादेशिको भवतीति तथा कुंथुनाथस्य सप्तदशतीर्थंकरस्य कुमारत्वमाडलिकत्वचक्रवर्त्तित्वानगारत्वेषु प्रत्येक त्रयोविंशते र्वर्षसहस्राणा मर्द्धाष्टमवर्षशतानां च भावात्सर्वायुः पचनवतिर्वर्षसहस्राणि भवन्तीति तथा

सि लवणसमुद्दं पंचाणउइ पंचाणउइ जोयणसहस्साइं उगाहित्ता चत्तारिमहापायालकलसा प० तं० वल या मुहे केऊए जूए ईसरे लवणसमुद्दस्स उभओ पासंपि पंचाणउयं पंचाणउयं पदेसाउ उव्वेउस्सेहपरिहा

योजन आवी जंबूद्वीपथकी परहा ९५हजार योजन लगे परहो मध्यभाग भणी जईयेती बिहूं ९५ मिली १ लाख ९० हजार योजन थया विचाले दस स हस्र योजन लगे समोपीठिकानिरूपे पाणीछे तिहा पृथ्वी तलनी अपेचाये १ हजार योजननी ऊंडी खाड पडीछे १ हजार योजन लगे ऊचोपाणी चव्या पछे पिहुला १० हजार योजन लगेछे तेहने दगमालकहिये तोते मध्यपिंड १० हजार योजनलगे दगमालथकी उभयपासे धातकी खंड भणीजाय। त या जबूद्वीप भणी उरहाआवीयेतोही ९५ आंगुले एकअगुल तथा ९५ हाते १ हात ९५ योजने १ योजन एम ९५ हजार योजन १ हजार योजनप्रदेशें २ मात्राये २ उद्वेधपणो ऊडपणोघटाडीये एमकरता ९५ सहस्र योजन अतिक्रमेथके समुद्रनोपाणी अनेभूमिबराबरीथाय ऊंडपण सगलोटले तथा समुद्रतट थकी ९५ आंगुले योजन २ समुद्रमध्यभागभणी जातां २ तट भूमिनो उत्सेधनो ऊचपणो प्रदेशें २ मात्राये २ हानिकरी भूमिऊडीकरतांजईये एमकरतां

मौर्यपुत्रो महावीरस्य सप्तमगणधरस्तस्य पंचनवतिवर्षाणि सर्वायुः कथं गृहस्थत्व छद्मस्थत्व केवलित्वेषुक्रमेण पंचषष्टिचतुर्दशषोडशानां वर्षाणांभावादिति ॥ ९५ ॥ अथ षण्णवतिस्थानके किमपि व्याख्यायते वायुकुमाराणांषण्णवतिर्भवनलक्षाणि दक्षिणस्यां पंचाशत् उत्तरस्यांच षट्चत्वारिंशतो भावादिति वाव हारिएत्ति व्यावहारिको येन गव्यूतादिप्रमाण चिंत्यते अव्यावहारिको लघुर्दीर्घो वा भवत्युक्तप्रमाणात् दंडोहि चतुःकरउक्तः करश्चतुर्विंशत्यंगुलः एवं चतुर्विं

णीए प० कुंथूणं अरहा पंचाणउइवाससहस्साइं परमाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे थेरेणं मोरियपुत्ते पंचाणउइवासाइं सव्वाउय पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे ॥ ९५ ॥ एगमेगस्सणं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स छण्णउइं छण्णउइं गामकोडीओ होत्था वायुकुमाराणं छण्णउइभवणावाससयसह

९५ हजार योजन अतिक्रमेथके तटभूमिनोजंचपणो हजार योजननोटले १ हजारनो ऊंडपणो समुद्रनोथाय एतलो। कुन्थुनाथ अरिहंतर २ सहस्र अने७५० वर्ष कुमार पणे एतलाज वर्ष मांडलीक राजपणे एतलाजवर्ष चक्रवर्तिपणे एतलाज वर्ष तीर्थंकरपणे सगलामिली ९५ सहस्र वर्ष उत्कृष्टो आउखोपालीने सिद्धथया तत्वनाजाण थया सर्वदुःख रहित थया। स्थविर मौर्य पुत्र महावीरनो सातमो गणधर ९५ वर्ष सर्वायुपालीने सिद्धथया। गृहाश्रमे ६५ छद्मस्थपणे १४ केवली पणे १६ सर्वमिली ९५ वर्षथया। इति ९५ मो समवाय थयो ॥ ९५ ॥ हिवे ९६ समवाय लिखेछे। एकेक चातुरंतचक्रवर्तीने ९६ कोडी गाम थया। वायुकुमार भवनपतीने ९६ लाख भवनावासा कह्या। दक्षिणदिशे ५० लाखउत्तरदिशे ४६ लाख बिहुमिली ९६ लाख थया। व्यवहारिक दंड

ग्रतो चतुर्गुणितायां षस्रवतिः स्यादेवेति अभंतराओ इत्यादि अभ्यन्तरादभ्यन्तरमण्डलमाश्रित्येत्यर्थः आदिमुहूर्त्तः षस्रवत्यंगुलच्छायः प्रज्ञप्तः अयमत्रभावार्थः सर्वाभ्यन्तरमण्डलेयत्रदिने सूर्यश्वरति तस्यदिनस्य प्रथमो मुहूर्त्तोद्वादशांगुलमान शंकुमाश्रित्य षस्रवत्यंगुलच्छायो भवति तथाहि तद्दिनमष्टादशमुहूर्त्तं प्रमाण भवतीति मुहूर्त्तोष्टादशभागो दिनस्य भवति ततश्चच्छायागणितप्रक्रिययाछेदेनाष्टादश लक्षणेन द्वादशांगुलः शंकुर्गुख्यत इति ततोद्वे शते षोडशोत्तरे भवतः २१६ तयोरर्द्धीकृतयो रष्टोत्तरं शत भवति १०८ ततश्च शङ्कुप्रमाणे १२ यनीते षस्रवतिरंगुलानि लभ्यन्ते इति ॥ ९६ ॥ अथ सप्तनवतिस्थानकी

रसा प० ववहारिएणं दंळे बस्रउइ अंगुलमाणेणं एवं धणू नालिया जुगे अक्खे मुसलेवि अभ्रिंतरन आइ मुजत्ते बस्रउइ अंगुलच्छाए प० ॥ ९६ ॥ मंदरस्सणं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाउ चरमंताउ

तेजेणे गाउकोस चिंतवीयें अव्यवहारिक नान्होपणि होय मोटोपणि होय ते व्यवहारिक दड ९६ अंगुल प्रमाणे कह्यो २४ अगुल नोहाथहोय चिहुंहाथे १ दड होय एम करतां ९६ अगुल कह्या। एम ९६ अगुलनोधनुषनालिका यूप भूसरी अच मूशलएहसर्व ९६। ९६ अगुलनो होय। निषधने माथे सर्वाभ्यंतर मांडले दिवस अठारह मुहूर्तनो होय तो सर्वाभ्यंतर मडले सूर्यउगे तिवारे पहिलो मुहूर्त ९६ अंगुल छाया प्रमाण होय १२ अगुलनो ढणजभोकरीये तेहनी छाया ९६ अंगुल होय तिवारे कर्क सक्रांतिनो पहिलो मुहूर्त कहिये एतले ९६ अंगुल २ घडी दिवस कहिये तेकेम १८ मुहूर्त दिवसनाते १२ अगुल ढण त्रिगुण कीजे एतले १८ वार गुणा कीजे तो २१६ होय तेहनो अर्द्ध १०८ एह आंकमाहि ढण प्रमाण अगुल १२ काढी पूठी ९६ अंगुल उगरे ॥ इति ९६ मो संपूर्ण ॥ ९६ ॥ हिवे ९७ मो लिखेछे। मेरु पर्वत १० सहस्र पिहुलो तेहथकी पूर्वनी जगती ४५ सहस्र योजन तेहथी ४२ सह

किञ्चिदभिधीयते। मंदरेत्यादि भावार्थोयं मेरोः पश्चिमान्तात् जम्बूद्वीपांतः पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणि ततो द्विचत्वारिंशतो गोस्तुभइति यथोक्तमेवान्तर मिति हरिषेणो दशमचक्रवर्त्ती देशोनानि सप्तनवतिम्वर्षशतानि गृहमध्युषित स्त्रीणिचाधिकानि प्रव्रज्यां पालितवान् दशवर्षसहस्राणि तदायुष्कस्येति ॥ ९७ ॥ अथाष्टनवतिस्थानके किंचिदभिधीयते नंदणवणेत्यादि भावार्थोयं नन्दनवन मेरोः पंचयोजनशतोच्छ्रितप्रथममेखलाभावि पंचयोजनशतोच्छ्रि

गोथुभस्सणं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं सत्ताणउइ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं चउदिसिंपि अठण्हं कम्मपगडीणं सत्ताणउइ उत्तरपगडीउ प० हरिसेणेणं राया चाउरंतचक्कवट्टी देसूणाइं सत्ताणउइवाससयाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ताणं जाव पव्वइए ॥ ९७ ॥

नंदणवणस्सणं उवरिल्लाउ चरमंताउ पंडयवणस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं अठाणउइजोयणसहस्साइं अबा

स्रयोजन गोस्तूभपर्वत मेरुपर्वतना पश्चिम चरमांतथकी वेलधर नागराजानो गोस्तूभ आवास पर्वतनो पश्चिमचरमांतएह ९७ सहस्र योजन आबाधाये विचाले आंतरो कह्यो । एमज चिहुदिशि दक्षिण समुद्रमांहि दगभास पश्चिमेशंख उत्तरे दगसीम एह ४ नो आंतरोकह्यो आठे कर्मनी ९७ उत्तर प्रकृति कही नाणावरणी ५ दरसनावरणी ९ वेदनी २ मोहनी २८ आउखा ४ नामकर्म४२ गोत्र २ अंतराय ५ सर्वमिली ९७ उत्तरप्रकृति हुई। नमिनाथ अरिहंतने वारे हरिषेण दशमोचक्रवर्ती राजा देशोन कांइकऊणां ९७ सेवर्षलगे गृहस्थाश्रमे वसीने मुडथईने अगारथकी साधुपणूं पाम्यो ३०० वर्षझांझेरा दीक्षापाली १० हजारवर्ष सर्वायुपाली सीधीमोक्षपहुतो ॥ इति ९७ मोसमवायथयो ॥ ९७ ॥ हिवे ९८ मोलिखेछे। मेरुनो नंदनवनपहिली मेख

तं तन्नतपञ्चयोजनशतोच्छ्रितकूटाष्टकस्य तद्ग्रहणेन ग्रहणात् तथा पण्डकवनंच मेरुशिखरव्यवस्थितमतो नवनवत्यामेरी रुच्चैस्त्वस्य आद्ये सहस्रे अपकृष्टे यथो क्तमन्तर भवतीति गोस्तुभसूत्रभावार्थः पूर्वव ग्रवरं गोस्तुभविष्कम्भसहस्रे चिप्ते यथोक्तमन्तर भवतीति वेयट्टस्सणमित्यादि यः केषुचित्पुस्तकेषु दृश्यते सोप पाठः सम्यक्पाठ स्वाय दाहिणभरहद्धस्सणं धणुपिट्ठे अट्ठाणउइं जोयणसयाइं किंचूणाइं आयामेणं पणत्ते इति यतोन्यत्रोक्तं नवचेवसहस्साइं छावट्ठाइं सया इं सत्तभवे सविसेसकलाचेगा दहिणभरहधणुपट्ठति वैताढ्यधनुः पृष्टं त्वेवमुक्त मन्यत्र दसचेवसहस्साइं सत्तेवसयाहवंतितेयाला धणुपट्ठवेयद्धे कलायपणर

हाए अंतरे प० मंदरस्सणं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोथुभस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसणं अट्ठा णउइजोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं चउदिसिंपि दाहिणभरहस्सणं धणुप्पिठे अट्ठाणउइजोयण

लायें भूमिथकी ५०० योजन ऊचोछे तेमांहि ५०० योजना कूटऊंचाछे तोभूमीथकी तेकूटना शिखर १ सहस्रयोजनऊंचा तिहांलगी नंदनवनकहीये मेरुपर्वत लाख योजनकह्यो तेमांहि १ हजार योजन भूमिमाहि १ सहस्रनो नंदनवन एव २ सहस्रनीकल्या लाखमांहियी तेमाटे नंदनवननो उपरिलो चर मात मेरुने माथे पडकवनछे तेहनो हेठिलो चरमात एह ९८ सहस्र योजन अवाधाये विचाले आंतरोकह्यो। मेरुपर्वत थकी ४५ हजार योजन जगती हुईते थकी पूर्व समुद्रमांहि गोस्तूभ पर्वत ४२ हजारयोजन १ हजारयोजन तेपिहुलोछे। मेरुपर्वत १० हजार योजन जाडोछे तोमेरुपर्वतना पश्चिम चरमांतथी वेलधर नाग राजानो आवास गोस्तूभपर्वत पूर्वसमुद्रमांहिछे। तेहनो पूर्वचरमांत ९८ हजार योजन अवाधाये विचाले आंतरोकह्यो। एमचिहुदिशि दचि ण समुद्रमांहि दगभास पश्चिमसमुद्रमांहि शख उत्तरसमुद्रमांहि दगसीम एहचिहुनोआंतरोगोस्तुभनीपरेजाणवो दचिणार्द्ध भरतचेत्रनो धनुपृष्ट ९८।

सहवति उत्तराश्रीणमित्यादि भावार्थः पूर्वोक्तानुसारेणावसेयः नवर मिह एकत्तालीसइमे इति केषुचित्पुस्तकेषु दृश्यते सोपपाठः एगूणपंचासइमेत्ति एको

सयाइं किंचूणाइं आयामेणं प० उत्तराउ कठाउ सूरिए पढमं छम्मासं अयमाणे एगूणपन्नासतिमे मंडल गते अठाणउइ एकसठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुढेता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढित्ताणं सूरिए चारं चरइ दक्खिणाउणं कठाउ सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे एगूणपन्नासइमे मंडलगते अठाणउइ एक

से योजन कांइ ओछो लांबपणे कह्यो । उत्तर दिसथकी सर्वाभ्यंतर मांडलाथकी सर्वाभ्यंतर मांडले निषधने माथे आषाढी पूनिमे अठारह मुहूर्तनोदिवस १२ मुहूर्तनी रात्रिहुये पछे श्रावण वदी १ दिने सूर्य उत्तर दिशिथकी दक्षिणायने चाल्यो तिवारे बीजे मांडले आयो तेवारे १ मुहूर्तना ६१ या भाग कीजे एहवा प्रतिदिन मांडले बेबेभाग दिवस घटाडे रात्रिवधारे बीसमे मांडले जाय तेवारे १ मुहूर्त दिवस घटे रात्रि बधे एमज सर्वबाह्य मंडला लगें कीजे सर्वबाह्य मंडले दिवस १२ मुहूर्त रात्रि १८ मुहूर्त वलीफरी मांडी उत्तरायणे सूर्य चाल्यो तिवारे बीजामांडलाथकी मुहूर्तना ६१ या बेबे भाग प्रति दिन दिवस वधारे रात्रि घटाडे साठि भागे मुहूर्त एक बांधीये सर्वाभ्यतर मंडल लगे पछे सर्वाभ्यतर मडले १८ मुहूर्त दिवस १२ मुहूर्तरात्री हुयें सूर्य प हिले छम्मासे दक्षिणायन भणी आवतोथको एकोनपचासे माडले गयोथको ९८ एकसठिया भाग एक मुहूर्तना दिवसनो चेत्र दिवसे घटाडी रात्रीनूं चेत्र रात्रियेवधारी सूर्य चारचरे । सर्वबाह्य मडल थकी दक्षिणायनथको सूर्य बीजे छमासे उत्तरायनभणी आवतोथको एकोनपचासमे मडले गयोथको ९८ एक सठिया भाग एक मुहूर्तना रजनीनां चेत्रने घटाडीने दिवसनोचेत्रने वधारीने सूर्य चारचरे एतले उत्तरायणे रात्रि घटे दिवस बधे दक्षिणायने रात्रि बधे

नपचाग्रतो द्विगुणत्वे अष्टनवतिर्भवति द्वयगुणनंच प्रतिमण्डलं मुहूर्त्तैकषष्टिभागद्वयवृद्धे दिनस्यरात्रे वैति । रेवईत्यादि रेवतिः प्रथमायेषां तानि रेवतिप्रथमानि तथाज्येष्ठापर्यवसानानीति तानि चतानिचेति कर्म्मधारयः तेषामेकोनविंशते र्नचत्राणामष्टनवतिस्तारा स्तारापरिमाणेन प्रज्ञप्ता स्तथाहि रेवतिनचत्रं द्वात्रिंशत्तारं अश्विनीत्रितारं कृत्तिकाषट्तारं रोहिणीपंचतारं मृगशिरस्त्रितारं आर्द्राएकतार पुनर्वसुः पंचतारं पुष्यस्त्रितारं अश्लेषा षड्तारं मघा सप्ततारं पूर्वाफाल्गुनीद्वितार उत्तराफाल्गुनीद्वितार हस्तः पंचतार चित्राएकतारं स्वातिरेकतारं विशाखापंचतार अनुराधाचतुस्तारं ज्येष्ठात्रितारमित्येवं सर्वतारामीलने यथोक्तं ताराग्रमेकोन ग्रथांतराभिप्रायेण भवति अधिकृतग्रंथाभिप्रायेण त्वेषा मेकतरस्य एकताराधिकत्वम् सम्भाव्यते ततो यथोक्ता स्तत्संख्याभवतीति ॥

सठिनाए मुहुत्तस्स रयणीखेत्तस्स बुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिबुड्ढित्ता णं सूरिए चारं चरइ रेवईपढम जेठापज्जवसाणाणं एगूणवीसाए नक्खत्ताणं अठाणउइताराउ तारग्गेणं प० ॥ ९८ ॥

दिवस घटे प्रतिदिवस १ मुहूर्तना ६१ या बेबे भाग प्रति मडले घटाडीये वधारिये । रेवतीनचत्रछे पहिलो ज्येष्टानचत्रछे पर्यवसान छेहडो जेहने एहवा उगणीसनचत्र ने ९८ तारा ताराग्रेणतारापरिमाणे कह्या । रेवतीनचत्रना ३२ तारा । अश्विनीना ३ तारा । भरणीना ३ । कृतिकाना ६ । रोहिणीना ५ मृगसिरना ३ । आर्द्रानो १ । पुनर्वसुना ५ । पुष्यना ३ । अश्लेशना ६ । मघाना ७ । पूर्वाफाल्गुनीना २ । उत्तराफाल्गुनीना २ । हस्तना ५ । चित्रानो १ । स्वातो १ । विशाखाना ५ । अनुराधाना ४ । जेष्ठाना ३ । एह १९ ना सर्वमिली ९८ तारायया । इति ९८ मो ययो ॥ ९८ ॥ हिवे ९९ मो लिखेछे

९८ ॥ अथ नवनवतिस्थानके किमपि लिख्यते । नंदनवणेत्यादि अस्यभावार्थः मेरुविष्कम्भो मूले दशसहस्राणि नन्दनवनस्थानेतु नवनवतियोजनश तानि चतुःपचाशच्चयोजनानि षट्योजनैकादशभागा बाह्योगिरिविष्कम्भो नन्दनवनाभ्यन्तरस्तु मेरुविष्कम्भ एकोननवति शतानि चतुःपंचाशदधिकानि प ट्चेकादशभागा स्तथा पचशतानि नन्दनवनविष्कम्भः तदेवमभ्यन्तरगिरिविष्कम्भो द्विगुणं नन्दनवनविष्कम्भश्चमीलितो यथोक्तमन्तर मायोभवति पढमसूरिय

मंदरेणं पव्वएणवणउइजोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० नंदणवणस्सणं पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ पच्चत्थि मिल्ले चरमंते एसणं नवनउइजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० एव दक्खिणाउ चरमंताउ उत्तरिल्लेचरमंते एसणंणवणउइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० उत्तरे पढमसूरियमंडले नवणउइजोयणसहस्साइं

मेरूपर्वत ९९ सहस्र योजन ऊचो ऊचपणे कह्यो । भूमिथकी ५०० योजन मेरुने विषे ऊचा चढीये पहिली मेखला तिहां नंदनवन पामीये तेह नंदन वन ५०० योजन पिहुलो छे नदनबननो पूर्व चरमात तेहथी पश्चिम चरमांत लगे ९९०० से योजन आवाधाये विचाले आंतरो कह्यो । मेरुनो विष्कभ मूले १०००० योजन नदनबन स्थाने बाह्य गिरि विष्कभ ९९०० योजन १ योजनना ११ हिया ६ भाग नदनबन मांहि मेरुनो विष्कभपणो ८९ से योजन ५४ योजने ११ हीया ६ भाग नदनबन ५०० योजन पिहुलोते दुगणोलीजे अनेमेरुनो अभ्यतर विष्कभपणो लीजेतो ९९०० योजन आंतरो हुयो। एमज नदनवनना दक्षिण चरमांतथकी नंदनबननो उत्तर चरमांतनो आंतरो ९९०० से योजन थयो । निषधने माथे सर्वाभ्यतर मांडलोछे तेहपूर्व दिशनो तेहीज कंकणने

मंडलेत्ति इहजम्बूद्वीपप्रमाणस्याशीत्युत्तरशते द्विगुणिते अपहृते योराशिः सप्रथममण्डलस्यायामविष्कंभः सच नवनवतिसहस्राणि षट्च शतानि चत्वारिंशद धिकानि द्वितीयन्तु नवनवतिः सहस्राणि षट्शतानि पचचत्वारिंशच्च योजनानि योजनस्यच पचत्रिंशदेकषष्टिभागाः कथं मण्डलस्यमण्डलस्यचान्तर द्वेद्वेयोज मे सूर्यविमानविष्कम्भ श्चाष्टचत्वारिंशदेकषष्टिभागाः एतद्विगुणितं पचयोजनानि पचत्रिंशदेकषष्टिभागाश्चेति जातमेतच्च पूर्वमण्डलविष्कंभे च्चिप्त जातमुक्ताम

साइरेगाइं आयामविक्खंभेणं प० दोच्चे सूरियमंडले नवनउइजोयणसहस्साइं साहियाइं आयामविक्खं

आकारे फिरतो पश्चिमनोनीलवत ने माथे ते सर्वाभ्यंतर मांडलो जम्बूद्वीपमाही १८० योजनछे पूर्वदिशिनो अने पश्चिमनो पणि एतलोज छे तो जंबूद्वीपन जीवा लांबपणे लाख योजनछे ते मांहि थी ३६० य.जन मांडलो भूमिमाकाढी लाख योजनमांहि थी पूठें पूर्वसर्वाभ्यतर मडल अने पश्चिम सर्वा भ्यतर मडलने ९९४० योजन आतरो थयो । पहिलो सर्वाभ्यतर सूर्यनो मांडलो ९९ सहस्र योजन सातिरेक झाझेरेते ६४० योजन आयामं पश्चिमे लांब पणे दक्षिण उत्तरे विष्कभपिहुलपणे आंतरो जाणिबो लाख योजन माहियी ३६० योजन काढी पूठें ९९६४० योजन ऊगरे पहिले मांडले पूर्वनो बीजो मांडलो अने पश्चिमनो बीजो मांडलो ९९६४५ योजन १ योजनना ६१ या भाग ३५ लांबपणे पिहुलपणे आंतरो । तेकेम पहिला मांडलाथी बीजो मांड लो २ योजन अने मांडलानूं पिहुलपणूं १ योजनना ६१ या ४८ भाग पश्चिमनो पणि एतलोजविहुंदिशमिलो पहिला बीजामांडलानां आतराना योजन मंडल पिहुलपणो मिलो ५ योजन भाग ३५ एह सर्वाभ्यंतर मांडलाना प्रथमना आंकमांहि घातिये एतले ९९६४० योजन मांही ५ योजन ६१ यापैंत्रीस भाग घातिये तिवारे ९९६४५ १ योजन ६१ या ३५ भाग आंतरोबीजामाडलानो हुवे हिवेसूर्यनो पूर्व पश्चिमनो त्रीजो मांडलो ९९६५१ योजन ६१ । ९

माणमिति तृतीयमण्डलविष्कम्भोप्ययमेवावसेय: सच नवनवतिसहस्राणि षट्शतानि एकपचाशत्योजनानि नवैकषष्टिभागाश्चेति इमीसेणमित्यादि भावा र्थीयं अञ्जनकाण्डंदशम तत्रच रत्नप्रभोपरिमांतात्छतं शताना भवति प्रथमकाण्डे प्रथमशतेच व्यन्तरनगराणि सन्तीति तस्मिन्नपसारिते नवनवतिशतान्य न्तरं सूत्रोक्तं भवतीति ॥ ९९ ॥ अथ शतस्थानकं किञ्चिल्लिख्यते। तत्र दशदशमदिनानि यस्या सा दशदशमिका याहि दिनानादशदशका

न्नेणं प० तइएसूरियमंडले नवनउइजोयणसहस्साइं साहियाइं आयामविक्खंभेणं प० इमीसेणं रयणप्प भाए पुढवीए अंजणस्स कंडस्स हेठिल्लाउ चरमंताउ वाणमंतरभोमेज्जाविहाराणं उवरिमते एसणं नव नउइजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ९९ ॥ दसदसमियाणं भिक्खुपडिमा एगेणं रा

भाग पूर्व अने पश्चिमनां मंडलने आंतरो दक्षिणने उत्तर मडले आतरो तेहीपिण बीजामांडलानीपरे ५ योजन भाग ३५ त्रीजेमांडलेवधारिये ९९६४५ योजन भाग ३५ माहिघातिये तिवारे ९९६५१ योजन ६१। ९ भाग आंतरो थाय। त्रीजो मांडलो आयाम लांबपणे विस्तभ पिहुलपणे कह्यो। एणीये रत्न प्रभा पृथिवी ये ३ कांड मांहिपहिलोकांड १६ हजारनो १६ जाति रत्ननी तेकांडप्रत्येकें १ सहस्रनोछे तो रत्नप्रभानो दशमो अंजन कांड तेहनो हेठिलो चरमांत समभूतलथी १० हजारयोजनछे तिहांथकीमांडी उपरि रत्नप्रभाना १०० योजन मांहीवानव्यंतरनाभूमि संबंधी विहार क्रीडा नगरछे तेहनोउ परिलो चरमांत ९९०० से योजनआबाधाये विचाले आंतरो कह्यो। एतले १० हजार योजन मांहिथी व्यंतर संबंधी १०० योजन बाहिर काढीये तिवारे ९९ से योजन उगरे। इति ९९ मोसमवाय थयो ॥ ९९ ॥ हिवे १०० मोलिखेछे। पहिला दस दिहाडा लगे एकेकी भिचा दातीले पछे बीजे

नि भवन्ति तत्रभवन्ति दशदशमदिनानि शतश दिनाना मतउच्यते एकेनरात्रिंदिवसशतेने ति यस्यांच प्रथमेदशके प्रतिदिनमेकैकाभिचा द्वितीयेद्वेद्वे एवं यावद्दशमेदशदशेत्येवं सर्वभिचासंकलने सूत्रोक्तसंख्याभवत्येव इति पार्श्वनाथ स्त्रिंशद्वर्षाणि कुमारत्व सप्ततिचानगारत्वमित्येव शतमायुः पालयित्वा सिद्धः एवं थेरेविअज्जसुहमेत्ति आर्यसुधर्म्मामहावीरस्य पंचमोगणधरः सोपि वर्षशतं सर्वायुः पालयित्वा सिद्ध स्तथाच तस्यागारवासः पंचाशद्वर्षाणि छद्मस्थपर्यायो

इंदियसतेणं अहुब्बठेहिं निक्कासतेहिं अहासुत्तं जावआराहियाविभवइ सयहिस्सिया नक्खत्ते एक्कसय तारे प० सुविहीपुप्फदंतेणं अरहा एगंधणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्या पासेणंअरहापुरिसादाणीए एक्कंवा ससयं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धेजावप्पहीणे एवं थेरेवि अज्जसुहम्मे सव्वेविणं दीहवेयड्ढपव्वयाएगमेगं गा

दशके बे बे भिचा एम दस दसक लगे एकेक भिचावधारीयेते प्रतिमा दश दशमिका कहीये। तेप्रतिमा दश दशमिका भिचा प्रतिमा एकरात्रि दिवस सते एतले १०० अहोरात्रियें अने साढे पांच से भिचाये करी यथा सूत्रोक्त प्रकारे यथा मार्गे आराधी होय एणी प्रकारे। शतभिषा नचत्रना एक सो तारा कह्या। नवम सुविधिनाथ बीजोनाम पुष्पदंत अरिहंत १०० धनुष ऊंचा ऊंच पणे हुया पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषादानीय महासोभागी ३० वर्ष गृहाश्रमे कुमारपणें ७० वर्ष यतिपणे १०० वर्ष सगलो आउखोपालीने सिद्ध थया समस्तदुःखथकी प्रचीणथया। एमज श्री महावीरनो पाचमो गणधर आर्य सुधर्म स्वामी गृहाश्रमे ५० वर्ष छद्मस्थपणें ४२ वर्ष केवलीपणे ८ वर्ष सर्वमिली १०० आउखोपालीने सिद्धथया। जम्बूद्वीप मांहि ३२ विजयना ३२ भ

द्विचत्वारिंश त्केवलिपर्यायोष्टीभवति चैतद्राशित्रयमीलने वर्षशतमिति वैताढ्यादिषूच्चत्वम् चतुर्थांशउद्वेधः कांचनका उत्तरकुरुषु देवकुरुषु क्रमव्यवस्थितानां पचानां महाद्रहाना मुभयतो दशव्यवस्थिता स्तेच जम्बूद्वीपे शतद्वयसख्यासमवसेया इति ॥ १०० ॥ अथैकोत्तरस्थानवृद्धा सूत्ररचना परित्यज्य

उयसयं उड्ढं उच्चत्तेणं प० सव्वेविणं चुल्लहिमवंतसिहरीवासहरपव्वया एगमेगंजोयणसयं उड्ढंउत्तेणं प० एगमेगं गाउयसयं उव्वेहेणं प० सव्वेविणं कंचणगपव्वया एगमेगं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं प० एगमेगं गाउयसयं उव्वेहेणं प० एगमेगं जोयणसयं मूले विक्खम्भेणं प० ॥ १०० ॥ चंदप्पभेणं अरहा

रत ऐरवतना २ एव ३४ दीर्घवैताढ्य एह बेगुणा धात की खड पुष्करार्द्ध माहि तो सगला दीर्घ वैताढ्य पर्वत एकेक सो गाऊ ऊचपणें कह्या । एतले वैताढ्य पर्वत २५ योजन ऊंचा तेहनागाऊ १०० हुया अने ऊंचपणानो चौथो भाग भूमि माहिहोय । सगलाही अढीद्वीप माहिला चुल्ल लघु हिमवत वर्षधर पर्वत वर्ष कहता क्षेत्रतेहनी मर्यादाना करणहार ५ अने शिखरीपर्वत ५ एकेक १०० योजन ऊचा जाणिवा । अने एकेक १०० गाऊ उद्वेधपणे भूमि मांहि ऊडपणें कह्या । उत्तर कुरु मांहि नीलवंतादिक ५ द्रहछे एकेक द्रहने बिहूंपासे दस दस काचन गिरिछे सर्वमिली १०० थया । देवकुरूमांहि निषधादिक ५ द्रहछे एकेक द्रहने बिहूंपासे दस दस कांचनगिरिछे सर्वमिली १०० योजन देवकुरू उत्तरकुरू मिली २०० कांचनगिरि छे । जबूद्वीप माहि बेगुणा धातकी खड पुष्करार्द्धमांही तेसगलाई सो सो योजन ऊंचा कह्या । एकेकासो गाऊ उद्वेधें भूमि माहि ऊडा एकेकसो योजन मूलें एतला पिहुला कह्या । इति १०० मो समवाय थयो ॥ १०० ॥ हिवे १५० मो समवाय लिखेछे । चद्रप्रभ आठमा अरिहत १५० धनुष ऊंचा ऊ

पश्चाग्मच्छतादि वृद्धा तां कुर्वन्नाह चंदप्पहेत्यादि सुगमञ्च सर्वमाद्वादशाङ्गगणिपिटकसूत्रा न्नवरं॥ १५० ॥ २०० ॥ पासायवडिंसयत्ति अवतंसका: शेखरका: कर्ण पूराणिवा अवतसका: प्रधानाइत्यर्थ: प्रासादाश्च ते अवतसका: प्रासादानाम्वा मध्ये अवतसका: प्रासादावतंसका: ॥ २५० ॥ तथा पंचधणुसतियस्सणमित्यादि

दिवड्ढं धणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था आरणे कप्पे दिवड्ढं विमाणावाससयं प० एवं अच्चुएवि ॥ १५० ॥ सुपासेणं अरहा दोधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था सव्वेविणं महाहिमवंतरुप्पीवासहरपव्वया दो दो जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० दोदोगाउयसयाइं उव्वेहेणं प० जंबूद्दीवेणं द्दीवे दोकंचणपव्वयसया प० पउमप्पन्नेणं अरहा अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था असुरकुमाराणं देवाण पासायवडिंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण प० ॥ २५० ॥ सुमईणं अरहा तिन्नि धणुसयाइं उड्ढं

चपणें हुया। इग्यारमा आरणदेव लोकने विषे १५० विमाना वासा कह्या। बारमेअच्युतकल्पे १५० विमान विहूंमिली ३०० विमानछे। इति १५० नो थयो ॥ १५० ॥ हिवे २०० नो लिखेछे। सातमा सुपार्श्व अरिहत २०० धनुष ऊंचा ऊंच पणे थया। सगला महाहिमवत पांच रूपी वर्षधर अढाई द्वीप माहिला बेबेसो योजन ऊंचा ऊंच पणें हुया। बेबेसे गाऊ उद्वेधपणे भूमिमाहि ऊंड पणें कह्या। जबूद्वीपने विषे २०० कांचन पर्वत ते पूर्वे कह्याछे॥ इति २०० मो थयो ॥ २०० ॥ हिवे २५० मो लिखेछे। छठा पद्मप्रभ अरिहत २५० धनुष ऊंचाऊंच पणें हुया। असुरकुमार ते भवनपति देवताना प्रासादावतसक मोटाप्रासाद २५० योजन उंचाऊंच पणें कह्या॥ इति २५० मो थयो ॥ २५० ॥ हिवे ३००

पञ्चधनुः शतप्रमाणस्य अंतिमसारीरियस्सत्ति चरमशरीरस्य सिद्धिङ्गतस्य सातिरेकाणि त्रीणिशतानि धनुषा ञ्जीवप्रदेशावगाहना प्रज्ञप्ता यतोसौ शैलेशीकर णसमये शरीररन्ध्रपूरणेन देहत्रिभाग म्विमुच्य घनप्रदेशोभूत्वा देहत्रिभागद्वयावगाहनः सिद्धिमुपगच्छति सातिरेकत्वञ्चैव तिन्निसयातित्तीसा धणुत्तिभागोय

उच्चत्तेणं होत्था अरिठ्ठनेमीणं अरहा तिन्निवाससयाइं कुमारवासमज्झे बसित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्व इए वेमाणियाणं देवाणं विमाणपागारा तिन्नि तिन्नि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० समणस्स भगवउ महावीरस्स तिन्निसयाणि चोद्दसपुव्वीण होत्था पंचधणुसइयस्सणं अतिमसारीरियस्स सिद्धिगयस्स साति रेगाणि तिन्निधणुसयाणि जीवप्पदेसोगाहणा प० ॥ ३०० ॥ पासस्सणं अरहउ पुरिसादा

मो लिखेछे। पांचमा सुमतिनाथ अरिहत ३०० धनुष ऊचा ऊंच पणेंहुया। बावीसमा अरिष्टनेमी अरिहत ३०० वर्ष कुमारपणें वसी मुंडथया ७०० वर्ष दीक्षापाली सिद्धथया सर्वदु:ख प्रक्षीण थया। वैमानिक देवताना विमाननाप्राकार गढ ३०० योजनऊंचा ऊचपणें कह्या। श्रमण भगवंत श्री महावीरने ३०० चौदह पूर्वधरहुया। ५०० धनुष जेहनूं शरीर होय अंतिम शारीरी होय चरमशरीरी होय चरम सिद्धियें पहुतो होय तेहने सिद्धिने विषे ३०० धनुष झाझेरा तेउपरि ३३ धनुष जीवप्रदेशनी अवगाहणाकही। केवलीनोंजेतलो शरीर होय ऊचपणें तेहनां ३०० भाग करीये त्रीजे भागे नासिका कर्णादिक ना शरीरांतर्गत पोलार पूरीये पछे २ भाग जीव सिद्धिउपर योजनने २४ मे भागे आकाश प्रदेश छांईनेरहेतो ५०० धनुष त्रिभागोक्त शरीरना ३३३ ध नुषभावे एतला सिद्धना जीवनी अवगाहणा जीव प्रदेश समान इति ३०० मो समवायथयो ॥ ३०० ॥ हिवे ३५० मो लिखेछे पार्श्वनाथ अरिहत पुरु

होइबोधव्वो एसाखलुसिद्धाणं इक्कोसोगाहणाभणियत्ति ॥१॥ ३०० ॥ ३५० ॥ सव्वेविणंवक्खारपव्वएत्यादि वच्चस्कारपर्वता एकमेरुप्रतिबद्धा विंशति स्तेच वर्षधरा

णीयस्स अट्ठुठसयाइं चोद्दसपुव्वीणं होत्था अभिनंदणेणं अरहा अट्ठुठाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ३५० ॥ संभवेणं अरहा चत्तारिधणुसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं होत्था सव्वेविणं णिसहनीलवंतावासहरपव्वया चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं चत्तारि चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं प० सव्वेविणं वक्खार पव्वयाणिसढनीलवंत वासहरपव्वयएणं चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं चत्तारि चत्तारि गाउसयाइं उव्वेहेणं प० आणयपाणएसु दोसु कप्पेसु चत्तारिविमाणसया प० समणस्सणं भगवन्

पादानी महा सोभागी तेहना ३५० चौदह पूर्वधर हुया। चौथा अभिनंदन अरिहंत ३५० धनुष ऊंचा ऊंच पणे कह्या। इति ३५० नो थयो ॥ ३५० ॥ हिवे ४०० नो लिखे छे। त्रीजा संभवनाथ अरिहंत ४०० धनुष ऊंचा ऊंच पणे हुया। सगलाही अढाई द्वीप मांहिला ५ निषध ५ नीलवंतवर्षधरपर्वत क्षेत्र मर्यादा कारी चार चार से योजन ऊंचा ऊंच पणे हुया। चार चार से गाउ उद्वेध पणे ऊंडपणे कह्या। जंबूद्वीप मांहि सगलाई वीस वच्चस्कार पर्वत छे ते किम महाविदेह मांहि ३२ विजय १२ अंतर नदी १६ वच्चस्कार ४ गजदंत छे तो १६ वच्चस्कार अने ४ गजदंत छे तो १६ वच्चस्कार अने ४ गजदंत मिली २० वच्चस्कार पर्वत कह्या। निषध नीलवंत वर्षधर एह पर्वत चार चार से योजन ऊंचा ऊंच पणे कह्या। सीता नदीने पासे मेरुने पासे ५०० योजन ऊंचा छे चार चार से गाउ उद्वेध पणे भूमि मांहि ऊंड पणे कह्या। आनत प्राणत नवमा दशमा देवलोकने विषे ४०० विमान कह्या।

सत्तौ चतुःचतुश्शतोच्चाः ॥४००॥४५०॥ शीतादिनदीप्रत्यासत्तौ मेरुप्रत्यासत्तौ च पञ्चशतोच्चा इति तथा सव्वेविणंवक्खारेत्यादि तत्र वर्षधरकूटानि शतद्वयमशीत्य ॥

महावीरस्स चत्तारिसया वाईणं सदेवमणुयासुरंमि लोगंमि वाए अपराजियाण उक्कोसिया वाइसंपया होत्था ॥ ४०० ॥ अजितेण अरहा अद्धपंचमाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था सागरेणं रायाचाउरंतचक्कवट्टी अद्धपंचमाइं धणुसयाइ उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ४५० ॥ सव्वेविणं वक्खारपव्वयासीओ सीओओ महानईओ मंदरेणं वापव्वएणं पच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पच पंच गाउसयाइं उव्वेहेणं प० सव्वे विणं वासहरकूडा पंच पच जोयणसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं मूले पंच पंच

श्रमण तपस्वो भगवत श्रीमहावीरने ४०० वादीनी संपदा हुई। ते वादी केहवा छे। देवतायें करी सहित जे मनुष्य अने असुर भवनपत्यादिक लोक ते हने विषे अपराजित छे केहथी जीत्या न जाय एहवी उत्कृष्टी वादीनी सपदा हुई। इति ४०० नो समवाय सपूर्ण ॥ ४०० ॥ हिवे ४५० नो लिखे छे। अजितनाथ अरिहंत अर्द्ध पचम साढा चार से धनुष उंचा उच पणे हुया। सगर बीजो चक्रवर्ती राजा चिंहु दिशना अंतनो धणी ते ४५० धनुष उंचा उंच पणे हुया इति ४५० नो समवाय थयो ॥ ४५० ॥ हिवे ५०० नो लिखे छे। महा विदेह दीठ ३२ विजय मर्यादा कारी १६ वचस्कार पर्वत अने ४ गजदंत एवं २० वचस्कार निषध नीलवतने पासे उंचा ४०० योजन अने शीता शीतोदा महानदीने पासे मेरुने पासे पांच पांचसे यो जन उंचा उच पणे ते २० वचस्कार निषध नीलवतने पासे ४०० गाउ उंडा भूमि मांहि अने मेरुने पासे ५०० सेगाउ उद्वेध पणे उड पणे कह्या। वर्षधर

धिकं कथं लडुहिमवनिसहे एक्कारस अठ्ठनवयकूडाइं नीलाद्रसुतिसुनगर्गं अठ्ठिक्कारसजहासखं एतेषां मध्यगुणत्वात् वमस्कारकूटानि लघीत्यधिकपतः शतीसंख्या
निकथ विज्जुपहमालवंते नवनवसेसेसुसत्तसत्तेव सोलसवक्खारेसु चउरोचउरोयकूडाइं एतेषां मध्यगुणत्वात् पंचगुणल जम्बूद्वीपादिमेरूपलचितक्षेत्राणा पंच

जोयणसयाइं विक्खंभेणं प० उसभेण अरहा कोसलिए पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था भरहेणं राया
चाउरंतचक्कवट्टी पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था सोमणसगंधमादणविज्जुप्पभमालवंताणं वक्खारप
व्वयाणं मंदरपव्वयंतेणं पंच २ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पंच पंच गाउयसयाइं उव्वेहेणं प० सव्वेविणं व
क्खारपव्वयकूडा हरिहरिस्सहकूडवज्जा पंच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं मूले पंच पंच जोयणसयाइं

र कहिये हिमवतादिक ६ कुलगिरी तेह उपरि कूट किहां ईका ११ छे किहां ईका ८ छे तो सगला वर्षधर कूट २८० छे ते पांच पाच से योजन उंचा
मूले पाच पांचसे योजन विक्खंभपणे विहुल पणे जाणवा। आदिनाथ अरिहंत कोसल देसना उपना ५ से धनुष उंचा उंच पणे हुया। भरत राजा चातुरंत
चक्रवर्ती ५ से धनुष उंचा उंच पणे हुया। मेरु पर्वत थको निश्चित थको नीकल्या ४ गजदंत एहवा कह्या सोमनस १ गंधमादन २ विद्युत्प्रभ ३ मालवंत
४ एह चार वक्खार पर्वत मेरु पर्वतने पासे पाच पांच से योजन उंचा उंच पणे पाच पांच से गाउ उद्वेध पणे भूमि मांहि उंडपणे कह्या। सगलाई
वक्खार पर्वतना कूट पणि हरिकूट हरिसहकूट वर्जीने एतले एह २ कूट। गजदंत रुदधीकूट सहस्र योजन उंचा छे। ते माटे एह २ टालीने बीज
कूट पाच से योजन उंचा उंच पणे कह्या। मूलने विषे पाच पाच से योजन लांब पणे पिहुल पणे कह्या। सगलाई नंदनवनमा कूट पणि बलकूट वर्जीने

त्वा सर्वाण्येतानि पचशतोच्छ्रितानि एवंमानुषोत्तरादिष्वपि वैताढ्यकूटानितु सक्रोशषट्योजनोच्छ्रयाणि वर्षकूटानितु ऋषभकूटादीन्यष्टयोजनोच्छ्रितानीति हरिकूट हरिसहकूट वर्जनखिहतयोः सहस्रोच्छ्रयत्वा दाहच विज्जुप्पभहरिकूडो हरिस्सहोमालवतवक्खारो तहनंदणवणकूडो उव्विद्धाजोयणसहस्सांति ॥ ५०० ॥ चुल्लहिमवत कूडस्सेत्यादि इहभावार्थो हिमवान् योजनशतोच्छ्रित स्तत्कूट मप्यशतोच्छ्रितं इति सूत्रोक्तमन्तर भवतीति अभिचंदेणंकुलकरेत्ति

आयामविक्खंभेणं प० सव्वेविणं नंदणकूडाबलकूडवज्जापंच २ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं मूले पंच २ जोयणसयाइं आयामविक्खभेण सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणा पचजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ ५०० ॥ सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु विमाणा छजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० चुल्लहिमवंतकूडस्स णं उवरिल्लाओ चरमंताओ चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स समधरणितलेएसणं छजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० एवं सिहरीकूडस्सवि पासस्सणं अरहओ छसयावाईणं सदेव मणुयासुरेलोए वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाईसपया होत्था अभिचदेणं कुलगरे छधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था वासुपुज्जेणं

एतले बलकूट ते सहस्र योजन उंचो छे मोटाई टालीने बीजा सातकूट पाच पांचसे योजन उंचा उंच पणे मूलने विषे ५ से योजन लांबपणे पिहुलपणे कह्या । सौधर्म ईशान पहिले बीजे कल्पे विमान पांच पांच से योजन प्रमाणे उंचा उंच पणे कह्या । इति ५ से नो समवाय थयो ॥ ५०० ॥ हिवे ६ स्से नो लिखेछे । सनत्कुमार माहेन्द्र कल्पे त्रीजा चौथा देवलोकें विमान ६ स्से योजन उंचा उंचपणेकह्या। लघु हिमवंत कूटनो उपरिलो चरमांत

भभिचन्द्रः कुलकरो ऽस्यामवसर्प्पिण्यां सप्तानां कुलकराणां चतुर्थः तस्योच्छ्रयः षट्धनुःशतानि पंचाशदधिकानि ॥ ६०० ॥ श्रमणस्य भगवतोम हावीरस्य सप्तजिनशतानि केवलिशतानीत्यर्थः तथा श्रमणस्य भगवतोमहावीरस्य सप्तवैक्रियशतानि वैक्रियलब्धिमत्साधुशतानीत्यर्थः अरिष्ठेत्यादि देसूणाइति

अरहा बहिंपुरिससएहिं सद्धिं मुंडे नवित्ता अगाराउ अणगारियं पव्वइए ॥ ६०० ॥ बंनलंतएसु कप्पेसु विमाणासत्त सत्त जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० समणस्सणं नगवउ महावीरस्स सत्तजिणसया होत्था समणस्स नगवउ महावीरस्स सत्तवेउव्वियसया होत्था अरिठनेमीणं अरहा सत्त

अने लघुहिमवतवर्षधर पर्वतनो समोधरणीतल भूमिभाग ६ स्से योजन आवाधायें विचाले आंतरो कह्यो। एतले हिमवंत पर्वत १ सो योजन ऊंचोछे उप रि पांचसेनोकूटछे सर्वमिली ६ स्से योजन थया। वलीएमज छट्ठा शिखरि पर्वत ने उपरिकूटछे तेहनो उपरिलोभाग तेहथको पृथ्वीतल ६ स्से योजन थ यो। पार्श्वनाथ अरिहतने ६ स्से वादीथया तेकेहवा। देवता सहित मनुष्य तथा असुर भवनपत्यादिकछे जिहां एहवो त्रिहुंभुवन लक्षण लोकतेहने विषे अपराजित जीत्यानजाय एहवा वादीनी उत्कृष्टी संपदा हुई। एह अवसर्पिणी कालने विषे सात कुलकर मांहि चौथो कुलकर अभिचंद्रनामा ६ स्से धनुष ऊचा ऊंच पणे हुया। बारमा वासु पूज्य अरिहंत ६ स्से पुरुष साथे मुंडथई गृहाश्रमथकी अनगार पणो पाम्या॥ इति ६ स्से मो समवाय थयो ॥ ६०० ॥ हिवे ७ से नो लिखेछे। ब्रह्मलांतक पांचमे छट्ठे देवलोके विमान सातसे योजन ऊंचा ऊंचपणे कह्या। श्रमण तपस्वी भगवंत महा वीरना सातसे जिन केवली थया। श्रमण भगवंत महावीरने ७ से वैक्रिय लब्धिनाधणी हुया। बावीसमा अरिष्टनेमी अरिहंत ३ से वर्ष कुमारपणे ७ से

चतुःपंचाशतादिनामामूनानि तत्रमाशत्वाच्छद्मस्थकालस्येति महाहिमवंतेत्यादी भावार्थोयं हिमवान् योजनशतद्वयोच्छ्रित स्तत्कूटंच पंचशतोच्छ्रितमिति

वाससयाइं देसूणाइं केवलपरियागं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे महाहिमवंतकूडस्स णं उवरिल्लाउ चरमंताउ महाहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स समधरणितले एसणं सत्तजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० एव रुप्पिकूडस्सवि ॥ ७०० ॥ महासुक्कसहस्सारेसु दोसुकप्पेसु विमाणा अठजोयणसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं प० इमीसेण रयणप्पभाए पुढवीए पढमेकंडे अठसु जोयणसएसु वाणमंतरभोमेज्ज

वर्ष देशोन ५४ दिन ऊणा केवली पर्याय चारित्रपालीने संपूर्ण १ हजार वर्ष आऊखोपालीने सिद्धथया बुद्धतत्वना जाणथया सर्वदुःखथकी प्रक्षीण थया। महाहिमवंतवर्षधर २ से योजन ऊ चोछे ते ऊपरि ५ से योजन महाहिमवत कूटछे सर्वमिली भूमि लगे ७ से योजन महाहिमवत कूटनो उपरिलो चरमांत तेहथकी महाहिमवंतवर्षधर पर्वतनो समोधरणी तल भूमिभाग ७ से योजन आबाधायें बिचाले आंतरो कह्यो। एमज रूपी कूट ५ से योजन ऊचो रूपी पर्वत २ से योजन उंचो सर्वमिली ७ से योजन थया॥ इति ७ से नो थयो ॥ ७०० ॥ हिवे ८ से नोलिखेछे। महा शुक्र सहस्रार सातमे आठमे देवलोके विमान ८ से योजन उंचा उ च पणे कह्या। एह रत्नप्रभा पृथिवीना त्रिणकांड छे ते मांहि पहिलो खरकांड तेहना १६ विभाग तेहनो पहिलो रत्नकांड १ हजार योजन पिंड छे। ते मांहि १ सो योजन हेठे मूंकिए १ सो योजन उपर मूंकिये विचाले ८ से योजन ते मांहि काल पिशाचादिक वान व्यतर कह्या। ते केहवा छे भौम कहतां भूमि सवंधी नगर तिहां विहार क्रीडा करे व्यंतर देवता ते माटे वान व्यंतर भौमेयक विहार

सुखोत्क्रमंतरभवतीति ॥ ७०० ॥ इमीसेणमित्यादि प्रथमंकाण्डं खरकाण्डं खरकाण्डस्य षोडशविभागस्य प्रथमविभागरूपं रत्नकाण्डं तत्र योजनसहस्रप्रमाणे अधउपरिच योजनशतद्वय म्विमुच्याष्टस्वष्टसु योजनशतेषु वमेषु भवा वाना स्तेच ते व्यन्तराच तेषा सम्बन्धिनः भूमिविकारत्वा द्भौमेयका स्तेच ते विहरन्ति क्रीडन्ति तेष्विति विहाराश्च नगराणि वानव्यन्तरभौमेयकविहारा इति अठसयत्ति अष्टशतानि केषामित्याह अणुत्तरोववाइयाणदेवाणति देवेषूत्पत्स्यमानत्वा द्देवा द्रव्यदेवा इत्यर्थः तेषाङ्गति देवगति लक्षणा कल्याणा येषान्ते गतिकल्याणा स्तेषामेवंस्थिति स्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमलक्षणः कल्याणा येषांते

विहारा प० समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अठसया अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं गइकल्लाणाणं ठिइ कल्लाणाण आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिया अणुत्तरोववाइया संपया होत्था इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए

कह्या छे। श्रमण तपस्वी भगवंत महावीरने ८ से यती अनुत्तर विमाने उपपात ऊपजवो छे जेहनो एहवा देवता तथागति देवगति लक्षण कल्याण छे जेहनो स्थिति कल्याण छे जेहनो। आगामिये काले एक भवने आतरे भद्र मोक्ष गमन लक्षण छे जेहने उत्कृष्टी एहवी अनुत्तरोपपातिक साधुनी संपदा हुई। एणीये रत्नप्रभा पहिली पृथिवी नो बणी समरमणीक भूमि भाग तेह थकी ८ सो योजन सूर्य चारचरे एतले समभूमिभाग थकी ७ से नेउ योजने तारा मडल छे तेह उपरि दश योजन सूर्य सर्व मिली ८ सो योजन थया। अरिहंत अरिष्टनेमी बावीसमा तीर्थंकर ने ८ सो वादीनी संपदा हुई ते वादी केहवा छे देवताये करी सहित मनुष्यवली असुर भवनपत्यादिक लोक एतले त्रिहु भुवने वादने विषे अपराजित जीत्यान जाय एहवी

तथा तेषांतथाततस्युतानामागमिष्यदागामिभद्र कल्याणं निर्वाणगमनलक्षणं येषान्ते आगमिष्यद्भद्रा' तेषां किमित्याह उक्कोसिएत्यादि ॥ ८०० ॥

बहुसमरमणिज्जाउ भूमिभागाउ अठहिं जोयणसएहिं सूरे चारंचरति अरहउणं अरिठनेमिस्स अठस याइं वाईणं सदेवमणुयासुरंमि लोगमि वाएअपराजियाणं उक्कोसिया वाईसंपया होत्था ॥ ८०० ॥ आणयपाणय आरणअचुएसु कप्पेसु विमाणा नवजोयणसयाइं उड्ढ उच्चत्तेणं प० निसढकूडस्सणं उवरि ल्लाउ सिहरतलाउ णिसढस्स वासहरपव्वयस्स समेधरणितले एसणं नवजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० एवं नीलवंतकूडस्सवि विमलवाहणेणं नवधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था इमीसेणं रयणप्पभाए बहुसमरम

उत्कृष्टी वादीनी सपदा हुई ॥ इति ८ सो नो थयो ॥ ८०० ॥ हिवे नौ से नो लिखे छे। आनत ९ प्राणत १० आरण ११ अच्युत १२ एह विहु कल्पने विषे विमान नौ से योजन ऊचा ऊंच पणे कह्या। निषध पर्वत चार से योजन ऊंचो तेह उपरि पांच से योजन निषध कूट छे सर्वमिली नवसे योजन थया। तो निषध कूटनो उपरिलो शिखरनो तलो तेहथकी निषध पर्वतनो वर्षधर पर्वतनो समोभूमितल नौ से योजन अबाधायें विचाले आंतरो कह्यो। एमज नीलवत कूटथकी पणि धरणीतल नौसे योजन आंतरो उपरिलो शिखरनोतलो तेहथकी निषध पर्वतनो समो भूमितल नौसे योज न आंतरो कह्यो। एह अवसर्पिणी ये विमल वाहन पहिलो कुलगर ९ से धनुष ऊचा ऊंच पणे हुया। एणीये रत्नप्रभा पृथिवीनो पहिलो घणो समरम णीक भूमिभाग तेह थकी ९ से योजने सर्व उपरिलो तारा रूप शनैश्चरनो तारो चार चरे छे। समभूतल थकी ७ से नव्वे योजन उपर तारा मंडल छे तेह

निसहकूडस्सणमित्यादि इहायमभाव: निषधकूटम्पस्वयतोच्छ्रित निषधस्वचतु:शतोच्छ्रितइति यथोक्तमन्तरभवतीति ॥ ९०० ॥ सव्वेविणंजमगेत्यादि उत्तरकुरुषु नीलवद्वर्षधरस्य दक्षिणत: शीतायामहानद्या उभयो: कूलयो र्द्वौ यमकाभिधानौ पर्वतौस्त: तेच पंचस्वप्युत्तरकुरुषु द्वयोर्द्वयो र्भावाद्दश एवं चित्त

णिज्जाउ भूमिभागाउ नवहिंजोयणसएहिं सव्वुवरिमे ताराख्वे चारंचरइ निसढस्सणं वासहरपव्वयस्स उवरि ल्लाउ सिहरतलाउ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए पढमस्सकंडस्स बहुमज्झदेसभाए एसणं नवजोयणसयाइं

ने दस योजन उपरि सूर्य चरे छे तेह उपर अस्सी योजने चंद्रमा चरे छे तेह थी ४ योजने २८ नक्षत्र छे तेह थी ४ योजने बुधनो तारोछे। तेह थी ३ योजने शुक्र नो तारो छे तेह थी ३ योजन ब्रहस्पति नो तोरो छे तेहने ३ योजन उपर मगल नो तारो छे तेहथी ३ योजन उपर शनैश्वर नो तारो छे एव नौ से योजन थया। निषध वर्षधर पर्वतना उपरला शिखरना तलथकी रत्नप्रभा पहिली पृथ्वी नो पहिलो काडनो बहुमध्य देश भाग एह ९ से योजन आवाधाये विचाले आंतरो कह्यो। एतले निषध पर्वत ४ से योजन ऊंचो अने रत्नप्रभानो पहिलो कांड हजार योजन तेहनो अर्द्ध ५ से योजननो एवं ९ से योजन थया। एमज नीलवतना शिखरतल थी रत्नप्रभाना रत्नकांड नो मध्यभाग ९ से योजन जाणिवो॥ इति ९ से नो समवाय थयो ॥ ९०० ॥ हिवे हजार नो समवाय लिखे छे। सगलाई ९ ग्रैवेयक ना विमान ३१८ छे ते हजार योजन ऊचा ऊंच पणे कह्या। सगलाई यमक पर्वत उत्तर कुरुने विषे नीलवंत पर्वत थी दक्षिण पासे शीता नदी ने बिहु पासे २ यमक पर्वत छे मेरुदीठ बे बे करता ५ मेरुने पासे दस थाय ते दशसे

विचित्तकूडा वति पंचसुदेवकुरुषु यमकवत्तत्संज्ञावात्यचचित्रकूटाः पंच विचित्रकूटा इति सव्वेविणमित्यादि सर्वेपिवृत्ता वैताढ्या विंशतिः शब्दापात्यादय. सव्वेविणहरीत्यादि हरिकूट श्वियुप्रभाभिधानेगजदन्ताकारवक्षस्कारपर्वते हरिसहकूटन्तुमाल्यवद्वक्षस्कारे तानिच पंचस्वपि मन्दरेषुभावात् पञ्चपञ्चभवन्ति

अबाहाए अंतरे प० एवंनीलवंतस्स वि ॥ १०० ॥ सव्वेविणं गेवेज्जविमाणे दस दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० सव्वेविणं जमगपव्वया दस दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० दस दस गाउयसयाइं उव्वेहेण प० मूले दस दस जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं प० एवं चित्तविचित्तकूडावि भाणियव्वा सव्वेविणं वट्टवेयड्ढपव्वया दस दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेण प० दस दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं प०

योजन उंचा उच पणे कह्या। दश दश से कोश उंडेध पणे भूमि मांहि दश दश से योजन लगे आयास विष्कंभ पणे लांबपणे पिहुलपणे कह्या । एमज ५ देवकुरुने विषे निषध थकी उत्तरदिशि सीतोदा महानदीने बिहुपासे सर्वमिली दशविच विचित्रकूट यमक पर्वतनी परें जाणिवा । सगलाई वृत्त वैताढ्य बीस छे तेजिम जम्बूद्वीप माहि हिमवंत क्षेत्र मांहि रम्यक क्षेत्र ऐरवखत क्षेत्र मिली बीस एवं ४ वृत्त वैताढ्य थया। ८ धातकी खंडमांहि ८ पुष्करार्द्धमांहि सर्वमिली बीस शब्दापाती प्रमुख दश दश से योजन उंचा उच पणे कह्या। दश दश से कोस उव्वेधपणे भूमिमांहि उंडपणे मूलने विषे हजार योजन पिहुलपणे। सगलाई समा गुर्जरदेश मांहि धानभरिवानो पालो तेहने संस्थाने संस्थित छे। १ हजार योजन आयाम विष्कंभपणे कह्या। मेरु पर्वत ने

सहस्रोच्छ्रितानि वक्खारकूडवज्जत्ति शेषवक्षस्कारकूटेष्वेव मुच्चलं नास्त्येतेष्वेवास्तीत्यर्थः एवंबलकूडावित्ति पंचसुमन्दरेषु पंचनन्दनवनानि तेषु प्रत्येकमैशान्या न्दिशि बलकूटाभिधानं कूटमस्ति ततः पचशतानि सहस्रोच्छ्रितानि च नदनकूडवज्जत्ति शेषाणि नन्दनवनेषु प्रत्येकं पूर्वादिदिग्विदिग्व्यवस्थितानि चत्वारिंश

मूले दसेवजोयणसयाइं विक्खंभेणं प० सव्वत्थसमा पल्लयसंठाणसंठिया सव्वेविणं हरिहरिस्सहकूडावक्खार पव्वयकूडवज्जा दस दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० मूले दसजोयणसयाइं विक्खंभेणं एवं बलकूडावि नंदणकूडवज्जा अरहाविअरिट्ठनेमी दसवाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धेजावसव्वदुक्खप्पहीणे पा सस्सणं अरहओ दससयाइं जिणाणं होत्था पासस्सणं अरहओ दस अंतेवासीसयाइं कालगयाइं जावस

विहुपासे चार गजदंत के आकारे पर्वतछे तेमांहि विद्युत्प्रभ गजदतने उपर हरिकूटछे। माल्यवत ने उपर हरिसहकूटछे। एहकूट पांचसै योजननांछे मेरु पर्वत मिलो १ हजार योजन उंचा उंच पणे कह्या। मूले मेरु १ हजार योजन पिहुल पणे छे शेष थाकता वक्षस्कार कूट वर्जी नें वक्षस्कार कूट हजार योजन उंचा नथी तेहथी ते वर्जी ने कह्या। एमज ५ मेरुने विषें ५ नंदन वन छे। दिशि विदिशि ने विषें प्रत्येकें बलकूट नामें करी कूट छे। ते ५ बलकूट हजार योजन ना उंचा छे नदन वन कूट वर्जी ने नदन वनने विषे पूर्वादिक दिशे विदिशे ४० कूट छे ते हजार योजन उंचा नथी ए माटे छोडीने कह्या। अरिहंत अरिष्टनेमी तीनसे वर्ष कुमार पणे सात से दीक्षा एवं हजार वर्षनो सगलो आयु पालीने सिद्ध थया तलना जाण थया सर्वदुःख प्रक्षीण थया। पार्श्वनाथ अरिहतने १ हजार केवलीनी सपदा थई। पार्श्वनाथ अरिहतना १ हजार शिष्य कालगत थकी सीधा यावत् शब्देंकारी स

त्सख्यानि नन्दनकूटानि वर्जयित्वा तानि साहस्रिकाणि न भवन्तीत्यर्थः अरहंतेत्यादि कुमारत्वे त्रीणिवर्षशता न्यनगारत्वे सप्तत्येवं दशशतानि पउमद्दहपुंडरी यद्दहत्ति पद्मह्रदः श्रीदेवीनिवासो हिमवद्वर्षधरपर्वतोपरिवर्त्ती पुण्डरीकह्रदो लक्ष्मीदेवीनिवासः शिखरिवर्षधरोपरिवर्त्तीति ॥ १००० ॥ ११०० ॥ तथा म

हदुक्कप्पहीणाइं पउमद्दहपुंडरीयद्दहा दस दस जोयणसयाइं आयामेणं प० ॥ 1000 ॥ अणुत्तरोववाइयाणं देवाण विमाणा एक्कारसजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० पासस्सणं अरहओ इक्कारस सयाइं वेउव्वियाणं होत्था ॥ 1100 ॥ महा पउममहापुंडरीयदहाणं दो दो जोयणसह

वंदुःख प्रचीण थया। लघुहिमवंत पर्वत उपर पद्मद्रह छे शिखरी पर्वत उपर पुंडरीक द्रह छे एह बिहु द्रह श्री अने लक्ष्मी देवीना निवास भूत छे ते १ हजार योजन लांबपणे कह्या इति १ हजार नो समवाय थयो ॥ १००० ॥ हिवे ११ से नो लिखे छे। अनुत्तरोपपातिक देवताना विमान इग्यारह से योजन उंचा उंच पणे कह्या। पार्श्वनाथ अरिहंतने इग्यारह से वैक्रिय लब्धिवंत थया इति इग्यारह से समवाय थयो ॥ ११०० ॥ हिवे २ हजार नो लिखे छे। महाहिमवंत उपर महापद्मद्रह छे रूपी पर्वत उपर महा पुंडरीकद्रह छे ते ह्री बुद्धि देवीना निवास भूत छे ते बे हजार योजन लांबपणे कह्या। इति बे हजार नो समवाय थयो ॥ २००० ॥ हिवे ३ हजार नो लिखे छे। रत्नप्रभा पृथिवीना वज्रकाण्डना उपरला चरमांत थी लोहिताक्ष काण्डनो हेठिलो चरमांत तेह तीन हजार योजन अबाधायें विचाले आंतरो कह्यो। इति तीन हजार नो समवाय थयो ॥

हापद्ममहापुण्डरीकह्रदौ महाहिमवद्रुक्मिवर्षधरयोरुपरिवर्त्तिनौ ह्रीबुद्धिदेव्योर्निवासभूताविति ॥ २००० ॥ इमीसेणंरयणेत्यादि अयमिहभावार्थः रत्नप्र
भापृथिव्याः प्रथमस्य षोडशविभागस्य खरकाण्डाभिधानकाण्डस्य वज्रकाण्डं नामरत्नकाण्ड द्वितीयं वैडूर्यकाण्डं तृतीयं लोहिताक्षकाण्ड चतुर्थं तानिच प्रत्येक
साहस्रिकाणीति त्रयाणा यथोक्तमन्तरंभवतीति ॥ ३००० ॥ तिगिच्छिकेसरिह्रदौ निषधनीलवर्षधरोपरिस्थितौ धृतिकीर्त्तिदेवीनिवासाविति
४००० ॥ धरणितलेइत्यादि धरणीतले धरण्यासमेभूभागइत्यर्थः रुयगनाभीओत्ति अष्टपएसोरुयगो तिरियलोगस्समज्झयारंमि एसपहवे दिसाणं एसे

ससाइं आयामेणं प० ॥ २००० ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए वयरकंडस्सउवरि
ल्लाउ चरमताउ लोहियक्खकंडस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं तिन्निजोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥
३००० ॥ तिगिच्छिकेसरिदहा चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइं आयामेणं प० ॥ ४००० ॥
धरणितलेमंदरस्सणं पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए रुयगनाभीउ चउदिसिं पंच २ जोयणसहस्साइं अबाहाए

३००० ॥ हिवे ४ हजार नो लिखे छे। तिगिच्छिद्रह निषधने उपर नीलवंतने उपर केसरीद्रह ए बिहु धृति देवी कीर्त्ति देवी ना निवास भूत
छे ते ४ हजारयोजन लाब पणे कह्या इति ४ हजार नो समवाय थयो ॥ ४००० ॥ † × † × † + † × † ×
हिवे ५ हजार नो लिखेछे। धरणीनेविषे मेरु पर्वतनो बहुमध्य देश भाग रुचक तेहीज नाभिचक्र तुंबानी परे आठ प्रदेशी रुचक नाभि कह्या नाभियकी
चिहुंदिशि विदिशिपांच पांच सहस्र योजन अबाधाये विचाले आतरो कह्यो। मेरु पर्वत दश हजार योजन जाडो छे तेमाटे मध्यभाग थकी चिहुंदिशि

वभवेश्रणुदिसार्यंति ॥१॥ रुचकएव नाभि चक्रस्य तुंबमिवेति रुचकनाभि स्तत्मतस्त्र्वपिदिक्षु पंचसहस्राणि मेरु स्तस्य दशसहस्रविष्कम्भत्वादिति ॥ ५००० ॥ इमीसेणमित्यादि रत्नकाण्डंप्रथम पुलककांडंसप्तममिति सप्तसहस्राणि ॥ ७००० ॥ हरिवासेत्यादि इहार्थे गाथार्द्ध हरिवासेइग

मंदरपव्वए प० ॥ ५०० ॥ सहस्सारे कप्पे छविमाणावाससहस्सा प० ॥ ६००० ॥ इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए रयणस्स कण्डस्स उवरिल्लाउ चरमंताउ पुलगस्स कण्डस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं सत्तजोयणसहस्साइं ञ्चवाहाए ञ्चंतरे प० ॥ ७००० ॥ हरिवासरम्मयाणं वासा ञ्चठ जोयणसहस्साइं साइरेगाइं विथ्थरेणं प० ॥ ८००० ॥ दाहिणढ्ढभरहस्स णं जीवा पाईण

पांच पांच हजार योजन पामीये। इति पांच हजारनो थयो ॥ ५००० ॥ हिवे ६ हजार नो लिखे छे। सहस्रार आठमे देव लोकें ६ हजार वि मान कह्या इति ६ हजार नो समवाय थयो ॥ ६००० ॥ हिवे ७ हजार नो लिखेछे। एणी ये रत्नप्रभा पृथिवी नो पहिलो रत्नकांड तेहनो उपरिलो चरमांत तेहथकी पुलककांड सातमो तेहने हेठिलो चरमांत सातहजार योजन लगे आवाधाये विचाले आतरो कह्यो ॥ इति सात हजार नो थयो ॥ ७००० ॥ हिवे आठ हजारनो लिखेछे। एह प्रत्येक हजार योजन छे तेमाटे युगलियाना हरिवर्ष अने रम्यक वासक्षेत्र ८ सहस्र योजन सातिरेक झाझेरा एतले एकवीस योजन उगणिसहाइया एककला विस्तारपणे पिहुलपणे कह्या ॥ इतिआठ हजारनो थयो ॥ ८००० ॥

वीसा पुलसीयसयाकलायएकायत्ति ॥ ८००० ॥ दाहिणेत्यादि दक्षिणोभागो भरतस्येति दक्षिणार्द्धभरतं तस्य जीवेवजीवा ऋज्वीसीमा प्राचीन मूर्वतः प्रतीचीन म्पश्चिमत मायता दीर्घा प्राचीनप्रतीचीनायता दुहओत्ति उभयतः पूर्वापरपार्श्वयोरित्यर्थः समुद्रं लवणसमुद्रं स्पृष्टा भवतीनवसहस्राण्यायामत इहोक्ता स्थानान्तरेतु तद्विशेषोऽयं नवसहस्राणि सप्तशतान्यष्टचत्वारिंशदधिकानिद्वादशच कला इति ॥ ९००० ॥ १०००० ॥

पडीणायया दुहओ समुद्दं पुठा नवजोयणसहस्साइं आयामेणं प० ॥ ९००० ॥ मंदरेणं पव्वए धरणितले दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं प० ॥ १००० ॥ जंबूद्दीवेणं द्दीवे एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं प० ॥ १००००० ॥ लवणेणं समुद्दे दोजोयणसयसहस्साइं

हिवे नवहजार नो लिखेछे। दक्षिणार्द्ध भरतनी जीवा सरल समा प्राचीन पूर्वथकी मांडी प्रतीचीन पश्चिमें आयत लांबी पूर्व समुद्र अने पश्चिम समुद्र लगे स्पर्शीछेते नवसहस्र योजन आयामपणे लांबपणेकह्यो इति ९ हजारनोथयो ॥ ९००० ॥ हिवे दश हजार नो लिखेछे। मेरुपर्वत धरणीतले दश सहस्र योजन पिहुलपणें कह्यो इति दश हजार नो थयो ॥ १०००० ॥ हिवे लाख नो लिखेछे। असख्यात द्वीप माहि मध्य जंबूद्वीप शतसहस्र एतले लाख योजन लांबपणें पिहुलपणें कह्यो इति लाखनो थयो ॥ १००००० ॥ हिवे बे लाखनो लिखेछे। लवण समुद्र पहिलो बे लाख योजन पिहुल पणें चक्रवाल चक्राकारे जंबूद्वीपने वीटी रह्यो छे॥ इति बे लाख नो थयो ॥ २००००० ॥ हिवे त्रिण लाख नो लिखे छे।

१००००० ॥ २००००० ॥ ३००००० ॥ ४००००० ॥ लवणेत्यादि तत्र जम्बूद्वीपस्य लक्षं चत्वारिच लवणस्येति पच ॥ ५००००० ॥

चक्कवाल विक्खंभेणं प० ॥ २००००० ॥ पासस्सणं अरहओ तिन्निसयसाहस्सीओ सत्तावीसंचसहस्साइं उक्कोसिया सावियासंपया होत्था ॥ ३००००० ॥ धायइखंडेणं दीवे चत्तारि जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं प० ॥ ४००००० ॥ लवणस्स णं समुद्दस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरमंताओ पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं पंचजोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ५००००० ॥ भरहेणं राया चाउरंतचक्कवट्टी छपुव्वसयसहस्साइं रज्जमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं

पार्श्वनाथ अरिहतने त्रिण लाख उपरि वली सत्तावीस हजार उत्कृष्टी श्राविकानी संपदा हुई ॥ इति त्रिण लाखनो थयो ॥ ३००००० ॥ हिवे चार लाखनो लिखे छे। बीजो धातकी खंड द्वीप चार लाख योजन चक्रवाल विष्कंभपणें पिहुलपणें कह्यो ॥ इति चार लाख नो थयो ॥ ४००००० ॥ हिवे पांच लाखनो लिखेछे। लवण समुद्र ना पूर्व चरमांत थकी पश्चिम चरमांत पांच लाख योजन अबाधाये विचाले आंतरो कह्यो ॥ पूर्व लवण समुद्र ना बेलाख लीजे अने पश्चिम समुद्र लवणपणि बेलाख विचे जंबूद्वीप लाख सर्वमिली पांच लाख योजन थया ॥ इति पांच लाखनो थयो ॥ ५००००० ॥ हिवे छ लाखनो लिखेछे। श्री आदीश्वरनो वड पुत्र भरत राजा चातुरंत चक्रवर्ती सतहुत्तरी पूर्व लाख वर्ष कुमारपणें रह्या छ लाख पूर्व महाराज पणें वसीने मुंड थया अगार थकी अनगारी थया। एतले यतीपणो पाम्या। इति छ लाखनो थयो ॥ ६०००००

६००००० ॥ जम्बूद्वीपस्येत्यादि तत्र लक्ष जम्बूद्वीपस्य द्वे लवणस्य चत्वारि धातकीखण्डस्येति सप्तलक्षाण्यन्तरं सूत्रोक्तं भवतीति ॥ ७००००० ॥
८००००० ॥ अजितस्यार्हतः सातिरेकाणि नवावधिज्ञानि सहस्राण्यतिरेकश्च चत्वारिंशतानि इद सहस्रस्थानकमपि सप्तलक्षस्थानकाधिकारे यदधी

पन्नइए ॥ ६००००० ॥ जंबूद्दीवस्सणं दीवस्स पुरत्थिमिल्लाउ वेइयंताउ धायइखंडचक्कवालस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमते सत्तजोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ७००००० ॥ माहिंदेणं कप्पे अट्ठविमाणवाससयसहस्सा प० ॥ ८००००० ॥ अजियस्सणं अरहउ साइरेगाइं नवउहिनाणिसहस्साइं होत्था ॥ ९००० ॥ पुरिससीहेण वासुदेवे दसवाससयसहस्साइं

हिवे सात लाखनो लिखेछे। जम्बूद्वीपना पूर्वदिशिना वेदिकानां प्रांतथकीमांडी धातकी खड चक्रवालरूप तेहनो पश्चिम चरमांत सातलाख योजन आवाधायें विचाले आंतरो कह्यो तेकेम। जम्बूद्वीप १ लाख योजन लवण समुद्र २ लाख धातकीखंड ४ लाख सर्वमिलो ७ लाख योजन थया। इति ७ लाखनो थयो ॥ ७००००० ॥ हिवे ८ लाखनो लिखेछे। माहेंद्र चौथे कल्पे ८ लाख विमान कह्या ॥ इति ८ लाख नो थयो ॥ ८००००० ॥ हिवे ९ हजार नो लिखेछे। अजितनाथ अरिहंतना सातिरेके ४० अधिक ९ सहस्र अवधि ज्ञानी हुआ। लाख लगी सख्या कह वली उपराठा ९ सहस्र कह्या ते सूत्रनो गति विचित्र छे एथी अथवा लेखकने प्रमाद थी जाणिवा ॥ इति ९ हजारनो थयो ॥ ९००० ॥ हिवे दश लाखनो लिखे छे

तन्तत् सहस्रशब्दसाधर्म्यो द्विचिभ्रलाद्वा सूत्रगते लेखकदोषाद्वेति ॥ ८००० ॥ पुरुषसिंहः पञ्चमवासुदेवः ॥ १०००००० ॥ सम णेत्यादि किलभगवान्पोटिलाभिधानो राजपुत्रो बभूव तत्र वर्षकोटिम्प्रव्रज्या म्पालितवानित्येकोभवः ततो देवोभूदिति द्वितीय स्ततोनन्दनाभिधानो राज सूनुः छत्राग्रनगर्यां जज्ञे इति तृतीयः तत्र वर्षलक्षम् सर्वदा मासक्षपणेन तप स्तप्त्वा दशमदेव लोके पुष्पोत्तरवरविजयपुण्डरीकाभिधाने विमाने देवोभव दिति चतुर्थ स्ततो ब्राह्मणकुण्डग्रामे ऋषभदत्तब्राह्मणस्य भार्याया देवानन्दाभिधानायाः कुक्षावुत्पन्न इति पञ्चम स्तत स्त्र्यशीतितमे दिवसे क्षत्रियकुण्ड ग्रामे नगरे सिद्धार्थमहाराजस्य त्रिशलाभिधानभार्यायाः कुक्षाविन्द्रवचनकारिणा हरिनैगमेषि नाम्ना देवेन संहृत स्तीर्थंकरतया च जातइति षष्ठः उक्तभव

सव्वाउयं पालइत्ता पंचमाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने ॥ १००००००० ॥ समणेभगवंमहावीरे तित्थगरभवग्गहणाउ छठे पोट्टिलभवग्गहणे एगं वासकोडिं सामन्नपरियागं पाउणित्ता

धर्मनाथ कालीन पुरुषसिंह पाच मो वासुदेव दश लाख वर्ष लगे सगलो आउखो पालीने पाचमी धूमप्रभा पृथिवीने विषे नारकीपणें उपनोछे ॥ इतिदश लाख नो थयो ॥ १०००००० ॥ हिवे एक कोटिनो लिखेछे। श्रमण भगवत महावीर तीर्थंकर पणो उपार्ज्यो ते भवनांग्रहणथकी एतले तेभवथकी पोटिलाना भवग्रहणे एक कोटिवर्ष लगे सामान्य पर्याय दीक्षापालीने आठमें देवलोके सर्वार्थ सिद्ध विमाने देवतापणें उपना ते छठोभव केम श्रीमहावीर नो जीव पूर्व भवे पोटिलनाम राजा हुआ श्री एक भव १ तिहा कोटि वर्ष प्रमाणे चारित्र पालीने बीजे सहस्रारे देव लोके देवता हुआ श्रो बीजो भव तिहा थी त्रीजे भवे छत्राग्र नगरीये नंद राजा हुया तिहा गृहस्थपणे २४ लाख वर्ष रह्या। पछे १ लाख वर्ष चारित्र पाली ११ लाख ८५ सहस्र ६ से ४५

ग्रहण हि विना नान्यद्भवग्रहणं षष्टं श्रूयते भगवतं इत्येतदेव षटभवग्रहणतया व्याख्यातं यस्माच्च भवग्रहणा दिद षष्ठ तदप्येतस्मात्षष्टमेवेति सुष्टूच्यते तीर्थक

रभवग्रहणात्षष्टे पोट्टिलभवग्रहणे इति ॥ १००००००० ॥ उसभेत्यादि उसभसिरिस्सत्ति प्राकृतत्वेनश्रीऋषभ इति वाचेव्यत्ययेननिर्देश: कृत:

एकसागरोपमकोटाकोटी द्विचत्वारिंशता वर्षसहस्रै: किञ्चित्साधिकैरूनाप्यल्पत्वा द्विशेषस्या विशेषितोक्तेति ॥ + ॥ इहयएतेअनतरं सख्याक्रमस

स्वन्धमात्रेण सम्वद्धाविविधा वस्तुविशेषाउक्ता स्तएवविशिष्टतरसम्बन्ध सवद्धा द्वादशांगे प्ररूप्यन्तइति द्वादशाङ्गस्यैव स्वरूपमभिधित्सुराह ॥ दुवाल

सगेइत्यादि अथ चोत्तरोत्तरसख्याक्रमसंवद्धार्थ प्ररूपणमनन्तरमकारि साम्प्रतसख्यामात्रसंवद्धपदार्थ प्ररूपणायोपक्रम्यते दुवालसगेइत्यादि तत्रश्रुतपरमपुरुष

सहस्सारे कप्पे सव्वठ विमाणे देवत्ताए उववन्ने ॥ १००००००० ॥ उसभस्स भगवओ महावीरस्स य एगासागरोवमकोडाकोडी अबाहाए अंतरे प० ॥ ॥ दुवालसंगे गणिपिडए

मास खमण करी चौथे भवे दसमे देव लोके देव हुया। तिहां थको पाचमे भवे ब्राह्मण कुंड ग्रामे नगरे ऋषभदत्त ब्राह्मणनी भार्या देवानदाने कूखेंजप

ना ५ तिहा थको ८२ मे दिने खत्रीयकुड ग्राम नगरे सिद्धार्थ राजाने घरे इन्द्रनी आज्ञाये हरिणे गमेषी देवें त्रिशला देवीनी कूखें अवतर्या एह छठो भव

जाणवो इति एक कोटी नो थयो ॥ १००००००० ॥ हिवे सागरोपमनो लिखे छे। श्री आदिनाथ भगवतने छेहला श्रीमहावीरने बेयालीस

सहस्र ऊणी एक सागरोपम कोडा कोडी आवाधायें बिचाले आंतरो कह्यो। एकथकी मांडी कोडा कोडीनो संख्या कही ॥ ॥ हिवे द्वादशांग

स्यांगानी वाङ्गानि द्वादशाङ्गानि आचारादोनि यस्मिंस्तद्द्वादशांगं गुणानागणोस्यास्तोतिगणी आचार्यस्तस्यपिटकमिवपिटकं सर्वस्वभाजनं गणिपिटकं अथ वा गणिशब्दः परिच्छेदवचन स्तथाचोक्तम् आयारमिअहीए जनाओहीइसमणधम्मोउ तम्हाआयारधरो भण्णइपढमगणिठ्ठाण परिच्छेदस्थानमित्यर्थः ततश्च परिच्छेदसमूहो गणिपटकमनचैवपदघटना यदेतद्गणिपिटक तत्द्वाशागप्रज्ञप्तम् तद्यथा आचारः सूत्रकृतइत्यादि सेकितमित्यादि अथ कितदाचारवस्तु यद्वा अथ कोयमाचारः आचरणमाचारः आचार्यत इति वा आचारः साध्वाचरितो ज्ञानाद्यासेवनविधिरिति भावार्थः एतत्प्रतिपादकोग्रन्थोप्याचारएवोच्यते आयारेणति अनेनाचारेण करणभूतेन श्रमणानामाचारोव्याख्यायत इति योगः अथवा चारेधिकरण भूते णमितिवाक्यालकारे श्रमणानां तपःश्रीसमालिं

प० तं० आयारे सूयगडे ठाणे समवाए विवाहपन्नत्ती णायाधम्मकहाउ उवासगदसाउ अंतगडदसाउ अणुत्तरोववाइयदसाउ पराहावागरणाइं विवागसुए दिठ्ठिवाए सेकितं आयारे आयारेणं समणाणं निग्गं

नो वर्णन करे छे। इग्यारह अग बारमो पूर्व एव श्रुत रूप परम पुरुष ने १२ अंगसरीखाअग वली केहवाछे गणीकहीये आचार्य तेहने पेटी सरीखो दर्शन चारित्र तेहनो स्थान कह्यो। तेकहेछे। आचारांग १ सूयगडाग २ ठाणांग ३ समवाय ४ बिवाहपन्नती एतले भगवतीसूत्र ५ ज्ञाताधर्मकथा ६ उपासकदशा ७ अतगडदशाग ८ अनुत्तरोपपातिक दशा ९ प्रश्नव्याकरण १० विपाक सूत्र ११ दृष्टिवादपूर्व १२ अथ स्यूंते आचार वस्तु अथवा कोण ते आचार। आचरवो ते आचार। अथवा आचरिये ते आचार ज्ञानादिक आसेवनबिधि तेहनो प्रतिपादक ग्रथ पणि आचार कहिये ते आचारागने विषे श्रमण तपस्वी तेह निर्ग्रंथ वाह्याभ्यतर ग्रथि रहित तेहना आचार तेज्ञानादिक आचार गोचरतेभिक्षा ग्रहण ज्ञानादिक तेविनय वैनयक तेहनोफलकर्मक्ष

गितानां निर्ग्रन्थानां सवाह्याभ्यन्तरग्रन्थरहितानां श्रमणा निर्ग्रन्थाएवभवन्तीति विशेषणं किमर्थमित्युच्यते शाक्यादिव्यवच्छेदार्थं मुक्ताश्च निर्ग्रंथसक्तावस गेरुयआजीवपचहासमणत्ति तत्राचारो ज्ञानाद्यनेकभेदभिन्नः गोचरीभिचाग्रहणविधिलचणो विनयोज्ञानादिविनयः वैनयिक तत्फलं कर्मचयादिस्थानं कायोत्सर्गोपवेशनशयनभेदा त्रिरूपं गमनं विहारभूम्यादिषु गतिश्चक्रमणमुपाश्रयांतरे शरीरश्रमव्यपोहार्थमितस्ततः सञ्चरण प्रमाण भक्तपानाभ्यवहारोपध्या देर्मान नियोजन स्वाध्यायप्रत्युपेचणादिव्यापारेषु परेषां नियोजन भाषासयतस्य भाषासत्याऽसत्या मृषारूपाः समितयईर्यासमित्याद्याःपञ्च गुप्तयोमनोगुप्त्या दयस्त्रिस्रः तथाच शय्याचवसतिरुपधिश्च वस्त्रादिकोभक्तं चाशनादिपान चोष्णोदकादीतिद्वंद्व स्तथा उद्गमोत्पादनैषणा लचणानांदोषाणां विशुद्धिरभाव उद्ग मोत्पादनैषणाविशुद्धि स्ततः शय्यादीनामुद्गमादि विशुद्धाशुद्धाना तथा विधकारणे ऽशुद्धानांचग्रहण शय्यादिग्रहण तथा व्रतानि मूलगुणा नियमाउत्तरगु

थाणं आयारगोयरविणयवेणइयठाणगमणचंकमणपमाणजोगजुंजणभासासमितिगुत्तीसेज्जोवहिभत्तपाणउ

य स्थापना कायोत्सर्ग गमन बिहार भूमिचालवो । चक्रमण उपाश्रयांतरे उपाध्यायादिकने अर्थे भमिवो । प्रमाण भक्तपानोपध्यादिकनो मान । योग योजन प्रतिलेखनादिकनेविषे परने योजवो व्यापारिवो । भाषासंयत मिश्र मृषाभाषात्यागरूप समिति ईर्यासमित्यादिक ५ गुप्ति गोपिवो । शय्यावसतिउप धि वस्त्रादिक । भात अशनादिक पान उष्णादिक पाणी उद्गमदोष १६ उत्पादनदोष १६ एषणा गवेषणा लचण दोषनी विशोधी अभाव । शुद्धभक्तपानादि कनो ग्रहिवो । तथा कारणे अशुद्धनो शय्यादिकनो ग्रहिवो । व्रत मूलगुण नियम उत्तरगुण । तपउपधान ते १२ बारे भेदे तप । एहसर्व सुप्रशस्तभलो जेह आचारांग ने विषे कह्यो जायछे । ते आचार संचेपे करी पाच प्रकारे कह्यो । तेकहेछे । ज्ञानाचार श्रुतज्ञान विषयी कालाध्ययनादिक रूप आठप्रका

णास्तपउपधानं द्वादशविधंतपः तत आचारश्च गोचरशैत्यादि यावच्छुतयश्च शय्यादिगृहणं चव्रतानिच नियमाश्च तपउपधानं चेतिसमाहारद्वंद्व स्तचतत्सुप्रश्न स्तचेति कर्म्मधारयः एतत्सर्वमाख्यायते भिधीयते एतेषु चाचारादिपदेषु यत्क्वचिदन्यतरोपादाने अन्यतरगतार्थस्याभिधानं तत्सर्वतत्प्राधान्यख्यापनार्थमेवेत्यवसेय मिति सेसमासइत्यादि स आचरोयमधिकृत्य ग्रंथस्याचारइतिसंज्ञाप्रवर्त्तते समासतः संक्षेपतः पञ्चविधः प्रज्ञप्त स्तद्यथा ज्ञानाचारइत्यादि तत्रज्ञानाचार. श्रु तज्ञानविषयः कालाध्ययनविनयाध्ययनादिरूपो व्यवहारोऽष्टधा दर्शनाचारः सम्यक्त्ववतांव्यवहारो निःशंकितादिरूपोऽष्टधा चारित्राचारश्चारित्रिणां समि त्यादि पालनात्मकोव्यवहारः तपः आचारो द्वादशविधतपोविशेषानुष्ठितिः वीर्याचारो ज्ञानादिप्रयोजनेषुवीर्यस्यागोपनमिति आयारस्त्ति आचारगृंथस्य ण मित्यलङ्कारे परित्तासंख्येया आद्यन्तोपलब्धेर्नानन्ताभवन्तीत्यर्थः कावाचना सूत्रार्थप्रदानलक्षणा अवसर्प्पिण्युत्सर्प्पिणीकाल वा प्रतीत्यपरीतेति संख्येयान्यनु

ग्गमउप्पायएसणाविसोहिसुद्धासुद्धग्गहणवयणियमतवोवहाणसुप्पसत्थमाहिज्जइसे समासउ पंचविहो प० तं० णाणायारे दंसणायारे चरित्तायारेतवायारे वीरियायारे आयारस्सणपरित्तावायणा संखेज्जाअणुउगदारा संखेज्जाउपडिवत्तीउ संखेज्जावेढा संखेज्जासिलोगा संखेज्जाउनिज्जुत्तीउ सेणअंगठयाए पढमेअंगेदो

रे १ दर्शनाचार निःशंकितादिरूप आठप्रकारे २ चारित्राचार आठप्रवचनमातारूप समिति गुप्ति लक्षण ३ तपआचार १२ भेदें तपनो करिवो ४ वीर्या चार ज्ञानादिक प्रयोजन ने विषे वीर्यनो अगोपिवो ५ आचारांगगृंथना संख्याता वाचना सूत्रार्थप्रदानरूप संख्याता अनुयोग द्वार अनुयोगव्याख्या तेहनो द्वार उपक्रमादिक । संख्याता प्रतिपत्ति द्रव्यादिक पदार्थनो मतांतर तेप्रतिपत्ति । संख्यातावेढा छंद विशेष २ संख्याता श्लोका अनुष्टुप आदिक । संख्याता

योगद्वाराणि उपक्रमादीनि अध्ययनानामेव सङ्ख्येयत्वात् प्रज्ञापकवचनगोचरत्वाच्च संखेज्जाओपडिवत्तीओत्ति द्रव्यादिपदार्थाभ्युपगमा मतान्तराणीत्यर्थः प्रतिमाद्यभिग्रहविशेषा वा सखेज्जावेढत्ति वेष्टकाश्छन्दोविशेषा एकार्थप्रतिबद्धवचनसकलिकेत्यन्ये संखेज्जासिलोगत्ति श्लोका अनुष्टुप्छन्दांसि संख्यातानिर्युक्तयः निर्युक्तानां सूत्रेभिधेयतया व्यवस्थापितानामर्थानां युक्तिर्घटनाविशिष्टायोजना निर्युक्तियुक्ति रेतस्मिन्वाच्ये युक्तशब्दलोपान्निर्युक्तिरित्युच्यते एताश्चनिक्षेपनिर्युक्त्याद्याः सङ्ख्येयाइति सेणमित्यादि स आचारोणमित्यलङ्कारे अगार्थतया अङ्गलक्षणवस्तुत्वेन प्रथममंगं स्थापनामधिकृत्य रचनापेक्षयातुद्वादशमंगं प्रथमपूर्वन्तस्य सर्वप्रवचनात्पूर्वं क्रियमाणत्वादिति द्वौश्रुतस्कन्धावध्ययनसमुदायलक्षणौ पञ्चविंशतिरध्ययनानि तद्यथा सत्थपरिण्णा १ लोगविजओ २ सीओसणिज्ज सम्मत्तं ४ आवंति ५ धुयविमोहो ७ महापरिण्णा ८ वहाणसुय ९ इति प्रथमश्रुतस्कन्धः पिंडेसण १ सेज्जिरिया ३ भासेज्जायाय ४ वत्थ ५ पाएसा ६ उग्गहपडिमा ७ सत्त सत्तिकया १४ भावण १५ विमुत्ती १६ इति द्वितीय श्रुतस्कन्ध. एवमेतानि निशीथवर्जानि पञ्चविंशतिरध्ययनानि तथा पञ्चाशीतिरुद्देशनकालाः कथमुच्यते अङ्गस्य श्रुतस्कन्धस्या ध्ययनस्योद्देशकस्य चैतेषां चतुर्णामप्येक एवोद्देशनकालः एवंशस्त्रपरिज्ञादिषु पञ्चविंशतावध्ययनेषु क्रमेण सत्त १

सुयक्खंधा पणवीसं अज्झयणा पंचासीइं उद्देसणकाला पंचासी समुद्देसणकाला अट्ठारसपदसहस्साइं पदग्गे

निर्युक्ति सूत्रने विषे कहिवा पणियाप्या अर्थनो जोडिवोते युक्ति विशिष्ट वटनाये योजवो तेनिर्युक्ति । ते आचारांग अंगार्थपणे अगलक्षण वस्तुपणे । पहिले अगे वेश्रुतस्कधके पंचबीस अध्ययनछे तेकेहा सत्थपरिण्णा १ लोग विजय २ सिओसणिज्ज ३ संमत्त४ आवंति ५ धुय ६ विमोहा ७ महापरिण्णो ८ वहाण सुयति ९ इति प्रथम स्कध ॥ पिंडेसण १ सिज्जि २ रिया ३ भासज्जाया ४ वत्थ ५ पाएसा ६ उग्गहपडिमा ७ सत्तसत्तिकिया १४भावण १५ विमुत्ति १६ इति

षट् २ षत् ३ यतुः ४ पट ५ पंच ६ अष्ट ७ सप्त ८ चतु ९ रेकादश १० त्रि ११ त्रि १२ द्वि १३ द्वि १४ द्वि १५ द्वि १६ संख्याताउद्देशनकालाः षोडशस्वध्ययने
षु शेषेपुनवसुनवेवेति इह संगृहगाथा सत्तयछच्चउचउरो छपंचअठेवसत्तचउरोय एक्कारातितिदोदो दोदोसत्तेकएक्कोयत्ति एवसमुद्देशनकाला अपिभणितव्याः
अष्टादशपदसहस्राणि पदाग्रेणप्रज्ञप्तः इहयत्रार्थोपलब्धिस्तत्पदं ननुयदि द्वौश्रुतस्कन्धौ पंचविंशतिरध्ययनान्यष्टादश पदसहस्राणि पदाग्रेणभवन्ति ततो
यद्भणितं नवबंभचेरमइओ अट्ठारसपदसहस्सिओवेओत्ति तव्याघ नविरुध्यते उच्यते यत्द्वौश्रुतस्कन्धावित्यादि तदाचारस्य प्रमाण भणित यत्पुनरष्टादश
पदसहस्राणि तन्नवब्रह्मचर्याध्ययनात्मकस्य प्रथमश्रुतस्कन्धस्य प्रमाण विचित्रार्थबद्धानिचसूत्राणि गुरूपदेशतस्तेषामर्थोवसेय इति सख्येयानि अक्षराणि वे
ष्टकादीनां सख्येयत्वात् अनतागमाः इहगमा अर्थगमा गृह्यन्ते अर्थपरिच्छेदाप्रत्यर्थः तेचानन्ताः एकस्मादेवसूत्रात्तद्धर्मविशिष्टानतधर्मात्मकवस्तुप्रतिपत्ते

णासंखेज्जाअक्खरा अणंतागमा अणंतापज्जवा परित्तातसाअणंताथावरा सासयाकडानिबद्धाणिकाइया

चतुः ९ एकादश सप्त १ षट् २ चतुः २ चतुः ४ षट् ५ पच ६ अष्ट ७ सप्त ८ अध्ययनने विषे अनुक्रमे उद्देशा सप्त १ षट् २ चतुः २ चतुः ४ षट् ५ पच ६ अष्ट ७ सप्त ८ चतुः ९ एकादश
द्वितीयश्रुतस्कंध ॥ ८५ शास्त्र परिज्ञादिक २५ अध्ययनने विषे अनुक्रमे उद्देशा सप्त १ षट् २ चतुः २ चतुः ४ षट् ५ पच ६ अष्ट ७ सप्त ८ चतुः ९ एकादश
१० त्रि ११ त्रि १२ द्वि १३ द्वि १४ द्वि १५ द्वि १६ एतले पहिले २श्रुतस्कंधना ८ अध्ययनना ४४ उद्देशा नवमो अध्ययन उद्देशा १६ विछेदथया । एव ६० उद्दे
शा पहिले श्रुतस्कंधे अने बीजे २५ सर्व मिली ८५ उद्देशा थया । कालते अवसर जेतला उद्देशाना काल अवसर तेतला समुद्देशाना अवसर कह्या । अठारह
सहस्रपद पदाग्रे पदने परिमाणे जिहां सूत्रार्थनो समाप्ति होय तेपदकहिये ते प्रथम श्रुतस्कंधे नव अध्ययनना १८ सहस्र पद । सख्याता अक्षर लिपिन्यास
अनन्तागमा अर्थपरिछेद । अनन्तापर्यव अक्षर पदार्थना पर्याय भेद जिहां परित्ता एतले अनन्ता नही एहवात्रसजीवबेरिंद्रियादिक कहीये । अनंतस्थावर

अन्येतुव्याचक्षते अभिधानाभिधेयवशतोगमाभवन्ति तेचानन्ता: अनन्ता: पर्याया: स्वपरभेदभिन्ना अक्षरपदार्थपर्याया इत्यर्थ: परीतास्त्रसाआख्ययन्त इति योग: त्रसन्तीति त्रसाद्वींद्रियादयस्तेच परीतानानता एव रूपत्वादेव तेषां अनता: स्थावरावनस्पतिकायसहिता: किंभूताएतेसासयाकडानिवद्वा निकाइयन्ति शाश्वता: द्रव्यार्थतया अविच्छेदेन प्रवृत्ते: क्षता: पर्यायार्थतया प्रतिसमयमन्यथाभावाप्ते र्निवद्वा: , सूत्रएवग्रथिता निकाचिता: निर्युक्तिसग्रहणि हेतूदाहर णादिभि: प्रतिष्ठिताजिनै: प्रज्ञप्ता भावा: पदार्था अन्येप्यजीवादय: आघविज्जतित्ति प्राकृतशैल्याआख्यायते सामान्यविशेषाभ्या कथ्यतइत्यर्थ: प्रज्ञाप्यन्तेना मादिभेदाभिधानेन प्ररूप्यन्ते नामादिस्वरूपकथनेन यथापज्जायाणभिधेयमित्यादि दर्श्यन्ते उपमामानत: यथागौर्गवय स्तथा इत्यादि निदर्श्यन्ते हेतुदृष्टा न्तोपन्यासेन उपदर्श्यन्ते उपनयनिगमनाभ्यांसकलनयाभिप्रायतोवेति सांप्रतमाचाराङ्गग्रहणफलप्रतिपादनायाह सेएवमित्यादि सइत्याचारांगग्राहको

जिणपन्नत्ताभावा आघविज्जंति पन्नविज्जंतिपरूविज्जंति नंदिस्संति उवदंसिज्जा सेएवंणाए एवंविन्नाए ए

वनस्पति सहित एह भाव। केहवाछे द्रव्यार्थनयें करी अविच्छेदपणें शाश्वताछे वली केहवाछे कडाकहतां पर्यायार्थपणे पतिसमे अन्यथापणिहोय निवद्वासू त्र थकी गूंथ्या । निर्युक्ति संग्रहणी हेतु उदाहरणे करी निकाचित निविड पणें प्रतिष्ठ्या । जिनवीतरागे प्रज्ञप्ता कह्या। एहवा भाव पदार्थ अनेरा पणि अजीव पदार्थ जिहा सामान्यविशेष पणे कहिये। नामादिक भेदनो कहिवो तेणेकरी प्ररूपिये। उपमाने करी देखाडिये। यथा गोस्त थागवय हेतु दृष्टन्तोपन्यासे करी निर्दंसियेदेखाडिये। उपनय निगमने करी सकलनयें करी उपदेशिये। ते आचाराग एहवोछे। एम एहभणी ने ज्ञाता

गृह्यत एवंआयत्ति अस्मिन्भावतः सम्यगधीते सल्वेवमात्माभवति तदुक्तक्रियापरिणामाव्यतिरेकात् सएवभवतीत्यर्थः इदंचसूत्रंपुस्तकेषु नदृष्टं नंव्यांतुदृश्यते इतीहव्याख्यातमिति एव क्रियासारमेवज्ञानमितिख्यापनार्थंक्रियापरिणाममभिधायाधुनाज्ञानमधिकृत्याह एवनायत्ति इदमधीत्य एवं ज्ञाताभवति यथैवेहोक्तमिति एवविन्नायत्ति विविधोविशिष्टोवा ज्ञाताविज्ञाताएव विज्ञाताभवति तत्रांतरीयज्ञाताभवति तंत्रातरीयज्ञातृभ्यः प्रधानतरइत्यर्थः एवमित्यादि निगमनवाक्यंएवमनेन प्रकारेणाचारगोचरविनयाद्यभिधानरूपेण चरणकरणप्ररूपणता आख्यायत इति चरण व्रतश्रमणधर्मसंयमाद्यनेकविध करणपिण्ड विशुद्धि समित्याद्यनेकविधं तयोः प्ररूपणता प्ररूपणैव आख्यायतेइत्यादि पूर्ववदिति सेत्तआयारेत्ति तदिदमाचारवस्तु अथवा सोयमाचारीयः पूर्वदृष्टइति

१ ॥ सेकितसूयगडे सूचायांसूचनात् सूत्र सूत्रेणकृत सूत्रकृतमिति सुष्टूच्यते सयगडेणति सूत्रकृतेन सूत्रकृतेवास्वसमयाः सूच्यते इत्यादिकव्य तथा

वंचरणकरणपरूवणया आघविज्जति परूविज्जंति नदिसिज्जति उवदंसिज्जति सेत्तंआयारो ॥ १ ॥

सेकिंतंसूयगडे सूयगडेणं ससमयासूइज्जति परसमयासूइज्जति ससमयपरसमयासूइज्जति जीवासूइ

जाण होय। एवविणतेत्ति विज्ञाताहोयअन्यशासन शास्त्रनाजाणतेहथकी पिण घणो जाणहोय। एम एणे प्रकारे आचार गोचर विनयादिकने कहिवा येकरी चरण श्रमण धर्म करण पिंडविशुद्धि तेहनी प्ररूपणाआख्यायते कहिये प्ररूपिये निर्देशीयेउपदेशिये पूर्ववत्। एह आचारांगकह्यो ॥ १ ॥ अथसूंतेसूत्रकृतांग। सूत्रसूत्रवाथको सूत्रेकीधो तेसूत्रकृत जेणे सुयगडाग स्वसमयजिनमत सूचवियेकहिये परसमयपरमत सूचवीयेकहिये जीवपदार्थ सूचवीये चेतनालक्षणजीव एहवो कहिये। अजीवपदार्थ धर्मास्तिकायादिक जिहांसूचवीये जीव अजीव बिहुपदार्थ जिहांकहिये पचास्तिकायमयलोकसूचविये

सूत्रकृतेन जीवाजीवपुण्यपापाश्रवसंवरनिर्जराबंधमोक्षावसानाः पदार्थाः सूच्यंते तथा समणाणमित्यादि अत्र श्रमणानां मतिगुणविशोधनार्थं स्वसमयः स्थाप्य तइतिवाक्यार्थः तत्र श्रमणाना किंभूताना मचिरकालप्रव्र्जि ना चिरप्रव्रजिताहि निर्मलमतयोभवत्यहर्निशशास्त्रपरिचया दृढश्रुतसपर्क्काच्चेति पुनः किंभू ताना कुसमयमोहमइ मोहियाणंति कुत्सितः समयः सिद्धांतोयेषांते कुसमयाः कुतीर्थिकास्तेषांमोहः पदार्थेष्वयथावबोधः कुसमयमोहस्तस्माद्योमोहः श्चोत्व मनोमूढता तेनमतिर्मोहिता मूढतानीता येषांतेकुसमयमोहमतिमोहिता अथवा कुसमयाः कुसिद्धातास्तेषामोवः सवो मकारस्तुप्राकृतत्वात् तस्माद्योमो होमूढतातेनमतिर्मोहिता येषाते कुसमयोघमोहमतिमोहिता अथवा कुसमयाना कुतीर्थिकाना मोघोमोघोवा शुभफलापेक्षया निष्फलोयोमोहस्तेनमति र्मोहिता येषाते कुसमयमोघमोहमतिमोहिता. कुससयमोहमतिमोहितावा तेषांतथासदेहा वस्तुतत्वप्रतिशसयाः कुसमयमोह २ मतिमोहितानामि

ज्जंति अजीवासूइज्जंति जीवाजीवासूइज्जंति लोगेसूइज्जंति अलोगेसूइज्जंति लोगालोगेसूइज्जंति सूत्र गडेणं जीवाजीवे पुण्णपावासवसंवरनिज्जरणबंधमोक्खावसाणापयत्थासूइज्जंति समणाणं अचिरकालपव्व इयाणं कुसमयमोहमइमोहियाणं संदेहजायसहजबुद्धिपरिणामसंसइयाण पावकरमइलमइगुणविसोहणत्थं

पचास्तिकायरहितअलोक सूचविये लोकालोक बेहूंसूचवीये सूयगडागसूत्रे चेतनावतजीव १ चेतनारहितअजीव २ सत्कर्मपुद्गलतेपुन्य ३ अशुभकर्मपुद्गलते पाप ४ कर्मनोसंचिवो तेआश्रव ५ कर्मनिरोध तेसवर ६ कर्मनो निर्जरवो वेगलोकरिवो तेनिर्जरा ७ नवोकर्म उपार्जवो तेबध ८ सकलकर्मथकी मूकाविवो ते मोक्ष ९ मोक्षछे अवसानछेहडे एहवा नवपदार्थ सूचवीये। श्रमण यतीने मतिगुणविसोधिवाने अर्थे स्वसमय स्थापिये ते श्रमण केहवाछे। अविरकाल

तिविशेषणसान्निध्यात् कुसमयेभ्यः सकाशात् येषान्ते सन्देहजाताः तयासहजा स्वभावसम्पन्ना नकुसमयश्रवणसम्पन्ना बुद्धिपरिणामा मतिस्वभावात् संश योजातो येषांते सहजबुद्धिपरिणामसंशयिता. सन्देहजाताश्च सहजबुद्धिपरिणाम संशयिताश्च ये ते तथा तेषा श्रमणानामिति प्रक्रमः किमतश्राह पाप करो विपर्ययशसयात्मकत्वेन कुत्सितप्रवृत्तिनिबधनत्वादशुभकर्महेतु रतएव च मलिनः स्वरूपाच्छादनाच्छादनिर्मलोयोमतिगुणोबुद्धिपर्यायस्तस्य विशोधना यनिर्मलत्वाधानाय पापकरमलिनमतिगुणविशोधनार्थं असीयस्सकिरियावाइयसयस्सन्ति अशीत्यधिकस्य क्रियावादिशतस्य व्यूह कृत्वा स्वसमय. स्थाप्यत इतियोगः एव शेषेष्वपि पदेषु क्रियायोजनोयेति तन न कर्त्तारविना क्रियासम्भवतीति ता मात्मसमयवायिनीं वदन्ति ये तच्छिलाश्च ते क्रियावादिनः ते पुन राम्माद्यस्तिलनतिपतिलक्षणा अमुनोपायेनाशीत्यधिकस्य शतस्य सख्याविज्ञेया. जीवाजीवाश्रवबन्धसम्वरनिर्ज्जरापुण्यापुण्यमोक्षाख्यान्नवपदार्थान् विरचय्य परिपाट्या जीवपदार्थस्याधः स्वपरभेदावुपन्यसनीयौ तयोरधो नित्यानित्यभेदौ तयोरप्यधः कालेश्वरात्मनियतिस्वभावभेदाः पञ्च न्यसनीयाः पुन रित्थं वि कल्पाः कर्त्तव्या अस्तिजीवः स्वतोनित्यः कालत इत्येको विकल्पो विकल्पार्थश्चाय विद्यते खल्वात्मास्वेनरूपेण नित्यश्च कालवादिनः उक्तेनैवाभिलापेन द्विती

असीअस्सकिरिआवाइयसयस्स चउरासीए अकिरियवाईणं सत्तठीए अन्नाणियवाईण बत्तीसाए वेणइय

नी थोडाकालनोछे प्रवज्या जेहनो एतले नवदीक्षितछे वली तेश्रमणकेहवाछे कुत्सितछे समय सिद्धांत जेहना तेकुसमय कुतीर्थीतेहनो मोह सत्य भावना यें विषे अयथार्थान बोध तेहथको ऊपनो मोह मूढता तेणेकरी मति मोहित छे जेहनो एहवोछे । कुत्सितशास्त्र श्रवणथकी सदेह ऊपनोछे । तथा सहज स्वभावनी बुद्धिमति तेहनोपरिणामतेहथको सशयऊपनोछे जेहने एहवा नवदीक्षीत श्रमण साधुछे तेहने एहवो कहे । पापनी करणहार मइलो जे म

योविकल्प ईश्वरकारिणिकस्य तृतीयः आत्मवादिनश्चतुर्थो नियतिवादिनः पञ्चमः स्वभाववादिनः एव स्वत इत्यपरित्यजता लब्धाः पञ्चविकल्पाः परत इ
त्यनेनापि पञ्च लभ्यन्ते नित्यत्वापरित्यागेन चेते दश विकल्पा एव मनित्यत्वेनापि दशैवेत्येकत्र विंशतिर्जीवपदार्थेन लब्धा अजीवादिष्वप्यष्टास्वेवमेव प्रतिप
द विंशतिविकल्पाना मतोविंशति र्नवगुणा शतमशीत्युत्तरक्रियावादिनामिति चउरासीए अकिरियवाईणंति एतेषांच स्वरूप यथा नद्यादिषु तथावाच्य नवर
मेतद्व्याख्याने पुण्यापुण्यवर्जाः सप्तपदार्था स्थाप्यते तदध. स्वतः परतश्चेति पदद्वय तदधः कालादीनांषष्टीयदृच्छा न्यस्यते ततश्च नास्तिजीवः स्वतः कालत
इत्येको विकल्प एवमेते चतुरशीति र्भवन्ति सत्तट्ठीएअन्नाणियवाईणति एतेपि तथैव नवर जीवादी न्नवपदार्था नुत्पत्ति दशमा नुपरि व्यवस्थाप्याधः सप्तस
दादयः स्थाप्याः तद्यथा सत्व मसत्व सदसत्व मवाच्यत्व सदवाच्यत्व मसद्वाच्यत्व सदसदवाच्यत्वमिति तत्र कोजानाति जीवस्य सत्व मित्येकोविकल्पः एवमस
त्वमित्यादि तत एते सप्तनवका स्त्रिषष्टिरुत्पत्ते स्त्वाद्याएव चत्वारोवाच्या इत्येव सप्तषष्टिरिति तथावत्तीसाएवेणइयवाईणति एतेचैव सुरनृपतिज्ञातियति
स्थविराधममातृपितॄणाम्प्रत्येक कायवाङ्मनोदानैश्चतुर्द्धा विनयः कार्य इत्यभ्युपगमवन्तो द्वात्रिंशदिति एव चैतेषां चतुर्णां वादिप्रकाराणां मीलने त्रीणि त्रिषष्ठ्य
धिकानि अन्यदृष्टिशतानि भवन्त्यत उच्यते तिण्हमित्यादि वूहंकिच्चत्ति प्रतिक्षेपं कृत्वा स्वसमयो जैनसिद्धान्तः स्थाप्यते यतएव सूत्रकृतेन विधीयते अत स्त
त्सूत्रार्थयोः स्वरूपमाह नाणेत्यादि नाना अनेकविधा बहुभिःप्रकारै रित्यर्थः दिट्ठतवयणनिस्सारंति स्याद्वादिना पूर्वपक्षीकृतानां प्रवादिना स्वपक्षस्थापनाय

ति गुण वृद्धि पर्याय तेहने विशोधिवाने अर्थे पापकरे मलिन मने विशोधनार्थं अशीअधिक १०० क्रियावादी तेहनो व्यूहकरीने स्वसमय स्थापीये एहक्रिया
पद आगलि सगले लेवी कर्ताविना क्रिया पख्यपापरूप नहोय तथा एहवो जेवदे तेक्रियावादी जीवने क्रिया पुण्यपापरूप नथी लागती ते अक्रियावादी

यानि दृष्टान्तवचना न्युपलक्षणत्वा द्वेतुवचनानि तदपेक्षया निःसारं सारताशून्यं परेषां मतमितिगम्यते सुष्टुपुनरपि प्रतिक्षेपणीयत्वेन दर्शयन्तौ प्रकटयन्तौ तथा विविधश्चासौ सत्पदप्ररूपणाद्यनेकानुयोगद्वाराश्रितत्वेन विस्तारानुगमनीयानेकजीवादितत्वाना विस्तरप्रतिपादन विविधविस्तारानुगमः तथा परमस द्भावो त्यतसत्यता वस्तूना मैदम्पर्यमित्यर्थं स्तावेव गुणौ ताभ्या विशिष्टौ विविधविस्तारानुगमपरमसद्भावगुणविशिष्टौ मोक्खपहोयारगत्ति मोक्षपथावतारकौ सम्यग्दर्शनादिषुप्राणिनाम्प्रवर्त्तका वित्यर्थं उदारत्ति उदारौ सकलसूत्रार्थदोषरहितत्वेन निखिलतद्गुणसहितत्वेन च तथा ऽज्ञानमेव तमोंधकारमात्यन्ति कांधकार मथवा प्रकृष्टमज्ञाममज्ञानतम तदेवांधकार अज्ञानतमोधकारस्मा तेन ये दुर्गा दुरधिगमा स्ते तथा तेषु तत्वमार्गेष्वितिगम्यते दीवभूयत्ति प्रकाश

वाईणं तिसहतेसठाणं ऋणदिठियसयाणं बूढकिञ्चा ससमएठाविज्जंति णाणादिठंतवयणणिस्सारंसुठुदरिसयं ता विविहवित्थराणुगमपरमसब्भावगुणविसिठा मोक्कपहोयारगाउदारा ऋसाणतमंधकारदुग्गेसुदीवभूऋा

एतले नास्तिकमती ८४ भेद जाणिवा तेहना आत्माने अजाणपणो ते येय एहवो जेवदे तेअज्ञानवादी तेहनामत ६७ तेहनो । मनुष्यपशुपखी सहूनोविनय करिवोजे वदेतेविनयवादी तेहना ३२ भेद तेहनो । तिणसेत्रेमठअधिक अन्यदृष्टि मिथ्यादृष्टिना शत सईकडा तेहनोव्यूह तिरस्कारकरीने । स्वसमयजिनम तने स्थापिये । नाना अनेकप्रकारेदृष्टातवचन तेणेकरी परमतनेनि'सार असारकरीनेस्थापें । सुष्ठुभलो आदरिवापणे दरिसयति प्रगटता अनेकप्रकारसत्प दप्ररूपणादिक अनेक अनुयोग द्वाराश्रित पणे । विस्तरानुगम जीवादितत्वनो विस्तार प्रतिपादवो तेविविध विस्तरानुगम । तथा परमसद्भाव अत्यतवस्तु नोसत्यपणे तेहोजविगुण तेणेकरी विशिष्ट विविध विस्तरानुगम परम सद्भाव गुणविशिष्ट मोक्षपथे अवतारक सम्यकदर्शननेविषे प्राणीनेप्रवर्तक सकल

कारिला द्वीपोपमो सोपाणाचेवत्ति सोपानानीव उन्नतारोहणमार्गविशेषाइव सिद्धिसुगतिगृहोत्तमस्य सिद्धिलक्षणासुगतिः सिद्धिसुगति रथवा सिद्धिश्च सुगतिश्च सुदेवत्वसुमानुषत्वलक्षणा सिद्धिसुगती तल्लक्षण यद्गृहाणामुत्तम गृहोत्तम वरप्रासादश्च स्तस्य सिद्धिसुगतिगृहोत्तमस्या रोहण इतिगम्यते निक्खोभ निप्पकंपत्ति निःक्षोभी वादिना क्षोभयितुमशक्यत्वात् निःप्रकंपौ स्वरूपतोपीषद्व्यभिचारलक्षणकम्पाभावात् कावित्याह सूत्रार्थौ सूचचार्थश्च निर्युक्ति भाष्य

सोवाणाचेवसिद्धिसुगइगिहुत्तमस्स णिक्खोभनिप्पकंपा सुत्तत्था सूयगडस्सणं परित्तावायणासंखेज्जा अणु ओगदारा संखेज्जाओपडिवत्तीओ संखेज्जावेढा संखेज्जासिलोगा संखेज्जाओनिज्जुत्तीओ सेणंअंगठयाए दोच्चे अंगे दोसुयक्खधा तेवीसंअज्झयणा तेत्तीसंउद्देसणकाला तेत्तीसंसमुद्देसणकाला छत्तीसंपदसहस्साइं पयग्गेणं प० संखेज्जाअक्खरा अणंतागमा अणतापज्जवा परित्तातसा अणताथावरा सासयाकडाणिबद्धा णिकाइ

सूत्रार्थदोषरहितपणे उदारप्रधानछे सूत्रार्थजेहनेविषेअज्ञान तेहीज तमअधकार तेणेकरीदुर्ल्लंघ दुरधिगम दुःखसाध्य जेसत्यमार्ग तेहनेविषे जेसूत्रार्थ दीवाभूत प्रकाशकारी छे अज्ञानाधकारनो निषेधकारी ज्ञानरूप उद्योत प्रकाश करे दीवासमान छे। सिद्धिलक्षण सुगति तल्लक्षणघर मदिर उत्तम प्रधानछे तेहने चाढिवाने अर्थे सोपान पाउडीया रूपसूत्रार्थछे। वादीपुरुषे निःक्षोभ चालिवाअशक्य निष्पकंप थोडोईकोईएक पाडीसकेनही एहवा सूत्रार्थ जिहा सूयगडाग सूत्रना परित्ता सख्याता वाचना सूत्रार्थप्रदानरूप सख्याता अनुयोगद्वार उपक्रमादिक जाणिवा । सख्याती प्रतिपत्ति वादीद्रव्य मतातरते प्रतिपत्ति सख्यातावेढा छंदविशेष सख्याता श्लोक अनुष्टुपछद सख्याता निर्युक्ति सूत्रनेविषे अर्थनो योजवो तेनिर्युक्ति विशिष्टघटना ते निर्युक्ति ते अगार्थपण

सग्रहणिवृत्तिचूर्णिपंजिकादिरूपइति सूत्रार्थौ ग्रंथंकाव्य यावत् सेत्तसूयगडेत्ति नवरं अयस्त्रिंशदुद्देशनकालाः चउतियचउरोदोदो एक्कारसचेवहुंतिएक्कसरा स त्तेवमहज्झयणा एगसरावीयसुयखंधे इत्यतोगाथातो वसेया इति ॥ २ ॥ सेकितठाणे इत्यादि अथकिन्तत् स्थान तिष्टंत्यस्मिन्प्रतिपाद्यतया जीवादय इतिस्थान तथाचाह ठाणेणमित्यादि स्थानेन स्थानेवा जीवाः स्थाप्यते यथावस्थितस्वरूपप्रतिपादनायेति हृदयं शेष प्रायोनिगदसिद्धमेव नवरं

जिणपसत्ताभावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति सेणंणाए एवंवि न्नाए एवंचरणकरण परूवणया आघविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति सेत्तंसूयगडे ॥ २ सेकितठाणे ठाणेणससमयाठाविज्जंति परसमयाठाविज्जंतिससमयपरसमयाठाविज्जंतिजीवाठाविज्जंति अजी

अगलचण वस्तुपणे। बीजे अंगे बेश्रुतस्कंध तेवीसअध्ययन तेत्रीसउद्देशनकाल उद्देशनाअवसर तेत्रीस समुद्देशनकाल जेतला उद्देशतेतला समुद्देश। ३६ सहस्र पद सूत्रार्थ नी समाप्ति जिहाते पद पद परिमाणें कह्यो। सख्याता अक्षर तिमज पूर्वनी परे परित्ता। अनता नही। त्रस बेइन्द्रियादिक अनता स्थाव र वनस्पतिविशेष द्रव्यार्थनयेकरी शास्वता छे एह सूयगडांगने विषे एहवा भाव कह्या। तेकेहवा पर्यायार्थपणें कृताकीधा निबद्धा सूत्रार्थ पणें गूंथ्या। नि काचिता तेहने उदाहरणे करी प्रतिष्ठ्या जिनवीतरागे प्रज्ञप्ता कह्या। भाव पदार्थ आख्यायते कहियेछे। तेमज पूर्वनी परेंजाणीवा। निर्देशिये उपदेशि ये पूर्ववत् तेसूयगडांग एहवो छे। एव एम एहभणीने ज्ञाता जाणहोय एम विज्ञाता वणीजाण होय। एम चरण ते श्रमणव्रत करण ते पिंडविशुद्ध्या दिक तेहनी प्ररूपणा जिहां आख्यायते कहिये निर्देशिये उपदेशिये ते सूयगडांग वीजोअंग ॥ २ ॥ अथ स्युं ते ठाणांग। जीवादिकपदार्थ

ठाणेण इत्यस्य पुनरुच्चारण सामान्येनैव पूर्वोक्तस्यैव स्थापनाय विशेषप्रतिपादनायच वाक्यांतरमितिज्ञापनार्थं तत्र दव्वगुणखेत्तकालपज्जवत्ति प्रथमाबहुवच नलोपा द्रव्यगुणक्षेत्रकालपर्यवाः पदार्थाना जीवादीनां स्थाने स्थाप्यन्ते प्रतिपादनाः तत्र द्रव्य द्रव्यार्थतया यथा जीवास्तिकायो ऽनन्तानि द्रव्याणि गुणः स्वभा वो यथोपयोगस्वभावोजीवः क्षेत्रयथा संख्येयप्रदेशावगाहनो ऽसौ कालोयथा अनाद्यपर्यवसितः पर्यवाः कालकृता अवस्था यथा नारकत्वादयो बालत्वादयो वेति सेलाइत्यादि गाथाविशेष स्तत्र शैलाहिमवदादिपर्वता स्थाप्यन्ते स्थानेनेतियोगः सर्वत्र सलिलाश्च गङ्गाद्यामहानद्यः समुद्रालवणादयः सूरा. आदित्या भवनान्यसुरादीना विमानानि चन्द्रादीनां आकाराः सुवर्णाद्युत्पत्तिभूमयो नद्य. सामान्यामहीकोसीप्रभृतयो निधय श्चक्रवर्त्तिसम्बन्धिनो नैसर्प्पादयो नव पुरिसजायत्ति पुरुषप्रकाराउन्नतप्रणतादिभेदा. पाठांतरेण पुरुसजोयत्ति उपलक्षणत्वा त्पुष्यादिनक्षत्राणा चन्द्रेणसह पश्चिमाग्निसोभयप्रमर्द्दकादियोगाः स्व

वाठाविज्जंति जीवाजीवा लोगा अलोगा लोगालोगावा ठाविज्जंति ठाणेणं दव्वगुणखेत्तकालपज्जवपयत्थाणं सेलसलिलायसमुद्दसूरभवणविमाणआगराणदीओणिहीओपुरिसजायसरायगोत्तायजोइसंचाले एक्कविहवत्तव्व

जिहांतिष्ठे रहे तेठाणाग । स्वसमय जिनमत थापिये परसमय अन्यमत उथापीये स्वसमय थापीये परसमय उथापिये । जीवपदार्थ थापिये अजीवनो अजीवपणो स्थापिये । जीहां जीवाजीव बिहुं स्थापिये लोक थापिये अलोक थापिये लोकालोक बिहूस्थापिये । ठाणागे द्रव्य गुण क्षेत्र काल पर्यवा जीवा दिक पदार्थना ठाणागे स्थापिया द्रव्य ते द्रव्यादिकार्थं पणे जीवास्तिकाय अने द्रव्य छे गुण तेस्वभाव यथा उपयोग स्वभाव जीव प्रति क्षेत्र असंख्य प्रदेशाव गाही जीव काल ते अनादि अपर्यवसित पर्यव ते कालकृतावस्था बालकपणादिक । तथा नारकपणादिक पदार्थ ने ठाणांगे स्थापिये । शैलहिमवतादिक

राश्च षड्जादयः सप्त गोत्राणिच काश्यपादीनि एकोनपञ्चाशत् जोइसचालयन्ति ज्योतिषः तारकरूपस्य सचालनानि तिहिंठाणेहि ताराख्वे चलेज्जा इ त्यादिना सूत्रेण स्थाप्यन्ते स्थानेनेतिप्रक्रमः तथा एकविधश्च तद्वक्तव्यश्च तदभिधेयमित्येकविधवक्तव्यक प्रथमेऽध्ययने स्थाप्यतइतियोगः एव द्विविधवक्तव्यक द्विती येध्ययने एव तृतीयादिषु यावद्दशविधवक्तव्यका दशमे ध्ययने तथा जोवाना पुद्गलानां च प्ररूपणताख्यायतइतियोग' तथा लोगठाइ्वणति लोकस्थायिनाच धर्म्मास्तिकायादीनाप्ररूपणता प्रज्ञापना शेष माचरसूत्रव्याख्यानादवसेय नवर मेकविंशति रुद्देशनकाला कथ द्वितीयतृतीयचतुर्थेष्वध्ययनेषु चत्वारश्चत्वार उद्देशका: पचमे त्रय इत्येते पंचदश शेषासु षट् षणामध्ययनानां षट्उद्देशनकालत्वादिति बावत्तरिपदसहस्साइति अष्टादशपदसहस्रमानादाचाराद्द्विगुण

यंदुविहजावदसविहवत्तव्वयजीवाणपोग्गलाणयलोगट्ठाइ्चणपरूवणयाआघविज्जातिठाणस्सणंपरित्तावायणा संखेज्जाअणुओगदारा सखेज्जाओपडिवत्तीओ सखेज्जावेढा सखेज्जासिलोगा संखेज्जाओसगहणीओ सेणंअगठ याए तइएअगेपणसुयक्खधे दसअज्झयणा एक्कवीसउद्देसणकाला बावत्तरिसहस्साइं पयग्गेणं प० संखेज्जाअ

पर्वत सलिला नदी गंगादिक समुद्र लवणादिक सूर सूर्य भवनते असुरना विमान चद्रमादिकना आगर सुवर्णोत्पत्तिभूमी नदी सामान्यनदी निधी ते नै सर्पादिकनिधान पुरिस जात उन्नत प्रनत भेदे पुरुष प्रकार स्वर ते षड्जादिक ७ गोत्र काश्यपादिक ४९ ज्योतिष तारारूप तेहना सचालन तिहिठाणे हिं। तारा रूपे चले इत्यादिक एतला स्थानांगे थापिये। एक विधिनो कहिवो द्विविधनो जिहां लगे दसविध ठाणालगे कहिवो। जीवनी पुद्गलनी प्ररूप णाठाणागे करी। लोकस्थापीये धर्मास्तिकायनी प्ररूपणा ठाणागे कही। वाचना सूत्रार्थ प्रदानरूप कही अनुयोगद्वार उपक्रमादिक सख्याती पतिपत्ति

त्वात् सूत्रकृतस्य ततोऽपि द्विगुणत्वात् स्थानस्येति ॥ २ ॥ सेकिंतमित्यादि अथ कोसौ समवाय' सूत्रेतु प्राकृतत्वेन वकारलोपात् समाये इत्युक्त समवायन समवाय: सम्यक्परिच्छेदइत्यर्थ: तद्धेतुश्च ग्रन्थोपि समवाय स्तथाचाह समवायेन समवायेवा स्वसमया: सूच्यन्ते इत्यादिकव्य तथा समवायेन समवायेवा एगाइयाणति एकद्वित्रिचतुरादीनां शतान्तानां कोटाकोट्यन्ताना वाएगत्थाणति एकेचतेअर्थाश्चेत्येकार्थ्या स्तेषां अयमर्थ: एकेषां केषाञ्चि न्न सर्वेषां

खकराअणंतागमा अणंतापज्जवा परित्तातसा अणंताथावरा सासयाकडा णिबद्धा णिकाइया जिणपसत्तान्ना वाअाघविज्जंति पसविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति सेणंणाए एवंविस्नाए एवंचरणकरणपरू वणयाअाघविज्जंति सेत्तठाणे ॥ ३ ॥ सेकिंतंसमवाए समवाएणं ससमयासूइज्जंति परसमयासूइज्जं

वादीद्वयमतातरप्रतिपत्ति। सख्याता वेढा छदविशेष। सख्याता श्लोक अनुष्टुपछद। सख्याती सग्रहणी । ते अंगार्थपणे त्रीजेअंगे एक श्रुतस्कंधना दस अध्ययन एकवीस उद्देशन काल उद्देशना अवसर। वहुत्तरि सहस्रपद पदने परिमाणें कह्या सख्याता अचर तिमज पूर्वनीपरें परित्ता अनतानही त्रस वेइन्द्रियादिक अनतास्थावर वनस्पत्यादिक द्रव्यार्थनयेकरी सास्वताछे। पर्यायार्थपणे कीधा सूत्रार्थपणे गूंथ्या। उदाहरणें करी प्रतिष्ठ्या । वीतरागें कह्या भाव पदार्थ कहिये छे। नामादिकभेदनी कहिवी तेणेकरी प्ररूपिये। सर्वदा निर्देशिये उपदेशिये। तेठाणाग एहवोछे। एहभणीने जाण एम घणोजाण होय। एम चरण साधुव्रतरूप करण पिंडविशुद्ध्यादिकनी प्ररूपणा कहीजाय तेठाणाग ॥ २ ॥ अथ स्यूं तेसमवाय। सम्यक्प्रकारे जाणिवो तेसमवाय समवायांगसूत्रे स्वसमय जिनमत सूचवीयेछे। एम परसमय सूचवीयेछे स्वमतपरमत सूचवीयेछे समवायांगे करी। एकछे प्रथम जेहने एहवाने

सेन संक्षेपेण समाचारः प्रतिस्थानं प्रत्यङ्गञ्च विविधाभिधेयाभिधायकत्वलक्षणो व्यवहारः आहिज्जइति आख्यायते अथसमाचाराभिधानानन्तरं तत्र यदुक्तं त

दभिधातुमाह तत्थयेत्यादि तत्थयत्ति तत्रैव समवाये इतियोगः नानाविधः प्रकारो येषान्ते नानाविधप्रकाराः तथा ह्येकेन्द्रियादिभेदेन पंचप्रकारा जीवाः

पुनरेकैकप्रकारः पर्याप्तापर्याप्तादिभेदेन नानाविधः जीवाजीवायत्ति जीवाश्चजीवाश्च वर्णिता विस्तरेण महतावचनसन्दर्भेण अपरेपिच बहुविधा विशेषा

जीवाजीवधर्म्मावर्णिता इतियोगः तानेवलेशतआह नरयेत्यादि नरयत्ति निवासनिवासिनामभेदोपचारा नारका स्ततश्च नारकतिर्य्यग्मनुजसुरगणानां स

म्बन्धिन आहारादय स्तत्र आहारओज आहारादि राभोगिकानाभोगिकस्वरूपोनेकधा उत्स्वासोऽनुसमयादिकालभेदेनानेकधा लेश्याकृष्णादिकाषोढा आ

वाससंख्या यथा नारकावासानां चतुरशीतिर्लक्षाणीत्यादिका आयतप्रमाणमावासानामेवसंख्यातासंख्यातयोजनायामता उपलक्षणत्वा दस्य विष्कम्भबाहल्य

परिधिमानान्यप्यत्र द्रष्टव्यानि उपपातएक एकएवसमये नैतावतामेतावतावा कालव्यवधानेनोत्पत्तिः च्यवनमेकसमये नैतावतामियतावा कालव्यवधानेन

णं समायारे आहिज्जातितत्थयणाणाविहप्पगारा जीवाजीवायवण्णियावित्थरेण अवरेविअ बहुविहाविसेसा

नरगतिरियमणुअसुरगणाणं आहारुस्सासलेसा आवाससंखआययप्पमाणउववायचवणउग्गहणोवहिवेय

पदार्थ वर्ण्या विस्तारेकरी। अनेरापणि घणिप्रकारे विशेष जीवाजीव पदार्थ वर्णव्या। नरकगति तिर्यंच मनुष्य देवता गण सवधीना आहार आभोगिक

अनाभोगिक ओजलोमादिक भेदें करी अनेक प्रकार। तथा उच्छासोच्छास लेश्या कृष्णादिक आवास संख्या नरकावासा ८४ लक्ष आयतप्रमाण आयाम

विष्कंभ परिधि प्रमाण। उपपात एकेसमे केतला एक नारकादिक जीव ऊपजे। एके केतला मरे। चवे अवगाहणा शरीरनोप्रमाण अवधि अगुलने अ

वर्षाणाञ्च भरतादिक्षेत्राणां निर्गमाः पूर्वेभ्यः उत्तरेषामाधिक्यानि समायन्ति समवाये चतुर्थेअङ्गे वर्णिता इतिप्रक्रमः अथैतन्निगमयन्नाह एतेचोक्ताः पदार्था अन्येचघनुतनुवातादयः पदार्था एवमादयः एवंप्रकाराः अत्रसमवाये विस्तरेणार्थाः समाश्रीयन्ते अविपरीतस्वरूपगुणभूषिताबुद्ध्यांगीक्रियंतइत्यर्थः अथवा समस्यन्ते कुप्ररूपणाभ्यः सम्यक्प्ररूपणायां चिप्यन्ते शेषनिगदसिद्धमानिगमनादिति ॥ ४ ॥ सेकितंवियाहेइत्यादि अथकेयं व्याख्या व्याख्या

गमायसमाए एएआणयेएवमाइत्थवित्थरेणं आत्थासमाहिज्जंति समवायस्सणं परित्ताबायणाजावसेणं अंगठयाए चउत्थेअंगे एगेअज्झयणे एगेसुयक्खंधे एगेउद्देसणकाले एगेसमुद्देसणकाले एगेचउयाले पदसहस्से पदग्गेणप० संखेज्जाणिअक्खराणि जावचरणकरणपरूवणया आघविज्जंति सेत्तंसमवाए ॥ ४ ॥

नो वर्ष क्षेत्रनो नैर्गमा पहिलाथकी अगिलानो अधिकारपणि समवायांग पणे। चौथे अंगे एह पूर्वोक्त पदार्थ वर्णव्या एह पूर्वे कह्या तेअनेरापणि पदार्थ घन तनु वातादिक समवायागें विस्तारपणे पदार्थ आश्रीये । समवायागनो वाचना सूत्रार्थ दानरूप । यावत् शब्दे वेढालगे जाणवो स्लोक संख्याता इत्यादिक आचारांगनी परे सर्व कहिवो तेअगार्थपणे चौथे अंगे एक अध्ययन एकश्रुतस्कंध एक एक उद्देशनकाल एक एक समुद्देशनकाल एकला ख ४४ हज्जार पद पदपरिमाणें कह्या। संख्यात अक्षर जाव यावत् शब्दे एमचरणसाधुव्रतरूप करण पिंडविशुद्ध्यादिकनो प्ररूपणा कहियेछे । तेसमवायांग चौथो ॥ ४ ॥ अथ स्य एह व्याख्या बखाणिये अर्थ जेहने विषे तेव्याख्या भगवतीये सूत्रे स्वसमय जिनमत कहियेछे। परमत कहियेछे

भूतानां जिनेनेति भगवता महावीरेण वित्थरेणभासियाणं विस्तारेणभणितानामित्यर्थः. पुनःकिंभूतानां दव्वेत्यादि द्रव्यगुणक्षेत्रकालपर्यवप्रदेशपरिणामानां यथास्तिभावोनुगमनिक्षेपनयप्रमाणसुनिपुणोपक्रमै र्विविधप्रकारैः प्रकटः प्रदर्शितोये व्याकरणे स्तानितया तेषा तत्र द्रव्याणि धर्मास्तिकायादीनि गुणा ज्ञानवर्णादयः क्षेत्रमाकाश कालः समयादिः पर्यवा. स्वपरभेदभिन्नाधर्मा. अथवा कालकृता अवस्था नवपुराणादयः पर्यवा. प्रदेशा निरंशावयवाः परिणामा अवस्थातोवस्थान्तरगमनानि यथा येनप्रकारेणास्तिभावोऽस्तित्व सत्ता यथास्तिभाव अनुगमः संहितादिव्याख्यानप्रकाररूप उद्देशनिर्देशनिर्गमादिद्वारकलापात्मको वा निक्षेपो नामस्थापनाद्रव्यभावै र्वस्तुनोन्यासः नयप्रमाण नया नैगमादय. सप्त द्रव्यास्तिकपर्यायास्तिकभेदात् ज्ञाननयक्रियानयभेदाद्वा द्वौ तेएव तावेव वा प्रमाण वस्तुतत्वपरिच्छेदन नयप्रमाण तयासुनिपुणः सुसूक्ष्मः सुनिपुणोवा सुष्टुनिश्चितगुण उपक्रमः आनुपूर्व्यादि र्विविधप्रकारता चेषा भेद भणनत एवोपदर्शितेति पुनःकिंभूताना व्याकरणाना लोकालोकौ प्रकाशितौ यैस्तानि तथा ससारसमुद्दरुंदउत्तरणसमत्थाणति ससारसमुद्रस्य विस्तीर्णस्य उत्तारणे तारणे समर्थानामित्यर्थं अतएव सुरपतिसम्पूजिताना प्रच्छकनिर्णायकपूजनात् स्तुतत्वेन श्लाघितत्वाद्वा तथा भवियजणपयहियथाभिणंदियाणंति

माण सुनिउणोवक्कम विविहप्पकारपगडपयासियाणं लोगालोगपयासियाणं संसारसमुद्दरुंदउत्तरण समत्थाणं सुरवइसंपूजियाणं भवियजणपयहियथाभिनंदियाणं तमरयविद्धंसणाणं सुदिठ्ठदीवभूय ईहामति

म आनुपूर्व्यादि अनेकप्रकारे प्रगट पणें प्रकाश्याछे। वली प्रश्न केहवा छे लोकालोकनो छे प्रकाश जेहने विषे। वली केहवा ससार चतुर्गतिकतलक्षण समुद्र रुद अतिविस्तीर्ण तेहने उतरवा समर्थछे। वली केहवा सुरपति इंद्र तेणे संपूजितछे । भविकजनपदलोक तेहनो हृदय चित्त तेणेकरी अभि

भव्यजनानां भव्यप्राणिना म्मजालोको भव्यजनप्रजा भव्यजनपदोवा तस्या स्तस्य वा हृदये चित्तैरभिनन्दितानां मनुमोदितानां मितिविग्रहः तथा तमोरजसी अज्ञानपातके विध्वसयति नाशयति यत्तत्तमोरजोविध्वंसं तञ्च तज्ज्ञानञ्च तमोरजोविध्वंसज्ञानं तेन सुदृष्टानि निर्णीतानि यानि तानि तथा अतएव तानिच तानि दीपभूतानिचेति अतएवच तानि ईहामतिबुद्धिवर्द्धनानि चेति तेषां तमोरजोविध्वसज्ञानसुदृष्टदीपभूते हामतिबुद्धिवर्द्धनाना न्तत्र ईहा वितर्को मतिरवायो निश्चयइत्यर्थः बुद्धिरौत्पत्तिक्यादिचतुर्विधेति अथवा तमोरजोविध्वंसनानामिति पृथगेवपद म्पाठान्तरेण सुदृष्टदीपभूतानामितिच तथा छत्तीस सहस्समणूणयाणति अन्यूनकानि षट्त्रिंशत्सहस्राणि येषान्तानि तथा इहमकारोऽन्यथापादनिपातस्य प्राकृतत्वादनवद्यइति वागरणाणंति व्याक्रियन्ते प्रश्नानन्तरमुत्तरतया भिधीयन्ते निर्णायकेन यानि तानि व्याकरणानि तेषांदर्शनात्प्रकाशनादुपनिबन्धनादित्यर्थः अथवा तेषां दर्शना उपदर्शका इत्यर्थः कइत्याह सुयत्थबहुविहप्पयारेत्ति श्रुतविषया अर्थाः श्रुतार्था अभिलाप्यार्थविशेषाइत्यर्थः श्रुतावा कथिता जिनसकाशेगणधरेण ये अर्था स्तेश्रुतार्थाः अथवा श्रुतमिति सूत्र अर्था निर्युक्त्यादय इति श्रुतार्था स्तेच ते बहुविधप्रकाराश्चेति विग्रहः श्रुतार्थानां वा बहुविधाः प्रकारा इतिविग्रहः किमर्थं तेव्याख्यायत इत्याह शिष्या

बुद्धिवद्धमाणाणं छत्तीससहस्समणूणयाणं वागरणाणं दंसणाउ सुयत्थबहुविहप्पगारा सीसहियत्था गुण

नंदित अनुमोदाछे। वली केहवा तम अज्ञानरूपरज अज्ञान पातक तेहनो विध्वसक नाशक छे रूडीपरें निर्णय कीधा एणे कारणेदीवारूप एणे कारणे ईहा वितर्क मतिते अवाय निश्चयार्थबुद्धि ते औत्पत्तिक्यादि चिहु प्रकारे तेहने वधारेछे एहवा छत्रीस हजार जणामही संपूर्ण प्रश्न ने देखाडता थका सूत्रार्थपणे शिष्यने हितना अर्थ भणी गुणरूप अर्थ प्रासादिक लक्षण हाय सरीखो प्रधानहाथ। भगवती सूत्रना गणित बाचना। संख्याता अनुयोग

णां हितमनर्थप्रतिवातार्थप्राप्तिरूप स्तदेवार्थः प्रार्थमानत्वा त्तस्य तस्मै इति किंभूतास्ते अतआह गुणहस्ता गुणएवार्थ प्रास्यादिलक्षणो हस्तइवहस्तः प्रधा नावयवो येषाते तथा वियाहस्सेत्यादितु निगमनातसूत्रसिद्ध नवरं शतमिहाध्ययनस्य सन्ना चतुरशीतिः पदसहस्राणि पदाग्रेणेति समवायापेक्षया द्विगु

हत्या वियाहरसणं परित्तावायणा सखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओपडिवत्तीओ संखेज्जावेढा सखेज्जा सिलोगा सखेज्जाओ निज्जुत्तीओ सेणं अंगठयाएपचमे अंगे एगेसुयखंधे एगेसाइरेगे अज्झयणसते दसउ द्देसगसहस्साइं दससमुद्देसगसहस्साइं छत्तीसवागरणसहस्साइं चउरासीइपयसहस्साइं पयग्गेणं पन्नत्ता सखेज्जाइं अक्खराइं अणतागमा अणतापज्जवापरित्तातसाअणंताथावरा सासयाकडा णिबद्धा णिकाइ या जिणपन्नत्ता भावा आघविज्जंतिपन्नविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति सेणंणाए एवंवि

द्वार उपक्रमादिक । सख्याती प्रतिपत्ती । सख्यातावेढाछंदविशेष । सख्यातास्लोक अनुष्टुपादिक । संख्याती निर्युक्ति । तेह अगार्थपणे पाचमेअगे १ श्रुतस्कंध १ अधिक १०० अध्ययन दशहजार उद्देशा दशहजार समुद्देशा ३६ हजार प्रश्न ८४ हजार पद समवायांगनी अपेक्षायें बेगुणाकीजे तो दोला ख ८८ हजार पदथाय । तें इहां नलेवा । संख्याता अक्षर । अनन्तागमा । अनन्ता पर्याय । त्रसबेइन्द्रियादिक । अनन्तास्थावर बनस्पती द्रव्यार्थ करी शाश्वताछे । पर्यायार्थ पणे कीधाछे । सूत्रार्थपणें गुथ्या निकाचित ते हेतु उदाहरणे करी प्रतिष्ठ्या । जिन वीतरागे कह्या जे पदार्थ ते कहियेछे । नामादि क भेदें करीप्ररूपियेछे । शुद्धभावे उपदेश करियेछे । ते भगवती सूत्रने विषे शाश्वता कीधा शाश्वतादिक पदनोव्याख्या आचारागाधिकारे कीधीछे जिहा

यताया इहानाश्रयणा दन्यथा तद्विगुणत्वे द्विलचे अष्टाशीति:सहस्राणिचभवन्तीति ॥ ५ ॥ सेकिंतमित्यादि अथ का स्ता ज्ञाताधर्मकथा ज्ञाता
न्युदाहरणानि तत्प्रधाना धर्मकथा ज्ञाताधर्मकथा दीर्घत्व संज्ञात्वात् अथवा प्रथमश्रुतस्कंधे ज्ञाताभिधायकत्वात् ज्ञातानि द्वितीयस्तु तथैव धर्मकथा स्तत
स्व ज्ञाता।नच धर्मकथाश्च ज्ञाताधर्मकथा स्तत्र प्रथमव्युत्पत्त्यर्थं सूत्रकारो दर्शयन्नाह नायाधम्मकहासुणमित्यादि ज्ञातानामुदाहरणभूतानां मेघकुमारादी
ना नगरादीन्याख्यायते नगरादीनि द्वाविंशतिपदानि कण्ठ्यानिच नवर मुद्यान पत्रपुष्पफलच्छायोपगतवृक्षोपशोभित विविधवेषोत्तमसानश्च बहुजनो यत्र
भोजनार्थं यातीति चैत्य व्यंतरायतन वनखंडो नेकजातीयैरुत्तमैर्वृक्षैरुपशोभितमिति आघविज्जति इहयावत्करणा दन्यानि पंचपदानि दृश्यानि यावदयसूत्रा

॥ सेकिंतंणायाधम्मकहाउ णायाधम्मकहासुणं णायाणं णगराइ उज्जाणाइं चेइआइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाउ इहलोइअ परलोइअइड्ढीविसेसाभोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ सुयपरिग्गहा तवोव ... आए एवं चरणकरण परूवणया आघविज्जति सेत्तंवियाहे ॥ ५ ॥

सगे। चरण श्रमण धर्मव्रत करण पिंडविशुद्ध्यादिकनी प्ररूपणा ते भगवती सूत्र ने विषे कहिये ते व्याख्याअंग एतले भगवती अंगपांचमो जाणिवो
॥ ५ ॥ स्यूंते ज्ञाता धर्मकथांग। ज्ञाता उदाहरण तत्प्रधान जेकथा ते ज्ञाताधर्मकथा अथवा पहिले श्रुतस्कंधे ज्ञाता मेघकुमारादिकना
नगर नाम। उद्यान पत्र पुष्प फलेकरी शोभित चैत्य व्यंतरायतन। अनेक जाति ना वृक्षे करी शोभित वनखंड। राजा। माता। पिता। एहनानाम
समोसरण घणानो एकत्र मीलन। धर्माचार्यनाम। धर्मनी कथा। इहलोक मनुष्यलोक। परलोक देवगति तेहनी ऋधि विशेषनो भोग तेहनो त्या

वयवो यथा नायाधम्मेत्यादि तत्र ज्ञाताधर्म्मकथासु णमित्यलंकारे प्रव्रजितानां क्व विनयकारणजिनस्वामिशासनवरे कर्म्मविनयकरजिनशासनवरे प्रवचनापेक्षया प्रधानेप्रवचने इत्यर्थः पाठांतरेण समणाणंविणयकरणजिणसासणमि पवरे किंभूतानां संयमप्रतिज्ञा संयमाभ्युपगमः सैव दुरधिगम्यत्वात् कातरनरक्षोभकत्वा द्गंभीरत्वाच्च पातालमिवपाताल तत्र धृतिमतिव्यवसाया दुर्लभा येषांते तथा पाठांतरेण संयमप्रतिज्ञापालने ये धृतिमतिव्यवसाया स्तेषु दुर्लभा येषांते तथा तेषा तत्र धृतिश्चित्तस्वास्थ्यं मतिर्बुद्धिर्व्यवसायो ऽनुष्ठानोत्साह इति तथा तपसि नियमोऽवश्यंकरण त्तपोनियमचित तप सच तपउपधानचा

हाणाइ परियागा संलेहणाउ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चाया पुणबोहिलाभो अंतकिरियाओय आघविज्जंति जावनायाधम्मकहासुणं पव्वइयाणं विणयकरणजिणसामिसासणवरे संजमपइन्नापालणधिइमइववसायदुब्बलाणं तवनियमतवोवहाणरणदुद्धरभरभग्गयाणिस्सहयाणिसिट्ठाणं घो

ग । प्रव्रज्यादीक्षा । सूत्रनो मेलवो । तपोपधान १२ भेदे तपनो करिवो । पर्याय दीक्षानो काल । संलेखणानो करिवो । भात पाणीनो पचखवो । पादपोपगमन छेदीयकोवृक्षशाखा जिम हालेचाले नही तिम ते यती संथारो कर्यांपछे हलेचाले नही । देवलोकनो जाइवो । उत्तम कुले अवतार । वली बोधिलाभ धर्मनो प्राप्ति । अंतक्रिया संसारना अंतनो करिवो । एह सर्व वस्तु ज्ञाताविषे कहियेछे । जिहा लगे ज्ञाताधर्म कथाने विषे प्रव्रजित यतीनो विनयनो करिवो तिहांलगे । जिन स्वामि वीतराग देवना प्रधान शासन विषे संयमपालवाभणी कीधी प्रतिज्ञानो पालवो । धृति चित्तनो स्वस्थपणो मति बुद्धि व्यवसाय तेह अनुष्ठान विषें उत्साह तेहने विषे दुर्बल कातर हुयाछे तेपुरुषाने तप तथा नियम अवश्यकरणीय तपोपधान बारे भेदे तप तेहिज

नियंत्रितं तपएव श्रुतोपचारतपोवा तपोनियमतपउपधाने तेएव रणस्य कातरजनक्षोभकत्वात् संग्रामो दुद्धरभरत्ति श्रमकारणत्वा दुर्धरभरस्य दुर्वहत्वोद्वादि भार स्ताभ्यां भग्ना इति भग्नका:पराङ्मुखीभूता स्तथा निसहाणन्ति नि:सहा नितरामशक्तास्तएव नि:सहका निसृष्टागा मुक्तागा ये ते तपोनियमतपउ पधानरणदुर्द्धरभरभग्नकनि: सहकनिसृष्टा: पाठांतरेण नि:सहकनिविष्टा स्तेषां मिहच प्राकृतत्वेन वकारलोपसविकरणाभ्यांभग्ना इत्यादौ दीर्घत्व मवसेय तथा घोरपरीषहै: पराजिता स्वासमर्था: सन्त. प्रारब्धाश्च परीषहैरेव वशीकर्तु रुद्धाश्च मोक्षमार्गगमने ये ते घोरपरीषहपराजिता सहप्रारब्धरुद्धा: अतएव सिद्धालयमार्गात् ज्ञानादे र्निर्गता: प्रतिपातिता ये ते तथा तेचतेचेति तेषा घोरपरीषहपराजितासहप्रारब्धरुद्धसिद्धालयमार्गनिर्गताना पाठांतरेण घोरपरी षहपराजिताना तथा सह युगपदेव परीषहै र्विशिष्टगुणश्रेणिमारोहत: प्ररुद्धरुद्धा: अतिरुद्धा सिद्धालयमार्गनिर्गताश्च ये ते तथा तेषा सहप्ररुद्धसिद्धालय मा र्गनिर्गतानां तथा विषयसुखेषु तुच्छेषु स्वरूपत: आशावशदोषेणमनोरथ पारतन्त्र्यवैगुण्येन मूर्च्छिता अभ्युपपन्ना येते तथा तेषाविषयसुखतुच्छाशावशदोषमू र्च्छिताना पाठांतरेण विषयसुखेया महेच्छा:कस्यांचिदवस्थायां या चावस्थांतरे तुच्छाशा तयो र्वश: पारतन्त्य तल्लक्षणेनदोषेण मूर्च्छिता ये ते तथा तेषांविषय

रपरीसहपराजियाणं सहपारद्धरुद्धसिद्धालयमग्गनिग्गयाणं विसयसुहतुच्छआसावसदोसमुच्छियाणं विरा

दुर्वह भार रण सग्राम तेणे करी भग्न उपराठा थयाछे अत्यर्थ अशक्तछे सयम मार्गे थाकाछे वलो घोर रुद्र उपद्रव करी भागाछे एहवा असह असम र्थछे प्रारब्धा परीषह वसिकरिवाने रुंध्याछे । वलो सिद्धालयमार्ग ते मोक्षमार्ग ज्ञान दर्शन चारित्र थकी नीकल्याछे । तुच्छ विषय सुखनो आशा रूप दो षे करी वसथई तेमूर्च्छित थयाछे । विराध्याछे दर्शनज्ञानचारित्र । यतीना अनेक प्रकारना मूलगुण उत्तरगुणरूप गुण तेहने विषे निस्सार तेणेकरी शून्य

सुखमहेच्छातुच्छागारवग्रदोषमूर्च्छितानां तथा विराधितानि चारित्रज्ञानदर्शनानि यैस्ते तथा तथा यतिगुणेषु विविधप्रकारेषु मूलगुणोत्तरगुणरूपेषु निःसारा सारवर्जिता प्रलजिप्रायगुणधान्याइत्यर्थः तथा तैरेव यतिगुणै. शून्यका: सर्वथा अभावा ये ते तथेति पदत्रयस्यचकर्मधारयो ऽतस्तेषा विराधितचारित्रज्ञान दर्शनयतिगुणविविधप्रकारनिःसारशून्यकानां किमतआह ससारे संसृतौ अपारदु.खा अनन्तक्लेशा ये दुर्गतिषु नारकातिर्यच्चु मानुषकुदेवरूपासु भवा भवग्र हणानि तेषां ये विविधाः परपराः पारंपर्याणि तासांयेप्रपचा स्ते ससाराऽपारदु.खदुर्गतिभवविविधपरपरप्रपचा आख्यायंते इतिपूर्वेणयोग स्तथा धीरा णांच महासत्वानां किंभूताना जितपरीषहकषायसैन्य यै स्ते तथा धृतेर्मनःस्वास्थ्यस्य धनिका' स्वामिनो धृतिधनिकाः तथा सयमे उत्साहो वीर्यं निश्चितो ऽव श्यभावी येषाते सयमोत्साहनिश्चिताःततः पदत्रयस्य कर्मधारयो ऽतस्तेषा जितपरीषहकषायसैन्यधृतिधनिकसयमोत्साहनिश्चिताना तथा राधिता ज्ञानदर्शन चारित्रयोगा यैस्ते तथा निःशल्यो मिथ्यादर्शनादिरहितः शुद्धश्चातीचारविमुक्तो यः सिद्धालयश्च सिद्धिमार्ग स्तस्याभिमुखा येते तथा तत. पदद्वयस्य कर्मधार

हियचरित्तनाणदंसणजइगुणविविहप्पयारनिस्सारसुन्नयाणं संसारअपारदुक्खदुग्गइ भवविविहपरंपरापवं

धा धीराणयजियपरीसहकसायसेन्नधिइधणियसंजमउच्छाहनिच्छियाणं आराहियनाणदंसणचरित्तजोगनि

छे। एहवा भाव ज्ञातानें विषे कह्याछे। ससारनेविषें अपार दुख दुर्गति ने विषे उपजवो तेहनो जे अनेक प्रकारनोप्रपरंपरा सतति तेहना विस्तारने वि षे जेधीर महासत्वनाधणी वली जेणे परीषह कषायनी सेना जीती छे। तेहना प्रबन्ध ज्ञातानें विषे कहियेछे। वली धृति जे मननो स्वस्थपणो तेहीजछे धन जेहने एतले धृतिना स्वामी। तथा सयमनेविषे उत्साह वीर्य निश्चित छे जेहना। जेणे ज्ञानदर्शन चारित्रनायोग आराध्याछे। जे निःशल्य मिथ्यात्व

य अतस्तेषामाराधितज्ञानदर्शनचारित्रयोगनिःशल्यशुद्धसिद्धालयमार्गाभिमुखानां किमतआह सुरभवने देवतयोत्पादे यानिविमानसौख्यानि तानि सुरभवन विमानसौख्यानि अनुपमानि ज्ञाताधर्मकथास्वाख्यायत इति प्रक्रम इहच भवनशब्देन भवनपतिभवनानि व्याख्याता न्यविराधितसयमप्रव्रजितप्रस्तावात् तेहि भवनपतिषु नोत्पद्यन्तइति तथा भुक्त्वा चिर भोगान् मनोज्ञशब्दादीन् तथाविधान् दिव्यान् स्वर्गभवान् महार्हान् सहतआत्यन्तिकान् अर्हान् प्रशस्त तया पूज्यानितिभाव' ततश्च देवलोकात् कालक्रमच्युतानां यथाच पुनर्लब्धसिद्धिमार्गाणा मनुजगता ववाप्तज्ञानादीना मन्तक्रिया मोक्षो भवति तथा ख्यायतइतिप्रक्रमः तथा चलितानाञ्च कथञ्चित्कर्मवशत परीषहादा वधीरतया सयमप्रतिज्ञायाः प्रभ्रष्टाना सहदेवै र्मानुषा सदेवमानुषा स्तेषा सम्बन्धी नि धीरकरणे धीरत्वोत्पादने यानि कारणानि ज्ञातानि तानि सदेवमानुषधीरकारणकारणानि आख्यायन्तइतिप्रक्रमः इयमत्रभावना यथा आर्यापाढो देवे नधीरीकृतो यथावा मेघकुमारो भगवता शैलकाचार्यो वा पान्थकसाधुना धीरीकृत एव धीरकरणकारणानि तत्राख्यायन्ते किम्भूतानि तानीत्याह बोधना

स्सल्लसुद्धसिद्धालयमग्गमभिमुहाणं सुरभवणविमाणसुक्खाइं अणोवमाइं भुत्तूणचिरंच भोगभोगाणि ताणि दिव्वाणि महरिहाणि ततोयकालक्कमचुयाणं जहयपुणो लद्धसिद्धिमग्गाणं अंतकिरिया चलियाणयसदेवमा

दर्शनादि रहित अतीचार रहित थको सिद्धिना मार्गने अभिमुख छे तेहने देवताना भवने विषे विमानना अनुपम सुख ज्ञाताने विषे कहियेछे। तेह मनोज्ञ शब्दादिक पचेंद्रियना विषय महर्घ्य देवतासंबंधी चिरकाललगे भोगीने कालक्रमे देवलोकथीचव्यो तथा वलीपाम्योछे सिद्धिनो मार्ग जेणे । एह पूर्वोक्त सहुनो अतक्रिया ज्ञाताने विषे कहीछे । कोइक कर्मना वशथी जे चल्याछे सयमनी प्रतिज्ञाथी भ्रष्टथया छे देवता सहित मनुष्य तत्संबन्धी धीर

नुशासनानि बोधनानि मार्गभ्रष्टस्य मार्गसंस्थानानि अनुशासनानि दु:खस्य सुस्थतासम्पादनानि अथवा बोधनसामत्वग तत्पूर्वकान्यनुशासनानि बोधना नुशासनानि तथा गुणदोषदर्शनानि सयमाराधनाया गुणा इतरत्र दोषा भवन्तीत्येव न्दर्शनानि वाक्यान्याख्यायन्त इतियोग: तया दृष्टान्तान् ज्ञातानि प्रत्य यांश्च बोधिकारणभूतानि वाक्यानि श्रुत्वा लोकमुनय. शुकपरिव्राजकादयो यथा येनप्रकारेण स्थिता. शासने जरामरणनाशनकरे जिनानासम्बन्धिनीति भाव: तथाख्यायन्तइतियोग: तथा आराहितसजमत्ति एतएव लौकिकमुनय: सयमम्पालिताश्च जिनप्रवचनम्प्रपन्ना: पुन: परिपालितसयमाश्च सुरलोक इत्वा चैते सुरलोकप्रतिनिवृत्ता उपयन्ति यथा शाश्वत सदाभाविन शिवमबाधक सर्वदु खमोक्ष निर्वाणमित्यर्थ. एतेचोक्तलक्षणा. अन्येच एवमादय आदि

णुसथीरकरणकारणाणि बोधणअणुसासणाणि गुणदोसदरिसणाणि दिठ्ठते पच्चयसोऊणलोगमुणिणो जह ठियसासणम्मि जरमरणनासणकरे आराहिअसजमाय सुरलोगपडिनियत्ता उवेंति जहसासयं सिवं सब्बदु

करिवाने अर्थे जेकारण उदाहरण ज्ञातानेविषे कह्याछे। जिम मेघकुमारने हाथीना उदाहरणथी थिरकीधो तथा बोधन जे मार्गथकी भ्रष्ट तेहने मार्गे थापिवो तथा शिक्षा देवी। गुणवली दोषनो देखाडवो। तथा प्रतिबोधना कारणभूत दृष्टांत सुणीने लोकमुनी शुकपरिव्राजकादिक जेणे प्रकारे जरा मरणनो नाश करणहार एहवा जिन शासन ने विषे रह्या। तेज्ञाताने विषे कह्याछे। आराध्योछे सयम जेणे एहवा एहीज लोकमुनी देवलोक पाम्या वली देवलोक थी उपराठा भावे वली धर्म आराधीने जिम शाश्वत सदाभावि बाधारहित सर्वदु:खमोक्ष एतले निर्वाण। इत्यादिक पूर्वे कह्याते अथवा

शब्दस्य प्रकारार्थत्वा देवमकारार्थाः पदार्थाः विस्थरेणयत्ति विस्तरेण चशब्दात्कचिच्चित् संक्षेपेण आख्यायन्त इति क्रियायोगः नायाधम्मकहासुणमित्या
दि कथ्यमानिगमना नवर मेकूणतीसमज्झयणत्ति प्रथमश्रुतस्कन्धे एकोनविंशतिर्द्वितीयेच दशेति दसधम्मकहाणवग्गा इत्यादौ भावनेय मिहैकोनविंशतिर्ज्ञा
ताध्ययनानि दार्ष्टान्तिकार्थज्ञापनलक्षणज्ञातप्रतिपादकत्वा तानि प्रथमश्रुतस्कन्धे द्वितीयेत्वहिंसादिलक्षणस्य धर्मस्य कथा आख्यानकानी त्युक्तंभवति तासां
च दशवर्गा वर्गइतिसमूह स्ततश्चार्थाधिकारसमूहात्मकान्यध्ययनान्येव दशवर्गाद्रष्टव्या स्तत्रज्ञातेष्वादिमानि दशज्ञातानि ज्ञातान्येव नतेष्वाख्यायिकादिस

एकमेक एए अप्रोय एवमाइत्यवित्थरेणय णायाधम्मकहासुणं परित्तावायणा संखेज्जा अणुओगदाराजावस
खेज्जाओ संगहणीओ सेण अंगठयाए छठे अंगेदोसुअक्खधा एगूणतीस अज्झयणा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता

अन्यभी विस्तार थी तथा संक्षेप थी ज्ञाताने विषें कह्याछे। ज्ञाताने विषे संख्याती वाचना सूत्रार्थ प्रदानरूप। संख्याता अनुयोगद्वार उपक्रमादिक। या
वत् संख्याती संग्रहणी लगे जाणिवी सूत्र थोडो अर्थ घणो ते संग्रहणी। तेह अंगार्थ पणे। एम छठे अंगे बे श्रुतस्कंध पहिले श्रुतस्कंधे उगणीस अध्ययन ते
१९ ज्ञाताध्ययन संक्षेपथी बे प्रकारे कह्या। ते कहेछे। कोईक अध्ययन मेघकुमारादिक चरित्ररूप। कोईक जल्पितरूप समुद्रना अने कूवाना मीडकी बा
तकोधी। इत्यादिक। बीजे श्रुतस्कंधे दश धर्मकथानावर्ग समूह तिहां एकेकीये धर्मकथायें अधिकारना समूहात्मकअध्ययन ते मांहि ज्ञातानेविषे पहिला
दश वर्ग ज्ञात उदाहरण रूपतेहने विषे आख्यायिकादिकनो संभवनथी शेष ९ ज्ञाताने विषे एकेक ज्ञातामांहि पैंतालीस २ अधिक अख्यायिकना सैंकडा

भव: शेषाणि नवशतानि तेषु पुनरेकैकस्मिन् पञ्चपञ्चचत्वारिंशदधिकानि आख्यायिकाशतानि तत्राप्येकैकस्या माख्यायिकायां पञ्चपञ्चोपाख्यायिकाशता
नि तत्राप्येकैकस्यामुपाख्यायिकाया पचपचाख्यायिकोपाख्यायिकाशतानि एवमेतानि सपिण्डितानि किसञ्जात इगवीसकोडिसय लक्खापन्नासमेवबोधव्वा
२१५०००००० एवंठिएसमाणे अहिगयसुत्तस्सपत्थारो ॥ १ ॥ तद्यथा दसधम्मकहाणवग्गा तत्थणएगमेगाएधम्मकहाए पचपचअक्खाइयासयाइं एगमेगाए
अक्खाइयाएपचपचउवक्खाइयासयाइं एगमेगाएउवक्खाइयाएपंचपंचअक्खाइउवक्खाइसयाइंति एवमेतानि सम्पिण्डितानि किसञ्जात पणवीसकोडिसय २५००
००००० एत्थयसमलक्खणाइयाजम्हा नवनाययसबद्धा अक्खाइयमाइयातेण ॥ १ ॥ तेसाहिज्जतिफुड इमाउरासीउवेगलाणतु पुणरुत्तवज्जियाण पमाणमेण

तंजहा चरित्ताय कप्पियाय दसधम्मकहाणं वग्गा तत्थणं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं एगमेगाए अक्खाइयाए पच पच उवक्खाइयासयाइं एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइअउवक्खाइ

कहिदा। तिहा एकेक आख्यायिकनेविषें पाच पांच सो उपाख्यायिक छे। तिहा वली एकेक उपाख्यायिकनेविषे पांचपाच आख्यायिक उपाख्यायिकना
सैकडाछे। तिहां आख्यायिक नाम कथा उपाख्यायिक ते उपकथा एह सर्व एकठी करतां। इगवीसंकोडिसय लक्खापन्नासमेवबोधव्वा। २१५०००००
एव ठिए समाणे अहिगयसुत्तस्सपत्थारो ॥ १ ॥ तद्यथा। दस धम्मकहाणवग्गा तत्थणंएगमेगाएधम्मकहाए पच पच अक्खाइयासयाइं एगमेगाएअक्खाइया
ए पच पंच उवक्खाइयासयाइं एगमेगाए उवक्खाइआए पच पंच अक्खाइउवक्खाइयासयाइंति। एसर्व एकठाकीधा तिवारे २५००००००० पचवीस कोटि थई
ते मांहिथी पाछलो आंक एकवीस किरोड पचास लाख पुनरुक्तपणामाटे बाहिर काढिये तो साढे ३ कोटि कथाहोय तेमाटे कहेछे। एव मेव सपूर्वा

विणिद्दिठं ॥ २ ॥ सोवितिचैतस्मिन् सति अर्द्धचतुर्थाएव कथानककोट्यो भवन्तीति अतएवाह एवमेवसपुव्वावरेणंति भणितप्रकारेण गुणनशोधनेकृते सतीत्युक्तं भवति अद्धुट्ठाओ अक्खाइयाकोडीओभवंतीति मक्खाओत्ति आख्यायिकाकथानकानि एताएवमेतत्संख्याभवतीतिकृत्वा आख्याता भगवतामहावीरेणेति तथा सख्यातानि पदसयसहस्साणीति किल पञ्चलक्षाणि षट्सप्ततिश्चसहस्राणि पदाग्रेण अथवा सू.लापकपदाग्रेण सख्यातान्येवपदशतसहस्राणि भवन्तीत्येवं सर्वत्र भावयितव्यमिति ॥ ६ ॥ सेकितमित्यादि अथ का सा उपासकदशा उपासकाः श्रावका स्तद्गतक्रियाकलापप्रतिबद्धा दशा दशा

अ्सयाइं एवामेवसपुव्वावरेणं अद्धुठाउ अक्खाइयकोडीउ भवंतीति मक्खायाउ एगूणतीसं उद्देसणकाला एगूणतीसं समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं पन्नत्ता तंजहा संखेज्जाअक्खरा जावचरणकरणपरूवणया आघविज्जति सेत्त णायाधम्मकहाउ ॥ ६ ॥ सेकितंउवासगदसाउ उवासगदसासुणं

पर तेणें प्रकारे पहिलो गुणाकार करिये। पछे पाछला आंके आगलोआंक सोधिये तिवारे साढे ३ कोटिकथानो थाय। तेभगवान महावीर स्वामीये कही। ज्ञाताने विषे उगुणत्रीस उद्देशन काल उद्देशाना अवसर कह्या। उगुणत्रीस समुद्देशनकाल। सख्याता पदना सत सहस्र ५ लाख ७६ हजार पद परिमाणें कह्या। ते कहेछे। वली सख्याता अक्षर यावत् शब्देकरी संख्याता वेढा संख्याता श्लोक ज्ञाताने विषे चरण श्रमणधर्म करण पिंडविशुद्ध्यादिकनो प्ररूपणा कहिये ते ज्ञाताधर्मकथा छठो अंग ॥ ६ ॥ स्यूंतेउपासक दशांग। उपासक श्रावकनी क्रियाकलाप प्रतिबद्ध दश अध्ययनछे

ध्ययनोपलक्षिता उपासकदशा स्तथाचाह उपासकदसासुण उपासकानां नगराणि उद्यानानि चैत्यानि वनखण्डा राजानः अम्बापितरौ समवसरणानि धर्म्माचार्या धर्मकथा ऐहलौकिकपारलौकिकाऋद्धिविशेषा उपासकानाञ्च शीलव्रतविरमणगुणप्रत्याख्यानपौषधोपवासप्रतिपादनता स्तत्र शीलव्रतान्यणुव्रतानि विरमणानि रागादिविरतयः गुणा गुणव्रतानि प्रत्याख्यानानि नमस्कारसहितादीनि पौषध मष्टम्यादिपर्वदिनं तत्रोपवसनमाहारशरीरसत्कारादित्यागः पौषधोपवासःततोद्वन्द्वेसत्येतेषाम्प्रतिपादनताप्रतिपत्तय इतिविग्रहः श्रुतपरिग्रह स्तपउपधानानिचप्रतीतानि पडिमाओत्ति एकादशउपासकप्रतिमाः कायोत्सर्गावा उपसर्गादेवादिकृतोपद्रवाः सलेखना भक्तपानप्रत्याख्यानानि पादपोपगमनानि देवलोकगमनानि सुकुलेप्रत्यायाति पुनर्बोधिलाभोऽन्तक्रिया

उवासयाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइआइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्म कहाउ इहलोइयपरलोइयइड्ढिविसेसा उवासयाणं सीलव्वयवेरमणगुणपच्चक्खाणपोसहोववासपडिवज्जियाउ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं पडिमाउ उवसग्गा संलेहणाउ भत्तपच्चक्खाणाइं पावोवगमणाइं देवलोग

ते उपासक दशा कहिये। तेहने विषे श्रावकना नगर नाम उद्याननाम चैत्यनाम बनखडनाम राजानाम माता पितानाम समोसरण धर्माचार्य नाम धर्मकथा इहलोक परलोक सबधी ऋद्धि विशेष। श्रावकना शील शुभाचार व्रत १२ अणुव्रत रागादिकनी विरति गुणव्रतम त्याख्यान ते नवकारसी प्रमुख पौषध अष्टम्यादि पर्वतिथिये उपवास करिवो ते पौषधोपवासनो प्रतिपादवो कहिवो। श्रुतनो सांभलिवो। तथा बारे भेदे तपनो करिवो। प्रतिमा ११ श्रावकनी उपसर्ग देवताना कीधा। सलेखणा तपें करी आत्माने कषाय दुर्बल करिवो। भातपाणीनो पचखवो। संथारो। देवलोके जाइवो

७

व्याख्यायस्ते पूर्वोक्तमेव अतो विशेषत आह उवासगेत्यादि तत्र ऋद्धिविशेषा अनेककोटीसंख्यद्रव्यादिसम्पद्विशेषाः तथा परिषदः परिवारविशेषा यथा माता पितृपुत्रादिका ऽभ्यन्तरपरिषत् दासीदासमित्रादिका बाह्यपरिषदिति विस्तरधर्मश्रवणानि महावीरसन्निधौ ततो बोधिलाभो भिगम. सम्यक्तस्य विशुद्धता स्थिरत्वं सम्यक्तशुद्धिरेव मूलगुणोत्तरगुणा अणुव्रतादयः अतिचारा स्तेषामेव वधबन्धादितः खण्डनानि स्थितिविशेषा स्तोपासकपर्यायस्य कालमानभेदाः बहुविशेषाः प्रतिमाः प्रभूतभेदाः सम्यग्दर्शनादिप्रतिमाः अभिग्रहग्रहणानि तेषामेवच पालनानि उपसर्गाधिसहनानि निरुपसर्गस्तोपसर्गाभावश्चेत्यर्थः तपां

गमणाइं सुकुलपच्चाया पुणोबोहिलाभो अंतकिरियाओ आघविज्जांति उवासगदसासुणं उवासयाणं रिद्धिविसेसा परिसावित्थरधम्मसवणाणि बोहिलाभ अभिगमणे सम्मत्तविसुद्धया थिरत्त मूलगुणउत्तरगुणाइयारा ठिईविसेसा बहुविसेसा पडिमाभिग्गहग्गहणउवसग्गाहियासणणिरुवसग्गा तवोय चित्ता सीलव्वयगुणवेर

अने वलीसुकुले उपजवो। वली बोधनी प्राप्ति। अतक्रिया करिवो। एहसर्व उपासक दशामाहि कहियेछे। उपाशक दशाने विषे श्रावकनी ऋद्धिविशेष अनेक धन कोटि सख्या विशेष। परिषदा परिवारनो विस्तार। भगवत महावीरने पासे धर्मनो सांभलिवो। धर्मनो प्राप्ति। धर्मनो आदरिवो। सम्यक्तनी विशुद्धता निर्मलता। धर्मने विषे स्थिरपणो। मूलगुण उत्तरगुणना अतीचार वध बंधादिक। स्थिति विशेष। श्रावकपणांना कालनी मर्यादा। सम्यग्दर्शन प्रतिमा अभिग्रहनो बहु विशेष कहिये बहुत भेदनो ग्रहिवो पालवो उपसर्गनो सहिवो। तथा निरुपसर्ग उपसर्ग विना पणि चित्र विचित्र अने

सिच चित्राणि शीलव्रतादयो ऽनन्तरोक्तरूपा अपश्चिमा: पर्यान्तकालभाविन्य: अकारस्त्वमङ्गलपरिहारार्थ: मरणरूपे अन्ते भवा मारणान्तिक्य: आत्मशरीरस्य जीवस्यच सलेखना: तपसा रोगादिजयेनच कृशीकरणानि आत्मन सलेखना. तत पदत्रयस्य कर्मधारय स्तासा जोसणाति जोषणा. सेवना करणा नौत्यर्थं ताभिरपश्चिममारणान्तिकात्मसलेखनाजोषणाभि रात्मान यथाच भावयित्वा अन्ननिभक्तानि अनशनतया च निर्भोजनतया छेदयित्वा व्यवच्छेद्य उपपन्ना इत्येतिगम्यते केषु कल्पवरेषु यानि विमानोत्तमानि तेषु यथानुभवन्ति सुरवरविमानानि वरपुण्डरीकाणीव वरपुण्डरीकाणि यानि तेषु कानि सौख्यान्यनुपमानि क्रमेण भुक्त्वोत्तमानि तत: आयुष्कक्षयेण च्युता: सन्तो यथा जिनमते बोधि लब्धा इतिविशेष यथाच संयमोत्तम प्रधान संयम तमोरजओघ

मण पच्चक्खाणपोसहोववासा अपच्छिममारणंतियाय संलेहणा झोसणाहिं अप्पाणं जहय भावइत्ता बहूणि भत्ताणि अणसणाए च्छेअइत्ता उववण्णा कप्पवरविमाणुत्तमेसु जह अणुभवंति सुरवरविमाणवरपोंडरीएसु सोक्खाइ अणोवमाइं कमेण भुत्तूण उत्तमाइं तओ आउक्खएचुआसमाणा जहजिणमयम्मि बोहिलद्धूणय सं

क प्रकारे शील शुभाचार व्रत अणुव्रतादिक विरति प्रत्याख्यान नवकारसी प्रमुख तथा पोषधोपवास छेहले काले मरणातिक सलेखना मरणरूप अतकाले होय एहवी सलेखना आत्माने कर्मथी हलुको करिवो। तेहनो जोषणी तेहनो सेविवो तेणे आपणा आत्माने भाविये जिमघणे प्रकारे अनसने करी कर्मछेदीने उपनोछे प्रधान उत्तम देवलोक ने विषे सुख अनुभवेछे। देवता सबधी प्रधान विमान प्रधान पुडरीक कमलनीपरें उत्तम तेहने विषे कल्यान जाय एहवा अनुपम सुखमतें क्रमें अनुक्रमें भोगवीने देवलोक थको आयुक्षयथी चव्याथका जिम जिन मतने विषे बोधि श्रीजिनधर्मनो प्राप्ति

विप्रमुक्ता अज्ञानकर्मप्रवाहविमुक्ता उपयन्ति यथा अक्षय अपुनरावृत्तिकं सर्वदुःखमोक्षं कर्मक्षयमित्यर्थः तथोपासकदशाख्याध्यायन्त इतिप्रक्रमः एतेचान्ये विप्रमुक्ता अज्ञानकर्मप्रवाहविमुक्ता उपयन्ति यथा अक्षय अपुनरावृत्तिकं सर्वदुःखमोक्षं कर्मक्षयमित्यर्थः ॥ ७ ॥ सेकितमित्यादि अथ चेत्यादि प्राग्व न्नवरं सखेज्जाइ पयसहस्साइ पयग्गेणंति किलैकादशलक्षाणि द्विपञ्चाशच्चसहस्राणि पदानामिति ॥ ७ ॥ सेकितमित्यादि अथ

जमुत्तमं तमरयोघविप्पमुक्का वेंति जहक्खयसव्वदुक्खमोक्खं एते अन्नेय एवमाइ उवासयदसासुणं परित्ता वायणा संखेज्जाअणुओगदारा जाव सखेज्जाओ संगहणीओ सेणं अंगठयाए सत्तमे अंगे एगेसुयक्खंधे दसअज्झयणा दसउद्देसणकाला दससमुद्देसणकाला सखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं प० सखेज्जाइं अक्खरा इं जाव एवं चरण करणपरूवणा आघविज्जंति सेत्त उवासगदसाओ ॥ ७ ॥ सेकिंतं अंतग

होय वली उत्तम सयम आराधीने अज्ञानरूप अधकार तल्लक्षण राजा तेहथी मूंकाणा जिम अक्षय अपुनरावृत्तिक सर्वदुःखक्षय लक्षण मोक्षपावे। इत्यादिक पूर्वोक्त तथा अनेरापिण पदार्थ उपासक दशाने विषें कहियेछे। परित्ता सख्याती वाचना। वली सख्याता अनुयोगद्वार। यावत् संख्याती सग्रहणी लगे जाणिवी। तेह अगार्थपणें सातमो अंग तेहने विषें १ श्रुतस्कध आनन्दादिक १० श्रावकना १० अध्ययन। दश उद्देशनकाल वली १० समुद्देशन काल। सख्याता पदना सहस्र पदाग्रे पद परिमाणें कह्या। सख्याता अक्षर इहांथी चरण साधुव्रत करणपिंड विशुद्ध्यादिक इहांतक पूर्वोक्त पाठ कहिवो। ते उपासक दशा मांहि कहिये ते उपासकदशा सातमो अग ॥ ७ ॥ स्यूते अंतगडदशा ससारनो अंत कहिये नाश की

का स्ता अन्तकृद्दशाः तत्रान्तोविनाशः सच कर्मणस्तत्फलस्यवा संसारस्य कृतो यैस्ते अन्तकृता स्तेच तीर्थकरादय स्तेषां दशाः प्रथमवर्गे दशाध्ययनानीति तत्सख्यया अन्तकृतदशा स्तथाचाह अंतगडदसासुणमित्यादि करण्ठ्य नवरं नगरादीनि चतुर्दशपदानिषष्ठाङ्गवर्णकाभिहितान्येव तथा पडिमाओत्ति द्वादश भिक्षुप्रतिमा मासिक्यादयो वहुविधाः तथा चमा मार्दवं आर्जवच शौचञ्च सत्यसहित तत्रशौचम्परद्रव्यापहारमालिन्याभावलक्षण सप्तदशविधश्च सयम उत्तमञ्च ब्रह्ममैथुनविरतिरूप आकिंचणियत्ति आकिंचन्य तप स्त्यागइति यागमोक्तं दान सजितयो गुप्तयश्चैव तथा अप्रमादयोगः स्वाध्यायध्यानयोश्च उत्त

ऊदसाउ अंतगऊदसासुणं अंतगऊाणं णगराइं उज्जाणचेइयवणरायाअम्मापियसमोसरणधम्माधम्मकहा इह लोइअपरलोइअ इड्डिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं पडिमाउ बहुविहाउ खमाअज्जवं मद्दवचसोअंच सच्चसहियं सत्तरसविहोयसंजमो उत्तमंचबंभ आकिंचिणया तवो किरियाउ समि

धी जेणे ते अंतकृत् तेहनी दशा जे सख्या जिम पहिले वर्गे दश अध्ययन इत्यादिक ते अंतकृद्दशा अंतकृद्दशाने विषे ससार अंतकारी जीवना नगर उद्यान चैत्य वनखड राजा माता पिता समोसरण धर्माचार्य धर्मकथा कहियेछे। इहलोक परलोक सबधी ऋद्धि विशेष भोग भोगीने पछे प्रव्रज्यादीचा लीधी। श्रुतनो भणिवो तपनो करिवो १२ भिक्षुप्रतिमा अनेक प्रकारे। चमा क्रोधनोजीतवो। आर्जव मायानो छांडिवो। मार्दव माननो त्याग। शौच कर्ममलनोछांडिवो। सत्यकरी सहित। सतरह भेदे सजम जाणिवो। उत्तम ब्रह्मचर्यनो पालवो मैथुननो अभाव। आकिंचनता निर्द्रव्यपणो। तप

मयो र्द्वयोरपि लक्षणानि स्वरूपाणि तत्र स्वाध्यायस्य लक्षणं सज्झाएणपसत्थज्झाणमित्यादि ध्यानलक्षणंयथा अतोमुहुत्तमित्तचित्तावत्थाणमेगवत्थुमित्यादि व्याख्यायन्त इति सर्वत्रयोग: तथा प्राप्तानाञ्च सयमोत्तम सर्वविरति जितपरीषहाणा चतुर्विधकर्मक्षये घातिक्षयेसति यथा केवलस्य ज्ञानादे लाभ' पर्याय: प्रव्रज्याया: लक्षणो यावाश्च यावद्वर्षादिप्रमाणो यथा येनतपोविशेषाश्रयणादिना प्रकारेण पालितो मुनिभि: पादपोपगमनञ्च पादपोपगमाभिधानमनशन प्रतिपन्नो योमुनि यत्र शत्रुञ्जयपर्वतादौ यावन्तिच भक्तानि भोजनानि च्छेदयित्वा अनशनिनांहि प्रतिदिन भक्तद्वयच्छेदो भवति अन्तकृतो मुनिवरो जातइतिशेष: तमोरजओघविप्रमुक्तएवच सर्वेपि चैत्रकालादिविशेषिता मुनयो मोक्षसुखमनुत्तरञ्च प्राप्ता आख्यायन्त इति क्रियायोग. एते अन्ये चेत्यादि

इगुत्तरे चेव तहअप्पमायजोगो सज्झायज्झाणेणयउत्तमाण दोराहंपि लक्खणाइं पत्ताणयसंजमुत्तमं जियपरीसहाण चउव्विहकम्मक्खयम्मि जहकेवलस्सलंभो परियाओ जत्तिओयजहपालिओ मुणीहिपाओवगओय जहिंजत्तियाणिभत्ताणि छेयइत्ता अंतगडोमुणिवरो तमरयोघविमुक्को मोक्खसुहमणंतरंचपत्ता एए अन्नेय एव

१२ भेदे । क्रिया अनुष्ठान । समितिगुप्ति । तिमज अप्रमादना योग । स्वाध्याय सिद्धातनूं भणवो । ध्यान धर्म ध्यानादि मुहूर्त्त लगे चित्तनूं एकाग्रपणोते स्वाध्यायध्यान । उत्तम एह बिहुनालक्षण अतगडदशा माहि कहियें छे । सयमप्रते जेह पाम्या जेणे परीषह जीत्या घाति ४ कर्म ज्ञानावरणीय १ दर्शनावरणीय २ मोहनीय ३ अतराय ४ एहनोनाशकरे जिम केवल ज्ञाननो लाभहोय प्राप्तिहोय । पर्याय ते दीक्षानोकाल जेणे मुनीश्वरें जेतला जेतला वर्ष प्रमाणें सयम पाल्यो होय । पादपोप गमन अनशनादिक जेह जेणे प्रकारे जेतलाभात पाणी छेदीने अतकृत् ससारना अतकारक मुनिवर तम

प्राग्वत् नवरं दशअज्झयणत्ति प्रथमवर्गापेक्षयैव घटन्ते नन्द्यां तथैव व्याख्यातत्वात् यच्चेह पठ्यते सत्तवग्गत्ति तत्प्रथमवर्गादन्यवर्गापेक्षया यतोऽत्र सर्वेप्यष्टव र्गानन्द्यामपि तथापठितत्वा त्तद्वृत्तिश्चेयं अट्ठवग्गत्ति अत्रवर्गः समूहः सचान्तकृताना मध्ययनानां वा सर्वाणिचैकवर्गगतानि युगपदुद्दिश्यन्ते ततोभणित अट्ठ उद्देसणकालाइत्यादि इहच दशउद्देशनकाला अधीयन्ते इति नास्याभिप्रायमवगच्छामः तथा सङ्ख्यातानि पदशतसहस्राणि पदाग्रेणेति तानिच किल त्रयो विंशति र्लक्षाणि चत्वारिचसहस्राणीति ॥ ८ ॥ सेकितमित्यादि नास्मादुत्तरोविद्यते इत्यनुत्तर उपपतनमुपपातो जन्मेत्यर्थः अनुत्तरः प्रधानः

माइत्थवित्थरेणं परूवेइ अंतगडदसासुणं परित्तावायणा संखेज्जाअणुओगदारा जावसंखेज्जाओसंगहणीओ सेणअंगठयाएअट्ठमेअंगेएगेसुयक्खंधे दसअज्झयणा सत्तवग्गा दसउद्देसणकाला दससमुद्देसणकाला संखे ज्जाइं पयसहस्साइंपयग्गेणं पन्नत्ते संखेज्जाअक्खरा जावएवंचरणकरणपरूवणया आघविज्जंति सेत्तं अंतग

अधिकार अज्ञानरूप रजथी मूंकाणो अनुत्तर प्रधान मोक्ष सुखप्रते पाम्यो । एह पूर्वे कह्याते तथा अनेरापणि पदार्थ इहां अंतगडदशा मांहि कहिये छे । प्ररूपियेछे । सङ्ख्याता वाचना । संख्याता अनुयोगद्वार । जिहांलगे सङ्ख्याती सग्रहणी होय तिहालगे जाणिवो । अंगार्थपणे आठमें अंग एक श्रुतस्कं ध दश अध्ययन सात वर्ग तेप्रथम वर्गनी अपेक्षाये बीजा ७ एतले ८ वर्ग समूह । दश उद्देशनकाल दश समुद्देशन काल । सङ्ख्याता पदना सत सहस्र एतले २३ लाख ४ हजार पद परिमाणे कह्या । सङ्ख्याता अक्षर इहां थोमांडी चरण साधुव्रत करण पिंड विशुद्ध्यादिक लगें पूर्वनी परें पाठ कहि वो । इत्यादिक पदार्थ जिहां कहिये ते अंतगडदशा ८ मो अंग ॥ ८ ॥ सूते अणुत्तरोववाइ नथी उत्तर कहिये आगलि जन्म जेहने. तेहना

संसारे अन्यस्य तथाविधस्या भावादुपपातो येषान्ते तथा तएवानुत्तरोपपातिकाः तद्वक्तव्यताप्रतिबद्धा दशाध्ययनोपलक्षिता अनुत्तरोपपातिकदशा स्तथा चाह अणुत्तरोववाइयदसासुणमित्यादि तत्रानुत्तरोपपातिकानामिति साधूना नगरादीनि द्वाविंशतिः पदानि ज्ञाताधर्मकथावर्णकोक्तानि यथातथा एतेषा मेवच प्रपञ्च रचयन्नाह अणुत्तरोपपातिकदशाम् तीर्थंकरसमवसरणानि किंभूतानि परममङ्गल्यगडितानि जिनातिशेषाश्च बहुविशेषाश्च देहविमलसुयधर्मि

ऋदसाउ ॥ ८ ॥ सेकिंत अणुत्तरोववाइयदसाउ अणुत्तरोववाइयदसासुणं अणुत्तरोववाइयाणं नगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाउ इहलोगपरलोअइड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागो पडिमाउ संलेहणाउ भत्तपाणपच्चक्खाणाइं पाउवगमणाइं अणुत्तरोववाउ सुकुलपच्चायापुणोबोहिलाहोअंतकिरियाउ आघविज्जंति अणुत्तरोववाइयदसासुण तित्थकरसमोसरणाइं परममंगल्लजगहियाणि जिणातिसेसायबहुविसेसा जिण

दश अध्ययन प्रतिबद्ध दशाते अनुत्तरोपपातिक दशा । तेहने विषे अनुत्तर विमाने ऊपना जे साधु तेहना नगर उद्यान चैत्य यक्षायतन वनखंड राजा माता पिता समोसरण धर्माचार्य धर्मकथा इहलोक परलोक संबंधी ऋद्धि विशेष भोगनो परित्याग दीक्षा श्रुतनो भणिवो । तप १२ भेद उपधान वली भिक्षुप्रतिमा संलेखना तेकिसी भातपाणीना पच्चक्खाण पादपोप गमन अनुत्तर विमाने ऊपनो वली सुकुल ने विषे अवतरिवो । वली बोधिलाभ जिन धर्मनो प्राप्ति । अंतक्रिया एतलो वस्तु एहने विषे कहिये छे । वली तीर्थंकरना समोसरण ते समोसरण केहवो छे । परम मंगलीकपणे जगतने हित

त्यादय चतुस्त्रिंशदधिकतराश्च तथा जिनशिष्याणांचैव गणधरादीनां किम्भूताना मतआह श्रमणगणप्रवरगन्धहस्तिनां श्रमणोत्तमानामित्यर्थः तथास्थिर यशसां तथा परीषहसैन्यमेवपरीषहवृन्दमेव रिपुबल म्परचक्रं तत्प्रमर्द्दनानां तथा दववह्नावाग्निरिव दीप्तान्युज्वलानि पाठान्तरेण तपोदीप्तानि यानि चा रित्रज्ञानसम्यक्तानि तैः साराः सफलाः विविधप्रकारविस्तारा अनेकविधप्रपञ्चाः प्रशस्ताश्च ये चमादयोगुणा स्तैः सयुतानां क्वचिद्गुणध्वजाना मितिपाठः तथा अनगाराश्च ते महर्षयश्चेत्यनगारमहर्षय स्तेषा मनगारगुणानां वर्णकः श्लाघा आख्यायत इतियोगः पुनः किम्भूतानां जिनशिष्याणा मुत्तमाश्च ते ज्या त्यादिभि र्वरतपसश्च तेचते विशिष्टज्ञानयोगयुक्ताश्चे त्यत स्तेषा मुत्तमवरतपोविशिष्टज्ञानयोगयुक्तानां किंचापरे यथा च जगद्धित भगवत इत्यत्र जिनस्यशा सनमितिगम्यते यादृशाश्च ऋद्धिविशेषा देवासुरमानुषाणा रत्नोज्वलचयोजनमानविमानरचनं सामानिकाद्यनेकदेवदेवीकोटिसमवायनं मणिखचितमरिव

सीसाणंचेव समणगणपवरगंधहत्थीणं थिरजसाणं परिसहसेन्नरिउबलपमद्दणाणं तवदित्तचरित्तणाणसम्म त्तसारविविहप्पगारपसत्थगुणसंजुयाणं अणगारमहरिसीणं अणगारगुणाणवन्नओ उत्तमवरतवविसिट्ठणा

कारी छे। जिनना अतिशय देहविमलसुगन्ध इत्यादिक चउत्रीस छे जिनेंद्र ना शिष्य गणधरादिक ते केहवा छे श्रमण समूह मांहि प्रधान वर गन्ध हाथी ने समानछे। ते थिर जस निश्चलयशछे। परीषह सेनारूप शत्रुनी सेनाने प्रमर्द्दकछे, तपें करीदीप्त तेजवत जे चारित्र ज्ञान सम्यक्त तेणे करी सार सफल विविध अनेक प्रकार भलाजे गुणवंत लक्षण छे ध्वजा जेहने तेहनो। अनगा एहवाजे महर्षिते अनगारमहर्षि तेहना एहवा जे अनगार तेहना गुण तेहनो वर्णक श्लाघा नीमे अंगे कहिये। वली केहवाछे। जात्यादिके करी उत्तम प्रधान तपनाधणी विशिष्ट ज्ञान, योगे करी यु

तद्दण्डपटु प्रचलत्पताकिकाशतोपशोभितमहाध्वजपुरः प्रवर्त्तिनं विविधातोद्यनादगगनाभोगपूरणं चैवमादिलक्षणाः प्रतिकल्पितगन्धसिन्धुरस्कन्धारोहण च तुरङ्गसैन्यपरिवारण छत्रचामरमहाध्वजादिमहाराजचिह्नप्रकाशन चैवमादयश्च सम्पद्विशेषाः समवसरणगमनप्रवृत्तानां वैमानिकज्योतिष्काणा भवनपति व्यन्तराणां राजादिमनुजानां च अथवा अनुत्तरोपपातिकसाधूनां ऋद्धिविशेषा देवादिसम्बन्धिनस्ताद्दशा आख्यायन्त इतिक्रियायोगः तथा पर्षदां सञ्जय वैमाणिणी सजइपुव्वेणपविसिऊणवीर मित्यादिनो तत्स्वरूपाणा प्रादुर्भावाश्च आगमनानि क्व जिणवरसमोवन्ति जिनसमीपे यथाच येनप्रकारेण पञ्चविधा भिगमादिना उपासते सेवन्ते राजादयो जिनवर तथाख्यायतइतियोगः यथाच परिकथयति धर्म्मं लोकगुरु रिति जिनवरो ऽमरनरासुरगणानां श्रुत्वा च तस्येति जिनवरस्य भाषितं अवशेषाणि क्षीणप्रायाणि कर्म्माणि येषाते तथा तेचते विषयविरक्ताश्चेति अवशेषकर्म्माविषयविरक्ताः के नरा. किं यथा अभ्युपय

णजोगजुत्ताणं जहयजगहियं भगवउ जारिसाइड्ढिविसेसा देवासुरमाणुसाण परिसाणं पाउब्भावय जिणस मीव जहयउवासंतिजिणवरं जहयपरिकहतिधम्मलोगगुरू अमरनरसुरगणाणं सोऊणयतस्सभासियं अव सेसकम्मविसयविरत्तानरा जहा अब्भुवेंति धम्ममुरालं सजमं तवचाविबहुविहप्पगारं जहबहूणिवासा

णछे जेम जगतने विषे जिन शासन हितकारी छे। जेहवा ऋद्धिना विशेष छे। देव वैमानिक असुर ते भवन पत्यादिक तथा मनुष्य तेहनी परीष दा नो प्रादुर्भाव आविबो उपासयति पचविध अभिगम ने करी सेवा करवी। जिनने समीपे सेवा करे। जिनवर लोक गुरु जिम देवता नर सुरगण नेधर्म कथा प्रते कहे। तेह जिनवरनो भाषित सांभलीने। क्षीण प्रायछे कर्म जेहना। वली विषयथी विरक्त एहवा नर मनुष्य जिम पामें धर्म उदार

न्ति धर्म्ममुदारं किंस्वरूप मतआह संयम न्तपश्चापि किम्भूतमित्याह बहुविधप्रकारं तथा यथा बहूनि वर्षाणि अणुचरियत्ति अनुचर्यआसेव्य संयम न्तपश्चे तिवर्त्तते तत आराधितज्ञानदर्शनचारित्रयोगा स्तथा जिणवयणमणुगयमहिय भासियत्ति जिनवचन माचारादिअनुगतं सम्बद्ध नाईवितर्दसित्यर्थः महित म्पूजितमधिक म्वा भाषित यै रध्यापनादिना ते तथा पाठान्तरे जिनवचनमनुगत्यानुकूल्येन सुष्टुभाषित यै स्ते जिनवचनानुगतिसुभाषिताः तथा जिणवरा णहियएणमणुणेतत्ति इतिषष्ठीद्वितीयार्थे तेन जिनवरान् हृदयेन मनसा अनुनीय प्राप्य ध्यात्वेतियावत् येच यत्र यावन्तिच भक्तानि च्छेदयित्वा लब्धाच स माधि मुत्तम ध्यानयोगयुक्ता उपपन्ना मुनिवरोत्तमा यथा अनुत्तरेषु तथाख्यायत इतिप्रक्रमः तथा प्राप्नुवन्ति यथानुत्तर तत्थत्ति अनुत्तरविमानेषु विषय सुख तथाख्यायन्ते तत्तोयत्ति अनुत्तरविमानेभ्यश्च्युताः क्रमेण करिष्यन्ति सयता यथाचान्तः क्रियन्ते तथा ख्यायन्ते अनुत्तरोपपातिकदशाश्रितिप्रकृतमे

णि अणुचरित्ता आराहियनाणदंसणचरित्तजोगा जिणवयणमणुगयमहिय भासित्ता जिणवराण हिययेण मणुणेत्ता जेयजहि जत्तियाणि भत्ताणि छेअइत्ता लद्धूणयसमाहिमुत्तमज्झाणजोगजुत्ता उववन्ना मुणिवरोत्त मा जहअणुत्तरेसुपावंति जह अणुत्तरं तत्थविसयसोक्ख तत्तोयचुआक्कमेण काहिंतिसंजया जहायअंतकिरियं

प्रधान संयम तप घणें प्रकारे सर्व विरति रूप। जिम घणा वर्ष लगे अणुचरी सेवीने आ ध्याछे ज्ञान दर्शन चारित्र योग जेणें जिनबचन आचा रांगादिने अनुगतसमिलित महित पूजित भाषित जेणे। जिन वरनें हृदयें करी मनेंकरी आनीयध्याईने। जेह जिहां जेतला भात छेदीने समा धि पामीने उत्तम ध्यानयुक्त थको उपना मुनिवर अनुत्तर विमानने विषे जिम प्रधान विषय सुखभोगीने चव्या अनुत्तर विमानथी अनुक्रमे करि

तथाङ्गुष्ठबाहुप्रश्नादिका मन्त्रविद्या: प्रश्ना या: पुनर्विविनाजप्यमाना अपृष्टाएव शुभाशुभं कथयन्ति एता' अप्रश्ना: तथाङ्गुष्ठादिप्रश्नभावं तदभावं च प्रतीत्य या विद्या' शुभाशुभ कथयन्ति ता:प्रश्नाप्रश्ना विज्जाइसयत्ति तथा अन्ये विद्यातिशया: स्तम्भस्तोभवशीकरणविद्वेषीकरणोच्चाटनादय: नागसुपर्णैश्च सह भवनपतिविशेषै रुपलक्षणत्वा द्यचादिभिश्च सह साधकस्ये तिगम्यते दिव्यास्तात्त्विका: सम्वादा: शुभाशुभगता: सलापा: आख्यायन्ते एतदेव प्राय: प्रपञ्चयन्नाह पण्हावागरणदसेत्यादि स्वसमयपरसमयप्रज्ञापका ये प्रत्येकबुद्धा स्तै: करकण्ड्वादिसदृशै र्विविधार्थायकाभाषा गम्भीरेत्यर्थ स्तया भाषिता गदिता: स्वसमयपरसमयप्रज्ञापकप्रत्येकबुद्धविविधार्थभाषाभाषिता स्तासां किमादर्शाङ्गुष्टादीनां सम्बन्धिनीना मप्रश्नानाम्विविधगुणमहार्था: प्रश्नव्याकरणदशाख्याख्यायन्त

पसिणसय अट्ठुत्तरं अपसिणसयं अट्ठुत्तरंपसिणापसिणसय विज्जाइसया नागसुवन्नेहिं सद्धिंदिव्वासंवाया आघविज्जाति पण्हावागरणदसासुणं ससमय परसमय पन्नवय पत्तेअबुद्ध विविहत्थभासाभासियाणं अइसयगुण उवसमणाणप्पगार आयरियभासियाणं वित्थरेण वीरमहेसीहिं विविह वित्थार भासियाणंच जगहि

आदिक मन्त्र विद्यानां पाठांतरे अंगुष्ठादिक प्रश्न अठोतरसो तथा विधिपूर्वक जे विद्या जपीयकी अदृष्ट थई शुभाशुभ प्रश्न कहेते अप्रश्नविद्या तेहना सेंकडा तथा अनेरापणि विद्यानां अतिशय थंभनी वशीकरणी उच्चाटनी इत्यादिक । नाग सुपर्ण भवनपति विशेषने साथे दिव्यते तात्विक संवाद शुभाशुभ संलापक प्रश्न व्याकरण दशाने विषे कहियेछे । प्रश्न व्याकरण दशाने विषे स्वसमय जिनमत परसमय परमतना प्रज्ञापक कथक जे प्रत्येक बुद्ध करकडुआदिक विविधार्थ अनेक प्रकारना अर्थ छे जेहना एहवी भाषायें कह्या । अदृष्ट अंगुष्ठादिक संबंधी भाषाना विविध गुण कहिये । ते

इतियोगः पुनः किम्भूतानां अइसयगुणउपसमनाणप्पगार आयरियभासियाणंति अतिशयाश्चामर्षौषध्यादयो गुणाश्च ज्ञानादय उपसमश्च स्वपरभेद एतेना नाप्रकारा येषान्ते तथा तेच ते आचार्याश्च तै र्भाषिता या स्ता तथा तासा कथ भाषिताना मित्याह वित्थरेणति विस्तरेण महावचनसन्दर्भेण तथास्थिरम हर्षिभिः पाठान्तरे वीरमहर्षिभिः विविहवित्थारभासियाणचत्ति यिविधविस्तरेण भाषितानाम् चकारस्तृतीयप्रणायकभेदसमुच्चयार्थः पुनः कथम्भूताना म्प आनां जगहियाण जगडिताना म्पुरुषार्थोपयोगित्वात् किसम्बन्धिनीना मित्याह अद्दागत्ति आदर्शश्चाङ्गुष्टश्च बाहुच असिश्च चोमंच वस्त्र आदित्यश्चेति द्वन्द्व स्ते आदि येषा कुड्यशङ्खघण्टादीना ते तथा तेषा सम्बन्धिनीना म्प्रश्नविद्याभि रादर्शकादीना मावेशनात् किम्भूताना प्रश्नाना मतआह विविधम हाप्रश्नविद्याश्च वाचेव प्रश्नेसत्युत्तरदायिन्य' मनः प्रश्न विद्याश्च मनः प्रश्नितार्थोत्तरदायिन्य स्तासां दैवतानि तदधिष्टातृदेवता स्तेषा प्रयोगप्राधान्येन तद्या

याण अद्दागंगुठबाहुअसिमणिखोमआइच्चमासियाणं विविहमहापसिणविज्जमणपसिणविज्जा देवयंपओग

प्रश्न कोहवाछे। अतिशय आमर्षौषध्यादिक १। गुण ज्ञानादिक २। तथा उपशम पोताने परने उपशमाविवो ३। एह नाना प्रकारछे जेहने एहवाजे आचार्य तेणें विस्तार करी कह्याछे। वीर महर्षि मोटायतीयें अनेक प्रकार जेविस्तार वचनसदर्भे करी भाख्याछे। वली जगतने हित रूपछे। आरी सो अगुठ बाह खड्ग मणिरत्न इत्यादिक वली वस्त्र आदित्यसूर्य वलीशख घटादिक एहने आगलि प्रश्न पूछे तिवारे अधिष्ठायक विद्यादेवी पूर्वोक्त पदार्थें अधिठान करीने उत्तरदे। तेमाटे ते प्रश्नविद्यायें करी भाषित छे। विविध प्रकारना महाप्रश्नविद्या पूछें थके तत्काल उत्तर देते महाप्रश्नविद्या कही। मनःप्रश्नविद्या मनना चितित अर्थ कहे एहवी विद्या तेहना अधिष्ठाता देवताना प्रयोगनो व्यापार प्रधानपणे विविधार्थनो प्रकाशक। तथा

पारप्रधानतया गुण स्त्रिविधार्थं सम्वादलक्षण म्प्रकाशयन्ति लोके व्यञ्जयन्ति या स्ता विविधमहाप्रश्नविद्यामनः प्रश्नविद्यादैवतप्रयोगप्राधान्यगुणप्रकाशिका
स्तासां पुनः किम्भूताना प्रश्नानां समुद्भूतेन तात्विकेन द्विगुणेन उपलक्षणत्वा लौकिकप्रश्नविद्याप्रभावापेक्षया बहुगुणेन पाठान्तरे विविधगुणेन विद्याप्रभावेन
माहात्म्येन नरगणमतीमनुजसमुदयबुद्धौ विस्मयकार्य्यश्चमत्कारहेतवो याः प्रश्ना स्ताः सद्भूतद्विगुणप्रभावनरगणमति विस्मयकार्यं स्तासां पुनः किम्भूतानां तासा
मतिसयमतीतकालसमयेत्ति अतिशयेन योतीतः कालः समयः स तथा तत्र अतिव्यवहिते काले इत्यर्थः दमः शम स्तत्प्रधानं तीर्थंकराणा दर्शनान्तरशा
स्तृणा मुत्तमो यः स तथा भगवान्जिन स्तस्य तीर्थंकरोत्तमस्य स्थितिकारण स्थापन आसीदतीतकाले सातिशयज्ञानादिगुणयुक्तः सकलप्रणायकशिरः शेखर
कल्पः पुरुषविशेषः एवविधप्रश्नाना मन्यथानुपपत्ते रित्येवरूप तस्य कारणानि हेतवो या स्तास्तथा तासां पुनस्ताएव विशिनष्टि दुरभिगम दुरवबोध गम्भी
रं सूक्ष्मार्थत्वेन दुरवगाह ञ्च दुःखाध्येय सूत्रमहत्वाद्यत्तस्य सर्वेषा सर्वज्ञाना सम्मतमिष्टं सर्वसर्वज्ञसन्मत अथवा सर्वश्च तत्सर्वज्ञसम्मतश्चेति सर्वसर्वज्ञसम्मत म्मव

पाहाणगुणप्पगासियाणं सब्भूयदुगुणप्पभावनरगणमइविम्हयकराणं अइसयमईयकालदमसमतित्थकरुत्तम
स्सठिइकरणकारणाणं दुरहिगमदुरवगाहस्स सव्वसव्वन्नुसम्मअस्स अबुहजणबोहकरस्स पच्चक्खयपच्चयकरा

सद्भूत तात्विकपणें द्विगुण लौकिक प्रश्न विद्यानी अपेक्षायें घणोजे प्रभाव माहात्म्य तेणे करीने मनुष्य समूहनी बुद्धिने विस्मय करेछे चमत्कार उपजा
वेछे। अतिशयें करी अतीतकाल समय अत्यत व्यवहित काले दम शम तेणे करी सहित तीर्थंकरोत्तमनी स्थितिनो करण स्थापिवो तेहना कारणछे।
दुरभिगम दुःखे जाणिये। गभीर सूक्ष्मार्थ पणें दुरवगाह दुःखे ग्रहीसके। सर्व सर्वज्ञने मान्य। तथा अबुधजन मूर्ख जेनने प्रबोध ना कारण। प्रत्यक्ष प

षनतत्वमित्यर्थः तस्य अबुधजनविबोधनकरस्य एकांतहितस्येतिभावः पम्नक्खयपच्चयकराणंति प्रत्यक्षेन ज्ञानेन साक्षादित्यर्थो यः प्रत्ययः सर्वातिशयनिधा नमतीन्द्रियार्थोपदर्शनाव्यभिचारिचेद जिनप्रवचन मित्येवरूपा प्रतिपत्तिः अथवा प्रत्यक्षेणेवा नेनार्थाः प्रतीयन्त इति प्रत्यक्षमिवेद मित्येवं प्रतीतिः प्रत्यक्ष कप्रत्यय स्तत् करणशीलाः प्रत्यक्षकप्रत्ययकार्यः प्रत्यक्षताप्रत्ययकार्योवा तासा म्प्रत्यक्षकप्रत्ययकारिणां प्रत्यक्षताप्रत्ययकारीणां कासामित्याह प्रश्नानां प्रश्न विद्याना मुपलक्षणत्वा दन्यासाञ्च यासा मष्टोत्तरशतान्यादौप्रतिपादितानि विविधगुणा बहुविधप्रभावा स्तेच ते महार्थाश्च महान्तोभिधेयाः पदार्थाः शुभा शुभ सूचनादयो विविधगुणमहार्थाः किंभूता जिनवरप्रणीताः किमित्याह आघविज्जतित्ति आख्यायन्ते शेषम्पूर्ववत् नवर यद्यपीहाध्ययनाना दशत्वाद्दशैवो देशनकाला भवन्ति तथापि वचनान्तरापेक्षया पञ्चचत्वारिंशदिति सम्भाव्यते इति पणयालीस मित्याद्यविरुद्ध मिति संखेज्जाणिपयसयसहस्साणि पयग्गेणति

णं पएहाणं विविहगुणमहत्था जिणवरप्पणीया आघविज्जंति पएहावागरणेसुणं परित्तावायणा संखेज्जाअणु त्रगदारा जावसंखेज्जात्र संगहणीत्र सेणंअंगठयाएदसमेअंगे एगेसुयखंधेपणयालीसं उद्देसणकाला पणयाली संसमुद्देसणकाला संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेणं प० सखेज्जाअक्खरा अणतागमा जावचरणकरण

यें प्रतीतना करणहार छे एतले प्रत्यक्षपणें मानिवा योग्य छे। एहवा प्रश्नना अनेक गुण अनेक प्रभाव मोटा पदार्थ शुभाशुभना सूचक जिनवरेंप्रणी त भाषित एहवा भाव पदार्थ प्रश्न व्याकरणनें विषें कहियेछे। प्रश्न व्याकरणने विषें संख्याती वाचना। संख्याता अनुयोग द्वारथी यावत् संख्याती संग्रह णी लगे पाठ कहिवो। तेणें अंगार्थपणें दशमें अगे एक श्रुतस्कंध तेने विषें ४५ उद्देशनकाल ४५ समुद्देशनकाल संख्यातापदना शत सहस्र एतले ९२

तानि च किल द्विनवति लक्षाणि षोडशच सहस्राणीति ॥ १० ॥ सेकिंतमित्यादि विपचनं विपाकः शुभाशुभकर्मपरिणाम स्तत्प्रतिपादकं श्रुत
म्विपाकश्रुतं विवागसुएणमित्यादि कंठ्यं नवरं फलविवागेत्ति फलरूपोविपाकः फलविपाकाः तथानगरगमणाइंति भगवतो गौतमस्य भिक्षाद्यर्थं नगरप्रवेश

परूवणया आघविज्जंति सेत्तंपरहावागरणाइं ॥ १० ॥ सेकिंतं विवागसुए विवागसुएणं सुक्का
रुदुक्कडाणं कम्माणं फलविवागे आघविज्जति सेसमासओ दुविहे पणत्ते तंजहा दुहविवागे सुहविवागेचेव
तत्थणं दसदुहविवागाणि दससुहविवागाणि सेकितं दुहविवागाणि दुहविवागेसुणं दुहबिबागाणं नगराइं उ
ज्जाणाइं चेइयाइ वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाओ णगरगमणाइं

लाख १६ हजार पद पदने परिमाणें कह्या । संख्याता अक्षर । अनंता गमा । अनंता पर्याय यावत् चरण करण श्रमणव्रत पिंडविशुद्धयादिक लगी
जाणिवो । इत्यादिक पदार्थ जेहने विषे कहिये ते प्रश्नव्याकरण दशमोअंग ॥ १० ॥ अथस्यूंतेविपाक श्रुत । विपाकजे शुभाशुभ कर्म
ना परिणाम तेहनो प्रतिपादक कथक जे श्रुत ते विपाक श्रुत । विपाक श्रुतने विषें शुभ अशुभ कर्मना फलविपाक फलरूपविपाक परिपाक कहि
येछे । ते विपाक श्रुत संक्षेपे बेप्रकारनो कह्यो । तेकहेछे । दुख विपाक अने सुख विपाक । ते विपुमांहि मृगापुत्रादिकना दश दुख विपाक अने सुबा
हु कुमारादिकना दश सुख विपाक । अथ किशाते दुःखविपाक । दुःख विपाक ने विषे पापीजीव मृगापुत्रादिकना नगर । उद्यान । चैत्य । बनखंड ।
राजा माता । पिता । समोसरण । धर्माचार्य । धर्मकथा । नगर गमन । भगवंत गौतम भिक्षार्थं नगरमांहि प्रवेश करे । ससारनो प्रबंध बिस्तार । दुः

नानीति एतदेवपूर्वोक्तं प्रपञ्चयन्नाह दुहविवागेसुणमित्यादि तत्र प्राणातिपातालीकवचनचौर्यकरणप[र]दारमैथुनैः सह ससंगयाएत्तियो ससङ्गता सपरिग्रह
ता तया संचितानां कर्म्मणामितियोगः महातीव्रकषायेंद्रियप्रमाद पापप्रयोगा शुभाध्यवसायाना स[ं]चितानां कर्मणां पापकानां पापानुभागा अशुभरसा ये
फलविपाका विपाकोदया स्ते तथा आख्यायन्त इतियोगः केषामित्याह निरयगतौ तिर्यग्योनौ[च] बहुविधव्यसनशतपरम्पराभिः प्रबद्धाः ते तथा तेषा जी

संसारपबंधे दुहपरंपराउय आघविज्जंति सेत्तंदुहविवागाणि सेकिं[तं]सुहविवागाणि सुहविवागेसुणं सुहविवागाणं णगराइं उज्जाणाइ चेइयाइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाउ इहलोय परलोय इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइ परियागा पडिमाउ सलेहणाउ भत्तपच्चक्खाणाइं पावोवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चाया पुणबोहिलाहो अंतकिरियाउ आघविज्जंति दुहविवागेसुणं पाणाइवायअलियवयणचोरिक्ककरणपरदारमेहुणससगयाए महतिव्वकसाइंइं

खनी श्रेणी कहिये छे ते दुःख विपाक। अथ सूं ते सुखविपाक। सुख विपाकने विषे सुख विपाकिया सुबाहु कुमारादिकना। नगर। उद्यान। चैत्य। वनखंड। राजा। माता। पिता। समोसरण। धर्माचार्य। धर्मकथा। इहलोक परलोक सबधी ऋद्धि विशेष। भोगनो परित्याग। दीक्षा। श्रुतनो भणवो। तपोपधान करिवो। पर्याय। प्रतिमा। सलेखना। भात पाणीनो पच्चक्खाण। पादपोपगमन। देवलोके उपजियो। तिहां थकी चवीने सुकुलेउपजिवो। वली जिन धर्मनो प्राप्ति। अतःक्रिया। एह जिहां कहिये ते सुख विपाक। दुःख विपाकने विषे। हिंसानो करिवो। अलीक वच

वात्रा मितिगम्यते तथा मणुयत्तेत्ति मनुजत्वे प्यागतानां यथा पापकर्मशेषेण पापका भवन्ति फलविपाका अशुभाविपाकोदया स्ते तथा ते आख्यायन्ते इतिप्रक्रत तथाहि वधो यष्ट्यादिताडनं वृषणविनाशो वर्द्धितककरण तथा नासयोश्च कर्णयोश्च ओष्टस्यचाङ्गुलानां अङ्गुष्टानांच करयोश्च चरणयोश्च नखा नांच यच्छेदन तत्तथा जिह्वाच्छेदनं अंजणत्ति अञ्जन तप्ताय: शलाकया नेत्रयो: स्त्रक्षणं वा देहस्य चारतैलादिना कडग्गिदाहणंति कडानां विदलवंशादि मयाना मग्नि: कटाग्नि स्तेन दाहन कटाग्निदाहनं कटेन परिवेष्टितस्य बोधनमित्यर्थ: तथा गजचलनमलनम्फालन म्विदारणं उल्लम्बन वृचशाखादावुद्बंध

दियप्पमायपावप्पजेय असुहज्झवसाणसंचियाणं कम्माणं पावगाणं पावअणुभागफलविवागाणि णरगति रिक्खजोणियविविहविसणपरपरावद्धाणं मणुयत्तेवि आगयाणजहापावकम्मसेसेणपावगा होंतिफलविवा गाणरगतिरिक्खजोणियविविहवसणविणासकन्नुठगुठ करचरणनहछेयण जिब्भछेअण अंजणकडग्गिदाह

न मुखथी कूडो बोलवो। चोरीनो करिवो। परस्त्री मैथुन सगमनो करिवो। परिग्रहनो धारण करिवो। महातीव्रकषाय। इंद्रिय प्रमाद। तथा। पाप प्रयोग। पापव्यापार। एह थको जपनो अशुभ अध्यवसाय तेणे करी मेल्या पापरूप कर्म तेहना पापरूप अनुभाग अशुभरस जेफलविपाक फलनो उदय। दुःख विपाक ने विषे कहिये। नरक तीर्यंच योनिने विषें अनेक प्रकार कष्टनी श्रेणी तेणे बांधी बधाणा जेजीव तेहनो। तथा मनुष्यपणे पणि आव्या थका जिम पापकर्म शेषेंकरी पापीहोय। फलनाविपाक अशुभ विपाकनो उदय। तथा नरकतीर्यंचयोनिने विषें अनेक प्रकारना कष्ट विनाश काम ओठ अगूठा हात पग नख एहना छेदन। तथा जिह्वा जीभ छेदन। तथा अंजन लोहनी शलाका नेत्रने विषें घालवी। तथा कट वांसमी मेफाड तेह

मं तथा मूलेन लतया लकुटेन यष्ट्याच भञ्जन गात्राणां तथा त्रपुणा धातुविशेषेण सीसकेणच तेनैव तप्तेन तैलेनच कलकलन्ति सशब्देना भिषेचनं तथा कुम्भ्यां भाजनविशेषे पाकः कुम्भीपाकः कम्पन शीतलजलाच्छोटनादिना शीतकाले गात्रोत्कंपजनन तथा स्थिरबन्धन निविडनियन्त्रण वेधः कुन्तादिना शस्त्रेण भेदन वर्द्धकर्त्तनं लगुत्रोटन प्रतिभयकर भयजननं तत्करप्रदीपनञ्च वसनावेष्ठितस्य तैलाभिषिक्तस्य करयो रग्निप्रबोधनमिति कर्म्मधारयः ततश्च बधस्वरूपणविना शब्देत्यादि यावत्प्रतिभयकरप्रदीपम चेति द्वन्द्वः ततस्तानि आदि येषां दुःखानां तानिच तानि दारुणानि चेति कर्म्मधारयः कानीमानीत्याह दुःखानि किंभूता न्यनुपमानि दुःखविपाकेष्वाख्यायन्त इतिप्रक्रमः तथेद माख्यायते बहुविविधपरम्पराभिः दुःखानामितिगम्यते अनुबद्धाः सन्ततमालिङ्गिता बहुविधपरम्परानुबद्धा जीवाइतिगम्यते नमुच्यन्ते तत्याज्यन्ते कायापापकर्मवल्या दुःखफलसम्पादिकया किमित्याह यतो ऽवेदयित्वा अननुभूयकर्मफलमितिगम्यते

गयचलणमलणफालणउल्लंबणसूललयालउडलठिभंजण तउसीसगतत्ततेल्लकलकलञ्राहिसिंचण कुंभिपागकंपण थिरबंधणवेहवज्झकत्तण पतिभयकरपल्लीवणाइं दारुणाणि दुख्काणि अणोवमाणि बहुविविहपरंपराणुब

नी अग्नीयें करी बालिवो। तथा हाथीना पगने हेठें मर्दिवो। कोहाडें करी बेफाड करिवो। वृक्षशाखाने विषें जंचो बांधिवो। शूलें करी लतायें करी लाकडी लठी लाठीयें करी गात्रनो भांजिवो। तथा ताती सीसो कडकडायमान तेल तेणे करी स्नान करिवो। कुंभी भाजनमांहि पचाविवो। शीतल जलें करी शरीर छांटे तेहथकी कंपनो कप। निगड बधन। भालादिकें करी वींधवो। चामडानो त्रोडिवो। भयोत्पादक तेलें करी भीनोवस्त्र शरीरमां लपेटी ने अग्निनो लगाडिवो। इत्यादिक दारुण अनोपम एहवा दुःख विपाकने विषें कहिये। अनेक प्रकार दुःखनी श्रेणीयें करी निरंतर आलिंग्या

दुर्यस्मादर्थे नास्ति भवति मोचो वियोगः कर्म्मणः सकाशात् जीवाना मितिगम्यते किं सर्वथाने त्याह तपसा अनशनादिना किम्भूतेन धृतिश्चित्तसमाधानं तद्रूपा धणियन्ति अत्यर्थं बद्धा निःपीडिता कच्छाबन्धविशेषो यत्र तत्तथा तेन धृतिबलयुक्तेनेत्यर्थः शोधनमुपनयन तस्य कर्म्मविशेषस्य वावित्ति सम्भावना यां होज्जा सम्पद्येत नान्यो मोचोपायो स्तीति भावः एत्तोयेत्यादि इत आनन्तरं सुखविपाकेषु द्वितीयश्रुतस्कन्धाध्ययनेष्वित्यर्थः यदाख्यायते तदभिधीयत इतिशेषः शील ब्रह्मचर्यं समाधिर्वा सयमः प्राणातिपातविरति नियमा अभिग्रहविशेषाः गुणाः शेषमूलगुणाः उत्तरगुणाश्च तपो ऽनशनादि एतेषा मुपधानं विधानं येषान्ते तथा श्रत स्तेषु शीलसयमनियमगुणतपउपधानेषु केष्वित्याह साधुषु यतिषु किंभूतेषु सुष्टुविहित मनुष्टित येषांते सुविहिता स्तेषु भक्तादि दत्वा यथा बोधिलाभादि निवर्त्तयति तथेहाख्यायत इतिसम्बन्धः इहच सम्प्रदाने सप्तमी नदुष्टा विषयस्य विवचणात् अनुकम्पा अनुक्रोश स्तत्प्रधान आश्र य श्चित्त तस्य प्रयोगो व्यावृत्ति रनुकपाशयप्रयोग स्तेन तथा तिकालमतित्ति त्रिषु कालेषु या मति बुद्धि र्यदुत दास्यामीति परितोषोदीयमानेपरितोषो

झाणमुंचंति पावकम्मवल्लीयवेयइत्ता ऊणत्थिमोक्खो तवेणाधिइधणियबद्धकच्छेण सोहणंतस्सवाविऊज्जा एत्तोयसुहविवागेसुणं सीलसंजमणियमसुयतवोवहाणेसु साहूसु सुविहिएसु ऋणुकंपासयप्पउग तिकालमइ

थका नमूकाये न छूट्या। पापकर्म बह्नी दुख फलदायक वेलडीथी तेपापी जीवनछूटे। बिना भोगे निश्चयथी मोच नहोय। सर्वथापि छूटिवो नथी। एम नही तो केम। तपेंकरी तथा धृति चित्तनो समाधान तेणे करी अत्यत बद्धकच्छ थईने शोधवो बेलो थाईवी ते कर्मनो होय। इहां थकी बीजाश्रुत स्कंध सुखविपाक ने विषें जे कहिये तेलिखेछे। शील संयम नियम श्रुत तपोपधान छे जेहने। एहवा सुविहित साधूने विषें दयाभावे करी सहित जे चित्त

दत्तेच परितोष इति सा त्रिकालमति स्तयाच यानि विशुद्धानि तानि यथा तानिचतानि भक्तपानानि चेति अनुकंपाश्रयप्रयोगत्रिकालमतिविशुद्धभक्तपा नानि प्रदाये तियोग: केनप्रदायेत्याह प्रयतमनसा आदरपूरचेतसा हितो ऽनर्थपरिहाररूपत्वात् सुखहेतुत्वात् सुख: शुभोवा नीसेसत्ति नि:श्रेयस: कल्याण करत्वात् तीव्र: प्रकृष्ट: परिणामो ऽध्यवसान यस्यां सा तथा सा निश्चिता असंशया मति बुद्धि र्यांते हतसुखनि:श्रेयसतीव्रपरिणामनिश्चितमतय: किं पय च्छिऊणति प्रदाय किंभूतानि भक्तपानानि प्रयोगेषुशुद्धानि दायकदानव्यापारापेक्षया सकलाशंसादि दोषरहितानि ग्राहकगृहणव्यापारापेक्षया चोद्गमा दिदोषवर्ज्जितानि तत: किं यथाच येनच प्रकारेण पारपर्येण मोक्षसाधकत्वलक्षणेन निवर्त्तयन्ति भव्या. जीवा इति गम्यते तुशब्दो भाषामात्रार्थ: वोधिलाभं

विसुद्धभत्तपाणाइं पययमणसाहियसुहनीसेसतिव्वपरिणामनिच्छियमइपयच्छिऊणं पयोगसुद्धाइं जहनिव्वत्ते तिउ वोहिलाभंजहयपरित्तीकरेति नरनरयतिरियसुरगमणविपुलपरियट्ट अरतिभयविसायसोगमिच्छत्त

तेहनो व्यापार तेणेंकरी त्रिहुंकालने विषें विशुद्ध भात पाणी देवानी बुद्धि करे। देईने आदर पूरितचित्ते करी तेहना अनर्थ टाले तेमाटे। तथा सु खनो हेतु निश्रेयस कल्याणवंत एहवो तीव्र प्रकृष्ट परिणाम अध्यवसाय छे जेहनो एहवा निश्चय मति संशय रहित बुद्धि छे जेहनी तेह देईने तेह भातपाणी केहवा छे प्रयोग शुद्ध छे प्रयोगने विषें दायक दान व्यापारनो अपेक्षाये शुद्ध छे संशयादिक दूषण रहितछे। जिम जेणें प्रकारे परंपरा ये मोक्ष साधक लक्षणें निवर्तावे निपजावे बोधिलाभ भव्यजीव जिम परित्ताकरे संसार सागर थोडोकरे। तेसंसार सागर केहवोछे। मनुष्य नरकातिर्यंच देवता एह चिहुंनी गतिने विषे जीवनो एहवो नजाइवो भ्रमिवो विपुल विस्तीर्ण परिवर्तमत्स्यादिकनो अनेक प्रकारे संचरण जिहां। अरति भय वि

यथाच परित्तीकुर्वंति ह्रखतांनयन्ति संसारसागर मितियोग: किंभूत नरनिरयतिर्यक्सुरगतिषु यज्जीवानां गमन मरिभ्रमण सएव विपुलो विस्तीर्ण: परिवर्त्ती मत्स्यादीना परिवर्त्तन मनेकधा सचरण यत्र स तथा तथा अरतिभयविषादशोकमिथ्यात्वान्येव शैला: पर्वता: तै: सकट: सकीर्णो य स तथा तत: कर्मधारयो ऽत स्त इहच विषादो दैन्यमात्र शोक स्त्वाक्रन्दनादिचिह्न इति तथा अज्ञानमेवतमोधकार महान्धकार यत्र स तथा अत स्त चिक्खिल्ल सुदुत्तारति चिक्खिल्ल कर्दम: ससारपचेतु विषयधनस्वजनादिप्रतिबन्ध स्तेन सुदुस्तरो दु:खोत्तार्योय स तथात तथा जरामरणयोनय एव सक्षुभित महामत्स्यमकराद्यनेकजलजतुजातिसमर्दन प्रविलोडित चक्रवालं जलपारिमाडिल्य यत्र स तथा त तथा षोडश कषाया एवश्वापदानि मकरग्राहादीनि प्रकाण्ड चण्डानि अत्यर्थरौद्राणि यत्र स तथा त अनादिक मनवदग्र मनन्त ससारसागरमिम प्रत्यक्षमित्यर्थ. तथा यथाच सागरोपमादिना प्रकारेण निब

सेलसकडं अन्नाणतमंधकारचिक्खिल्लसुदुत्तार जरमरणजोणिसंखुभियचक्कवालं सोलसकसायसावयपयंडचडं अणाइअं अणवदग्गं संसारसागरमिण जहयणिबंधंति आउगसुरगणेसु जहयअणुभवंति सुरगणविमाण

पाद शोक मिथ्यात्वतल्लक्षण शैलपर्वतें करी संकीर्ण साकडोछे। वली केहवोछे। अज्ञान तेहीज तम अधकार छे जिहा। विषय धन स्वजनादिक प्रतिबध लक्षण चिक्खिल्लकर्दमतेणेंकरी सुदुरुत्तार अत्यर्थ उत्तारछे दोहिलोजेहनो। जरामरण योनि तेहिज सक्षुभित महामत्स्य ने जाइवे आडवें करी विलोड्यो चक्रवाल जालनो मांडलो जिहा। तथा सोले कषाय अनतानुबंध्यादिक भेदें क्रोध मान माया लोभ तल्लक्षण श्वापद मकरादिक प्रकाड अत्यर्थ रौद्रछे जिहां। वली केहवो छे। अनादि छे। तथा अनत छे। अतनथी एहवो ससार सागर इण कहता एहवो ससार समुद्र तरे जेह जिम सागरो

प्रत्यायुः सुरगणेषु साधुदानप्रत्ययमितिभावः यथा चानुभवन्ति सुरगणविमानसौख्यानि अनुपमानि ततश्च कालान्तरेण च्युताना मिहैवत्ति तिर्यग्लोके नर
लोक मागताना मायुर्वपुर्वर्णरूपजातिकुलजन्मारोग्यबुद्धिमेधा विशेषा आख्यायन्त इतियोगः तत्रायुषो विशेष इतरजीवायुषः सकाशात् शुभत्वं दीर्घत्व च
एव वपुः शरीर त्तस्य स्थिरसंहननता वर्णस्योदारंगौरत्व रूपस्यातिसुन्दरता जाते रुत्तमत्वं कुलस्याप्येव जन्मनो विशिष्टक्षेत्रकालनिराबाधत्व आरोग्यस्य प्रक
र्षः बुद्धि रौत्पत्तिक्यादिका तस्याः प्रकृष्टता मेधा पूर्वश्रुतग्रहणशक्ति स्तस्या विशेषः प्रकृष्टतैवेति तथा मित्रजनः सुहृल्लोकः स्वजनः पितृपितृव्यादिः धनधा
न्यरूपो यो विभवो लक्ष्मीः स धनधान्यविभव स्तथा समृद्धिः पुरान्तः पुरकोशकोष्टागारबलवाहनरूपा याः सम्पदो यानि साराणि प्रधानानि वस्तूनि तेषां

सोक्खाणि अणोवमाणि ततोयकालंतरचुआणं इहेवनरलोगमागयाण आउवपुवण्णरूवजातिकुलजम्मआरो
ग्गबुद्धिमेहाविसेसामित्तजणसयणधणधन्नविभवसमिद्धिसारसमुदयविसेसा बहुविहकामभोगुब्भवाण सोक्खा

पमादिक जेणें प्रकारें बांधे आउखो सुरगण ने विषें जिम अनुभवे भोगवे देवताना समूह विमानना सुखप्रतें ते सुख केहवाछे अनोपम कह्या न
जाय ते देवलोक थकी कालांतरे चव्या चवीनें इहा मनुष्यलोक माहि आव्या तेहनो पूरो आउखो उत्तम वपुशरीर वर्णभलो रूप ते पंचेंद्रिय पूरा जा
तिकुलजन्म जिहां जाति ते भलो मातृपक्ष कुल ते भलो पितृपक्ष तिहां जन्म आरोग्यते निरोगपणो बुद्धिते औत्पातिक्यादय मेधा विशेष ते पंडिताई
मित्रजन सुहृलोक स्वजनपितृ पितृव्यादिक धनते लक्ष्मी सुवर्णादि धान्यते २४ अन्नादिलक्षण कह्या विभव सपदा घणी समृद्धि ते पुरान्तःपुर कोठार बल
वाहनरूप समृद्धि संपदा सार प्रधान वस्तु तेहनो समुदाय समूह एहना विशेष प्रकृष्टपणो तथा घणे प्रकारे कह्या । कामभोग तेहथी ऊपना सुख

य' समुदयः समूहः स तथा इत्येतेषां द्वंद्व स्ततः एषां ये विशेषा प्रकर्षा स्ते तथा तथा बहुविधकामभोगोद्भवानां सौख्याना म्विशेषा इतीहापि सम्बन्धनी य शुभविपाक उत्तमो येषा न्ते शुभविपाकोत्तमा स्तेषु जीवेष्वितिगम्य इहचेयं षष्ठ्यर्थे सप्तमी तेन शुभविपाकाध्ययनवाच्यानां साधूना मायुष्कादिविशेषाः शुभविपाकाध्ययनेष्वाख्यायन्ते इतिप्रकृतं अथ प्रत्येक श्रुतस्कन्धयो रभिधेये दुःखपापविपाकरूपे प्रतिपादातयोरेव यौगपद्येन ते आह अणुवरयेत्यादि अनुपर ता अविच्छिन्ना ये परम्परानुबद्धा के विपाका इतियोगः केषा मशुभानांशुभानांचैव कर्मणा म्प्रथमद्वितीयश्रुतस्कन्धयोः क्रमेणैवच भाषिताः उक्ता बहुविधा विपाका. विपाकश्रुते एकादशाङ्गे भगवता जिनवरेण सम्वेगकारणार्थाः सम्वेगहेतवो भावाः अन्येपिचैवमादिका प्राख्यायन्त इति पूर्वोक्तक्रियया वचनपरिणा मा द्दोत्तरक्रियया योगः एवञ्च बहुविधा विस्तरेणार्थं प्ररूपणता आख्यायत इति शेषं कण्ठ्य नवरं संख्यातानि पदशतसहस्राणि पदाग्रेणेति ते किल ए

णसुहविवागोत्तमेसु अणुवरयपरंपराणुवद्धा असुभाणचेवकम्माणभासिआवहुविवागा विवागसुयम्मि भगवयाजिणवरेण संवेगकारणत्था अन्नेवियएवमाइयावहुविहाविस्थरेणं अत्थपरूवणया आघविज्जंति

ना विशेष ते सुखविपाक उत्तमने विषे कहिये। निरंतर परंपराये घणाभवलगे बांध्या। अशुभ तथा शुभ कर्मना पहिले तथा बीजे भाषाश्रुतस्कंधे क्रमे कह्या घणी प्रकारे विपाक ते कर्मफलोदय तेह विपाकश्रुत इग्यारमे अङ्गे भगवंत जिनवरे संवेगकारणनाअर्थं संवेगनाहेतुनाभाव अनेरापणि एवमा दिक एणे अगे घणे प्रकारे विस्तारे अर्थनी प्ररूपणा आख्यायते कहिये। विपाक श्रुतना परित्ता गणतीये वाचना सूत्रार्थनो देवो संख्याता अनुयोग

॥ ११ ॥ सेकिंतंदिट्ठिवाएत्ति दृष्टयो दर्शनानि वदनम्वादो दृष्टीना म्वादोदृष्टिवा

कापदकोटी चतुरशीतिश्च लक्षाणि द्वात्रिंशच्च सहस्राणीति ॥ ११ ॥ सेकिंतंदिट्ठिवाएत्ति दृष्टयो दर्शनानि वदनम्वादो दृष्टीना म्वादोदृष्टिवा

दः दृष्टीना वा पातो यत्रासौ दृष्टिपातः सर्वनयदृष्टय एवेहाख्यायन्त इत्यर्थः तथाचाह दिट्ठिवाएणमित्यादि दृष्टिवादेन दृष्टिपातेन वा सर्वभावप्ररूपणा

ख्यायते सेसमासओपंचविहेत्यादि सर्वमिद प्रायो व्यवच्छिन्न तथापि यथादृष्टं किमपिलिख्यते तत्र सूत्रादिग्रहणयोग्यता सम्पादनसमर्थानि परिकर्म्माणि

संगहणीउ सेणं अंगठयाए एक्कारसमे

विवागसुअस्सणं परित्तावायणा सखेज्जाअणुउगदारा जावसखेज्जाउ संगहणीउ सेणं अंगठयाए एक्कारसमे

अंगे वीसंअज्झयणा वीसंउद्देसणकाला वीससमुद्देसणकाला सखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं प० सखे

ज्जाणिअक्खराणि. अणंतागमा अणंतापज्जवा जावएवंचरणकरणपरूवणया आघविज्जंति सेत्तंविवागसुए

॥ ११ ॥ सेकिंतंदिट्ठिवाए दिट्ठिवाएणं सव्वभावपरूवणया आघविज्जतिसेसमासउ पंचविहे प० तं०

द्वार जाव संख्यात सग्रहणी तेह अंगार्थपणी इग्यारमे अंगे बीस अध्ययन वली २० उद्देशनकाला २० समुद्देसनकाला संख्याता पदना लाख एतले १ कोटि

८४ लाख ३२ हजार पदने परिमाणे कह्या । सख्याता अक्षर । अनन्तागमा । अनन्तापर्याय । जाव चरण ते साधुना महाव्रत करण ते पिंड विशुद्ध्या

दिकनो प्ररूपणा आख्यायते कहिये । तेह विपाकश्रुत इग्यारमो अंग ॥ ११ ॥ अथ सूते दृष्टिवाद दृष्टि ते दर्शन तेहनो वदवो कहिवोछे जि

हा ते दृष्टिवाद सर्वभाव सकल नयादिक भाव तेहनो प्ररूपणा पूर्वने विषे कहिये तेह पूर्व सक्षेप थकी पाच प्रकारे कह्या ते कहे छे । परिकर्म १ सूत्र २

गणितपरिकर्म्मवत् तत्र परिकर्म्मसूत्र सिद्धश्रेणिकादिपरिकर्म्ममूलभेदत: सप्तविधं उत्तरभेदत स्तु त्र्यशीतिविध मातृकापदादि एतच्च सर्वं समूलोत्तरभे
द सूत्रार्थतो व्यवच्छिन्न एतेषाञ्च परिकर्म्मणां षट् आदिमानि परिकर्म्माणि स्वसामयिकान्येव गोशालकप्रवर्त्तिताजीविकपाखण्डिकसिद्धान्तमतेन पुन:

परिकम्मं सुत्ताइं पुव्वगयं अणुओगो चूलिया सेकिंतपरिकम्मे परिकम्मेसत्तविहे प० तं० सिद्धसेणियापरिकम्मे मणुस्ससेणियापरिकम्मे पुठसेणियापरिकम्मे ओगाहणसेणियापरिकम्मे उवसंपज्जसेणियापरिकम्मे विप्पजह सेणियापरिकम्मे चुआचुअसेणियापरिकम्मे सेकिंतंसिद्धसेणियापरिकम्मे सिद्धसेणिआपरिकम्मे चोद्दसविहे प० तं० माउयापयाणि एगठियपयाणि पादोठपयाणि आगासपयाणि केउभूयं रासिवद्धं एगगुणं दुगुणं तिगुणं केउभूए पडिग्गहे ससारपडिग्गहे नंदावत्तं सिद्धावत्तसेत्तंसिद्धसेणिआपरिकम्मे सेकिंतंमणुस्ससेणिया

पूर्वगत ३ अनुयोग ४ चूलिका ५ अथ सूत्रे परिकर्म। परिकर्म पूर्वे सात भेदे कह्यो। तेकहेछे। परिकर्म शब्दे गणती गणना विशेष सिद्ध श्रेणीनो परि
कर्म गणना १ मनुष्य श्रेणीनी गणना २ पृष्ट श्रेणीगणना ३ ओगाहणाश्रेणीगणना ४ उपसपादन श्रेणी गणना ५ विप्पजहश्रेणी गणना ६ चुता चुत श्रेणी
गणना ७ एहना अर्थ गुरुभाग थकी जाणिवा। सिद्ध श्रेणी परि कर्मना वली १४ भेद कह्या। ते कहेछे। त्यांसी भेदे मातृका पद १ एक स्थितिपद २ पाद
अर्थपद ३ आगास पद ४ केतुभूत ५ राशिवद्ध ६ एकगुण ७ द्विगुण ८ त्रिगुण ९ केतुभूत १० प्रतिग्रह ११ ससार प्रतिग्रह १२ नदावर्त्त १३ सिद्धावद्ध १४
एह सिद्ध श्रेणिका परिकर्म। अथ सूत्रे मनुष्य श्रेणी परिकर्म। मनुष्य श्रेणी परिकर्म १४ भेदे कह्यो। ते कहेछे। मातृकापद १ एक स्थितिपद २ पाद अ

सप्त प्रज्ञाप्यन्ते इदानीं परिकर्म्मसु नयचिन्ता तत्र नैगमो द्विविधः सांग्राहिकोऽसांग्राहिकश्च तत्र सांग्राहिकः सग्रहम्प्र

च्युताच्युतश्रेणिकापरिकर्म्मसहितानि सप्त प्रज्ञाप्यन्ते इदानीं परिकर्म्मसु नयचिन्ता ... श्चैकएवेत्येव चत्वारो नया एते चतुर्भिर्नयैः षट्स्वसामयिकानि परिकर्म्माणि
विष्टो ऽसांग्राहिकश्च व्यवहारं तस्मात्तु सग्रहो व्यवहारऋजुसूत्रशब्दादय श्चैकएवेत्येव चत्वारो नया एते चतुर्भिर्नयैः ... यस्मात्ते सर्वं त्यात्मका इच्छन्ति तथा जीवो ऽजी
चिन्त्यन्ते अतो भणित छचउक्कनयाइति भवन्ति तएवचाजीविकास्त्रैराशिका भणिताः कस्मादुच्यते यस्मात्ते सर्वं त्र्यात्मका इच्छन्ति तद्यथा द्रव्यार्थिकः पर्यायार्थिकः
वो जीवाजीवः लोको ऽलोको लोकालोकः सत् असत् सदसत् इत्येवमादि नयचिन्तायामपि ते त्रिविधं नयमिच्छति तद्यथा द्रव्यार्थिकः पर्यायार्थिकः
उभयार्थिकः अतोभणितं सत्ततेरासियत्ति सप्तपरिकर्म्माणि त्रैराशिकपाखण्डिका स्वविधया नयचिन्तया नयाश्चिन्तयन्तीत्यर्थः सेत्तपरिकर्म्मात्ति निगमनं

परिकम्मे मणुस्ससेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पन्नत्ते तजहा ताइचेव माउआपयाणि जावनंदावत्तं मणु
स्सबद्धं सेत्तंमणुस्ससेणियापरिकम्मे अवसेसपरिकम्माइं पुठाइयाइ एक्कारसविहाइं पन्नत्ता इच्चेयाइं सत्त
परिकम्माइं ससमइयाइं सत्तआजीवियाइं छचउक्कणइयाइ सत्ततेरासियाइं एवामेव सपुव्वावरेणं सत्तप

थ पद २ आगासपद ४ केतुभूत ५ राशिबद्ध ६ एकगुण ७ द्विगुण ८ त्रिगुण ९ केतुभूत १० प्रतिग्रह ११ संसार प्रतिग्रह १२ नंदावर्त्त १३ मणुस्सबद्ध १
तेह मनुष्यश्रेणी परिकर्म । शेषथाकता परिकर्म पांच पुष्टादिक इग्यारह भेदें कह्या । इत्यादिक सात परिकर्म मांहि पहिला छ परिकर्म स्वसमयप्रतिबद्ध
जिनमतानुयायी सात परिकर्म च्युताच्युतश्रेणी परिकर्म लगी आजीविक गोशालमतानुयायी जाणिवा । धुरना छ परिकर्म चारनयें करी सहितछे संग्रह १
व्यवहार २ ऋजुसूत्र ३ शब्द ४ एहचारनय प्रतिबद्धछे सात परिकर्म त्रिराशिक मतानुयायी जीव १ अजीव २ जीवाजीव एहत्रिराशिकना मतने विषे

सेकितसुत्ताइमित्यादि तत्र सर्वद्रव्यपर्यायनयाद्यर्थसूचनात्सूत्राणि अष्टाशीत्यपिच सूत्रार्थतो व्यवच्छिन्नानि तथापि दृष्टानुसारतः किञ्चिल्लिख्यते एतानि किल ऋजुकादीनि द्वाविंशतिः सूत्राणि तान्येव विभागतो ऽष्टाशीति भवन्ति कथ मुच्यते इच्चेइयाइ बावीससुत्ताइं छिन्नछेयनइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए त्ति इह योनयः सूत्र च्छिन्नं छेदेनेच्छति सच्छिन्न च्छेदनयो यथा धम्मोमंगलमुक्कट्ठमित्यादि श्लोकः सूत्रार्थत प्रत्येकच्छेदनस्थितो न द्वितीयादिश्लोक मपेक्षते प्रत्येकक्ताश्रितपर्यन्त इत्यर्थः एतान्येव द्वाविंशतिः स्वसमयसूत्रपरिपाट्या सूत्राणि स्थितानि तथा इत्येतानि द्वाविंशति सूत्राणि अच्छिन्नच्छेदनयिका न्या

रिकम्माइं भवंतीतिमक्खायाइं । सेत्तंपरिकम्माइं । सेकिंतं सुत्ताइं सुत्ताइं अट्ठासीति भवंतीति मक्खायाइं तंजहा । उज्जुगं परिणयापरिणयं बहुभंगियं विप्पच्चइयं अणंतरं परंपरसमाणं संजूह भिन्नं अहच्चायं सो वत्थियं घंटं णंदावत्तं बहुलं पुट्ठापुट्ठं वियावत्तं एवंभूय दुआवत्तं वत्तमाणुप्पयं समभिरूढं सव्वओभद्दं पणु मं दुपडिग्गहं इच्चेयाइं बावीससुत्ताइं छिन्नछेअणइआइं ससमयसुत्त परिवाडीए इच्चेआइं बावीससुत्ताइं

सात परिकर्म एणीपरे आगली पाछली मिली सात परिकर्म होय भगवते कह्या। ते पहिलो भेद पूर्वनो परिकर्म नाम कह्यो अथस्यूंते सूत्र। पूर्वनो बीजोभेद सूत्र तेहना ८८ भेद होय। भगवते कह्या तेकहेछे। ऋजुअग १ परिणता परिणत २ बहुभगिय ३ विप्रत्ययिक ४ अनन्तर ५ परपरसमान ६ सयूथ ७ भिन्न ८ यथात्याग ९ सौवस्तिक १० घट ११ नदावर्त्त १२ बहुल १३ पृष्टापृष्ट १४ वियावर्त्त १५ एवभूत १६ द्विकावर्त्त १७ वर्त्तमानोत्पतक १८ समभिरूढ १९ सर्वतोभद्र २० प्रहामत २१ द्विप्रतिग्रह २२ इत्यादिक बावीससूत्र छेद्या छेदे करी नय जिहा तेछिन्न छेदनयिक जिम धम्मोमगल इत्यादिक श्लोक

जीविकसूत्रपरिपाट्येति अयमर्थ. इह यो नयः सूत्रमच्छिन्नच्छेदेनेच्छति सोऽच्छिन्नच्छेदनयो यथा धम्मोमंगलमुक्कट्ठमित्यादि श्लोकएवार्थतो द्वितीयादिश्लोक म पेक्षमाणो द्वितीयादयश्च प्रथममिति अन्योन्यसापेक्षा इत्यर्थ एतानि द्वाविंशति राजोविकगोशालकप्रवर्त्तितपाखण्डसूत्रपरिपाट्या अक्षररचनाविभागस्थिता न्यप्यर्थतो ऽन्योन्यमपेक्षमाणानि भवन्ति इच्चेइयाइं इत्यादि सूत्रं तत्र तिकनइयाइ ति नयत्रिकाभिप्रायतश्चिन्त्यन्तइत्यर्थ स्त्रैराशिकाश्चाजीविका एवोच्यन्ते इति यथा इच्चेइयाइ इत्यादि सूत्रं ततः चउक्कनइयाइ ति नयचतुष्काभिप्रायतश्चिन्त्यंत इति भावनाएवमेवेत्यादि सूत्र एवञ्चतस्रो द्वाविंशतयोऽष्टाशीतिसूत्रा

आजीवियसुत्तपरिवाडीए इच्चेआइं बावीससुत्ताइं तिकणइयाइं तेरासियसुत्तपरिवाडीए इच्चेआइ बावीसंसुत्ताइं चउक्कणयससमयसुत्तपरिवाडीए एवामेवसपुव्वावरेणं अठासीयं सुत्ताइं भवतीति मक्खायाइं ।

सूत्रार्थ थको प्रत्येक छेदथको छेद्यो बीजा श्लोकनी अपेक्षा नकरे ससमय जिनमतना सूत्रनो परिपाटीये अनुक्रमे पामीये एह ऋजु [illegible]गादिक २२ सूत्र नथी छेद्या छेदेकरी नय जिहां ते अछिन्न छेदनयिक जिम धम्मोमंगल मुक्किठ इत्यादि श्लोक बीजा श्लोकनी अपेक्षा करे । एह बावीस सूत्र आजीविक गोशालमतनी परिपाटीयें पामीये । इच्चेइयाइं एह २२ सूत्र त्रिण नय समेत जीव अजीव,नोजीव एह त्रिणनय जिहा ते त्रिकनयिक त्रिराशिक पाखडीना सूत्रनी परिपाटीये पामीये । ऋजुसूत्र प्रमुख २२ सूत्र चतुष्क नयिक संग्रह १ व्यवहार २ ऋजु ३ शब्द ४ एह चार नय समेत तेह स्वसमय जिनमतनो सूत्र परिपाटीने पामिये । एम आगली पाछली मिली २२ चोका अठ्यासी सूत्र होय ते भगवते कह्या । एह पूर्वनो बीजो भेद सूत्र कह्यो

णि भवन्ति सेत्तंसुत्ताइंति निगमनवाक्यं सेकिंतंपुव्वगएइत्यादि अथ किन्तत्पूर्वंगतमुच्यते ग्रस्मा त्तीर्थंकरः तीर्थप्रवर्त्तनाकाले गणधराणां सर्वसूत्राधारत्वेन पूर्वं पूर्वंगतसूत्रार्थं भाषते तस्मात्पूर्वाणीति भणितानि गणधरा. पुनःश्रुतरचनां विदधाना आचारादिक्रमेण रचयन्ति स्थापयन्तिच मतान्तरेणतु पूर्वंगतसूत्रार्थः पूर्वमर्हता भाषितो गणधरैरपि पूर्वंगतश्रुतमेव पूर्वरचित पश्चादाचारादि नत्वेव यदाचारनिर्युक्त्या मभिहितं सव्वेसिंआयारोपढमो इत्यादि तत्कथमुच्यते तत्रस्थापनामाश्रित्य तयोक्त मिहत्वचररचना प्रतीत्य भणित पूर्वं पूर्वाणि कृतानीति तच्च पूर्वंगत चतुर्दशविध प्रज्ञप्त तद्यथा उप्पायेत्यादि तत्रोत्पादपूर्वं प्रथमं तत्रच सर्वद्रव्याणा म्पर्यवाणा चोत्पादभावमङ्गीकृत्य प्रज्ञापना कृता तस्यच पदपरिमाण मेकाकोटी आग्रणीय द्वितीय तत्रापि सर्वेषा द्रव्याणा पर्यवाणा जीवविशेषाणां चाग्र परिमाण वर्ण्यत इत्यग्रणीयं तस्य पदपरिमाण षण्णवतिपदशतसहस्राणि वीरियति वीर्यप्रवाद तृतीय तत्रापि जीवानांजीवानांच सकर्मेतराणा वीर्य प्रोच्यत इति वीर्यप्रवाद तस्यापि सप्तति: पदशतसहस्राणि परिमाण अस्तिनास्तिप्रवाद चतुर्थं यत्लोके यथास्ति यथावा ना

सेत्तंसुत्ताइं । सेकिंतं पुव्वगयं । पुव्वगयं चउद्दसविहे पन्नत्ते । तंजहा उप्पाय पुव्वं अग्गणीयं वीरियं अ

कह्यो । अथ सूते पूर्वनो त्रीजो भेद पूर्वंगत। ते चौदह भेदे कह्यो तेकहेछे उत्पाद पूर्वं १ तीर्थ कर तीर्थ प्रवर्त्तना काले गणधरने पूर्व पहिली सूत्रार्थ भाष्यो तेमाटे पूर्व कह्यो । सर्व द्रव्य पर्यायनो उत्पादक भाव अगोकार करीने जेकह्यो तेउत्पाद पूर्वं इग्यारह कोडि पद परिमाणि १ वीजो अग्रणीय तेमांहि सर्वद्रव्य पर्याय जोवनो अग्र परिमाण पामिये तेहनी पद परिमाण ९६ लाख पद २ । त्रीजो वीर्यप्रवाद तिहां जीवाजीवना वीर्य कह्या । पदसंख्या, ७० लाख पद ३। चौथो अस्तिनास्तिप्रवाद जिहां स्याद्वादाभिप्राय अस्ति नास्ति कहिये ते अस्तिनास्तिप्रवाद पद संख्या ६० लाख पद ४ । पांचमो ज्ञानप्रवाद

स्ति अथवा स्याद्वादाभिप्रायतः तदेवास्ति तदेवनास्तीत्येव प्रवदतीति अस्तिनास्तिप्रवाद भणितं तदपि पदपरिमाणतः षष्टिपदशतसहस्राणि ज्ञानप्रवाद म्पञ्चमं तन्मतिज्ञानादि पञ्चकस्य भेदप्ररूपणायस्मात् तत् ज्ञानप्रवादं तस्मिन्पदपरिमाण मेकाकोटीएकपदोनेति सत्यप्रवाद षष्ठं सत्यसंयमः सत्यवचनम्वा तद्यत्र सभेदं सप्रतिपक्षञ्च वर्ण्यते तत्सत्यप्रवादं तस्य पदपरिमाणं एकापदकोटीपट्चपदानीति आत्मप्रवादं सप्तमं आयन्ति आत्मा सोनेकधा यत्र नयदर्शने वर्ण्यते तदात्मप्रवादं तस्य पदपरिमाणं षट्विंशतिपदकोट्यः कर्मप्रवादमष्टम ज्ञानावरणादिक मष्ठविध कर्म प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशादिभि र्भेदै रन्यैश्चोत्तरोत्तरभेदै र्यचवर्ण्यते तत्कर्मप्रवाद तत्परिमाण मेकापदकोटीअशीतिश्चसहस्राणीति प्रत्याख्यानं नवम तत्रसर्वप्रत्याख्यानस्वरूप म्वर्ण्यत इति प्रत्याख्यानप्रवाद तत्परिमाण चतुरशीतिः पदशतसहस्राणीति विद्यानुप्रवाद दशम तत्रानेके विद्यातिशया वर्णिता स्तत्परिमाण मेकापदको टी दशचपदशतसहस्राणीति अवध्य मेकादशं वध्यनाम निष्फल नवध्य मवध्यं सफलमित्यर्थः तत्रहि सर्वेज्ञानतप. संयमयोगाः शुभफलेन सफला व

त्थिणत्थिप्पवायं नाणप्पवायं सञ्चप्पवाय आयप्पवायं कम्मप्पवायं पच्चक्खाणप्पवाय विज्जाणुप्पवायं अवंझं

तिहांमत्यादि ५। ज्ञान सविस्तार पणे कह्या पद संख्या एकूण एक कोडीपद ५। छठो सत्यप्रवाद तिहां सत्यसंयम तथा सत्य वचन सभेदं कह्यो ते सत्य प्रवाद पद सख्या एककोडी छ पद ६। इति पद पूर्व। सातमो आत्म प्रवाद तिहां अनेक भेदें आत्मा वर्णव्यो ते आत्मप्रवाद पदसख्या २६ कोडी पद ७ आठमो कर्मप्रवाद तिहां आठकर्म प्रकृतिनोप्ररूपणाकारी पद संख्या १ कोडी ८० हजार पद ८। नौमो प्रत्याख्यान प्रवाद तिहांप्रत्याख्यानस्वरूप वर्णव्यो पदसंख्या ८४ लाखपद ९। दशमो विद्यानुप्रवाद तिहां अनेक प्रकारनो अतिशायिनी विद्या वर्णवीछे पद सख्या १ कोडी १५ हजार पद १०। इग्यारह

पर्यन्ते अप्रशस्ताश्च प्रमादादिकाः सर्वे अशुभफला वर्ण्यन्ते अतोऽवध्य तस्यच परिमाणं षट्विंशतिपदकोटयः प्राणायु र्द्वादश त्तत्राप्यायुः प्राणविधान सर्वं स भेद मन्येच प्राणावर्णिता स्तत्परिमाण मेकापदकोटीषट्पञ्चाशच्चपदशतसहस्राणीति क्रियाविशाल त्रयोदश तत्र कायिक्यादय. क्रिया विशालत्ति सभेदाः सयम,क्रियाच्छन्दक्रियाविधानानिच वर्ण्यन्त इति क्रियाविशाल तत्पदपरिमाण नवपदकोट्य. लोकबिन्दुसार श्चतुर्दशमं तच्चास्मिन्लोके श्रुतलोकेवा बिन्दुरि वाचरस्य सर्वोत्तममिति सर्वाचरसन्निपातप्रतिष्टितत्वेनच लोकबिन्दुसार भणितं तत्प्रमाण मर्द्धत्रयोदशपदकोट्यइति उप्पायपुव्वस्सेत्यादिकाव्य नवर वस्तुनिय तार्थाधिकारप्रतिबद्धो ग्रन्थविशेषो ध्ययनवदिति तथाचूडाइवचूडा इहदृष्टिवादे परिकर्मसूत्रपूर्वगतानुयोगोक्तानुक्तार्थ सग्रहपरा ग्रथपद्धति चूडाइति सेत

पाणाउ किरियाविसालं लोगविंदुसारं १४ उप्पायपुव्वस्सणं दसवत्थू चत्तारिचूलियावत्थू प० अग्गेणिय स्सणंपुव्वस्स चोद्दसवत्थू वारसचूलियावत्थू प०। वीरियपुव्वस्सणंपुव्वस्स अठवत्थू अठचूलियावत्थू प०।

मो अवध्य तिहां तप सयमना फल बध्यनथी अफलनथी एहवो वर्णव्यो पद सख्या २६ कोडो पद ११। बारमो प्राणायु तिहां आउखानो भेद सर्व जीवनो कह्यो पद संख्या १ कोडी ५६ लाख पद १२। तेरमो क्रियाविशाल तिहा कायिक्यादिक क्रिया सत्तर भेदें वर्णवी पद सख्या ९ कोडो पद १३। चौदमो लोक बिंदुसार लोकने विषे बिंदुसरीखो बिंदु सघलामांही उत्तम तेहनी पद सख्या साढी बारह कोडीपद १४। एतले पूर्वनो त्रीजो भेद वर्ण्यो कह्यो। प्रथम उत्पाद पूर्वना दश वस्तु अध्ययन चार चूलिका वस्तु चूडा चोटली ते सरीखा तेहना वस्तु कह्या। अग्रणी बीजा पूर्वना चौदे वस्तु बारे चूलिका वस्तु कह्या। वीर्य प्रवाद पूर्वना आठ वस्तु आठ चूलिका वस्तु कह्या। अस्तिनास्ति प्रवाद चौथा पूर्वना अठारह वस्तु १० चूलिका वस्तु कह्या ४। ज्ञान प्रवाद

पुव्वगतेत्ति निगमनं सेकितमित्यादि अनुरूपोनुकूलोवायोगो नुयोगः सूत्रस्य निजेनाभिधेयेन सार्द्धमनुरूपः सम्बन्धइत्यर्थः सच द्विविधः ग्रन्नमः तद्यथा मूल

नाणप्पवायस्सणं पुव्वस्स वारसवत्थू दसचूलियावत्थू प० । अत्थिणत्थिप्पवायस्सणंपुव्वस्स अठारसवत्थू प० । कम्मप्पवायस्सणं पुव्व स्स तीसंवत्थू प० । सच्चस्सणं पुव्वस्स दोवत्थू प० । आयप्पवायस्सणं पुव्वस्स सोलसवत्थू प० । पच्चक्खाणस्सणं पुव्वस्स वीसवत्थू प० । विज्जाणुप्पवायस्सणं पुव्वस्स पनरसवत्थू प० । अवंझस्सणं पुव्वस्स वारसवत्थू प० पाणाउस्सणं पुव्वस्स तेरसवत्थू प० । किरियाविसालस्सणं पुव्वस्सती सवत्थू प० । लोगविदुसारस्सणं पुव्वस्स पणवीसवत्थू प० । सेत्तंपुव्वगयं । सेकितअणुजोगे । अणुजोगे दु

पांचमा पूर्वना बारह वस्तू कह्या । ५ । सत्य प्रवाद छठा पूर्वना त्रिह् वस्तु कह्या ६ । आत्म प्रवाद सातमा पूर्वना १६ वस्तु कह्या ७ । कर्म प्रवाद आठमा पूर्वना ३० वस्तु कह्या ८ । प्रत्याख्यान नवमा पूर्वना २० वस्तु कह्या ९ । विद्यानुप्रवाद दशमा पूर्वना १५ वस्तु १० । अवंध्य इग्यारहमा पूर्वना १२ वस्तु कह्या ११ । प्राणायु बारमा पूर्वना १३ वस्तु कह्या १२ । क्रियाविशाल तेरमा पूर्वना ३० वस्तुकह्या १३ । लोक विंदुसार चौदमा पूर्वना २५ वस्तुकह्या १४ । दसचउद्दसअठठा रसेववारसदुवेयवत्थूणि सोलसतीसावीसा पणरसअणुप्पवायंमि ॥ १ ॥ बारसएक्कारसमे बारसमेतेरसेववत्थूणि तीसापुणतेरसमे चउद्दसमे पणवीसाओ ॥ २ ॥ चत्तारिदुवालस अट्ठचेवदसचेवचूलवत्थूणि आइल्लाणचउण्ह सेसाणचूलिआनत्थि ॥ ३ ॥ धुरना चिहूं पूर्वनी चूलिका कही जाणिवी । शेष थाकता दश पूर्वनी चूलिका नथी एह पूर्वगत चौथो भेद पूर्वनो कह्यो ॥ अथ स्यूं ते अनुयोग चौथोभेद पूर्वनो । अनुरूप अनुकूल योग ते अनुयोग सूत्र

प्रथमानुयोग स्र गण्डिकानुयोगस्र सेकितमित्यादि इहधर्म्मप्रणयनात् मूलं तावत्तीर्थकरा स्तेषा प्रथमसम्यक्त्वावाप्तिलक्षणपूर्वभवादिगोचरो नुयोगो मूलप्रथ मानुयोग स्तथाह सेकिंत मूलपढमाणुश्रोगे इत्यादि सूत्रसिद्ध यावत् सेत्तमूलपढमाणुश्रोगे सेकिंतमित्यादि इहैकवक्तव्यतार्थाधिकारानुगता वाक्यपद्धतयो ग

विहे पन्नत्ते । तंजहा । मूलपढमाणुजोगे गंडियाणुजोगे सेकिंतंमूलपढमाणुजोगे एत्थणं ऋरहंताणंभगवंताणं पुव्वभवदेवलोगगमणाणि ऋाउचयणाणि जम्मणाणिऋऋभिसेयरायवरसिरीउ सीऋाऋो पव्वज्जाउ तवोयभ त्ताकेवलणाणुप्पयऋा तित्थपवत्ताणाणिऋ संघयणसंठाणउच्चत्तऋाउवन्नविभागो सीसागणागणहराय ऋज्जा पवत्तणीउ संघस्सचउव्विहस्स जंवावि परिणामं जिणा मणपज्जवउहिनाणिसम्मत्तसुयनाणिणोय वाईऋणुत्त

नेविषे अर्थने विषे सरीखो संबंध तेकहेछे। मूल प्रथमानुयोग १ गडिकानुयोग। अथ स्यूंते मूल प्रथमानुयोग। मूल प्रथमानुयोगने विषे इहां धर्मनाप्ररूपक पणा थकी मूले ते तीर्थंकर देव ते अरिहंत भगवंतनो प्रथम पहिलो पूर्वभव तप सयम सूचक अनुयोग व्याख्या ते मूल प्रथमानुयोग कहियें ते अनुयोग बहु प्रकारे कह्यो अरिहंतना पूर्व भव देवलोक गमन जाइवो। आउखो च्यवन जन्म राज्याभिषेक राज्यवर श्री जिमभोगवे शिविका दीक्षा दीक्षानीपाल खी तपना भक्त चोथभक्त छट्ठभक्त इत्यादि। केवल नाणनो उपजवो। तीर्थ चतुर्विध सघ तेहनो प्रवर्तावयो। संघयण वज्रऋषभादिक। संस्थान समचतुर स्र। शरीरनो ऊंचपणो। आउखो। वर्ण गौरादिक। तेहनी विभा कांति। शिष्य गण गछ। गणधर ते प्रथम शिष्य। आर्या साधवी प्रवर्तिनी बडी सा ध्वी तेहना नाम। संघ चतुर्विध साधु साध्वी श्रावक श्राविका तेहनो जेहवो परिणाम आचार विचार।' जिन केवलीनो सख्या। मनपर्यंयज्ञानी अवधि

ण्डिका उच्यन्ते तासामनुयोगोर्थकथनविधि र्गण्डिकानुयोगः तथाचाह गडियाणुओगेअणेगेत्यादि तत्र कुलकरगण्डिकासु कुलकराणां विमलवाहनादीनां पूर्वजन्माद्यभिधीयते इति एव शेषास्वपि अभिधानवशतो भावनीय यावच्चित्रान्तरगण्डिका नवर दशार्हा' समुद्रविजयादयो दश वसुदेवान्ता. तथा चित्रा

रगइय जत्तियासिद्धापावोवगउय जो जहिजत्तियाइं भत्ताइं छेअइत्ता अंतगडोमुणिवरुत्तमो तमरउघवि प्पमुक्कासिद्धिपहमणुत्तरचपत्ता एए अन्नेय एवमाइया भावामूलपढमाणुउगकहिआ आघविज्जाति पन्नवि ज्जंति सेत्तंमूलपढमाणुउगे सेकितगण्डियाणुउगे गण्डियाणुउगे अणेगविहे पन्नत्ते तंजहा कुलगरगण्डियाउ तित्थगरगंडियाउ गणहरगण्डियाउ चक्कहरगंडियाउ दसारगंडियाउ वलदेवगण्डियाउ हरिवंसगंडियाउ

ज्ञानी मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी। सम्यक जे यती तिहां जइ ऊपना ते उपपात अनुत्तर विमान गतियें जाइ ऊपना तेहनी गतिनो कहिवो। जेतला २ यती सिद्ध सकल कर्मक्षय करी मोक्ष गया। पादपोपगमन। अनशन करिवानो अधिकार जेहयती जिहां २ जेणे २ ठामे जेतली २ भात छेदीने अंत क्षत स सारनो अंत कीधो। मुनिवर उत्तम। तम अज्ञान रूप रज पापरज थकी मूकाणा। सिद्धिपंथ मोक्षमार्ग अनुत्तर प्रधान तेह प्रते पाम्या। एह पूर्वे कह्या ते तथा अनेरा पणि। एवमादिक भाव पदार्थ प्रथमानुयोगने विषें कह्या। ते जिहां चौथा पूर्वना भेद मांहि आख्यायते कहियें प्रज्ञापियें जाणवीयें तेह मूलप्रथमानुयोग पहिलो॥ अथ स्यंते गंडिकानुयोग। इहां एकवक्तव्यतार्थाधिकार तेहने अनुगतसरीखी वाक्यपद्धति ते गंडिका क हियें तेहनो अनुयोग अर्थकहिवानो विधि ते गडिकानुयोग। ते गडिकानुयोग अनेक प्रकारें कह्यो। तेकहेछे। कुलकर ते विमलवाहनादिक तेहनी गंडि

अनेकार्था अन्तरे ऋषभाजिततीर्थकरान्तरे गण्डिका एकवक्तव्यतार्थाधिकारानुगता स्तत्र चित्राश्च ता अन्तरगण्डिका श्च चित्रान्तरगण्डिका' एतदुक्तंभ वति ऋषभाजिततीर्थंकरान्तरे तद्वंशज-नृपतीना शेषगतिगमनव्युदासेन शिवगमनानुत्तरोपपातप्राप्ति रितिप्रतिपादिका श्चित्रांतरगण्डिका इति ताश्च चोद्दसलक्खासिद्धा निवईणेक्कोयहोइसव्वट्ठे एवेक्केक्कट्ठाणे पुरिसजुगाहुतिसंखेज्जेत्यादिना ग्रंथेन नन्दिटीकायां मभिहिता स्तत एवावधार्या इह सूत्रगमनिका

नदवङ्गगंडियाउ तवोकम्मगंडियाउ चित्ततरगंडियाउ उस्सप्पिणीगंडियाउ ओसप्पिणीगंडियाउ अमरनर तिरियनिरयगइगमणविविहपरियट्टणाणुजगे एवमाइयाउगंडियाउ आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति सेत्तंगंडियाणुजगे सेकिंतंचूलियाउ जंणंआइल्लाण चउण्हंपुव्वाणंचूलियाउ सेसाइपुव्वाइ अचूलियाइं छिडिवा

का पूर्वजन्मादि सबधी जिहां कही ते कुलकरगडिका । एमज सर्वत्र कहिवो । जिहांलगे चित्रातरगडिकाआवे । तीर्थंकरना संबध गणधर सबध चक्रव र्त्तिसंबध।दस समुद्रविजयादिक दशदशार तेहना प्रबध । बलदेव बलभद्रादिकनासंबध। हरिवंश यदुवशनी उत्पत्ति । भद्रकल्याण वणाजिम एह पाम्या। छेहडे जेहवा तपकर्मकीधा । तेचित्रांतरगडिका चित्रअनेकार्थ अतरते आदिनाथ अने अजितनाथने आंतरे विचाले जिम आदीस्वरना पाट असख्याता मो क्षपहुता । तथा । सर्वार्थसिद्ध पहुता। तेसर्व भावना कहणहार तेचित्रातरगडिका । उत्सर्पिणी ते चढतोसमय तेहनाभाव । अवसर्पिणी तेघटतोकाल तेह नाभाव । देवतानागणसमूह । तथा नरमनुष्यतिर्यंच नारको एचिहूंनीगति जिहां विविध प्रकारे परिवर्तन ससारमांहि फिरवो तेहनो अनुयोग व्याख्यान एवमादिक गडिका अर्थाधिकार । तिहा चौथा पूर्वना भेदने विषे कहिये गडिका चोथो भेद पूर्वनो ॥ अथ ते स्यूं चूलिकानुयोग । जे आदिना धुरना चार

माथस्य विवचितत्वा दितिशेषं सूत्रसिद्ध मानिगमना अवरं सखेज्जावत्थुत्ति पञ्चविंशत्युत्तरे द्वेशते सखेज्जाचूलवत्थुत्ति चतुस्त्रिंशत् ॥ १२ ॥ ॥

यस्सणं परित्तावायणा संखेज्जाअणुओगदारा संखेज्जाओपडिवत्तीओ सखेज्जाओनिज्जुत्तीओ संखेज्जावेढा संखेज्जासिलोगा सखेज्जाओसंगहणीओ सेणअंगठयाएवारसमेअंगे एगेसुयखधे चउद्दसपुव्वाइं संखेज्जावत्थू संखेज्जाचूलवत्थू संखेज्जापाहुडा संखेज्जापाहुडपाहुडा संखेज्जाओपाहुडियाओ सखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेण पन्नत्ता संखेज्जाअक्खरा अणंतागमा अणंतापज्जवा परित्तातसा अणताथावरा सासयाकडाणिवद्धाणिकाइया जिणपन्नत्ताभावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति

पूर्वं तेहनो चूलिका छे ते पूर्वे कही छे। शेष थाकता दैश पूर्व चूलिका रहित छे ते चूलिका पूर्वनी पांचमो भेद दृष्टिवाद पूर्व तेहना परित्ता गणती वाचना छे। सख्याता अनुयोग द्वार उपक्रमादिक। सख्याती प्रज्ञप्ति। सख्याता वेढा। सख्याता श्लोक। सख्याती सग्रहणी। सख्याती निर्युक्ति सूत्रने विषे अर्थनो योजवो। तेह अङ्गार्थं पणे अङ्ग पणें बारमें अगे एक श्रुतस्कधने विषे १४ पूर्व। सख्याती २२५ वस्तु। सख्याता नान्हावस्तु ३४। संख्याता प्राभृतका अधिकार विशेष। सख्याता प्राभृतप्राभृत अधिकार विशेष। सख्याती प्राभृतिका। सख्याती प्राभृतप्राभृतिका। सख्याता पदना शतसहस्र लाख पदने परिमाणे लिख्या छे ते पूर्वे। सख्याता अक्षर वर्ण। अनतागमा अर्थना परिच्छेद। अनता पर्याय अक्षर पदना भेद। परित्ता अनतनही एतला २ सबेइन्द्रियादिक। अनता स्थावर वनस्पति प्रमुख पाच थावर। एह पूर्व माहि भाव पदार्थ शाश्वता द्रव्यार्थ पणे विच्छेद रहित छे वली पर्याय पणे समे २ प्रति

साम्प्रत द्वादशाङ्गविराधनानिष्पन्न त्रैकालिकं फलमुपदर्शयन्नाह इच्चेयमित्यादि इत्येत द्वादशाङ्गं गणिपिटक मतीतकाले अनन्ताजीवा आज्ञया विराध्य चतुरन्तं ससारकान्तारं अणुपरियट्टिंसुत्ति अनुपरिवृत्तवन्तः इदहि द्वादशाङ्ग सूत्रार्थोभयभेदेन त्रिविधं तत्र आज्ञया सूत्राज्ञया अभिनिवेशतो न्यथापाठादिलक्षणया अ तीतकाले अनन्ता जीवाश्चतुरन्त ससारकान्तार नारकतिर्यङ्नरामरविविधवृक्षजालदुस्तर भवाटवीगहन मित्यर्थः अनुपरावृत्तवती जमालिवत् अर्थाज्ञया पुन रभिनिवेशतोऽन्यथाप्ररूपणादिलक्षणया गोष्टामाहिलवत् उभयाज्ञया पुनः पञ्चविधाचारपरिज्ञानवारणोद्यतगुर्वादेशादे रन्यथाकरणलक्षणया गुरुप्रत्यनी कद्रव दव्यलिङ्गधार्यनेकश्रमणवत् सूत्रार्थोभये विराध्येत्यर्थः अथवाद्रव्यक्षेत्रकालभावापेक्षयाऽऽगमोक्तानुष्ठान मेवाज्ञाततया तदकरणेनेत्यर्थः इच्चेयमित्यादि गता

निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति एवंणाए एव विन्नाए एवं चरणकरणपरूवणया आघविज्जंति सेत्तंदिट्ठिवाए॥ सेत्तदुवालसंगेगणिपिडगे ॥ १२ ॥ इच्चेइय दुवालसंगंगणिपिडगं अतीतकाले अणंताजीवा आणाए विरा

अन्यथा पणे काडा कोधा छे निबडा सूत्र थकी गूंथ्या छे। हेतूदाहरणे करी प्रतिपाद्या छे जिनने प्रज्ञाप्या जणाव्या भाव पदार्थ कहीजे। नाम भेद जणावे करी। निर्दंशीये देखाडिये विशेष पणे युक्ति देखाडी सामान्य पणे एम पूर्व भणी ते ज्ञाता जाण्या। एम विशेष पणे जाण्या। चरण ते पांच महाव्रत रूप करण ते पिण्डविशुद्ध्यादिकनी प्ररूपणा। जिहा कहिये ते दृष्टिवाद बारमो अग जाणिवो ॥ १२ ॥ एह बारे अग वोहवाछे। गणी वाह ता आचार्य तेहने पेटी रत्नकरड समानछे। इत्यादि द्वादशाग एहने आचार्यने पेटी समान एहने अतीत गयेकाले अनन्ताजीव आज्ञाने विराधी खडी ने चार अत छेहडाछे नरकादिक लक्षण एहवो संसार कांतार गहन अटवी तेह प्रति अनुपरिवृत्तवत भ्रमता हुआ एह द्वादशांग गणि पिडगप्रते व

र्थमेव नवरं परित्ताजीवाइति सख्येयाजीवा वर्त्तमानविशिष्टविराधकमनुष्यजीवानां संख्येयत्वात् अणुपरियट्टतित्ति अनुपरावर्त्तन्ते भ्रमन्तीत्यर्थ. इच्चेयमित्या
दि इदमपिभावितार्थ मेव नवर मणुपरियट्टिस्संतित्ति अनुपरावर्त्तिष्यन्ते पर्यटिष्यतीत्यर्थः इच्चेयमित्यादि कंठ्य नवर विइवयसुत्ति व्यतिव्रजितवन्तः चतुर्ग
तिकससारील्लङ्घनेन मुक्तिमवाप्ता इत्यर्थः एव प्रत्युत्पन्नेपि नवर मय म्विशेषः वीइवयतित्ति व्यतिव्रजन्ति व्यतिक्रामन्तीत्यर्थः अनागते प्येव नवर वीवइस्संति
त्ति व्यतिव्रजिष्यन्ति व्यतिक्रमिष्यतीत्यर्थः यदिद मनिष्टेतरभेदभिन्न फल मतिपादित मेतत्सदावस्थायित्वे सति द्वादशाङ्गस्यो पजायत इत्याह दुवालसगे इ

च्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पन्नेकाले परित्ताजीवा आणाए
विराहित्ता चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिंसु इच्चेइयं दुवालसंगंगणिपिडगं अणागएकाले अणंताजीवा
विराहित्ता चाउरतसंसारकंतार अणुपरियट्टति इच्चेइय दुवालसंगंगणिपिडगं अतीतकाले
आणाए विराहित्ता चाउरतससारकतार अणुपरियट्टिस्सति इच्चेइयं दुवालसगगणिपिडगं अतीतकाले
अणताजीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतससारकंतार विइवइंसु एवंपडुप्पन्नेवि अणागएवि दुवालसगं

वर्तमानकाले परित्तासख्याता जीव मनुष्य आज्ञाने विराधोने चातुरत ससार कांतार प्रति अनुपरावर्तें भ्रमे छे। एह द्वादशांग गणिपिडगने। अनागत
भविष्यकाले अनंताजोव आज्ञानें विराधोने चातुरत संसार कांतारप्रतें भ्रमस्ये। एहवा द्वादशांग गणिपिडगप्रतें अतीतकाले अनताजीव आज्ञाने अराधी
ने चातुरत संसार कांतारप्रते पार पांमताहुआ। एम वर्तमानकाले पार पामे छे। एम भविष्यकाले पार पामस्ये। एह द्वादशाग गणिपिटक। नहो का
दाचित् किवारे वर्तमानकाले नथी एमनहो। नही किवारे अतीतकाले नासीत् नहुती एमनही। तथा भविष्यकाले तिवारे नही होय एम नहीछेहडो

त्यादि द्वादशाङ्ग गणिमित्यलङ्कारे गणिपिटकं नकदाचिन्नासी दनादित्वा न्नकदाचिन्नभवति सदैवभावात् नकदाचिन्नभविष्यति अपर्यवसितत्वात् किंतर्हि भु विचेत्यादि अभूच्च भवतिच भविष्यतिच ततश्चेद त्रिकालभावित्वादचलत्वाच्च ध्रुव मेर्वादिवत् ध्रुवत्वादेव नियत मञ्चास्तिकायेषु लोकवचनवत् नियतत्वादेव शाश्वत समयावलिकादिषु कालवचनवत् शाश्वतत्वादेव वाचनादिप्रदानेप्य चय गङ्गासिन्धुप्रवाहेपि पद्मह्रदवत् अचयत्वादेवा व्ययं मानुषोत्तराद्बहिः समु द्रवत् अव्ययत्वादेव स्वप्रमाणे ऽवस्थितं जम्बूद्वीपादिवत् अवस्थितत्वादेव नित्यमाकाशवदिति साम्प्रत दृष्टान्त मन्यार्थं आह सेजहानामएइत्यादि तद्यथा नामपञ्चास्तिकाया धर्मास्तिकायादयः न कदाचिन्नास न्नित्यादि प्राग्वत् एवमेवेत्यादि दार्ष्टान्तिकयोजना निगदसिद्धेवेति एत्यणमित्यादि अत्र द्वादशाङ्ग

गणिपिडगं णकयाइणत्थि णकयाइणासी णकयाइणन्नविस्सइ भुवंच भवति भविस्सतिय धुवे ∙तिए सासए अक्खए अव्वए अवठिए णिच्चे सेजहाणामए पंच अत्थिकाया णकयाइ णआसि णकयाइ णत्थी

नही तेमाटे हुतो तोस्यूं। एह द्वादशांग पूर्वेहुता हिवडा छे आगलि होस्ये एतले त्रिहुकाले पामिये एह द्वादशाग ध्रुव निश्चलछे वली नियतछे। सदाभावी पचास्तिकायनीपरे चयनही व्ययनही विनाशनही चार समुद्रवत् शाश्वतछे समयादिकालनीपरे वली अचय पद्मद्रहने विषे गगासिधुना प्रवाहनीपरे पचा स्तिकायनीपरे वली अवस्थित जम्बूद्वीपनीपरें वली नित्य आकाशनीपरे साम्प्रत दृष्टांत देखाडीयेछे। तेयथानाम जिम पचास्तिकाय धर्मास्तिकायादि किवा रे अतीतकाले नही न हुतो एम वर्तमान काले किवारे नथी एमनही। तथा भविष्यकाले किवारे नही हुस्ये एमनही। एह पचास्तिकाय हुतो अतीत काले आगलिकाले होस्ये। वर्तमानकालेछे। ध्रुव नियत शाश्वत नित्य। एह पदार्थ वखाण्याछे। एणि दृष्टांते द्वादशांग गणिपिटक किवारे अतीतकाले न

गणिपिटके अनन्ताभावा आख्यायन्त इतियोग' तत्रभवन्तीतिभावा जीवादयः पदार्थाः एतेच जीवपुद्गलानामनन्तत्वा दनन्ता इति तथा अनन्ता अभावाः सर्वभावानामेव पररूपेणासत्वा त्तएवानता अभावा इति स्वपरसत्ताभावाभावोभयाधीनत्वाद्वस्तुतत्वस्य तथाहि जीवो जीवात्मनाभावो ऽजीवात्मनाचाभावो ऽन्यथा ऽजीवत्वप्रसङ्गादिति अन्येतु धर्म्मापेक्षया अनताभावाः अनताऽभावाः प्रतिवस्त्वस्तित्वनास्तित्वाभ्यामतिबद्धा इति व्याचक्षते तथा ऽनन्ताहेतवः तत्र हि

णकयाइ ण भविस्संति भुवि भवंतिय भविस्संतिय धुवा णितिया सासया अक्खया अव्वया अवठिया णिच्चा एवामेव दुवालसंगे गणिपिडगे णकयाइ ण आसि णकयाइणत्थी णकयाइणभविस्सइ भुविं च भवति भविस्सइय धुवे जावअवठिए णिच्चे एत्थणं दुवालसंगे गणिपिडगे अणंताभावा अणंताअभावा अणंताहेऊ अणंताअहेऊ अणंताकारणा अणंताअकारणा अणंताजीवा अणंताअजीवा अणंताभव

हुतो एम नहो। बर्तमानकाले किवारे नथी एमनहो। भविष्यकाले किवारे नहोय एमनहो। हुतो छे होस्से एतले त्रिकालभाव। ध्रुवादि' पद सघला कहिवा जिहां लगे अवस्थित तथा नित्य पद आवे तिहालगी कहिवो। एणी द्वादशांग गणिपिटकने विषे अनन्ताभाव जीव पुद्गलादिक भावपदार्थ अनंता छे। अनन्ता अभाव पोतानी अपेक्षाये आपणपो परने विषे नहो एह अभाव तेहो अनन्ता। हेतु ते जाणवा रूप वस्तु धर्मविशिष्ट अर्थने पामे ते हेतु वस्तु पणि अनतछे। तद्विशिष्ट अर्थपणि अनतछे। हेतुनालक्षणथी विपरीत अहेतु तेहो अनत छे। मृत्पिडादिक जिम घटना कारण तेहो अनत छे। जिम मृत्पिडादिक घटना कारण तेपटना अकारण छे तेहो अनतछे। जीव अनतछे। अजीव स्थाणकादिक पुद्गल तेहो अनतछे। भव्य जीव अनतछे। अभव्य

नश्चेति खचराश्चतुर्द्धा चर्म्मपक्षिणो लोमपक्षिणः समुद्गपक्षिणो विततपक्षिणश्च तत्राद्यौ द्वौ वल्गुलीहंसादिभेदा वितरौ द्वीपान्तरेष्वेव स्तः सर्वेच पञ्चेन्द्रियति

र्य्यञ्चो मनुष्याश्च द्विधा सम्मूर्च्छिमा गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च तत्र सम्मूर्च्छिमाः नपुंसकाएव इतरेतु त्रिलिङ्गाइति गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यास्त्रिधा कर्म्मभूमिजा अकर्म्म

भूमिजा अन्तरद्वीपजाश्चेति कर्म्मभूमिजा द्विविधा आर्य्या म्लेच्छाश्च आर्य्याद्विधा ऋद्धिप्राप्ता इतरेच तत्र प्रथमा अर्हदादय. द्वितीया नवविधा क्षेत्रजातिकुलक

र्म्मशिल्पभाषाज्ञानदर्शनचारित्रभेदात् देवाश्चतुर्विधा भवनवास्यादिभेदा द्भवनपतयोदशधा असुरनागादयः व्यन्तरा अष्टविधा पिशाचादयः ज्योतिष्काः प

ञ्चधा चन्द्रादयः वैमानिका द्विधा कल्पोपगाः कल्पातीताश्च कल्पोपगाद्वादशधा सौधर्म्मादिभेदात् कल्पातीता द्वेधा ग्रैवेयकाअनुत्तरोपपातिकाश्च ग्रैवेयका

नवधा अनुत्तरोपपातिकाः पञ्चधेति एतत्समस्त सूत्रकृतो क्त जावसेकित अणुत्तरेत्यादि पूर्वोक्तमेवजीवराशि दण्डकक्रमेण द्विधादर्शयन्नाह दुविहेत्यादि सु

गविहा ॥ जावसेकिंतंअणुत्तरोववाइआ अणुत्तरोववाइआ पंचविहा पन्नत्ता तंजहा विजय वेजयंत ज

यंत अपराजित सव्वट्ठसिद्धिआ सेत्तंअणुत्तरोववाइआ सेत्तंपचेंदियसंसारसमावन्नजीवरासी ॥ दुविहाणेर

इया पन्नत्ता तजहा पज्जत्ताय अपज्जत्ताय एवंदंडओभाणियव्वो जाववेमाणियत्ति इमीसेणंरयणप्पभाए पुढ

हा लगी अनुत्तर विमानआवे । सूंते अनुत्तरोपपातिका । तेपांच प्रकारे काह्या तेकहेछे । पूर्व दिशि विजय विमान । दक्षिणे वैजयंत । पश्चिमे जयत । उ

त्तरे अपराजित । विहुं विचे सर्वार्थ सिद्ध । एह पांच विमानना देवता पर्याप्ता अपर्याप्ता । तेह अनुत्तरोपपातिक देवता । ते पचेंद्रिय ससार प्राप्त जीव

राशि एक भेद बीजो ते असंसार प्राप्त जीवराशि सिद्धनाजीव । बे प्रकारे नारकी कही ते कहे छे । पर्याप्ता नारकीमाहि आहार १ शरीर २ इंद्रिय ३

मचूर्ण्यनुसारेण लिख्यते किल द्विविधा नरका भवन्ति आवलिकाप्रविष्टाः आवलिकाबाह्याश्च तत्रावलिकाप्रविष्टा अष्टासु दिक्षु भवन्ति तेच वृत्तत्र्यस्रचतुरस्रक्रमेण प्रत्यवगन्तव्याः एतेषाच मध्ये इन्द्रकाः सीमन्तकादयो भवन्ति आवलिकाबाह्यास्तु पुष्पावकीर्णा दिग्विदिशामन्तरालेषु भवन्ति नानासंस्थानसंस्थिताइति निरयसंस्थानव्यवस्था तत्रच बाहुल्यमङ्गीकृत्येद मभिधीयते अतोवट्टेत्यादि उक्तंच सूत्रकृद्वृत्तिकृता नरकाः सीमन्तकादिकाः बाहुल्यमङ्गीकृत्यांतर्मध्ये वृत्ता वहिरपि चतुरस्रा अधश्च क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता एतच्च संस्थानं पुष्पावकीर्णकानाश्रित्योक्तं तेषामेव प्रचुरत्वात् आवलिकाप्रविष्टा स्तु वृत्तत्र्यस्रचतुरस्रसंस्थानाभवन्तीति तत्रातर्वृत्ता मध्ये शुषिरमाश्रित्य वहिश्चचतुरस्राः कुड्यपरिधिमाश्रित्य यावत्करणादिदं दृश्य यदुत अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता भूतलमाश्रित्य क्षुरप्राकारा स्तद्भूतलस्य सचारिसलपादच्छेदकत्वात् अन्येत्वाहु स्तेषामधस्तनाश्चः क्षुरप्रद्वाग्रे ऽग्रे प्रतलोविस्तीर्णश्चेति क्षुरप्रसंस्थानता तथा निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खताजोइसप्पहामेयवसापूयरुहिरमसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुइवीसापरमदुब्भिगंधाकाऊअगणिवण्णाभाकक्खडफासादुरभियास इति तत्र नित्य सर्वदा अन्धकार अन्धताकारक स्वच्छलवलाहकपटलाच्छादितगगनमंडलामावास्यार्द्धरात्रांधकारव त्समस्तमिश्र येषु ते नित्यान्धकारतमसः

तेणंणिरयावासा अंतोवट्टा वाहिंचउरंसा जावअसुन्नाणिरया असुभाउणिरएसुवेयणाउ एवंसत्तविन्नाणिय

चउखूणा नरकावासा बेप्रकारना छे। एक आवलिका प्रविष्ट बीजा आवलिकावाह्य तेमांहि आवलिका प्रविष्ट ते आठ दिशिने विषेछे ते वृत्त त्र्यस्र चतुरस्र क्रमे जाणिवा। एहमाहि इन्द्रक ते वाटला सीमंतादिक अने आवलिकावाह्य ते पुष्पावकीर्ण दिशि विदिशिने अंतराले नाना संस्थान संस्थित छे। जिहांलगे महा अशुभछे नारकी वेदना भोगवेछे। एमज साते नरक पृथिवी भणवी कहिवी जे बाहुल्य पण नरकावासा परिमाण पृथिवीयें जोइये तेगाथा

जात्यन्धमेघान्धकाराऽमावास्यानिशीथतुल्याइत्यर्थः कथमित्यतआह व्यप
अथवा नित्येनान्धकारेण सार्वकालिकेनेत्यर्थः तमसस्तमिश्रा नित्यान्धकारतमसः
गता अविद्यमाना ग्रहचन्द्रसूरनक्षत्ररूपाणां ज्योतिषां ज्योतिष्कलक्षण विमानविशेषाणां ज्योतिषो वा दीपाद्यग्नेः प्रभा प्रकाशो येषु ते तथा पक्षन्ति पथ
शब्दो वाय व्याख्येयः तथा मेदो वसा पूयरुधिरमांसानि शरीरावयवा स्तेषां यच्चिक्खिल्ल कर्दम स्तेन लिप्त मुपदिग्ध मनुलेपनेन सकृल्लिप्तस्य पुनःपुनर्लेपनेन
तल भूमिका येषा न्ते मेदोवसापूयरुधिरमांसचिक्खिल्ललिप्तानुलेपनतला यद्यपिच तत्रमेदः प्रभृतीन्यौदारिकपचेंद्रियशरीरावयवरूपाणि नसन्ति वैक्रियश
रीरत्वान्नारकाणां तथापि तदाकारा स्तदवयवा स्तत्रप्रोच्यन्त इति अशुचयो मिश्राः आमगन्धयः पूतिगंधयइत्यर्थः अतएव परमदुरभिगंधाकाजअगणिवण्णा
भन्ति कृष्णाग्निर्लोहादीनां ध्यायमानानां तद्वर्णवदाभा येषान्ते कृष्णाग्निवर्णाभाः तथा कार्कशः स्पर्शो येषांते कार्कशस्पर्शा अतएव दुःखेन कृच्छ्रेणाधिसोढुं शक्यते
वेदना येषु ते दुरधिसह्याः अतएवाशुभानरकाश्च शुभानरकेषु वेदना इति एवसत्तविभागियव्वत्ति प्रथमा ममुच्चता सप्तइत्युक्तां जजासुजुज्जइत्ति यच्च [illegible]स्या स्पृथि
व्या वाहल्यस्य नरकाणाच परिमाण युज्यते स्थानान्तरोक्तानुसारेण तच्च तस्यां वाच्य तच्चेद असीतंगाहा तीसायगाहा अशीतिसहस्राधिका[illegible]जनलक्ष रत्नप्र

॥ जंजासुजुज्जइ असीयबत्तीस अठावीसंतहेववीसंच अठारससोलसगं अठुत्तरमेववाहल्लं ॥१॥ तीसा

मांहि कहेछे। पहिलोयें १ लाख ८० हजार योजन पृथिवी पिंड। बीजोये १ लाख ३२ हजार योजन पृथिवीपिंड। त्रीजिये १ लाख २८ हजार योज
न पृथिवीपिंड। चौथीये १ लाख २० हजार योजन पृथिवीपिंड। पांचमीयें १ लाख १८ हजार योजन पृथिवीपिंड। छठीये १ लाख १६ हजार योजन
पृथिवीपिंड। सातमीये १ लाख ८ हजार योजन पृथिवीपिंड। पहिलीये ३० लाख नरकावासा। बीजीये २५ लाख त्रीजीये १५ लाख। चौथीये १०

भायाम्बाहल्यमेव शेषासुभावनीय तथा त्रिशल्लचाणिप्रथमायां नरकावासाना मित्येव शेषाखपिनेयमिति आवासपरिमाणं चासुरादीना मपि दशानां सौ धर्म्मादीना च कल्पेतराणां सूत्रै वैक्ष्यतीति तन्निवासपरिमाणसग्रहः चउसट्ठीइत्यादि गाथाः पच एवचेहसूत्राभिलापोद्दृश्यः सक्करप्पभाएणंपुढवीएकेवइयंश्रोगा

यपणवीसा पन्नरसदसेवसयसहस्साइं तिणेगंपंचूणं पचेवअणुत्तरानरगा ॥ २ ॥ चउसठीअसुराणं चउ रासीइचहोइनागाणं बावत्तरिसुवन्नाणं बाउकुमाराणछन्नउइ ॥ ३ ॥ दीवदिसाउदहीणं विज्जुकुमारिंद थणियमग्गीणं छराहंपिजुवलयाणं बावत्तरिमोयराययसहस्सा ॥ ४ ॥ वत्तीसाठावीसा बारसअठचउरोसयस

लाख। पाचमीये ३ लाख। छठ्ठीयें ५ ऊणाएक लाख। सातमीये ५ नरकावासा जाणिवा ॥ २ ॥ चमरेंद्रना भवन ३४ लाख वलींद्रना ३० लाख बिहुंमि ली ६४ लाख असुरकुमारना भवन। तथा धरणेंद्रना ४४ लाख भूतानेंद्रना ४० लाख बिहुमिली ८४ लाख भवन नागकुमारना। तथा वेणुदेवना ३८ लाख वेणुदालीना ३४ लाख बिहुमिली ७२ लाख भवन सुपर्ण कुमारना। तथा वेलंबना भवन ५० लाख प्रभंजनना ४६ लाख बिहुमिली ९६ लाख वायुकुमार ना भवन। तथा पूर्णना ४० लाख विशिष्ठना ३६ लाख बिहुमिली द्वीपकुमारना ७६ लाख। एक युगल। अमितगति नां ४० लाख अमित वाहनना ३६ बिहुमिली ७६ लाख। दिसाकुमारना। बीजोयुगल। तथा जलकांतना ४० लाख जलप्रभना ३६ लाख उदधिकुमारना। त्रीजु युगल। हरि कांतना ४० लाख हरिसहना ३६ लाख बिहुंमिली ७६ लाख विद्युत कुमारना। चौथी युगल। घोषना ४० लाख महाघोषना ३६ लाख बिहुंना मिली स्तनितकुमारना ७६ लाख। पांचमो युगल। अग्निशिखनां ४० लाख अग्निमाणवनां ३६ लाख बिहुंमिली अग्निकुमारनां ७६ लाख भवन। एह छठो युग

हित्ता कैवइयानिरया पन्नत्ता गोयमा सक्करप्पभाएणं पुढवीए बत्तीसुत्तरजोयणसयसहस्स वाहल्लाए उवरिएगंजोयणसहस्स वज्जेत्ताम‌ज्झेतीसुत्तरे जोयणसयसहस्सेएत्थण सक्करप्पभाए पुढवीएनेरइयाणंपणवीसनिरयावाससयसहस्साभवतीति मक्खाया तेणनिरएइत्यादि एवंगाथानुसारेणा न्येपि पञ्चालापकावाच्या इत्येतदेवाह दोच्चाएत्यादि वेयणाओ इत्येतदन्तसुगमं नवरं गाहाहितिगाथाभिः करणभूताभिर्गाथानुसारेण त्यर्थाः भणितव्या वाच्या नरकावासाइति प्र

हस्सा पन्नाचत्तालीसा छच्चसहस्सासहस्सारे ॥ ५ ॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणच्चुएतिन्नि । सत्तविमाणसयाइं चउसुविएएसुकप्पेसु ॥ ६ ॥ एक्कारसुत्तरहे ठिमेसुसत्तुत्तरंचमज्झिमए सयमेगंउवरिमए पंचेवअणुत्तरविमाणा ॥ ७ ॥ दोच्चाएणं पुढवीए तच्चाएणं पुढवीए चउत्थीए पुढवीए पंचमीए पुढवीए छठीए पुढ

स एणी विधियें एह पूर्वोक्त छ युगलना छोत्तर लाख भवन कह्या । हिवे १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर बिमान मांहि सर्वविमान नी संख्या कहैछे । सौधर्म देवलोके ३२ लाख विमान । ईशाने २८ लाख । सनत्कुमारें १२ लाख । माहेंद्रे ८लाख । ब्रह्मदेवलोके ४ लाख । एतलालगे लाख जाणिवा । लांतके ५० हजार विमान । शुक्रे ४० हजार । सहस्रारे ६ हजार विमान । सहस्रारलगे सहस्र कहिये । आनत प्राणत नोमे दशमे देवलोके ४ से बिमान । आरण अच्युतमिली ३०० । नोमा दशमा इग्यारमा बारमा एह चिहुंदेवलोकमिली ७०० विमान । एकसोइग्यारह विमान नवग्रैवेयकमांहि हेठिलात्रिकने विषे । मध्यमत्रिकमांहि १०७ विमान । उपरिलात्रिकग्रैवेयकें एकसो । अनुत्तरविमाने पांच विमान । सर्वमिली ८४ लाख ९७ हजार उपरि २३ । बीजी शर्करप्रभा पृथिवीये त्रीजी बालुकप्रभा पृथिवीये चौथी पंकप्रभा पृथिवीये पांचमी धूमप्रभा पृथिवीये छठ्ठी तमप्रभा पृथिवीयें सातमी तमतमा पृथिवीयें

क्रम स्तया वट्टयतंसायत्ति मध्यमोद्दत्त. शेषास्त्यस्ता इति अथा सुराद्यावासविषयमभिलापं दर्शयति केवइत्यादि सुगमं नवरं तानि भवनानि वहि वृत्तानि

वीए सत्तमीए पुढवीए गाहाहिंन्नाणियव्वा सत्तमाए पुढवीए पुच्छा गोयमा सत्तमाए पुढवीए अट्ठुत्तरजोयणसयसहस्साइ वाहल्लाएउवरि अद्धतेवन्नं जोयणसहस्साइं उगाहेत्ता हेठाविअद्धतेवन्नं जोयणसहस्साइं वज्जित्ता मज्झेतिसुजोयणसहस्सेसु एत्थणं सत्तमाए पुढवीए नेरइयाणं पंचअणुत्तरा महइमहालया महानिरया पन्नत्ता तंजहा काले महाकाले रोरुए महारोरुए अप्पइठाणेनामं पंचमे तेणंनिरया वट्टाय तंसा

एह सात नरकपृथिवीना नरकावासानी सख्या पिछाडी गाथामांहि कहीछे तिम कहिवी। सातमी नरकपृथिवीनो स्वरूप पूछेछे भगवंतआगलि। भगवत कहेछे। हेगौतम सातमो पृथिवीने विषे एकलाख अठुत्तर हजार योजन जाडपणे तेमाहि उपरि अर्द्धत्रेपनहजार योजन एतले साढा वावन सहस्र योजन अवगाहीने ऊपर मूकीने वली हेठे पणि साढात्रेपन हजार योजन वर्जी ने मध्ये विचाले त्रिण हजार योजनने विषे एक पाथडो इहां सातमी तमतमा पृथिवीये नारकीना पाच अनुत्तर कहतां ते उतरे आगले एहवा वीजा नरकावासा नथी तेमाटे अनुत्तर घणाज घणा मोटा महा नरकावासा कह्या तेकहे छे। पूर्वदिशि काल १ दक्षिणे महाकाल २ पश्चिमे रुचक ३ उत्तरे महारुचक ४ पांचमो विचे अप्रतिष्ठान ५ तेह नरकावासा वाटला त्र्यस त्रिखूणिया एतले पाच नरकावासामांहो अपइठाण ते वाटलो अने चिहुंदिशिना कालादिकना ४ त्रिखूणिया वलीकेहवाछे अहेत्ति हेठे खुरप्र एतले छरपलाने सस्थाने सस्थितछे। यावत् शब्दे चन्द्र सूर्य रहित कर्दमभूत अशुभ घणो भूंडो नरक छे । तथा अशुभ घणी भूडी छे नरकानें विषे वेदना। वली

वृत्तप्राकारावृतनगरवत् अन्तः समचतुरस्राणि तदवकाशादेतस्य चतुरस्रत्वात् अधः पुष्करकर्णिकासंस्थानसंस्थितानि पुष्करकर्णिकापद्ममध्यभागः साचोन्नत समचित्रविन्दुकिनीभवतीति तथा उत्कीर्णान्तरविपुलगम्भीर खातपरिखानि उत्कीर्णं भुवनमुत्कीर्यं पालीरूप कृतमन्तरमतराल ययोस्ते उत्कीर्णान्तरे ते वि

य अहेखुरुप्पसंठाणसंठिया जावअसुन्नानरगा । असुन्नाजं वेयणाजं केवइयाणन्नंते असुरकुमारावासा प० गोयमा इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं ओगाहेत्ता अठहत्तरिजोयणसहस्से एत्थणं रयणप्पन्नाए पुढवीए चउराठिं असुरकुमारावास सयसहस्सा प० तेणन्नवणावाहिवट्टा अंतो चउरसा अहो पोक्खरकन्निआ संठाणसंठिया उक्किन्नंतर विउलगंन्नीरखाय

गौतम पूछे छे । हेभगवत केतला असुर कुमार भवनपतिना आवास कह्या । अनेकिहाछे । भगवत कहेछे । हेगौतम । एणीयें रत्नप्रभा पहिली पृथिवी ये ८० हजार उत्तर आगलि १ लाख योजन जाडपणनी छेहडो तेमांहि उपरि १ हजार लगे अवगाहीने वली हेठेंपिण १ हजार योजन लगे वर्जी ने मध्येविचाले ७८ हजार योजन अधिक १ लाख योजनने विषे इहां रत्नप्रभा पृथिवीने विषे ६४ असुरकुमारना शत सहस्र एतले ६४ लाख भवनावास कह्या । ते भवन पतिना भवन घर बाहिर वाटला अतो घरमाहि चोरस । चोखूणिया हेठें पुष्करकर्णिका कमलमांहिली कर्णिका डोडो तेहने संस्थाने संस्थितछे। उत्कीर्ण पालीरूप कीधी छे अतराल जेहनी ते उत्कीर्णांतर एहवी विपुल बिस्तीर्ण गंभीर ऊडी खात परिखा खाईछे जेह भवन ने उपरि बिशाल हेठें सकुचित ते विहूंने अतलगे बिचे पाछिले एहभाव। अट्टालक गढ उपरि आश्रयबिशेष चरिका नगर अने गढने बिचाले ८ ।

पुलगम्भीरे खातपरिखे येषां तानि तत्र खातमधउपरिच सम ऋारिखाउपरि विशाला अधः संकुचिता तयोरन्तरेषु पालीअस्तीतिभावः तथा अट्टालकाः प्राकारस्थो पर्याश्रयविशेषाः चरिकानगरप्राकारयोरतर मष्टहस्तोमार्गः पाठान्तरेण चतुरयन्ति चतुरकाः सभाविशेषाः ग्रामप्रसिद्धाः दारगोउरत्ति गोपुरद्वाराणि प्रतोल्यो नगरस्येव कपाटानि प्रतीतानि तोरणान्यपि तथैव प्रतिद्वाराणि अवांतरद्वाराणि तत एतेषां द्वंद्व एतानि देशलक्षणेषु भागेषु येषातानि तथा इह देशोभागस्थानेकार्थ स्ततोन्योन्यमनयो र्विशेष्यविशेषणभावो द्रष्टव्यतइति तथा यन्त्राणि पाषाणक्षेपणयन्त्राणि मुशलानि प्रतीतानि भुसुण्डयः प्रहरणविशेषाः शतघ्यः शतानामुपघातकारिण्यो महाकायाः काष्टशैलस्तम्भयष्टयः ताभिः परियारियत्ति परिवारितानि परिकरितानीत्यर्थः तथा अयोधानि योधयितु संग्राममयितुं दुर्गतत्वान्नशक्यते परबलै र्यानि तान्ययोधानि अविद्यमानावायोधाः परबलसुभटानि यानि प्रति तान्ययोधानि तथा अडयालकोठ्ठगरइय

फलिहा अट्टालयचरियदारगोउरकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतमुसलमुसंढिसयग्घिपरिवारिया अउज्झा अडयालकोठरइया अडयालकयवणमाला लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपचंगु

हाथनो मार्ग गोपुरद्वार तेप्रतोली नगरी तेहना कमाड तेह आगलो तोरणछे तिमज प्रसिद्ध द्वार माहिला द्वार एतला देशभागने विषे यथायोग्य स्थान कहेछे जेहने तथा यंत्रतेपाषाणनाखवाना तथा मुशल प्रसिद्ध भुसडि तेप्रहरणविशेष तथा शतघ्नी ते सोमाणसनेमारे एहवीमोटी काष्टनो तथा पाषाणस्तम्भरूप लाठी तेणे करी परिवारित सहितछे जेहने एहवा । अयोध्या पर कटके जूझ्या नजाय न भागे एहवा ४८ कोठा बुरज तेणे करी रचित छे । तथा अडतालीस कोधाछे वनमाल तथा अडयालकड्ढिये शोभायमानछे वनमाला पल्लवनीमाला जेहनेविषे जेहघरनीभूमि छाणेकरी लीपी ऊपरिलो

त्ति अष्टचत्वारिंशद्भेदभिन्नविचित्रछन्दो गोपुररचितानि अन्येभणन्ति अडयालशब्दः किलप्रशंसावाचक. तथा अडयालकयवसमालत्ति अष्टचत्वारिंशद्भेदभिन्ना प्रशसार्हा:कृता वनमाला वनस्पतिपल्लवस्रजो येषु तानि तथालाइयति यद्भूमेश्छगणादिनोपलेपन उल्लोइयति कुड्यमालानां सेटिकादिभिः सन्मृष्टीकरण ततस्ताभ्यामिव महितानि पूजितानि लाउल्लोइयमहितानि तथा गोशीर्ष चन्दनविशेषः सरसञ्च रसोपेत यद्रक्तचन्दन चन्दनविशेषः ताभ्यां दर्दराभ्यां घनाभ्या दत्ताः पञ्चाङ्गुलय स्तला हस्तकाः कुड्येषु येषु अथवा गोशीर्षसरसस्य रक्तचन्दनस्य सत्का दर्दरेण चपेटाभिघातेन दर्दरेषु वा सोपानवीथीषु दत्ताः पञ्चाङ्गुलयस्तला येषु तानि गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपचाङ्गुलितलानि तथा कालागुरुःकृष्णागुरु गैन्धद्रव्यविशेषः प्रवरः प्रधानः कुंदुरुक्क चीडा तुरुष्कः सिल्हक गन्धद्रव्यमेव एतानिच तानि डज्झतित्ति दह्यमानानि चेतिविग्रहः तेषा योधूमो मघमघेतत्ति अनुकरणशब्दोय मघमघायमानो वहलगधइत्यर्थः तेनोद्धुराणि उत्कटानि तानि तथा तानिच तान्यभिरामाणि रमणीयानीतिसमासः तथा सुगन्धयः सुरभयो ये वरगन्धाः प्रधानवासा स्तेषा गन्ध आमोदो येष्वस्ति तानि सुगन्धिवरगधिकानि तथा गंधवर्त्ति गैन्धद्रव्याणां गधयुक्तिशास्त्रोपदेशेन निवर्त्तित गुटिका तद्भूतानि तत्कल्पानीति गधवृत्तिभूतानि प्रव

लितला कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कडज्झंतधूवमघमघेंतगधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया

भाग खडोयें करी धोल्यो तेणेकरी महित पूजितछे जेह । गोशीर्षचदनविशेष रक्तचदन तेविहु दर्दर निविडपणे दीधाछे पचागुलितला हाथा भीतिने विषे हाथा दीधा छे । कृष्णागरु प्रवर प्रधान चीड तुरुक्कसिल्हारस एह पूर्वोक्त डज्झत दह्यमान दाझता तेहनो जे धूप मघमघायमान बहुल गध तेणे करी उत्कृष्ट अने अभिराम रमणीय एहवा जाणिवा। तथा सुगधत्ति सुगंध सुरभि वर प्रधान गध तेणेकरी गधित छे गधवत छे तथा गधनी वाती तेह समान

रगधगुणानीत्यर्थः तथा अच्छानिआकाशस्फटिकवत् सण्हत्ति श्लक्ष्णानि सूक्ष्मस्कन्धदलनिष्पन्नत्वात् श्लक्ष्णदलनिष्पन्नपटवत् लण्हत्ति मसृणानीत्यर्थः घुटितपटव त् घट्ठत्ति घृष्टानीवघृष्टानि खरशाणयापाषाणप्रतिमावत् मट्ठत्ति मृष्टानीवमृष्टानि सुकुमारशाणयापाषाणप्रतिमेव शोधितानिवा प्रमार्जनिकयेव अतएव नीरयत्ति नीरजांसि रजोरहितत्वात् निम्मलत्ति निर्मलानि कठिनमलाभावात् वितिमिराणि निरन्धकारत्वात् विशुद्धत्ति विशुद्धानि निष्कलङ्कत्वा न्नचन्द्रव त् सकलंकानीत्यर्थः तथा सप्पहत्ति सप्रभाणि सप्रभावाणि अथवा स्वेनात्मना प्रभान्ति शोभन्ते प्रकाशन्ते चेति स्वप्रभाणि यतः समरीयत्ति समरीचीनि स किरणानि अतएव सउज्जोयति सहद्योतेन वस्त्वन्तरप्रकाशनेन वर्त्ततइति सोद्योतानि पासाईयत्ति प्रासादीयानि मनःप्रसत्तिकाराणि दरिसणिज्जत्ति दर्शनीयानि तानिहि पश्य चक्षुषा नश्रमङ्गच्छतीतिभाव. अभिरूवत्ति अभिरूपाणि कमनीयानि पडिरूवत्ति प्रतिरूपाणि द्रष्टारंप्रति रमणीयानि नैकस्य कस्यचिदेवेत्यर्थः एवमित्यादि यथा सुरकुमारावाससूत्रे तत्परिमाणमभिहित मेवामेवमिति यथायन्नवनादिपरिमाण यस्य नागकुमारादिनिकायस्य क्रमते

अच्छा सण्हा लण्हा घठा मठा नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सप्पभा समरीया सउज्जोया पासा

छे अच्छआकाशनीपरें स्फटिकनीपरें। श्लक्ष्ण सूक्ष्म पुद्गलें करी नीपनो छे। लण्हत्ति सुकुमाल कोमल छे घूंट्या वस्त्रनी परें। घठ्ठत्ति खरशाणेंकरी पाषाणप्रतिमानीपरें घस्याछे। मठ्ठत्ति कोमलसुकुमालशाणेंकरी पाषाणप्रतिमानी परें मठाराछे एणे कारणे नीरज रजरहित निर्म्मल मलरहितछे। वितिमिरा अंधकार रहित छे। निष्कलंकछे। प्रभाकांति तेणे सहितछे। श्रीशोभा तेणेकरी सहितछे। उद्योत प्रकाश सहितछे। मनने प्रसाद करे तेमाटे देखवायोग्यछे। कमनीयछे देखणहारप्रते रमणीकछे। एमज जेहनो जे जे मान प्रमाण मनोहरपणो असुरकुमार सूत्रने विषे कह्योछे। जे जे भाव गाथायें भण्यो ते

घटते तत्तस्य वाच्यमिति किंविधं तत्परिमाणमतआह जंजंगाहाहिं भणियं यद्यत्गाथाभिः चउसठिअसुराणमित्यादिकाभि रभिहितं किम्परिमाणमेव तथावाच्यतहेत्याह तहचेववणओत्ति यथाअसुरकुमारभवनानांवर्णकउक्त स्तथा सर्वेषामसौवाच्यइति तथाहि केवइयाणंभंते नागकुमारावासापन्नत्ता गोय मा इमीसेणंरयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सपमाणाएउप्पिं एगजोयणसहस्सं ओगाहेत्ताहेठा चेगजोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झेअठहत्तरे जोय

ईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एवंजंजस्सकमातीतं तस्स जं जं गाहाहिं भणियं तहचेववणओ केवइयाणं भंते पुढविकाइयावासा प० गोयमा असखेज्जा पुढविकाइयावासा प० एवंजाव मणुस्सत्ति के वइयाणं भंते वाणमंतरावासा प० गोयमा इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयण सहस्स वाहल्लस्स उवरिएगंजोयणसयं ओगाहेत्ता हेठाचेगंजोयणसयवज्जेत्ता मज्झे अठसुजोयणसएसु एत्थ

तिमज वर्णनकरिवो। नागकुमारादिनो पणि तिमज वर्णनकरिवो। वली गौतम पूछेछे हेपूज्य केतला पृथिवीकायिकावासा कह्या पृथिवी रहिवानाठाम भगवत कहेछे हेगौतम। असख्याता पृथिवीकायिकावासा छे। एमज पाणी अग्नि वायु रहिवाना ठाम असख्याताछे। एमज बेइन्द्रिय तेरिन्द्रिय चौरि न्द्रिय तिर्यचपचेन्द्रिय असंख्याता कहिवा मनुष्यना ठाम असख्याता कहिवा एतले गर्भज मनुष्यसख्याता कहिवा। अने समूर्च्छिम मनुष्य असख्याता क हिवा। वली पूछेछे केतला हेपूज्य वानमतरावासा व्यंतरनारहिवानाठाम। भगवंत कहेछे। हेगौतम एणीये रत्नप्रभापृथिवीये त्रिणकांडछे तेमांहि पहि लो १६ सहस्र योजन कांड तेमांहि पहिलो १ सहस्र योजन रत्नकाडछे तेह रत्न कांडनो योजन सहस्रनो वाहुल्यपणो तेहने विषे उपर एकसोयोजन

णसहस्से एत्थण रयणप्पभाएचुलसीइनागकुमारावाससयसहस्सा पणत्ता तेणंभवणाइत्यादीनि केवइयाणंभंते पुढवीत्यादि गतार्थं नवरं मनुष्याणां गर्भव्यु
त्क्रान्तिकानां असंख्यातानामभावात् संख्याताएवावासाः संमूर्च्छिमानांत्वसंख्येयत्वेन प्रतिशरीरमावास भावादसंख्याता इति भावनीयमिति केवइयाणं

णं वाणमंतराणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा प० तेणंभोमेज्जानगरा बाहिंवट्टा अंतोचउरंसा एवंजहाभवणवासीणं तहेवणेयव्वा णवर पडागमालाउला सुरम्मापासाईया दरिसणिज्जा अभि रूवा पडिरूवा । केवइयाणंभंते जोइसियाण विमाणावासा प० । गोयमा इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवी ए बहुसमरमणिज्जाउ भूमिभागाउ सत्तनउयाइं जोयणसयाइं उड्ढ उप्पइत्ता एत्थणं दसुत्तरजोयणसउ बा हल्ले तिरियं जोइसविसए जोइसियाणं देवाणं असंखेज्जा जोइसियविमाणावासा प० तेणं जोइसियविमाणा

वर्जी ने पछे वली हेठे पिण एकसो योजन मूकीने मध्ये विचे आठसे योजन जगह्या इहा वाणव्यंतर देवना तिरिछा लोक मांहि असंख्यात भूमि सबंधी नगरना आवासना लाख कह्या । ते भौमेय नगरवासा बाहिर बाटला मांहि चउरंसा चौखूणा । एमज जिम भवनपतिना घर वर्णव्या तिमइहा पणि नवर एतलोविशेष तेकिसो पताका विजय वैजयती तेहनी माला तेणेकरी आकुल व्याप्त छे । वली सुरम्म रमणीकछे । देखवायोग्यछे । वली गौतम पूछेछे । केतलाएक हेपूज्य जोतिषीना विमानावासा कह्या । हेगौतम एणीये रत्नप्रभा पहिली पृथिवीनो घणोज सम रमणीक भूमिभाग तेहथकी सातसेनेउयोजन लगी ऊंचो उत्पतीने जईने इहां १० योजनना बाहुल्यपणां माहि एतला आकाश प्रदेशना ऊंचपणामांहि जोतिषीनो विषयव्याप्योछे

भतेजोइसियाणंविमाणावासाइत्यादि अभुगयमुसियपहसियत्ति अभ्युद्गता सञ्जाता उत्सृता प्रबलतया सर्वासु दिक्षु प्रसृता या प्रभा दीप्ति स्तया सिताः शुक्ला इत्यभ्युद्गतोत्सृतप्रभासिताः तथा विविधा अनेकप्रकारा मणय चन्द्रकान्तादयो रत्नानि कर्केतनादीनि तेषाम्भक्तयो विच्छित्तिविशेषा स्ताभि श्चित्राश्चि त्रवन्तः आश्चर्यवन्तोवेति विविधमणिरत्नभक्तिचित्राः तथा वातोद्भूता वातकम्पिता विजयो भ्युदयस्तस्य सूचिता वैजयन्तीत्यभिधाना याः पताका अथवा वि जयाइति वैजयन्तीनाम्पार्श्वकर्णिकाउच्यन्ते तत्प्रधानायावैजयन्त्य स्ताश्च त द्वर्जिताः पताकाश्च छत्रातिच्छत्राणिच उपर्युपरिस्थितातपत्राणि तैः कलिता युक्ता वातोद्धूतविजयवैजयन्तीपताकाछत्रातिछत्रकलिता इति तुगा उच्चैस्त्वगुणयुक्ता अतएव गगनतलमणुलिहंतसिहरति गगनतल मम्बरमनुलिखदभिलंघयच्छि

वासा अब्भुग्गयमुसियपहसिया विविहमणिरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुयविजयवेजयंतीपडागछत्ताइछत्तकलि

सगला हेठे तारा सगला उपरि शनैश्चर भूमिथकी ७०० नेउयोजन तारामडलछे तेहथी १० योजने सूर्य ते उपरि ८० योजने चद्रमा ते उपरि ४ योजन नक्षत्र ते उपरि ४ योजन बुध ते उपरि ३ योजन शुक्र ते उपरि ३ योजन बृहस्पति ते उपरि ३ योजन मगल ते उपरि ३ योजन शनैश्चर छे । तारा मडलथकी शनैश्चर १०० योजन माहि सर्व जोतिषीछे । ज्योतिषीना देवता असख्याता ज्योतिषीना विमानावासाकह्या । तेह जोतिषीना विमानावासा केहवाछे । अभ्युद्गत कहतां उपना चिहुंदिशि प्रसरी पहत्ति एहवी प्रभा दीप्ति तेणेकरी शुक्ल उजला जेहनो एहवा । अनेक प्रकारनी मणि चंद्रकातादि क रत्नते कर्केतनादिक तेहनी भक्ति भाति तेणेकरी चित्रा चित्रवत छे । वली केहवा आश्चर्यवत छे । वायरें कपावी विजय वैजयती पताका ने उपरि छत्र तेणे करीने कलितछे । एतावता व्याप्तछे । वली केहवाछे । अति उंचाछे गगनतल आकाश तेहने उलघताछे शिखर जेहना । घरनी भींतिने विषे जा

खरं येषान्ते गगनतलाऽनुलिखच्छिखराः तथा जालान्तरेषु जालकमध्यभागेषु रत्नानियेषान्ते जालान्तररत्नाः इह प्रथमाबहुवचनलोपो द्रष्टव्यः जालकानि च भवनभित्तिषु लोकेप्रतीतान्येव तदन्तरेषुच शोभार्थं रत्नानि सम्भवत्येवेति तथा पञ्जरोन्मीलिताइव पञ्जरबहिःकृताइव यथा किलकिञ्चिद्वस्तुपञ्जरा द्वशादिमयप्रच्छादनविशेषाद्बहिःकृतमत्यतमविनष्टच्छायत्वा च्छोभते एवन्तेपीतिभावः तथा मणिकनकानां सम्बन्धिनी स्तूपिकाशिखरं येषां तेमणिकनकस्तूपिकाका स्तथा विकसितानियानि शतपत्रपुण्डरीकाणि द्वारादौ प्रतिकृतित्वेन तिलकाश्च भित्त्यादिषु पुण्ड्राणि रत्नमयाश्चये अर्द्धचन्द्राद्वाराग्रादिषु तैश्चित्रायेते विकसितशतपत्रपुण्डरीकतिलकरत्नार्द्धचन्द्रचित्रा स्तथा अन्तर्बहिश्च श्लक्ष्णा मसृणाइत्यर्थः तथा तपनीय सुवर्णविशेष स्तन्मय्या वालुकायाः शिकतायाः प्रस्तटः प्रतरोयेषु तेतपनीयवालुकाप्रस्तटाः पाठान्तरे तु सर्वहशब्दस्य वालुकाविशेषणत्वात् श्लक्ष्णतपनीयवालुकाप्रस्तटा इतिव्याख्येय तथा सुखस्पर्शा शुभस्पर्शा

या तुंगा गगणतलमणुलिहंतसिहरा जालंतररयणपंजरुम्मिलियव्वमणिकणगथूभियागा वियसियसयवत्त पुंडरीयतिलयरयणद्धचंदचित्ता अंतोवाहिंचसण्हा तवणिज्जवालुयापत्थडा सुहफासा सस्सिरीया पासाईया

लियां तेहना आतराने विषे शोभाने अर्थे रत्नकर्केतनादिक छे। पांजराथकी उन्मीलित बाहिर कीधा जेहवा तेजपुंजहुए तेहवा मणिरत्न सुवर्ण तेहनी थूभिका शिखर छे जेहना। वली केहवाछे विकसित जे शतपत्र कमल पुंडरीक छे द्वार देशने विषे। तथा भींतिने विषे तिलक छे। तथा रत्नमय अर्द्धचंद्र द्वारविभागें छे तेणेंकरी चित्रित छे। अंतो घरमाहि तथा बाहिर श्लक्ष्ण सुकुमाल छे। तपनीयं सुवर्ण विशेष तेहनी वालुका तेह पाथरीछे जेहने विषे। वली केहवाछे। सुखस्पर्श सुकुमाल फरसछे। शोभायमानछे। रूप मनुष्य युग्मादिकना जिहां। वली केहवाछे। चित्तने प्रसन्नकरे वली देखिवा योग्यछे।

वा तथा सश्रीक सश्रोभरूपमाकारोयेषां अथवा सश्रीकाणि शोभावन्ति रूपाणि नरयुग्मादीनि रूपकाणि येषुते सश्रीकरूपाः प्रासादीया दर्शनीयाः अभि रूपाः प्रतिरूपाइतिपूर्ववत् केवइएत्यादि रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणिज्जाश्रोभूमिभागाश्रोत्तिबहुसमरमणीयस्यभूमिभागस्य ऊर्द्ध उपरि तथा चन्द्रमः सूर्यग्रहगणनचत्रताराराणि यामित्यलकारे वीइवइत्तत्ति व्यतिव्रज्य व्यतिक्रम्येत्यर्थः ताराराणि चेह तारका एवेति तथा बह्वनीत्यादि किमित्याह ऊर्द्ध सुपरि दूरमत्यर्थव्यतिव्रज्य चतुरशीति विमानलचाणि भवतीति सबध इति मक्खायत्ति इति एवप्रकारा अथवा यतो भवंति तत गाश्राता:

दरिसणिज्जा केवइयाणंभंतेवेमाणियावासा प० । गोयमा इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीएवज्ञसमरमणिज्जाउ भूमिभागाउ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवाणं वीइवइत्ता बहूणिजोयणाणि बहूणिजोयणसयाणि बहूणि जोयणसहस्साणि बहूणिजोयण सयसहस्साणि जोयणकोडीउ जोयणकोडाकोडीउ असंखेज्जाउ जोयणकोडाकोडिउ उड्ढं दूरं वीइवइत्ता एत्थण वेमाणियाणं देवाणं सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलंतग

वली गौतम पूछेछे । केतला हेपूज्य वैमानिकावासा वेमानिक देवताना विमल निर्मल विमानरूप आवासा कह्या । हेगौतम एणीये रत्न प्रभा पहिली पृ थिवीनो वली घणोसम रमणीक भूमिभाग थकीऊंचो चद्रमा सूर्य ग्रहगण नक्षत्र ताराराूपने व्यतिक्रमीने घणांयोजन घणांयोजननासेंकडा घणायोजन नाहजार घणांयोजननांलाख घणांयोजननीकोडी घणीयोजननीकोडाकोडी असंख्यातायोजननीकोडाकोडीने ऊपरि दूरें उल्लंघीने इहां वैमानिकदेवतासौ धर्म ईशान २ लगडाकार बराबरिछे । तेऊपरि सनत्कुमार माहेंद्र बराबरिछे । तेउपरि ब्रह्म देवलोक । ते ऊपरि लांतक । तेऊपर शुक्र । ते ऊपर सह

सर्ववेदिनेति तेणति तानिविमानानि णमिति वाक्यालंकारे अच्चिमालिप्पभत्ति अर्चिमाली आदित्य स्तद्वत्प्रभांति शोभंते यानि तान्यर्चिमालिप्रभाणि तथा भासानां प्रकाशाना राशि र्भासराशि रादित्य स्तस्य वर्ण स्तद्वदाभा छाया वर्णो येषां तानि भासराशिवर्णाभानि तथा अरयत्ति अरजांसि स्वाभाविकरजोरहितत्वात् नीरयत्ति नीरजासि आगंतुकरजोविरहात् निम्मलत्ति निर्मलानि कक्खडमलाभावात् वितिमिरत्ति वितिमिराणि अप्रहार्यान्धकाररहितत्वात् विशुद्धानि स्वाभाविकतमोविरहा त्सकलदोषविरामाद्वा सर्वरत्नमयानि वज्रावैदिरत्नमयानीत्यर्थः अच्छान्याकाशस्फाटिकवत् श्लक्ष्णानि

सुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुएसु गेवेज्जगमणुत्तरेसुय चउरासीइं विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउइचसहस्सा तेवीसंचविमाणाभवंतीतिमक्खाया। तेणविमाणा अच्चिमालिप्पभा भासरासिवण्णाभा अरया नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सव्वरयणामया अच्छासण्हा लण्हा घठा मठा णिप्पंका णिक्कंकडच्छा

सार। तेऊपर आनत प्राणत लगडाकारेछे। तेऊपर आरण अच्युत। एवं १२ देवलोक थया। ते ऊपर ९ ग्रैवेयक ऊपरां ऊपर ५ अनुत्तर विमान। ए वो प्रतरें चिहुपासे ४ विजयादिक विमान विचे सर्वार्थसिद्ध। एवं १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान मिलीने सगला ८४ लाख ९७ हजार २३ विमानछे ते भगवंते कह्याछे। तेविमानकेहवाछे। अर्चिमाली सूर्यनो सरीखो प्रभाछे जेहनो। प्रकाश दीप्तिराशि सरीखो वर्णछे जेहनो। स्वाभाविक रजना अभावथी रज रहितछे। कठिन मलना अभावथी निर्मलछे। अंधकार रहितछे। स्वाभाविक अंधकार रहितपणाथी विशुद्धछे। वली सर्वरत्न मयीछे। आकाशनी परें अच्छछे। स्फटिकरत्ननी परें श्लक्ष्ण पुद्गलथी नीपनांछे। सुकुमाल कीधाछे। खरशाणें करी पाषाण प्रतिमानी परे घठासाछे। सकु

सूक्ष्मस्कधमयत्वात् घृष्टानीवघृष्टानि खरशाणया पाषाणप्रतिमेव मृष्टानीवमृष्टानि सुकुमारशाणया पाषाणप्रतिमेवेति निःपकानि कलंकविकलत्वात् कर्द्दमविशेषरहितत्वा द्वा । निष्कंकटा निःकवचा निरावरणा निरूपघातेत्यर्थः । छाया दीप्ति येषां तानि निष्ककटछायानि सप्रभाणि प्रभावंति समरीचीनि सकिरणानीत्यर्थः सोद्योतानि वस्तुतरप्रकाशनकारीणीत्यर्थः. पासाइएत्यादिप्राग्वत् सोहम्मेणंभंते कप्पेकेवइयाविमाणावासापन्नत्ता गोयमा बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता एवमीशानादिष्वपि द्रष्टव्य एतदेवाह एवईसाणाइसुत्ति एव गाहाहि भाणियव्वत्ति बत्तीसअट्ठवीसा इत्यादिकाभिः पूर्वोक्तगाथाभि स्तदनुसारेणेत्यर्थः प्रतिकल्प भिन्नपरिमाणाविमानावासा भणितव्या स्तदर्शकसूत्राच्चो जावतेणविमाणेत्यादि यावत्पडिरूवा न ॥

या सप्पभा सस्सिरीया उज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । सोहम्मेणंभंतेकप्पे केवइया विमाणावासा प० । गोयमा बत्तीसविमाणावाससयसहस्सा प० । एवईसाणाइसुअट्ठावीस वारस अट्ठ चत्तारि एयाइं सयसहस्साइं पन्नास चत्तालीसं छसहस्साइं चत्तारिसयाइं तिन्निसयाइं गाहाहिंनाणि

मार शाणेंकरी पाषाण प्रतिमानी परे घस्याछे । कलक रहित छे । वली आवरण रहित जेहनी छाया दीप्तिछे । प्रभा सहितछे शोभायमानछे । उद्योत सहितछे । वली समीप रही वस्तुने प्रकाशे चित्तने प्रसन्न करे एहवाछे । वली गौतमपूछेछें । हेभदंत सौधर्म पहिले देवलोके केतला विमानावास विमानलचण घर कह्या । हेगौतम । बत्तीसलाख विमानावासा कह्या । एम ईशाने अठ्ठावीस लाख । सनत्कुमारे १२ लाख माहेंद्रे ८ लाख । ब्रह्मे ४ लाख । लांतके ५० हजार । शुक्रे ४० हजार । सहस्रारे ६ हजार । आनत प्रानत मिली ४०० । आरण अच्युत मिली ३०० विमान । एह सेकडां जिम प

वर नभिनापभेदोय यथा ईसाणेणंभते कप्पे केवइयाविमाणावासापणत्ता गोयमा अठावीस विमाणावास सयसहस्सा पणत्ता तेणविमाणा जावपडिरूवा एव सर्वं पूर्वोक्तगाथानुसारेण प्रज्ञापना द्वितीयपदानुसारेण च वाच्यमिति अनतरं नारकादिजीवानां स्थानान्युक्ता न्यथ तेषामेव स्थिति सुपदर्शयितु माह नेरइयाणभतेइत्यादि सुगम नवरं स्थिति र्नारकादिपर्यायेण जीवानामवस्थानकाल' अपज्जत्तयाणंति नारका: किल लब्धित: पर्याप्तका एव भवति करणतस्तू पपातकाले अन्तर्मुहूर्त्तं यावदपर्याप्ता भवन्ति तत: पर्याप्तका स्ततएषा मपर्याप्तकालेन स्थिति र्जघन्यतो प्युत्कर्षतोपिचा तर्मुहूर्त्तमेव पर्याप्तका ना मुनरौघिक्वैव जघन्योत्कृष्टा चान्तर्मुहूर्त्तोनाभवतीति अन चेहपर्याप्तकापर्याप्तकविभाग: नारयदेवातिरिमणुय गब्भयाजेअसखेज्जवासाऊ एतेउअप्पज्ज त्ता उववाए चेवबोधव्वा। सेसायतिरियमणुया लद्धिपप्पोववायकालेय। दुहओवियभइयव्वा पज्जत्तियरेयजिणवयणंति। उक्ता सामान्यतो नारकस्थिति विशेष त स्तामभिधातु मिदमाह इमीसेणमित्यादि स्थितिप्रकरणञ्च सर्वंप्रज्ञापनापसिद्ध मित्यतिदिशन्नाह एवमिति यथाप्रज्ञापनायां सामान्यपर्याप्तकापर्याप्तक लक्षणेन गमत्रयेण नारकाणा नारकविशेषाणां तिर्यगादिकानाञ्च स्थितिरुक्ता एवमिहापिवाच्या कियद्दूर यावदित्याह जावविजयेत्यादि अनुत्तरसुराणा मौधिकपर्याप्तापर्याप्तकलक्षण गमत्रय यावदित्यर्थ: इहचैव मतिदिष्टसूत्राण्यर्थतो वाच्यानि रत्नप्रभानारकाणा भदन्तकियतीतिस्थिति र्गौतम जघन्येन दश

यह्। नेरइयाणं भंते केवइयंकालं ठिई पन्नत्ता। गोयमा जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणंतेत्तीसं

हिले गाथामांहि कहि आयाछे तिम कहिवो। हिवे २४ दण्डकने विषे जेजीव तेहना आउखानो स्वरूप पूछेछे। हेपूज्य नारकीनी केतला काल लगी स्थिति आउखो कह्यो। हे गौतम सर्वथापि थोडीतो १० हजार वर्षनी स्थिति कही। पहिली नरकनो अपेक्षायें उत्कृष्टीस्थिति तेत्रीस सागरोपमलगे क

वर्षसहस्राणि उत्कर्षतः सागरोपमं १ अपर्याप्तकरत्नप्रभापृथिवीनारकाणा भदन्त कियन्त काल स्थितिः प्रज्ञप्ता गौतमो भयथापि अन्तर्मुहूर्त्तमेव स्पर्याप्तकानां सामान्योक्त्यैवातर्मुहूर्त्तोनावाच्यैवशेषपृथिवीनारकाणा प्रत्येकदशाना मसुरादीना पृथिवीकायिकानां तिरश्चा ङ्गर्भजेतरभेदानां मनुष्याणां व्यन्तराणा मष्टविधानां ज्योतिष्काणा म्पञ्चप्रकाराणा सौधर्मादीनां वैमानिकाना ञ्च गमत्रय म्वाच्यं इहच विजयादिषु जघन्यतो द्वात्रिंशत्सागरोपमान्युक्तानि गन्धह

सागरोवमाइं ठिई प० । अपज्जत्तगाणं नेरइयाणं भंते केवइयंकालं ठिई प० । जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त । पज्जत्तगाण जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमाइ अंतोमुहुत्तूणाइं इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए एवजावविजयवेजयंतजयंतअपराजियाणं देवाणं

हो । पणि ३३ सातमीनी अपेक्षायी । वली पूछेछे । हेपूज्य अपर्याप्तावस्थायें केतला काल लगे स्थिति कही । हेगौतम जघन्यपणे अंतर्मुहूर्त्त उत्कष्टपणे पणि अतर्मुहूर्त्त । पछे पर्याप्ता होय । पर्याप्ता नारकीनी हेपूज्य केतला काललगे स्थिति हेगौतम पर्याप्तानी जघन्यपणे १० हजार वर्षनी पहिली नरकनी अपेक्षाये अतर्मुहूर्त्त ऊंणी । उत्कष्टी सातमीये अंतर्मुहूर्त्तऊंणी तेत्रीस सागरोपमनी । अंतर्मुहूर्त्त अपर्याप्तावस्थानी ऊंणी जाणिवी । हे पूज्य एणीयें रत्नप्रभा पृथिवीये जघन्य आऊखो केतलो हेगौतम जघन्यतो १० हजार वर्षनो उत्कष्टो १ सागरोपम । एम ५ थावर ३ विकलेंद्री मनुष्य तिर्यंच भवनपती व्यतर ज्योतिषी १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक लगे जघन्य उत्कष्टो आऊखो ग्रथांतरथकी कहिवो । अनुत्तर विमान पूछेछे । हे भगवंत विजय वैजयंत जयत अपराजित विमाने केतली देवतानी स्थिति कही । गौतम जघन्यपणें ३२ सागरोपम उत्कष्टपणें ३३ सागरोपमनी कही । ५ मेसर्वार्थ सिद्ध विमाने

स्यादिष्वपि तथैवद्रक्ष्यते प्रज्ञापनायांत्वे कत्रिंशदुक्तेति मतान्तरमिदं पर्याप्तकापर्याप्तकगमद्वय मिह समूह्यमेवं सर्वार्थसिद्धिस्थितिरपि त्रिभिर्गमै र्वाच्येति अ नन्तर नारकादिजीवानां स्थितिरुक्ते दानींतच्छरीराणा मवगाहनाप्रतिपादनायाह कइयाणंभंतेइत्यादि कण्ठ्य नवर मेकेन्द्रियौदारिकशरीरमित्यादौ याव त्करणा द्विविचतुःपञ्चेन्द्रियौदारिकशरीराणि पृथिव्याद्येकेंद्रियजलचरादिपञ्चेद्रियभेदेन प्रावप्रदर्शितजीवराशिक्रमेण वाच्यानि कियदूरमित्यादि गब्भवक्कतिइ

केवइयंकालं ठिई प० । गोयमा जहन्नेणं बत्तीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमाइं सव्वट्ठे अ जहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता । कतिणं भंतेसरीरा प० । गोयमा । पञ्चसरीरा प० तं० । उरालिए वेउव्विए आहारए तेए कम्मए उरालियसरीरेणं भंतेकइविहे प० । गोयमा पंचविहे प० तं० । एगिंदियउरालियसरीरे जावगब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियउरालियसरीरेय । उरालियसरीरस्सणं भंते

जघन्य नथी उत्कृष्ट ३३ सागरोपमनी कही । हिवे स्थितिछे ते शरीराधीनछे । तेमाटे शरीर नूं स्वरूप पूछेछे । हेपूज्य शरीर केतलाकह्या । गौतम ५ श रीर कह्या । ते कहेछे । औदारिक १ वैक्रिय २ आहारक ३ तैजस ४ कार्मण ५ हेपूज्य औदारिक शरीर केतले प्रकारे कह्यो । गौतम ५ प्रकारे । एकेंद्री औदारिक शरीर १ एम बेइंद्री औदारिक शरीर २ तेइंद्री औदारिक ३ चोरिंद्री औदारिक शरीर ४ पचेंद्री सम्मूर्च्छिम तिर्यंच औदारिक शरीर गर्भज पचेंद्रिय तिर्यंच औदारिक शरीर समूर्च्छिम मनुष्य पंचेंद्रिय औदारिक शरीर गर्भव्युत्क्रात मनुष्य पचेंद्रिय औदारिकशरीर५ एह सर्वनो औदारिक शरीर जाणिवो । औदारिकशरीरनी केवडी मोटी अवगाहना कही हेगौतम जघन्यपणे अंगुलने असंख्यात मे भाग पृथिवीनी अपेचायें । उत्कृष्टसातिरेक भा

त्यादि औरालियसरीरसेत्यादि तत्रौदार म्प्रधानं तीर्थंकरादिशरीराणि प्रतीत्य शथवीरालम्बिशालं समधिकयोजनसहस्रप्रमाणत्वात् वनस्पत्यादि शतील अथवा उरालमल्पप्रदेशोपचितत्वात् सहत्वाच्च भाण्डवदिति अथवा मांसास्थिस्नायुबद्ध यच्छरीर न्तत्समयपरिभाषया उरालमिति तच्च तच्छरीरञ्चेति प्राकृत त्वादौरालियंशरीरं तस्याऽवगाहन्ते यस्यांसाऽवगाहना आधारभूतेवाचेत्रं शरीराणा मवगाहना शरीरावगाहना अथ वौदारिकशरीरस्य जीवस्य औदारिकं शरीररूपावगाहना सा भदन्त केमहालिया किंमहती प्रज्ञप्ता तत्र जघन्येनाङ्गुलासंख्येयभागंयावत् पृथिव्यादापेक्षया उत्कर्षेण सातिरेक योजनसहस्रमिति बादरवनस्पत्यपेक्षयेति एवंजावमणुस्सेति इहएव यावत्करणा दवगाहनासंस्थानाभिधानप्रज्ञापनैकविंशतितमपदाभिहितग्रन्थो ऽर्थतो यमनुसरणीयः तथा हि एकेंद्रियौदारिकस्य पृच्छानिर्वचनञ्च तदेव तथा पृथिव्यादीनां चतुर्णां म्बादरसूक्ष्मपर्याप्तापर्याप्ताना जघन्यत उत्कृष्टतया ङ्गुलासंख्येयभागो वनस्पतीनां बादरपर्याप्ताना मुत्कर्षतः साधिकं योजनसहस्रं शेषाणां त्वङ्गुलासंख्येयभागएव द्वित्रिचतुरिन्द्रियाणा म्पर्याप्ताना मुत्कर्षतस्त्वानुक्रमेण द्वादशयोजनानि त्री णिगव्यूतानि चत्वारिचेति पञ्चेंद्रियतिरश्चा जलचराणां पर्याप्तानां गर्भजानां सम्मूर्च्छनजानां चोत्कर्षतो योजनसहस्र एव स्थलचराणां चतुष्पदानां संमूर्च्छन जाना म्पर्याप्तानां गव्यूतपृथक्त्वं गर्भव्युत्क्रान्तिकाना तेषां षट्गव्यूतानि उर.परिसर्पाणां गर्भव्युत्क्रान्तिकानां योजनसहस्र एषामेव संमूर्च्छनजानां योजन

केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता । गोयमा जहन्नेणं अंगुलअसंखेज्जातिभागं उक्कोसेणं साइरेगं जोय

णेरी योजन सहस्र बादर वनस्पतीनी अपेक्षायें । जिम अवगाहना तिम ५ संस्थान पिण कहिवो । सर्व औदारिक बेइन्द्री तेइन्द्री चौरिन्द्री पचेन्द्री ति र्यंचनो मान तिमज निरवशेस समग्रपणे तरतमयोगे कहिवो जिहां लगे मनुष्य औदारिक शरीर नो मान उत्कृष्टो ३ गाऊ युगलियानी अपेक्षायें । हिवे

पृथक्त्वं भुजपरिसर्प्पाणां गर्भजानां गव्यूतपृथक्त्वम् संमूर्छनजानां धनुः पृथक्त्वं खचराणां गर्भजानां संमूर्छनजानां च धनुःपृथक्त्वमेव तथामनुष्याणां गर्भव्युत्क्रान्तिकानां गव्यूतत्रयं समूर्छनजाना मङ्गुलासङ्ख्येयभागः एयएव सर्वत्र जघन्यपदे अपर्य्याप्तपदेचेति तथा कइविहेणमित्यादि स्पष्टं नवर विविधा विशिष्टावा क्रियाविक्रियातस्या भव स्वैक्रिय म्विविध म्विशिष्ट म्वाकुर्वन्ति तदिति वेकुर्विकं मितिवा तत्रै केन्द्रियवैक्रियशरीर म्वायुकायस्य पञ्चेंद्रियवैक्रियशरीर नारकादीनामेव जावेत्यादेरतिदेशादिद द्रष्टव्य यदुत जइएगिंदियवेउव्वियसरीरए किंवाउकाइयएगिंदियवेउव्वियसरीरए अवाउकाइयएगिंदियवेउव्वियशरीरए गोयमा वाउकाइयएगिंदियसरीरए नोअवाउकाइय इत्यादिना भिलापेना यमर्थोद्दृश्यः यदिवायोः किंसूक्ष्मस्य वादरस्यवा वादरस्यैव यदि वादरस्य किम्पर्याप्तकस्या पर्याप्तकस्यवा पर्य्याप्तकस्य यदि पचेंद्रियस्य किंनारकस्य पचेंद्रियतिर्य्योमनुजस्यदेवस्यवा गौतम सर्वैषा तत्रनारकस्य सप्तविधस्य पर्याप्तकस्ये तरस्यच यदितिरश्चः किं सम्मूर्च्छिमस्य इतरस्यवा इतरस्य तस्यापिसख्यातवर्षायुषएवपर्याप्तस्य तस्यापिच जलचरादिभेदेन त्रिविधस्यापि तथा मनुष्यस्य

णसहस्सं एवंजहा उगाहणसंठाणे उरालियपमाणं तहानिरवसेसं एवंजावमणुस्सेत्ति । उक्कोसेणंतिन्निगाउयाइं । कइविहेणं भंते वेउव्वियसरीरे प० । गोयमादुविहे प० । एगिंदियवेउव्वियसरीरेय पंचिंदियवेउ

वैक्रिय शरीरनो मान पूछे छे । हे पूज्य केतले प्रकारे वैक्रिय शरीर कह्यो । हे गौतम बे प्रकारे कह्यो । एकेंद्री वैक्रिय शरीर तेहवायुनो अपेक्षाये । बीजो पचेंद्रिय वैक्रिय शरीर तेह पचेंद्रिय गर्भज तिर्यंच मनुष्यने लब्धि विशेषे होय । भववारणीय वैक्रिय शरीर नारकी भवनपती व्यंतर ज्योतिषी सौधर्म ईशा

गर्भजस्यैवतस्यापि कर्मभूमिजस्यैव तस्यापि संख्यातवर्षायुषएव पर्याप्तकस्यैवच तथा देवस्यभवनवास्यादेः तत्र सुरादेर्दशविधस्य पर्याप्तकस्येतरस्यच एव व्यंत रस्याष्टविधस्य ज्योतिष्कस्यपञ्चविधस्य तथा यद्वैमानिकस्य किल्पोपपन्नस्य कल्पातीतस्य उभयस्यापि पर्याप्तस्या पर्याप्तस्यचेति तथा वैक्रियम्भदन्तकिंसंस्थित उच्यते नानासंस्थित तत्र वायोःपताकासंस्थितं नारकाणा भवधारणीय मुत्तरवैक्रियञ्च हुडसंस्थितं पचेंद्रियतिर्यग्मनुष्याणा नानासंस्थित देवाना भवधारणीय समचतुरस्रसंस्थानसंस्थित मुत्तरवैक्रिय नानासंस्थित केवल कल्पातीताना भवधारणीयमेव तथा वैक्रियसरीरावगाहना भदन्तकिंमहती गौतम जघन्यतोंगुलाऽसंख्येयभाग मुत्कर्षतः सातिरेक योजनलक्ष वायोरुभयथा अङ्गुलासंख्येयभाग एवं नारकस्यजघन्येनभवधारणीय उत्कर्षतः पञ्चधनु शतानि एषा च सप्तस्यांषष्ठ्यादिषु त्वियमेवा र्द्धार्द्धहीनेति उत्तरवैक्रियातु जघन्यतः सर्वेषा मप्यङ्गुलासंख्येयभाग मुत्कर्षत स्तु नारकस्यभवधारणीयाद्द्विगुणेति पचेंद्रियतिरश्चां योजनशतपृथक्त्व मुत्कर्षतः मनुष्याणा तूत्कर्षतः सातिरेक योजनानां लक्ष देवानातुलक्षमेवोत्तरवैक्रिय भवधारणीयंतु भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्कसौधर्मैशानानां सप्तहस्ताः सनत्कुमारमाहेन्द्रयोः षट् ब्रह्मलान्तकयोः पञ्च महाशुक्रसहस्रारयो श्चत्वार आनतादिषुत्रयो ग्रैवेयकेषुद्वा वनुत्तरेष्वेक इति अनन्तरोक्तं

व्वियसरीरेत्तु । एवंजाव सणंकुमारेत्ताढत्तं जावत्तणुत्तराभवधारणिज्जा जावतेसिं रयणीरयणीपरिहायइ ।

न लगे सात हाथनो होय । सनत्कुमार थी मांडी अनुत्तर विमान लगे भवधारणीय शरीर । बे बे देवलोके एकेक हाथ घटाडिये । ते किम सनत्कुमार माहेन्द्रे ६ हाथनं । ब्रह्मलांतके ५ हाथनो । शुक्रसहस्रारे ४ हाथनो । आनत प्राणत आरण अच्युते ३ हाथनो । नवग्रैवेयके २ हाथनो । पचानुत्तरे १ हाथ

सूत्रतएवाह एवजावसणकुमारेत्यादि एवमिति दुविहेपन्नत्ते एगिंदियइत्यादिना पूर्वदर्शितक्रमेण प्रज्ञापनोक्त वैक्रियावगाहनामानसूत्र वाच्यं कियद्दूरमित्या दि यावत्सनत्कुमारे आरब्ध भवधारणीयवैक्रियशरीरपरिहाणमितिगम्य ततोपि यावदनुत्तराणि अनुत्तरसुरसम्बन्धीनि भवधारणीयानि शरीराणि यानिभ वन्तितेषांरत्नो रत्निःपरिहीयतइति एतदर्थसूत्रभवेत्तावदिति पुस्तकान्तरेत्वि दम्वाक्य मन्यथापि दृश्यते तत्राप्यचरघटनै तदनुसारेणकार्यैति आहारयेत्या दि पगम नवरं एवमिति यथापूर्व आलापक परिपूर्णं उच्चारितः एवमुत्तरत्रापि तथाहि जइमणुस्सत्ति जइमणूस्साहारगसरीरे किंगब्भवक्कतियणुमस्साहार गसरीरे समुच्छिमनमणुस्साहारगसरोरे गोयमा गब्भवक्कतियमणुस्साहारगसरीरे नोसमुच्छिमनमणुस्साहारगसरीरे जइगब्भवक्कतियइत्यादि सर्वंग्राह्य जावजइप मत्तसजय अपमत्तसजयसम्मादिट्ठिपज्जत्तयसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरे किंइड्डिपत्तपमत्तसजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तसंखेज्ज(?)ासाउयक

आहारयसरीरेणं भंते कइविहे पन्नत्ते। गोयमा एगाकारे प०। जइएगाकारे प०। किंमणुस्सआहारय सरीरे अमणुस्सआहारयसरीरे। गोयमा मणुस्सआहारगसरीरेणोअमणुस्सआहारगसरीरे। एवजइमणु

नो शरीर। बेहु गतिना उत्तर वैक्रिय शरीरनो मानगाथाथी कहिवो। नरदेवलक्खमहिय। तिरियाणजोयणाणिनवसयाइं। दुगुणतुनारयाणं उक्कोसवेउ व्वियाभणिया ॥ १ ॥ अतोमुहुत्तनिरए मुहुत्तचत्तारितिरियमणुएसु। देवेसु अद्धमासो उक्कोसवेउव्वियाकालो ॥ २ ॥ आहारक शरीर ते पूर्वधर जिन ऋ द्धिजोइवाने अथवा सदेहपूछिवाने तीर्थंकर पासे जाइवाने अर्थं करे १ हाथनो शरीर अतर्मुहूर्त्त लगे रहे। ते १ प्रकारे छे। वली गीतम पूछे छे। हेपूज्य १ प्रकारे आहारक शरीर कह्यो ते मनुष्य आहारक शरीर होय किंवा अमनुष्य आहारक शरीर होय। हे गीतम मनुष्यने आहारक शरीर होय। परं

म्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरे अणिड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तयसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरे गोयमा णि

स्सआहारगसरीरे किंगब्भवक्कंतियमणुस्सआहारगसरीरे सम्मुच्छिममणुस्सआहारगसरीरे गोयमा गब्भवक्कं तियमणुस्सआहारयसरीरे नोसमुच्छिममणुस्सआहारयसरीरे। जइगब्भवक्कंतिया किंकम्मभूमिगा अकम्मभूमिगा गोयमा कम्मभूमिगा नोअकम्मभूमिगा। जइकम्मभूमिग किसंखेज्जवासाउय असंखेज्जवासाउय। गोयमा नोअसंखेज्जवासाउय। जइसंखेज्जवासाउय किंपज्जत्तया अपज्जत्तया गोयमा पज्जत्तयानोअपज्जत्तया। जइपज्जत्तया किंसम्मदिठी मिच्छदिठी सम्मामिच्छदिठी। गोयमा सम्मदिठी नोमिच्छदिठी नोस

अमनुष्यने आहारक नहोय। जोमनुष्यने होय तो गर्भ व्युत्क्रांतनेहोय वा समूर्च्छिमने होय। हेगौतम गर्भजने होय समूर्च्छिम ने नहोय। हेपूज्य गर्भजने होय तो १५ कर्मभूमिगतने होय किंवा ३० अकर्म भूमिगतनें होय। हे गौतम कर्मभूमिगत मनुष्यने होय अकर्मभूमिगत मनुष्यने न होय। हे पूज्य कर्मभूमिगत मनुष्यने होय तो सख्यात वर्षायुष्कने होय किंवा असख्यात वर्षायुष्कने होय। हे गौतम सख्यात वर्षायुष्कने होय पणि असख्यात वर्षायुष्कने न थी। हे भदंत सख्यात् वर्षायुष्क ने होय तो पर्याप्ता ने होय किंवा अपर्याप्तने होय। हे गौतम पर्याप्ताने होय पणि अपर्याप्ताने न होय। हे भदंत पर्याप्ता ने होय तो सम्यग्दृष्टीने होय किंवा मिथ्यादृष्टीने। हे गौतम सम्यग्दृष्टीने होय परं मिथ्यादृष्टीने नही। सम्यग्मिथ्यादृष्टीने पणि नहोय। हेभदंत सम्यग्दृष्टी ने होय तो साधु यतीने होय किंवा असयत अविरतीलोक सयतासंयत श्रावकने होय। हेगौतम सयतीने होय। पणि असयतीने नहोय। संय

तीयस्यनिषेध: प्रथमस्यचा नुज्ञा वाच्या एतदेवाह वयणाविभाणियव्वत्ति सूचितवचनान्यप्युक्तन्यायेनसर्वाणिभणनीयानि विभागेनपूर्णान्युच्चारणीयानीत्यर्थः आहारगत्तिआहारगशरीरस्सकेमहालियासरीरोगाहणापन्नत्तागोयमाइत्येतत्सूचितंजहन्नेणदेसूणारयणीति कथमुच्यते तथाविधप्रयत्नविशेषत स्तथा रम्भक द्रव्यविशेषत श्च प्रारम्भकाले प्युक्तप्रमाणभावात् नहीहौदारिकादेरिवां गुलासंख्येयभागमात्रता प्रारम्भकाले इतिभाव: तेयासरीरेणभतेइत्यादि एवं यावत्कार

म्मामिच्छदिठी । जइसम्मदिठी किंसंजया असंजया संजयासंजया गोयमा संजया नोअसंजया नोसंजया सजया । जइसंजया किंपमत्तसंजया अपमत्तसंजया । गोयमा पमत्तसजया नोअपमत्तसंजया । जइपम त्तसजया किंइड्ढिपत्ता अणिड्ढिपत्ता गोयमा इड्ढिपत्ता नोअणिड्ढिपत्ता । वयणाविन्नाणियव्वा आहारयस रीरे समचउरंससंठाणसंठिए । आहारय सरीरे जहन्नेणं देसूणारयणी उक्कोसेण पडिपुन्नारयणी । तेअ

ता संयतने पणि न होय । हेपूज्य संयतीनेहोय तो प्रमत्तसयती ६ ठागुणठाणवालाने होय किवा अप्रमत्त सयतीने होय । हे गौतम ६ ठागुणठाणवासी प्रमत्तसयत लब्धि प्रयुंजे तेमाटे प्रमत्तनेहोय । पणि अप्रमत्तलब्धि फोरवे नथी तेमाटे अप्रमत्त ने न होय । जो अप्रमत्तने होय तो ऋद्धिप्रासने होय किम्वा अनृद्धिप्रासने होय । हे गौतम शरीर करवानो लब्धिरूपऋद्धि पाईहोय ते ऋद्धिप्राप्तने होय । अनर्द्धिप्राप्तने न होय । उक्तन्याये कह्या वचन सग ला भणिवा । आहारकशरीर समचउरंस सस्थान संस्थित होय । आहारक शरीर जघन्य थोडो सर्वकाले देसूणा कांईकऊंणा हाय अने संपूर्ण होयतो १ हाथहोय । हिवे चौथा तेजस शरीरनो स्वरूप पूछे छे । तेजस शरीर हे भदंत केतले प्रकारे कह्यो ॥ हे गौतम तेजस शरीर ५ भेदे कह्यो । एकेंद्रियतेज

णा अप्रापनासत्कैकविंशतितमपदोक्ता तैजसशरीरवक्तव्यता इहवाच्या साचेय मर्थतः एगिंदियतेयगशरीरेणंभंतेकतिविहे गोयमा पंचविहेपखत्ते तंजहा पुढवीजाववणस्सइकाइएगिंदियतेयगसरीरे एव जीवराशिप्ररूपणाऽनुसारेण सूत्र म्भावनीयं यावत् सव्वट्ठसिद्धगअणुत्तरोववाइयकप्पातीतवेमाणियदेवप चेंदियतेयगसरीरे तेयगसरीरेणंभंते किसठिए नाणासंठिए यस्य पृथिव्यादिजीवस्य यदौदारिकादिशरीरसंस्थानं तदेव तेजसस्य कार्म्मणस्यच तथा जीवस्य मारणान्तिकसमुद्घातगतस्य कियती तैजसी शरीरावगाहना शरीरमात्रा विष्कम्भबाहल्याभ्या सायामतस्तु जघन्येना ङ्गुलस्याऽसंख्येयभाग उत्कर्षत ऊर्द्धमधश्च

सरीरेणं भंते कतिविहे पन्नत्ते । गोयमा पंचविहेपन्नत्ते । एगिंदिय तेयसरीरे वितिचउपंचएवंजाव गेवेज्ज स्सणं भंते देवस्समारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्ससमाणस्स केमहालियासरीरोगाहणा पन्नत्ता । गोयमा

स १ वेइन्द्रीतेजस २ तेरिंद्री तेजस ३ चौरिंद्री तेजस ४ पचेंद्रीतेजस ५ । तेजस शरीरनो संठाण अनेक प्रकारनो । गौतम पहिले स्वाध वचने पूछेछे । मरणांतिक समुद्घात प्राप्तजीवना तेजसशरीरनी अवगाहनां केतली । भगवंत कहे छे । विष्कंभपणे बाहल्यपणे तेजस शरीरावगाहना शरीर प्रमाणें । जघन्य अंगुलनो असंख्येयभाग । उत्कृष्ट ऊंचो नीचो हेठिला लोकांतलगे । कार्मणशरीरनी पणि एमज अवगाहना एह एकेंद्रीय आश्रित जाणिवो । उत्पत्तिसमये वेरिंद्रिय तेरिंद्रिय चोरिंद्रियना तेजस शरीरनी अवगाहना उत्कृष्टलांबपणें तिर्यक्लोके लोकांतलगे । एम २३ दंडकना तेजसशरीरनी अवगाहना टीका थीजाणवी जिहां लगे ग्रैवेयकनादेवता मारणांतिकसमुद्घाते समोहितहोय एतले मरणसमुद्घात करतोहोय तिवारे देवतानी केवडीमोटी तेजस शरीरोगाहना कहिवी। हे गौतम शरीरप्रमाणें जाणवी । विष्कंभपणें पिहुलपणें बाहल्यपणें जाडपणें औदारिकशरीर प्रमाणें तेजस शरीरनी अवगाहना । आयामे

लोकान्ता ल्लोकान्तंयाव देकेन्द्रियस्य तत स्तत्रोत्पत्ति मङ्गीकृत्येतिभाव: एवं सर्वेषामेवैकेंद्रियाणां द्वीन्द्रियाणान्तु आयामत उत्कर्षेण तिर्यग्लोका ल्लोकांतंयावत्राय स्तिर्यग्लोके द्वीन्द्रियादितिरश्चाभावात् नारकस्य जघन्यतो योजनसहस्र कथं नारका त्पातालकलशस्य सहस्रमान कुड्यम्भित्त्वा तत्र मत्स्यतयो त्पद्यमानस्य उत्कर्षेणतु अध: सप्तमींयावत् सप्तमपृथ्वीनारकं समुद्रादिमत्स्येषू त्पद्यमान म्प्रतीत्य तिर्यक्स्वयम्भूरमणायावत् ऊर्द्ध्व म्पण्डकवनपुष्करिणीयावत् यतस्तयो र्नारक उत्पद्यते नपरत: मनुष्यस्य लोकान्तंयावत् भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्कसौधर्मेशानदेवाना जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभाग: स्वस्थान एव पृथिव्यादितयो त्पादात् उत्कर्षतस्तु अधस्तृतीयपृथ्वींयावत् तिर्यक्स्वयम्भूरमणवेदिकान्त ऊर्द्धमीषत्प्राग्भारां यावत् यत एतेषुच पर्याप्तवादरेष्वेव पृथिव्यादिषू त्पद्यन्ते अतो नपरतोपीति सनत्कुमारादिसहस्रारान्तदेवानान्तु जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभाग: कथ पण्डकवनादिपुष्करिणीमज्जनार्थ मवतारे मृतस्य तत्रैव मनुष्यतयो त्पद्य मानत्वात् पूर्वसम्बन्धिनीम्वा मनुष्योपभुक्तास्त्रिय म्परिष्वज्य मृतस्यतद्गर्भे समुत्पादादिति उत्कर्षतस्तु अधोयाव न्महापातालकलसानां द्वितीय स्त्रिभाग स्तत्र हि जलसद्भावान्मत्स्येपूत्पद्यमानत्वात् तिर्यक्स्वयम्भूरमणसमुद्रयावत् ऊर्द्धमच्युतयाव त्तत्रहि सङ्गतिकदेवनिश्रयागतस्य म्रुत्वेहोत्पद्यमानत्वादिति आनता दीना मच्युतानान्तु जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभाग: कथ मिहागतस्य मरणकालविपर्यस्तमते र्म्मनुष्योपभुक्तास्त्रिय मप्यभिष्वज्य मृतस्य तत्रैवोत्पत्तेरिति उत्कर्षत स्त्वधोयाव दधोलोकग्रामान् तिर्यङ्मनुष्यक्षेत्रे उर्द्ध मच्युतविमानानियावत् मनुष्येष्वेवोत्पद्यन्ते इति भावनातथैवकार्या ग्रैवेयकानुत्तरोपपातिदेवाना जघन्य

सरीरप्पमाणमेत्ती विक्खंभवाहल्लेणं आयामेणं जहन्नेणं जावविज्जाहरसेढीउ उक्कोसेणं अहोलोइयग्गामा

लांबपणे जघन्य हेठे विद्याधर श्रेणी लगे।ग्रैवेयक देवताना तैजसनी अवगाहना एतलेमरतीवेला तिहांलगे तैजस कामर्णशरीरना प्रदेश विस्तारे उत्कष्टी

तो विद्याधरश्रेणीयावत् उत्कर्षतो ऽधोयाव दधोलोकग्रामान् तिर्यग्मनुष्यक्षेत्रं उर्द्ध तद्विमानान्येवेति एवं कार्मणस्या प्यवगाहना दृश्या समानत्वा देवतयो रिति उक्तार्थमेव सूत्रांशमाह । गेवेज्जगस्सणमित्यादि अनन्तरं शरीरिणा मवगाहना धर्म्मउक्तो ऽधुना त्ववधिधर्म्मप्रतिपादनायाह ॥ भेदेइत्यादि द्वारगाथा तत्र भेदो वधेर्वक्तव्यो यथाद्विविधो वधि र्भवप्रत्ययः चायोपशमिकश्च तत्र भवप्रत्ययो देवनारकाणां चायोपशमिको मनुष्यतिरश्चामिति तथा विषयो गोचरो ऽवधे र्वाच्यः सच चतुर्द्धा द्रव्यतः चेत्रतः कालतो भावतश्च तत्र द्रव्यतो जघन्येन तेजोभाषयो रग्रहणप्रायोग्यानि द्रव्याणि जानाति उत्कर्षत स्तु सर्वं मेकाणे

ते उद्धं जावसयाइं विमाणाइं तिरियंजावमणुस्सखेत्तं । एवंजावअणुत्तरोववाइया । एवं कम्मयसरीरंपिभा णियव्वं । भेदेविसयसंठाणे अभिंतरेबाहिरेयदेसोही । ओहिस्सबुड्ढिहाणी पडिवाईचेवअपडिवाई ॥ १ ॥ कति

हेठें जिहालगे आधोग्राम पश्चिम महाविदेह चेत्रना तिहांलगे । ऊंचो जिहांलगे पोतानुंविमान । तिरछो मनुष्य चेत्र लगे ग्रैवेयकदेवनां तैजस शरीरनी अवगाहना । एमजग्रैवेयकनीपरे अनुत्तर विमानवासो देवना तैजस शरीरोगाहना जाणवी । तैजस शरीरनी परें कार्मण शरीरनी अवगाहना जाणवी सठाण पणि तिमज जाणिवी । हिवे अवधिज्ञानना भेद कहेछे । प्रथम अवधिज्ञानना बेभेद एक भवप्रत्यय १ वीजो चायोपसमिक । तेमांहि भवप्रत्यय अवधिज्ञान देवता नारकीने होय । चायोपसमिक मनुष्य तिर्यंचने होय । तथा अवधिज्ञान गोचर विषय ते चारप्रकारे । द्रव्यतः १ चेत्रतः २ कालतः ३ भावतः ४ तेमांहि द्रव्यथकी जघन्यपणे तैजस अनें भाषानें अग्रहणयोग्यद्रव्यजाणें । उत्कृष्ट सर्व एकादिअनंताणुकांत रूपीद्रव्यने जाणे । तथा चेत्रथी जघ न्य अंगुलनो असंख्येयभाग जाणे । उत्कृष्ट असंख्याता अलोकने विषे लोकमात्र खड जाणें । कालतः जघन्य आवलिकानो असंख्यातमोभाग अतीत अनाग

कायनन्ताणुकान्तं रूपिद्रव्यजातं जानाति क्षेत्र जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभागं जानाति उत्कर्षतो ऽसंख्येयान्यलोके लोकमात्राणि खण्डानि जानाति काल ञ्जघन्यत आवलिकाया असंख्येयभाग मतीतमनागतञ्च जानाति उत्कर्षतः सख्यातीता उत्सर्पिण्यवसर्पिणीर्जानाति भावतो जघन्यतः प्रतिद्रव्य ञ्चतुरोवर्णादीन् उत्कर्षतः प्रतिद्रव्य मसंख्येयान् सर्वद्रव्यापेक्षया त्वनन्तानिति तथा संस्थान मवधेर्वाच्यं यथा नारकाणां तप्राकारो वधिः पल्याकारो भवनपतीना म्पटहाकारो व्यन्तराणां झल्लर्याकृति ज्योतिष्काणां मृदङ्गाकारः कल्पोपपन्नानां पुष्पावलीरचितशिखरचगेर्याकारो ग्रैवेयकानां कन्याचोलकसंस्थानो ऽनुत्तरसुराणां लोकनाल्याकृति रित्यर्थ. तिर्यग्मनुष्याणान्तु नानासंस्थानइति तथा अभ्यतरत्ति के अवधिप्रकाशितक्षेत्रस्या भ्यन्तरे वर्त्तन्ते इतिवाच्यन्तत्र नेरइयदेवतित्थंकरा यओहिस्सबाहिराहुतोत्यादि तथा बाहिरेयत्ति के वधिक्षेत्रस्य बाह्या भवन्तीति वाच्यम् तत्रनेरइयदेवत्ति शेषाजीवा बाह्यावधयो ऽभ्यन्तरावधयश्च भवन्ति

तजाणे। उत्कृष्ट असख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी जाणे। भावथकी जघन्यतः द्रव्य द्रव्यप्रति वर्णगंधरसस्पर्श एहचारप्रते जाणे। उत्कृष्टतः द्रव्यद्रव्यप्रति संख्याता सर्वद्रव्यनी अपेक्षायें अनता वर्णादिकना भेदजाणे। चौजेंबोले अवधिनो सठाण कहेछे। नारकीनो अवधि त्रापाने आकारें। एतले नावने आकारे। भवन पतिनो पल्यने आकारें। व्यतरनो पडहाने आकारे। ज्योतिषीनो झालरने आकारें। बारेदेवलोकना देवतानो मादलने आकारें। ग्रैवेयक देवतानो फूलचगेरीने आकारें। अनुत्तर देवतानो लोकनालीने आकारे। एतले कन्यानी चोलीने आकारें। तिर्यंच मनुष्यनो अवधि नाना संस्थान। हिवे कोण अवधि प्रकाशित क्षेत्रने अभ्यतर वर्तेछे। तिहां नेरइयदेवतित्थं करायओहिस्सबाहिराहुति। इत्यादि। तथा बाहिरत्ति कोण अवधि प्रकाशित क्षेत्रने बाहिर होय। शेष थाकता जीव बाह्य अने अभ्यतरपणि होय। देशोहित्ति अवधि प्रकाशिवा योग्यवस्तुना देशनेप्रकाशे तेदेशावधि तेकोइक

तथा देशोहित्ति अवधिः प्रकाश्यवस्तुनो देशप्रकाशी अवधि देशावधिः स केषा भवतीति वाच्यम् तद्विपरीतस्तु सर्वावधि स्तत्र मनुष्याणां उभय मन्येषां देशावधिरेव यतः सर्वावधिः केवलज्ञानलाभप्रत्यासत्तावेवो त्पद्यत इति तथा वधे हेतिर्हानिश्च वाच्या योयेपाभवति तत्र तिर्यग्मनुष्याणा म्वर्द्धमानोहीय मानश भवति शेषाणामवस्थित एव तत्र वर्द्धमानो गुलासंख्येयभागादि दृष्ट्वा बहुबहुतर म्पश्यति विपरीतस्तु हीयमानइति तथा प्रतिपातीचा प्रतिपाती चावधिर्वाच्यः तत्रोत्कर्षतो लोकमात्रः प्रतिपात्यतः परमप्रतिपाती तत्र भवप्रत्ययः स्त भवंयावन्न प्रतिपतति चायोपशमिकस्तूभयथेति एतदेवदर्शयति कद्द विहेत्यादि अत्रावसरे प्रज्ञापनाया स्त्रयस्त्रिंशत्तम म्पदमन्यूनमध्येय मिति अनन्तर मुपयोगविशेषः चायोपशमिको जीवपर्यायः उक्तो धुना सएवौदयिकोवे

विहेणंभंतेओही पन्नत्ता । गोयमा दुविहा पन्नत्ता । भवपच्चइयखओवसमिएय । एवं सब्बोहिपदं भाणियब्बं ।

ने होय । एहथी विपरीतते सर्वावधि । तिहां मनुष्यने देशावधि सर्वावधि एह बिहुहोय । बीजा सर्वने देशावधि होय । केवलज्ञान ढूंकडोहोय तिवारे सर्वा वधि होय । ओहिस्स वुड्ढिहाणित्ति । अवधिनी वृद्धि अने हानि कहिवी । तिर्यंचने मनुष्यने हीयमान होय वर्द्धमान पिण होय । देवता नारकीने अव स्थित होय घटे न बधे । वर्द्धमान ते अंगुलनो असंख्यातमोभाग देखीने घणूं घणूं देखे । एहथकी विपरीत तेहीयमान । प्रतिपाती उत्कृष्टो लोकमात्र देखे । अलोकमांहि देखे तेअप्रतिपाती परमावधि । गौतम पूछेछे हेभदंत केतले प्रकारे अवधिज्ञान कह्यो । गौतम बेप्रकारें कह्यो । एकभवप्रत्यय तेदेवता नार कीने पोताना भवने विषे उपजे जिहाथीमरसे तिहांलगे रहे । बीजो चायोपशमिक ते अनंतानुवंधी कपायना उदये उपजे । गर्भजतिर्यंच मनुष्य ने होय । एम सर्वअवधिनोपद पन्नवणासूत्रथकी कहिवो । हिवे उपयोगविशेषचायोपशमिक जीवपर्यायकह्यो । हिवे तेहीजऔदयिकवेदनालक्षणकहेछे । गोता

दनालचणोभिधीयते॥ सीयाइत्यादि द्वारगाथा तत्रसीयायत्ति चशब्दोनुक्तसमुच्चये तेन त्रिविधा वेदना शीता उष्णा शीतोष्णाचेति तत्र शीतामुष्णांचवेदयंति नारका: शेपास्त्रिविधामपि दव्वत्ति उपलचणत्वा च्चतुर्विधा वेदना द्रव्यादिभेदेन तत्र पुद्गलद्रव्यसम्बन्धात् द्रव्यवेदना नारकाद्युपपातचेत्रसम्बन्धात् चेत्रवेदना नारकाद्यायु: कालसम्बन्धात् कालवेदना वेदनीयकर्मोदया द्भाववेदना तत्र नारकादयो वैमानिकान्ता श्चतुर्विधामपि वेदना वेदयन्तीति तथा सारीरत्ति त्रिधा वेदना शारीरी मानसी शारीरमानसीच तत्र सञ्ज्ञिपचेंद्रिया: सर्वे त्रिविधामपि इतरेतु शारीरीमेवेति तथा सायत्ति त्रिधावेदना साताअसाता सातासाताचेति तत्र सर्वेजीवा: त्रिविधामपि वेदयन्तीति तहवेयणाभवेदुक्खत्ति त्रिविधावेदना सुखा दुःखा सुखदु:खाचेति तत्र सर्वेपि त्रिविधामपि वेदयन्ति

सीयायदव्वसारीर सायातहवेयणाभवेदुक्खं । अब्भुवगमुवक्कामिया णीयाएचेवअणियाए ॥ १ ॥ नेरइया

दिकवेदना तीन प्रकारें शीता उष्णा शीतोष्णा तेमांहिनारकी शीतवेदना अने उष्णवेदना वेदे । दव्वत्ति द्रव्यादिकभेदें चारप्रकारें । तेमांहि पुद्गल द्रव्यसंबंधथकी द्रव्यवेदना १ नारकादिक उपपातचेत्र संबंधथकी चेत्रवेदना २ नारकादिआयुकाल संबधथकीकालवेदना ३ वेदनीयनामकर्मनाउदयथकी भाववेदना ४ तिहा नारकादि वैमानिकातलगें चिंहु प्रकारनी वेदनावेदे । तथासारीरत्ति । तीनप्रकारेंवेदना शारीरी मानसी शारीरमानसी । इहासञ्ज्ञी पचेंद्रिय त्रिणवेदनावेदे । बीजासगलाशारीरी वेदनावेदे । तथासायत्ति । तीनप्रकारनीवेदना साता असाता सातासाता सगलाहीजीव त्रीहु प्रकारे वेदनावेदे । वेयणाभवेदु:खति । त्रिप्रकारनीवेदना । सुखा दुःखा सुखदुःखा । सगलाही जीव त्रिणप्रकारे वेदनावेदे । साता असातामांहि अने सुखदुःखमांहिस्यूंविशेष ।

नवरं सातासातयोः सुखदुःखयोः श्चायं विशेषः सातासाते क्रमेणोदयप्राप्तवेदनीयकर्मपुद्गलानुभवलक्षणे सुखदुःखेतुपरेण उदीर्यमाणवेदनीयकर्मानुभवलक्ष

णेतथा अन्भुवगमुवक्कमियत्ति द्विधावेदना आभ्युपगमिकी औपक्रमिकीचेति तत्राद्यामभ्युपगमतो वेदयन्ति जीवा यथा साधवः शिरोलोचनब्रह्मचर्यादि

कां द्वितीयांतु स्वयमुदीर्णस्यो दीरणाकरणेन चोदय मुपनीतस्य वेदनीयस्यानुभवतः तत्र पञ्चेंद्रियतिर्यग्मनुष्या द्विविधामपि शेषास्त्वौपक्रमिकी मेववेद

यंतीति तथाणीयाएचेव अणियाएत्ति द्विविधा वेदना तत्र निदयाआभोगत अनिदयात्वनाभोगत स्तत्र सञ्ज्ञिन उभयतो ऽसञ्ज्ञिनस्त्व निदयेति एतत्द्वारवि

वरणाय नेरइयाणमित्यादि इहावसरे प्रज्ञापनायाः पञ्चत्रिंशत्तम स्वेदनाख्य स्मद मध्येयमिति अनन्तरं वेदनाप्ररूपिता साच लेश्यावत् एव भवतीति

णंभंते किंसीतंवेयणंवेयंति उसिणं वेयणं। सीतोसिणंवेयणं। गोयमा नेरइयाएवंचेव वेयणापदंभाणियव्वं।

साता सातेअनुक्रमे उदयप्राप्तवेदनीयकर्मपुद्गलनो भोगिवो। सुखदुःखते परेउदीर्यमाण वेदनीयकर्म पुद्गलनो भोगिवो। तथा अभुवगमुवक्कमियत्ति। विहुं प्रकार वेदनी अभ्युपगमिका अनेउपक्रमिका। पहिलीवेदना आगमीने ले एतले स्वीकारकरीनेले। जिमयतीशिरलोचादिकनी वेदनावेदे। बीजी सेउदी रणाकरने तथा पोते आपणे उदयआवी वेदनावेदे। तिहां तिर्यंच पचेन्द्रिय मनुष्य विहु वेदना आगमीनेले जिमवेदनावेदे। तथा णीयाएत्ति। विहु प्रकारे वेदना एकआभोगतः जाणपणेवेदे तेणीयावेदना। बीजो अजाणपणे वेदना तेअणीयावेदना। तिहां सन्नी पचेंद्रियणीयावेदनावेदे। असंन्नीअणीयावेदनावे दे। हेपूज्यनारकी किम शीतवेदनावेदे। किवाउष्णवेदनावेदे किवाशीतोष्ण वेदनावेदे। गौतम नारकीनो वेदना एहपन्नवणाना पैत्रीसमापदथकी भणिवो

लेश्याप्ररूपणायाह कइणभंते इत्यादि इहस्थाने प्रज्ञापनायाः सप्तदशं षडुद्देशकं लेश्याभिधानं पद मध्येतव्यं तच्चास्माभि रतिबहुला इतीतोपि न लिखितमि
ति ततएवा वधारणीय मिति अनन्तरं लेश्या उक्ताः सालेश्याएवचाहारयती त्याहारप्ररूपणाय अणतरायेत्यादि द्वारश्लोकमाह तत्र अणंतराय आहारे
त्ति अनन्तरायाव्यवधानायाहारविषये अनतराहाराजीवा वाच्याइत्यर्थ तथा हारस्याभोगताअपिचेति वचना दनाभोगताच वाच्या तथा पुद्गला न जा
नत्येव एवकारा न पश्यतीति चतुर्भङ्गी सूचिता तथा अध्यवसानानि सम्यक्त्वञ्च वाच्यमिति तत्राद्यद्वारार्थमाह नेरइएत्यादि अनतराहारएत्ति उपपातक्षेत्रप्रा
प्तिसमय एवा हारयतीत्यर्थ' ततोनिव्वत्तणयाएइति ततः शरीरनिर्वृत्तिः ततोपरियाइयणयत्ति तत.पर्यापान मङ्गप्रत्यङ्गैः समन्ता त्पानमित्यर्थः ततोपरिणा

कतिणंभंतेलेसाउ प० गोयमाछलेसाउ प० तं० । किण्हा नीला काउ तेउ पउमा सुक्का । एवंलेसापदंभा
णियव्वं । अणतरायआहारे आहाराभोगणाइया पोग्गलानेवजाणंति अज्झवसाणेयसम्मत्ते ॥ १ ॥ नेरइ
याणं भंते अणतराहारा तउनिव्वत्तणया तउपरियाइयणया तउपरिणामणया तउपरियारणया तउपच्छा

हेभदंत केतला प्रकारनी लेश्याकही। गौतम ६ प्रकारनी कही। तेकहेछे। कृष्णलेश्या १ नीललेश्या २ कापोतलेश्या ३ तेजोलेश्या ४ पद्मलेश्या ५ शु
क्ललेश्या ६ एम लेश्या पद सतरमो पन्नवणाथी भणिवो। हिवे आहारनो अधिकार पूछेछे। जीव आतरा रहित आहार करेछे। आंतरे आतरे तथा
आहारनो आभोगपणो जाणीने ले तेआभोग। बीजो अनाभोग। आहारना पुद्गलने जाणके नजाणे। अध्यवसाय मनना परिणाम। तथा सम्यक्त्व। ए
ह ५ पदकहिवा। नारकी जीव अनतर आहार करेछे। उपजिवाने क्षेत्रे जइ जपनो तेणे समये करे। तिवारे पछे शरीरनोपजावे। तिवारे पछे आ

पणा कृता ह्यारयायुर्बन्धवता मेव भवतीत्यायुर्बन्धप्ररूप णायाह कइविहेत्यादि तवायुषो बन्धनिषेक आयुर्बन्धः निषेकश्चप्रतिसमय स्वबहुहीनहीनतरस्य द
लिकस्या नुभवनार्थ रचना निधत्तमपोह्य निषेकउच्यते अतएवाह जाइनामनिधत्ताउए जातिनाम्नासह निधत्तम् निषिक्त मनुभवनार्थ वह्वल्पाल्पतरक्रमेण
व्यवस्थापितमायु र्जातिनामनिधत्तायुः अथकिमर्थ ञ्जात्यादिनामकर्म्मणायु र्विशेष्यते आयुष्कस्य प्राधान्योपदर्शनार्थ यस्मा न्नारकाद्यायुरुदये सति जात्या
दिनामकर्म्मणा मुदयो भवति नारकादिभवोपग्राहकं चायुरेव यस्मा द्व्याख्या प्रज्ञप्त्यामुक्त नेरइएणभंतेनेरइएसु उववज्जइ अनेरइए नेरइएसुउववज्जइ गोय
मा नेरइएनेरइएसुउववज्जइ नो अनेरइएनेरइएसुउववज्जइ एतदुक्तंभवति नारकायुः प्रथमसमयसवेदनकालएव नारक इत्युच्यते तत्सहचारिणाञ्च पञ्चेंद्रिय
जात्यादिनामकर्म्मणा मप्युदय इति तथा गतिनामनिधत्ताउएत्ति गतिर्नारकगत्यादि तल्लक्षण नामकर्म्म तेनसह निषिक्तमायु र्गतिनामनिषिक्तायुः तथा
ठिईकालनामनिधत्ताउएत्ति स्थिति र्यथास्थातव्यं तेन भवेनायुर्दलिकस्य सैवनामपरिणामोधर्म्मइत्यर्थः स्थितिर्नाम गतिजात्यादिकर्म्मणाञ्च प्रकृत्यादिभेदेन

विकुव्वणया हंतागोयमाएवंञ्चाहारपदंन्नाणियव्वं । कइविहेणं भंते आउगवंधेपन्नत्ते गोयमाछव्विहे पन्नत्ते

हारलोधोहोय तेशरीरने विषे परिणमावे। तिवारपछे विषय सेविवानी इच्छा। तिवारपछे विकुर्वणा करे। एहवो प्रश्न पूछ्यापछे भगवंत कहेछे।
एमहोज हेगोयम जिमतूकहेछे तिमजछे। इहां पन्नवणानो चोत्रीसमो आहार पद भणिवो। केतले प्रकारे हेपूज्य आउखानोबंध कह्यो। हेगौतम ६ प्र
कारे। तेकहेछे। जातिनाम साथे भोगिवाने अर्थे थाप्यो थोडो तथा घणो ते जातिनामनिधत्तायु १। एम नरकगत्यादिक लक्षण नामकर्म तेहने साथे
थाप्यो वांध्यो ते गतिनामनिधत्तायु २। एम आउखाना दलनो जेणे भवे नियत रहिवोते स्थितिनाम अथवा गति जात्यादि कर्मप्रकृति भेदेकारी जे स्थि

चतुर्विधानां यः स्थितिरूपोभेद स्तत् स्थितिनाम तेनसह निधत्तमायुः स्थितिनामनिधत्तायुरिति पएसनामनिधत्तायुएत्ति प्रदेशाना ममितपरिणामाना मायुः कर्म दलिकाना नामः परिणामोदयः तथात्मप्रदेशेषु सम्बन्धन स प्रदेशनामो जातिगत्यवगाहनाकर्म्मणा म्वा यत्प्रदेशरूप नामकर्म्म तत्प्रदेशनाम तेन सह निधत्तमायुः प्रदेशनामनिधत्तायुरिति तथा अणुभागनिधत्ताउएत्ति अनुभाग आयुः कर्म्मद्रव्याणां तीव्रादिभेदोरसः सएव तस्य वा नामः परिणामो नुभागनाम अथवा गत्यादीनांनामकर्म्मणा मनुभागबन्धरूपो भेदो ऽनुभागनाम तेनसह निधत्तमायु रनुभागनामनिधत्तायुरिति तथा ओगाहणानामनिध त्तायुएत्ति अवगाहते जीवो यस्यां सा वगाहना शरीरमौदारिकादि पञ्चविध तत्कारण कर्म्माप्यवगाहना तद्रूपन्नामकर्म्मा वगाहनानाम तेनसह निधत्तमा युरवगाहनानामनिधत्तायुरिति नेरइयाणमित्यादि स्पष्ट अनन्तरमायुर्बन्धउक्तो ऽधुनाबद्घायुषां नारकादिगतिषूपपातो भवतीति तद्विरहकालप्ररूपणायाह

तंजहा । जाइनामनिहत्ताउए गतिनामनिहत्ताउए ठिईनामनिहत्ताउए पएसनामनिहत्ताउए अणुभागनाम

ति ते स्थिति निधत्तायु ३ । प्रदेश परिमाण जे आउखानादलनो परिमाण तेहने साथे बाध्यो आयु ते प्रदेश निहत्तायु ४ । आयुकर्मद्रव्यनो तीव्रादिक भेदें जेरस तेअनुभाग तेहने साथे वाध्यो आयु तेह अनुभागनामनिधत्तायु ५ । अवगाहीने रहे जीव जिहां तेअवगाहना औदारिकादि ५ भेदे तेहनो कारण कर्म तेहीपिण अवगाहनारूप नामकर्म अवगाहना ६ । नारकीनो हे पूज्य केतले प्रकारे आउखानो वध कहिवो । हे गौतम ६ प्रकारे नाकीनो आउखानो बध ६ प्रकारे । तेकहेछे । जातिनाम निहत्तायु १ । गतिनाम निहत्तायु २ । स्थितिनाम निहत्तायु ३ । प्रदेशनाम निहत्तायु ४ । अनुभागना म निहत्तायु ५ । जिहांलगे अवगाहना निहत्तायु ६ भेदहोवे ६ । एम २४ दण्डके ६ भेदे आउखानो बध कहिवो जिहांलगे वैमानिक देवता आवे ।

निरयगतीणमित्यादि कंठ्यं नवरं यद्यपि रत्नप्रभादिषु चतुर्विंशतिमुहूर्त्तादिविरहकालो यथोक्तं चउवीसाइमुहुत्ता सत्तग्रहोरत्ततहयपन्नरसा मासोयदोयचउरो छम्मासाविरहकालो उएत्ति ॥ १ ॥ तथापि सामान्यगत्यपेक्षया द्वादशमुहूर्त्ता उक्ताः तथा एवकरणा द्य त्तिर्यङ्मनुष्यगत्योः सामान्येन द्वादशमुहूर्त्ता उक्ताः तद्गर्भव्युत्क्रान्तिकापेक्षया देवगतौतु सामान्यतएव सिद्धिवज्जाउव्वट्टणेत्ति नारकादिगतिषु द्वादशमुहूर्त्तौ विरहकाल उद्वर्त्तनाया मिति सिद्धानां तूद

निहत्ताउए उगाहणानामनिहत्ताउए । नेरइयाणंभंते कइविहे आउगबंधे पन्नत्ते गोयमा छव्विहे पन्नत्ते । तंजहा । जातिनामगतिनामठिईनामपएसनामअणुभागनामओगाहणानाम एवंजाववेमाणियाणं निरयगईणं भंते केवइयंकालं विरहिया उववाएणं । गोयमा जहन्नेणं एक्कसमयं उक्कोसेणं वारसमुहुत्ते । एवंतिरियग इ मणुस्सगइ देवगइ सिद्धिगईणं भंते केवइयंकालं विरहिया सिज्झयणा पन्नत्ता । गोयमा जहन्नेणं ए

हिवे उपपात विरह च्यवन विरह आश्री प्रश्न करेछे। नरक गतिमांहि हे पूज्य केतली उपपात विरह। हे गौतम नारकीनो जघन्य उपपात विरह १ समय एक नारकीनें उपनापछी बीजो१ समयने आतरे उपजे यद्यपि रत्नप्रभादिकने विषे २४ मुहूर्त्तादिक विरह काल कह्योछे यदाह। चोबीसायमुहुत्ता सत्तग्रहोरत्ततहयपन्नरसा । मासोयदोयचउरो छम्मासो विरहकालोउत्ति ॥ १ ॥ तोही पिण सामान्यगति अपेक्षाये १२ मुहूर्त्त कह्या। उत्कृष्टपणे १२ मुहूर्त्त जाणवा। एम तिर्यंचगति मनुष्यगति देवगति नोउपपात जाणिवो। हिवे सिद्धिगतिनो उपपात केतलेकाले सीझवो कह्यो। हेगौतम जघन्य १ समये १ सिद्ध उपनापछे बीजो सिद्ध १ समयना अंतरथी उपजे। उत्कृष्ट ६ मासनो विरह। एम जिम उपपात विरह तिमहीज च्यवनविरह। एक चव्यां पछे

संभैव नास्ति अपुनरावृत्तित्वा त्तेषामिति इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए नेरइयाकेवइयंकालंविरहियाउववाएणं पण्णत्ता एवंउववायदंडओभाणियव्वोत्ति सचा यं गोयमा जहण्णेणएक्कसमय उक्कोसेणंचउवीसमुहुत्ताइ अनेनाभिलापेन शेषावाच्याः तथाहि सक्करप्पभाए उक्कोसेणसत्तराइंदियाणि वालुयप्पभाए अद्धमास पंकप्पभाएमास धूमप्पभाए दोमासा तमप्पभाए चउरोमासा अहेसत्तमाएछमासत्ति असुरकुमाराचउवीसइमुहुत्ता एवजावथणियकुमारा पुढविकाइया अवि रहियाउववाएण एवंसेसावि बेइ दिया अतीमुहुत्तं एवंतेइ दियचउरिंदियसमुच्छिमपचिंदियतिरिक्ख जोणियाविगब्भवक्कतियतिरियमणुयाय बारसमुहुत्ता समुच्छिमणुस्सा चउवीसाइ मुहुत्ताविरहिया उववाएण वतरजोइसियाचउवीस मुहुत्ताइं एव सोहम्मीसाणेवि सणकुमारे णवदिणाइं वीसायमुहुत्ता माहिं देबारसदिवसाइं दसमुहुत्ता बभलोए अद्धतेवीसंराइंदियाइ लतएपणयालीस महासुक्केअसीइं सहस्सारेदिणसयं आणएसखेज्जामासा एवपाणएवि आरणे सखेज्जावासा एवमच्चुएवि गेवेज्जपत्थडेसुतिसुकमेणसंखेज्जाइं वाससयाइं वाससहस्साइं वाससयसहस्साइं विजयाइसु असंखेज्जकाल सव्वट्ठसिद्धे पलिओवम स्सासखेज्जइभागंति एवउव्वट्टणाइं ति उपपातउद्वर्त्तनाचायुर्बंधेएव भवती त्यायुर्बन्धविशेषप्ररूपणायाह नेरइएत्यादि क्षत्र नवरं आकर्षोनाम कर्मपुद्गलोपा

क्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासे एवंसिद्धिवज्जा उव्वट्टणा । इमीसेणं भंतेरयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केवइयं

बीजोपवे । पिण सिद्धने उद्वर्त्तनां च्यवन नथी सिद्धथकी निकलवो नथी । हिवे रत्नप्रभा पहिली नरक पृथिवी आश्री पूछेछे । हेपूज्य एणीये रत्नप्रभाने वि षे केतलो नारकीनो उपपात विरह । जिम ओघवचने पूर्वे कह्यो तिमज कहिवो । जघन्य १ समय उत्कृष्ट २४ मुहूर्त्त एम २४ दंडकनो टीका तथा ग्रं थांतर थकी जाणिवो । रत्नप्रभाने विषे जिम उपपात विरह तिम इहां पणि कहिवो । च्यवन विरह पिण कहिवो । हेपूज्य नारकी जातिनाम निहत्तायु

दानं यथा गौ.पानीयम्पिवती भयेन पुनःपुनः आवंहति एवञ्जीवोपि तीव्रेणायुर्बन्धाध्यवसानेन सकृदेव जातिनामनिधत्तायुः प्रकरोति मन्देनद्वाभ्यामाक र्षाभ्यामन्दतरेणत्रिभिर्मन्दतमेन चतुर्भिः पञ्चभिः षड्भिः सप्तभिरष्टाभिर्वानपुनर्नवभिरेवं शेषाख्यपि आउगणित्ति गतिनामनिधत्तायुरादीनिवाच्यानिया वद्वैमानिकाइति अयञ्चैकाद्याकर्ष नियमोजात्यादिना कर्म्मणाआयुर्बन्धकालएवबध्यमानानां नशेषकालमायुर्बन्धपरिसमाप्तेरुत्तरकालमपि बन्धोस्त्येवैषां ध्रुवबन्धिनीनाञ्च ज्ञानावरणादिप्रकृतीना मतिसमयमेवबन्धनिर्वृत्तिर्भवत्येतास्तुपरावृत्त्याबध्यन्तइति अनन्तरञ्जीवानामायुर्बन्धप्रकार उक्तो ऽधुनातेषामेव संहननसंस्थानवेदप्रकारानाह कइविहेणमित्यादि दण्डकत्रय कव्यम् नवरं संहनन मस्थिबन्धविशेषः मर्क्कटस्थानीयमुभयो' पार्श्वयो रस्थि नाराचं ऋषभस्तु

कालं विरहिया उववाएणं । एवं उववायदण्डनाणियव्वो । उव्वट्टणादंडउय । नेरइयाणं भंते जातिनामनि हत्ताउगं कतिआगरिसेहिं पगरंति सिय १ सिय २ ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । सियअठेहिं नोचेवणंनव

करेछे । आकर्ष करी कर्मपुद्गलनो अंगीकार करिवो जिम गाय पाणी पीतीथकी भयेकरी वलीवली हिसारो करी पीवे तिम जीवपणि तीव्र आयुबंधाध्य वसायेंकरो १ वेला जातिनाम निहत्तायु करे । स्यात्कदाचित् मन्दाध्यवसायें जातिनाम निहत्तायु करे तो बेआकर्षेकरे । मदतरे करेतो त्रिहुयें करे । एम विहुये। पांचे । छत्ते । साते । आठें करे । एवत्ति शेष थाकता २३ दडकनाजीवना नारकीनो परे आकर्ष कहिवा जिहांलगी वैमानिक देवता आवे । हिवे पूर्वं आयुबंध कह्यो तेसंघयणना धणीने होय तेमाटे संघयण कहेछे । कितले प्रकारे हेभदंत संघयण कह्यो । हेगौतम ६ भेदे संघयणअस्थिबंधविशेष कह्यो । तेकहेछे । मर्कटमेठामे बिहुपासे हाडते नाराच कहिये । ऋषभते पाटो वज्रते कीलिका एत्रिणत्राना जिहां होय तेवज्र ऋषभनाराचसंघयण कहिये १ ।

पट्टं वज्र कीलिका वज्रश्च ऋषभश्च नाराचश्च यत्रास्ति तद्वज्रर्षभनाराचं संहननं मर्कटकपट्टकीलिकारचनायुक्तः प्रथमो स्थिबन्धः मर्कटपट्टकीलिकाभ्यां द्वितीयः मर्कटयुक्तस्तृतीयः मर्कटवैकदेशबन्धनद्वितीयपार्श्वकीलिकासम्बन्ध श्चतुर्थः अङ्गुलिद्वयसयुक्तस्य मध्ये कीलिकैवदत्ता यत्र तत्कीलिकासंहननं म्पञ्चमं यत्रास्थीनि चर्म्मणा निकाचितानि केवलं न्तत्सेवार्त्तं स्नेहपानादीनां नित्यपरिशीलनासेवा तया ऋत इति प्राप्त सेवार्त्तमितिषष्ठ छण्हंसंघयणाणअसंघयणेत्ति उक्तरूपाणां षण्णां संहननानामन्यतमस्याप्यभावेन संहनिनो ऽस्थिसचयरहिता अतएवाह नेवट्ठी नेवास्थीनि तच्छरीरके नेवच्छिरत्ति नैवशिराधमन्यः नैवण्हाउत्ति नैवस्नायूनीति कृत्वा संहननाभावः तत्सहितानाहि प्रचुरमपि दुःखमबाधाविधायित्वात् नारकास्त्वत्यत शीतादिबाधिता इति नचास्थिसञ्चया भावे शरीर

ठीहिं एवं सेसाणविच्छाजंगा करिसाणि जाव वेमाणियाणं । कइविहेणं भंते संघयणे पन्नत्ते । गोयमा छव्विहे पन्नत्ते । तंजहा वइरोसभनारायसंघयणे रिसभनारायसंघयणे नारायसंघयणे अद्धनारायसंघयणे कीलियासंघयणे छेवट्ठसंघयणे । नेरइयाणं भंते किंसंघयणी । गोयमा छण्हंसंघयणाणअसंघयणी । णेव

बीजो ऋषभनाराच ते मर्कट किलिका सहित २ । त्रीजो नाराच संघयण मर्कट सहित ३ । चउथो अर्द्धनाराच एकेपासे मर्कटबंध बीजेपासेकीली ४ । पांचमो कीलिका अंगुलबेने सयुक्तने मांहि कीलिका १ जिहांदीधी ते कीलिका संघयण ५ । सवर्त्त तेजिहां हाडिकाचर्मवींटी छे घृत तेलना सेचंकरी पाम्यो ते सेवार्त्त संघयण ६ । हिवें नारकी आश्री संघयण पूछेछे । हे भगवंत नारकीमांहि के संघयण पामिये । हे गौतम पूर्वोक्तछहुंमाहि १ इनपामिये हाडनही नाडीनथी मीटीनशानथी जेनारकीमा पुद्गलछे तेअनिष्ट अवल्लभ अकांत अप्रिय द्वेषकरवायोग्य अनादेय अशुभ प्रकृतिथीअसुंदर अमनोज्ञ

नोपपद्यते स्कन्धवत्तदुपपत्तेः अतएवाह जेपोग्गलेत्यादि येपुद्गला अनिष्टा अवल्लभाः सदैवैषां सामान्येन तथा अकान्ता अकमनीयाः सदैव तद्भावेन तथा अप्रिया द्वेष्याः सर्वेषामेव तथा शुभाः प्रकृत्यसुन्दरतया अमनोरमाः कथयापि तथा अमणामा नमनःप्रिया चिन्तयापि तेएवम्भूताः पुद्गला स्तेषां नारकाणां असंघयणत्ताएत्ति अस्थिसञ्चयविशेषरहितशरीरतया परिणमति कइविहेसठाणेत्यादि तत्र मानोन्मानप्रमाणानि अन्यूनान्यनतिरिक्तानि अङ्गोपाङ्गानिच यस्मिन् शरीरसंस्थाने तत्समचतुरस्र संस्थानं तथा नाभितउपरि सर्वावयवाश्चतुरस्रलक्षणा ऽविसंवादिनो ऽधस्तु तदनुरूपयत्तन्नभवति तन्न्यग्रोध संस्थान तथा नाभितोऽधः सर्वावयवा श्चतुरस्रलक्षणाअविसम्वादिनो यस्योपरिच यत्तदनुरूप नभवति तत्सादिसंस्थान तथाग्रीवाहस्तपादा श्चसमचतुरस्रलक्षणयुक्ता यत्र संक्षिप्त म्विकृतञ्च मध्ये कोष्टं तत्कुब्ज संस्थान न्तथा यल्लक्षणयुक्ताकोष्टं चतुरस्रलक्षणोपेतं ग्रीवाद्यवयवहस्तपादञ्च तद्वामन न्तथा यत्र हस्तपादाद्यवयवा

णेवच्छिरा णेवण्हाऊ जेपोग्गलाअणिठा अकंता अप्पिया अणाएज्जा असुभा अमणुण्णा अमणामा तेतेसिं असंघयणत्ताए परिणमंति । असुरकुमाराणं किंसंघयणा पन्नत्ता । गोयमा छण्हंसंघयणाणं असंघयणी णेवठी णेवच्छिरा णेवण्हाऊ जेपोग्गला इठा कंता प्पिया मणुण्णा मणाभिरामा तेतेसिं असंघयण

अमनोरम । तेह नारकोने असंघयणपणे परिणमेछे । अस्थिसंचयरहित शरीर परिणामे परिणमे। हेपूज्य असुर कुमार कोण संघयणे कह्या। हे गोतम छ संघयण मांहि असंघयणी हाडनथी शिरानथी छोटोनसनथी वडोनसनथी असुर कुमारना जेह पुद्गल पदार्थ छे तेह इष्ट वल्लभ छे कांतकमनीय प्रियमनोज्ञ मनोभिराम ते तेहने असंघयणपणें परिणमे। एम नागकुमार थकी मांडी जिहांलगे स्तनितकुमार दशमीनिकाय तिहांलगे असंघय

त्ताए परिणमंति । एवं जावथणियकुमाराणं पुढवी किंसंघयणी पन्नत्ता । गोयमा छेवठसंघयणी प० एवं जावसमुच्छिम पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ति । गब्भवक्कंतिया छव्विहसंघयणी समुच्छिम मणुस्साणं छेवठ संघयणी गब्भवक्कंतियमणुस्साणं छव्विहे संघयणे प० । जहाअसुरकुमारा तहावाणमंतर जोइसिय वेमाणिया य । कइविहेणं भंते संठाणे पन्नत्ते । गोयमा छव्विहे संठाणे प० तं० । समचउरंसे १ णिग्गोहे २ साइए ३ खुज्जे ४ वामणे ५ हुंडे ६ । णेरइयाणं भंते किंसंठाणी प० । गोयमा हुंडसंठाणी प० । असुर

सी कहिवा । हिवे पृथिवी आश्रीपूछेछे । हेपूज्य पृथिवीनो कोण संघयण हेगौतम छेवठो संघयण । एम ५ थावर ३ विकलेंद्री समूर्च्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिया जीव सर्व छेवठो संघयणे कहिवा । गर्भ व्युत्क्रांत तिर्यंचना ६ संघयण । समूर्च्छिम मनुष्यनो छेवठो संघयण । गर्भजना छहुं संघयण जाणिवा जिम असुर कुमार असंघयणी कह्या तिमज वाणव्यंतर ज्योतिषी वैमानिक देव जाणिवा । हिवे संस्थान आश्री पूछेछे । हेभदंत संस्थान केतलाछे । हे गौतम संस्थान ते आकार विशेष ६ प्रकारे कह्यो । तेकहेछे । मान उन्मान प्रमाणोपेत ओछा अधिकानही अंगोपांग जेहना तेसमचतुरस्र संस्थान १ तथा नाभिथकोहेठे सगला अवयव चतुरस्र होय तथा नाभि ऊपर सगला अवयव चतुरस्र होय नाभिहेठे आकारमांठो होय ते न्यग्रोध परिमंडल २ । तथा नाभिथकीहेठे सगला अवयव चतुरस्र होय तथा नाभि ऊपर मांठोहोय ते सादिसंस्थान ३ । तथा ग्रीवा हाथ पांव समचतुरस्रहोय मध्यकोठो सविस्त होय नानूंहोय ते कुब्ज संस्थान ४ । तथा लक्षणोपेत कोठोहोय अने हाथ पग ग्रीवा तेछोटाहोय तेवामनसंस्थान ५ । तथा हस्त पादादिक अवयव अप्रमाणोपेत होय तेहुंडकसंस्थान ६ । नारकीनो

बहुप्राय्य प्रमाणविसम्वादिनय तद्धुण्डमित्युच्यते कइविहेवेदेत्यादि तत्र स्त्रीवेदः पुरुषकामिता पुरुषवेदः स्त्रीकामिता नपुंसकवेदः स्त्रीपुंस्कामितेति एतेच

कुमाराकिंसंठाणी प० गोयमा समचउरंससंठाण संठिया प० एवं जावथणियकुमारा । पुढवी मसूरियसं ठाणा प० । आउथिवुयसंठाणा पन्नत्ता । तेउसूइकलावसंठाणा पन्नत्ता । वाऊपडागसंठाणे पन्नत्ते । वण स्सई नाणासंठाणसंठिया पन्नत्ता । बेइंदियतेइंदियचउरिंदिय समुच्छिम पचेंदियतिरिक्खाहुंडसंठाणा प० गब्भवक्कंतियाछव्विहसंठाणा । समुच्छिम मणुस्सहुंडसंठाणसंठिया पन्नत्ता । गब्भवक्कंतियाण मणुस्साणं छ व्विहासंठाणा पन्नत्ता । जहाअसुरकुमारा तहावाणमंतरजोइसियवेमाणिया । कइविहेणं भंतेवेए प० । गो

हे पूज्य कोण संठाणकह्यो । हेगोतम हुंड संस्थान कह्यो । असुर कुमार देवता समचउरस संस्थान संस्थित कह्या । जिहां लगे दशमो निकायना स्तनि त कुमार आवे । पृथिवी मसूर धान्य ने संस्थाने संस्थित कह्यो । पांणीनो संस्थान पाणीनोपपोटो कह्यो । अग्निनो संस्थान सूचीकलाप सूईना समूहने संस्थानेकह्यो । वायुनो पताका संस्थान कह्यो । वनस्पती अनेक प्रकारे संस्थितकह्यो । बेइन्द्री तेइन्द्री चोइन्द्री समूर्छिम पचेंद्री तिर्यंचनो हुंड संस्थान कह्यो । गर्भज तिर्यंच ६ संस्थान संस्थित कह्या । समूर्छिम मनुष्यनो हुंड संस्थान । गर्भजमनुष्य ६ संस्थान संस्थित कह्या । जिम असुर कुमार समच उरंस संस्थान संस्थित कह्या तिमज वाणव्यंतर ज्योतिषी अने वैमानिक कहिवा । हे भदंत वेद केतले प्रकारे कह्या । गौतम ३ प्रकारे कह्या । ते कहेछे ।

पूर्वोदिता अर्थाः समवसरणस्थितेन भगवता देशिता इति समवसरणवक्तव्यता माह। तेणमित्यादि इह णकारौ वाक्यालङ्कारार्थौ वत स्ते इति प्राकृतत्वात् तस्मिन् काले सामान्ये दुःखमसुखमालक्षणे तस्मिन् समये विशिष्टे यत्र भगवानेव विहरतिस्मेति कप्पस्स समोसरण नेयव्वति इहावसरे कल्पभाष्यक्रमेण स

यमा तिविहेवेए प०। इत्थीवेए पुरिसवेए णपुंसगवेए। नेरइयाणं भंते किंइत्थीवेया पुरिसवेया णपुंसगवेया प०। गोयमा णोइत्थीवेया णोपुरिसवेया णपुंसगवेया प०। असुरकुमाराणं भंते किं इत्थीपुरिस नपुंसगवेया। गोयमा इत्थीपुरिसवेया णो णपुंसगवेया। जावथणियकुमारा। पुढवीआऊतेउवाऊवणस्सई बितिचउरिंदियसमुच्छिम पंचिंदियतिरिक्खसमुच्छिम मणुस्सा णपुंसगा। गब्भवक्कंतियमणुस्सा पंचिंदियतिरियायतिवेया जहाअसुरा तहावाणमंतरजोइसियवेमाणिया। तेणं कालेणं तेणं समएणं कप्पस्ससमोसर

स्त्रीवेद १। पुरुषवेद २। नपुंसकवेद ३। नारकीनो हे भदंत स्यूं स्त्रीवेद किंवा पुरुषवेद किवा नपुसकवेद। हे गौतम स्त्रीवेद नथी पुरुषवेद नथी नपुंसकवेदहोय। असुर कुमारने हे पूज्य किंस्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद होय। गोयमा स्त्रीवेदहोय पुरुषवेदहोय नपुंसकवेद नहोय। एम जिहां लगे स्तनितकुमार आवे तिहांलगे कहिवो। पृथ्व आऊ तेज वायू वनस्पत बेइन्द्री तेइन्द्री चोइन्द्री समूर्च्छिम पचेंद्रियतिर्यंच समूर्च्छिम मनुष्य एतलानो नपुंसकवेद। गर्भजतिर्यंच गर्भज मनुष्य त्रिवेदी। जिम असुर कुमारमांहि पुंस्त्री वेवेद कह्या तिम वाण व्यंतर ज्योतिषी वैमानिक मांहि कहिवा। तेणे काले चउथे आरे तेणें समयें जेणे समये भगवंत विहार करे छे तेणे अवसरे कल्पभाष्यने अनुक्रमें अनुयायी समोसरणनी वक्तव्यता कहिवी। वाचनांतरे

मवसरणवक्तव्यता ध्येयासा चावश्यकोक्ता या नव्यतिरिच्यते वाचनान्तरेतु पर्युषणाकल्पोक्तक्रमेणे त्वभिहितं कियद्दूरमित्याह जावगणेत्यादि तत्र गणधरः प
ञ्चमः सुधर्म्माख्यः सापत्यः शेषानिरपत्या अविद्यमानशिष्यसन्ततय इत्यर्थः वोच्छिन्नत्ति सिद्धाइति तथाहि परिनिव्वुयागणहरा जीवन्ते नायएनजणाओ
इ इभूइसुहम्मेय रायगिहेनिव्वएवीरेत्ति अयञ्च समवसरणनायकः कुलकरवंशोत्पन्नो महापुरुषश्चेति कुलकराणा म्वरपुरुषाणाञ्च वक्तव्यतामाह जबुद्दीवेत्यादि
सुगम नवर म्पढमेत्थविमलवाहण चक्खुमजसमचउथमभिचदे तत्तोयपसेणइए मरुदेवेचेवनाभीयत्ति ॥ १ ॥ तथा चदजसचंदकन्ता सुरूवपडिरूवचक्खुकंताय

णं णेयव्वं । जावगणहरा । सावच्चा निरवच्चा वोच्छिन्ना । जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे तीयाएउस्सप्पिणी
ए सत्तकुलगराहोत्था तं०। मित्तदामेसुदामेय सुपासेयसयपभे विमलघोसेसुघोसेय महाघोसेयसत्तमे ॥ १ ॥
जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे तीयाए उसप्पिणीए दसकुलगराहोत्था तंजहा । सयंजलेसयाऊय जियसेणाणंत
सेणय कज्जसेणेभीमसेणे महासेणेयसत्तमे ॥ २ ॥ दढरहे दसरहे सयरहे । जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे इमी

पर्युषणाकल्पोक्त मे जेकह्योछे स्थविरावलीने अधिकारे तेसर्व काहिवो जिहालगे पांचमो गणधर सुधर्मास्वामी सतान सहित एतले शिष्य प्रशिष्या
दिके युक्त शेष थाकता १० गणधर निरपत्य शिष्यादि संपति रहित हुया । जबूद्वीपनामा द्वीपने विषे भरतक्षेत्रे गई उत्सर्प्पिणीयें सात कुलकर हुया ।
मित्रदाम १ । सुपार्श्व २ । सुदाम ३ । स्वयप्रभ ४ । वली विमलघोस ५ । सुघोस ६ । महाघोस ७ । सातमो । १ । जबूद्वीपनामा द्वीपने विषे भरतक्षेत्रे गई
अवसर्प्पिणीयें १० । कुलकर हुया । स्वयजल १ । शतायु २ । अजितसेन ३ । अनतसेन ४ । कार्यसेन ५ । भीमसेन ६ । महाभीमसेन ७ । दृढरथ ८ । दशर

सिरिकंतामरुदेवी कुलगरपत्तीणनामाइंति ॥ २ ॥ तथा नाभीनजियसत्तूय जियारीसंबरेद्दय मेहेधरेपइठेय महसेणेयखत्तिए ॥ ३ ॥ सुग्गीवेदढरहेविण्हू
वसुपुज्जेयखत्तिए कयवम्मासीहसेणे भाणूयविस्ससेणिय ॥ ४ ॥ सूरेसुदसणेकुंभे सुमित्तविजएसमुद्दविजयेय रायायआससेणेय सिद्धत्थेच्चियखत्तिएचि ॥ ५ ॥

से उसप्पिणीए समाए सत्तकुलगराहोत्था तंजहा । पढमेत्थविमलवाहण चक्कुमजसमंचउत्थमभिचंदे । त
त्तोपसेणइए मरुदेवेचेवनाभीय ॥ ३ ॥ एतेसिणं सत्तण्हंकुलगराणं सत्तभारिआहोत्था तंजहा । चंदजस
चंदकंता सरूवपडिरूवचक्कुकंताय । सिरिकंतामरुदेवी कुलगरपत्तीणणामाइं ॥ ४ ॥ जबूद्दीवेणंदीवे भारहे
वासे इमीसेणं उसप्पिणीए चउवीसं तित्थगराणं पियरोहोत्था तंजहा । णाभीयजियसत्तूय जियारीसवरे
विय मेहेधरेपइठेय महसेणेयखत्तिए ॥ ५ ॥ सुग्गीवेदढरहेविण्हू वसुपुज्जेयखत्तिये । कयवम्मासीहसेणे

य ८ । सतरथ १० ॥ २ ॥ जबूद्दीपना भरतक्षेत्रने विषे वर्त्तमान अवसर्प्पिणीये सात कुलकर थया । ते कहेछे । पहिला विमलवाहन १ । चक्षुष्मा २ । यशो
मान् ३ । चउथो अभिचंद्र ४ । प्रसेनजित् ५ । मरुदेव ६ । नाभी ७ ॥ ३ ॥ एह सात कुलकरांनी ७ स्त्री थई । तेकहेछे । चंद्रयसा १ । चन्द्रकांता २ । सुरूपा
प्रतिरूपा ४ । चक्षुष्कांता ५ ५ । सिरिकांता ६ । मरुदेवा ७ । एहकुलकरानी स्त्रीनानाम जाणिवा ॥ ४ ॥ जम्बूद्दीप सवधी भरत क्षेत्रने विषे वर्त्तमान अवस
र्प्पणीयें चोवीस तीर्थंकरांना पिता थया तेकहेछे । नाभि । १ । जितशत्रु २ । जितारि ३ । संवर ४ । मेघ ५ । धर ६ । प्रतिष्ठ ७ । महसेन क्षत्रिय ८ ३
॥ ५ ॥ सुग्रीव ८ । दृढरथ १० । विष्णु ११ । वसुपूज्य १२ । कृतवर्म्मा १३ । सिंहसेन १४ । भानु १५ । विश्वसेन १६ । सूर १७ सुदर्शन १८ । कुंभ १९ । सु

तथा मरुदेवि विजयसेणा सिद्धत्थामंगलासुसीमाय पुहवीलखणागमा नंदाविएहजयासामा ॥ ६ ॥ सुजसासुव्वयअइरा सिरिआदेवीपभावईपउमा वप्पासिवा

नाणूयविस्ससेणय ॥ ६ ॥ सूरेसुदंसणेकुंभे सुमित्तविजएसमुद्दविजएय । रायायआससेणेय सिद्धत्थेच्चियखत्ति
ए ॥ ७ ॥ उदितोदियकुलवंसा । विसुद्धवंसागुणेहिउववेया । तित्थप्पवत्तयाणं । एएपियरोजिणवराणं ॥ ८ ॥
जंबूद्दीवेणदीवे भारहेवासे इमीसेउसप्पिणीए चउवीसंतित्थगराणं मायरोहोत्था तं० । मरुदेवि विजयसेणा
सिद्धत्थामंगलासुसीमाय । पुहवीलखणासामा नंदाविएहूजयासामा ॥ ९ ॥ सुजसासुव्वयअइरा सिरिआदेवी
पभावईपउमा । वप्पासिवायवामा तिसलादेवीयजिणमाया ॥ १० ॥ जंबूद्दीवेभारहेवासे चउवीसंतित्थग

मिन २० । विजय २१ । समुद्रविजय २२ । राजाअश्वसेन २३ । सिद्धार्थ क्षत्रिय २४ ॥ ६ ॥ एह २४ राजा केहना हुवा उदय प्राप्त वर्णू मोटोवंश तेहना
शुद्ध महा निर्दोष वंशछे जेहना । राजानागुणेकरी सहितछे । तीर्थ धर्मतीर्थना प्रवर्तक तीर्थंकर जिनवीतरागना पिता कह्या ॥ ७ ॥ जंबूद्वीपने
विषे भरतने एणी अवसर्पिणीयें २४ तीर्थंकरानो मातायई । तेकहेछे । मरुदेवी १ । विजया २ सेना ३ । सिद्धार्था ४ । सुमंगला ५ । सुसीमा ६ ।
पृथिवी ७ । लक्ष्मणा ८ । रामा ९ । नंदा १० । विष्णु ११ । जया १२ । श्यामा १३ । सुजसा १४ । सुव्रता १५ । अचिरा १६ । श्री १७ । देवी १८ । प्रभा
वती १९ । पद्मावती २० । वप्रा २१ । शिवा २२ । वामा २३ । त्रिशला । २४ । एह जिनमाता २४ कही ॥ ८ ॥ जंबूद्वीपने विषे भरतक्षेत्रे एणीये अवस
र्पिणीये चोवीस तीर्थंकर देवहुया । ते कहेछे । ऋषभ १ । अजित २ । संभव ३ । अभिनंदन ४ । सुमति ५ । पद्मप्रभ ६ । सुपार्श्व ७ । चंद्रप्रभ ८ । सु

राहोत्था तंजहा। उसभ्रजियसंभव अभिणंदणसुमइ पउमप्पभसुपास चंदप्पभ सुविहिपुप्फदंतसीयल सिज्जंसवासुपुज्ज विमलअणंत धम्मसंतिकुंथु अर मल्लिमुणिसुव्वयणमिणेमि पासवद्धमाणोय। एएसिंचउवीसाएतित्थगराणं चउव्वीसं पुव्वभवया णामधेया होत्था तजहा। पढमेत्थवइरणाभे विमलेतहविमलवाहणे चेव। तत्तोयधम्मसीहे सुमित्ततहधम्ममित्तेय ॥ ११ ॥ सुंदरबाहुतहदीह। बाहुजुगबाहुलट्ठबाहूय। दिण्णेयइंददत्ते। सुदरमाहिंदरेचेव ॥ १२ ॥ सीहरहेमेहरहे। रुप्पीअसुदंसणेयबोधव्वा। तत्तोयनंदणेखलु। सीहगिरीचेववीसइमे ॥ १३ ॥ अदीणसत्तुसंखे। सुदसणेनदणेयबोधव्वे। इमीसेउसप्पिणीए एएतित्थ

विधि वीजोनाम पुष्पदत ९। शीतल १०। श्रेयांस ११। वासुपूज्य १२। विमल। अनत १४। धर्म १५। शाति १६। कुंथु १७। अर १८। मल्लि १९ मुनि सुव्रत २०। नमि २१। नेमि २२। पार्श्व २३। वर्द्धमान २४। एह २४ तीर्थंकरना पूर्व भवनानामधेय एतले। जेणे भवे तीर्थंकर नामकर्म उपार्ज्यो। तेह भवथी ३ भवकरे तेह पूर्व भवथयो। तेकहेछे। प्रथम आदिनाथनो जीव महाविदेह क्षेत्रे ११ मेभवे वज्रनाभचक्रवर्त्तथयो तिहां २० स्थानक आराधीने तीर्थंकर गोत्र उपार्जन कियो तिहांथी सर्वार्थ सिद्ध पहुता तिहांथीचवी आदिनाथ थया एतले तीर्थंकरना भवथी ३ भवमनुष्यनो तेपूर्व भवने क्रमे २४ कहेछे। पहिलो वज्रनाभ १। विमल २। तथा विमलवाहन ३। ततः धर्मसिंह ४। सुमित्र ५। धर्ममित्र ६। सुंदरबाहु ७। तथादीर्घबाहु ८। युगबाहु ९। लब्धबाहु १०। दिन्न ११। इन्द्रदत्त १२। सुंदर १३। माहेंद्र १४। सिंहरथ १५ मेघरथ १६। रूपी १७। सुदसण १८। ततः नदन १९। सिंहगिरी २०।

यनामा तिसलाटेवीयजिणमायत्ति सव्वोउगसुभाएछायाएत्ति सर्वर्त्तुकया सर्वेषु शरदादिषु ऋतुषु सुखदयाच्छायया प्रभया आतपाभावलक्षणया वा युक्ता इति

कराणंतुपुव्वसिवा । एएसिंचउव्वीसाएतित्थकराणं चउव्वीसंसीयाउहोत्था तंजहा । सीयायसुदंसणासुप्प भाय सिद्धत्थसुप्पसिद्धाय विजयायवेजयती जयंतीअपराजियाचेव ॥ १४ ॥ अरुणप्पभचंदप्पभ । सूरप्पहअग्गि सप्पभाचेव । विमलायपचवण्णा । सागरदत्तायणागदत्ताय॥ १५ ॥ अभयंकरानिव्वुइकरी । मणोरमामणोह राचेव । देवकुरोत्तरकुरा । विसालचंदप्पभातीय ॥ १६ ॥ एआउसीआउ । सव्वेसिचेवजिणवरिंदाणं । सव्व जगवच्छलाणं । सव्वोउयसुखयछायाए । पुव्विंउखित्तामणु । स्सेहिसाहट्ठरोमकूवेहि । पच्छावहंतिसीयं । अ

श्रेणगगा २१ । गंग २२ । सुदर्शन २३ । नदन २४ । एहअनुक्रमे जाणिवा ॥ ८ ॥ एणी अवसर्पिणीये तीर्थंकराना पूर्व भवनाम जाणिवा एह २४ तीर्थं करानी २४ शिविका दीक्षानी पालखीछे । तेकहेछे। सुदर्शना १। सुप्रभा २ । सिद्धार्था ३ । सुप्रसिद्धा ४ । विजया ५ । वैजयती ६ । जयती ८ । अपराजिता ८ ॥ १४ ॥ अरुणप्रभा ९ । चन्द्रप्रभा १० । सूर्यप्रभा ११ । अग्निसप्रभा १२ । विमला १३ । पंचवर्णा १४ । सागरदत्ता १५ । नागदत्ता १६ ॥ १६ ॥ अभयकरा १७ । निवृत्तिकरी १८ । मनोरमा १९ । मनोहरा २० । देवकुरा २१ । उत्तरकुरा २२ । विशाला २३ । चन्द्रप्रभा २४ । एह शिविकामावेसीने दीक्षा लीधी तेदीक्षा शिविका जाणवो । सर्व जगत त्रिभुवन वत्सल महाउपकारी श्रेसे जिनेन्द्रनो । शिविका केहवीछे । सर्व शरदादिक ऋतु विषे सुखदायक छाया युक्त आतापना रहित छे। तेह शिविका पहिले हर्ष करी रोमकूप जेहना खडा थया छे एहवा मनुष्ये करी उपाडी पछे तेह शिविका प्रते असुरेन्द्र चमरा

शेष: तथा साहठ्ठरोमकूवेहिंति साशिविका यस्यां जिनोध्यारूढ:हृष्टरोमकूपैरुडुषितरोमभि रित्यर्थ: तथा चलचवलकुंडलधरत्ति चलाश्च ते चपलकुण्डलधराश्चेति वाक्य तथा स्वच्छन्देन स्वरुच्या विकुर्वितानि यान्याभरणानि मुकुटादीनि तानि धारयति येते तथा असुरेंद्रादयइतियोग: गरुलत्ति गरुडध्वजा: सुपर्णकुमारा इत्यर्थ: तथा सव्वेविएगदूसेण निग्गयाजिणवराचउव्वीस नयणामअन्नलिगे नयगिहलिगेकुलिगेयत्ति दूसेणत्ति एकेनवस्त्रेणेंद्रसमर्प्पितेनोपधिभूतेन युक्तानि

सुरिंदसुरिंदनागिंदा ॥ १८ ॥ चलचवलकुंडलधरा । सत्यंविकुव्वियाभरणधारी । सुरअसुरवंदआणं । वहंति सीअजिणदाणं ॥ १९ ॥ पुरउवहंतिदेवा । नागापुणदाहिणम्मिपासम्मि । पच्छिमेणअसुरा । गरुलापुण उत्तरेपासे ॥ २० ॥ उसभोअविणीयाए । बारवईएअरिठ्ठवरणेमी । अवसेसातित्थयरा । निक्खंताजम्मभूमीसु ॥ २१ ॥ सव्वेविएगदूसे । णणिग्गयाजिणवराचउव्वीस । णयणामअन्नलिगे । णयगिहिलिंगेकुलिंगे

दिक सुरेंद्र सौधर्मादिक नागेंद्र धरणेन्द्रादिक ॥ १८ ॥ एह असुरेंद्र केहवा छे चल हालता चपल जे कुंडल तेहना धरणहार छे । स्वच्छन्द आपणी रुचीये करी विकुर्व्या आभरण तेहना धरणहार छे। सुर देवता असुर भवनपत्यादिके करी वींट्या छे। एहवा थईने जिनेंद्रनी शिविकाने उपाडे ॥ १९ ॥ आगलि चाले देवता नागदेवता दक्षिण पासे चाले पिछाडी असुरेंद्र चमरादिक गरुड देवता सुपर्ण कुमार वली उत्तर पासे एतले डावे पासे ॥ २० ॥ ऋषभ आदिनाथे विनीता नगरीये दीक्षा लीधी । द्वारिकायें अरिष्टनेमीयें दीक्षा लीधी अने जाया सोरीपुरे । शेष २२ तीर्थंकर जन्म भूमियें दीक्षा लीधी ॥ २१ ॥ सघलाई तीर्थंकर देवने इन्द्रे १ देवदुष्य वस्त्र दीधो तेणे सहित नीकल्या अन्य लिङ्गे नही तथा गृहस्थ लिंगे नही केवली तीर्थंकरने लिंगे कुलिंगी शाक्या

ष्क्रान्ता इत्यर्थः नचान्यलिङ्गे स्थविरकल्पिकादिलिङ्गे तीर्थंकरलिङ्गएवेत्यर्थः कुलिङ्गे शाक्यादिलिङ्गे तथा एक्कोभगववीरो पासोमल्लीयतिहिंतिहिसएहिं भय वपिवासुपुज्जो छहिंपुरिससएहिंनिक्खतो ॥ १ ॥ उग्गाणभोगाणं राइस्राणचखत्तियाणच चउहिसहस्सेहिंउसभो सेसाश्रोसहस्सपरिवारा ॥ २ ॥ सुमइत्यनिच्च भत्तेण निगश्रोवासुपुज्जजिणो चोत्येणपुणपासो मल्लीवियअठ्ठमेणसेसाश्रो ॥ ३ ॥ छट्ठेणति सुमति रत्र नित्यभक्तेनानुपोषितो निष्क्रान्तइत्यर्थः तथा सम्वच्छरे

वा ॥ २२ ॥ एक्कोन्नगववंवीरो । पासोमल्लीयतिहिँतिहिँसएहिं । न्नगवंपिवासुपुज्जो । छहिँपुरिससएहिँनि क्खंतो ॥ २३ ॥ उग्गाणंन्नोगाणं । राइस्राणचखत्तियाणंच । चउसहस्सेहिँउसन्नो । सेसाउसहस्सपरिवारा ॥ १४ ॥ सुमइत्यणिच्चन्नत्ते । णणिग्गउवासुपुज्जचोत्थेणं । पासोमल्लीयच्चठ्ठ । मेणसेसाउछठेण ॥ २५ ॥ एएसिणंचउव्वीसाए तित्थगराणंचउव्वीस पढमन्निरकादायारोहोत्था तंजहा । सिज्जंसवंन्नदत्ते सुरिददत्तेयइ

दिक ने लिंगे नहीं ॥ ५ ॥ भगवत महावीर स्वामी एकला दीक्षा लीधी । पार्श्वनाथ अने मल्लिनाथ त्रिण २ से पुरुष साथे दीक्षा लीधी । १२ वासुपूज्य ६ से पुरुष साथे दीक्षा लीधी ॥ २३ ॥ उग्रवंशना भोगवंशना राजाना तथा मोटा चत्रिय एहवा ४००० पुरुष साथे आदिनाथे दीक्षा लीधी । शेष १९ । तीर्थ कर १००० पुरुष साथे दीक्षा लीधी ॥ २४ ॥ सुमति नाथ नित्यभक्ते दीक्षा लीधी । वासुपूज्यें चउत्थ भक्त १ उपवासे दीक्षा लीधी । पार्श्वनाथ मल्लिनाथ त्रि ण उपवासे दीक्षा लीधी । शेष २० तीर्थंकरे छठ भक्त २ उपवासे दीक्षा लीधी ॥ २५ ॥ एह २४ जिनने २४ प्रथम भिक्षा दायक थया । ते कहे छे । श्रेयांश १ । आदिनाथने श्रेयांशे पारणूं करायो एम २४ जाणवा ॥ ब्रह्मदत्त २ । सुरिन्द्रदत्त ३ । इन्द्रदत्त ३ । पद्म ५ । सोमदेव ६ । माहेंद्र ७ । सोमदत्त ८ ॥ २६

यं भिक्खा लडाउसभेण लोगनाहेण सेसेहिंबीयदिवसे लडाओपढमभिक्खाओत्ति तथा उसभस्सपढमभिक्खा खोयरसोआसिलोगनाहस्स सेसाणंपरमणं अमिय

ददत्तेय । पउमेयसोमदेवे । माहिंदेसोमदत्तेय ॥ २६ ॥ पुस्सेपुणव्वसूपुण । णंदसुणंदेजयेयविजयेय । तत्तो यधम्मसीहे । सुमित्ततहवग्गसीहेअ ॥ २७ ॥ अपराजियविस्ससेणे । वीसइमोहोइउसन्नसेणोय । दिन्नेव रदत्तधणे । बहुलोतहआणुपुव्वीए ॥ २८ ॥ एएविसुद्धलेसा । जिणवरभत्तीइपजलिउडाउ । तंकालंतंसमयं पडिलाभेईजिणवरिंदे ॥ २९ ॥ संवच्छरेणभिक्खा । लद्धाउसभेणलोयणाहेण । सेसेहिवीयदिवसे । लद्धाउ पढमभिक्खाउ ॥ ३० ॥ उसभस्सपढमभिक्खा । खोयरसोआसिलोगणाहस्स । सेसाणंपरमन्नं । अमियरस रसोवमआसि ॥ ३१ ॥ सव्वेसिंपिजिणाण । जहियलद्धाउपढमभिक्खाउ । वहियवसुंधराउ । सरीरमेत्ताउ

पुष्पदन्त ८ । पुनर्वसु १० । नद ११ । सुनंद १२ । जय १३ । विजय १४ । तिवारपछे धर्मसिंह १५ । सुमित्र १६ । तथा वर्गसिंह १७ ॥ २७ ॥ अपराजित १८ । विश्वसेन १९ । वीसमी ऋषभसेन २० । दिन्न २१ । वरदत्त २२ । धन २३ । बहुल २४ । एह अनुक्रमे २४ ॥ २८ ॥ एह दाताकेहवाछे भली लेश्याना धणी जिनवरनो भक्तियेकरी प्रांजलि हाथजोडी आगलिरह्या छे । तेणे काले तेणे समये जिनवरने आहारपाणीये प्रतिलाभ देता हुया ॥ २९ ॥ ऋषभनाथ परमेश्वरने १ वरसे भिचालीधी दीचानो पहिलो पारणूं थयो । शेषथाकता २३ तीर्थंकरने बीजेदिन पारणूंथयो । आदिनाथनो । इक्षुरसे करी शेष २३ नेखी रथी परमान्नथी पारणूंथयो तेह परमान्न अमृतरसनी उपमानूंछे ॥ ३१ ॥ सघलाई जिनने जिहां प्रथम भिचालीधी तिहा देवता साढे१२ कोडि सोनइयानी वृष्टि

रसग्सोवमग्रासि ॥ १ ॥ सरीरमेत्ताउत्ति पुरुषमात्रा चेइयरुक्खेत्ति वज्रपीठद्दचा येषा मध' केवलान्युत्पन्नानीति बत्तीसाइ धणुय गाहा निच्चोउगोत्ति नि त्यं सर्वदाऋतुरेव पुष्पादिकालो यस्यस नित्यर्तुकः असोगोत्ति अशोकाभिधानो य' समवसरणभूमिमध्ये भवति ओच्छन्नोसालरुक्खेणंति अवच्छन्नः शालहचे

वछ्राउ ॥ ३२ ॥ एएसिंचउव्वीसाएतित्थगराणंचउव्वीसं चेइयरुक्खाहोत्था तंजहा । णिग्गोहसत्तिवण्णेसा लेपियएपियगुवत्ताए । सरिसेयणागरुक्खे । मालीयपिलुंकरुक्खेय ॥ ३३ ॥ तदुलपाफ़लजंबू । ऋासत्थेखलुत हेवदहिवण्णे । णदीरुक्खेतिलए । ऋवगरुक्खेऋसोगेय ॥ ३४ ॥ चंपयवउलेयतहा । वेतसिरुक्खेयधायईरुक्खे सालेयवद्धमाणे । चेइयरुक्खाजिणवराणं ॥ ३५ ॥ वत्तीसाइधणुइ । चेइयरुक्खोयवद्धमाणस्स । णिच्चोऋगो ऋसोगो । उच्छणोसालरुक्खेणं ॥ ३६ ॥ तिण्णेवगाउऋाइं । चेइयरुक्खोजिणरसउसन्नस्स । सेसाणंपुणरुक्खा

शरीर प्रमाणे उंचोजारी ॥ ३२ ॥ एह २४ जिनने २४ चैत्यवृक्ष पूज्यवृक्ष जेहेठे केवलज्ञान ऊपनो ते कहेछे। आदिनाथने न्यग्रोध १ । वडना पेडनीचे केवलज्ञान ऊपनो एमअनुक्रमे २४ जगे कहिवो। सप्तपर्ण २। शालवृक्ष ३ । प्रियालु ४ । प्रियगु ५ । छत्रवृक्ष ६ । सरस ७ । नाग ८ । मालवी ९ । पीलुख १० । टींवरू ११ । पाटल १२ । जबू १३ । पीपल १४ । दधिपर्ण १५ । नदीवृक्ष १६ । तिलक १७ । आम्बा १८ । अशोक १९ । चपा २० । वकुल २१ । वेतस २२ । धातकीआवला २३ । शालितृन २४ वर्द्धमानस्वामीनो चैत्यवृक्ष २४ जिनना कह्या ॥ ३५ ॥ ३२ धनुषप्रमाणे चैत्यवृक्ष जे हेठे पृथिवीशिलापट्ट तिहाबैसी भगवतवर्द्धमानस्वामी व्याख्यान करे । नित्य बारेमासे फल्यो फूल्यो अशोकवृक्ष शालवृक्षें करी व्याप्त एतले अशोकवृक्षने ऊपर शालवृक्षछे । आदिनाथनो चैत्यवृक्ष ३ कोस ऊचो एतले

णेत्यत एववचना दशोकस्योपरि शालवृचोपि कथ चिदस्तीत्यवसीयत इति तिसेवगाउयाइं गाहा ऋषभस्वामिनो द्वादशगुणइत्यर्थ. सवेइयत्ति वेदिकायुक्ता एतेचाशोका: समवसरणसम्बन्धिन: सम्भाव्यन्तइति तहा भरहोसगरोमघव सणकुमारोयरायसद्दूलो सतीकुथूयअरोह वइसुभूमोयकोरव्वो ॥ १ ॥ नवमोय

सरीरउ बारसगुणाउ ॥ ३७ ॥ सच्छत्तासपडागा । सवेइयातोरणेहिँउववेया । सुरअसुरगरुलमहिया । चेइयरुखाजिणवराणं ॥ ३८ ॥ एएसिचउव्वीसाए तित्थगराण चउव्वीसंपढमसीसाहोत्था तंजहा । पढमेत्थ उसभसेणे वीएपुणहोइसीहसेणेय । चारूयवज्जणाभे । चमरेतहसुव्वएविदभ्भेय ॥ ३९ ॥ दिन्नेवाराहेपुणआणंदेगोथुभेसुहम्मेय । मंदरजसेअरिठे । चक्काउहसबकुंभअभिणयेय ॥ ४० ॥ इंदकुंभेयसुभे वरदत्तेदिन्नइंदभूईय ॥ उदितोदितकुलवंसा विसुद्धवंसागुणेहिउववेया । तित्थप्पवत्तयाण । पढमासिस्साजिणवराणं ॥

भगवतथी १२ गुणो ऊचोथयो शेष २३ तीर्थ करनाबच पोताना शरीरथी १२ गुणां कहिवा ॥ ३७ ॥ तेव्रच ३ छत्र सहित ध्वजा सहित वेदिका सहित तोरणयुक्त सुरवैमानिकदेव असुर भवनपत्यादिक सुपर्णादिकदेवेकरी पूजितछे एहवा जिनेंद्रना चैत्यव्रच जाणिवा ॥ ३८ ॥ २४ जिनना २४ प्रथम शिष्य वडागणधरथया तेकहेछे । आदिनाथनो वडोशिष्य ऋषभसेन १ । सिंहसेन २ । चारुरूप ३ । वज्रनाभ ४ । चमर ५ । सुव्रत ६ । बीजोनाम प्रद्योतन ६ विदर्भ ७ ॥ ३९ ॥ दिन्न ८ । वाराह ९ । आनद वीजोनाम पद्मनदी १० । गोस्तूभ वीजोनाम कृतार्थ ११ सुधर्मा वीजोनामसुभूम १२ । मदर १३ । यशोधर १४ अरिष्ट १५ चक्रायुध १६ । साम्ब १७ । कुभ १८ । अभिनय १९ ॥ ४० ॥ इन्द्रकुभ वीजोनाम मल्ली २० । शुभ २१ । वरदत्त २२ । आर्यदिन्न २३ । इन्द्रभूति २४

४१ ॥ एएसिणंचउव्वीसाए तित्थगराणं चउवीसं पढमसिस्सणीहोत्था तंजहा । बंभीयफग्गुसामा । अजिया कासवीरईसोमा । सुमणावारुणिसुलसा । धारणिधरणीयधरणिधरा ॥ ४२॥ पउमासिवासुयीतह । अंजुया भावियप्पायरक्खीय । बंधुवतीपुप्फवती । अज्जाअमिलायआहिया ॥ ४३ ॥ जक्खिणीपुप्फचूलाय चंदण ज्जायआहिया ॥ उदितोदियकुलवंसागाहा । जंबूद्दीवेणं भारहेवासे इमीसेउसप्पिणीए बारसचक्कवट्टिपिय रोहोत्था तंजहा । उसभेसुमित्तविजए समुद्दविजएयअससेणेय । विस्ससेणेयसूरे । सुदसणेकत्तवीरिएचेव ॥ ४४ ॥ पउमुत्तरेमहाहरी । विजएरायातहेवय । बंभेबारसमेउत्ते । पिउनामाचक्कवट्टिणं ॥ ४५ ॥ जंबूद्दीवे

एह २४ गणधर उदितोदित कुलवंशछे । इत्यादि पूर्वगाथा कहिवी ॥ ४१ ॥ एह २४ जिनवरानी २४ प्रथम शिष्यणी वडी साध्वीथई तेकहेछे । ब्राह्मी १ । फ ल्गुनो २ । श्यामा ३ । अजिता ४ । काश्यपी ५ । रती ६ । सोमा ७ । सुमना ८ । वारुणी ९ । सुलसा १० । धारणी ११ । धरणी १२ । धरणीधरा १३ । ॥ ४२ ॥ पद्मा १४ । शिवा १५ । श्रुति १६ । अंजुका बीजोनाम दामिनी १७ । भावितात्मा एहवी रचिता १८ । बंधुमती १९ । पुष्पवती २० । अमिला २१ । ४३ ॥ यक्षिणी २२ । पुष्पचूला २३ । चंदनवाला २४ ॥ एह साध्वी केहवी छे उदयमासवंशमें उपनी छे । इत्यादि पूर्वनी गाथा जाणवी ॥ जंबूद्वीप ने विषे भरत क्षेत्रे एणी वर्त्तमान अवसर्पिणीयें १२ चक्रवर्त्तिना पितायया । ते कहेछे । भरतनो पिता ऋषभ १ । सुमतिविजय २ । समुद्रविजय ३ । अश्व सेन ४ । विश्वसेन ५ । सूर ६ । सुदर्शन ७ । कार्त्तवीर्य ८ । पद्मोत्तर ९ । महाहरी १० । राजाविजय ११ । ब्रह्म १२ एह १२ चक्रवर्त्तिपितानानाम ॥ ४५

महापउमो हरिसेणोचेवरायसद्दूलो जयनामोयनरवई बारसमोबंभदत्तोय ॥ २ ॥ तथा पयावतीयबंभो सोमोरुद्दोसिवोमहसिरोय अग्गिसिहोयदसरहो न

जारहेवासे इमीसेउसप्पिणीए बारसचक्कवट्टिमायरोहोत्था तंजहा । सुमंगलाजसवती जद्दासहदेवी जइरा सिरिदेवीतारा जालामेरावप्पाचुल्लणीअपच्छिमा ॥ ॥ जंबूद्दीवे० । बारसचक्कवट्टीहोत्था तंजहा । जरहे सगरेमघव । सणंकुमारोयरायसद्दूलो । संतीकुंथूयअरो । हवइसुभूमोयकोरव्वो ॥ ४६ ॥ नवमोयमहापउमो । हरिसेणोचेवरायसद्दूलो । जयनामोयनरवई । बारसमोबंभदत्तोय ॥ ४७ ॥ एएसिंवारसराहचक्कवट्टीणं बारसइत्थिरयणाहोत्था तंजहा । पढमाहोइसुजद्दा । जद्दसुणदाजयायविजयाय । किराहसिरीसूरसिरी पउमसिरीवसुंधरादेवी ॥ ४८ ॥ लत्थिमईकुरुमई इच्छीरयणाणणामाइं ॥ जंबूद्दीवे० नववलदेवनवधासु

जम्बूद्वीपने विषे भरतक्षेत्रे वर्त्तमान अवसर्प्पिणीये १२ चक्रवर्त्ति मातायई ते कहेछे । सुमगला १ । यशोमती २ । भद्रा ३ । सहदेवी ४ । अचिरा ५ । श्री ६ देवी ७ । तारा ८ ज्वाला ९ मेरा १० वप्रा ११ छेहली चुलणी १२ ॥ जम्बूद्वीप सबधी भरत क्षेत्रे वर्त्तमान अवसर्प्पिणीये १२ चक्रवर्त्त थया ते कहे छे भरत १ सगर २ मघवा ३ सनत्कुमार ४ राजा माहि सिंह समान शांतिनाथ ५ । कुंथु ६ । अर ७ । सभूम ८ ॥ ४६ ॥ महापद्म। हरिसेन १०। जय ११ ब्रह्मदत्त १२ ॥ ४७ ॥ एह १२ चक्रवर्त्तना १२ स्त्री रत्न थया ते कहेछे सुभद्रा १ भद्रा २ सुनदा ३ जया ४ विजया ५ कृष्णश्री ६ सूर्यश्री ७ पद्मश्री ८ वसुधरा ९ देवी १० ४८ ॥ लक्ष्मीवती ११ कुरुमती १२ एह स्त्री रत्नना नाम जाणिवा ॥ जम्बूद्वीपना भरतने विषे वर्त्तमान अवसर्प्पिणीये ९ बलदेव ९ वासुदेवना पिता थया

वमाभागम्रोयवसुदेवोत्ति ॥ १ ॥ जम्बूद्वीवेत्यादि दशाराणा वासुदेवानां मण्डलानि बलदेववासुदेवद्वयद्वयलक्षणाः समुदाया दशारमण्डलानि अतएव दोदो रामकेसवत्ति वक्ष्यति दशारमण्डलाव्यतिरिक्तत्वाच्च बलदेववासुदेवाना दशारमण्डलानीति पूर्वमुद्दिश्यापि दशारमण्डलव्यक्तिभूताना तेषां विशेषणार्थमाह त ग्रथेत्यादि तथयेति बलदेववासुदेवस्वरूपोपन्यासारम्भार्थः केचित्तु दशारमण्डणादृति तत्रदशाराणा वासुदेवकुलीनप्रजाना मंडना. शोभाकारिणो दशारमण्ड ना उत्तमपुरुषादृति तीर्थंकरादीना चतु'पचाशत् उत्तमपुरुषाणा मध्यवर्त्तित्वात् मध्यमपुरुषा स्तीर्थंकरचक्रिणा प्रतिवासुदेवाना च बलाद्यपेक्षया मध्यवर्त्तित्वात्

देवापितरोहोत्था तंजहा । पयावईयबंभो सोमोरुद्दोसिवोमहासिरोय । अग्गिसिहोयदसरहो । नवमोअणि ग्रयवसुदेवो ॥ ४९ ॥ जंबूद्दीवेणं० । णववासुदेवमायरोहोत्था तजहा । मियावईउमाचेव पुहवीसीया यअम्बिया । लच्छिमईसेसमई केकईदेवईतहा ॥ ५० ॥ जबूद्दीवेणं ० । णवबलदेवमायरोहोत्था तंजहा । भद्दातहसुभद्दाय । सुप्पभायसुदसणा । विजयावेजयंतीय जयंतीअपराजिया ॥ ५१ ॥ णवमीयारोहिणीय

प्रजापति १ ब्रह्म २ सोम ३ रुद्र ४ शिव ५ महेश्वर ६ अग्निसिह ७ दशरथ८ नवमोवसुदेव ९॥ १ ॥ जम्बूद्वीपना भरत ने विषे वर्त्तमान काले९ वासुदेवनी माता थई तेकहेछे मृगावती १ उमा २ पृथिवी ३ सीता ४ अम्बिका ५ लक्ष्मीवती ६ शेषवती ७ केकईवीजोनाम सुमित्रा ८ देवकी ९ एह नववासुदेवनी माता ॥ हिवे९ बल देवनी माता कहेछे ॥ भद्रा १ सुभद्रा २ सुप्रभा ३ सुदर्शना ४ विजया ५ वैजयती ६ जयती ७ अपराजिता ८ रोहिणी ९ एह बलदेवनी माता जाणिवी ॥ २ ॥ जंबूद्वीपना भरतने विषे एणी अवसर्प्पिणीये नव दशारना वासुदेवना मडल वासुदेव बलदेव लक्षण समुदाय ते दशार मडल थया तेकहे छे। उत्तम

प्रधानपुरुषास्तात्कालिक पुरुषाणां शौर्यादिभिः प्रधानत्वात् ओजस्विनो मानसबलोपेतत्वात् तेजस्विनो दीप्तशरीरत्वात् वर्चस्विनः शारीरबलोपेतत्वात् यश स्विनः पराक्रम प्राप्यप्रसिद्धिप्राप्तत्वात् छायंसित्ति प्राकृतत्वात् च्छायावन्तः शोभायमानशरीरा अतएव कान्ताः कान्तियोगात् सौम्या अरौद्राकारत्वात् सुभगा जनवल्लभत्वात् प्रियदर्शना चक्षुष्यरूपत्वात् सुरूपा समचतुरस्रसंस्थानत्वात् शुभं सुखं वा सुखकरत्वा च्छील स्वभावो येषान्ते शुभशीलाः सुखशीला वाभिसुखे नाभिगम्यन्ते सेव्यन्ते ये शुभशीलत्वादेव ते सुखाभिगम्याः सर्वजननयनानाकान्ता अभिलाष्या ये ते तथा ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः ओघबलाः प्रवाहबला' अ व्यवच्छिन्नबलत्वात् अतिबलाः शे ।पुरुषबलानामतिक्रमात् महाबलाः प्रशस्तबला. अनिहता निरुपक्रमायुष्कत्वा दुरोयुद्धेच भूम्यामपातित्वात् अपराजिता

वलदेवाणमाग्ररो ॥ जंबूद्दीवेणं० । णवदसारमंडलाहोत्था तंजहा । उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरि सा ओयसी तेयसी वच्चसी जसंसी छायंसी कंता सोमा सुभगा पियदंसणा सुरूवा सुहसीला सुहाभिगम सव्वजणणयणकंता ओहवला अतिवला महावला अनिहता अपराइयसत्तुमद्दणा रिपुसहस्समाणमहणा सा

पुरुष ते माहि वर्त्ति ते माटे वली मध्यम पुरुष तीर्थंकार चक्रवर्त्ति तथा प्रतिवासुदेवनी अपेचाये प्रधान पुरुष सौर्यगुणे करी युक्त ओजस्वी मनो बलेकरी सहित तेजस्वी दीप्ति युक्त शरीर थी वर्चस्वी शरीर सम्बधी बलेकरी सहित यशस्वी जसना धणी शोभायमान शरीरोपेत कांतिवान् रुद्रा कार नही सहुने वल्लभ देखवा योग्य समचतुरस्र संस्थानी सहुने सुखकारी सुखें सेविवा योग्य सर्व लोकना नेत्रने कांत देखिवा योग्य बल जेह नो तूटे नही अति बलना धणी महाबली निरुपक्रम आयुना धणी वैरीयें पराभव्या न जाय शत्रुनामर्द्दक रिपु सहस्रना मानने मथनहार नम्र

स्तैरेवशत्रूणा मपराजितत्वात् एतदेवाह शत्रुमर्द्दना स्तच्छरीरतत्सैन्यकदर्थनाद्रिपुसहस्रमानमथना स्तद्वांछितकार्यविघटनात् सानुक्रोशाः प्रणतेष्वद्रोहकत्वा त् अमत्सराः परगुणलवस्यापि ग्राहकत्वात् अचपला मनोवाक्काय स्थैर्यात् अचण्डा निष्कारणप्रवलकोपरहितत्वात् मिते परिमिते मञ्जुली कोमलप्रलापश्चा लापो हसितंच येषान्ते मितमञ्जुलप्रलापहसिताः गम्भीरमदगितरोषतोषशोकादिविकार मेघनादव द्वा मधुर श्रवणसुखकर मतिपूर्ण मर्थप्रतीतिजनक सत्य मवितथ मवचन मवाक्य येषान्ते तथा ततः पदद्वयस्यकर्मधारयः अभ्युपगतवत्सला स्तत्समर्थनशीलत्वात् शरण्या स्त्राणकरणसाधुत्वात् लक्षणानि मानादीनि वज्रस्वस्तिकचक्रादीनि वा व्यञ्जनानि तिलकमषादीनि तेषाङ्गुणा महर्द्धिप्राप्त्यादय स्तै रुपेताःसर्कराद्दिदर्शनादुपपेता युक्ता लक्षणव्यञ्जनगुणो पपेता मानमुदकद्रोणपरिमाणशरीरता कथ मुदकपूर्णाया द्रोण्या निविष्टे पुरुषे यज्जल ततोनिर्गच्छति तद्यदिद्रोणप्रमाण स्या त्तदा स पुरुषो मानप्राप्त

णुक्कोसा अमच्छरा अचपला अचण्डा मियमंजुलपलावहसियगम्भीरमधुरपडिपुस्ससच्चवयणा अब्भुवगय वच्छला सरस्सा । लक्खणवंजणगुणोववेआ माणुम्माणपमाणपडिपुस्ससुजायसव्वंगसुंदरंगा ससिसोमागारकं

थिये दयावंत परगुण ग्राहक मन वचन कायाये करो धैर्यवान निःकारण कोप रहित मित ते थोडो मञ्जुल कोमल जे प्रलाप वोलवो अने हसिवो छे जेहनो वलो गम्भीर रोष रहित मधुर बोलता सखकारो मतिपूर्ण अर्थनो प्रतीति उत्पादक सांचो विघटे नही एहवो छे वचन जेहनो तथा शरणागत वत्सल शरण राखिवा समर्थ लक्षण तेस्वस्तिकादिक व्यञ्जन तेतिलक मसादिक तेहना गुण महाऋद्धि प्राप्ति लक्षण तेणे करी युक्त मान ते उदक द्रोण परिमाण शरीरनो उच पणो उन्मान ते अर्द्ध भार परिमाणता प्रमाण ते अठोत्तर सो अगुलनो ऊंच पणो तेणे मान १ उन्मान २ प्रमाणे ३

इत्यभिधीयते उन्मान मर्द्धभारपरिमाणता कथ तुलारोपितस्य पुरुषस्य यद्यर्द्धभार स्तौल्य भवति तदा सावुन्मानप्राप्त उच्यते प्रमाणमष्टोत्तरशतमङ्गुलानामु च्छ्रयः मानोन्मानप्रमाणैः प्रतिपूर्णमन्यूनंसुजातमागर्भाधानात् पालनविधिनासर्वाङ्गसुन्दर निखिलावयवप्रधानमगंशरीर येषान्ते तथा शशिवत् सौम्याका रमरौद्रमवीभत्सम्वा कांतंदीप्तं प्रियजनाना प्रमोदोत्पादक दर्शन रूप येषान्ते तथा अमरिसणत्ति अमसृणा. प्रयोजनेष्वनलसाअमर्षणावा अपराधिष्वपि कृतक्षमाः प्राकाण्डउत्कटोदण्डप्रकार आज्ञाविशेषो वा येषान्ते तथा अथवा प्रचण्डोदुःसाध्यसाधकत्वा द्दण्डप्रचारः सैन्यविचरण येषान्ते तथा गम्भीराअल क्ष्यमाणांतर्वृत्तित्वेन दृश्यन्ते ये ते गम्भीरदर्शनीया स्ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः प्रचण्डदण्डप्रचारेण वा ये गम्भीरा दृश्यन्ते तथा तालोच्चविशेषो ध्वजः येषान्ते तालध्वजाः वलदेवा उद्विद्वउच्छ्रितो गरुडलक्षितः केतु र्ध्वजो येषान्ते उद्विद्वगरुडकेतवो वासुदेवाः तालध्वजाश्च उद्विद्वगरुडकेतवश्च तालध्वजोद्विद्व गरुडकेतवः महाधनुर्विकर्षकाः महाप्राणत्वात् महासत्वलक्षणजलस्य सागरा इव सागरा आश्रयत्वा महासत्वसागराः दुर्द्धरा रणाङ्गणे तेषां प्रहर्तां केना

तपियदंसणा अमरिसणा पयंडदंडप्पयारा गंभीरदरसणिज्जा तालद्धउव्विद्धगरुलकेऊ महाधणुविकड्ढया

करी प्रतिपूर्ण अन्यून । गर्भाधानथको रूडीविधिये करी भलो नीपनोछे सर्व शरीरावयवें करी सुदर शरीर जेहनो । चद्रमाने समान सौम्य अरुद्रछे तेजा कार कांत दीप्तिवंत । प्रिय प्रेमोत्पादक दर्शनछे जेहनो । कार्यने विषे आलसी नही अथवा असर्ष रहित । प्रचड दुःसाध्यने साधे एहवोछे दडप्रचार सेनानो विचरवो जेहनो । गभीर कलथोनजाय दर्शन आकार चित्ताभिप्राय जेहनो । तालवृच ध्वजाछे जेहने तेतालध्वज गरुडनो रूपछे ध्वजाने विषे ध्वजा ऊंची करीछे जेणे । वलदेवने आगीतालध्वज होय वासुदेवने आगी गरुडध्वजहोय । तथामहाधनुषना खाचणहार । महासत्व लक्षण जलना

पि धन्विना धारयितु मशक्यत्वात् धनुर्धराः कोदण्डप्रहरणा धीरेष्वेवैते पुरुषाः पुरुषकारवन्तो न कातरेष्विति धीरपुरुषा युद्धजनिता या कीर्त्ति स्तत्प्रधानाः पुरुषा युद्धकीर्त्तिपुरुषा' विपुलकुलसमुद्भवा इति प्रतीतमहारत्न वज्रन्तस्य महाप्राणतया विघटका अङ्गुष्ठतर्ज्जनीभ्या चूर्णका महारत्नविघटका वज्रंहि अधिकरण्या धृत्वा अयोघनेना स्फोट्यते नच भिद्यते ताविवभिनत्तीति दुर्भेद तदिति अथवा महनीया आरचनासागरशकटव्यूहादिना प्रकारेण सिसंग्राम यियो मेहामेन्यस्य तां रणरङ्गरसिकतया महाबलतया च विघटयति वियोजयति ये ते महारचनाविघटका. पाठान्तरेण तु महारणविघटकाः अर्द्धभरत स्वामिनः सौम्या नीरुज' राजकुलवंशतिलकाः अजिता' अजितरथाः हलमुशलकणकपाणय' तत्र हलमुशलेप्रतीते ते प्रहरणतया पाणौ हस्ते येषान्ते बलदेवा येषान्तु कणकावाणाः पाणौ ते शार्ङ्गधन्वानो वासुदेवाः शङ्खय पाञ्चजन्याभिधान श्चक्रन्तु सुदर्शननामकं गदाच कौमोदकी सज्ञा लकुटविशेषः श

महासत्तसाऽऽयरा दुद्धरा धणुद्धरा धीरपुरिसा जुद्धकित्तिपुरिसा विउलकुलसमुब्भवा महारयणविहाडगा अद्ध भरहसामी सोमा रायकुलवंसतिलया । अजियाऽजियरहा हलमुसलकणकपाणी संखचक्कगयसत्तिनंदगधरा

समुद्र सरीखा समुद्र । रणागणे दुर्द्धर कोईथी वाल्यानजाय । धनुषनाधरणहार । धैर्ययुक्तछे । युद्धे करी उपार्जी कीर्त्ति तेणे करी प्रधान पुरुषछे वडाकुलना उपना । महारत्न वज्रने अगूठें करी चूर्णन करणहार । अर्द्ध भरतना ३ खडना स्वामी । सौम्य अत्यत ठंढा । राजकुलने वंशने विषे तिलकसमान अजितकेहथी जीप्या नथी । जेहनारथकेहथी जीप्यानथी । तथा हल मुसलछे हाथने विषे ते बलदेव । अने कणककाहीवाणछे हाथने विषे जेहने ते वासुदेव । शंख पाञ्चजन्य चक्र सुदर्शन गदा कौमोदकी लकुट विशेष शक्ति त्रिशूल विशेष नदकनामा खड्गना धरणहारछे । तथा प्रवर प्रधान उजलो सु

त्तिश्च त्रिशूलविशेषो नन्दकाश्च नन्दकाभिधानः खड्ग स्तान्धारयन्तीति शङ्खचक्रगदाशक्तिनन्दकधराः वासुदेवाः प्रवरो वरप्रभावयोगा दुज्ज्वलः शुक्लत्वात् स्व च्छतया वा सुकान्तः कान्तियोगात् पाठांतरे सुमृतसुपरिकर्म्मितत्वात् विमलो मलवर्ज्जितत्वात् गोथुभत्ति कौस्तुभाभिधानो यो मणिविशेष स्त तिरीडति किरीटच मुकुट धारयति येने तथा कुंडलोद्योतिताननाः पुंडरीकवन्नयने येषांते तथा एकावलो आभरणविशेषः सा कंठे ग्रोवायां लगिता विलम्बिता सती वक्षसि उरसिवर्त्तते येषाते एकावलोकंठलगितवक्षसः श्रीवत्साभिधान सुष्टुलाञ्छन महापुरुषत्वसूचक वक्षसि येषाते श्रीवत्सलाञ्छना वरयशसः सर्वत्र विख्यातत्वात् सर्वर्त्तुकानि सर्वऋतुसंभवानि सुरभोणि सुगंधोनि यानि कुसुमानि तैःसुरचिता कृता या प्रलंबा आप्रपदीना शोभितत्ति शोभमाना कांता कमनोया विकसतो फुल्लतो चित्रा पंचवर्णा वरा प्रधाना माला स्त्रक् रचिता निहिता रतिदा वा सुखकारिका वक्षसि येषान्ते सर्वर्त्तुकसुरभिकुसुमसुर चितप्रलंबशोभमानकांतविकसच्चित्रवरमालारचितवक्षसः तथाअष्टशतसंख्यानि विभक्तानि विविक्तरूपाणि यानि लक्षणानि चक्रादीनि तैः प्रशस्तानि म

पवरुज्जलसुकंतविमलगोत्थुभतिरीडधारी कुंडलउज्जोइयाणणा पुंडरीयणयणा। एकावलिकंठलइयवच्छा सिरिवच्छसुलंछणा वरजसा सव्वोउयसुरभिकुसुमरचितपलंबसोभंतकंतविकसंतविचित्तवरमालरइयवच्छा। अठ

कांत निर्मल कौस्तुभ मणि विशेष अने मुकुट ने धारण करेछे। कुंडलनी प्रभाये करी उदोतितछे मुख जेहनो। पुंडरीक कमल सरीखा मनोहर नेत्र छे जेहना एकावली आभरण विशेष तेकंठे लगाडी विलंबितछे वक्षस्थलने विषे जेहने। श्रीवत्स नामा भलो लक्षणछे जेहने। वर प्रधानछे यश जेहनो। सघली ऋतुना सुरभि सुगंध फूल तेणेकरी सुरचित कीधीछे प्रलंबायमानछे शोभायमान कांत कमनीय विकसंती पांचवर्णी नी प्रधान माला तेणेकरी

गयानि सुदराणिचमनोहराणि निरचितानि विहितानि अगमगत्ति अंगोपांगानि शिरोंगुल्यादीनि येपान्ते अष्टशतविभक्तलक्षणप्रशस्तसुंदरविरचितांगोपां गा तथा मत्तगजवरेन्द्रस्य योललितोमनोहरो विक्रम: सचरणतद्विलासिता: सजातविलासागतिर्गमन येपान्ते मत्तगजवरेन्द्रललितविक्रमविलासितगत य: तथा शरदिभव शारद: सचासो नव स्तनित रसित यस्मिन्निर्वोपि स नवस्तनित: सचेति समास. सचासौ मधुरो गम्भोरश्च य: क्रौंचनिर्घोष: पचि विशेषनिनाद स्तद्वदुन्दुभिस्वरश्च स्वरो नादो येपाते शारदनवस्तनितमधुरगभीरक्रौंचनिर्घोषदुन्दुभिस्वरा. इहच शरत्कालेहि क्रौंचा माद्यन्ति मधुरध्वन यश्च भवन्तीति शारदग्रहण तथा पोन पुष्टेन शब्दप्रवृत्तो तद्गाद मनोज्ञता तस्यस्यादिति नवस्तनितग्रहण स्वरूपोपदर्शनार्थं मधुरगभीरग्रहणमिति तथा कटीसूत्र माभरणविशेष स्तत्प्रधानानि नोलानि बलदेवाना पीतानि वासुदेवानां कोशेयकानि वस्त्रविशेषभूतानि वासांसि वसनानि येषांते कटीसूत्रकनी

सयविन्नतलक्खणपसत्थसुंदरविरइयंगमंगा मत्तगयवरिंदललियविक्कमविलसियगई सारयनवथणियमुकोगं
भीरकुंचनिग्घोसदुंदुभिसरा कडिसुत्तगनीलपीयकोसेज्जवाससा पवरदित्ततेया नरसीहा नरवई नरिंदा

मण्डितछे वक्षस्थल जेहनो। तथा १०८ प्रशस्तरूप जे लक्षण चक्रादिकें करी प्रशस्त मंगलकारी मनोहर कोधाछे सर्व अंगोपांग जेहना। मदोन्मत्त गजेंद्रनो सुललित मनोहर चालवो तेहनो परे विलास सहितछे गती जेहनी। शरत्काल सम्बन्धी नवीन मेघनो जे गभीर शब्द तेहथो गंभीरछे काठनो शब्द कुंभो ना शब्द सरीखो मीठो क्रौंचनो शरत्काले मस्त होय तेमाटे तेहना शब्द सरीखो गभीर स्वरछे जेहनो। कटिसूत्र कणदोर तेणेकरी सहितछे नीलापीला वस्त्र जेहना बलदेवना नोलावस्त्र वासुदेवना पीलावस्त्र। प्रधान दोप्तिवंत। मनुष्यमाहि विक्रम गुणे करी सिंह समान छे। नरपती छे। नरिन्द्र छे। नर

देवाणं पुव्वभविया नवनामधेज्जाहोत्था तंजहा । विसभूई पव्वयए धणदत्तसमुद्ददत्तइसिवाले । पियमित्तललियमित्ते पुणव्वसूगंगदत्तेय ॥ ५२ ॥ एयाइंनामाइं पुव्वभवेआसिवासुदेवाणं । एत्तोवलदेवाणं जहक्कमंकित्तइस्सामि ॥ ५३ ॥ विसनंदीयसुबंधू सागरदत्तेअसोगललिएय वाराहधम्मसेणे अपराइयरायललिएय ॥ ५४ ॥ एएसिंनवण्ह वलदेववासुदेवाणं पुव्वभवियानवधम्मायरियाहोत्था तंजहा । सभूएयसुभद्दे सुदसणेसेयकण्ह गंगदत्तेअ । सागरसमुद्दनामे दुमसेणेणवमिएहोइ ॥ ५५ ॥ धम्मायरियाकित्ती पुरिसाणंवासुदेवाणं । पुव्वभवेएआसि जत्थनियाणाइं कासीए ॥ ५६ ॥ एएसिणनवण्हं वासुदेवाण पुव्वभवे नवनियाणभूमीहो

त्था॥ एह वलदेव वासुदेवना पूर्व भवना ८ नामधेय कहे छे । विश्वभूति १ प्रवतक २ धनदत्त ३ समुद्रदत्त ४ ऋषिपाल ५ पियमित्र ६ ललितमित्र ७ पुनर्वसु ८ गंगदत्त ८ । एह पूर्वभवने विषे वासुदेवना नाम थया । हिवे वलदेवना नाम कहे छे । विश्वनन्दी १ । सुबंधु २ । सागरदत्त ३ अशोक ४ ललित ५ वाराह ६ धर्मसेन ७ अपराजित ८ राजललित ८ । एह ८ वलदेवना वासुदेवना पूर्व भवनेविषे धर्माचार्य हुआ ते कहे छे । सभूति १ सुभद्र २ सुदर्शन ३ श्रेयांस ४ कृष्ण ५ गंगदत्त ६ सागर ७ समुद्र ८ द्रुमसेन ८ धर्माचार्य थया कोर्त्तिपुरुष ८ वलदेववासुदेवना । जिहां नियाणाकीधा तेणे समये ८ पूर्वभवने विषे नियाणा भूमि हुई ते कहे छे । मथुरा १ यावत् शब्दे कनकवस्तु २ सावत्थी ३ पोतनपुर ४ राजगृह ५ काकंदी ६ कोसंबी ७ मिथिला ८ हत्थणापुर ८

चक्कजोहो सव्वेविहयासचक्केहिंति अणियाणकडारामा सव्वेवियकेसवानियाणकडा उढ्ढंगामीरामा केसवसव्वेअहोगामीत्ति आगमिस्सेणंति आगमिष्यता कालेन आगमेस्साणति पाठातरे आगमिष्यता भविष्यता मध्ये सेत्स्यतीति जबूद्वीपैरवते अस्या मवसर्पिण्या चतुर्विंशति स्तीर्थकरा अभूवन् तांश्च स्तुतिद्वा

त्था तंजहा । मङ्गराजावहत्थिणाउरंच एतेसिणंनवराह वासुदेवाण नवनियाणकारणाहोत्था तंजहा । गावी जुवे जाव माउञ्चा । एएसिं नवराहंवासुदेवाणं नवपङिसत्तूहोत्था तंजहा । आसग्गीवेजावजरासंधे । जा वसचक्कोहिं । एक्कोयसत्तमीए पंचयछठीए पंचमीएक्को । एक्कोयचउत्थीए कराहोपुणतच्चपुढवीए ॥ ५७ ॥ अणिदाणकङारामा सव्वेवियकेसवानियाणकङा । उढ्ढंगामीरामा केसवसव्वेअहोगामी ॥ ५८ ॥ अठंतकङ रामा एगोपुणबंभलोयकप्पम्मि । एक्कोसेगब्भवसही सिज्झिस्सइ आगमिस्सेणं ॥ ५९ ॥ जंबूद्वीवे० एरवए

लगे जाणवो । एह वासुदेवना ९ नियाणाना कारण थया ते कहे छे । गाइ १ यावत्शब्दे यूपस्तभ २ सग्राम ३ स्त्रीपराभव ४ रग ५ स्त्रीनोराग ६ गोष्टी ७ परऋद्धी ८ मातापराभव ९ । एह वासुदेवना ९ प्रतिशत्रु प्रतिवासुदेव थया ते कहे छे । अश्वग्रीव १ यावत् शब्देंतारक २ मेरक ३ मधुकैटभ ४ निशुंभ ५ बलि ६ प्रल्हाद ७ रावण ८ जरासंध ९ जाणवा ॥ एहप्रतिशत्रु कीर्त्तिपुरुष वासुदेवथी चक्रेकरी युद्धकरे पोतानाचक्रथी मरे । पहिलो वासुदेव सातमीये गयो पांच वासुदेव छठीये गया एक वासुदेव पांचमीये गयो १ चउथीये गयो कृष्ण ३ जीये गयो । बलदेव नियाणा न करे सघला वासुदेव नियाणाना करणहार छे उच्च गति जाणहार राम नीचगति जाणहार वासुदेव । आठ राम बलदेव थकी माडी पहिला अतकृत थया मुक्ति गया । १ बलभद्र ५ मे ब्रह्म देवलोके गयो ।

रेणाइ तथया चंदाणणगाहा चदाणणसुचंद अग्गिसेणंचनंदिपेणञ्च कचिदात्मसेनोप्यय दृश्यते ऋषिदिन्नं व्रतधारिणञ्च वदामहे श्यामचन्द्रञ्च वंदामिगाहा वदेगुत्तिसेन कचिद्दयंदीर्घबाहु दीर्घसेनोवोच्यते अजितसेन कचिदयशतायु रुच्यते तथैव शिवसेन कचिदयं सत्यसेनोभिधीयते सत्यकिशेति वुद्धवावगततत्वञ्च देवगर्माण देवसेनापरनामक मततसदावद इति प्रकृत निचितग्रस्त्रंच नामातरतः श्रेयास असजल गाहा असज्वल जिनवृषभ पाठांतरेण स्वयजल वदेअनंत जिन ममितज्ञानिन सर्वज्ञमित्यर्थः नामातरेणाय सिहसेनइति उपशांतच उपशान्तसञ्च धूतरजसं वन्दे खलु गुत्तिसेनच अइपासगाहा अतिपार्श्वंच सुपार्श्वं

वासे इमीसेउसप्पिणीए चउव्वीसंतित्थगराहोत्था तंजहा । चदाणणंसुचदं अग्गीसेणंचनंदिसेणच । इसिदि णवयहारिं वंदामोसोमचंदंच ॥ ६० ॥ वंदामिजुत्तिसेणं अजियसेणंतहेवसिवसेणं । बुद्धंचदेवसम्मंसिद्धं निखित्तसत्थंच ॥ ६१ ॥ अस्सजलंजिणवसह वदेयअणंतयंअमियणाणिं । उवसंतचधुवरयं वदेखलुगुत्तिसे

१भय वासना भतरयो मोच जास्ये जबूद्वीपने विषे ऐरवते एणी अवसर्पिणीये २४ तीर्थंकर हुआ ते कहे छे चद्रानन १ । सुचन्द्र २ । अग्निसेन ३ । नदिसेन ४ ऋषिदिन्न ५ । व्रतधारी ६ । एहोने वादुछु । सोमचंद्र ७ ॥ ६० ॥ युक्तिसेन ८ । बीजो नाम दीर्घ बाहु दीर्घसेन अजितसेन ९ बीजो नाम गतायु । शिवसेन १० बीजो नाम सत्यसेन । तपना जाण देवशर्म बीजो नाम देवसेन ११ । सीधाछे सकलकार्यजेहना एहवी निचित ग्रस्त्र बीजो नाम श्रेयाश १२ ॥ ६१ ॥ भसंज्वन १२ जिन वृषभ बीजो नाम स्वयंजल १४ वादो अनतक १४ अमित ज्ञानो नामातरे सिहसेन उपशात १५ । कर्मरज रहित वादो गुत्तिसेन १६ ।

मग्निपु वंदे चीणरजस महासेनमपरनामकं जितरागमग्निसेनं जियगाहा चीणदुःखंश्यामकोष्ठं धरसंज्ञं च धरं निर्वाणगतं मरुदेवं देवेश्वरवंदितंच सर्वं एवमिदं चतुर्विंशतिः विजयान्ता महापद्मादयो मुपलभ्यते प्यानुपूर्वीनाम्ना किञ्चिदन्यथा स्थानान्तरे सिद्धमिति गत वारिषेणं च व्यवकृष्टप्रेमद्वेष च

णच ॥ ६२ ॥ अतिपासंचसुपासं देवेसरवंदियंचमरुदेवं । निव्वाणगयंचधरं खीणदुहंसामकोठंच ॥ ६३ ॥ जियरागमग्गिसेणं वंदेखीणरयमग्गिउत्तंच वोक्कासियपिज्जदोसं वारिसेणंगयंसिद्ध ॥ ६४ ॥ जंबूद्दीवे० आगमिस्साएउस्सप्पिणीए भारहेवासे सत्तकुलगराभविस्संति तंजहा । मियवाहणेसुभूमेय सुप्पभेयसयंपभे दत्तेसुहमेसुबंधूय आगमिस्साणहोक्खति ॥ ६५ ॥ जबूद्दीवेणंदीवे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए एरवए वासे दसकुलगराभविस्संति तंजहा । विमलवाहणे सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे दसधणू दढधणू सयधणू

॥ ६२ ॥ अतिपार्श्व १७ । सुपार्श्व १८ देवेश्वरेवंदित मरुदेव १९ निर्वाण प्राप्त एहवा धर २० । दु:खरहित एहवा श्यामकोष्ट २१ ॥ ६३ ॥ राग द्वेष रहित अग्निसेन २२ बीजो नाम महासेन चय गईछे पापरज जेहनी एहवो अग्निपुत्र २३ । दूर कियाछे राग द्वेष जेणे एहवो वारिसेण २४ ॥ ६४ ॥ जबूद्वीपना भरतने विषे आगामी उत्सर्पिणीये ७ कुलकर थास्ये ते कहे छे । मितवाहन १ । सुभूम २ । सुप्रभ ३ । स्वयंप्रभ ४ । दत्त ५ सूक्ष्म ६ । सुवधु ७ । आवती चो वीसीये ७ एह कुलकर थासे ॥ ६५ ॥ जबूद्वीपना ऐरवतने विषे आगामी काले १० कुलकर थासे ते कहे छे । विमलवाहन १ । सीमंकर २ । सीमधर ३ ।

पफ्सुइं सुमुइइंति जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउवीसं तित्थगराभविस्संति तजहा । महापउमेसूरदेवे सुपासेयसयंपभे । सव्वाणुभूईअरहा देवस्सुएयहोक्खई ॥ १ ॥ उदएपेढालपुत्ते य पोहिलेसतकित्तिय । मुणिसुव्वएयअरहा सव्वभावविऊजिणो ॥ २ ॥ अममेणिक्कसाएय निप्पलाएयनिम्ममे । चित्तउत्तेसमाहीय आगमिस्सेणहोक्खई ॥ ३ ॥ सवरेअणियट्टीय विवाएविमलेतहा । देवोववाएअरहा अणंतविजएइय ॥ ४ ॥ एएवुत्ताचउव्वीस भरहेवासम्मिकेवली आगमिस्सेणहोक्खंति धम्मतित्थस्सदेसगा ॥ ५ ॥ एएसिणंचउव्वीसाएतित्थकराणं पुव्वभवियाचउव्वीसनामधेज्जा भविस्संति तंजहा । सेणियसुपा

नेमकर ४ । नेमर ५ । दृढवतु ६ । दगवगु ७ । गतवतु ८ । पतिगुति ९ । सुनुवि १० । जंबूद्वीपना भरतने विषे आगामिकाले २४ तीर्थंकार थासे ते कहेछे । महापद्म १ । सूरदेव २ । सुपार्श्व ३ । स्वयंप्रभ ४ । सर्वानुभूति ५ । देवगुत ६ । उदय ७ । पेढाल पुत्र ८ । पोट्टिल ९ । शतकीर्त्ति १० । मुनिसुव्रत ११ । सर्वभावविद् अमम १२ । निःकषाय १३ । निष्पलाक १४ । निर्मम १५ । चित्रगुप्ति १६ । समाधि १७ । सवर १८ । यशोधर १९ । अनर्जिक २० । विजय २१ । विमलबीजोनाममनो २२ । देवोपपात २३ । अनतविजय २४ बीजोनाम अनतवीर्य ॥ एह कह्या २४ तीर्थंकार भरतक्षेत्रनेविषे आवतीउत्सर्पिणीयेहोस्ये । मतोर्थना प्रवर्तक धर्मतीर्थना उपदेशक ॥ ॥ एह २४ तीर्थकरना २४ पूर्वभवना नाम थास्ये तेकहेछे । श्रेणिकाराजा १ । सुपास २ । उदय । ३ । पो

सउदए पोट्टिलञ्णगारतहदढाऊय । कत्तियसंखेयतहा नंदसुनंदेयसतएय ॥ १ ॥ बोधव्वादेवईय सच्चइत हबासुदेवबलदेवे । रोहिणिसुलसाचेव तत्तोखलुरेवईचेव ॥ २ ॥ तत्तोहवइसयाली बोधव्वेखलुतहाभयाली य । दीवायणेयकराहे तत्तोखलुनारएचेव ॥ ३ ॥ अंबडदारुमडेय साईबुद्धेयहोइबोधव्वे । भावीतित्थगराणं णामाइंपुव्वभवियाइं ॥ ४ ॥ एएसिणचउव्वीसाए तित्थगराणंपियरोमायरोभविस्संति । चउव्वीसंपढमसीसा भविस्संति । चउव्वीसंपढमासिस्सणीओभविस्संति । चउव्वीसंपढमभिक्खादायगाभविस्संति । चउव्वीसचे इयरुक्खाभविस्संति । जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए बारसचक्कवट्टिणोभविस्संति

ट्टिल अणगार ४ । दृढायु ५ । कार्त्तिकसेठ ६ । शंखश्रावक ७ । आनन्द ८ । सुनन्द ९ । शतक १० । देवकी ११ । सत्यकी १२ । कृष्णवासुदेव १३ । वलभद्र १४ । रोहिणी । १५ । सुलसाश्राविका १६ वली रेवतीश्राविका १७ ॥ ॥ सयाल १८ । भयाल १९ । द्वीपायन कृष्णनाम २० । नारद २१ ॥ ॥ अवड २२ । दारुमृत वीजोनाम अमरजीव २३ स्वातिवुद्ध २४ । एह आगामिउत्सर्प्पिणीये भावी तीर्थंकरपूर्वभवनाम जाणिवा ॥ एह २४ तीर्थंकरना २४ पिता होस्ये । २४ माता होस्ये । २४ प्रथम शिष्य थास्ये । २४ प्रथम साध्वी थास्यें । २४ प्रथम भिक्षादायक थास्यें । २४ चैत्यवृक्षथास्यें । जम्बूद्वीपना भरत ने विषे आगामिउत्सर्प्पिणीये १२ चक्रवर्त्ती थास्यें तेकहेछे । भरत १ । दीर्घदंत २ । गूढदत ३ । शुद्धदत ४ । श्रीपुत्र ५ । श्रीभूति ६ । श्रीसोम ७ । पद्म ८ । महापद्म ९ । विम

तंजहा । अरहेयदीहदंते गूढदंतेयसुद्धदंतेय । सिरिउत्तेसिरिभूई सिरिसोमेयसत्तमेपउमे ॥ १ ॥ महापउमेय विमल वाहणेविपुलवाहणेचेव रिठेवारसमेतह आगामिअरहाहिवाउत्ता ॥ २ ॥ एएसिणंवारसण्हंचक्कव वासे आगामिस्साए उस्सप्पिणीए नववलदेव वासुदेवापियरो अविस्सति नववासुदेवमायरो नववलदेव मायरो अविस्संति । नवदसारमंडलाअविस्संति तंजहा । उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा तेयंसी एवंसोचेववणओ आणियव्वो जावनीलगपीतगवसणा । दुवेदुवे रामकेसवाभायरो अविस्संति तंजहा । नदेय

न वाहन १० । विपुलवाहन ११ । रिष्ट १२ । आवती २४ वीसीये भरतक्षेत्रना अधिपति थास्ये । एह १२ चक्रवर्त्तना १२ पिता अने १२ माता थास्ये । १२ स्त्रीरत्न होसे । । आवती उत्सर्पिणीये जंबूद्वीपना भरतनेविषे ९ वलदेव ९ वासुदेवनांपिताहोसे । ९ वलदेवनी माता होसे । ९ वासुदेवनी माताहोसे ९ । दसारमंडल होसे । जिम पूठे उत्तम पुरुष मध्यम पुरुष प्रधान पुरुष वर्णव्याछे तेहिज भणिवो जिहांलगे नीला पीला वस्त्रना पहिरणहार ए वे भाई होवे । रामते वलदेव केशवते वासुदेव एविहुं भाईहोवे पिता १ माता जुदी जुदी होय तेकहेछे । नंद १ । नंदमित्र २ । दीर्घबाहु ३ । महाबाहु ४ । अतिबल ५ । महाबल ६ । वलभद्र ७ । द्विपृष्ट ८ । त्रिपृष्ट ९ । आवती २४ सीये वासुदेवना नाम जाणिवा हिवे वलदेवनाम कहेछे । ज

सुगमं ग्रंथसमाप्तिं यावत् नवरं आयाएत्ति बलदेवादेरायातं देवलोकादे श्च्युतस्य मनुष्येषूत्पादः सिद्धिश्च यथारामस्येति एवं दोसुवित्ति भरतैरावतयो रागमि ष्यतो वासुदेवादयो भणितव्या इत्येव मनेकधार्थानुपदर्श्या धिकृतग्रंथस्य यथार्थान्यभिधानानि दर्शयितुमाह इत्येतदधिकृतशास्त्रमेव मनेनाभिधानप्रकारेणा ऽख्यायते अभिधीयते तद्यथा कुलकरवंशस्य तत्प्रवाहस्य प्रतिपादकत्वात् कुलकरवंश इतिच इतिरुपदर्शने च शब्दः समुच्चये एवतित्थगरवंसे इयत्ति यथा देशे न कुलकरवंशप्रतिपादकत्वात् कुलकरवंश इत्येतदाख्यायते एवं देशत स्तीर्थंकरवंशप्रतिपादकत्वा त्तीर्थंकरवंश इति आख्यायते एतदिति एव चक्रवर्त्तिवंशइति च दशारवंशइति च गणधरवंश इति च गणधरव्यतिरिक्ता. शेषाजिनशिष्या ऋषय स्तद्वंशप्रतिपादकत्वा दृषिवंशइतिच तत्प्रतिपादनचात्र पर्युषणाकल्पस्य

मपुरिसा पहाणपुरिसा जावदुवेदुवेरामकेसवा ज्ञायरोज्ञाविरसंति णवपडिसत्तूज्ञाविस्सति । णवपुव्वभवणा ते मधेज्जा णवधम्मायरिया णवणियाणभूमीज णवणियाणकारणा ज्ञायाएएरवए ज्ञागमिस्साए ज्ञाणियव्वा । एवदोसुवि ज्ञागमिस्साए ज्ञाणियव्वा इच्चेयएवमाहिज्जति तंजहा । कुलगरवंसेइय एवतित्थगरवंसेइय ।

उत्तमपुरुष मध्यमपुरुष प्रधानपुरुष यावत् शब्दे बलदेव वासुदेव भाई होस्ये । नव प्रतिशत्रुनाम । पूर्वभवनाम । धर्माचार्य । नियाणा भूमि नियाणानो कारण । बलदेवराजा आगामिकाले देवलोकादिक थको च्यवी जिम मनुष्यभवे उपजस्ये सिद्धथासे ऐरवतक्षेत्रे तेसर्व भणिवो । एम भरत ऐरवत क्षेत्रे आगामिकाले बलदेववासुदेव होस्ये तेसर्व भणिवो । अनेकप्रकारे एम अगीकृतशास्त्र एणि प्रकारे कहिये तेकहेछे । कुलकरवंश एम तीर्थंकरवंश चक्रवर्त्तिवंश

समस्तस्य ऋषिवंशपर्यवसानस्य समवसरणप्रतिक्रमेण भणितत्वा इतएव यतिवंशो मुनिवंश श्चैतदुच्यते यतिमुनिशब्दयोः ऋषिपर्यायत्वात् तथा श्रुतमिति नेतदाख्यायते परोक्षतया त्रैकालिकार्थविबोधनसहत्वादस्य तथाश्रुतागममितिवा श्रुतस्य प्रवचनस्य पुरुषरूपस्याङ्ग मवयवइतिवात्वा तथा श्रुतसमासइति समस्तसूत्रार्थानां मिह सङ्क्षेपेणाभिधानात् श्रुतस्कन्धइति वा श्रुतसमुदायरूपत्वादस्य समाएवत्ति समवायइति चासमस्तानां जीवादिपदार्थानां मभिधेय तयेहसमवायनात् मीलनादित्यर्थ. तथा एकादिसङ्ख्याप्रधानतया पदार्थप्रतिपादपरत्वादस्य सङ्ख्येति व्याख्यायते तथा समस्त म्परिपूर्ण न्तदेतदङ्ग माख्यात मगाता नेह श्रुतस्कन्धवदाद्विखण्डनेना चाराद्विव दृत्ततेतिभावः तथा प्रज्ञायणतित्ति समस्त मेतदध्ययन मित्याख्यात नेहोद्देशकादि खण्डनास्ति शस्याप

चक्कवट्टिवंसेइय दसारवंसेइय गणधरवंसेइय इसिवंसेइय जइवंसेइय मुणिवंसेइय सुएइवा सुअंगेइवा

एमऽगारवंश तीर्थकर बलदेव वंश गणधरवंश एम ऋषिवंश यतिवंश मुनिवंश एह सर्वना वंश एह समवायांगने विषे कह्याछे तेमाटेएहना नामकहि वा। जोपि यतिवंशमुनिवंश एह बेहु ऋषिवाचीछे तथापि आचारने विषे यत्नकरे तेयती अर्थ जाणे तेमुनी तेहना ज्ञान एहमांकह्याछे तेमाटे श्रुतकहिये। परोक्षपणे त्रिकालनो पर्यावबोध। श्रुत पुरुष अंगनो अवयव सरीखो अवयव तेमाटेश्रुतांग। समस्त सूत्रमाहि सङ्क्षेपे कहिवाथी श्रुत समास कहिये। श्रुतना अंगनो समुदायरूप तेमाटे श्रुतस्कन्ध कहिये। समस्त जीवादि पदार्थ एह माहि अवतरया तेथी समवाय कहिये। एकादिक कोटाकोटि लगे

रिन्नादिश्विवे तिभाव: इतिशब्द: समाप्तौ बेमित्ति किलसुधर्म्मस्वामी जंबूस्वामिनप्रत्याहस्मब्रवीमि प्रतिपादयाम्येतत् श्रीमन्महावीरवर्द्धमानस्वामिन: समीपे यदवधारित मित्यनेन गुरुपारम्पर्य मर्थस्य प्रतिपादित म्भवति एवञ्च शिष्यस्य ग्रन्थे गौरवबुद्धि रुपजनिता भवति आत्मनश्च गुरुषु बहुमानोदर्शित श्रौद्धत्यञ्च परिहृतं अयमेवार्थ: शिष्यस्य सम्पादितोभवति मुमुक्षूणा ञ्चाय म्मार्ग इत्यावेदितमिति समवायाख्य ञ्चतुर्थमङ्ग म्वृत्तित: समाप्तम् ॥ * ॥

सुयसमासेइवा सुयखंधेइवा समएइवा संखेइवा ॥ सम्मत्तमंगमरकायंञ्झयणत्तित्तिबेमि ॥ ॥

॥ इति समवाय चउत्थमंगं सम्मत्तम् ॥

सख्या एहमा कही तेथी सख्यकग्रय कहिये। परिपूर्ण एह चौथो अंग भगवते कह्यो। एह ऽध्ययन समस्त कह्यो इति शब्द समाप्ति वाचक अथै किल सुधर्मास्वामी जंवूस्वामीप्रतें कहिता हुआ ॥ ॥ जिम भगवान महावीर स्वामि समीपे सांभल्यो तिम तुमारे आगलि कह्यो एणे करी गुरुपारंपर्यपणो गुरूने विषे बहुमानपणो देखाड्यो ॥ इति समवायाग सूत्रटव्वार्थ संपूर्णथयो ॥ * ॥ * ॥ * ॥ श्रीपार्श्वचंद्रसूरि सतानीयेन मुनिश्रवणस्य शिष्येण गणि मेघराजेन कृतोयं। टव्वार्थ श्लोक सख्या ५६५७ अस्यैव टीकां विलोक्य प्रज्ञानुसारेण लिखितोयं यद ज्ञानभावा दशुद्ध लिखितं तन्मे मिथ्यादुष्कृत विशोधनीय च धीधनै रिति ॥ सूत्रटव्वार्थसंख्या ७१३५ ॥ * ॥ * ॥

नमः श्रीवीरायप्रवरवरपार्श्वायचनमो । नमःश्रीवाग्देव्यैवरकविसभायाअपिनमः ॥ नमःश्रीसङ्घायस्फुटगुणगुरुभ्योपिचनमो । नमःसर्वस्मैचप्रकृतविधि
साहाय्यककृते ॥ १ ॥ यस्यग्रन्थवरस्यवाक्यजलधेर्लक्षसहस्राणिच । चत्वारिंशदहोचतुर्भिरधिकामानम्पदानामभूत् ॥ तस्योच्चैश्चुलुकाकृतिन्निदधतःकालादि
दोषात्तथा । दुर्लेखात्खिलतांगतस्यकुधियःकुर्वन्तुकिम्मादृशाः ॥ २ ॥ स्पष्टेतिनिधायकष्टमधिकम्मामेन्यदाजायता । व्याख्यानेस्यतथाविवेक्तुमनसामल्पज्ञ
तानामसु ॥ इत्यालोचयतातथापिकिमपिप्रोक्तामयात्रच । दुर्व्याख्यानविशोधनंविदधतुप्राज्ञाःपरार्थोद्यताः ॥ ३ ॥ इहवचसिविरोधोनास्तिसर्वज्ञवाक्यात् ।
क्वचनतदवभासोयःसमाध्यान्नबुद्धेः ॥ वरगुरुविरहाद्वातीतकालेमुनीशे । गणधरवचनानामस्तसम्प्रातनाद्वा ॥ ४ ॥ व्याख्यानयद्यपीदम्प्रवरकविवचःपारतन्त्र्ये
णदृष्टं । मध्यस्थैःस्मिस्तथापिक्वचिदपिमनसोमोहतोर्थादिभेदः ॥ किन्तुश्रीसङ्घबुद्धेरनुसरणविधेर्भावशुद्धेश्चदोषो । मामेभूदल्पकोपिप्रशममपरमनास्तांश्चदेवीश्रु
तस्य ॥ ५ ॥ निःसम्बन्धविहारिहारिचरिताश्रीवर्द्धमानाभिधान् । सूरीन्ध्यातवतोतितीव्रतपसोग्रन्थप्रणीतिप्रभोः ॥ श्रीमत्सूरिजिनेश्वरस्यजयिनोदर्प्पीयसांवादि
मिना । तद्बन्धोरपिबुद्धिसागरइतिख्यातस्यसूरेर्भुवि ॥ ६ ॥ शिष्येणाभयदेवाख्य । सूरिणाविवृतिःकृता ॥ श्रीमतःसमवायाख्यतुर्याङ्गस्यसमासतः ॥ ७
एकादशसुशतेष्वथ । विंशत्यधिकेषुविक्रमसमानां ॥ अणहिल्लपाटकनगरे । रचितासमवायटीकेयम् ॥ ८ ॥ प्रत्यक्षरनिरूप्यास्याः । ग्रन्थमानंविनिश्चितं ॥
श्रीणित्रीणिसहस्राणि । पादन्यूनाचषट्शती ॥ ९ ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ * ॥ * श्रीरस्तु

——————००*००——————

सकल भव्यजनोंको सविनय निवेदन करतेहैं कि लुंपकगणोपासक मुर्शिदाबाद अजीमगंज निवासी श्रीयुत रायधनपतिसिंह बहादुरने परोपकारार्थ छपवायके जैनागम का संग्रह किया सोऐसा कि ५०० पुस्तका ५०० जगह भंडारकरके स्थापित किये जिस्में साधु श्रावक प्रभृति पठन पाठनादिकरके स्वधर्ममें दृढभक्तियुक्त होय और धर्मवृद्धि ज्ञानवृद्धि होय उस आगम संग्रहका यह समवायांग चतुर्थभागहै इस ग्रंथको हमने बहुत प्रयाससे शोधनकरके छापाहै तथापि कोई जगह मतिमान् लोगोंकों यदि अशुद्ध नजर आवे तो वहलोग शुद्धकरलें अशुद्ध रहजानेमें कारण यहहै कि अनेक हाथसे काम होताहै और हमलोगभी प्रमादीहै और प्रायः लेखकदोषसे पुस्तकोंमें नये २ पाठ नजर आतेहैं इस पुस्तकोंमें इस पाठहैं इसलिये बहुसमत टीकासमत और श्रीमदुपाध्याय रामचन्द्रजीगणीके विदित पारंपर्यानुसार पाठ रखके मुद्रितकिया इसमें भूलचूक होय तो [illegible] पलोगों की साक्षीसे मिथ्या दुष्कृत है ॥

मुद्रासहस्रकिरणो ग्रन्थानुपलब्धितिमिरसंहारी ।

पुस्तककमलविकासी द्युनिशंजैनप्रभाकरोजयतु ॥ १ ॥

———000———

॥ इति टीकावार्त्तिकसंवलितं श्रीसमवायाख्यं चतुर्थाङ्गं समाप्तिमगमत् ॥

श्रीयुत रायधनपतिसिंह बहादुर की तरफसे छापागया

बनारस जैनप्रभाकर प्रेस नान्कचंदजती